उपहार प्रति

# राजस्थानी-हिंदी कहावत-कोश
## धाम : दो

*

पंद्रह हजार कहावतें और तीन सौ तैंतीस संदर्भ-कथाएँ
मूल राजस्थानी कहावतों के हिंदी अर्थ और साँगोपाँग व्याख्या सहित

*

**काळ खपै पण ओखांणा अखै**
काल नश्वर, कहावतें अमर

# राजस्थानी-हिंदी कहावत-कोश

धाम-दो

*

कि से ज तक कहावतें

*

संयोजक व संपादक

विजयदान देथा

*

**राजस्थानी ग्रन्थागार**

प्रकाशक एवं वितरक

सोजती गेट, जोधपुर-342 001 (राज़.)

फोन : 2623933 (का.), 2432567 (नि.)

E-mail : rgranthagar@satyam.net.in

RAJASTHANI - HINDI KAHAWAT - KOSH
A DICTIONARY OF RAJASTHANI PROVERBS

*

राजस्थानी-हिंदी कहावत - कोश
आठ धाम में संपूर्ण



*

प्रकाशक :
**राजस्थानी ग्रन्थागार**
*प्रकाशक एवं वितरक*
सोजती गेट, जोधपुर-342001
फोन : 2623933 (कार्यालय)
2432567 (निवास)
E-mail : rgranthagar@satyam.net.in

*

**मूल्य : चार सौ रुपये मात्र (४००.००)**

*

कंपोज :
सूर्या कम्प्यूटर, जोधपुर

मुद्रक :
भारत प्रिण्टर्स (प्रेस), जोधपुर

**संकेत-तालिका**

**पाठा.** = पाठांतर

**क. सं.** = कहावत संख्या

**व.** = राजस्थानी साहित्य समिति बिसाऊ, राजस्थान से प्रकाशित 'वरदा' जुलाई-सितंबर १९७२ । आगे अंकित संख्या का मतलब उक्त अंक में प्रकाशित कहावत की संख्या से है ।

**भी.** = साहित्य-सस्थान, राजस्थान विश्व विद्यापीठ, उदयपुर से प्रकाशित राजस्थानी भीलों की कहावतें, विजयादशमी, ७ अक्टूबर, १९५४ । आगे अंकित संख्या का मतलब उक्त संग्रह में प्रकाशित कहावत की संख्या से है ।

**मि. क. सं.** = मिलाइए कहावत संख्या ।

**दे. क. सं.** = देखिए कहावत संख्या ।

**आ. दे. क. सं.** = आगे देखिए कहावत संख्या ।

**सं.** = संस्कृत

अनुक्रम :


| | |
|---|---|
| कि-कू | ६०१ |
| के-क्यूं | ६५८ |
| खं-खा | ७११ |
| खिं-ख्या | ७६५ |
| गं-ग | ८०२ |
| गां-गा | ८४७ |
| गिं-ग्वा | ८९० |
| घ | ९४२ |
| घां-घो | १००६ |
| चं-चा | १०४१ |
| चि-चौ | १०८७ |
| छ-छौ | ११५४ |
| जं-ज | ११९१ |

**काळ बहै पण बात रहै।**

काल बहे पर बांत रहे।

# कि - कू

**किण ई रा चांम घासै, किण ई रा दांम घासै।** २२८९

किसी की चमड़ी घिसे तो किसी के दाम घिसें।

—जिसके पास जो है, वही उपयोग में आता है।

—शरीर वाला शरीर से मेहनत करता है तो पैसे वाला उसके बदले में पैसे देता है।

—कोई व्यक्ति शरीर से सहयोग देता है तो कोई पैसे से।

—रूपाजीवा के लिए भी इस में छिपा संकेत है।

**किण किण रै मूंडै आडौ हाथ लागै।** २२९०

किस किसके मुँह पर हाथ रखें।

—कोई व्यक्ति किसी की बुराई करे तो उसे रोका नहीं जा सकता।

—हर व्यक्ति को किसी के बारे में बुरा-भला कहने का अधिकार है।

**किण किण रौ मन राखजै बाट बिचाळै खेत।** २२९१

किस किसका मन रखें, बीच राह में खेत।

—हर कोई चलता राहगीर रास्ते के खेत में हाथ डाल देता है, कुछ माँगकर ले लेता है या अपने पशु चरा डालता है, किस-किसका लिहाज रखा जाय!

—रास्ते पर खेत हर दृष्टि से बुरा है, पर किसी-न-किसी का खेत तो राह के बीच होगा ही, या तो हर किसी से झगड़ा करो या लिहाज रखकर चुपचाप बर्दाश्त करो।

—मानव समाज में लिहाज के बगैर जीवन यापन करना आसान नहीं।

**किण खेत री मूळी !** २२९२

किस खेत की मूली !

—छोटा व्यक्ति किसी बड़े आदमी की बात में टाँग अड़ाये तब।

—मुँहजोर अकेले व्यक्ति की क्या परवाह की जाय !

पाठा : **किण बाग री मूळी।** किस बाग की मूली।

**किण घरटी रौ आटौ खायौ ?** २२९३

किस चाकी का आटा खाया ?

—मोटे व्यक्ति को परिहास में यह बात पूछी जाती है कि वह किस चक्की का आटा खाकर इतना मोटा हो रहा है—हम भी शायद उसी का आटा लाकर खाएँ।

—मोटे व्यक्ति के प्रति सहज-जिज्ञासा।

**किण बाड़ी रौ बथवौ ?** २२९४

किस बाड़ी का बथुआ ?

—किसी व्यक्ति के प्रति उपेक्षित भाव कि उसकी ऐसी बिसात ही क्या है ?

—जो अकिंचन व्यक्ति हेकड़ी दिखाये उसके प्रति।

**किण रा जायोड़ा किण नै दुख दै ?** २२९५

किसके जन्मे, किसे दुख दें ?

—निपट अपरिचित या अनजान व्यक्ति किसी को सताये तब।

—न मालूम कब किस व्यक्ति के द्वारा किसी को कब दुख मिल जाय ?

—शोषण करने वाले विदेशी या अवांछित तत्त्व के प्रति तिरस्कार की भावना।

**किण री खिण्योड़ी नै कुण पड़्यौ ?** २२९६

किसकी खुदी हुई और कौन पड़ा ?

—दूसरों को धोखा देने वाला खुद धोखे में पड़ जाय तब।

—जब किसी दूसरे के अकर्मों का फल मिले तब।

—दुष्ट स्वयं अपने हाथों खोदे हुए गड्ढे में गिरता है।

**किणरी छाती माथै रूंआळी ?** २२९७

किसके सीने पर इतने बाल हैं ?

—किसमें इतना साहस है कि वह सामना करे।

—प्राय: चुनौती के रूप में यह कहावत प्रयुक्त होती है।

**किण री तेलण, किण रौ पळौ, बिचाळै मांग्यौ खळ रौ डळौ।** २२९८

किसकी तेलिन, किसका पला, बीच में माँगा खली का डला।

दे.क.सं.१७१४

**किण री मां अजमौ खायौ ?** २२९९

किसकी माँ ने अजवाइन खाया ?

—किसकी इतनी हिम्मत जो मुझ से भिड़े ? चुनौती भरी ललकार।

—जो व्यक्ति अतिशय दुष्कर कार्य को संपन्न कर सके।

**किण री मां सेर सूंठ खाई ?** २३००

किसकी माँ ने सेर सौंठ खाई ?

—ऐसा कौन हिम्मतवर जो इस कठिन कार्य को पूरा करने का बीड़ा उठाये ?

—प्रसव के बाद सेर सोंठ खाने वाली वीर जननी का पराक्रमी पुत्र ही किसी मुश्किल काम को करने की हामी भर सकता है।

**किण रूंख रै हवा नीं लागै ?** २३०१

किस वृक्ष के हवा नहीं लगती ?

—बुराइयों से कोई भी व्यक्ति अछूता नहीं रह सकता।

—हर व्यक्ति में एक-न-एक बुराई तो होती ही है।

—जब किसी व्यक्ति या औरत का पाँव फिसल जाय तब।

—वक्त की हवा का असर किस पर नहीं होता !

दे.क.सं.१५९१

**किण रै आगै जाय रोवां ?** २३०२

किसके सामने जाकर रोयें ?

—अपने दर्द का रोना किसे दरसायें ?

—कौन किसकी विपदा सुनता है, जब सभी अपनी-अपनी मुसीबतों में खोये हुए हैं।

—जिस व्यक्ति की फरियाद सुनने वाला कोई न हो।

**किण रै घर रौ सोच करां ?** २३०३

किसके घर की चिंता करें ?

—अपनी चिंता के आगे किसी और की चिंता का खयाल ही नहीं आता।

—दूसरों की परेशानियों के प्रति उपेक्षा रखने वाले व्यक्ति की भावना।

—इस संसार में हर व्यक्ति मुसीबतों से जूझ रहा है, तब किस-किसकी चिंता की जाय ?

**किण रौ माथौ नै किण आगै फोडूं ?** २३०४

किसका सिर और किसके सामने फोड़ूँ ?

—किसकी बला किसके सिर आ पड़ी ?

—खामखाह किसी दूसरे की विपदा अपने सिर आ पड़े तब।

**किणी नै तवा में दीसै, किणी नै काच में।** २३०५

किसी को तवे में दिखता हैं तो किसी को काच में।

—लोकमान्यता के अनुसार तवे पर भूल से दो रोटियाँ गिर जायँ या तवा नीचे की तरफ चिनगारियों के बहाने हँसे तो मेहमान आता है—यह एक तरह से दिखने जैसा ही है।

—अपनी-अपनी सूझ-बूझ और अपनी-अपनी दृष्टि।

—आँखें काच में देखती हैं, बुद्धि तवे में भी देख सकती है।

—हर व्यक्ति की अलग ही नजर होती है जो फकत आँखों पर निर्भर नहीं करती।

—कुछ व्यक्ति छोटे काम के योग्य होते हैं और कुछ व्यक्ति बड़े काम के योग्य होते हैं। काच में देखना आसान काम है, तवे में देखना कठिन काम हैं।

**किणी नै बैंगण बायरा, किणी नै बैंगण पच्च।** २३०६

किसी को बैंगन बादी, किसी को बैंगन पच्च।

—एक ही वस्तु किसी के लिए हानि-कारक है तो दूसरे के लिए लाभ-दायक।

—हर व्यक्ति के शरीर की अपनी माँग होती है जिसकी पुष्टि आयुर्विज्ञान भी करता है।

—एक ही बात के प्रति किसी की अरुचि हो सकती है तो दूसरे की रुचि।

—हर व्यक्ति के माप-दंड अलग-अलग होते हैं

पूरा दोहा इस प्रकार है :

**किणी नै बैंगण बायरा, किणी नै बैंगण पच्च।**
**किणी नै चढ़ै आफरौ, किणी नै चढ़ै मच्च॥**

किसी को बैंगन वादी तो किसी को बैंगन पच्च।
किसी को चढ़े अफरा तो किसी पर चढ़े मच्च॥

**किणी रा ई लिलाड़ सारीसा नीं व्है।** २३०७

किसी के भी ललाट समान नहीं होते।

—भाग्य किसी का एक जैसा नहीं होता।

—हर कोई अपने ही भाग्य की खाता है।

**पाठा : सैंगां रा लिलाड़ सरीसा नी व्है।**

**किणी रा ढक्या ढकणा उघाड़णा आछा कोनीं।** २३०८

किसी के ढके ढक्कन उघाड़ना अच्छा नहीं।

—किसी की छिपी हुई बात जाहिर नहीं करनी चाहिए, क्योंकि अपनी भी तो कई बातें ढकी रहती हैं।

—अपने मुँह से किसी की बदनामी नहीं करनी चाहिए।

—किसी का भेद प्रकट नहीं करना चाहिए।

**किणी रा देव नै कुण ई जुहारै।** २३०९

किसी के देव और कौन पूजा करे।

—अपने व्यक्ति से कोई दूसरा लाभ उठाये तब।

—अपने द्वारा पुजाये बड़े आदमी से कोई अन्य फायदा उठाये तब।

**किणी रा नळिया चवै तौ किणी रा मोरधन।** २३१०

किसी के नलिये टपकते हैं तो किसी के मोरधन।

नळिया = खपरैल का एक उपकरण विशेष। मोरधन = खपरेल का एक उपकरण विशेष।

—किसी की खपरेल का नलिया टपकता है तो किसी का मोरधन।

आ.दे.क.सं.२३११

**किणी री छात चवै तौ किणी रौ छपरौ चवै।** २३११

किसी की छत टपकती है तो किसी का छप्पर।

—हर व्यक्ति किसी-न-किसी दुख से ग्रस्त है।

—चाहे धनी हो चाहे गरीब, कोई भी चिंता से मुक्त नहीं है।

—हर हाड़-माँस से बने व्यक्ति में कुछ-न-कुछ तो कमजोरी या बुराई होती ही है। इसलिए पर-निंदा का कोई समुचित आधार नहीं होता।

**किणी री जीभ चालै तौ किणी रा हाथ चालै।** २३१२

किसी की जीभ चलती है तो किसी के हाथ चलते हैं।

—गाली-गलौज करने पर जब सामने वाला उस पर हाथ छोड़ बैठता है तो बीच-बचाव करने वाले गाली देने वाले को इस युक्ति से अक्सर समझाने की कोशिश करते हैं कि उसे पिटने का अफसोस नहीं होना चाहिए, इसलिए कि किसी की जीभ चलती है तो किसी के हाथ।

—जिसके पास बुद्धि है तो वह तर्क से काम लेता है। जिसके पास बुद्धि की कमी है, वह हाथ से काम लेता है—जब जिसका दाँव लग जाय।

—पीटने का भी अपना औचित्य है।

पाठा : **किणी रौ मूंडौ चालै, किणी रौ हाथ।**

किसी का मुँह चलता है तो किसी के हाथ।

**किणी री रोजी रै ठोकर नीं देवणी।** २३१३

किसी की रोजी के ठोकर नहीं लगानी चाहिए।

—किसी को रोजी से वंचित करना हत्या-जैसा ही अपकर्म है।

—दूसरी किसी भी क्षति को आदमी सहन कर सकता है, पर आर्थिक-हानि को नहीं, क्योंकि वही जीवन-यापन का मुख्य आधार होता है।

**किणी रै पेट माथै पग नीं देवणौ।** २३१४

किसी के पेट पर पाँव नहीं देना चाहिए।

—किसी की जीविका में बाधा खड़ी नहीं करनी चाहिए।

—पेट भरने की व्यवस्था में अड़चन पहुँचाना उचित नहीं।

**किणी रौ घर बळै, कोई तापै।** २३१५

किसी का घर जले, कोई हाथ सेंके।

—आदमी को दूसरे का दुख नजर ही नहीं आता, तभी तो संवेदना प्रकट करने की बजाय उसका मखौल उड़ाता है।

—दूसरे की क्षति के प्रति जो व्यक्ति एकदम तटस्थ रहे या उससे कुछ लाभ उठाने की चेष्टा करे।

**पाठा : किणी रौ घर सिळगै अर लफंगा तापै।** किसी का घर सुलगे और लफंगे हाथ सेंके।

**किणी रौ व्है जांणौ के कर लैणौ।** २३१६

किसी का हो जाना या कर लेना।

दे.क.सं.२०७९

**किताब रौ कीड़ौ।** २३१७

किताब का कीड़ा।

—कीड़े की तरह रात-दिन जो किताब से चिपका रहे।

—रटने के अलावा जिस विद्यार्थी से किताब का कोई दूसरा सरोकार न हो।

—जिस विद्यार्थी के लिए पुस्तक ज्ञान का माध्यम न होकर केवल उत्तीर्ण होने का साधन मात्र हो।

**कित्ती ई कर छांनै, अेक दिन आसी कांनै।** २३१८

कितना ही छिपाओ, एक दिन तो कान में आएगी।

—कोई भी गुप्त बात अंत तक छिपकर नहीं रहती।

—छिपकर किया हुआ अपराध या पाप एक दिन अपने-आप प्रकट होकर रहता है।

**कित्तौक दूध घालूं के तासळी री कोरां किण खातर बणी।** २३१९

कितना दूध डालूँ कि तसले के किनारे किसलिए बने हैं।

—हर बासन के किनारे होते हैं और जब तक कोई तरल पदार्थ बाहर छलकने लग न जाय, तब तक सब्र न करने वाले पेटू व्यक्ति के लिए।

—जिस व्यक्ति के स्वार्थ या लोभ का कोई अंत न हो।

—जो व्यक्ति सामान्य शिष्टाचार का खयाल न करके एक-दम मुँह-फट हो।

**कित्तौक सपनौ अर कित्तीक रात।** २३२०

कितना-सा सपना और कितनी-सी रात।

—समय पर रात भी ढलेगी, सपने भी टूटेंगे। जब तक रात है, तब तक सपना है।

—क्षण-भंगुर जीवन की कल्पनाओं का क्या अस्तित्व?

—सुख-दुख भरा यह जीवन भी सपने से अधिक कुछ नहीं।

—जीवन के साथ आखिर सभी लालसाओं का अंत होकर रहता है।

—अधीर व्यक्ति को कष्ट सहने की प्रेरणा के लिए और अत्याचारी व अहंकारी को नसीहत देने के लिए।

**पाठा: कित्तीक रात अर कित्तौक सपनौ।**

**किन्या अर अंठौ रंधीण बासी नीं राखीजै।** २३२१

कन्या और जूठा रँधीन बासी नहीं रखा जाता।

रंधीण = उबला हुआ भोजन जो बासी रखने पर जल्दी खराब होने लगता है।

—दूसरी ओर वयप्राप्त कन्या भी पकने पर घर में नहीं रखी जाती, विवाह करके उसे विदा करना ही पड़ता है।

—हर वस्तु की सुरक्षा के अपने-अपने उपाय हैं।

**कियां करै जांणै नातै आयोड़ी भांबण करै ज्यूं।** २३२२

कैसे कर रहा है, जैसे पुनर्विवाहित भाँबिन कर रही हो।

—जरूरत से ज्यादा नखरे करने वाले व्यक्ति के लिए।

—बात-बात पर हरदम मुस्कराने वाले व्यक्ति के लिए।

**कियां देखै जांणै कागलौ नींबोळी कांनी देखै।** २३२३

कैसे देख रहा है मानो कौवा नींमोली की तरफ देख रहा हो।

—किसी चीज की ओर ललचाई दृष्टि से देखने वाले व्यक्ति के लिए।

—जो व्यक्ति नजर चुराकर इधर-उधर ताक-झाँक करे।

**कियां देखै जांणै गैली बजार कांनी देखै।** २३२४

कैसे देख रहा है मानो पगली बाजार को देख रही हो।

—अचरज व अज्ञान भरी दृष्टि से देखने वाले व्यक्ति के लिए।

—जो व्यक्ति हर ओर जिज्ञासा भरी नजर से देखे।

**कियां नाचै जांणै बंदोळी री घोड़ी नाचै।** २३२५

कैसे नाच रहा है जैसे बंदोली की घोड़ी नाच रही है।

बंदोळी = बदवली = विवाह के पहले दिन दूल्हे व दुलहिन के पितृगृह में रात की वेला मनाया जाने वाला उत्सव।

—अत्यधिक चंचल व्यक्ति के लिए।

—बेहद उत्साह में कूद-फाँद करने वाले व्यक्ति के लिए।

**कियां फिरै जांणै विगड़्योड़ै ब्याव में नाई फिरै।** २३२६

कैसे भटक रहा है मानो बिगड़े हुए ब्याह में नाई भटक रहा हो।

—इधर-उधर बेकार भटकने वाले व्यक्ति के लिए।

—काम की असफलता के कारण घबराहट में व्यर्थ दौड़-भाग करने वाले व्यक्ति के लिए।

**किरकांटिया री गळाई रंग बदळै।** २३२७

गिरगिट की तरह रंग बदलता है।

—स्वार्थ के वशीभूत बात-बात में रंग बदलने वाला व्यक्ति।

—अवसरवादी व्यक्ति पर कटाक्ष।

**किरकांटिया री दौड़ बांटका तांई।** २३२८

गिरगिट की दौड़ झाड़ी तक।

—जिस व्यक्ति की जितनी पहुँच होती है, उसका वहीं तक जोर चलता है।

—हर व्यक्ति की पहुँच का एक दायरा होता है।

—समानार्थी कहावत—मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक।

**किरड़ै वाळौ रंग।** २३२९

गिरगिट वाला रंग।

दे.क.सं.२०८०

**किराड़ जितरा ई विराड़।** २३३०

बनिये जितने ही हिस्से।

—गाँवों में कृषि की उपज खरीदने के लिए जितने बनिये शामिल होते हैं, उन सबकी समान साझेदारी स्वतः निश्चित हो जाती है। इस तरह के अवसर पर यह कहावत प्रयुक्त होती है।

—समान स्वार्थ वाले जैसे-तैसे एक जुट हो जाते हैं।

**किसकिंधा मनावण में इज सार है।** २३३१

किष्किंधा मनाने में ही सार है।

—भाग जाने में ही भलाई है।

—झगड़ा-टंटा या दंगा-फसाद के स्थल से शीघ्र भाग जाना ही अच्छा है, वरना चपेट में आने की संभावना है।

**किसन करी तौ लीला अर म्हे बाजां रुळियार।** २३३२

कृष्ण ने की तो लीला और हम कहलाएँ दुराचारी।

—सारे दोष छोटे आदमी पर ही मँढ़े जाते हैं और समर्थ को कुछ भी दोष नहीं लगता। तुलसी बाबा ने भी इसकी ताहीद की है—समरथ को न दोस गुसाँई।

—समाज के श्रीमंत नैतिक मान्यताओं से ऊपर होते हैं।

**किसमत रा खेल।** २३३३

किस्मत का खेल।

—दो व्यक्तियों के सामाजिक स्तर में बेहद फर्क हो तब—जहाँ एक व्यक्ति की माया कहीं समाप्त ही न होना चाहे और दूसरे को माया के दर्शन तक न हों।

—एक ही बाप के बेटों में जबरदस्त आर्थिक वैषम्य हो तब।

—किस्मत का खेल हमेशा बदलता रहता है।

**किसाक बाजा बाजै, किसाक रंग लागै !** २३३४

कैसे बाजे बजेंगे और कैसा रंग जमेगा !

—देखें क्या गुजरती है ?

—भविष्य में न मालूम क्या होने वाला है, कुछ पता नहीं चलता !

**किसा करमां रा ताळा खुलग्या ?** २३३५

कौन-से भाग्य के ताले खुल गये ?

—ऐसा कौन-सा भाग्य चमक गया ?

—गरीब व्यक्ति के भाग्य में जड़े ताले आसानी से नहीं खुलते।

**किसा खाड में पड़ां ?** २३३६

किस गड्ढे में गिरें ?

—जिस व्यक्ति ने नाकों दम कर रखा हो, उसके मारे कहाँ जाएँ, कहाँ न जाएँ।

—आफत के मारे आत्मवेदना कि वह क्योंकर अपना बचाव करे ?

**किसा नागा नाचै है ?** २३३७

कौन-से नंगे नाच रहे हैं ?

दे.क.सं.१५३

**किसा नादांन गढ़ में पैठसी ?** २३३८

कौन-से नादान गढ़ में घुसेंगे ?

—नादान व्यक्ति गढ़ जीतने जैसा बड़ा काम नहीं कर सकता।

—सामान्य व्यक्ति से बड़ी उम्मीद रखना बेकार है।

**किसा भाग लूयीजै है ?** २३३९

कौन-से भाग्य नोचे जा रहे हैं ?

—जो कुछ भी अचीती विपदा आए या अनहोनी बीते धीरज रखो। कौन-सा भाग्य उखड़ गया है ?

—किसी के हाथ इतने समर्थ नहीं कि वे किसी का भाग्य बिगाड़ सकें।

**किसा मियां मरग्या अर रोजा घटग्या।** २३४०

कौन-से मियाँ मर गये और रोजे घट गये।

—ऐसी भी क्या बात बिगड़ गई जो सुधारी नहीं जा सकती हो।

—ऐसी भी क्या कमी पड़ गई जिसे दूर नहीं किया जा सकता।

—अब भी काफी-कुछ किया जा सकता है, जिससे लोग संतुष्ट हों।

**किसा मुसळमांनां रा हिंदू कर दौला?** २३४१

क्या मुसलमानों के हिंदू कर दोगे?

दे.क.सं. १६८८

**किसा मूंडिया चितारां?** २३४२

कौन-से मुँडे हुओं को चितारें?

—इतने चेले बनाये हैं कि किस-किस मुँडे हुए को याद रखें।

—न मालूम कितनों को उल्लू बनाया है, जिनकी गिनती तक नहीं।

—कुलटा औरत किस-किस यार को याद करे?

**किसारी तौ कुळाई में ई रहसी।** २३४३

कसारी तो दरारों में ही रहेगी।

किसारी = दरारों, ढेलों या ओट में छिपकर रहने वाला फतिंगा।

—गरीबी के अनुरूप ही गरीब का निवास होता है—जस-तस सिर छिपाने को जगह मिल जाय बस!

—चोर तो छिपकर ही रहता है।

**किसा रूंख रै हवा नीं लागै?** २३४४

किस पेड़ को हवा नही लगती?

दे.क.सं. १५९१, २३०१

**किसी चोटी काटी है?** २३४५

कौन-सी चोटी काटी है?

दे.क.सं. १५८९

**किसी जेठ सारू डीकरी जाई ?** २३४६

कौन-सी जेठ की खातिर बेटी जनी है ?

—बेटी को जन्म दिया है तो अपने बूते पर, जेठ के भरोसे नहीं—पालेंगे, पोसेंगे, बड़ी करेंगे और उसका ब्याह रचाएँगे।

—कोई किसी के भरोसे नहीं रहता।

—हर व्यक्ति अपने बूते पर ही किसी काम की शुरुआत करता है।

**किसी तोरण छड़ी लगावणी है ?** २३४७

कौन-सी तोरण पर छड़ी लगानी है ?

तोरण = विवाह का एक अनुष्ठान। दुलहिन के पिता के निवास—मुख्य द्वार पर काठ की खपच्चियों से बना एक मांगलिक उपकरण जो कई रंगों से सजा होता है। उस पर लकड़ी की चिड़ियाँ या तोते बने रहते हैं। घोड़े पर चढ़ा दूल्हा मुख्य द्वार पर पहुँचने के बाद तोरण का हरी टहनी से स्पर्श करता है।

—ऐसा भी कौन-सा महत्त्वपूर्ण काम अटक रहा है।

—कोई व्यक्ति बहुत ही जल्दी मचाये तब।

**किसी थारी खीर खाई है ?** २३४८

कौन-सी तेरी खीर खाई है ?

—जब कोई व्यक्ति खामखाह का उपकार या एहसान जताये तब।

—ऐसा भी तूने मेरा क्या भला किया जो तुझ से दबूँ ?

**किसी सांभर सूनी व्है ?** २३४९

कौन-सी साँभर सूनी हो रही है ?

दे.क.सं.१९४४

**किसै दूबळै घर ब्याव है ?** २३५०

कौन-सा दुबले घर विवाह है ?

दे.क.सं.१९३६

**किसै रूंख रै पीड़ करूं ?** २३५१

किस पेड़ को पीड़ा पहुँचाऊँ ?

—अपने काम की खातिर किस व्यक्ति को तकलीफ दूँ ?

—आफत की इस बेला में किस व्यक्ति का सहारा खोजूँ ? या किसके निहोरे करूँ ?

—जब कोई व्यक्ति बिना हिसाब अविवेकपूर्ण काम करे तब !

**किसौ आधण उकळै ?** २३५२

कौन-सा पानी उबल रहा है ?

—इतनी भी जल्दबाजी करने की क्या जरूरत ?

—जो व्यक्ति बेहद उतावली करे तब ।

—धैर्यपूर्वक हर काम निपटाना चाहिए, उसकी अपनी प्रक्रिया होती है, शीघ्रता करने से उलटा समय ज्यादा लगता है ।

**किसौ ऊरियौ जावै हौ ?** २३५३

कौन-सा हँड़िया में डाला जा रहा था ?

—ऐसी भी क्या हानि हो रही थी जो इतनी हड़बड़ी मचाई ?

—ऐसी भी क्या अनहोनी घटित हो रही थी ? हर काम का अपना गणित होता है ।

**किसौ कांन में कवौ जावै ?** २३५४

कौन-सा कान में निवाला जा रहा है ?

दे.क.सं.२०१०

**किसौ कांम कूंभारां भिळग्यौ ?** २३५५

कौन-सा काम कुम्हारों में मिल गया ?

—ऐसा कौन-सा जरूरी काम बिगड़ गया ?

—जिस काम में सुधार की पूरी गुंजाइश हो !

**किसौ कुलड़िये गुळ मोरियौ है ?** २३५६

कौन-सा कुल्हड़ में गुड़ मसला है ?

—ऐसी भी कौन-सी छिपकर मंत्रणा की है ?

—कोई गुप्त काम किया हो तो डरें भी, फिर किसी की क्यों बेजा धौंस मानें।

**किसौ घाल'र खावै ?** २३५७

कौन-सा डालकर खा रहा है ?

—सभी अपने-अपने घर का खाते हैं।

—कोई किसी का दिया हुआ नहीं खाता।

**किसौ चोरी रौ माल है ?** २३५८

कौन-सा चोरी का माल है ?

—चोरी का माल हो तो डरें, वरना क्यों किसी के दो बोल सुनें।

—किसी की चोरी नहीं की तो डर किसका, कोई माई का लाल सामने तो आये।

**किंसौ तमासौ है ?** २३५९

कोई तमाशा तो नहीं है ?

—काम है, कोई खिलवाड़ तो नहीं।

—जो व्यक्ति किसी गंभीर काम को मजाक में ले तब।

**किसौ तिरसौ जाय है ?** २३६०

कौन-सा प्यासा जा रहा है ?

—इतनी जल्दबाजी की क्या जरूरत, कोई प्यासा तो जा नहीं रहा है !

—किसी की खातिर खामखाह की चिंता करने वाले व्यक्ति के लिए।

**किसौ थारै टाळ खजांनौ खाली रैवै ?** २३६१

कौन-सा तेरे बिना खजाना खाली रहेगा ?

—अधिक रोब गाँठने की जरूरत नहीं, तुम्हारे बिना खजाना खाली थोड़े ही रहेगा ?

—यदि कोई कर्मचारी अपने स्वामी या राज्य का खजाना भरने की जरूरत से ज्यादा दिलचस्पी दिखाये तब।

**किसौ नांनैरौ है ?** २३६२

यहाँ कोई ननिहाल तो नहीं ?

दे.क.सं.१५८

**किसौ निवांण नीं निठै ?** २३६३

कौनसा तालाब खाली नहीं होता ?

—संपत्ति का घमंड नहीं करना चाहिए, वह कभी भी खत्म हो सकती है। जब तालाब का पानी नहीं टिकता तो सीमित माया क्योंकर टिकेगी ?

—कैसा भी धनवान क्यों न हो, अपव्यय करने से धन समाप्त होकर ही रहता है।

**किसौ मां रौ दूध लाजै ?** २३६४

कौन-सा माँ का दूध लज्जित हो रहा है ?

—ऐसा भी क्या जरूरी काम है, जिसे किये बिना माँ का दूध लज्जित हो।

—ऐसा कौन-सा शर्मनाक काम किया जिससे मर्यादा घटने की नौबत आये ?

**किसौ मूतायां मरै ?** २३६५

कौन-सा पेशाब किये बिना मर रहा है ?

—ऐसा कौन-सा काम है जिसे थोड़ी देर टाला नहीं जा सकता।

—जो व्यक्ति बेकार ही किसी काम के लिए उतावली करे।

**कीं आंणी नीं कीं जांणी, 'कोरी धूड़धांणी'।** २३६६

कुछ आना नहीं, जाना नहीं, बेकार का झंझट।

—जिस काम को करने पर रचमात्र भी लाभ न होकर उलटी तबालत हो।

—खामखाह के झंझट को लेकर कोई क्यों परेशान हो ?

**कीं कांम नीं काज।** २३६७

न कुछ काम और न कुछ काज।

—निठल्ले व्यक्ति के लिए, जिसका किसी काम में मन नहीं लगता हो।

—जहाँ मन लायक काम न हो वहाँ जाना बेकार है।

**कीं गुळ गीलौ अर कीं बांणियौ ढीलौ।** २३६८

कुछ तो गुड़ गीला और कुछ वनिया ढीला।

**संदर्भ-कथा** : एक गुड़ का व्यापारी था। गाड़ी पर गुड़ बेचने जा रहा था। गर्मियों की तप्त मौसम थी। गर्म हवाएँ भी साँय-साँय चल रही थीं। आधी बोरियों में भरा गीला गुड़ बाहर बहने लगा। निर्जन जंगल में बनिया क्या उपाय करता? टुकुर-टुकुर आँखों से गुड़ की हानि देखता रहा। घर से रवाना होते ही उसे कुछ-न-कुछ उपाय कर लेना चाहिए था।

—जहाँ दोनों तरफ कुछ-न-कुछ त्रुटि हो तो काम सलीके से नहीं होता।

—किसी काम को सफलतापूर्वक संपन्न करने के लिए सभी तरह के साधन व कर्ता उपयुक्त होने चाहिएँ।

**कीं तौ घोड़ा रौ ई घटै, कीं सवार रौ ई घटै।** २३६९

कुछ तो घोड़े का भी घटता है तो कुछ सवार का भी।

दे.क.सं.१६८२

**कीं दांणा कोनीं।** २३७०

कुछ दाने नहीं हैं।

—जिस व्यक्ति की आर्थिक स्थिति ऊपर से ठीक दिखती हो, पर वास्तव में भीतर हालत काफी खराब हो तब।

—जो बड़ा व्यक्ति किसी के काम न आये तब।

**कीं धव चीकणा अर कीं कवाड़ा भोटा।** २३७१

कुछ तो लकड़ी चिकनी और कुछ कुल्हाड़े भोथरे।

दे.क.सं.१६८३

**कीकर करूं सिणगार, आंख्यां आंधौ भरतार!** २३७२

कैसे करूँ शृंगार, आँखों से अंधा भर्तार!

—अंधे पति के सामने सज-धजकर जाना, कुछ भी माने नहीं रखता।

—गुण-ग्राहक के बिना कला-प्रदर्शन व्यर्थ है।

**कीचड़ में भाटौ वगायां आपरै ई छांटा लागै।** २३७३

कीचड़ में पत्थर फेंकने से अपने पर ही छींटे लगते हैं।

दे.क.सं.२१८१

**कीजै धीवड़ी, सुणजै वउड़ी।** २३७४

कहना बेटी को, सुनाना बहू को।

—बहू की गलती पर सास उसे सीधा कुछ भी न कहकर बेटी को उलाहना देती है, पर उसकी अंदरूनी मंशा यही रहती है कि बहू उसे ध्यान-पूर्वक सुने और अपनी गलतियों का संशोधन करती रहे।

—एक और गहरा छिपा मर्म यह भी हो सकता है कि एक दिन बेटी भी अपने ससुराल बहू बनकर जाएगी तो वह सास के ताने न सुने, उसे पहिले से ही वैसी शिक्षा दी जाय तो क्या हर्ज है।

—परोक्ष रूप से किसी को समझाने का यत्न करना।

**कीड़ां री नारगी होवैला।** २३७५

कीड़ों की योनि प्राप्त होगी।

—अत्याचारी व दुष्ट व्यक्ति के लिए शाप।

—कुकर्म का नतीजा बुरा ही होता है।

**कीड़ियां माथै क्यूं पंसेरियां थरकावौ ?** २३७६

चींटियों पर पंसेरियाँ क्यों पटक रहे हो ?

—गरीब पर असह्य अत्याचार हो तब।

—छोटे व्यक्ति की कोई बड़ा आदमी जरूरत से ज्यादा तारीफ करे तब।

—छोटे आदमी के प्रति कोई कृतज्ञता प्रकट करे तब।

पाठा : **कीड़ी माथै पंसेरियां क्यूं वावौ ?**

**कीड़ी चाली सासरै, नौ मण सुरमौ सार।** २३७७

चींटी चली ससुराल, नौ मन सुरमा डाल।

—अत्यधिक शृंगार करने वाली औरत के प्रति कटाक्ष।

—कोई बदसूरत नारी बहुत ज्यादा बनाव-सिंगार करे तब।

**कीड़ी-नगरै लाय लागी।** २३७८

चींटी-नगर में आग लगी।

—निहायत गरीब बस्ती पर कोई कहर ढाये तब।

—असहाय आदमियों पर कोई अचीती आफत आ पड़े तब।

**कीड़ी नै कण अर हाथी नै मण।** २३७९
चींटी को कन और हाथी को मन।
दे.क.सं.१७३९

**कीड़ी नै मूत रौ ही रेलौ मारै।**–व.३४९ २३८०
चींटी को पेशाब की धार ही नष्ट कर देती है।
—गरीब आदमी के लिए मामूली संकट भी बड़ा कठिन होता है।
—असमर्थ व्यक्ति में प्रतिरोध की किंचित् भी क्षमता नहीं होती।
—जिसकी जितनी बिसात हो वह उतनी ही मार झेल सकता है।
पाठा : **कीड़ी नै मूत रौ रेलौ ई भारी।**

**कीड़ी माथै कटक ?** २३८१
चींटी पर चढ़ाई ?
—निरीह पर कैसा क्रोध, वह तो पहले से ही दुख का मारा हुआ है।
—जब कोई बड़ा व्यक्ति गरीब पर अत्याचार करे तब।

**कीड़ी री खाल काढ़णी।** २३८२
चींटी की खाल निकालना।
—जरूरत से ज्यादा किसी बात की छान-बीन करना।
—असंभव काम में हाथ डालना।
—किसी बात की ठेठ गहराई तक पहुँचने की चेष्टा करना।

**कीड़ी संचै तीतर खाय, पापी रौ धन परळै जाय।** २३८३
चींटी संचय करे, तीतर खाये, पापी का धन यों बह जाये।
—जिस प्रकार चींटी एक-एक दाना इकट्ठा करके अनाज संचय करती है और उसे तीतर खा जाते हैं। उसी प्रकार पापी एक-एक कौड़ी जोड़कर माया इकट्ठी करता है और लोग उसे उड़ा देते हैं—नष्ट कर देते हैं।
—पापी की कमाई कभी भी नहीं फलती।
—पापी का धन बुरे कामों में ही खर्च होता है।

**की डोकरियां कांम, राज-कथा सूं राजिया।** २३८४

क्या बुढ़िया को काम, राज-कथा से राजिया।

—राज्य, प्रशासन व सत्ता से बूढ़ी औरतों का क्या सरोकार।

—अकिंचन व्यक्ति को बड़ी बातों में दिलचस्पी नहीं लेनी चाहिए, वह तो फकत अपने मतलब की राह पर ही चलता रहे तो अच्छा है।

पूरा दोहा इस प्रकार है :

**रोटी, चरखौ, रांम, इतरौ मुतलब आपरौ।**
**की डोकरियां कांम, राज-कथा सूं राजिया॥**

रोटी, चरखा राम, इतना मतलब आपका।
क्या बुढ़िया को काम, राज-कथा से राजिया॥

**कीणौ न कपड़ौ, सेंत-मेंत रौ भरतार।** २३८५

न धान और न कपड़ा, फालतू का भरतार।

—जो अकर्मण्य पति अपनी पत्नी की मूल आवश्यकताएँ भी पूरी न कर सके, उसके प्रति कटाक्ष।

—जो निठल्ला पति कानी कौड़ी भी कमाकर घर न लाये, फिर वह कैसा भरतार है।

**कीरत हंदा कोटड़ा, पाड़्यां नांह पड़ंत।** २३८६

कीर्ति के गढ़-काँगुरे कभी नहीं ढहते।

—पत्थर से बने कैसे भी मजबूत गढ़-किले व स्मारक समय के हाथों ध्वस्त हो जाते हैं पर आदर्श पुरुषों की कीर्ति व यश के महल सदा अक्षुण्ण रहते हैं।

—मनुष्य के लिए सत्कर्मों द्वारा यश अर्जित करना ही श्रेयस्कर है, बाकी सभी प्रपंच व्यर्थ हैं।

पूरा दोहा इस प्रकार है :

**नांव रहसी ठाकुरां, नांणौ नांह रहंत।**
**कीरत हंदा कोटड़ा, पाड़्यां नांह पड़ंत॥**

हे ठाकुरों फकत तुम्हारा नाम शेष रहेगा, धन या माया नहीं, इसलिए यश के गढ़-काँगुरे निर्मित करो, वे कभी ध्वस्त नहीं होंगे।

**कुंवारी धीवड़ी नै सौ घर अर सौ वर।** २३८७

कुँआरी कन्या को सौ घर और सौ वर।

दे.क.सं.१७०३

**कुंवारी रांड कद होवै ?** २३८८

कुँआरी विधवा कब होती है ?

—राजस्थान में अकाल तो निरंतर पड़ते ही रहते हैं, पर एक भी वर्षा न हो, ऐसा कभी नहीं होता। यहाँ के निवासी अक्सर इस कहावत का प्रयोग करते हैं कि भगवान एक बरसात तो करेगा ही, कुँवारी लड़की को वैधव्य सौंपना तो स्वयं भगवान के भी वश की बात नहीं। धरती एक बार तो जुतेगी, फिर चाहे एक दाना भी पैदा न हो।

—सर्वथा अनहोनी बात क्योंकर घटित हो सकती है ?

**कुंवारी रैगी डूंमणी , घाल पटां में तेल।** २३८९

कुँआरी रह गई डोमिन, डाल केशों में तेल।

—किसी की उमंगों पर पानी फिर जाय तब।

—जिस व्यक्ति की आशा एकदम निराशा में बदल जाय तब।

—किसी काम में मन-वांछित सफलता न मिले तब।

**कुआ में नथ पड़गी के म्हैं जांणस्यूं नणद नै ई दी।** २३९०

कुएँ में बाली गिर गई, समझूँगी कि ननद को ही दी।

—हानि या गफलत का व्यर्थ औचित्य खोजना।

—बिना कुछ किये किसी पर खामखाह एहसान थोपना।

—अपने मन को गलत तरीके से समझाने की चेष्टा करना।

**कुआ रौ डेडरियौ।** २३९१

कुएँ का मेंढक।

—कूप-मंडूक।

—समुद्र के मेंढ़क और कुएँ के मेंढ़क का संवाद तो सर्व-विदित है, इसलिए यहाँ दोहराने की आवश्यकता नहीं।

—कुएँ का मेंढ़क अलंघ्य गहराई के कारण कभी बाहर निकल नहीं सकता। कुएँ का सीमित दायरा ही उसके लिए समूचा ब्रह्मांड है।

—जिस व्यक्ति ने अपने सीमित दायरे के अलावा न कुछ देखा और न कुछ भी अन्यथा अनुभव किया, उसकी दकियानूसी तथा संकीर्ण मनोवृत्ति के प्रति व्यंग्य-स्वरूप यह कहावत प्रयुक्त होती है।

—परंपरागत रूढ़ियों के घेरे में ग्रसित व्यक्ति।

**पाठा : बेरा रौ मींडकौ**। कुएँ का मेंढ़क।

**कुअे ई भांग पड़ी।** २३९२

कुएँ में ही भाँग पड़ी हुई है।

—जिस जाति, समाज, प्रांत व राष्ट्र के समस्त व्यक्ति मतिभ्रष्ट हों उन पर व्यंग्योक्ति।

—किसी भी रूढ़ि या कुरीति का अंधानुकरण करने वाले व्यक्तियों के लिए।

**पाठा : कुअे ई भांग रळी**। कुअे में ही भाँग घुली हुई है।

पूरा दोहा :

**दुविध्या है अत अटपटी, घट-घट मांय घड़ीह।**

**किण-किण नै समझावस्यां, कुअे ई भांग पड़ीह॥**

घट-घट में पड़ी यह दुविधा बहुत विकट है, कुछ भी समाधान खोजे नहीं मिलता। किस-किसको समझाएँ, जिस कुएँ का ये पानी पीते हैं, उसमें ही भाँग बुरी तरह से घुली हुई है।

**कुअे में पड़्यां कुण ई सूखौ नीं रैवै।** २३९३

कुएँ में गिरने पर कोई भी सूखा नही रहता।

—करणी के अनुरूप फल अवश्यंभावी है।

—पतित व्यक्ति का आचरण क्योंकर पावन रह सकता है?

**पाठा : बेरा में पड़्यां, कुण ई कोरौ नी बचै।**

कुएँ में गिरने पर कोई कोरा नहीं बचता।

**कुअे में पांणी तौ घणौ ई, काढ़लै सो आपरौ।** २३९४

कुएँ मे पानी तो बहुतेरा, जो निकालें सो अपना।

—दुनिया में पदार्थ तो अपार हैं, पर अपनी मेहनत से जो प्राप्त किया जा सके, वह अपना है।

—कण-कण में बिखरे असीम ज्ञान को जितना हासिल किया जाय, केवल वही अपना है।

—राम-राम के अमृत-कुंड से जितना अमृत पीया जा सके वही एक मात्र उपलब्धि है।

**पाठा : वेरा में पांणी तौ अतूट पण काढ़ै जित्तौ आपरौ।**

कुएँ में पानी तो अटूट पर जितना निकाल सकें, वही अपना है।

**कुअे री छींया कुअे में।** २३९५

कुएँ की छाया कुएँ में।

—कुएँ की छाया फकत कुएँ के ही काम आती है, दूसरों को उससे रंचमात्र भी लाभ नहीं पहुँचता।

—जिस कंजूस व्यक्ति का धन या ज्ञान किसी के काम न आये।

—अत्यधिक मेहनत का अकिंचन फल मिले तब।

—जो रहस्य या वेदना बाहर प्रकट न की जा सके।

—जो व्यक्ति केवल अपने स्वार्थ के दायरे में ही सिमटा रहे।

—काम पड़ने पर जो उच्च-अधिकारी या नेता किसी की मदद न करे।

**पाठा : बेरा री छींया बेरा मं। बेरौ = कुआँ।**

**कुअे री माटी कुअे में ईं लागै।** २३९६

कुएँ की मिट्टी कुएँ में ही लग जाती है।

—कुआँ खोदते समय जो मिट्टी बाहर निकलती है, वापस कुएँ को बाँधने पर वही मिट्टी गार के रूप में काम आ जाती है।

—घर की बात या चर्चा घर नें ही रह जाय तब। या घर का लाभ घर ही में रह जाय, बाहर किसी के साथ न बँटे तब।

—जिस कार्य में लाभ न हो। आय के अनुरूप ही खर्च।

—शारीरिक मेहनत से कमाया हुआ पैसा वापस शारीरिक जरूरतों के निमित्त ही खर्च हो जाय तब।

**पाठा : बेरा रीः माटी बेरा में ई लागै।**

**कुअे रौ कबूतरौ।** २३९७

कुएँ का कबूतर।

—जिस व्यक्ति का केवल एक आश्रय के अलावा दूसरा कोई सहारा न हो।

—कदीमी धंधे के सिवाय जिस व्यक्ति के लिए दूसरा कोई विकल्प न हो।

—जिस व्यक्ति के संपर्क का दायरा निहायत सीमित हो।

पाठा : **बेरा रौ कबूड़ौ।** कुएँ का कबूतर।

**कुऔ ऊंडौ ज्यां पछीतां ऊंची।** २३९८

कुआँ गहरा जितनी ही दीवारें ऊँची।

—जो व्यक्ति बुरे लक्षणों में एकदम समान हों।

—जो व्यक्ति कपट-जाल में एक-दूसरे से बढ़कर हों।

पाठा : **बेरौ ऊंडौ जित्ती ई पछीतां ऊंची।**

**कुगांव में इरंडियौ ई रूंख।** २३९९

ऊसर गाँव में एरंड भी पेड़।

—जिस स्थान पर विद्‌वानों का नितांत अभाव हो वहाँ मामूली पढ़ा-लिखा व्यक्ति भी विद्‌वान माना जाता है।

—अनभिज्ञता का सहज परिणाम।

मि.क.सं.२०७,१३७७

**कुजस अर मौत बिरौबर।** २४००

कुयश और मौत बराबर।

—समाज की मर्यादाओं के बीच रहने वाले आदमी की बदनामी हो जाय तो वह मृत्यु के समान है।

—अप्रतिष्ठित व्यक्ति मरे समान।

**कुजात मनायां माथै चढ़ै।** २४०१

निकृष्ट व्यक्ति मनाने से सिर चढ़ता है।

—ओछा व्यक्ति खुशामद या आजीजी करने पर ज्यादा ऐंठता है।

—हीन व्यक्ति किसी भी तरह अपनी हीनता नहीं छोड़ता।

**कुटिया में काग पड़ै।** २४०२

कुटिया में कौवे पड़ते है।

—जो घर देखते-देखते समूचा बर्बाद हो जाय तब।

—नितांत निर्जन व सूनी जगह के लिए।

—निहायत असहाय तथा अभाव-ग्रस्त व्यक्ति के लिए।

**पाठा : घर में कागला पड़ै। झूंपै काग पड़ै।** घर में कौवे पड़ते हैं।

**कुठौड़ पीड़ अर सुसरौजी वेद।** २४०३

कुठौर पीड़ा और श्वसुर वैद्य।

—बहू के गुप्तांगों के आस-पास दर्द हो तथा गॉव में एक मात्र वैद्य श्वसुर ही हो तो लज्जावश श्वसुर को वह जगह उघाड़कर नहीं बताई जा सकती और न दर्द को आसानी से भुलाया जा सकता है।

—कोई परिजन या घनिष्ठ मित्र धोखा कर जाय तब।

—लज्जा-जनक बात क्योंकर किसी के सामने उजागर की जाय।

—जब किसी व्यक्ति की दुविधा-जनक मनःस्थिति हो तब।

**पाठा : कुठांड़ खाई अर सुसरौ वेद।** कुठौर चोट लगी और श्वसुर वैद्य।

**कुड़छी कड़ायला रौ मेळ-मांढ़ौ पण दांतां रौ देवाळौ।** २४०४

कलछी कड़ाही का मेल-मिलाप पर दॉतो का दिवाला।

—अच्छे व्यंजन बनाने के लिए कलछी-कड़ाही तो सुरक्षित है, पर घी-शक्कर नहीं, तब दाँत तो अछूते ही रह जाते हैं। उनकी लालसा मिटती नहीं।

—सारे संयोग साथ न जुड़ें तब तक मन-वांछित बात बनती नहीं।

**कुण ई राजा व्हौ, परजा तौ सदावंत दुखी इज रैवैला।** २४०५

चाहे जो राजा हो, प्रजा तो सदैव दुखी ही रहेगी।

—आज के प्रजातंत्र पर यह उक्ति कितनी सटीक है कि सामंती व्यवस्था और अंग्रेजों के हटने पर प्रजा अमन-चैन से रहेगी, पर इस आशा पर भयंकर वज्रपात हो गया। निराश होकर आम आदमी को यह स्वीकार करना ही पड़ा कि चाहे कैसा ही राज-तंत्र हो प्रजा तो हमेशा कष्ट उठाने के लिए ही बनी है, सो उठाती रहेगी।

**कुण कह्यौ बाई बांवळिये चढ़जै।** २४०६

किसने कहा बहिन बबूल पर चढ़ना।

—अपनी मर्जी से कोई औंधा या खतरनाक काम करे तब।

—अपने द्वारा किये गलत काम की जिम्मेवारी अपनी ही होती है।

—अपने हाथों किये गये बुरे काम का परिणाम स्वयं ही को भुगतना पड़ता है।

**कुण किण रै आवै, औ तौ दांणा-पांणी लावै।** २४०७

कौन किसके घर आता है, यह तो दाना-पानी लाता है।

—अन्न-जल के योग से ही कोई अतिथि किसी के घर जाता है।

—आतिथ्य सत्कार के प्रति मेजवान की विनम्र अभिव्यक्ति।

पाठा : **कुण किणी रै आवै-जावै, दांणौ-पांणी खींच्यां लावै।**

कौन किसके यहाँ आता-जाता है, दाना-पानी खींचकर लाता है।

**कुण कैवतौ के वींद नै मिरगी आवै?** २४०८

कौन कह रहा था कि दूल्हे को मिर्गी आती है?

—परोक्ष रूप से भंडा फोड़ना या गुप्त बात उजागर करना।

—बनती बात को बिगाड़ने वाले व्यक्ति पर कटाक्ष।

**कुण जांणै कठै बीजळी पड़ै?** २४०९

कौन जाने कहाँ बिजली गिरे?

—अकस्मात् कब किस पर आफत आ जाय।

—प्राकृतिक प्रकोप या अनिष्ट का पहले किसी को पता नहीं चलता।

**कुण जांणै रांवण किण दिस गियौ?** २४१०

कौन जाने रावण किस दिशा में गया?

—जब रावण जैसे अतुल्य अत्याचारी का पता नहीं लगा तो मामूली दुष्ट की तो किसी को भनक तक नहीं लगेगी कि उसका कहाँ अंत हुआ।

—कैसे भी अपूर्व आततायी को एक दिन समाप्त होना ही पड़ता है।

—अन्यायी का विनाश अवश्यंभावी है।

**कुण पीळा चावळ दीन्हा ?** २४११

किसने पीले चावल दिये ?

—खामखाह दखल जमाने वाले व्यक्ति के लिए।

—अपनी मर्जी से विकट परिस्थिति में फँसने वाले को परिहास में।

**कुण-सी बाड़ी रौ बथवौ ?** २४१२

किस बगिया का बथुआ है ?

दे.क.सं.२२९४

**कुण हाथी मारै, कुण दांत उपाड़ै ?** २४१३

कौन हाथी मारे, कौन दाँत निकाले ?

—बेहद कठिन काम में हाथ डालने का साहस कौन करे ?

—मुश्किल काम की बेकार जोखिम कौन ले ?

—खतरनाक आतंकवादी को कौन मरवाये, कौन इनाम पाये ?

**कुतकौ बड़ी किताब, लांठा ई लटका करै।** २४१४

डंडा बड़ा पुराण, बड़ों-बड़ों का तोड़े मान।

—जो बातों से नहीं समझता, वह मार से झटपट समझ जाता है।

—डंडा सब से बड़ी शिक्षा है।

—लाठी के जोर का कौन लोहा नहीं मानता ?

**कुतड़ौ मोदै के गाडी उणरै पांण चालै।** २४१५

कुत्ते को अभिमान है कि गाड़ी उसी के बूते पर ही चलती है

—अयोग्य व्यक्ति के व्यर्थ गुमान पर कटाक्ष।

—जो व्यक्ति खामखाह कोई बड़ा मुगालता पाले।

—जिस व्यक्ति को अपनी क्षमता का झूठा एहसास हो।

—सर्वथा नादान, पागल, प्रचंड अहंकारी को यह भ्रम होता है कि दुनिया उसी के बूते पर चलती है।

**पाठा : कुत्तौ जांणै के गाडी उणरै पांण ई चालै।**

कुत्ता समझता है कि गाड़ी उसी के भरोसे चलती है।

**कुतियौ कादा में कळग्यौ।** २४१६

कुत्ता कीच में धँस गया।

—कोई व्यक्ति बुरी तरह विपत्तियों में फँस जाय तब।

—जिस व्यक्ति के जीवन-निर्वाह का कोई साधन न हो।

—बड़ा व्यक्ति परिस्थितियों के फेर में एकदम हताश हो जाय, तब।

**कुत्तां री टोळी में आटा रौ दीयौ।** २४१७

कुत्तों के बीच आटे का दीपक।

—कुत्तों के बीच आटे का दीपक रखा जाय तो वह कितनी देर टिक सकता है! वे उसे तत्काल खाकर नष्ट कर डालेंगे।

—लंपट व्यक्तियों के बीच किसी औरत की क्या सुरक्षा?

—स्वार्थ की पूर्ति करने वाली वस्तु को कौन छोड़ता है?

**कुत्तां रै पाड़ौस सूं किसौ पोहरौ लागै!** २४१८

कुत्तों के पड़ोस से पहरा थोड़े ही लगता है!

—अयोग्य या अक्षम व्यक्ति पर भरोसा करना व्यर्थ है।

—विश्वसनीय व्यक्ति पर ही विश्वास करना चाहिए।

**कुत्तां रै भुसियां बादळ नंह बिखरै।** २४१९

कुत्तों के भौंकने पर बादल नहीं बिखरते।

—बड़े मेले में कुछेक व्यक्ति चिल्ल-पों करें तो मेला थोड़े ही बिखरता है।

—एकाध व्यक्ति के विरोध करने पर बड़ा आयोजन बंद नहीं होता।

—कुछेक व्यक्तियों के प्रतिरोध करने पर परिवर्तन की घटाएँ बिखर नहीं सकतीं।

**कुत्तां रै भूंकियां भलां कतारिया कद ढबै ?** २४२०

कुत्तों के भोंकने पर भला कारवाँ कब रुकता है ?

—अदने व्यक्तियों के प्रतिरोध से भला बड़ा काम कब रुकता है ?

—बकने वाले बकते रहते हैं और धुन का धनी अपने पथ पर आगे बढ़ता रहता है।

—निंदा करने वालों के डर से भला समझदार लोग पीछे क्यों हटें ?

**कुत्तां रै संप व्है तौ गंगाजी न्हाय नीं आवै ?** २४२१

कुत्तों में एकता हो तो गंगा-स्नान करके न आयें ?

—तेज भागने की क्षमता होने पर भी केवल झगड़ालू वृत्ति के कारण कुत्ते गंगा-स्नान के लिए नहीं जा सकते। गंगा-स्नान का मतलब यहाँ पुण्य-कार्य से है।

—आपसी फूट छोटे या बड़े काम में हमेशा बाधा उपस्थित करती है।

—पारस्परिक एकता से ही कोई काम संभव हो पाता है।

**कुत्तां वाळौ चूरमौ।** २४२२

कुत्तों वाला चूरमा।

चूरमौ = घी, तेल, खाँड के सम्मिश्रण में मसली हुई रोटी का व्यंजन।

—सामूहिक पंचायत में जब कोई अहम मसला काफी देर की बहस-बाजी से रंचमात्र भी न सुलझे तब।

—आपसी कलह का दुष्परिणाम सुनिश्चित है।

—निहित स्वार्थ के कारण कोई झगड़ा न सुलझे तब।

**कुत्ता आळी पूंछ।** २४२३

कुत्ते वाली पूँछ।

—कुत्ते की मुड़ी हुई पूँछ किसी तरह सीधी नहीं हो सकती।

—लाख समझाने पर भी जो व्यक्ति अपनी बुरी आदत न छोड़े।

—कुटिल व्यक्ति कभी सीधा नहीं हो सकता।

**कुत्ता ई खीर को खावैला नीं।** २४२४

कुत्ते भी खीर नहीं खाएँगे।

—ऐसी दुर्गति होगी कि कोई अदने-से-अदना आदमी भी नहीं पूछेगा।

—किसी विशेष व्यक्ति से भिड़ने पर भारी क्षति पहुँचाने की धमकी।

—बात इस तरह बिगड़ जाएगी कि उसके सुधरने की कोई गुंजाइश ही नहीं बचेगी।

**कुत्ता कूटतौ भंवै।** २४२५

कुत्ते पीटते हुए डोल रहा है।

—एकदम निठल्ले व्यक्ति के लिए।

—जिस व्यक्ति के जिम्मे किसी तरह का कोई काम न हो।

**कुत्ता जांणै अर चमड़ौ जांणै।** २४२६

कुत्ते जानें और चमड़ा जाने।

—अपनी जिम्मेवारी दूसरे के गले में डालकर यह कहना कि अब वही खींचे और ओढ़े।

—दूसरों की आफत व चिंता से अपने को दूर रखने की सतर्कता।

—स्वयं संकट से बचकर दूसरे को उलझाते समय इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है।

**कुत्ता तौ पींडी इज पकड़ै।** २४२७

कुत्ते तो पिंडली ही पकड़ते हैं।

—दुष्ट आदमी तो हमेशा हानि ही पहुँचाते हैं।

—कुटिल व्यक्ति अपनी कुटिलता नहीं छोड़ सकता।

**कुत्ता थारी कांण नीं, थारा धणी री कांण है।** २४२८

कुत्ते तेरा लिहाज नहीं, तेरे स्वामी का लिहाज है।

—स्वामी की प्रतिष्ठा के कारण ही लोग कुत्ते का भोंकना बर्दाश्त करते हैं—स्वामी के लिहाज से ही कुत्ते को पुचकारते हैं।

—जब कोई अदना व्यक्ति अपने स्वामी के जोर पर हेकड़ी दिखाए तब।

पाठा : **कुत्ता थारी कांण के थारा धणी री कांण?**

कुत्ते तेरा लिहाज कि तेरे स्वामी का लिहाज?

**कुत्ता नै टुकड़ौ न्हाकता तौ क्यूं भुसतौ ?** २४२९

कुत्ते को टुकड़ा डालते तो वह क्यों भोंकता ?

—रिश्वत का टुकड़ा डालने से मुँह बंद हो जाता है ।

—ओछे व्यक्ति को मामूली स्वार्थ से खुश किया जा सकता है ।

**कुत्ता नै हाडकां री ई चाव ।** २४३०

कुत्ते को हड्डी की ही चाह ।

—लंपट को व्यभिचार या औरत की ही लालसा ।

—भ्रष्ट व्यक्ति को रिश्वत से ही काम ।

—अदने आदमी का अदना ही स्वार्थ ।

**कुत्ता पंसेरियां लै जावै ।** २४३१

कुत्ते पंसेरियाँ ले जा रहे हैं ।

—जिस समाज या शासन में अत्यधिक पोल हो तो सर्वत्र लूट-खसौट मच जाती है । कुत्ते, सियार और कौवों की बन आती है ।

—जहाँ घनघोर अराजकता हो ।

**कुत्ता फजीती ।** २४३२

कुत्तों वाला झगड़ा ।

—खामखाह की कलह ।

—ओछे स्वार्थ का झगड़ा ।

**कुत्ता री कुपाळी ।** २४३३

कुत्ते की खोपड़ी ।

—जो व्यक्ति हरदम व्यर्थ की बकवास करे ।

—जो मनुष्य बिना वात किसी का सिर चाटता रहे ।

—जो आदमी सदैव अपने ही स्वार्थ का रोना रोये ।

**कुत्ता री खाल ओढ़ी ।** २४३४

कुत्ते की खाल ओढ़ रखी है ।

—जो व्यक्ति सामाजिक मर्यादा का कतई खयाल न रखे।

—निहायत बेशर्म व्यक्ति के लिए।

**कुत्ता रोळ।** २४३५

कुत्तों का खेल।

—निपट छिछोरापन। बेवजह कलह।

—जिस समाज में कुछ भी व्यवस्थित न हो।

**कुत्ती आळा कूकरिया है।** २४३६

कुत्ती वाले पिल्ले हैं।

—अधिक संतान व गरीबी के कारण जो माँ-बाप अपने बच्चों का पालन-पोषण नहीं कर सकते।

—कुतिया के छोटे पिल्ले सुहाने लगते है व बड़े होने पर भद्दे हो जाते हैं। उसी प्रकार जिस औरत के बच्चे उम्र बढ़ने पर बदसूरत होने लगें तब।

**कुत्ती ई गी नै पटियौ ई लेयगी।** २४३७

कुत्ती गई और पट्टा भी ले गई।

—बदचलन औरत भागते समय घर से अपने साथ कुछ धन-माल ले जाये तब।

—किसी काम में दुहरा नुकसान होने पर।

—जिस व्यक्ति के कारण किसी को दुहरी क्षति हो तब ...।

**कुत्ती क्यूं भुसै के टुकड़ां री खातर।** २४३८

कुत्ती क्यों भौंकती है कि टुकड़ों के लिए।

—मनुष्य समाज में सर्वत्र स्वार्थ ही का भौंकना है।

—पेट की आग के सामने क्या कुत्ता और क्या मनुष्य सभी लाचार हैं। हाय-तोबा मचाते ही रहते हैं।

—गुजर-बसर के लिए हर व्यक्ति को अदने-से-अदना काम करना पड़ता है।

—मजबूरी मनुष्य के हर कार्य का संचालन करती है।

—मनुष्य के प्रत्येक काम में कुछ-न-कुछ स्वार्थ अभिनिहित रहता है।

—भ्रष्ट व्यक्ति क्यों रोड़े अटकाता है कि रिश्वत की खातिर।

**कुत्ती जाया कूकरिया, अेकै डोरै ऊतरिया।** २४३९

कुतिया के पिल्ले सभी एक समान।

—जिस परिवार के सभी सदस्य एक-से-एक बढ़कर दुर्गुणी या बदचलन हों।

—एक-जैसे चरित्रहीन व्यक्तियों के लिए।

—जो औरत हर साल बच्चे जने और वे सभी अहदी और बेकार-से हों।

**कुत्ती वाळी वैंत।** २४४०

कुत्ती वाली तरकीबें।

—जिस मनुष्य में कुत्ती वाली तरकीबें हों जो वक्त पर पूँछ हिला सके, पेट दिखा सके, गुर्रा सके या वक्त पर भौंक सके।

—मनुष्य होकर जो व्यक्ति कुत्ती वाले लक्षणों से युक्त हो।

**कुत्तै आळी जूंण पूरी करै।** २४४१

कुत्ते वाली योनि पूरी कर रहा है।

—केवल पेट की खातिर गुजर-बसर करने वाले व्यक्ति के लिए।

—निहायत बेशर्म की जिंदगी जीने वाले के लिए।

—जो व्यक्ति कुत्ते की तरह हर वक्त दुत्कारें सहता रहे।

**कुत्तै आळी नींद।** २४४२

कुत्ते वाली नींद।

—जो व्यक्ति सोते हुए भी सजग रहे।

—स्वामी भक्ति के अलावा नींद भी कुत्ते का ऐसा गुण है जो मनुष्य के लिए भी श्रेयस्कर है।

—बेहद सतर्क व्यक्ति के लिए।

**कुत्तै नै अर छोटै टाबर नै धुरकारयोड़ौ ई आछौ।** २४४३

कुत्ते और छोटे बच्चे को दुत्कारना ही अच्छा है।

—छोटा बच्चा और कुत्ता मुँह लगाने पर कुछ-न-कुछ हानि ही पहुँचाता है।

—छोटा बच्चा शुरुआत में ही दुष्प्रवृत्तियों का शिकार न हो जाय, इस कारण उस पर अंकुश लगाना जरूरी है।

**कुत्तै नै मूंडै लगावणौ आछौ कोनीं।** २४४४.

कुत्ते को मुँह लगाना उचित नहीं।

—मुँह लगाने पर कुत्ता मुँह चाटता है। ओछे व्यक्ति का भी ऐसा ही स्वभाव होता है, इसलिए उससे भी दूर रहना चाहिए।

—मूर्ख व झगड़ालू व्यक्ति से मित्रता नहीं रखनी चाहिए।

**कुत्तै रा कांम गधैड़ौ कीना, मोरां मूसळ बाजै।** २४४५

कुत्ते का काम गधे ने किया, खूब पड़ी मूसल की मार।

दे.क.सं.२०५९

**कुत्तै री पूंछ दस बरस जमीं में राखी पण निकाळी तौ वळै आंटी री आंटी।** २४४६

कुत्ते की पूँछ दस साल जमीन में रखी, पर निकाली तो टेढ़ी की टेढ़ी।

—जो भ्रष्ट व्यक्ति अपनी बुरी लत कभी नहीं छोड़े।

—कुटिल व्यक्ति का स्वभाव जीवन-पर्यंत नहीं बदलता।

मि.क.सं.२४२३

**कुत्तै री मौत मरसी।** २४४७

कुत्ते की मौत मरेगा।

—दुराचारी आखिर घिनौनी मौत मरकर ही रहता है।

—जिस व्यक्ति के मरने की किसे भी परवाह न हो। नितांत उपेक्षित मृत्यु।

**कुत्तै रै मूंडै जांणै कोई खळ पड़ी।** २४४८

कुत्ते के मुँह में मानो खली पड़ी।

—खली को चबाने के स्वाद में कुत्ता भौंकना भूल जाता है। इसी प्रकार दुष्ट व्यक्ति भी स्वार्थ पूरा होने पर चुप हो जाता है।

—स्वार्थ-पूर्ति होने पर किसी व्यक्ति का विरोधी-स्वर दब जाय तब !

**कुत्तै रौ सिर खल्लै जोग ।** २४४९

कुत्ते का सिर जूते के योग्य ।

—हीन व्यक्ति प्रताड़ना व पिटाई से ही मानता है ।

—अधम व्यक्ति विनम्रता की वाणी नहीं समझता, फकत जूते की भाषा ही जानता है ।

**कुत्तौ कपाव रौ कांईं करै ?** २४५०

कुत्ता कपास का क्या करे ?

—जिसे वस्तु की पहिचान न हो, वह उसका ठीक उपयोग भी नहीं कर सकता ।

—जो वस्तु जिसके काम आये उसी के लिए उसकी उपादेयता है ।

—अपात्र को अच्छी चीज सौंपना, उसे बर्बाद करने के ही समान है ।

**कुत्तौ काच देख्यौ अर भुस-भुस मूवौ ।** २४५१

कुत्ते ने काच देखा और भोंक-भोंककर मर गया ।

—काच में अपने प्रतिबिंब को दूसरा कुत्ता समझकर वह भोंकता-भोंकता ही मर गया ।

—अनभिज्ञ व्यक्ति के लिए कोई भी वस्तु उपादेय न होकर हानिप्रद ही साबित होती है । मसलन बच्चे या बंदर के हाथ में उस्तरा ।

—अज्ञान का ही दूसरा नाम मृत्यु है ।

—अज्ञानी स्वयं अपने स्वरूप को कहाँ पहिचान पाता है !

**कुत्तौ गाडै री छाया हालै, जांणै मांहरै जोर सूं गाड़ी चालै छै ।**–व.८९ २४५२

कुत्ता गाड़ी की छाँह चले, समझे कि उसी के जोर से गाड़ी चल रही है ।

दे.क.सं.२४१५

**कुत्तौ घुरसाळी में ईं घोरका करै ।** २४५३

कुत्ता अपनी दर में ही गुर्राता है ।

—अपने घर या गाँव में सभी को जोश रहता है ।

—हर मनुष्य की ताकत सापेक्ष होती है । परिचितों के बीच वह निर्भय होता है और परदेश में आशंकित रहता है ।

—मानवीय जीवन की कई स्थितियों में स्थान का भी अपना महत्त्व होता है।

**कुत्तौ चोरां भिळग्यौ।** २४५४

कुत्ता चोरों से मिल गया।

—कोई विश्वस्त व्यक्ति धोखा करे तब।

—सहयोगी या साथी विरोधियों से मिल जाए तब।

**कुत्तौ नारेळ रौ कांईं करै ?** २४५५

कुत्ता नारियल का क्या करे ?

—अनभिज्ञ, अक्षम या अयोग्य व्यक्ति के लिए अच्छी वस्तु की भी कोई उपादेयता नहीं होती।

—तुच्छ आदमी ऊँची बातों का महत्त्व क्या समझे !

—गँवार आध्यात्मिक ज्ञान का स्वाद क्या जाने !

मि.क.सं.२४५०

**कुत्तौ नीं देखै तौ नीं भुसै।** २४५६

कुत्ता न देखे तो न भोंके।

—अनजान व्यक्ति की गलती क्षम्य होती है।

—अनजाने अपराध करने वाला निर्दोष होता है।

**कुत्तौ नै कुमांणस तीजै पग पांतरै।** २४५७

कुत्ता और कुटिल मनुष्य तीसरे कदम पर ही भूल जाते हैं।

—कुत्ता और कमीन शीघ्र एहसान भूल जाते हैं।

—कृतघ्न व्यक्ति कुत्ते ही के समान है।

**कुत्तौ बैन रै भाई, कुत्तौ सासू रै जंवाई।** २४५८

कुत्ता बहिन का भाई, कुत्ता सास का जमाई।

—यों तो बहिन के लिए भाई से बढ़कर कोई रिश्ता नहीं होता और जमाई से बढ़कर सास का कोई अपना नहीं होता। यदि वह बहिन या सास के घर ज्यादा रहे तो उनकी कद्र कुत्ते जैसी ही हो जाती है। सभी उन्हें दुत्कारने लगते हैं।

—कहीं भी ज्यादा दिन रहने से इज्जत नहीं रहती।

**कुत्तौ भुस-भुस मरग्यौ अर धणी गिनार ई नीं कीवी।** २४५९

कुत्ता भोंक-भोंककर मर गया और मालिक ने परवाह तक नहीं की।

—जिसके लिए प्राण तक गँवाये उसने तो कुछ खयाल ही नहीं किया।

—स्वामिभक्त नौकर की निर्मम मालिक के प्रति अंतर्वेदना।

—कृतघ्न व्यक्ति की सेवा-बंदगी करना निरर्थक है।

**कुत्तौ लाय में नीं बळै।** २४६०

कुत्ता आग में नहीं जलता।

—कुत्ते की तरह जो चालाक व्यक्ति हर आफत से बचकर निकल जाय।

—चतुर व्यक्ति आसन्न संकट का सामना करने में सफल होता है।

**पाठा : कूतराँ लाय में कद बळै?**

**कुत्तौ सांपड़ियां बाछड़ौ नंह बणै।** २४६१

कुत्ता नहाने से बछड़ा नहीं बन सकता।

—बाहर की सफाई से भीतर का मैल नहीं धुल सकता।

—मूर्ख चाहे जितनी शिक्षा ग्रहण करे, वह ज्ञानी नहीं बन सकता।

—यों इस उक्ति का उद्‌गम जातिगत संस्कारों से है, पर आज उसका कोई अर्थ नहीं रह गया।

**कुत्तौ होय नीं भुसै?** २४६२

कुत्ता होकर भी नहीं भोंकता?

—कुत्ते का काम ही है टुकड़ों के बदले भोंकना, फिर भी वह न भोंके तो उसे रखना ही बेकार है।

—जो व्यक्ति गुलाम होकर भी यथोचित हाजरी न बजाये।

—चमचे नेता का जयगान न करें तब भी यह उक्ति काम में ली जा सकती है।

**कुत्तौ होयनै ई कोई नीं भुस्यौ।** २४६३

कुत्ता होकर भी कोई नहीं भोंका।

—किसी को कानोंकान भनक तक नहीं पड़ने देना।

—अत्यधिक होशियार व्यक्ति अपनी चालाकी का गुमान करते हुए इस उक्ति का प्रयोग करता है कि साफ बचकर निकल गया, कोई कुत्ता तक नहीं भौंका उसे देखकर।

**कुदांणौ किणरौ ई खोटौ।** २४६४

कुदाना किसी का भी खोटा।

—काला धन किसी से भी मिले, वह हराम है।

—दूसरों की बुरी कमाई का पैसा भी घर में आना अहितकर है।

—बुरी कमाई की भर्त्सना।

**पाठा : कुदांणौ आयोड़ौ ई खोटौ।** कुदाना आया हुआ भी खोटा।

**कुदांणौ कठारौ ई कावळ।** कुदाना कहीं का भी खराब।

**कुदिये न कुऐ, खेलिये न जुऐ।** २४६५

कूदो न कुआँ, खेलो न जुआ।

—कूएँ के ऊपर से कूदना और जूआ खेलना दोनों ही घातक हैं।

—जिस काम से शरीर को क्षति पहुँचे व जिस काम में आर्थिक खतरा हो उसे नहीं करना चाहिए। नसीहत की बात।

**कुपथ्य वेद री सांन बिगाड़ै।** २४६६

कुपथ्य वैद्य की शान बिगाड़ता है।

—दूसरे की गंफलत से किसी की प्रतिष्ठा को ठेस लगे तब।

—समाज में हर किसी की प्रतिष्ठा एक दूसरे पर निर्भर करती है।

**कुपातर जांम रौ बेरौ व्हैतौ तौ उठै ई नट जाती।** २४६७

कुपात्र बेटे का पता होता तो वहीं मना कर देती।

—यदि यह पता होता कि अपनी ही कोख से जन्मा बेटा ऐसा नालायक होगा तो सहवास के समय वहीं पति को मना कर देती।

—बदमाश बेटे को लक्ष्य करके।

—कुपुत्र के लिए माँ जितना पश्चाताप करे, थोड़ा है।

—भवितव्यता की किसी को यत्किंचित् जानकारी नहीं होती।

—आने वाली परिस्थितियों पर किसी का वश नहीं चलता ।

**कुपाळी-कुपाळी री मत न्यारी ।** २४६८

कपाल-कपाल की मति न्यारी ।

—हर व्यक्ति का स्वभाव और समझ भिन्न होती है ।

—अपनी-अपनी समझ का ही हर व्यक्ति निर्देश मानता है ।

—मुण्डे-मुण्डे मतिर्भिन्ना: ।

मि.क.सं.१७८२

**कुबार रौ किसौ तिंवार ।** २४६९

कु-वार का कैसा त्योहार ।

—यों तो त्योहार के लिए कोई दिन 'कुवार' नहीं होता । सभी त्योहार तिथियों के आधार पर ही होते हैं पर किसी त्योहार के दिन किसी आत्मीय की मृत्यु हो जाय तो वह शोक मनाने जैसा ही हो जाता है । त्योहार का वह शुभ दिन उस व्यक्ति के लिए 'कुवार' के समान हो जाता है ।

**कुमांणस आयौ भलौ न जायौ भलौ ।** २४७०

कुपात्र आया भला न जाया भला ।

दे.क.सं.१७८५

**कुमांणस टाबर पचावा री गळी में वासदी जगावै ।** २४७१

कुपुत्र घास की गली में आग जलाता है ।

—कुपुत्र को अपने ही धर की लाभ-हानि का ध्यान नहीं रहता कि घास के पास आग जलाना कितना खतरनाक है ।

—कुपुत्र को अपनी मामूली जिम्मेवारी का भी एहसास नहीं होता ।

—बिगड़ी संतान का लक्षण ।

**कुमांणस टाबर पांणी में पगरखियां पैरै ।** २४७२

कुपुत्र पानी में जूतियाँ पहिनता है ।

दे.क.सं.२४७१

**कुमांणस पूत तिंवार नै रूसै।** २४७३

कुपुत्र त्योहार पर रूठता है ।

—कुपुत्र खुद का भला भी नहीं सोच सकता, इसीलिए तो वह त्योहार के दिन रूठकर मिष्ठान्न से वंचित रहता है ।

—मूर्ख व्यक्ति की नादानी का चित्रण।

**कुमांणस रौ कोड विघन सारू।** २४७४

कुपात्र का उत्साह विघ्न के लिए ।

—दुष्ट व्यक्ति विघ्न पैदा करने में ही खुशी समझता है ।

—कलह करने में ही जिस व्यक्ति को आनंद मिलता हो ।

**कुम्हार कुम्हारी सूं नीं पड़पै तौ गधेड़ी रा कांन मरोड़ै।** २४७५

कुम्हार कुम्हारी से हार जाय तो गधी के कान उमेठता है ।

—बड़े या सबल अधिकारी से दबकर जो कर्मचारी अपने मातहत पर गुस्सा उतारे तब ।

—बड़ों के आगे नहीं चले तो छोटों पर रोब गाँठना ।

पाठा : **कूंभार कूंभारी री झाळ गधा माथै काढ़ै ।**

कुम्हार कुम्हारी का गुस्सा गधे पर उतारता है ।

**कूंभार कूंभारी नै कोनीं जीतै तौ गधा रा कांन मठोठै ।**

कुम्हार कुंम्हारी से नहीं जीतता तब गधे के कान उमेठता है ।

**कूंभार री रीस गधेड़ा माथै ।**

कुम्हार का क्रोध गधे पर ।

**कुम्हार खांडी में बरतै।** २४७६

कुम्हार टूटी बरतता है ।

—कुम्हार के पास बासनों की बहुतायत होते हुए भी वह टूटी हँडिया काम में लेता है ।

—पेशेवर लोगों की लोभ-वृत्ति पर कटाक्ष ।

—बहबूदी के बीच जो व्यक्ति तंगी भुगते ।

—आधिक्य के प्रति अरुचि होना स्वाभाविक है ।

**पाठा : कूंभार फूटी हांडी में खावै ।** कुम्हार फूटी हँड़िया में खाये ।

**कुम्हार री गधी, घर-घर लदी ।** २४७७

कुम्हार की गधी, घर-घर लदी ।

—जो व्यक्ति गुजर-बसर के लिए मारा-मारा फिरे ।

—निर्धन व्यक्ति की मजबूरी ।

**पाठा : धोबी री गधी, घर-घर लदी ।**

**कुम्हार रै पेट तोलड़ियौ नीं खटै ।** २४७८

कुम्हार के पेट में कुल्हड़ तक नहीं पच सकता ।

—मिट्टी का छोटा या टूटा-फूटा बासन भी मुफ्त में देना कुम्हार को अखरता है ।

—पेशेवर लोगों की हीन-वृत्ति पर व्यंग्य ।

—कारीगर अपनी अथक मेहनत के किंचित् अंश का भी त्याग नहीं कर सकता ।

**कुम्हारी रौ गधौ मरै, धोबण सती होवै ।** २४७९

कुम्हारी का गधे मरे, धोबिन सती होय ।

—किसी के प्रति खामखाह की हमदर्दी प्रकट करना ।

—जो व्यक्ति राह चलते बेकार ही किसी का दुख उठाये ।

—बड़े आदमियों के दुख में जो लोग मिथ्या संवेदना प्रकट करें तब ।

**कुरकुरौ पीसै झरझरौ पोवै, जिणरौ मांटी रात्यूं रोवै ।** २४८०

मोटा पीसे भुरभुरी पोये, उसका पति रात को रोये ।

—कर्कशा स्त्री पल्ले पड़ने पर चुपचाप पछताने के सिवाय और चारा ही क्या है !

—फूहड़ औरत पर कटाक्ष ।

—अकुशल व्यक्ति घरवालों को दुख ही पहुँचाता है ।

**कुरब री तौ कांदा रोटी ई भली ।** २४८१

सम्मान की तो प्याज-रोटी भी अच्छी ।

—इस कहावत के दो संकेत हैं—एक तो यह कि यदि मेजबान सम्मान से प्याज-रोटी भी खिलाये तो बेहतर है। दूसरा यह कि इज्जत के साथ अपने ही घर में प्याज-रोटी मिलती रहे तो वह पाँच पक्वान से बढ़कर है।

—अनादर से परोसी हुई मिठाई भी घृणास्पद है।

**पाठा : कुरब रौ तौ कण ई सिरै।** आदर का तो कण भी श्रेष्ठ है।

**आदर री तौ राब ई आछी।** आदर की तो राब भी अच्छी।

**कुरांड कांचळियां सूं ई मूंघी।** २४८२

कर्कशा पत्नी कंचुकियों के बदले भी महँगी।

—फूहड़ स्त्री मुफ्त में मिले तब भी महँगी है।

—बदजात नौकर मुफ्त में मिले तब भी घाटे का सौदा।

—अकुशल कारीगर सस्ता मिले तब भी बुरा।

**पाठा : फूहड़भद्रा कांचळियां सूं ई मूंघी।**

फूहड़ औरत कंचुकियों के बदले भी महँगी।

**कुरोज रोवणौ।** २४८३

बेढंग का रोना।

—बिना मतलब का रोना-धोना।

—भद्दे तरीके से रोना। रोने का भी अपना सलीका होता है।

**कुलंगियां रौ इज काकौ।** २४८४

शैतानों का ही चाचा।

—जो व्यक्ति बेइंतहा बदमाश हो।

—जिस व्यक्ति के मारे नाकों दम हो गया हो।

**कुलकी मांये कण नी ने कागा भाद्ये नूतू।**—भी. १३६ २४८५

कुल्हड़ी में कण नहीं, कौवे भाई को न्योता दूँ।

—घर में अन्न का दाना तक नहीं, तब भोज क्योंकर संभव हो। भोज की जूठन पर ही तो कौवे मँडराते हैं।

—सामर्थ्य के परे जब कोई व्यक्ति विशिष्ट काम करना चाहे।

**कुलखणी रांड अर मुळकणौ मांटी।** २४८६

कुलच्छनी रॉंड और ढुलमुल खाविंद।

मुळकणौ = हर वक्त बिना मतलब मुस्कराने वाला।

—कुलटा पत्नी को ढुलमुल पति मिल जाय तो फिर उसे क्या बंधन।

—दुतरफा कमी रहने से पूरी बात बिगड़ती है।

—सख्ती के बगैर प्रशासन नहीं चल सकता, अराजकता ही फैलती है।

—जिस परिवार का स्वामी ढीला हो और पत्नी बदमाश हो तो भगवान भी उसे सुखी नहीं रख सकता

**कुलड़ियौ भर्‌यौ अर पाधरी पीवर।** २४८७

कुल्हड़ भरा और सीधी पीहर।

—दही का कुल्हड़ भरा और सीधी पीहर। जो औरत अपने ससुराल की बजाय पीहर की चिंता ज्यादा करे तथा उसे फायदा पहुँचाये, वह घर कभी ऊँचा नहीं उठ सकता।

—भलाई भी न्याय-संगत न हो तो वह घातक है।

—हर काम की अपनी प्राथमिकता होती है।

**कुलड़ी में कितराक दिन गुळ गाळीजै।** २४८८

कुल्हड़ में कितने दिन तक गुड़ गाला जा सकता है।

—राजस्थान में गुड़ मांगलिक पदार्थ का सूचक है। उत्सव, त्योहार, विवाह अथवा बड़े आयोजन में उसका उपयोग अनिवार्य है। सामूहिक रूप से खुले आम बीसियों मन गुड़ गलता है।

—कोई भी बड़ा आयोजन छिपकर नहीं किया जा सकता।

—ज्यादा दिन तक किसी बड़े मसले को गुप्त नहीं रखा जा सकता।

—प्रकट होने वाली बात आखिर प्रकट होकर ही रहती है।

**पाठा : कुलड़ी में गुळ कोनीं गळै।** कुल्हड़ में गुड़ नहीं गलता।

**कुळगांव में ढोलण ई माऊ वाजै ।** २४८९

छोटे गाँव में ढोलन भी माजी कहलाती है ।

—छोटे गाँव में बिना योग्यता के भी पूछ हो सकती है ।

—गाँव में बसे लोगों की रुचि का स्तर निम्न होता है, मामूली हुनर वाला बड़ा वैज्ञानिक माना जाता है ।

**कुळ बिना लाज नीं, जूं बिना खाज नीं ।** २४९०

कुल बिना लाज नहीं, जूँ बिना खाज नही ।

—कुलीन औरत लज्जाशील होती है ।

—कुलीनता की अपनी मर्यादा होती है, वह आसानी से भंग नहीं होती ।

**कुळ में कागियौ जलमियौ ।** २४९१

कुल में कुलांगार जन्मा ।

कागियौ = अनाज के दानों में विशेषतया ज्वार बाजरा का एक रोग विशेष । विकीर्ण दाने गलकर काले पड़ जाते हैं । तब वे न तो वापस बोने के काम आते हैं और न खाने के । एक तरह से अखाद्य ।

—जो व्यक्ति कुटुंब के लिए घातक और कलंक हो ।

—दुश्चरित्र व्यक्ति के लिए ।

**कुळ में सपूत अेक ही घणौ ।** २४९२

कुल मे सुपुत्र एक ही काफी ।

—सुखी परिवार में सदस्यों की गणना का महत्त्व नहीं, चरित्र व सद्‌गुणों का महत्त्व है । कुपात्र बीस भी किस काम के, जबकि एक ही सपूत बीस घरों का भला कर सकता है ।

—परिमाण की अपेक्षा गुण का महत्त्व ज्यादा है ।

**कुलालची बेमौत मरै ।** २४९३

कुलालची बेमौत मरता है ।

—लालच का अंत हमेशा बुरा होता है ।

—लालच बुरी बला ।

**कुवाड़ी सूं गाभा धोवै अर करम नै दोसण दैवै।** २४९४

कुल्हाड़ी से कपड़े धोये और भाग्य को दोष दे।

—गलत काम का परिणाम ही बुरा होता है,उसे भाग्य पर नहीं थोपा जा सकता।

—असंगत काम से लाभ की आशा रखना व्यर्थ है,भाग्य को बीच में घसीटना कोई माने नहीं रखता।

**कुसळां आया धाड़वी, धाड़ा लारै धूड़।** २४९५

लौट आये कुशल लुटेरे, लूट को लानत हज़ार।

—डींग मारकर साहस का काम न करने वाला जब सकुशल घर लौट आये तब।

—जोखिम का काम भी प्रत्येक के वश की बात नहीं,कोरा निकल आये तो गनीमत है।

**कूंकूं नै किन्या।** २४९६

कुंकुम और कन्या।

—जिस निर्धन बाप के पास कुंकुम व कन्या के अलावा दहेज देने के लिए कुछ भी न हो तो वह अपनी विवशता इस उक्ति के माध्यम से प्रकट करता है।

—बेटी के बाप की मजबूरी का चित्रण।

—इसके अलावा बहुत ज्यादा दहेज-गहना देने वाला भी इसी उक्ति को विनम्रता से काम लेता है। सोने की पुतली सौंपना ही सब-कुछ है,बाकी दहेज इत्यादि गौण।

**कूंकूं रा पगल्या।** २४९७

कुंकुम के चरण।

—खुशामद या विनम्रता के बहाने व्यंग्य भरा बोल। जब कोई व्यक्ति बार-बार मनाने पर भी न माने और वापस जाने की हेकड़ी बताये तब उसे लक्षित करके यह उक्ति कही जाती है कि यह धूम रास्ता सामने है—कुंकुम के चरण मॉडते हुए बखुशी पधारिये।

—दूसरी ओर जिस महान व्यक्ति के शुभागमन से हार्दिक खुशी हो तब भी यह उक्ति काम में ली जाती है।

**कूंजड़ी आपरा बोर खाटा कद बतावै।** २४९८

कुँजड़ी अपने बेरों को खट्टे नही बताती।

—अपनी चीज में किसी को नुक्स दिखाई नहीं देते अथवा दिखाई भी देते हों तो वह स्वार्थ के वशीभूत मंजूर नहीं करता।

—अपनी वस्तु में बुराई देखने वाली ज्योति ही नष्ट हो जाती है।

—ममत्व के कारण अपनों के दोष नजर ही नहीं आते।

**कूंजड़ै रौ ऊंट मरै अर तेली भद्दर होवै।** २४९९

कुँजड़े का ऊँट मरे और तेली सिर मुँडाये।

भद्दर = परिजनों की मृत्यु पर शोक में सिर मुँडवाना। बाल देना।

—जो व्यक्ति कृत्रिम हमदर्दी का स्वाँग करे।

—सहानुभूति या संवेदना का झूठा दिखावा करने वाले व्यक्ति के लिए।

—बेतुका या असंबंधित व्यवहार करने वाले के लिए।

मि.क.सं.२४७९

**कूंजड़ौ ऊंट रौ पेट भूखौ नीं रैवण दैवै तौ मोर ई कोरा नीं रैवण दैवै।** २५००

कुँजडा ऊँट का पेट भूखा न रहने दे तो उसकी पीठ भी कोरी नही रहने देता।

—जो व्यक्ति मजदूरी के बदले पूरा काम ले।

—पैसों के बदले कसकर मेहनत कराने वाले व्यक्ति के लिए।

**कूंभारी रौ गधौ मुवै अर धोबण सती हुवै।** २५०१

कुम्हारी का गधा मरे और धोबन सती होय।

दे.क.सं.२४७९,२४९९

**कूआ खिणाया बावड़ी, छोड़ गिया परदेस।** २५०२

कुआँ खुदाया बावड़ी, छोड़ गये परदेश।

—आशाओं का सब्ज बाग दिखाकर कोई परिजन जुदा हो जाय तब।

—ठाट फैलाकर जो व्यक्ति दिसावर की राह पकड़े।

—सब ऐश-आराम व ठाट-बाट छोड़कर इस दुनिया से आखिर कूच करना ही पडता है।

**कूआ में हूवै तौ खेळी में आवै।**–व १८ २५०३

कुएँ मे हो तो खेली मे आये।

—भीतर पानी ही न हो तो वह बाहर क्योंकर आये ?

—आय हो तो खर्च हो।

—भीतर बुद्धि हो तो वह बाहर प्रकट हो।

—कुठले में अन्न हो तो वह चाकी में आये।

**पाठा : कोठा में व्है तौ खेळी में आवै।**

**कूआ सूं कूऔ कोनीं मिळै पण मिनख सूं मिनख नै मिळणौ ई पड़ै।** २५०४

कुएँ से कुआँ नही मिलता पर मनुष्य से मनुष्य को तो मिलना ही पड़ता है।

—कुआँ कुएँ के काम नहीं आता, पर मनुष्य तो मनुष्य के काम आता है।

—कुएँ की तरह कोई भी मनुष्य अपने में डूबा नहीं रह सकता।

**कूकड़ां री लड़ाई में कबूड़ां नै लाभ।** २५०५

मुर्गो की लडाई मे कबूतरो को फायदा।

—मुर्गे लड़ते हुए दूर चले जाते है तब उनके बिखरे दाने कबूतर चुग लेते हैं।

—बड़े आदमियों का झगड़ा जब छोटों के लिए हितकारी हो तब।

—किसी का अनर्थ, किसी के लिए कल्याणकारी।

**कूकड़ा नै किलंगी रौ गुमांन।** २५०६

मुर्गे को कलंगी का गुमान।

—ओछे व्यक्ति को छोटे पद का भी बड़ा गुमान होता है।

—साधनहीन व्यक्ति को मामूली अच्छी वस्तु का भी गर्व होता है।

**कूकड़ी मांदी, भेंस उवारणै कीधी।** २५०७

मुर्गी बीमार और भैंस वार कर दी।

उवारणौ = अवांरणौ = अवारणौ = प्रेत बाधा या रोग-शांति के लिए व्यक्ति की देह के चारों ओर कोई वस्तु घुमाकर किसी को दान में देना या फेंक देना या उसकी मानता बोलना।

—छोटी बात पर जो व्यक्ति बडा आडंबर करे।

—जिस व्यक्ति को अनुपात का कोई बोध न हो। गाफिल व्यक्ति के लिए।

**कूकड़ी रै ताकळा रौ डांम ई भारी।** २५०८

मुर्गी के लिए तकली का दाग भी भारी।

—गरीब के लिए थोडी मार भी काफी होती है।

—छोटा व्यक्ति मामूली नुकसान भी सहन नहीं कर सकता।

—क्षमता के अनुरूप ही दड वहन होता है।

**कूकड़ै नै बिखोरै इज लाभ।** २५०९

मुर्गे को कुरेदने मे ही फायदा।

—मुर्गा पंजों से जमीन कुरेद-कुरेदकर कीड़े-मकोड़ो के साथ अनाज के दाने व जूठन चोच से खाता रहता है, अतएव उसे हरदम कुरेदने में ही लाभ है।

—जो व्यक्ति दंगा-फसाद, लूट-खसोट व दूसरों के झगडे मे लाभ उठाने की चेष्टा करे।

—प्रत्येक व्यक्ति की दृष्टि में लाभ-हानि के मापदंड अलग होते है।

**कूकड़ौ जांणै के सूरज उणरी बांग रै पांण इज ऊगै।** २५१०

मुर्गा समझता है कि सूरज उसकी बॉग की वजह से ही उगता है।

—ओछी बुद्धि वालों का ही ऐसा क्षुद्र अहंकार होता है कि दुनिया मानो उन्हीं के इशारों पर चलती है।

—छोटे व्यक्ति का व्यर्थ गुमान कि वही सर्वेसर्वा है।

**कूकड़ौ नीं बोलै तौ कांई झांझरकौ नीं व्है!** २५११

मुर्गा न बोले तो क्या सवेरा ही न हो!

—सूर्योदय होने से पूर्व मुर्गा बाँग देना शुरू कर देता है। इसका यह तात्पर्य तो नहीं कि मुर्गा बॉग देता है तभी सूर्य उदय होता है। इसी प्रकार मुर्गे के सदृश दंभी व्यक्ति भी ऐसा सोचता है कि उसी की वजह मे संसार के सारे कार्य घटित होते हैं।

—अहकारी व्यक्ति की भ्रात धारणा पर कटाक्ष।

—कोई बड़ा आयोजन किसी एक व्यक्ति के भरोसे अधूरा नही रहता।

**कूकर रै भेळी रमै पाडी, आज नीं तौ कालै डाढ़ी।** २५१२

कूकर के संग खेले पाडी, आज नही तो कल दॉत गडेगे।

—बछिया या पाड़ी पिल्ले के साथ खेलेगी तो पिल्ला बड़ा होने पर उसे अवश्य काटेगा।

—दुष्ट व्यक्ति की मित्रता का परिणाम घातक होता है।

—कुटिल की संगति का दुष्परिणाम अवश्यंभावी है।

**कूख री दाझ सहीजै पण पेडू री दाझ नीं सहीजै।** २५१३

कोख की दाह सही जा सकती है पर उपस्थ की दाह नहीं सही जाती।

—संतान की मृत्यु सहन हो सकती है पर पति की मृत्यु सहन नहीं होती।

—पुत्र की जलन सही जा सकती है पर वासना की जलन सही नहीं जाती।

**पाठा : कूख री दाझ सहीजै, पण पेट री दाझ नीं सहीजै।**

**कूख सूं जायोड़ौ सरप ई मां नै वाल्हौ लागै।** २५१४

कोख से जन्मा साँप भी माँ को प्रिय होता है।

—माँ की कोख से बदमाश, लंपट व शैतान ही क्या यदि साँप भी पैदा हो जाय तो वह उसे प्यार करती है।

—माँ की ममता का कोई पार नहीं।

**कूट्योड़ौ चोर अर भूखौ पांवणौ पाछा नीं बावड़ै।** २५१५

पिटा हुआ चोर और भूखा पाहुन दुबारा नहीं आता।

—कटु अनुभव की कोई पुनरावृत्ति नहीं करना चाहता।

—दुर्दशा आसानी से विस्मृत नहीं होती।

**कूड़ आटै लूण चालै।**–व.११२ २५१६

झूठ, आटे में नमक जितना ही चलता है।

—अनुपात से अधिक झूठ भी नमक की तरह कड़वा होता है।

—जरूरत से ज्यादा झूठ छिपा नहीं रहता।

**कूड़ कितरी भांय हालै?** २५१७

झूठ कितनी दूर चल सकता है?

—मतलब कि झूठ ज्यादा दूर नहीं चल सकता, वह बीच राह में ही थक जाता है।

—झूठ की उम्र बहुत छोटी होती है।

**कूड़ बोलणियौ अर धरती सोवणियौ सांकड़ैलौ क्यूं भुगतै !** २५१८

झूठ बोलने वाला और धरती पर सोने वाला क्यों कोताही करे !

—झूठ बोलने वाला चाहे जितनी गप्प हाँक सकता है,उसकी कोई सीमा नहीं और धरती पर सोने वाला जितना चाहे लुढ़क सकता है । खाट की तो एक सीमा है,पर धरती की तो कोई सीमा नहीं ,जो जितना चाहे हाथ-पाँव फैलाकर सोये ।

—झूठ बोलने वाले और धरती पर सोने वाले पर मर्यादा का बंधन नहीं होता ।

**कूड़ बोलणौ अर धूड़ खावणौ बिरौबर ।** २५१९

झूठ बोलना और धूल खाना बराबर ।

—जो अपनी जबान से झूठ बोल सकता है,वह रेत भी खा सकता है ।

—झूठे व्यक्ति की कोई इज्जत नहीं होती ।

**कूड़ भाख्यां जग धीजै ।** २५२०

झूठ बोलने पर ही दुनिया भरोसा करती है ।

—सत्य की बजाय झूठ लोगों को ज्यादा प्रिय होता है । सच्ची बात सुनना कोई नहीं चाहता ।

—दुनिया में सर्वत्र झूठ-ही-झूठ का व्यापार है ,सत्य बोलने वाला कभी पनप नहीं सकता ।

—सच्ची बात कहना तो सभी चाहते हैं पर सुनना कोई नहीं चाहता ।

**कूड़ में धूड़ ।** २५२१

झूठ में धूल ।

—झूठे के मुँह में धूल,सिर पर धूल ।

—झूठे की समाज में कोई कद्र नहीं होती ।

**कूड़ रा पग काचा व्है ।** २५२२

झूठ के पैर कच्चे होते हैं ।

—झूठ बोलने वाले के पाँव काँपने लगते हैं ।

—झूठे व्यक्ति में नैतिक साहस की कमी होती है ।

मि.क.सं. २५१७

**कूड़ रा पग तीन व्है ।** २५२३

झूठ के पाँव तीन होते हैं ।

—झूठ तीन कदम से अधिक नहीं चल सकता ।

—झूठ तुरत पकड़ में आ जाता है ।

—झूठ को अन्य सहारा लेने की जरूरत पड़ती है ।

मि.क.सं.२५१७,२५२२

**कूड़ री आव थोड़ी ।**–व.२१५ २५२४

झूठ की आयु कम होती है ।

—झूठ अधिक समय तक टिक नहीं पाता,उसकी कलई खुल ही जाती है ।

—सत्य अमर होता है और झूठ नश्वर ।

—झूठ का अविलंब पता चल जाता है ।

**कूड़ री मजल फळसा तांईं ।** २५२५

झूठ की मंजिल फलसे तक ।

पाठा : **कूड़ री दौड़ डागळै तांईं ।** झूठ की दौड़ पाटन तक ।

दे.क.सं.२५१७,२५२२

**कूड़ रै पग कोनीं व्है ।** २५२६

झूठ के पैर नही होते ।

दे.क.सं.२५१७,२५२२

पाठा : **कूड़ पांगळौ व्है ।** झूठ पंगु होता है ।

**कूड़ रौ कांईं मथारौ ?** २५२७

झूठ की क्या सीमा ?

—सत्य में कल्पना की गुंजाइश नहीं होती,पर झूठ का सारा ढाँचा ही कल्पना भर निर्भर रहता है,इसलिए उसकी कोई सीमा नहीं होती ।

—एक झूठ को सँवारने के लिए हजार झूठ बोलने पड़ते हैं ।

**कूड़-सांच में चार आंगळ रौ आंतरौ।** २५२८

झूठ-सच में चार अंगुल की दूरी।

—कान व आँख में फासला तो चार अंगुल का ही होता है, पर कान से सुनी हुई बात झूठी और आँख से देखी हुई बात सच होती है, इसलिए इनकी प्रामाणिकता में बहुत अंतर है।

मि.क.सं. ३७८,२००५

**कूड़ साच रौ लेखौ रांम जांणै।** २५२९

झूठ-साच का लेखा राम जाने।

—झूठ-साच का पता भगवान के अलावा किसी को भी नहीं चल सकता।

—झूठ-साच की गुत्थी बड़ी जटिल होती है, ईश्वर के अलावा वह किसी से सुलझ नहीं सकती।

**कूड़ा खत में साख कुण घालै!** २५३०

झूठे खाते का साक्षी कौन बने!

—झूठे का गवाह कोई नहीं बनना चाहता।

—झूठी बात का समर्थन करे सो झूठा।

**कूड़ा मांये उतारी ने नेज वाड़ दी।**–भी.१३७ २५३१

कुएँ में उतारकर रस्सी काट दी।

—कोई व्यक्ति किसी के साथ विश्वासघात करे तब।

—भुलावे में डालकर किसी के साथ कोई धोखा करे तब।

**कूड़ा री कांईं पिछांण के घड़ी-घड़ी सोगन खाय।** २५३२

झूठे की क्या पहिचान कि बार-बार सौगंध खाय।

—यह एक सामान्य प्रवृत्ति है कि झूठा व्यक्ति ही ज्यादातर कसम खाता है।

—जो व्यक्ति बात-बात में कसम खाये, वही झूठा।

**पाठा : कूड़ा री कांईं पिछांण के बात-बात में सौगन खाय।**

**कूड़ा री पत कोनीं, नांढ़ रौ मत कोनीं।** २५३३

झूठे की पत्त नहीं, मूढ़ का मत नहीं।

—झूठे व्यक्ति का कोई एतबार नहीं करता। मूर्ख व्यक्ति का अपना कोई मत नहीं होता।
—मूर्ख व्यक्ति दूसरों के इशारे पर चलता है।

**कूड़ा री बावड़ै कोनीं।** २५३४
झूठ में बरकत नही होती।
—कुछ समय तक झूठा अपना कारोबार चलाले पर अंत में उसकी पोल खुलकर ही रहती है। झूठे की कोई साख-प्रतिष्ठा नहीं होती।
—झूठा कभी फलीभूत नहीं हो सकता।

**कूड़ा रै सींग-पूंछ थोड़ा ई हुवै।** २५३५
झूठे के सींग-पूँछ नहीं होते।
—यदि सींग-पूँछ हों तो तत्काल पता चल जाये कि यह रहा झूठा। पर सींग-पूँछ के अभाव में आसानी से उसकी पहिचान नहीं होती।
—झूठ बोलना तो एक ऐब है, इसके अलावा झूठा व्यक्ति आम आदमी की तरह सामान्य ही होता है।

**कूड़ा रौ कांईं पतियारौ?** २५३६
झूठे का क्या एतबार?
—राजस्थानी में 'कूड़ा' शब्द के दो अर्थ हैं—एक झूठा और दूसरा कुआँ। दोनों पर भी विश्वास नहीं किया जा सकता कि कब झूठा व्यक्ति व कुआँ धोखा दे जाय। कुएँ में पानी खत्म हो जाय तो खड़ी फसल जल जाती है। कुआँ धँस जाय तो भी काफी मुश्किल है, उसे तत्काल कामयाब करना। पर हिंदी में 'झूठा' शब्द का अर्थ केवल मिथ्यावादी से ही है। इसलिए इस कहावत के सही मर्म को हृदयंगम नहीं किया जा सकता।

**कूड़ा रौ मूंडौ काळौ।** २५३७
झूठे का मुँह काला।
—झूठे से जितना दूर रहा जाय उतना ही अच्छा।
—झूठे की छाया तक से बचना चाहिए।

**कूड़िये नै तरवार वाळौ सौदौ ।** २५३८

कुप्पा और तलवार का सौदा ।

**संदर्भ-कथा :** दो बराबर के ठगों की यह लोक-कथा राजस्थान में खूब प्रचलित है । एक ठग तलवार को बेचने के लिए घर से निकला । रास्ते में दूसरा ठग मिल गया । जो उसी की तरह घर से घी बेचने के लिए रवाना हुआ था । दोनों एक दूसरे से अपरिचित थे । तलवार वाले ठग ने खुशी-खुशी तलवार के बदले में घी से भरा कुप्पा ले लिया । पर घर पहुँचने पर सारा भेद खुल गया । घी वाले कुप्पे में केवल ऊपर-ऊपर ही घी था और नीचे सारा गोबर । कुप्पे वाले ने खुशी-खुशी तलवार खोली तो मूठ के अलावा म्यान में करील की लकड़ी थी ।

—बराबर के ठग मिलें तब यही परिणाम होता है ।

—ठग के द्वारा किसे भी लाभ नहीं पहुँचता ।

**कूड़िये रै खड़खड़ाटै सूं डरै वै चिड़ियां ईं दूजी ।** २५३९

कुप्पे की खड़खड़ाहट से डरें वे चिड़ियाँ ही दूसरी ।

—निर्लज्ज व्यक्ति छोटी-मोटी निंदा की परवाह नहीं करता ।

—स्वार्थ में बहरे नेता को विरोध का स्वर सुनाई नहीं पड़ता ।

—नकटाई सर्वथा बहरी होती है ।

**कूड़ी राख छांणी , लाधी नीं दाझी धांणी ।** २५४०

झूठी राख छानी, मिली नहीं दाझी धानी ।

—किये-कराये पर पानी फिर जाय तब ।

—जब सारे प्रयत्न निष्फल हो जाएँ तब ।

**कूड़ी साख भरै , उणरा बडेरा नरक में पड़ै ।** २५४१

झूठी साख भरे, उसके पूर्वज नरक में पड़ें ।

—झूठ बोलने की अपेक्षा झूठी गवाही देना ज्यादा खराब है ।

—झूठी साख भरने पर केवल वही प्रभावित नहीं होता,उसके पूर्वज तक अछूते नहीं रहते ।

**कूतरा काच भाळल्यू , भची मुवो दन्या मांय ।**–भी.१३८ २५४२

कुत्ते ने काच देखा तो संसार भर में भोंकता-भोंकता मर गया ।

—कुत्ते ने काच में अपना प्रतिबिंब देखा तो वह वास्तविकता समझ नहीं पाया। अपने प्रतिबिंब को ही दुश्मन के रूप में दूसरा कुत्ता समझता रहा और भौंक-भौंककर मर गया।

—इसी प्रकार कुत्ते की तरह जीवन बसर करने वाले उम्र भर भौंकते-भौंकते मर जाते हैं और कुछ भी सार्थक काम नहीं कर पाते।

**कूतरा माते कूतरा पाड़ी ने चेटी हरकी जाहें।**–भी.१३९ २५४३

कुत्ते पर कुत्ता छोड़कर दूर खिसक जाएँगे।

—जो व्यक्ति हमेशा दूसरों को लड़ाई के लिए उकसाये।

—फूट डालकर आपसी लड़ाई में ही जिस व्यक्ति को हिंसक आनंद मिलता हो।

**कूतरौ कांच री पीड़ मरै, धणी नै सिकार जोईजै।**–व.३१९ २५४४

कुत्ता काँच की पीड़ा से बेचैन, मालिक को शिकार की चाह।

—स्वार्थ की आँखों से दूसरों का दुख नजर ही नहीं आता।

—अपने मतलब की खातिर जो व्यक्ति दूसरों के कष्ट की तनिक भी परवाह न करे तब।

**कूतरौ ल्याइ में न बळइ।**–व.२७७ २५४५

कुत्ता आग में नहीं जलता।

दे.क.सं.२४६०

**कूदियै न कूअै खेलियै न जुअै।** २५४६

कूदिये न कुआँ, खेलिये न जुआ।

—कुएँ के ऊपर से कूदना ओर जुआ खेलना दोनों ही घातक है।

— नसीहत की यह बात हमेशा याद रखनी चाहिए।

दे.क.सं.२४६५

**कूद्यौ पेड़ खजूर सूं, रांम करै सो होय।** २५४७

कूदा पेड़ खजूर से, राम करे सो होय।

—जो व्यक्ति शक्ति, क्षमता व साहस के परे जान-बूझकर खतरा मोल ले और जिम्मेवारी ईश्वर पर थोपे उसके लिए।

—जो व्यक्ति स्वयं अपने साथ दुश्मनी बरते, उसकी सहायता ईश्वर भी नहीं करता।

**कूरा करसा खाय, गवूं अरोगै बांणिया।** २५४८

कूरा खाये किसान, गेहूँ खाये बनिया।

कूरा = एक अपौष्टिक सस्ता अनाज।

—सामंती व्यवस्था की विडंबना कि अपने पसीने की मेहनत से गेहूँ पैदा करने वाला किसान उससे महरूम रहता है और इसके विपरीत हाट पर आराम से बैठा बनिया गेहूँ की रोटी खाता है। क्रूर इतिहास का यह निर्मम अध्याय कभी भूला नहीं जाएगा। वह कहावतों और कथाओं में सदैव अंकित रहेगा।

—बोहरे के ऋण की मजबूरी जो न कराये थोड़ा है। मेहनत के फल से वंचित रखना तो उस की एक स्वाभाविक प्रक्रिया है।

—जिस व्यक्ति के अनुभव और ज्ञान का दायरा अत्यधिक संकीर्ण हो।

**कूवा वाळौ डेडरियौ।** २५४९

कुएँ वाला मेंढ़क।

—कूप मंडूक।

**संदर्भ-कथा** : संयोग का करिश्मा कि समंदर का मेंढ़क कुएँ में आन पड़ा। कुएँ में बसने वाले मेंढ़क पहिले तो चौंके, फिर अपनी जाति का समझकर वे आश्वस्त हुए। पूछा, 'अचानक कहाँ से टपक पड़े?' तब उस परदेसी मेंढ़क ने आप-बीती सुनाकर अंत में कहा कि मेरा दुर्भाग्य कि समुद्र का विशाल आश्रय छोड़कर कुएँ में आ पहुँचा हूँ, तुम सबका कुशल-क्षेम पूछने। मेंढ़कों का प्रधान फुदककर अतिथि के पास आया। पूछा, 'यह समुद्र क्या बला है, क्या वह कुएँ जैसी ही निरापद जगह है। क्या उस में भी इतना पानी है?' प्रधान की बाल-जिज्ञासा सुनकर पहिले तो वह खूब हँसा। फिर गुमान से बोला, 'अरे भैया, समुद्र और कुएँ की क्या बराबरी? समुद्र तो समुद्र ही है और कुआँ, कुआँ ही है?' तब प्रधान ने अपनी बाईं टाँग तानकर पूछा—'क्या समुद्र इतना बड़ा है।' अतिथि मेंढ़क ने सोचा कि इन नादान मेंढ़कों का उपहास करना व्यर्थ है। टर्र-टर्र के उपेक्षित स्वर में कहा, 'छोड़ो यह जिज्ञासा, मेरे समझाने से भी तुम समुद्र की विशालता का अनुमान नहीं लगा सकते।' तब प्रधान ने दाहिनी टाँग फैलाकर पूछा, 'तो क्या इतना बड़ा है?' तब अतिथि मेंढ़क ने बहस का अंत करने की मंशा से कहा,

'हाँ,इससे भी बड़ा है। बस,आकाश जितना ही लंबा चौड़ा ?' प्रधान ने दुखती टाँगें समेटकर पूछा,'आकाश ! यह आकाश क्या बला है ?' अतिथि मेंढ़क को थोड़ी खुंदक चढ़ गई। टर्राते बोला,'तुम कभी कुएँ से बाहर निकले हो तो जानो कि समुद्र और आकाश क्या नफीस नजारे हैं ? मेरे साथ चलकर देखो तो पता चलेगा। टर्राना-वर्राना सब भूल जाओगे ?' प्रधान ने वैसा ही उत्तर दिया,'जब तुम टर्राना नहीं भूले तो हम क्यों भूलेंगे। और इतना अच्छा निवास छोड़ कर हम दूसरी जगह जाएँ ही क्यों ? हम भले और हमारा कुआँ भला ? तुम्हें ही मुबारक हो यह समुद्र और यह आकाश ?'

—जो व्यक्ति अपने सीमित दायरे को ही सब-कुछ समझे।

# के - क्यूं

**केई आया नै केई जासी परा।** २५५०

कई आये और कई चले जाएँगे।

—मृत्यु के सामने न पैसे वाले का जोर चलता है और न सत्ताधारी का। बड़े-बड़े राव-उमराव आये और चले गये, फिर अहंकार और अत्याचार करना निरर्थक है।

—इस नश्वर दुनिया में कोई शाश्वत रूप से नहीं टिक सकता।

**केई दिन सासू रा होवै, ज्यूं केई दिन बहूड़ी रा पिण होसी।**–व.११० २५५१

कई दिन सास के होते है, तो कई दिन बहू के भी होंगे।

—सास के मरने पर बहू सास बनकर घर की बागडोर सँभालती है। यह क्रम निरंतर चलता रहता है।

—किसी के लिए भी सभी दिन एक से नहीं रहते।

—सत्ता व शासन का चक्र बदलता ही रहता है।

**केई बायां रै बिलियां रौ मैल खायोड़ौ।** २५५२

कई औरतों की चूड़ियों का मैल खाया हुआ है।

—आटा गोंदते समय तथा रोटी बनाते समय चूड़ियों के माध्यम से औरतों की देह का मैल आटे में घुलता रहता है।

—बेहद-अनुभवी और घुमक्कड़ व्यक्ति के लिए।

—इस तरह के अनुभवी और यायावर को भूल से ठगने की कोई चेष्टा करे तब यह उक्ति कही जाती है कि उसने खूब दुनिया देखी है, आसानी से ठगाया नहीं जा सकेगा।

—जिस लंपट व्यक्ति का कई औरतों के साथ संसर्ग हो, उग पर कटाक्ष।

**केई बायानो कांकणियां नो मेल खादो है।**– भी.१४० २५५३

कई स्त्रियों के कंगनों का मैल खाया हैं।

दे.क.सं.२५५२

**के कड़ बैठै ऊंट ?** २५५४

किस करवट बैठे ऊँट ?

दे.क.सं.१२८७

**के कहूं कह्यौ नीं जाय, नौ भेंस अर दो रोटी कुत्ती लियां जाय।** २५५५

क्या कहूँ कुछ कहा नहीं जाये, नौ भेंस और दो रोटी कुत्ती लेकर जाये।

**संदर्भ-कथा :** एक गूजर अपनी नौ भैंसियों को बेचकर उसकी समस्त राशि गमछे में बाँधकर अपने घर लौट रहा था। लोगों को वहम न हो इस कारण सतर्कता बरतते हुए उसने दो बड़ी-बड़ी रोटियों के बीच सलीके मे नोट दबाकर बॉध दिये थे। रास्ते में एक तालाब के किनारे गमछा रखकर वह पानी पीने के लिए कुछ गहरा उतरा। कहीं पास ही छिपी एक कुतिया रोटी की गंध पाकर वह गमछा उठा ले गई। भनक पड़ते ही गूजर ने मुड़कर देखा। वह घबराकर हतप्रभ-सा कुतिया के पीछे भागा। इस पर कुतिया और जोर से भागने लगी। वह बावले की तरह विक्षिप्त-सा चिल्लाने लगा। लोगों के पूछने पर उसने लड़खड़ाती वाणी में जोर से कहा, 'क्या बताऊँ, नौ भैंस और दो रोटी कुत्ती लिये जा रही है।' लोगों ने उसकी बेहूदी बात सुनकर उसी का मखौल उड़ाया।

—जो बात सही होते हुए भी लोगों को गलत लगे उसके लिए।

—घुमा-फिराकर बात कहने से उलटी गड़बड़ पैदा होती है।

**के कुत्ती रै पांण ई गाडौ चालै है ?** २५५६

क्या कुत्ती के भरोसे पर ही गाड़ी चलती है ?

दे.क.सं. २४१५,२४५२

**के गाभा धोय फाटै के निचोय फाटै।** २५५७

या तो वस्त्र धोने से फटते है या निचोड़ने से ।

—यदि कुछ चीजे सलीके मे बरती जाएँ तो उनकी उम्र बढ सकती है।

—किसी-न-किसी बहाने हर वस्तु का विनाश अनिवार्य है।

—कैसे भी हो एक दिन हर चीज का अत आकर रहता है।

**के गीतड़ां के भींतड़ां।** २५५८

या तो गीतो मे या इमारतो मे ।

गीत = राजस्थानी (डिगल) का विशिष्ट छद जिसके ८४ प्रकार हैं। वह हिंदी गीत की विधा से बहुत भिन्न है।

—मनुष्य की कीर्ति या तो गीतो मे या भव्य स्मारकों में अक्षुण्ण रहती है।

—मनुष्य की अक्षय प्रसिद्धि के मुख्यतया दो माध्यम हैं—या तो काव्य या कलात्मक सुंदर भवन।

**के गूजर रौ दायजौ के बकरी के भेड़।** २५५९

क्या गूजर का दहेज या बकरी या भेड ।

—गॅवार के पास गॅवारू वस्तुओं का ही सचय होता है।

—जिस व्यक्ति का जैसा सामाजिक स्तर होता है,उसके पास वैसी ही सामग्री होती है।

**के जांणै भेड़ सुपारी सार।** २५६०

क्या जाने भेड़ सुपारी का स्वाद ।

—अनभिज्ञ व्यक्ति कई पदार्थों के आनद से सर्वथा वचित रह जाता है।

—अज्ञानी मनुष्य को कई बातों की जानकारी नही होती।

—मूर्ख व्यक्ति ज्ञान का मर्म क्या समझे।

—सासारिक प्राणी अध्यात्म के बारे में क्या जाने।

**के जागै जोगी के जागै भोगी।** २५६१

या तो जागे योगी या जागे भोगी ।

—योगी अपनी योग साधना के कारण रात को जगा रहता है और भोगी काम-वासना के कारण।

—जागने की क्रिया एक-सी होने पर भी उसका मर्म एक-सा नहीं है। दोनों के जागते रहने में बेहद अंतर है।

**के जागै जिण रै घर सांप, के जागै बेटी रौ बाप।** २५६२

या तो जागे जिसके घर साँप या जागे बेटी का बाप।

—घर में साँप होने से सब घरवाले डर के मारे सतर्क रहते हैं और कुँआरी लड़की के विवाह की चिंता में बाप करवटें बदलता रहता है।

—चिंतातुर व्यक्ति अच्छी तरह सो नहीं पाता।

—चिंता के साँप व पारिवारिक दुख हमेशा नींद में बाधा उपस्थित करते हैं।

**के जोधां के खोदां दिन बावड़ै।** २५६३

या तो सपूतों के सहारे या बैलो के बूते पर अच्छे दिन आते हैं।

—पारिवारिक सफलता के लिए दो ही तथ्य अनिवार्य हैं—या तो मेहनती औलाद या उत्पादन के उचित साधन।

—मनुष्य का श्रम और पर्याप्त साधन ही कामयाबी की कुंजियाँ हैं।

**के ठगावै रोगी के ठगावै भोगी।** २५६४

या तो ठगाये रोगी या ठगाये भोगी।

—कोई भी व्यक्ति किसी रोगी को कैसा भी इलाज बताये तो वह उस पर विश्वास कर लेता है और अपनी हैसियत के परे भी खर्च कर डालता है। दूसरा कामुक या भोगी अपनी वासना की तृप्ति के लिए कुछ भी लुटाने को तैयार रहता है।

—गर्जमंद सहज ही ठगाया जा सकता है।

**के डूबै रोळां के डूबै बौळां।** २५६५

या तो झगड़े में घर डूबता है या अत्यधिक परिवार बढ़ने से।

—झगड़े में मनुष्यों के साथ धन की भी क्षति होती है। अत्यधिक कुटुंब बढ़ने से जमीन व संपत्ति का बँटवारा हो जाता है।

**केते खाये मोट पणाये, कै खाये वैर पणाये, कै खाये मान पणाये, तीन वाते चोड़ दिये ते, वौ है देव पणाये मांये ।**– भी.१४१ २५६६

मनुष्य वड़प्पन की भावना से, दूसरों की शत्रुता से और अभिमान की भावना से दुख पाता है, यदि वह तीनों बातें छोड़ दे तो देव-स्वरूप हो जाता है ।

—मनुष्य के पतन का कारण ये तीनों प्रवृत्तियाँ ही हैं, इनसे मुक्त होकर ही वह अपने मनुष्यत्व के उदात्त रूप को हासिल कर सकता है । पर ऐसा अमूमन होता नहीं, तब मनुष्य के लिए एक मात्र गिरावट की राह ही बचती है ।

**केते चोचो हूनू करे के करे होनो ।**– भी.१४२ २५६७

या तो चूना घर सूना करता है या सोने के समान ।

—चूने के द्वारा सारी पक्की इमारतें बनती हैं । अर्थात् मकान बनवाने से घर का नाश होता है या उस घर में लक्ष्मी या संपन्नता का सुख जगमगाने लगता है ।

—आदिवासी मान्यता के अनुसार मकान बनाने के दोनों रूप सामने हैं । समझदार व्यक्ति को अच्छी तरह सोच-समझकर निर्णय लेना चाहिए ।

**केते धन धणी खाये, कै धन धणीये खाय ।**– भी.१४३ २५६८

या तो स्वामी धन को खाये या धन स्वामी को खाये ।

—कितना सरल और गहरा दार्शनिक प्रश्न है कि भोक्ता के लिए धन है या धन के लिए भोक्ता है ? आज संसार के वड़े-से-बड़े दार्शनिक के सामने यही ज्वलंत सवाल धधक रहा है ।

—सारी समस्याओं का सर्वथा घातक पहलू यही है कि आज धन के लिए भोक्ता का जीवन है । भोक्ता के लिए धन की सार्थकता नहीं है ।

**के ते भार मांज झेले ने, कै जमी झेले ।**– भी.१४४ २५६९

या तो भार माँ उठाती है या जमीन उठाती है ।

—माँ कोख में नौ महीने तक संतान का भार ढोते हुए काम करती है । जन्म देने के पश्चात् अपने स्तनों का दूध पिलाकर, उसका मल-मूत्र धोकर किस तरह संतान को बड़ा करती है, उसका भेद भगवान भी चाहे तो नहीं जान सकता । पाँवों चलने के बाद उम्र भर धरती बच्चे का भार हरदम उठाती है और कभी थकती नहीं । उसके भरण-पोषण का जिम्मा माँ के हाथ

से राजी-खुशी लेकर हमेशा अपने पास रखती है। माँ और जमीन से बढ़कर मनुष्य का कोई अपना नहीं।

**के तौ कायौ मरै के धायौ मरै।** २५७०

या तो निराश व्यक्ति मरता है या संपन्न।

—परिस्थितियों से तंग व हैरान होकर कोई व्यक्ति मरने के लिए तैयार हो जाता है या संपन्न व्यक्ति अभिमान में उलटे-सीधे काम करके मरने का संयोग बना लेता है।

—कभी-कभार हताशा व समृद्धि का एक-सा दुष्परिणाम होता है।

—आज अति भौतिकवादी सभ्यता मरने के पथ पर ही अग्रसर हो रही है।

**के तौ गीतड़ा अर के भींतड़ा ऊभा रै जावै।** २५७१

या तो गीत कायम रहते हैं या स्मारक।

दे.क.सं. २५५८

**के तौ गैली पैरै ई कोनीं अर जे पैरै तौ खोलै ई कोनीं।** २५७२

या तो पगली पहिनेगी ही नहीं और यदि पहिन ही ले तो वापस खोलेगी नहीं।

—बावला व्यक्ति अपनी ही धुन में खोया रहता है, वह दूसरों के कहने-सुनने पर कोई ध्यान नहीं देता।

—बावले व्यक्ति के सभी काम असंतुलित होते हैं।

**के तौ गैली रांड सासरै जावै ई कोनीं अर जावै तौ पाछी आवै ई कोनीं।** २५७३

या तो पगली औरत ससुराल जाती ही नहीं और जाये तो वापस आये ही नहीं।

दे.क.सं. २५७२

**के तौ घर रौ नास करूं के कात्यौ-पींज्यौ कपास करूं।** २५७४

या तो घर का नाश करूँ या काता-पीजा कपास करूँ।

—जिन दो कार्यों के चयन में बर्बादी के सिवा कुछ नहीं हो।

—जिस जिददी व सनकी के हाथों घर की क्षति के अलावा कुछ भी काम न हो।

**के तौ घोड़ौ घोड़ियां में नींतर चोरां में।** २५७५

या तो घोड़ा घोड़ियों में, नहीं तो चोरों में।

—किसी व्यक्ति का घोड़ा खो गया। पूछने पर उसने गोलमाल-सा उत्तर दिया कि या तो वह वासना से खिंचकर घोड़ियों के बीच चला गया है या कोई चोर अस्तबल से खोलकर ले गया है। घोड़ियों में होगा तो मिल जाएगा, यदि चोर ले गये हों तो मिलना कठिन है।

—किसी काम के संपन्न होने की आंशिक उम्मीद हो तब। या तो काम सुधर जाएगा, नहीं तो बिगड़ जाएगा।

**के तौ जागै चोर के मोर के ढोर।** २५७६

या तो जागे चोर या मोर या ढोर।

—चोर चिंता या अधीरता या चोरी की तलाश में रात को सो नहीं पाता। मोर या ढोर स्वभावतः हरदम सतर्क रहते हैं।

—अभागे व्यक्तियों के प्रति हमदर्दी का भाव।

**के तौ जीभ संभाळ के खोपड़ी संभाळ।** २५७७

या तो जीभ सँभाल या खोपड़ी सँभाल।

—या तो अपशब्द या गाली-गलौज बंद कर या फिर सिर फुड़वाने व पिटने के लिए तैयार हो जा।

—गाली-गलौज करने वाला कभी-न-कभी पिटकर ही रहता है।

**के तौ धन धणी खाय के धन धणी नै खाय।** २५७८

या तो स्वामी धन को खाये या धन स्वामी को खाये।

—धन का यथोचित उपयोग करने में ही उसकी सार्थकता है, अन्यथा संग्रह करने पर उसकी चिंता उलटे स्वामी को परेशान करती है—झगड़े बढ़ते हैं, चोर लुटेरों का डर रहता है और प्राणों की जोखिम रहती है।

—धन-संचय की वृत्ति पर व्यंग्य।

मि. क. सं. २५६८

**के तौ पेल बळद हालै ई कोनीं, जे हालै तौ सौ गांवां री सींव फाड़ै।** २५७९

या तो ढीला बैल चले ही नहीं, यदि चले तो सौ गाँवों की सीमा लाँघे।

पैल = मंद-गति से चलने वाला मन-मौजी बैल,जो चलने पर रुकने का नाम ही नहीं लेता।

—मन-मौजी व असंतुलित व्यक्ति की मानसिक अवस्था का अनुमान लगाना संभव नहीं।

**के तौ फूहड़ चालै ई कोनीं, जे चालै तौ नौ गांव री सींव फाड़ै।** २५८०

या तो फूहड़ चलती ही नहीं, जे चले तो नौ गाँव की सीमा लाँघे।

दे.क.सं.२५७९

**के तौ बांध्योड़ी के रांध्योड़ी।** २५८१

या तो बँधी हुई या रँधी हुई।

—बकरी या तो बँधी हुई वश में रहती है या हँडिया में पकी हुई। वरना वह कहीं भी मुँह मारे बिना नहीं रहती।

—अत्यधिक उद्धत छिनाल औरत के लिए।

पाठा : **के तौ बांध्योड़ौ के रांध्योड़ौ।**

—बकरे के लिए,तदनुसार लंपट व्यक्ति के लिए।

**के तौ बाप बतावौ के मौसर करौ।** २५८२

या तो बाप बताओ या मृत्युभोज करो।

**संदर्भ-कथा** : एक पिता भारी अपराध या चोरी करके भाग गया। लोगों के द्वारा उसके पुत्रों को बार-बार तंग किया गया कि वे अपने पिता को कहीं से भी खोज कर लाएँ। यदि नहीं लाते हैं तो उसे मरा मानकर मृत्यु-भोज करें। दो बातों के अलावा तीसरा कोई विकल्प नहीं।

—जिस व्यक्ति के लिए बच निकलने का कोई उपाय न हो।

—जब दुविधा-जनक स्थिति में बहाने-बाजी से हल निकलना संभव नहीं हो।

**के तौ बावळौ गांव जावै कोनीं अर जावै तौ बावड़ै कोनीं।** २५८३

या तो बावला गाँव जाता ही नहीं और जाये तो लौटता ही नहीं।

दे.क.सं.२५७३

**के तौ बीगड़ै बोलां के बीगड़ै मौलां।** २५८४

या तो बिगड़े बोली से या बिगड़े अहदी से।

मौला = जो व्यक्ति अहदी,नासमझ तथा चित्तभ्रमित हो

—गाली-गलौज या अपशब्द से बात बिगड़ती है। झगड़े-फसाद की नौबत आती है। अकर्मण्य व नासमझ व्यक्ति से घर बिगड़ता है।

—हर-सूरत में वाणी को नियंत्रित रखना चाहिए।

**के तौ बीगड़ै कुपंथ, के बीगड़ै कुपथ्य।** २५८५

या तो बिगड़े कुपथ से या बिगड़े कुपथ्य से।

—पथभ्रष्ट होने से प्रतिष्ठा व पूँजी का विनाश होता है और बद-परहेजी से शरीर का।

—बर्बादी की राह न चलने की नसीहत।

**के तौ भैंसौ भैंस्या में के कसाई रै खूंटै।** २५८६

या तो भैंसा भैंसियों में या कसाई के खूँटे पर।

—बदचलन, व्यसनी या दुर्गुणी मनुष्यों के स्थान सुनिश्चित होते हैं। उनका अता-पता पूछने पर परिहास में इस उक्ति का प्रयोग होता है।

—जिस व्यक्ति के लिए अच्छी जगह मिलने की संभावना न हो।

**पाठा : के तौ बकरौ छाळ्यां में के खटीक रै खूंटै।**

या तो बकरा बकरियों में या खटीट के घर।

**के तौ भौजाई पीवर माल्ही के गोठियौ घर में।** २५८७

या तो भावज पीहर पहुँची या उसका यार घर में।

—घर में चहल-पहल के बदले शांति की केवल दो ही वजह हो सकती है—जो कहावत में व्यक्त हुई हैं।

—दाल में कुछ-न-कुछ काला अवश्य है।

**पाठा : के तौ भौजाई नींद भेळी के वींद भेळी।**

या तो भावज नींद के साथ या वींद (पति) के साथ।

**के तौ भौजाई री जीभ कांमणगारी अर के नैणां काजळ रेख सारी।** २५८८

या तो भावज की जीभ में ही जादू है या आँखों में काजल डाला है।

—घर में लोगों के जमघट की वजह या तो भावज की मीठी वाणी या उसका सुहाना शृंगार।

दे.क.सं. २५८७

**के तौ भौजाई रौ सुभाव मुळकणौ के गांव रौ लोग कुलखणौ।** २५८९

या तो भावज का स्वभाव मुस्कराने का या गाँव के लोग बदमाश।

—किसी घर में बस्ती के लोगों की आमद-रफ्त ज्यादा होने पर छोटे भाई से किसी व्यक्ति ने इस बाबत पूछताछ की तो देवर ने जवाब दिया कि या तो भावज की आदत हँसने-मुस्कराने की है या गाँव के लोग बदचलन हैं।

—कारण के बिना कुछ भी कार्य नहीं होता।

—आधार के बगैर कोई बुदबुदा नहीं उठता।

**के तौ मरयां के करयां।** २५९०

या तो मरने से या करने से।

—या तो काम पूरा करने से शांति मिलती है या मरने से।

—अकर्मण्यता मृत्यु के बराबर ही है। मनुष्य जीवन का अर्थ ही है—कार्य,कार्य और कार्य। मरने के बाद ही उस पर विराम-चिह्न लगता है।

**के तौ मां भार झेलै के जमीं।** २५९१

या तो माँ भार झेलती है या जमीन।

—दुनिया में माँ और पृथ्वी से बढ़कर सहनशील कोई दूसरा नहीं होता।

—पृथ्वी की सहनशीलता की तरह माँ की ममता का भी कोई पार नहीं। वह अपने पुत्रों के लिए चाहे जितना दुख उठा सकती है।

मि.क.सं. २५६९

**के तौ मूरख खाय मरै के उंचाय मरै।** २५९२

या तो मूर्ख खाकर मरे या उठाकर मरे।

—या तो अधिक खाने से या अधिक भार उठाने से मनुष्य को क्षति पहुँचती है।

—मनुष्य को चाहिए कि वह हिसाब से खाये और हिसाब से भार उठाये।

**के तौ रांणी जायौ के बिरांणी जायौ।** २५९३

या तो रानी का जाया या बनियाइन का जाया।

—समाज का संचालन या तो रानी की कोख से जन्मा राजकुँअर करता है या सेठानी की कोख से जन्मा बेटा। राजकुँअर सत्ता का प्रतीक है और बनिये का बेटा धन या पूँजी का।

—दुनिया में सुखी दो ही हैं। एक तो राजकुँअर और दूसरा बनिया।

**के तौ राखै रांम अर के राखै डांम।** २५९४

या तो रखे राम या रखे डाम।

डांम = उपचार-स्वरूप दागने की एक विधि।

—या तो रोगी की रक्षा राम के हवाले या डाम के हवाले, वरना बचना मुश्किल है।

—उपचार के लिए दाग की प्रक्रिया का महत्त्व।

**के तौ लड़ै गिंडक अर के लड़ै गिंवार।** २५९५

या तो लड़े कूकर या लड़े गँवार।

—अकारण या नासमझी से या तो कुत्ते आपस में लड़ते हैं या गँवार।

—आपस में झगड़ने वाले मनुष्य कुत्तों के समान हैं।

—कुत्तों की तरह लड़ना मनुष्य के लिए शोभनीय नहीं।

पाठा : **के तौ लड़ै कूकर के लड़ै कमीण।** या तो लड़े कूकर या लड़े कमीन।

**के तौ लड़ै सूरमा के लड़ै गिंवार।** २५९६

या तो लड़े शूरवीर या लड़े गँवार।

—शूरवीर लड़ता है देश की सुरक्षा के लिए और गँवार लड़ता है अपने ओछे स्वार्थ के लिए। किंतु दोनों की लड़ाई में आकाश-पाताल का अंतर है।

—स्वयं अपने-आप में लड़ाई का कोई महत्त्व नहीं। कारण या लक्ष्य बड़ी बात है।

**के तौ वींद छोटौ के घोड़ी घूबली!** २५९७

या तो दूल्हा छोटा या घोड़ी झुकी हुई!

—परोक्ष रूप से किसी की खामी बताना।

—जो व्यक्ति साफ न कहकर सच्ची बात को घुमाकर कहे।

**के तौ संपाड़ै दाई-माई, के संपाड़ै सगा भाई।** २५९८

या तो नहलाये धाय-मैया या नहलाये सगे भैया।

—निहायत गंदे व गलीज आदमी के लिए जो नहाने से कतराता हो। उसके लिए परिहास में इस कहावत का प्रयोग होता है कि या तो उसे जन्म के समय दाई ने पहली बार अपने हाथों से स्नान करवाया था या फिर मरने पर सगे भाई या परिजन स्नान करवाएँगे। अपने हाथों से स्नान करने की तो कसम ही खा रखी है।

—जो व्यक्ति अपने हाथ से दूसरा कठिन काम तो क्या, नहाने जैसा सुखद काम भी न कर सके, उसके लिए।

**के तौ सरब सुहागण के फरड़क रांड।** २५९९

या तो सर्व सुहाग या निपट वैधव्य।

—इस पार या उस पार।

—जोखिम के काम में लाभ भी बेशुमार तो क्षति भी बेइंतहा।

**के तौ सासू सावकी के पुरसतां भूली।** २६००
**मूंडा देखनै टीका काढ़ै, मार गटागट थूली॥**

या तो सास सौतेली या पुरसते भूली।
मुँह देखकर तिलक निकाले, खा गटागट थूली॥

थूली = गेहूँ के दलिये का उबला व्यंजन जो अति सामान्य माना जाता है।

—दामाद की उपेक्षित आव-भगत का उपहास। दामाद के सामने थूली से भरी थाली, जो राह चलते बटोही को भी नहीं खिलाई जाती। इस ठंडी उपेक्षा के दो ही कारण हो सकते हैं या तो सास सौतेली है या वह परोसते समय भूल गई कि किसे क्या खिलाना है! जो भी कारण हो, स्थिति सामने है—भूख मिटानी हो तो गटागट थूली खाकर पेट भर लो, वरना भूखे रहने से और ज्यादा तकलीफ होगी।

—स्थिति के साथ समझौता करने में ही लाभ है।

**के तौ सी-ओढ़ण कोनीं के गांव री बैठक करड़ी।** २६०१

या तो घर में बिछौने नहीं हैं या गाँव की बैठक तगड़ी है।

**संदर्भ-कथा :** किसी एक गाँव में अलाव के चारों ओर लोगों का जमघट आधी रात के बाद भी मजे में गपशप करता रहा, तपता रहा। बाहर से आया अतिथि भी उन सबके बीच बैठा था। नींद के मारे बुरा हाल होते हुए भी अकेले उठकर जाने की इच्छा नहीं हुई। अंत में हिम्मत

करके उसने पूछ ही लिया—या तो तुम्हारे घरों में ओढ़ने को पर्याप्त बिछौने नहीं हैं या फिर तुम्हारी बैठक बहुत मजबूत है। अतिथि की बात सुनकर गाँव के लोग ठहाका मारते हुए बिखर गये।

—अपने मन की बात मजाक-मजाक में परोक्ष रूप से कह देना।

—जिस बात के लिए दो के अतिरिक्त तीसरा कोई विकल्प न हो।

**के तौ सेवळी चरण सारू गी के बिल में।** २६०२

या तो सेही चरने के लिए गई या बिल में होगी।

सेवळी = सेहा = सेही—संस्कृत सेधा, शल्लकी = एक प्रकार का रेगिस्तानी जंतु विशेष जिसके शरीर पर नुकीली शूलें होती हैं। यह प्राय: टीबों के विवर में रहता है। इसका माँस बहुत पौष्टिक माना जाता है। इसकी चर्बी से तेल निकलता है जो बादी के हेतु मसाज में काम लिया जाता है।

**संदर्भ-कथा** : एक व्यक्ति की कमर में बादी का जबरदस्त असर हुआ। न हिला-डुला जाये न आराम से सोया जाये। उसके खास मित्र ने पुख्ता इलाज बताया कि सेही का माँस खाने से और उसके तेल की मालिश करने पर कैसी भी बादी का दर्द तीन दिन में गायब, जैसे था ही नहीं। बीमार थोड़ा आश्वस्त हुआ। एक दिन बैलगाड़ी में बैठकर दोनों मित्र जंगल में सेही की तलाश करने गये। सेही के निशान देखकर उसने गाड़ी रोकी। बड़ी सावधानी से उसने इधर-उधर देखा। आखिर एक बिल के पास रुका। खुश होकर बोला—लग गया, सेही का पता लग गया। बीमार मित्र को बड़ी तसल्ली हुई। गाड़ी से उतर कर टसकता-टसकता मित्र के पास पहुँचा। पूछा—कहाँ है, मुझे तो नजर नहीं आती। तब मित्र ने जवाब दिया—मैं क्या यों ही तुम्हें फुसला रहा हूँ। दावे के साथ कह सकता हूँ कि या तो सेही जंगल में कहीं चरने गई है या इस बिल के भीतर गहरी दुबकी हुई है।

'तुम्हें पक्का भरोसा है।'

मित्र ने दृढ़ स्वर में कहा—और नहीं तो क्या? सेही के बारे में मेरा अनुमान कभी गलत नहीं हो सकता। इसकी शूल-शूल पहिचानता हूँ।' बीमार मित्र को तो विश्वास करना ही था, पर सेही हाथ नहीं लगी।

—अपनी प्रवीणता का झूठ-मूठ दावा करने वाले व्यक्ति के लिए।

—सत्ताधारी इसी तरह अपनी जनता को आश्वस्त करते हैं कि सेही या तो बिल में गहरी दुबकी हुई है या जंगल में कहीं चरने गई है। भला तीसरी स्थिति और हो ही क्या सकती है—यदि वह मरी नहीं है तो ?

**केदार रौ कांकण।** २६०३

केदार का कंगन।

**संदर्भ-कथा** : एक धूर्त बिल्ली की बहु प्रचलित लोक-कथा। एक बार दही की हँड़िया में मुँह फँसाकर वह चुपचाप दही चाट रही थी। मालकिन के पाँवों की आहट सुनकर वह हड़बड़ी में भागी। हँड़िया का पैंदा फूट गया और आगे का गोल-गोल हिस्सा उसकी गर्दन में लटका रह गया। उस धूर्त बिल्ली ने उस दुर्घटना का भी फायदा उठाकर चूहों को समझाया कि अब उसने अपनी हिंसा-वृत्ति का सर्वथा परित्याग कर दिया है। केदारनाथ का पवित्र कंगन गले में पहिनने के बाद उसका हृदय सूमचे रूप से बदल गया है। चूहों को मारने की बात तो दूर उनकी तरफ गुस्से से देखना भी पाप है। बेचारे भोले चूहे उसके झाँसे में आ गये। वह अलग से एक-एक चूहे को पवित्रता का पाठ सिखाने के बहाने उन्हें खाती रही और हर बार केदार के कंगन की दुहाई देती रही।

—पाखंड की ओट में विश्वास-घात करना।

—आज के धूर्त नेता भी जनता को इस प्रकार केदार के कंगन की दुहाई देते हैं और अपना उल्लू सीधा करते हैं।

—दुष्ट साधुओं की दुष्प्रवृत्ति का चित्रण।

**के धापै सोटां सूं के धापै रोटां सूं।** २६०४

या तो अघाये सोटों से या अघाये रोटों से।

—अमानुष, जंगली व गँवार व्यक्ति या तो पिटाई से अघाता है या रोटियों से।

—गँवार व्यक्ति को खिलाकर उससे पीछा छुड़ाया जा सकता है या डंडे मार कर।

**के न्यूंतै न्यूंतारां नै, के न्यूंतै नागां नै।** २६०५

या न्योते न्योतहरों को या न्योते बदमाशों को।

—या तो आत्मीय जनों को निमंत्रण दिया जाता है या बदमाशों को। दुष्टों को इसलिए कि वे उत्सव में हुड़दंग मचाने की बजाय शांतिपूर्वक रहें।

—परिजनों से बनाकर रखना और दुष्टों से डरकर रहना ही अच्छा है।

—मनुष्य को दुतरफा समझौता करना पड़ता है—परिजनों के साथ भी और दुष्टों के साथ भी।

**के पिद्दी अर के पिद्दी रौ सोरबौ।** २६०६

क्या पिद्दी और क्या पिद्दी का शोरबा।

पिद्दी = बया जाति का एक छोटा पक्षी।

—निर्धन या निरीह व्यक्ति की बिसात ही कितनी।

—तुच्छ या उपेक्षणीय व्यक्ति द्वारा हेकड़ी दिखाने पर...।

**के पैली धर आपणी के आपांरी पर हत्थ।** २६०७

या तो उधर की सीमा अपनी या अपनी सीमा दूसरों के हाथ।

—युद्ध में जीतने पर दुश्मन की धरती पर अपना अधिकार हो जाएगा या हारने पर दुश्मन अपनी धरती हथिया लेगा।

—मनुष्य को चाहिए कि वह किसी भी कीमत पर साहस न छोड़े या निराश न हो।

**के फूंक सूं परबत उडै है ?** २६०८

फूँक से पर्वत कब उड़ता है ?

—अकिंचन परिश्रम से बड़ा काम नहीं किया जा सकता।

—काम के यथायोग्य ही श्रम व साधन अनिवार्य है।

**के बसै हजारी के बसै कबाड़ी।** २६०९

या तो बसें हजारी या बसें कबाड़ी।

—बड़े शहरों में या तो धनी रह सकता है या कबाड़ी।

—गरीब का बड़े शहरों में गुजर होना कठिन है।

**के बाड़ माथै सोनौ सूखै है ?** २६१०

क्या बाड़ पर सोना सूख रहा है ?

—दुनिया में कौन ऐसा मायापति है जिसका सोना बाड़ों पर सूखता हो।

—बेकार नष्ट करने के लिए किसी के पास भी संपत्ति नहीं होती।

**के मारै बादळ रौ धांम के मारै बैरी रौ जांम।** २६११

या मारे बादल का ताप या मारे बैरी का पूत।

—किसान को अकाल और पुश्तैनी दुश्मन के अलावा और किसी का डर नहीं होता।

— अकाल की मार न पड़े तो किसान जैसा सुखी और कोई नहीं।

**के मारै सां:ै रौ साझ के मारै अंवळौ राज।** २६१२

या तो मारे आपसी साझा या मारे अन्यायी राजा।

—साझे का धंधा और अन्यायी राजा दोनों घातक हैं।

—साझेदारी व कुशासन की भर्त्सना।

**के मियां मरग्या के रोजा घटग्या।** २६१३

कौन से मियाँ मर गये कि रोजे घट गये।

दे.क.सं.२३४०

**के मोड्यौ बांधै पागड़ी के रहै उघाड़ी टाट।** २६१४

या तो साधु पगड़ी बाँधे या रहे उघाड़ी टाट।

—जिस व्यक्ति पर सामाजिक मान्यता का बंधन नहीं, वह चाहे जैसे रह सकता है, सर पर पगड़ी रखे तो ठीक न रखे तो ठीक।

—मन-मौजी व्यक्ति के लिए।

**केरड़ी खूंटा रा जोर माथै उछळै।** २६१५

बछिया खूँटे के जोर पर उछलती है।

—मातहत या नौकर अपने स्वामी के जोर पर कूदफाँद करता है।

—निरीह व्यक्ति कभी जोर दिखाता भी है तो केवल अपने हिमायतियों के बल पर।

—आर्थिक बढ़बूटी से स्वतः अकड़ आ जाती है।

**केर रै पांन नावै, वसंत रौ दोस नहीं।**–व.३८६ २६१६

करील के पत्ते न आएं तो वसंत का दोष नहीं।

केर = करील = पश्चिमी राजस्थान की मरुभूमि में उगने वाली झाड़ी जिस में केवल पतली-पतली टहनियाँ ही होती हैं। किसी भी ऋतु में उसके पत्ते नहीं आते। वसंत ऋतु में भी वह वैसा ही पात-विहीन रहता है।

—करील के पत्ते नहीं आयें तो यह प्रकृति की देन है,वसंत का दोष नहीं।

—सोने की लंका में कोई दरिद्र भी रहे तो उस में लंका का दोष नहीं। उसके भाग्य का ही दोष समझना चाहिए।

**के रोवूं अे जणी , थूं आंगी दी न तणी।** २६१७

क्या रोऊँ ए जनी, तूने कंचुकी दी न तनी।

—माँ के मरने पर बेटी उलाहना देती है कि वह उसके लिए क्या रोये ? उसने दहेज के नाम पर न तो कंचुकी दी और न डोरी।

—जिसने जाने-अजाने कुछ भी सहयोग नहीं दिया,उसकी मृत्यु पर कैसा शोक।

—लेन-देन का संबंध ही सबसे बड़ा रिश्ता है।

**के लड़ै लड़ायतौ के लड़ै अणजांण।** २६१८

या तो लड़े झगड़ालू या लड़े अनजान।

—सिद्धहस्त व्यक्ति में साहस या आत्मबल होता है या निपट अनजान में।

—अज्ञानी का आत्मविश्वास भी ज्ञानी से कम नहीं होता।

पाठा : **के लड़ै लड़ाकड़ौ के लड़ै अणभोळ**। या तो झगड़े लड़ाकू या झगड़े नादान।

**केळ कांटां नी हूं परीत !**- भी.१४६ २६१९

कदली व काँटों में कैसी प्रीत !

—कदली निहायत कोमल होती है और काँटे एकदम तीक्ष्ण,फिर दोनों में मैत्री होने का कोई समान आधार ही नहीं। काँटों के परस मात्र से कदली तो ठौर-ठौर बिंध जाएगी।

—सज्जन व दुष्ट का क्या मेल ?

—सरल और कुटिल में कैसी यारी ?

**केळ कांटा री कैड़ी प्रीत ?** २६२०

कदली व काँटों में कैसी प्रीत ?

दे.क.सं.२६१९

**केळू री कांब , होळी री झळ !** २६२१

कदली की छड़ी, होली की ज्वाल !

—जो नायिका अतिशय नाजुक व बेइंतहा सुंदर हो।

—नारी के सौंदर्य को चित्रित करने वाली उपमाएँ।

**केळौ, बीछू, बांस, जाया ई करै विणास।** २६२२

केला, बिच्छू और बाँस, औलाद ही करे विनास।

—केले के पेड़ में फल एक बार ही लगता है। पहली बार में ही केलों के गुच्छे पौधे का सारा सत्व खींच लेते हैं। बिच्छी के बच्चे माँ के शरीर से चिपटकर उसे चट कर जाते हैं। बाँस भी अपने वंश का नाश करने में सहायक होता है। प्रकृति के ऐसे कुछ ही उदाहरण हैं—जिनके वंशज ही वंश को नष्ट करते हैं, अन्यथा अधिकांश प्राणी-जगत् में शावक और माँ के बीच जबरदस्त ममता रहती है।

—कोई संतान अपने पिता को बहुत तंग करती है, झगड़ा-फसाद करती है, कभी-कभार मार भी देती है—तब यह उक्ति याद हो आती है।

**केस खोस्यां मुड़दा हळका नीं व्है।** २६२३

बाल उखाड़ने से मुर्दे हलके नहीं होते।

—शादी-विवाह जैसे बड़े उत्सव में नमक का खर्च कम करने से कुछ भी फर्क नहीं पड़ता।

—मामूली किफायत से बड़े आयोजन का खर्च कम नहीं होता।

—नगण्यतम बुराई को मिटाने से बड़ी बुराई नहीं मिटती।

**केसरिया किण माथै कीन्हा?** २६२४

केसरिया वेश किस पर पहिना?

—युद्ध में मृत्यु के लिए उत्साही राजस्थानी शूरवीर केसरिया वस्त्र धारण करते थे। मातृभूमि की रक्षा के लिए उन्हें परिवार के भरण-पोषण की कुछ भी परवाह नहीं होती थी। ऐसे देशभक्त उत्साही वीरों से कोई अबोध यह प्रश्न करे कि वे किसलिए मरने को लालायित हो रहे हैं? पीछे बाल-बच्चों की परवरिश का कौन ध्यान रखेगा? वे देश के प्रति जिम्मेवारी निभा रहे हैं तो देशवासियों को उनके प्रति जिम्मेवारी निभानी है। देश के लिए मरने वालों के परिवार की खातिर जिंदा नागरिकों को चिता करनी चाहिए।

—किसके विश्वास पर प्राणों का उत्सर्ग कर रहे हो, कुछ सोचा भी है?

**केसरिया वागा कीन्हा !** २६२५

केसरिया जामा पहिना !

—मातृभूमि के लिए प्राणों की बाजी लगाने वाले शूरवीर केसरिया बाना धारण करें तब।

—मौत का वरण करने के लिए देश-भक्त दूल्हे लालायित हों तब।

—बहादुरों के लिए एक विशेष संबोधन।

**के सहरां के डहरां।** २६२६

या शहर या भूमि उर्वर।

—भरपूर मजदूरी के लिए या तो कोई व्यक्ति शहर का आश्रय खोजता है या उपजाऊ धरती का।

—गुजर-बसर के लिए दो ही आश्रय पर्याप्त हैं या तो शहर या उपजाऊ खेत।

**के सोवै वंबी रौ सांप के सोवै जिणरै मांय'र-बाप।** २६२७

या तो सोये बांबी का सांप या सोये जिसके माँ और बाप।

—रात भर अपना शिकार पूरा करके सांप दिन बांबी के भीतर सांप बेखबर होकर सोता है। बांबी के भीतर उसे खतरे की कोई आशंका नहीं रहती। और जिसके माँ-बाप जीवित हैं, उसे कमाने की क्या चिंता। वह दिन को भी टाँग-पर-टाँग धरे आराम से सो सकता है।

—जिन्हें कमाने-खाने की कोई चिंता नहीं रहती, वे ही निश्चिंत होकर सोते हैं।

**के सोवै राजा रौ पूत, के सोवै जोगी अवधूत।** २६२८

या सोये राजा का पूत या सोये योगी अवधूत।

—संसार में किसी-न-किसी कमी या दुख के कारण राजा-महाराजा या अवधूत जोगी के अलावा सभी को कुछ-न-कुछ चिंता बनी ही रहती है। और चिंतातुर मनुष्य आसानी से सो नहीं पाता।

—जो व्यक्ति सांसारिक व भौतिक चिंताओं से मुक्त होता है वही प्रगाढ़ नींद में सो सकता है।

**के हंगलां के मूतलां ?** २६२९

या तो हँगलो या पेशाब कर लो ?

—हँगने की स्वतंत्रता होते हुए भी पेशाब की छूट नहीं मिलती। दोनों में से एक का चयन करने पर पचास प्रतिशत आजादी तो निःसंदेह है ही। मालिक इससे अधिक छूट और क्या दे सकता है।

—प्रजातंत्र का मुखौटा पहने एकतंत्रवाद का असली चेहरा।

—विकृत प्रजातंत्र का चित्रण!

**केहर जड़्यौ कठांतरै, कहा करै बळवंत?** २६३०

नाहर फँसा कटघरे मे, क्या करे बलवान?

—जंगल का राजा प्रचंड नाहर भी पिंजरे में बंद होने के पश्चात् कुछ भी नहीं कर सकता।

—एक बार बंधन में फँसने के बाद कैसे भी शक्तिशाली का वश नहीं चलना।

**के है भोळी बातां में, जूत्यां लैल्यौ, हाथां में।** २६३१

क्या धरा है भोली बातों में, जूते ले लो हाथों मे।

—व्यर्थ की भोली बातों में समय खराब न करके हाथों में जूते ले लो, भागने में ही खैरियत है।

—जब जैसा मौका लगे, उसी के अनुरूप काम करना चाहिए—लड़ने के मौके पर लड़ना और भागने के मौके पर भागना। यही पुरखों की सीख है।

**कै छोरी ठाकर के हूं तौ कै देस्यूं पण गांव रा कैवै जद व्है!** २६३२

कह छोकरी टाकुर कि मैं तो कह दूँगी पर गाँव वाले कहें तब न!

—केवल धमकी व दबाव के बल पर प्रतिष्ठा बढ़ाने वाले तथाकथित बड़े व्यक्ति के लिए।

—लोक-प्रियता अपने-आप सत्कर्मों से बढ़ती है, डाँट-फटकार से नहीं।

**कैड़ीक है रांड भोजा खपावणी!** २६३३

कैसी है राँड भोज को खपाने वाली!

**ऐतिहासिक संदर्भ:** इस कहावत में राँड का मतलब जैमती (जयमती) रानी से है। यह बुवाल के राजा ईहड़देव चालुक्य की पुत्री थी। उसका विवाह भणाय के वृद्ध राणा बाघराज परिहार से हुआ था। वह अत्यंत दुश्चरित्र थी।...बाघ के चौबीस पुत्रों की वीरता के प्रभाव से वृद्ध राजा ने बघड़ावतों के साथ मैत्री स्थापित कर ली थी। बघड़ावतों में एक भोज भी था, जिसने

इतना धन लूटा कि चारों ओर उसकी कीर्ति फैल गई थी। जयमति ने अपने पति को वृद्ध एवं भोज को सुंदर एवं युवा देखकर उसे पति रूप में ग्रहण करने के आशय से भोज के पास संदेश भेजा। भोज ने उचित मौका देखकर बाघराज की अनुपस्थिति में डाका डालकर जयमती को उड़ा लिया। इस पर बाघराज ने एक बड़ी सेना लेकर भोज पर चढ़ाई कर दी। उधर जयमती भी भोज से शीघ्र ऊब गई और मन-ही-मन पछताने लगी। अतः उसने भोज एवं उसके भाइयों को मरवाने के उद्देश्य से बाघराज को लड़ने के लिए बहुत उकसाया। सब भाई एक-एक करके बाघराज की सेना के द्वारा मारे गये। इसी दुश्चरित्र एवं कपट-जाल के कारण जयमती को कालांतर में अत्यंत हेय दृष्टि से देखा जाने लगा और इसी पृष्ठभूमि के आधार पर आज भी दुश्चरित्र महिला को दुत्कारते समय जैमती के नाम से संबोधित करते हैं—जा अे रांड जैमती, भोजा खपावणी। रानी जैमती का नाम दुश्चरित्र नारी का पर्यायवाची बन गया है।

—जिस कुलटा औरत की वजह से प्राण व धन की बर्बादी हो।

—जिस औरत के कारण मनुष्य आपस में लड़ते मरते हों।

**कैड़ौ आयौ जांणै तोरण माथै वींद।** २६३४

कैसा आया मानो तोरण पर दूल्हा।

—जो व्यक्ति अचानक किसी खास आयोजन पर आ धमके तब।

—याद करते ही जो व्यक्ति लाभ के स्थल पर अचानक हाजिर हो जाय।

**कैड़ौ ई रूंख आभै लग नीं पूगै।** २६३५

कोई भी वृक्ष आकाश तक नही पहुँच सकता।

—मनुष्य के उत्कर्ष की एक सीमा है—जिसका वह अतिक्रमण नहीं कर सकता।

—मनुष्य की क्षमता का एक दायरा है—जिसका वह उल्लंघन नहीं कर सकता।

—कोई भी ऋषि-मुनि या ज्ञानी-विज्ञानी राम के दुआरे नहीं पहुँच सकता।

**कैड़ौक हेड़ावू है?** २६३६

कैसा कर्मठ और साहसी है?

—उस आदर्श व्यक्ति की प्रशस्ति में जिसकी अपूर्व दक्षता व अथक परिश्रम से घर में तो लाभ हो और साथ-ही साथ सारे हलके में उसकी कीर्ति बढ़े।

**कैड़ौ है बुड़ियौ तीतर व्है ज्यूं !** २६३७

**कैसा है लावा तीतर की नाईं !**

—लावा तीतर छोटा होते हुए भी अत्यंत चालाक व फुर्तीला होता है।

—जो व्यक्ति दिखने में छोटा हो किंतु लावा तीतर की तरह चंचल और चतुर हो।

**कैड़ौ है सळकणियौ सांप व्है ज्यूं !** २६३८

**कैसा है सलकने साँप की तरह !**

सळकणियौ सांप = अतिशय फुर्ती से खिसकने वाला साँप।

—जो व्यक्ति काम की वेला अदेर कहीं छिप जाय।

—कामचोर व्यक्ति के लिए।

**कै ढोली घोड़ा रौ मोल, के रातै रावळौ बिक्यौ !** २६३९

बता ढोली घोड़े का मोल कि रात को आपका बिका ही था !

**संदर्भ-कथा** : एक ठाकुर ने ढोली के बिकाऊ घोड़े का मोल पूछा। ढोली की हैसियत के मुताबिक उसका घोड़ा भी मरियल व साधारण था। वह सोचने लगा कि घोड़े की क्या कीमत बताये ! अकस्मात् उसे ठाकुर के घोड़े का ध्यान आया, जो कल रात ही काफी ऊँचे मूल्य पर बिका था। ठाकुर का घोड़ा नस्ली व अत्यंत हृष्ट-पुष्ट था। ढोली ने नम्रता-पूर्वक जवाब दिया कि वह अपने मुँह अपने घोड़े का क्या भावताव करे ! कल रात हुजूर का घोड़ा जिस मूल्य में बिका उससे कम तो इसके भी क्या दाम होंगे ! ठाकुर भला व दयालु था। ढोली का मूर्ख व भोला जवाब सुनकर मुस्कराता हुआ चल दिया। वह घोड़ा अन्य किसी याचक को दानस्वरूप देना था।

—जो नासमझ छोटा व्यक्ति बड़ों की बराबरी करना चाहे।

—केवल जाति-वाचक संज्ञा के कारण दो चीजों की एक-सी कीमत नहीं हो सकती। नस्ल के अलावा भी कई दीगर बातों का ध्यान रखा जाता है।

—किसी वस्तु का मूल्य उसकी गुणवत्ता पर निर्भर करता है।

**कैण सुणण री बात कोनीं।** २६४०

**कहने सुनने की बात नहीं।**

—ऐसी बात जिसे दूसरों को बताने में संकोच हो।

—जिस बात को कहना शोभनीय व संगत न हो।

**कैण में इग्यारस पण बारस री ई दादी है।** २६४१

कहने में एकादशी पर द्वादशी की भी दादी है।

—एकादशी का व्रत करने के पश्चात् दूसरे दिन उजमने का खर्च, ब्राह्मणों व गोत्र की कन्याओं को खिलाना, रात को जागरण करना और पास के तीर्थों में जाना—ऐसे कई खटकर्म करने पड़ते हैं, इसलिए एकादशी के प्रति यह लोक-धारणा प्रचलित है।

—कोई छोटा लड़का अपनी उम्र से अधिक बुद्धिमानी और सक्रियता दिखाये तब।

**कैणै माथै नीं डहकणौ, करणी देखणी।** २६४२

कथनी से मत बहको, करनी को परखो।

—उपदेशों के भुलावे में न आकर आचरण पर ध्यान रखना चाहिए।

—कहने की अपेक्षा करना अधिक महत्त्वपूर्ण व कठिन है।

**कैता नीं के वींद बूढ़ौ है?** २६४३

कह नहीं रहे थे कि दूल्हा बूढ़ा है?

**संदर्भ-कथा**: एक व्यक्ति ने ढलती उम्र में शादी की। पाणि-ग्रहण के समय वह तनकर सीधा वेदी पर बैठा था। किशोरी दुलहन सटकर बैठी थी। अचानक उसके मन में एक खयाल कौंधा कि चारों और खड़ी औरतें कहीं दुलहन की तुलना में उसे अधिक बूढ़ा न समझे। कड़ाके की इस सर्दी में भी वह चाहे तो अपनी जवानी का प्रमाण दे सकता है। फिर उससे धीरज नहीं रखा गया। पास खड़ी एक औरत को ठंडे पानी का लोटा लाने के लिए कहा। आश्चर्य कि दूल्हे ने गटागट पूरा लोटा खाली कर दिया। लोगों के लिए ठंड के मारे गले का थूक निगलना तक कठिन था। एक सहेली ने फुसफुसाते हुए शंका की—कौन कह रहा था कि दूल्हा बूढ़ा है?

दूल्हे के कानों में भनक पड़ी तो उसे और जोश बँधा। खाली लोटा सामने करते हुए उसने दूसरी औरत से कहा—एक लोटा और!

पास खड़ी सभी औरतों की आँखें ऊँची कपाल में चढ़ गईं। दो-तीन बार मना करने के बावजूद वह दूसरा लोटा भी एक ही साँस में निगल गया। चारों ओर चकचक मची—दूल्हा तो बिल्कुल बूढ़ा नहीं। कोई मर्द इस सर्दी में आधा लोटा भी पानी पीकर बताये। दुलहन का सौभाग्य।

दूल्हे की नस-नस में ठंडक सिहर उठी थी पर औरतों के जोशीले बोल सुनकर उसे और ताव चढ़ा। फिर खाली लोटा आगे करते बोला एक लोटा और।

इस तरह जोश-जोश में जवानी का प्रमाण देने के लिए वह चार लोटे पानी गटक गया। पर चौथे लोटे का परिणाम कुछ ठीक नहीं हुआ। आधा लोटा खाली करते ही वह जमीन पर लुढ़क पड़ा। औरतों की चकचक में दूल्हे का अस्फुट प्रलाप किसी को भी सुनाई नहीं पड़ा।

—दूसरों के बहकावे में आकर फूला नहीं समाने का नतीजा बुरा ही होता है।

—अपनी औकात से परे जोश दिखाना हमेशा घातक होता है।

**कै तौ प्राहूणी भेळौ सूवाद्यै के खीर में मूतरवाद्यै।**–व.३११ २६४४

या तो पाहुनी के साथ सोने दे या खीर में मूतने दे।

—कोई काम दोनों तरफ से बिगड़े तब।

—जिस व्यक्ति की एक भी माँग मानने के काबिल न हो।

—धर्म-संकट में फँसे व्यक्ति की मजबूरी।

—दुविधा-जनक स्थिति का सामना करने पर।

**कैयनै कैवाड़णौ।** २६४५

कहकर कहलवाना।

—जो अपशब्द कहेगा, वह अपशब्द सुनेगा।

—जैसा कहना वैसा सुनना।

**पाठा : ऊ कैयनै गू कैवाड़णौ।** ऊ कहकर गू कहलवाना।

**कैय'र खावै जकी डाकण नीं बाजै।** २६४६

कहकर खाये सो डायन नहीं कहलाती।

—पहिले जनलाकर कोई किसी को हानि पहुँचाये तो वह धोखा नहीं। अपराध तो जरूर है। पर धोखा अपराध से ज्यादा घृणित है।

—खुलासा नुकसान पहुँचाने की अपेक्षा विश्वासघात करना अधिक बुरा है।

**पाठा : वकारनै खावै जको डाकी नी बाजै।**

आगाह करके खाये वह डाकी (दैत्य) नहीं कहलाता।

**कैर आलौ ई बळै, सासू सूदी ई लड़ै।** २६४७

करील गीला ही जलता है, सास सीधी भी लड़ती है।

—केवल सूखी लकड़ी ही आग में नहीं जलती है। करील की लकड़ी अपवाद-स्वरूप गीली भी हो तो आग पकड़ लेती है। उसी प्रकार सास चाहे कितनी ही सीधी व भली हो, मौका पाकर बहू पर भभक उठती है।

—कैसा भी सज्जन अधिकारी मातहत पर नाराज होता ही है।

—अधिकार जतलाने की लालसा मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति है।

**कैर रौ कांटौ गियौ साढ़ी सोळै हाथ।** २६४८

करील का काँटा बढ़ा साढ़े सोलह हाथ।

—करील का काँटा बहुत छोटा व मामूली नर्म होता है—यदि वह साढ़े सोलह हाथ बढ़ जाये तो स्वप्न जैसी बात है। पर लोक-कथाओं को सुनाते हुए इस तरह के मुखड़ों की परंपरा है। असंगत होते हुए भी वे संगत महसूस होते हैं।

—बिना सिर-पैर की गप्प।

—खामखाह गप्प हाँकने वाले व्यक्ति के लिए, जो हवाई बातें छौंकता हो।

**कैर रौ काठ तूटै पण लुळै कोनीं।** २६४९

करील की लकड़ी टूट भले ही जाय पर मुड़ती नहीं।

—स्वाभिमानी व्यक्ति प्राण गँवाने पर भी किसी के सामने झुकता नहीं।

—जो व्यक्ति कभी किसी भी कीमत पर समझौता न करे।

—बेइंतहा अहंकारी व्यक्ति का चारित्रिक लक्षण।

**कैर सूं छूटौ तौ कूंभटिया में पड़ियौ।** २६५०

केर से छूटा तो कूँभटिये में गिरा।

कैर = करील = पश्चिमी राजस्थान की मरुभूमि में उगने वाली झाड़ी जिस में केवल पतली-पतली टहनियाँ ही होती हैं। किसी भी ऋतु में उसके पत्ते नहीं आते। वसंत ऋतु में भी वह पात-विहीन रहता है।

कूंभटियौ = कूमट,कुमटियौ = एक प्रकार का कांटेदार वृक्ष जिसके फल फलीनुमा लगते हैं। उन फलियों के बीज को 'कूमट' या 'कुमटिया' कहते हैं। इनका शाक बनाया जाता है। शमी की फली यानी साँगरी, कैर और कूमट के सम्मिश्रण से साग बड़ा लजीज बनता है।
मि.क.सं.९७

**कैवण नै टाबर, खाय बिरौबर।** २६५१

कहने को टाबर, खाय बराबर।

टाबर = बच्चा।

—जिस बच्चे की खुराक अधिक हो।

—जो बच्चा बड़ों की होड़ करने लगे तब।

**कै हारा भण करे जी कूंण?**– भी.१४७ २६५२

कहते सब हैं पर करता कौन है?

—कहना बहुत आसान है, पर करना बेहद कठिन।

—'झूठ मत बोलो' में केवल तीन शब्दों का उच्चारण करना पड़ता है, पर इस कहे पर आचरण करना लगभग असंभव है। मनुष्य अपनी ही करनी से ऐसा उलझ गया है कि झूठ के बिना कोई भी छोटा-बड़ा काम संपन्न नहीं हो सकता।

—ऊँची-ऊँची बातें सब बघारते हैं किंतु उन पर अमल कोई नहीं करता।

**कोइटौ चूंचाड़ करै, अरठ उलाळा खाय।** २६५३
**घर-नारी घुरका करै, को चेला किण वाय॥ गुरांसा वांगी नहीं।**

कुआँ ची-चपर करे, रहँट हचकोले खाय।
घर-नारी नैण तरेरे, कह चेला कारण काय? गुरुजी मरम्मत नही की।

—गुरु-शिष्य संवादगत कई पहेलियाँ हैं—जिनमें एक ही उत्तर मे शंकाओं का समाधान हो जाता है।

—राजस्थानी में 'वांगणौ' शब्द के दो अर्थ हैं—एक तो किसी गतिशील उपकरण में तेल लगाना ताकि घूमने की क्रिया सहज हो जाय। कुएँ की गिर्टी इसलिए चीं-चपर कर रही है कि तेल देकर उसकी सँभाल या मरम्मत नहीं की, रहँट इसलिए हिचकोले खा रहा है कि

उसे भी तेल देकर दुरस्त नहीं किया और घरवाली इसलिए रुआब गालिब कर रही है कि उसकी भी मरम्मत नहीं की। ऐसी शिक्षा-प्रद पहेलियों से बच्चे की बुद्धि प्रखर होती है।

**कोई अमरफळ खायनै नीं आयौ।** २६५४

कोई अमरफल खाकर नही आया।

—मौत किसी का लिहाज नहीं रखती—न राजा का न धनाढ्य का।

—जो अहंकारी अपने मद में खोया हो उसे सतर्क करते हुए इस कहावत का प्रयोग होता है।

**कोई आंख्यां रौ आंधौ तौ कोई हीया रौ फूटोड़ौ।** २६५५

कोई आँखों का अंधा तो कोई हीये का फूटा।

—दुनिया में कोई अबोध है तो कोई मूर्ख। कोई नादान है तो कोई गाफिल। कोई अनजान है तो कोई कूड़-मगज। कोई अंधा है तो कोई बहरा।

—यह दुनिया भाँति-भाँति के लोगों से आबाद है।

—कोई व्यक्ति आँखों के अभाव में अंधा है तो कोई आँखें रहते हुए भी अंधा है।

**कोई कन्नै नव म्हौर व्हैला, जद थारै घरै जीमण आवैला।** २६५६

जिसके पास नौ मोहरें होंगी, वह तेरे यहाँ खाने आएगा।

**संदर्भ-कथा**: एक साधु की जटा में हमेशा नौ मोहरें बँधी रहती थीं। एक जाट ने उस साधु को निमंत्रण देकर अपने घर बुलाया। खास बैठक के कमरे में बिठाया। वह थाली परोसने के लिए रसोई में गया! गाय के घी में बढ़िया चूरमा, भैंस का दही, खीर और ग्वारफली का साग देखा तो साधु के मुँह में लार मचलने लगी। जाट थाली बाजोट पर रखकर सामने के आले में कुछ खोजने लगा। घबराकर साधु से पूछा—यहाँ लाल कपड़े में नौ मोहरें रखी थीं, कोई चूहा तो नहीं ले गया। साधु पहले तो कुछ चौंका। फिर सहज भाव से बोला—नहीं तो। इस सामने वाले आले में कोई चूहा नजर नहीं आया। मेजबान ने ललाट में सलवटें डालकर कहा—फिर क्या जमीन निगल गई। कहीं आपने तो...।

'नहीं बच्चा, हम संत-साधु माया को छूते तक नहीं। हमें मोहरों से क्या सरोकार?' मेजबान ने जटा की ओर इशारा करते कहा, 'फिर जटा के भीतर यह उभरा हुआ क्या है?' साधु ने झट दोनों हाथ सिर पर रखे और सहमते कहा, 'गाँजे की पोटली है।'

'जरा देखूँ तो सही, गाँजा होता कैसा है ?' यह कहकर वह साधु की जटा खोलने लगा। साधु घबराया। थोड़ी हुज्जत की। पर चौधरी तगड़ा था। पोटली छीनकर बोला—यह गाँजा है ? इतना भारी ? खोलकर देखा—एक, दो, तीन ... पूरी नौ मोहरें थीं। चौधरी ने लाल आँखें करते क्रोध में कहा—यह पूरा गाँजा अब मैं पीऊँगा। हम गृहस्थी तो मोहरों के सपने देखते हैं और तुम संत-साधु होकर भी हमारे ही घर में मोहरें चुराने लगे। तुझे और फिर खाना। साधु महाराज नजर झुकाये वहाँ से चुपचाप चलता बना। कोई साल भर बाद उसी साधु को चौधरी ने फिर खाने का न्योता दिया। साधु ने क्रुद्ध हँसी के साथ जवाब दिया कि जिस दिन नौ मोहरें होंगी तभी तेरे घर खाने आऊँगा। चौधरी ने भी मुस्कराकर कहा, 'देखिये भूलिएगा नहीं।'

'नहीं मरते दम तक नहीं भूलूँगा।'

—मामूली-से लालच में अत्यधिक हानि उठाने वाले व्यक्ति के लिए।

—ढोंगी साधु जो माया में लिप्त रहते हैं, उन्हें कोई अच्छा सबक सिखाये तब।

**कोई काच में देखै, कोई आरसी में।** २६५७

कोई काच में देखे, कोई आरसी में।

आरसी = नन्हें शीशे से मंडित सोने-चाँदी का एक आभूषण, जो औरतों के गले में पहिना जाता है।

—जिसके पास जो वस्तु होती है, वह उसी का उपयोग करता है।

—सब की आर्थिक-स्थिति विषम होती है।

—हर व्यक्ति की अपनी पसंद होती है।

**कोई किणी नै देय को खावै नीं ?** २६५८

कोई किसी को देकर नहीं खाता ?

—हर कोई अपनी-अपनी कमाई खाता है।

—कोई किसी का आश्रित नहीं।

**कोई खाय राजी तौ कोई खवाय राजी।** २६५९

कोई खाकर राजी तो कोई खिलाकर राजी।

—हर व्यक्ति का अपना-अपना स्वभाव होता है।

—कोई व्यक्ति किसी में खुश तो कोई किसी में खुश।

—अधिकांशतया स्वार्थी आदमी को लक्ष्य करके यह उक्ति कही जाती है।

**कोई खौड़ौ, कोई लूलौ, कोई चालै मटकावत कूल्हौ।** २६६०

कोई लँगड़ा, कोई लूला, कोई चले मटकाते कूल्हा।

—जिस परिवार में इस तरह के विकलांग सदस्य हों, शरीर के साथ-साथ जिनकी बुद्धि भी शिथिल हो, उन पर कटाक्ष।

—किसी विचित्र परिवार के प्रति उपहास।

**कोई गावै होळी रा कोई गावै दीवाळी रा।** २६६१

कोई गाये होली के गीत और कोई गाये दीवाली के गान।

—कोई कुछ कहे और कोई कुछ सुने।

—असंबद्ध बातचीत पर कटाक्ष।

—अपनी-अपनी डफली, अपना-अपना राग।

—पूछे खेत की, बताये खलिहान की। बिना ताल-मेल की बात।

**कोई चालै चाकरी, ताज्यौ तुरक तैयार।** २६६२

कोई चढ़े चाकरी, ताजिया तुर्क तैयार।

—हर किसी बात में खामखाह का उत्साह दिखाने वाले व्यक्ति के लिए।

—जिसके पास कुछ काम करने को न हो, वह हर किसी काम में जुड़ जाता है।

**कोई छोटक-मोटक देख्या नीं, दोय उजळावत जावत दीठा।** २६६३

कोई छोटे-बड़े नहीं देखे, दो सफेद-सफेद प्राणी नजर आये।

**संदर्भ-कथा:** सामंती व्यवस्था के दौरान लोगों से बेगार लेना ठाकुर व सत्ताधारियों का न्याय संगत अधिकार था। उसीसे बचने के लिए यह कथा है। किसी एक ठाकुर की ताजी ब्याई तीन घोड़ियाँ और उनके तीन बछेरे चोर ले गये। चोरों को पकड़ने के लिए ठाकुर के कारिंदों ने पीछा किया। सभी घोड़ों पर चढ़े हुए घोड़ियों के पदचिह्नों को खोजते हुए दुड़की चाल से पीछा कर रहे थे। एक खेत के पास उन्हें स्पष्ट पदचिह्न मिले। खेत में दो भाई हल चला रहे थे। ठाकुर के कारिंदों ने जोर से आवाज देकर पूछा, 'क्यों उन्होंने तीन बड़ी घोड़ियाँ और उनके छोटे बछेरे इधर से जाते हुए देखे हैं?' छोटे भाई ने जो देखा सो बता दिया कि हाँ, देखे हैं।

बेगार से बचने के लिए बड़े भाई ने धीमे से कहा, 'पलट-पलट ।' छोटा भाई अदेर सतर्क हो गया । ठाकुर के कामदार ने ऊँची आवाज में पूछा, 'घोड़ियों का रंग कैसा था ? तीन बड़ी घोड़ियों के साथ छोटे बछेरे भी थे क्या ?' बड़े भाई का इशारा समझकर उसने बात बदलकर कहा, 'बड़ी-छोटी तो नहीं देखी, पर दो सफेल बैल जरूर देखे थे । लंबे-लंबे सींग थे ।' कामदार ने झिड़कते हुए कहा, 'मूर्ख कहीं का ? घोड़ियाँ और सींग ? तेरे बाप-दादों ने बताया होगा ।' इतना कहकर वे आगे कुछ भी पूछताछ किये बिना ही वहाँ से रवाना हो गये । छोटे भाई ने मुस्कराकर बड़े भाई की ओर देखा । उसने भी मुस्कराहट का जवाब मुस्कराहट से ही दिया । बेगार से बचने की खुशी उनके होंठों पर साफ झलक रही थी ।
—मौके पर दिमाग लड़ाने से कई लाभ अपने-आप हो जाते हैं ।

**कोई निरखै काच कांघसी , कोई निरखै मिणियारी ।** २६६४

कोई निरखे काच-कंघा, कोई निरखे मनिहारी ।

—कोई व्यक्ति काच-कंघे की ताक में है तो कोई मनिहारी के रूप-यौवन की ताक में ।

—हर व्यक्ति अपनी नीयत से अनुप्रेरित होता है ।

—अंदरूनी मंशा का किसे भी पता नहीं चलता ।

**कोई नीं देखै , पण रांम तौ देखै ।** २६६५

कोई नहीं देखता, पर राम तो देखता है ।

**संदर्भ-कथा** : एक औघड़ महात्मा के पास दो युवक बार-बार चेला बनने की खातिर चक्कर काटते थे । महात्मा ने काफी दिन तक कोई जवाब नहीं दिया । एक दिन जब उन्होंने ज्यादा ही आग्रह किया तो महात्मा ने उनकी परीक्षा लेनी चाही । दोनों युवकों को एक-एक बकरा सौंपा और कहा—जहाँ कोई भी न देखे वहीं अलग-अलग दिशा में जाकर इनका सिर काटकर मेरे पास ले आओ । फिर चेला बनने की विधि का शुभारंभ होगा ।

एक व्यक्ति अत्यधिक बुद्धिमान व होशियार था । महात्मा के कहते ही झटपट एकांत जगह के लिए रवाना हो गया । यह तो बिलकुल आसान काम है । महात्मा जी ने न जाने क्या सोचकर ऐसा आदेश दिया । कुछ दूर जाने के बाद उसे घनी झाड़ियों से घिरा एक नाला नजर आया । बकरे को उसके बीच छिपाकर उसने एक ही झटके में उसका सिर काट डाला । खुशी-खुशी बकरे का सिर हाथ में लटकाए हुए वह भोले महात्मा के पास आया । महात्मा ने

पूछा कि किसी ने देखा तो नहीं। उसने तुरत जवाब दिया कि किसी ने भी नहीं देखा। भला वैसी जगह वह बकरे का सिर क्यों काटता ? महात्मा ने उसकी पीठ थपथपाई और छाया में बैठने का इशारा किया।

दूसरा युवक काफी नादान व भोले स्वभाव का था। वह बकरे को लेकर खूब दूर-दूर तक भटका, पर उसे कोई वैसा स्थान न मिला जहाँ कोई नहीं देख रहा हो। कही पत्ते देख रहे थे। कहीं झाड-झंखड़ों की टहनियाँ देख रही थीं। कहीं हवा देख रही थी तो कही धूप। कही आकाश देख रहा था तो कहीं धरती। आखिर वह निराश होकर जिंदा बकरा लिए वापस लौट आया। सिर हिलाते हुए गहरा निश्वास भरकर बोला। ऐसी जगह तो मुझे कही नही मिली, जहाँ कोई न देखता हो। भगवान तो सर्वत्र मौजूद है। वह तो सब देखता है। फिर इस बकरे की आँखें भी तो देख रही हैं, मैं भी कोई अंधा नहीं हूँ। मैं भी देख रहा हूँ। फिर अपने-आप से कैसे छुटकारा पाता ?

तब महात्मा ने मुस्कराते हुए कहा—तुम्हें छुटकारा पाने की कुछ भी जरूरत नही। तुम्हे किसी का शिष्य नही बनना। तुम तो जन्म से ही सभी के गुरु हो। तत्पश्चात् उस औघड महात्मा ने पहले वाले युवक को दुत्कार कर भगा दिया कि उस में किसी का चेला तक बनने की काबलियत नहीं है। गुरु का भी भद्दा लगाओगे।

—कोई भी अपकर्म अपनी आत्मा और ईश्वर से छिपाकर नही हो सकता। फिर भी पहले वाले युवक की तरह अधिकांश लोग अंधे-बहरे होते है।

—ईश्वर से बडा साक्षी कोई दूसरा नहीं, क्योंकि वह हरदम सर्वत्र मौजूद रहता है।

**कोई फिरै डाळ-डाळ, हूं फिरूं पांन-पांन।** २६६६

कोई फिरे डाल-डाल, मैं फिरूँ पात-पात।

—यदि कोई डाल-डाल दौडकर छिपने की कोशिश करेगा तो मैं पात पात पीछा करके उसे खोज निकालूँगा।

—दुनिया में हर कोई अपने-आपको सबसे बडा बुद्धिमान समझता है।

—दुनिया में एक-से-एक बढ़कर चतुर होते हैं।

**कोई मरै, कोई मल्हार गावै।** २६६७

कोई मरे, कोई मल्हार गाये।

—कोई दुख से छटपटा रहा है तो कोई खुशी के तराने छेड़ रहा है।

—कहीं मृत्यु का शोक मनाया जा रहा है तो कहीं नये जन्म की खुशियाँ मनाई जा रही हैं।

—इस बहुरंगी संसार के अनेक रंग हैं—कोई दुखी तो कोई सुखी।

—हर व्यक्ति अपने-अपने दायरे से बँधा है।

**कोई मरै कोई सीढ़ी गूंथै।** २६६८

कोई मरे, कोई अर्थी गूँथे।

—इस संसार की विचित्र गति है। मरने वाले ने भी किसी की अर्थी गूँथी थी। और ये अर्थी गूँथने वाले भी किसी दिन मरेंगे। अबाध गति से जीवन-मरण का यह चक्र चलता ही रहता है।

—हर व्यक्ति जीवन के अगले क्षण से बेखबर रहता है।

—यह संसार भी अजीब खेल तमाशा है।

—मात्र अज्ञान ही के कारण यह संसार गतिशील है।

**कोई मांनै नीं तांनै नीं, हूं लाडै री भूवा।** २६६९

कोई माने नही, जाने नहीं, मैं दूल्हे की बूआ।

—जबरन किसी काम में अनधिकार दखल देने वाले व्यक्ति के लिए।

—खामखाह अपनी अहमियत जतलाने वाले के लिए।

दे.क.सं.५७१

**कोई मां रा पेट में सीख'र नीं आवै।** २६७०

कोई माँ के पेट से सीखकर नहीं आता।

—जन्म से ही कोई प्रवीण होकर नहीं आता।

—चाहने पर हर व्यक्ति किसी भी काम में पारंगत हो सकता है।

—अभ्यास,निष्ठा व मेहनत से सब-कुछ सीखा जा सकता है।

**कोई मोलां भारी तौ कोई तोलां भारी।** २६७१

कोई मोल में भारी तो कोई तौल में भारी।

—हर वस्तु की अपनी-अपनी उपादेयता और अपना-अपना महत्त्व है।

—कोई व्यक्ति ज्ञान में श्रेष्ठ तो कोई आचरण में।

—कोई व्यक्ति गुणों से भारी तो कोई शरीर से भारी।

—कोई माया में भारी तो कोई आदर्श या सिद्धांत में।

**कोई म्हनै नीं मारै तौ म्हैं किणी नै नीं छोड़ूं।** २६७२

कोई मुझे न मारे तो मैं किसी को नहीं छोड़ूँ।

—अपनी क्षति के भय से ही दुनिया में काफी कुछ शांति बनी रहती है, अन्यथा कुहराम मच जाए।

—स्वयं को वापस कोई खतरा न हो तो मनुष्य किसकी परवाह करे।

**पाठा : कोई म्हनै नीं मारै तौ म्हैं आखी दुनिया नै नीं धारूं।**

कोई मुझे न मारे तो मैं पूरी दुनिया की परवाह न करूँ।

**कोई स्यांन गैलौ, कोई ध्यांन गैलौ।** २६७३
**कोई मांन गैलौ, कोई तांन गैलौ।**

कोई शान बावरा, कोई ध्यान बावरा।
कोई मान बावरा, कोई तान बावरा।

—हर व्यक्ति अपने-अपने हाल में अलमस्त है।

—हर व्यक्ति की अपनी अलग ही दुनिया है। कोई किसी में व्यस्त तो कोई किसी में व्यस्त।

**कोऊ न्रप होय, हमैं का हानी, चेरी छांडि न होइबै रानी।** २६७४

कोई नृप होय हमें क्या हानि, चेरी छोड़ न होगी रानी।

—तुलसी बाबा के 'मानस' में उक्तियों के ऐसे हजारों रत्न भरे पड़े हैं जो लोक-वाणी में ढल कर उसी रूप में प्रचलित हैं—ब्रज में, भोजपुरी में और राजस्थानी में। तुलसी बाबा ने शब्दों को ऐसा बाना पहिनाया है जिसे सहज ही बदला नहीं जा सकता—अवधी के रूप में उन्होंने एक ऐसी भाषा का उपयोग किया है जो आस-पास की हर मातृभाषा में समाहित हो जाती है।

—राम के बदले भरत को अयोध्या का नृपति बनाने की खातिर कैकयी की दासी मंथरा उसे समझाती है। कैकयी के प्रतिवाद करने पर वह अंत में झुँझलाकर कहती है, 'तुम अपना भला-बुरा न सोचो तो मुझे क्या पड़ी है, मैं तो रानी की बजाय तुम्हारी दासी ही रहूँगी—चाहे

राम राजा बनें, चाहे भरत। मेरा तो कुछ भी भला होने वाला नहीं है—राज-माता तो तुम्हीं कहलाओगी।'

—मंथरा से लेकर आज दिन तक आम-आदमी की यही धारणा है—चाहे कोई राजा हो, हमें क्या सरोकार ? हमें तो अपने हाथ-पाँव चलाकर पेट भरना है। तुलसी-बाबा के मंत्र आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं।

**कोगत-कोगत गत बिगड़ी।** २६७५

कौतुक-कौतुक में तुक बिगड़ी।

—मखौल-मखौल में जीवन का छंद बिगड़ गया।

—हँसी-दिल्लगी में ही जीवन अपनी मंजिल तक पहुँच गया। सारी यात्रा ही विफल हो गई।

—मुनष्य-जीवन के हर क्षण का गंभीरता-पूर्वक उपयोग होना चाहिए।

**कोट नै पेट रूंधा ज्यांरा।**– व.२३९ २६७६

गढ़ और पेट काबिज करने वालों के।

—किला या गढ़ जिसने जीत लिया वह उसके अधिकार में हो गया। उसी तरह पेट में जिसका गर्भ रह गया—उस पर सच्चा अधिकार उसीका है।

—कब्जा सच्चा बाकी सब बातें झूठीं।

**कोट री बात कांगरा बतावै।** २६७७

गढ़ की बात कंगूरे बताते हैं।

—किन्हीं दूसरी बातों से असलियत का पता लग जाता है।

—परिस्थितियों को छिपाया नहीं जा सकता।

—वैभव स्वत: प्रकट होता है।

**कोट रै लारै अर ठाकुर-द्वारा रै आगै।** २६७८

गढ़ के पीछे और ठाकुर-द्वारे के आगे।

—ठाकुर के गढ़ के पीछे और ठाकुर द्वारा (मंदिर) के सामने होकर चलने में फायदा है। गढ़ के पीछे चलने से राह चलती बेगार टल जाती है। ठाकुर-द्वारा के सामने होकर चलने से भगवान के दर्शन हो जाते हैं।

—परिस्थितियों के अनुरूप काम करना बेहतर है।

—बड़े लोगों से दूर रहना ही लाभदायक है और पहुँचे हुए पुरुषों के पास रहना ज्ञान-वर्धक होता है।

**पाठा : कोट रै लारै अर मिंदर रै धकै।** गढ़ के पीछे और मंदिर के सामने।

**कोट रै पिछाड़ी अर देवरा रै अगाड़ी।**

**कोटै बीज पड़ै अर भीनमाळ रौ गधौ डांमीजै।** २६७९

कोटा में बिजली गिरे और भीनमाल के गधे को डामा जाय।

—कोटा और भीनमाल राजस्थान के दो विपरीत छोरों पर स्थित हैं—कोसों दूर। इतनी दूर से चमकी बिजली किस गधे को आँच पहुँचाये—यह सोचने की बात है।

—जो मूर्ख व्यक्ति निराधार आशंकाओं से बेकार पीड़ित रहता हो।

—जो व्यक्ति काल्पनिक विपत्तियों से त्रस्त रहता हो।

—किसी और के दुख से हरदम दुखी रहने वाला।

**कोठा में होवै तद खेळी में आवै।** २६८०

हौद में हो तो कुंड में आये।

—आमद होने पर ही खर्च का सतूना बैठता है।

—हौद खाली तो कुंड भी खाली।

—तिजोरी में हो तो जेब में आये।

—कमाई का जुगाड़ होने पर ही हाथ सरकता है।

**कोठी-कोठला में हाथ मत घालजै, बाकी सै घर-बार थारौ।** २६८१

कोठी-कुठले में हाथ मत डालना, बाकी सब घर-बार तेरा।

—जमा-पूँजी और अनाज में हाथ मत डालना, बाकी सफाई के लिए घर तुम्हारा ही है।

—अधिकार एक भी नहीं, बेगार सारी।

—खामखाह के अधिकारों पर कटाक्ष।

**कोठी धोयां कादौ नीसरै।** २६८२

कुटला धोने से कीचड़ ही निकलता है।

—निखालिस मिट्टी से बना कुठला धोने से उखड़-उखड़कर मिट्टी ही बाहर आती है।

—सीख व उपदेश की बातों से कुटिल व्यक्ति का मन निर्मल नहीं होता,उलटे उसकी कुटिलता ही उजागर होती है।

—समझाने से मूर्ख व्यक्ति की मूर्खता दूर नहीं होती।

**कोठी में कण घालै जित्ता ई नीसरै।** २६८३

कुठले में जितना अनाज डालें, उतना ही निकलता है।

—जिसे जितना ज्ञान मिलता है,उसी के अनुरूप उसे अभिज्ञता प्राप्त होती है।

—जैसी मेहनत वैसा परिणाम। जैसा अभ्यास वैसी सफलता।

—जैसा परिवेश वैसा आचरण।

**कोठी में घाल्यां ई को जीवै नीं।** २६८४

कुठले में डालने पर भी नहीं जीएगा।

—अभागे व्यक्ति का दुर्भाग्य सात तालों के भीतर भी सुरक्षित नहीं रह सकता।

—मौत पर कैसी भी सुरक्षा का नियंत्रण नहीं चलता।

**कोठी में दांणा है जित्तै कोई डर कोनीं।** २६८५

कुठले में दाने हैं तब तक कोई डर नहीं।

—घर में खाने के लिए अनाज है तब किस बात की चिंता।

—आर्थिक स्थिति ठीक हो तो किसी का भय नहीं।

—भविष्य के प्रति बेफिक्र व्यक्ति के लिए।

—पिंजर में साँस है तब तक कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

**कोठी में दांणौ, कमीण बोरांणौ।** २६८६

कुठले में दाना, कमीन बौराना।

—कुठले में दाने रहें तब तक मूर्ख व्यक्ति कमाने की चिंता छोड़ देता है। अध-बावरा अपनी ओछी-संपत्ति के भरोसे निश्चिंत हो जाता है।

—ओछा व्यक्ति थोड़े में ही अपने होश खो बैठता है।

**कोठै री बात होठै आयां सरै।** २६८७

पेट की बात होंठों पर आकर ही रहती है।

—मन की बात कभी-न-कभी प्रकट होकर ही रहती है।

—भीतर की असलियत छिपाये नहीं छिपती।

**कोठै सो ई होठै।** २६८८

जो पेट में, वही होंठों पर।

—प्रेम, ईर्ष्या, घृणा अथवा क्रोध यदि मन में है तो जाने-अजाने उजागर होता ही है।

—जो व्यक्ति दोगली या दो मुँही बात न करे।

—जिस व्यक्ति का मन पारदर्शी हो।

—जो व्यक्ति पाखंड से दूर हो।

**कोडां मस्या नै कुत्ता ई घींस्या।** २६८९

उत्साह से शहीद हुए और कुत्तों ने घसीटा।

—जो व्यक्ति प्राणों की जोखिम उठाकर, गाँव, समाज व देश के लिए मरे, किंतु मरने के बाद लाश की यथोचित दाह-क्रिया भी न हो तब।

—जिसके लिए बखुशी मौत का वरण किया और वही बाद में उसे भूल जाय।

—कृतघ्न व्यक्ति की खातिर मरने से मृत्यु भी लांछित होती है।

—भगतसिंह, राजगुरु, चंद्रशेखर आजाद इत्यादि शहीदों की आत्मा देश की दुर्दशा देखकर इसी तरह बिलख रही होगी।

**कोडी कुटावै भोडी।** २६९०

कौड़ी पिटवाये खोपड़ी।

—धन या माया ही सब झगड़ों की जड़ है।

—अधिकांशतया संपत्ति की खातिर ही लूट-खसोट, छीना-झपटी, चोरी तथा डकैती होती है और इन सबका परिणाम घातक ही होता है।

**कोडी-कोडी कंजूस, रिपियां रौ खोगाळ।** २६९१

कौड़ी-कौड़ी किफायत, रुपयों की बर्बादी।

—दमड़ी के लिए खींचतान और मोहर का अपव्यय।

—जिस व्यक्ति की मितव्ययता में कोई संतुलन न हो।

—जो व्यक्ति छोटी बातों के लिए जरूरत से ज्यादा चिंतित हो और बड़ी बातों की परवाह ही न करे।

**कोडी-कोडी करतां ईं लंक लागै।** २६९२

कौड़ी-कौड़ी करते ही सर्वनाश हो जाता है।

—थोड़ा-थोड़ा करते ही माया समाप्त हो जाती है।

—किफायत करने के लिए सीख।

**कोडी-कोडी जोड़तां, गिया सींठा तोड़तां।** २६९३

कौड़ी-कौड़ी जोड़ते, गये बाल नोचते।

—जीवन पर्यंत कौड़ी-कौड़ी का संचय करके मरते समय खाली हाथ जाना पड़ता है।

—प्राण निकलने पर सब-कुछ यहीं धरा रह जाता है।

—दौड़-दौड़कर धन जोड़ने के बाद आखिर तो पाँव रगड-रगड़कर मरना ही शेष रहना है।

**कोडी-कोडी धन जुड़ै।** २६९४

कौड़ी-कौड़ी धन जुड़ता है।

—थोड़ा-थोड़ा बचाने से ही संचय होता है।

—संचय की लक्ष्य-पूर्ति के लिए कौड़ी का भी महत्त्व है।

**कोडी बिना कोडी रौ।** २६९५

कौड़ी बिना कौड़ी का।

—जिस व्यक्ति के पास कौड़ी नहीं, उसकी कीमत भी कौड़ी से ज्यादा नहीं।

—मनुष्य के गुणों का कुछ भी महत्त्व नहीं, केवल संचित पूँजी का ही महत्त्व है।

**कोडी रा तीन।** २६९६

कौड़ी के तीन।

—जो व्यक्ति एक-दम निकम्मा हो और अपने व्यक्तित्व का गुमान करे तब कहा जाता है कि इतनी बढ़-बढ़कर न हाँको तुम जैसे कौड़ी के तीन मिलते हैं।

—निहायत गये-गुजरे घमंडी पर कटाक्ष।

**कोडी रौ पाजी।** २६९७

कौड़ी का पाजी।

—छिछोरे या निकम्मे व्यक्ति के लिए।

—जो व्यक्ति पैसों की खातिर कुछ भी अपकर्म करने को तैयार हो। जिसका जाने-अजाने किसी प्रकार के नैतिक-मूल्यों से सरोकार न हो।

**कोडी व्है तौ फूल चाढूं।** २६९८

कौड़ी हो तो फूल चढ़ाऊँ।

—कौड़ी के बिना तो भगवान की पूजा भी नहीं हो सकती।

—भ्रष्ट व्यक्ति को देने के लिए रिश्वत न हो तब।

**कोडी साटै हाथी जावै।** २६९९

कौड़ी के बदले हाथी जाये।

**संदर्भ-कथा :** नशे के फलस्वरूप कर्ज व लापरवाही के कारण एक ठाकुर की विकट दुर्दशा हो गई थी। यहाँ तक कि खाने के भी लाले पड़ने लगे। ठिकाने के कर्मचारी व बनियों ने हाथ खींच लिये। ठकुराइन के सारे गहने बिक गये। पर ठकुराइन थी बेहद समझदार। फिर भी सिर के बदले किसी दूसरे का सिर तो काटकर नहीं चिपकाया जा सकता। ठाकुर की अपनी समझ थी। लाख समझाने पर भी ठाकुर अपनी बुरी आदतों से बाज नहीं आया। तब ठकुराइन ने एक नई युक्ति सोची। अपने धनाढ्य मायके वालों से विचार-विमर्श करके उसने एक हाथी मँगवाया। खरीदने की कीमत एक कौड़ी। गढ़ के सामने से हाथी निकला तो सबसे छोटे कुँअर ने उसे खरीदने का हठ किया। रोता हुआ पिता के पास पहुँचा। कौड़ी में हाथी मिलने की बात बताई। वह तो सवारी के लिए हाथी लेकर ही मानेगा। इतना सस्ता तो मिट्टी का हाथी भी नहीं मिलता। पर ठाकुर के लिए वैसी खुश-खबरी की बात भी भयंकर कष्ट-दायक हो गई। उसने रुँधे गले से कुँअर को समझाया कि आज तो कौड़ी पास न होने पर यह हाथी कौड़ी में भी महँगा है। वह हठ न करे, कभी वक्त आने पर यह लाख रुपयों में भी सस्ता होगा। और न एक कौड़ी देकर वह हाथी का मोल भी घटाना चाहता है। उस दिन से ठाकुर के जीवन का मोड़ ही बदल गया। वर्ष समाप्त होने से पहले ही लाख रुपये कीमत माँगने पर भी उसने

सवा लाख रुपये देकर हाथी खरीदा। कुँअर द्वारा आश्चर्य प्रकट करने पर उसने दुलार से समझाया—बेटा आज तो यह हाथी सवा-लाख में भी सस्ता है और उस दिन एक कौड़ी में भी महँगा था। मेरी स्थिति से गुजरे बिना यह बात आसानी से किसी की समझ में नहीं आएगी।

—किसी वस्तु का सस्तापन अपने-आप में कोई माने नहीं रखता, खरीदने वाले की क्षमता व इच्छा ही सब-कुछ है।

—मनुष्य परिस्थितियों का दास होता है। वक्त-वक्त का फेर।

**पाठा : कोडी साटै हाथी, पण कोडी व्है तौ हाथी वपराईजै।**

कौड़ी के बदले हाथी, पर पास में कौड़ी हो तो हाथी खरीदा जाय।

**कोड़े जो काम आवै, होना नीं लंका चेटी है।**–भी. १४९ २७००

पास है वही काम आता है, सोने की लंका दूर है।

—जो वस्तु पास है, फकत उसी की उपयोगिता है, सुदूर लंका का अखूट सोना किस काम का, उससे तो नमक की डली का अभाव भी दूर नहीं होता।

—जो पास है वही यथार्थ संपत्ति है, बाकी सब माया।

**पाटा : गोडै व्है सो अरथ आवै, बाकी सै पंपाळ।**

**कोढ़ अर वळै खाज।** २७०१

कोढ़ और उस पर खुजली।

—दुख पर दुख का कहर ढहे तब...।

—दुहरा कष्ट, दुहरी मार।

**पाठा : कोढ़ अर वळै पांय।** कोढ़ अर फिर खुजली।

**कोढ़ जावै पर चा'टौ नीं जावै।** २७०२

कोढ़ मिट जाता है पर दाग नहीं मिटता।

—दुष्कर्मों का कलंक नहीं मिटता।

—बुरे कामों की बदनामी उम्र भर नहीं मिटती।

—मरने पर भी यश-अपयश पीछे रह जाता है।

—समय बीत जाने पर भी बात रह जाती है।

**कोढ़िया रौ टकौ किसौ ठाकुर-द्वारै नीं चढ़ै ?** २७०३

कोढ़ी का टका क्या मंदिर मे नही चढ़ता ?

—समदृष्टि ईश्वर के लिए सभी बराबर हैं।

—रिश्वतखोर के लिए हर किसी का पैसा जायज है।

—अधर्मी, अधम व गरीब के पैसे की भी सर्वत्र एक-सी कीमत है।

—पैसा अपने-आप में अपवित्र नहीं होता।

**कोढ़िया रौ टकौ ठाकुर-द्वारै नीं चढ़ै।** २७०४

कोढ़ी का टका मंदिर में नही चढ़ता।

—कोढ़ी अपने कुकर्मों का फल ही इस जीवन में भोग रहा है, इसलिए उसकी कमाई भी अशुद्ध है, मंदिर में नहीं चढ़ सकती।

—घृणित व्यक्ति की कमाई भी घृणित होती है, किसी पवित्र काम में उसका उपयोग नहीं हो सकता।

**कोढ़िया रौ मन सवासणी माथै विटळै।** २७०५

कोढ़ी का मन गोत की लड़कियों पर मचलता है।

—घिन के कारण दूसरे लोग तो कोढ़ी की छाया के पास तक नहीं फटकना चाहते। तब काम-वासना की दाह शांत करने के लिए सगोत्र की लड़कियों के अलावा दूसरा विकल्प ही क्या रह जाता है।

—मजबूरी के लिए कोई भी नैतिक मान्यता नहीं होती।

—दुष्ट व्यक्ति को भले-बुरे का कोई खयाल नहीं रहता।

—जो व्यक्ति दुष्ट होते हुए भी कायर हो वह केवल घरवालों को ही क्षति पहुँचाता है।

**पाठा : कोढ़िये रौ मन सवासणी माथै चालै।**

कोढ़ी का मन सगोत्र की लड़कियों पर चलता है।

**कोढ़िये रौ काड़ सवासणी माथै ऊठै।**

कोढ़ी की वासना सगोत्र की लड़कियों पर उतरती है।

**कोढ़िया सूं तौ जूंवां ई कांनौ लैवै।** २७०६

कोढ़ी से तो जूँएँ भी कतराती हैं।

—ऐसी लोक-मान्यता है कि कोढ़ी के जूँएँ नहीं पड़तीं।

—नगण्य जूँएँ भी कोढ़ी से घिन करती हैं।

—असहाय व्यक्ति से सभी दूर रहना चाहते हैं।

**कोढ़ियौ विसपदौ व्है।** २७०७

कोढ़ी विसपदा होता है।

—कोढ़ी का पाद अत्यंत दुर्गंधमय होता है।

—दुर्गुण के साथ दूसरे दुर्गुण स्वतः जुड़ जाते हैं।

—भगवान भी जिस पर कोप करता है, पूरा करता है।

—दुष्कर्मों के फल का ताँता चलता ही रहता है।

**कोथल! क्यूं थूं उणमणौ, क्यूं ढीलौ थारौ गात।** २७०८
**के तौ कूकर फंफेड़्यौ के बाईसा घाल्यौ हाथ॥**

थैली! क्यों तू अनमनी, क्यों ढीला तेरा गात।
या तो कुत्ते ने झकझोरा या बाईजी ने डाला हाथ॥

**संदर्भ-कथा**: एक चारण था। उसके एक ही प्रण था कि वह किसी के घर में रोटी नहीं खाता था। ठहरने में कोई हिचक नहीं थी। जहॉं तक बन पड़ता वह राजपूत या ठाकुरों के घर ही ठहरता। एक बार यात्रा पर जाते हुए वह गाँव में रुका। शाम हो गई थी। ठाकुर के वहीं रुका। ठाकुर का गढ़ और नाम तो बड़ा था, पर आर्थिक स्थिति निहायत खराब। बोहरों का बेइंतहा कर्ज। ठिकाना गिरवी रखा हुआ था। राजा भी उसके दुर्गुणों की वजह से खफा। अफीमची, शराबी और लंपट। रैयत बड़ी दुखी थी। चारण आ तो गया, पर मन-ही-मन पछताने लगा। और कहीं जाता तो ठीक था। खैर, रात ही तो काटनी थी। उसने बूढ़े चाकर के साथ आटे का 'भातड़ा' भीतर भिजवाया। उसे पता था कि रावले में ठकुरानी व एक अन-ब्याही बेटी है। वही रसोई बनाती थी। उसने आटे से भरा भातड़ा देखा तो बड़ी खुश हुई। ठाकुर ने काफी प्रयत्न किया फिर भी गेहूँ की व्यवस्था नहीं हुई। उसने चारण की खातिर रोटियाँ बनाने के लिए भातड़े से आटा निकाला तो अपने लिए भी आधा खाली कर दिया। सवेरे चारण रवाना होने लगा तो चाकर ने उसे भातड़ा वापस सौंप दिया। चारण अदेर समझ गया कि चोट हो गई। इतने में ठाकुर साहब उसे विदा करने आये। उनको देखते ही बोला, '**कोथळ! थूं क्यूं उणमणौ, क्यूं ढीलौ थारौ गात, के तो कूकर फंफेड़ियौ के बाईसा घाल्यौ हाथ।**'

ठाकुर का मुँह उतर गया। सोचा, यह मुँहफट चारण सर्वत्र उसे बदनाम करता रहेगा। सो वह अपने हाथ से भातड़ा भीतर ले गया और निकाला हुआ आटा उसमें भर दिया। ठाकुर के उस अचीते व्यवहार से उसे भी झेंप आई। चुपचाप गर्दन झुकाए बाहर निकल गया। ठाकुर पीछे बड़बड़ाता रहा।

—किसी बात को सीधे स्पष्ट रूप में न कहकर, इशारे में कहने से उसका मर्म कलेजे में गहरा उतर जाता है।

**कोथळी में गुळ भांगै ।** २७०९

थैली में गुड़ तोड़ता है।

दे.क.सं.२४८८

**कोथळी में टक्का तौ सांम्ही आवै मक्का।** २७१०

थैली में हो नकदी का जोर, तो मक्का आये पाँवों दौड़।

—अंटी में यदि नकद-नारायण हो तो छोटे-मोटे देवी-देवता, पीर, मौलवी, मक्का व तीर्थ सभी सामने आकर उपस्थित हो जाते हैं।

—नकद-नारायण का हुक्म सबसे बड़ा है, उसकी अवहेलना कोई नहीं कर सकता।

**कोथळी में टक्का निमड़ग्या कांईं?** २७११

थैली में नकदी समाप्त हो गई क्या?

—आर्थिक स्थिति बिगड़ जाए तब।

—जमा-पूँजी खत्म हो जाये तब।

—थैली खाली तो जीवन भी खाली।

**कोथळी में नांणा तौ वींद परणीजै कांणा।** २७१२

थैली में पैसा, तो दूल्हा ब्याहे जैसा-तैसा।

—पैसे से क्या नहीं हो सकता?

—पैसे वाले के लिए सब-कुछ संभव है।

—पैसे की महिमा।

दे.क.सं.११

**कोपीन रांड ई पोसाक में गिणीजै ?** २७१३

कौपीन भी पोशाक में शुमार होती है ?

—लंगोट भी कोई बाने में बाना है ?

—जब कोई अदना व्यक्ति बड़प्पन की बातें बघारे तब।

—छोटे मुँह बड़ी बात करने वाले व्यक्ति के लिए।

**कोयल कागलो अेक रंग, बोल्या खबर पड़े।**–भी.१५० २७१४

कोयल और कौवे का रंग एक, पर बोलने पर पहिचान होती है।

—मृदु स्वभाव और मृदु वाणी आदमी का श्रेष्ठ गुण है, उसीसे सुनने वाला मोहित हो जाता है, जिस प्रकार रंग एक-सा काला होने पर कोयल की 'कुहू-कुहू' सभी बार-बार सुनना चाहते हैं, पर कौवे की कर्कश 'काँव-काँव' कोई नहीं सुनना चाहता।

—यदि भीतर समानता न हो तो बाहर की समानता कुछ माने नहीं रखती।

**कोयल कागा इकरंगा, बोल्यां परखीजै।** २७१५

कोयल कौवे का रंग इक सार, बोली सुनें तो करें विचार।

—रूप-रंग की अपेक्षा गुण व हुनर का विशेष महत्त्व है।

—गुण अपने-आप बोलता है।

—आदमी की असली पहिचान बाह्य-रूप नहीं, आंतरिक गुण हैं।

**पाठा : कोयल कागा इक रंगा, बोल्यां जांच पड़े।**

कोयल-कौए का रंग एक समान, बोलें तब हो पहिचान।

मि.क.सं.२७१४

**कोयल री बोली में कोयल कांईं जांणै !** २७१६

कोयल की बोली कोयल क्या जाने !

—कोयल की सुरीली वाणी तो उसका नैसर्गिक गुण है, वह उसके मर्म को नहीं समझती, वह तो केवल गाना जानती है।

—गायक की बजाय श्रोताओं को ही संगीत का अधिक आनंद प्राप्त होता है।

**कोयलां री दलाली में काळा हाथ।** २७१७

कोयलों की दलाली में काले हाथ।

—बुरे काम में साथ देने वालों की भी बदनामी होती है।

—कुटिल व्यक्ति की संगति से भी कलंक लगता है।

**कोयला खासी ज्यांरौ काळौ मूंडौ होसी।** २७१८

कोयले खाएगा उसका काला मुँह होगा।

—जो काली करतूतें करेगा, उसका काला मुँह होगा।

—जो दुष्कर्म करेगा, उसी की बदनामी होगी।

—जो जैसा करेगा, वैसा भरेगा।

**कोयला नीं कदै ऊजळा होय, कित्ता ई लेवौ धोय।** २७१९

कोयलों को जितना चाहे धोलो, वे कभी सफेद नही हो सकते।

—जिस व्यक्ति का मन मैला हो, वह चाहे जितना स्नान करे भीतर के मैल को साफ नहीं कर सकता।

—दुष्ट या धूर्त आदमी शिक्षा से नहीं सुधर सकता।

**कोरा कागद माथै मन करै ज्यूं लिखौ।** २७२०

कोरे कागज पर इच्छा हो सो लिखो।

—छोटे बच्चे को चाहे जिस साँचे में ढाला जा सकता है।

—अविवाहित कन्या की जिस किसी से इच्छानुसार शादी की जा सकती है।

—खाली जमीन पर जाहे जैसा मकान बनाया जा सकता है।

**कोरा लूंण री रोटी नीं पोईजै।** २७२१

कोरे नमक से रोटी नही बनती।

—निखालिस झूठ से बात बनती नहीं। सत्य का पुट आवश्यक है।

—मिथ्यावादी को अंततः सफलता नहीं मिलती।

**कोरा सुळिया दळै।** २७२२

केवल घुन लगे अनाज को दल रहा है।

—घुन लगे अनाज को दलना व्यर्थ है।

—जो व्यक्ति खामखाह की बकवास करता हो तब...।

—जो व्यक्ति हरदम ऊटपटाँग बातें करे।

पाठा : सुरळिया दळै।

**कोरी बातां सूं कांम नीं सरै।** २७२३

कोरी बातों से काम नहीं सरता।

—केवल बातें बघारने से कोई काम संपन्न नहीं होता।

—वांछित सहयोग न देकर जो व्यक्ति केवल मौखिक हमदर्दी प्रकट करे।

**कोरी लूण री पोवै।** २७२४

कोरा नमक पो रहा है।

—शुद्ध नमक की रोटी बना रहा है।

—जो व्यक्ति सरासर झूठ बोले, जिस में सच्चाई का लेश मात्र भी न हो।

**कोरै आभै बीजळी पड़ी।** २७२५

खुले आकाश बिजली गिरी।

—असंभाव्य वज्रपात हो तब।

—अचीता संकट आ पड़े तब।

—कोई अनहोनी बात होने पर।

दे.क.सं.११७

**कोरै काळजै बाघ कद बोलाईजै।** २७२६

खाली पेट बाघ कब बुलवाये जायँ।

—भूखा आदमी काम नहीं कर सकता।

—कुछ भी हाथ न आये तो कौन खतरा मोल ले।

**कोरौ थूक बिलोवै।** २७२७

कोरा थूक बिलो रहा है।

—व्यर्थ बकवास करने वाले व्यक्ति के लिए।

—निष्क्रिय व्यक्ति के लिए।

—जो व्यक्ति हवाई योजनाएँ बनाता रहे।

**कोलायत रौ कौल बारैं ।** २७२८

**कोलायत का कौल बाहर ।**

**संदर्भ-कथा :** जब बीकानेर पर राव बीका ने राज्य स्थापित नहीं किया था, शेखा भाटी का पूँगलगढ़ में राज्य था । फिर भी उसे डाका डालने का शौक था । करणीजी का वह धर्म-भाई था । उसे कई बार उन्होंने आफतों से बचाया था । करणीजी राव बीका के भाग्य को पहिले ही भाँप गई थीं । उन्होंने शेखा भाटी से कहा कि वह अपनी पुत्री राव बीका को ब्याह दे । शेखा भाटी के दिल में करणीजी की बात नहीं उतरी । उसने आनाकानी की तो करणीजी ने बहुत समझाया, तब कहीं वह माना । करणीजी ने शेखा को कहा कि बेटी को कुछ गाँव दहेज में दे । उसके लिए वह तैयार हो गया । करणीजी से ही पूछा कि वे जो गाँव बताएँगी, वे दहेज में दे देगा । लेकिन कोलायत जहाँ कपिल मुनि का आश्रम था, वह उसे बहुत प्रिय था । उसने तुरंत संशोधन करके अपनी बात सँवारी और कहा, 'लेकिन कोलायत का कौल बाहर ।' इसके सिवाय जो भी गाँव कहेंगी, वह राव बीका को दहेज में दे देगा । करणी जी भी उसकी कमजोरी ताड़ गईं । कोलायत की माँग नहीं की ।

—जब कोई व्यक्ति किसी कौल से बचना चाहता है तो इस उक्ति का प्रयोग करता है ।

**कोस तौ चाली ई कोनीं अर काका तिसाई ।** २७२९

कोस तो चली ही नहीं और बाबा प्यास लगी ।

—काम की शुरुआत में ही बहानेबाजी करने वाले व्यक्ति के लिए ।

—काम आरंभ करने के पहले ही जो व्यक्ति मेहनताना माँगे ।

मि.क.सं. १४९०

**कौंठ रा फळ बायरै सूं पड़णहार नहीं ।**–व.३६ २७३०

कटहल के फल हवा से गिरने वाले नहीं ।

—ऐसी आशा जो आसानी से पूरी न हो ।

—जो व्यक्ति बड़ी-से-बड़ी ताकत के सामने हार न माने ।

—जो व्यक्ति कई बार खतरे में पड़कर भी साफ निकल जाए ।

—जो शूरवीर आसानी से न मरे ।

**कौडी साटै हाथी जावै , कौडी व्है तौ हाथी आवै ।** २७३१

कौड़ी के बदले हाथी जाय, कौड़ी हो तो हाथी आय ।

**कहावत संख्या २६९९ की समानता के बावजूद इस कहावत को इसलिए दोहराया कि इसके कथानक में थोड़ा अंतर है ।– संपादक**

**संदर्भ-कथा :** एक राजा ने खुश होकर एक ढोली को हाथी दान कर दिया । दान के लिए वह इनकार भी कैसे करता ! मन मारकर कबूल करना पड़ा । पर उसकी स्थिति ऐसी नहीं थी कि हाथी को तीन दिन भी खिला पाता । उसने अपने गाँव के ठाकुर को कौड़ी में ही हाथी देना चाहा । लेकिन ठाकुर की आर्थिक स्थिति बेहद खराब हो गई थी । कुँअर ने बार-बार हठ किया कि इतना सस्ता हाथी तो ले ही लेना चाहिए । कौड़ी में तो बकरी भी नहीं मिलती । पर ठाकुर को अपनी स्थिति काच की नाईं साफ दिख रही थी । बेचकर नफा कमाने से उसकी प्रतिष्ठा घटती । ढोली की भी यह एक ही शर्त थी कि हाथी इसी ठिकाने में बँधा रहेगा । वरना राजा नाराज होकर उसे कोई सख्त सजा न दे डाले । ढोली ने बहुत निहोरे किये, पर निर्धन ठाकुर नहीं माना । कुँअर हाथी के लिए रोने लगा तो ठाकुर ने उसे खुश करने के लिए कहा आज तो कौड़ी के बदले भी उसके लिए हाथी महँगा है । लेकिन दिनमान बदलने पर वह लाख रुपये देकर इसी हाथी को खुशी-खुशी खरीद लेगा । पुरुष के भाग्य का कुछ पता नहीं चलता । और आखिर पता चला भी । संयोग-वश अगले वर्ष ठाकुर का भाग्य बदला तो ऐसा बदला कि कौड़ी के बदले गँवाया हाथी उसने सवा लाख रुपयों में खरीद लिया । कुँअर को हाथी से भी बड़ा सबक सीखने को मिला । वह और भी ज्यादा खुश हुआ । पिता की बात उसने हमेशा के लिए गाँठ बाँध ली । इसलिए वह अपने जीवन-काल में कभी असफल नहीं रहा ।

—मनुष्य को अपनी परिस्थितियाँ समझकर ही कोई काम करना चाहिए । परिस्थितियों को अनदेखा करने से मुसीबतें उठानी पड़ती है ।

**कौ रावण किण दिस गियौ ?** २७३२

कहो रावण किस दिशा में गया ?

—यमराज के सामने किसी राजा-महाराजा का भी वश नहीं चलता ।

—काल की चपेट से कौन आतताई बचा है ?

—काल के निवाले से कोई नहीं बचता ।

**कौल माथै लखपति रा ई नीं ढूकै।** २७३३

वादे पर लखपति का भी चुकारा नहीं होता।

—वादा पूरा करने के बीच न जाने कितनी अनजानी कठिनाइयाँ आ खड़ी होती हैं, जिनका पता नहीं चलता।

—लखपति भी जब अपना वादा पूरा नहीं कर सकता तो गरीब की क्या बिसात !

**क्रोध राखवौ रात-दाड़ो खाय।**– भी. १४८ २७३४

क्रोध मनुष्य को रात-दिन खाता है।

—क्रोध की तासीर अग्नि जैसी ही होती है, वह क्रोध करने वाले को जलाता रहता है।

—जहाँ तक बने, मनुष्य को क्रोध का शमन करना चाहिए।

**क्यांरा गीत गावै, नींद री मां-रांड नै रोवै।** २७३५

काहे के गीत गा रहा है, नींद की अम्मा को रो रहा है।

—कर्कश व बेसुरा गाने वाले व्यक्ति पर कटाक्ष।

—जो व्यक्ति बेकार की बकवास करता हो।

—अयोग्य व्यक्ति के व्यर्थ प्रयास से जब समय और शक्ति की बर्बादी हो।

**क्यांरी कुपाळी है ?** २७३६

कैसी खोपड़ी है ?

—जो व्यक्ति अत्यधिक बातूनी हो।

—जो व्यक्ति दिन-भर बकवास करने पर भी चुप न हो।

**क्यारा सूं पीगी क्यारी, बडै घरां री तौ रीतां ई न्यारी।** २७३७

क्यारे से पी गई क्यारी, बड़े घरों की रीत ही न्यारी।

क्यारा = खेत या बगीचों में पानी पिलाने की खातिर बनाए गये छोटे-छोटे खंड, क्यारी स्त्री-लिंग। 'क्यारे से क्यारी पीना' राजस्थानी का एक विशिष्ट कथन है। जिस घर में अत्यधिक पोल हो।

—समाज के सामान्य व्यक्ति तो परंपरागत मान्यता की मर्यादा रखते हैं, पर बड़े आदमी जब-तब उसका उल्लंघन करते रहते हैं। उनके बिगड़े हुए कारनामों पर कटाक्ष।

**क्यूं आंधा न्यूतै अर क्यूं दो जीमावै ?** २७३८

क्यों अंधे न्योते और क्यों दो को खिलाये ?

—अंधे व्यक्ति को निमंत्रण देने पर उसके साथ राह बताता हुआ एक आदमी और आता है। तब मजबूरी में दूसरे को भी खिलाना पड़ता है।

—अपने हाथ से की हुई भूल के लिए पश्चाताप।

—गलत काम के बुरे परिणाम की खातिर पहले से ही सतर्क रहना अच्छा है।

—अपनी सतर्कता और अपनी होशियारी का ध्यान स्वयं को ही रखना चाहिए।

—पहले ऐसा काम ही क्यों किया जाय, जिसका दुष्परिणाम स्पष्ट हो।

मि.क.सं.५६५

**क्यूं कांटां में ठिरड़ौ ?** २७३९

क्यों कॉटों में घसीट रहे हो ?

—काँटों में घसीटना एक मुहावरा है, जिसकी व्यंजना यह है कि आप जितनी मेरी तारीफ कर रहे हो, मैं उस काबिल नहीं हूँ। इस कारण मेरी जरूरत से ज्यादा तारीफ करना मानो मुझे काँटों में घसीटना है।

—कोई व्यक्ति किसी को खामखाह लज्जित करे तब।

—क्यों फालतू बोझा मेरे सिर पर डाल रहे हो ?

**क्यूं कैवां क्यूं कैवाड़ां ?** २७४०

क्यों कहें और क्यों सुनें ?

—क्यों किसी को अपशब्द कहें और क्यों वापस अपशब्द सुनें ?

—जो व्यक्ति किसी को गाली देगा, वह गाली सुनेगा।

दे.क.सं.२६४५

**क्यूं टांटियां रै छाता में हाथ घालै !** २७४१

क्यों ततैयों के छत्ते में हाथ डालता है !

—बहुतेरे व्यक्तियों की पंचायती में हाथ डालकर आफत मोल लेना।

—किसी उलझे हुए काम को चलते रास्ते छेड़कर उसे सुलझाना बहुत मुश्किल है।

—नासमझी के कारण बड़े खतरे को मामूली समझकर उस में हाथ डालना।

**क्यूं ताता दूध नै बिलाई री गळाई तकै है ?** २७४२

क्यों बिल्ली की तरह गर्म दूध की ओर तक रहा है ?

—जो व्यक्ति व्यर्थ की आकांक्षाएँ पालता हो।

—जो व्यक्ति अपनी दबी लालसाओं पर नियंत्रण नहीं पा सके।

**क्यूं तौ गुळ खावूं अर क्यूं कांन बिंधावूं !** २७४३

क्यों तो गुड़ खाऊँ और क्यों कान बिंधाऊँ !

—गुड़ के लालच में कान बिंधाने की पीड़ा झेलना।

—अकिंचन प्रलोभन में फँसकर ज्यादा कष्ट मोल लेना।

—मामूली लालच के लिए जो व्यक्ति अधिक खतरा उठाये।

पाठा : **नीं तौ गुळ खावणौ अर नीं कांन बिंधावणा।**

न तो गुड़ खाना और न कान बिंधवाना।

मि.क.सं.२००८

**क्यूं बखांणै लाडी, काळी-धिराक पाडी।** २७४४

क्यों बखाने बहुरानी, भेंगी, और कानी।

—बेटा, जब ससुराल के दहेज व ठाट-बाट के साथ बहू के रूप और गुणों का बखान करता है तो माँ इस उक्ति से मुँह-तोड़ जवाब देती है। लोक-मान्यता के अनुसार औरतों को औरत की प्रशंसा कतई सुहाती नहीं।

—किसी व्यक्ति की अतिरंजित प्रशंसा कोई सहन नहीं कर सके तब।

**क्यूं बळती में पूळौ रिगसावै !** २७४५

क्यों जलती आग में घास डाल रहा है !

—जो व्यक्ति लड़ाई को बुझाने की बनिस्बत उसे बढ़ाने की कुचेष्टा करे।

—जले को और अधिक जलाने का प्रयास करना।

**क्यूं भूंडा व्है भांणेज, ज्यांरा मांमा मतवाळा।** २७४६

क्योंकर बुरे हों भानजे, जिनके मामा हों मतवाले।

—जिस व्यक्ति के घर वाले सभी चंट हों, वह भला सीधा क्योंकर हो सकता है ?

—जो व्यक्ति जरूरत से ज्यादा होशियार, चालाक अथवा धूर्त हो, उसके प्रति कटाक्ष।

—जो व्यक्ति हरफन मौला हो।

**क्यूं रांड कैय निपूती सुणणी ?** २७४७

क्यों राँड कहकर निपूती सुनना ?

—गाली देकर गाली सुनना।

—जैसा कहना वैसा सुनना।

—अपनी प्रतिष्ठा अपने हाथ।

मि.क.सं. २६४५, २७४०

**क्यूं रांड नै बतळावूं अर क्यूं घर रौ घरकूलियौ करूं ?** २७४८

क्यों तो बदजात से बात करूँ और क्यों घर का सत्यानाश करूँ ?

**संदर्भ-कथा** : किसी एक जिज्ञासु औरत ने एक वाचाल औरत से पूछा कि 'लारवाड़' का क्या मतलब होता है। तब उस औरत ने गंभीरता-पूर्वक उसे समझाते हुए कहा—तुम्हारे पति के मरने पर जब तुम अपने छोटे बच्चे को लेकर किसी से दूसरा विवाह करोगी तो तुम्हारे साथ चलने वाला बच्चा 'लारवाड़' कहलाएगा। क्यों तो वह उस औरत से प्रश्न पूछे, क्यों उसका पति मरे और वह छोटे बच्चे को लेकर दूसरे के साथ विवाह करे ? भरे-पूरे घर की बात-बात में बर्बादी हुई।

—चलते रास्ते मामूली-सी भूल के कारण कोई भारी क्षति उठाना।

—छोटी-सी गलती करने से कोई व्यक्ति भारी जोखिम उठाये तब !

**क्यूं राम री मां नै लातां ऊं मारै ?** २७४९

क्यों राम की माँ को लातों से मार रहे हो ?

—जरूरत से ज्यादा डींग मारने वाले व्यक्ति के लिए।

—अक्षम होते हुए भी जो व्यक्ति बढ़-बढ़कर बातें बघारे।

—जो व्यक्ति क्षमता न होते हुए भी खामखाह बड़ा बनने का दिखावा करे।

**क्यूं राबड़ी में राख घोळै !** २७५०

क्यों राब में राख घोल रहे हो !

राबड़ी = बाजरी के आटे को पानी में उबालकर बनाई हुई मामूली-सी गाढ़ी भोज्य सामग्री जो गरीब तबके की खातिर हलके स्तर की मानी जाती है।

—खामखाह काम बिगाड़ने वाले व्यक्ति के लिए।

—चलते रास्ते किसी काम में रोड़ा अटकाने वाले व्यक्ति के लिए।

**क्यूं राबड़ी में हाथ घालै ?** २७५१

क्यों राब में हाथ डाल रहे हो ?

—राब में हाथ डालने से हाथ गंदा ही होता है, उससे पेट नहीं भरा जाता।

—खामखाह ऐसे काम में क्यों हाथ डालना जिससे मामूली-सी भी स्वार्थ-सिद्धि न हो।

**क्यूं सादड़ी नै बांस भरै ?** २७५२

क्यों सादड़ी को बाँस भर रहे हो ?

—गोडवाड़ के सादड़ी इलाके में बहुत बाँस पैदा होते हैं, वहाँ व्यापार के लिए बाँस भरने वाला पूरे घाटे में ही रहेगा।

—जहाँ जो चीज बहुतायत में पैदा होती हो, वहाँ वह चीज भेजकर भला कोई व्यापार में क्योंकर नफा कमा सकता है ?

—मूर्खता की चरम निशानी।

—जो व्यक्ति अपनी नासमझी से एकदम उलटा काम करे !

—उलटे बाँस बरैली को।

# खं - खा

**खंदेड़ै गम्योड़ी नथ नणद रै नांव।** २७५३

गड्ढे में खोई नथ ननद के नाम।

—गड्ढे में किसी औरत की बाली खो गई तो मन को यह समझाकर तसल्ली दी कि जैसे वह ननद को वाकई भेंट-स्वरूप दी गई हो।

—किसी क्षति के लिए संगत औचित्य खोजने की खातिर मन को झूठी तसल्ली देना। जैसे किसी व्यक्ति की जेब कट जाय तो यह समझकर सांत्वना पाना कि राष्ट्र-हित में चंदा ही दिया।

**खग जांणै खग री वांणी।** २७५४

खग जाने खग ही की भाषा।

—चतुर व चालाक व्यक्ति ही एक दूसरे की बात समझते हैं।

—बुद्धिमान-बुद्धिमान की सानी (संकेत) में समझता है।

—जो समान लक्षण के होते हैं उनके समझने का माध्यम भी समान होता है।

**खटके कणाने, खटकारे कणाये।**–भी.१५१ २७५५

दुख किसी से होता है, दिया किसी और को जाय।

—जो व्यक्ति कष्ट पहुँचाने वाले से बदला लेने की बजाय किसी और को कष्ट पहुँचाये तब।

—जहाँ सामना करने के लिए दाल न गले तब अपने से कमजोर आदमी को दबोचना।

—जो व्यक्ति बड़ों से डरे और छोटों पर सवारी गाँठना चाहे।

**खटाव, जिणरै बटाव।** २७५६

धैर्य जिसके आमदनी।

—जो व्यक्ति धैर्यवान है, वही अच्छी कमाई कर सकता है।

—धैर्य एक ऐसा गुण है, जिसके परोक्ष-अपरोक्ष कई लाभ हैं।

**खटीक रोवै खाल नै, छाळी रोवै जीव नै।** २७५७

खटीक रोये खाल को, बकरी रोये प्राण को।

दे.क.सं.१९१८

**पाठा : खटीक रोवै मांस नै, बकरौ रोवै जीव नै।**

खटीक रोये माँस को, बकरा रोये प्राण को।

**खड़ खावौ, पांणी पीवौ अर बैठा मौज करौ।** २७५८

घास खाओ, पानी पीओ और बैठे मौज करो।

—जो व्यक्ति पशुवत् जीवन व्यतीत करते हों।

—निठल्ले व्यक्ति के लिए।

**खड़ी खावै अर पड़ी उठावै।** २७५९

खड़ी खाये और पड़ी उठाये।

—जो चालाक व्यक्ति दोहरा फायदा उठाना चाहे।

—जो व्यक्ति अपने मुनासिब हिस्से के अलावा अनुचित माँग करे तब।

**खड़ै खेजड़ां बेज कोनीं पड़ै।** २७६०

खड़े खेजड़ों में छेद नहीं पड़ता।

खेजड़ौ, खेजड़ी = शमी वृक्ष।

दे.क.सं.१४१६

**खड़ै ज्यांरा खेत, चढ़ै ज्यांरा घोड़ा।** २७६१

जोते जिनके खेत, चढ़े जिनके घोड़े।

—श्रम करने वाला ही संपत्ति का अधिकारी होता है।

—योग्य व्यक्ति ही अपने काम में सफल होता है। इस कहावत का अधिक वजन इस ओर है।

मि.क.सं.२१७९

**खड़्यौ बांणियौ पड़्या समांन, पड़्यौ बांणियौ मर्‍या समांन।** २७६२

खड़ा बनिया पड़े समान, पड़ा बनिया मरे समान।

—बनिया रंचमात्र भी झगड़ालू नहीं होता।

—बनिये के कायर चरित्र की ओर संकेत।

—अति विनम्र या सहनशील व्यक्ति के लिए।

**खतरौ दो आंगळ, डर सौ आंगळ।** २७६३

खतरा दो अंगुल, डर सौ अंगुल।

—खतरा कम और डर बहुत ज्यादा हो तब।

—जो व्यक्ति मामूली जोखम से भी बेइंतहा घबराये उसके लिए। कायर आदमी का सहज स्वभाव। कामुक स्त्री के द्वंद्व की ओर भी छिपा संकेत है।

**खत वाळां री धणियाप चालै।** २७६४

दाढ़ी वालो की दुहाई चलती है।

—जिस समाज में बड़े-बुजुर्गों की अधिक चलती हो।

—सुदीर्घ अनुभव के कारण वृद्ध व्यक्ति जब नपी-तुली बात कहते हैं तो उनकी अवज्ञा भला कौन करना चाहेगा।

**खपटां करे जे करे।**–भी.१५२ २७६५

प्रपंची ही प्रपंच करता है।

—झगड़ालू व्यक्ति ही झगड़े में माहिर होता है।

—षड़यंत्र करना सामान्य व्यक्ति के वश की बात नहीं होती।

**खबोचिया रौ मींडकौ।** २७६६

गड्ढे का मेंढ़क।

दे.क.सं.२३९१

**खमडोळ तौ मोची करै, पईसा लेवै नै जूता देवै।** २७६७

मजाक तो मोची करते हैं, पैसे लेकर जूता देते हैं।

—यह उक्ति भी मजाक जैसी ही है, ज्यादा गहरी नहीं। फिर भी प्रचलन काफी है।

—जो व्यक्ति मजाक-मजाक में रुपये ऐंठ ले तब।

**खरगोसिया वाळौ अंधारौ।** २७६८

खरगोश वाला अँधियारा।

—शिकारी या किसी अन्य खतरे की आशंका समझते ही खरगोश तुरत आँखें बंद कर लेता है, इस मुगालते में कि खतरा टल गया। पर वास्तव में खतरा ओझल न होकर उसे दबोच लेता है।

—जो व्यक्ति जान-बूझकर विपत्तियों को अनदेखा करे।

**खर घोघू मूरख पसू सदा सुखी प्रिथीराज।** २७६९

खर, मूर्ख, उल्लू, पशु सदा सुखी पृथ्वीराज।

—कवि की इस उक्ति के अनुसार मूर्ख व्यक्ति पशु के समान सभी चिंताओं से मुक्त रहता है।

—राजस्थानी में एक कहावत है: सेठजी दुखी क्यों हो—कि समझते हैं, इसलिए। जो समझता है, वह दुखी रहता है। और जो जन्मजात मूर्ख हैं, उन्हें किसी प्रकार की चिंता नहीं सताती। वे हर-हाल में मस्त रहते हैं। क्योंकि उन में वैसा विवेक ही नहीं होता जो भली-बुरी स्थिति में विभेद कर सकें। प्राणी और मानव-जगत् में बुद्धि की दृष्टि से दो किस्म के वर्ग होते हैं—एक समझवान, दूसरा मूढ़। समझवान सदा उदास रहते हैं और मूढ़ सदा सुखी या अलमस्त।

पूरा दोहा इस प्रकार है:

**चकवा चातक चतर नर रहै सदा उदास।**

**खर घोघू मूरख पसू, सदा सुखी प्रिथिराज॥**

**खरच रै भाग रौ भगवांन दैवै।** २७७०

खर्च के भाग्य का भगवान देता है।

—जिस व्यक्ति की आय खर्च के मुताबिक होती रहे।

—जिस व्यक्ति का जस-तस गुजर-बसर हो जाता हो।

—खर्च करने वाले का भाग्य भी साथ देता है।

पाठा : **खरच रा भाग मोटा।** खर्च का भाग्य बड़ा।

**खरच सूं ठरकौ राखीजै।** २७७१

खर्च करने से ठाट रहता है।

—ठाट या रुआब कंजूसी से नहीं रहता, उसके लिए खर्च करना जरूरी है—केवल बातें बघारने से ठाट नहीं जमता।

—खर्च करने से समाज में प्रतिष्ठा रहती है।

**खरची अंट री नै विद्या कंठ री।** २७७२

खर्ची अंट की और विद्या कंठ की।

—पास में पैसा हो वही काम आता है और विद्या कंठ में बसी हो, वही काम देती है।

—घर में लाखों की माया संचित हो और यदि हाथ में या जेब में नकद रुपया न हो तो वह माया किस काम की ? पुस्तकों में ज्ञान की सीमा नहीं, किंतु वह आत्मसात न हो तो व्यर्थ है।

**खरची खूटी, यारी तूटी।** २७७३

खर्ची खूटी, यारी टूटी।

—जब तक मित्रों पर पैसा खर्च होता रहे तभी तक वे अपने रहते हैं अन्यथा सभी मुँह मोड़ लेते हैं।

—खिलाने-पिलाने का ही दूसरा नाम मित्रता है।

**खरची रौ कसालौ, भूखां मरै रसालौ।** २७७४

खर्च का कसाला, भूखों मरे रिसाला।

—राज्य के खजाने में खर्च करने की क्षमता न हो तो फौज भी भूखों मर जाती है।

—अर्थाभाव में देश की सुरक्षा करने वाली सेना को भूखों मरने के लिए विवश होना पड़ता है।

**खरची व्है तौ खाय मिळौ, सेंधौ व्है तौ जाय मिळौ।** २७७५

खर्ची हो तो खाकर मिलो, परिचित हो तो जाकर मिलो।

—खर्च करने की क्षमता हो तो खूब खर्च करके परस्पर मिलना-जुलना चाहिए। परिचय की घनिष्ठता को बढ़ाने के लिए रोजमर्रा का संपर्क लाजिमी है।

—आय की सार्थकता व्यय में और परिचय की सार्थकता लगातार मिलनें में।

**खरबूजा नै देख खरबूजौ रंग बदळै।** २७७६

खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है।

—किसी की देखादेख वही काम करने के लिए अनुप्रेरित होना।

—संगति का प्रभाव पड़ना अनिवार्य है।

—किसी के अनुरूप आचरण करने वाले व्यक्ति के लिए।

**खरबूजा माथै छुरी पड़ै तौ खरबूजा री हांण।** २७७७
**छुरी माथै खरबूजौ पड़ै तौ खरबूजा री हांण॥**

खरबूजे पर छुरी पड़े तो खरबूजे की हानि।

छुरी पर खरबूजा पड़े तो खरबूजे की हानि॥

—दूसरों के लिए कष्ट या हानि तो उठाने वाला ही उठाता है, खरबूजे की तरह। और दूसरी तरफ जो हर सूरत में कोई-न-कोई लाभ उठाने से नहीं चूकता—छुरी की तरह दूसरों को नुक्सान पहुँचाता है। मनुष्य समाज में भी दो किस्म के लोग होते हैं—एक खरबूजे की तरह, दूसरे छुरी की तरह। क्षति तो जिसकी होनी होती है, उसी की होती है।

—गरीब व्यक्ति के बचाव का कोई रास्ता नहीं।

—अवैध सहवास में स्त्री खरबूजे की व पुरुष छुरी का प्रतीक है।

मि.क.सं.२०७१

**खर लखणां खाहरड़ा पड़ै।** २७७८

गधे के लच्छन वाला जूते खाता है।

—गधे की तरह कामुक व्यक्ति जूते खाता है।

—गधे की तरह मूर्ख व्यक्ति हमेशा नुकसान उठाता है।

**खरां री खेती।** २७७९

खरों की खेती।

—खेती जैसा जटिल काम अथक मेहनत करने पर ही सफल हो सकता है। ऐसे-वैसे अकुशल व्यक्ति खेती का काम नहीं कर सकते।

**खरा माल रा सौ गाहक।** २७८०

खरे माल के सौ ग्राहक।

—विशुद्ध माल तुरत बिकता है।

—खरा माल चाहे जहाँ बेचा जा सकता है।

—खरे आदमी की सर्वत्र प्रतिष्ठा रहती है।

**खरी मजूरी चोखा दांम।** २७८१

खरी मजदूरी अच्छे दाम।

—जो व्यक्ति सही मजदूरी करता है उसे पूरे दाम मिलते हैं।

—मेहनत के अनुरूप ही पारिश्रमिक का निर्णय होना चाहिए।

—मेहनती व योग्य कारीगर के लिए।

**खरी रा खावणिया जोबरड़ा लाधै।** २७८२

खरी के खाने वाले बिरले ही मिलते हैं।

—दुनिया में सच्चाई के बल पर कमाने वाले व्यक्ति बहुत कम मिलते हैं।

—मनुष्य-समाज में सर्वत्र हरामखोरों की बहुतायत है।

**खरै खातै नै उघाड़ै माथै।** २७८३

खरा व्यवहार और नंगे सिर।

—जो व्यक्ति व्यवहार में नेक है, उसे क्या डर! नंगे सिर से भी उसकी प्रतिष्ठा कम नहीं होती।

—सच्चरित्र व्यक्ति को भला कौन दंडित कर सकता है।

**खरै बरकत अर खोटै हरकत।** २७८४

खरे को बरकत और खोटे को हरकत।

—सच्चाई की सर्वत्र बरकत होती है और खोटे अथवा झूठे को क्षति पहुँचती है।

—पर आज-कल तो ऐसी उक्तियाँ कहने भर को रह गई हैं। बल्कि इनका उलटा प्रभाव सर्वत्र नजर आता है—खोटे की बरकत और खरे का विनाश। उपभोक्ता समाज का सारा रवैया ही बदल गया है।

**खरै लाभ सवायौ छै।** २७८५

खरे को लाभ सवाया।

दे.क.सं. २७८४

**खरो खोटो राम जाणें।**– भी.१५३ २७८६

खरा खोटा राम जाने।

—अच्छा-बुरा तो केवल ईश्वर ही जानता है, मनुष्य-बंदे की यह क्षमता नही।

—अच्छे-बुरे की पहिचान करना मनुष्य के लिए दुष्कर है।

—अपनी वस्तु के बारे में अच्छी-बुरी राय स्वयं न देकर भगवान के जिम्मे डाल देने का आम प्रचलन है।

**पाठा : खरौ खोटौ तौ रांम जांणै।**

**खरौ कमायौ नै खोटौ खायौ।** २७८७

खरा कमाया और खोटा खाया।

—खरी कमाई की और साधारण खाना खाया।

—सच्चाई से सामान्य ही कमाई संभव है, फलस्वरूप रहन-सहन का भी निहायत सामान्य स्तर होता है, पर संतोष में कोई कमी नहीं।

**खरौ खाधौ नै पड़ियौ लाधौ।** २७८८

खरा खाया और पड़ा पाया।

—जिस तरह खरी कमाई के धन में कोई दोष नहीं होता, उसी प्रकार जमीन पर पड़ी वस्तु उठाने में भी कोई दोष नहीं है।

—खरी कमाई की आमदनी पड़ा हुआ धन मिलने के ही समान है।

—सच्चाई से गुजर-बसर करने का कोई मुकाबला नहीं।

पाठा : खरी खावौ नै पड़ी उठावौ । खरी खाओ और पड़ी उठाओ ।

**खलक गाल भरावै , पेट नीं भरावै ।** २७८९

दुनिया गाल भरती है, पेट नही भरती ।

—दुनिया मुँह देखी बातें करती है, पर गुजर-बसर के साधन जुटाने में कतई सहयोग नहीं देती ।

—सीख व नसीहत देने वाले बहुतेरे, पर आर्थिक मदद देने वाला कोई नहीं ।

**खलक रा हलक कुण ढाबै ?** २७९०

दुनिया की जबान कौन बंद कर सकता है ?

—कोई कुछ भी कहे, उसे कौन रोक सकता है ?

—बुरा काम करने वाले की बदनामी तो होकर रहती है, उस पर किसी का नियंत्रण नहीं चल सकता ।

**खलकां री दलाली में कीं हाथ नीं लागै ।** २७९१

दूसरों की दलाली में कुछ भी हाथ नही लगता ।

—यहाँ दलाली का मतलब चर्चा भी है, खामखाह दूसरों की चर्चा या पंचायती करने में कुछ भी लाभ नहीं होता ।

—जो दलाली करता है, वही कमाता है, दूसरे का उसमें हिस्सा नहीं होता । लोग तो करें दलाली और आप कमालो, ऐसा नहीं होता ।

**खळखळिया नै विघन टळिया ।** २७९२

दूर हुए और विघ्न टला ।

—झगड़े का स्थल छोड़कर दूर होने से कलह स्वयमेव शांत हो जाती है ।

—काम छोड़कर दूर हुए और आफत मिटी ।

—परिस्थिति से किनारा करने वाले व्यक्ति के लिए ।

**खळ खाई नै भळ आई , सासरै गी नै बहु कहाई ।** २७९३

खलि खाई और चमक आई, ससुराल गई और बहू कहाई ।

—अध-पैली खली या पौष्टिक भोजन खाने से कच्ची उम्र में ही बेटी वयस्क हो गई। मायके में तो बिटिया कहलाती थी, ससुराल जाकर बहू कहलाने लगी।

—कच्ची उम्र में काम की जिम्मेवारी गले पड़ जाय तब।

**खळ-गुळ अेकण भाव।** २७९४

गुड़ व खली एक ही भाव।

—जिस अंधेर नगरी का चौपट राजा हो वहाँ महँगी-सस्ती चीजें एक ही भाव मिलती हैं।

—जहाँ अच्छे-बुरे की कोई पहिचान न हो।

—जहाँ का राज्य-प्रशासन निहायत खराब हो।

**खळौ खायग्यौ तौ खायग्यौ, मयौ तौ देख्यौ।** २७९५

खलिहान में मुँह मार गया तो मार गया, इसी बहाने ऊँट तो देखा।

—एक राह चलता ऊँट खलिहान के अनाज में से कुछ खा गया तो खा गया। अब तक ऊँट का नाम-ही-नाम सुना था, पहली बार इस अनोखे जंतु को देखा तो सही। खलिहान वालों ने उसके पहिले ऊँट देखा नहीं था।

—नई जानकारी के लिए कुछ नुकसान उठाया तो कोई बात नहीं। मामूली अभिज्ञता तो बढ़ी।

—कुछ व्यय करके भी बड़े आदमियों के दर्शन हो जाएँ तो गनीमत है।

**खवाड़णा रौ नांव नीं व्है,. रुवाड़णा रौ व्है जावै।** २७९६

खिलाने का नाम नहीं होता, रुलाने का हो जाता है।

—किसी का भला करने पर यश हो-न-हो, पर बुरा करने की बदनामी तो तुरत फैल जाती है।

—भलाई को कोई याद नहीं रखता, बुराई को कोई भूलता नहीं।

**खसम कमावै, बैठी खावै।** २७९७

खसम कमाये, बैठी खाये।

—पति की कमाई पर मौज करने वाली औरत के लिए।

—जो पत्नी, पति की आमदनी से गुलछर्रे उड़ाये और काम कुछ भी न करे।

—दूसरे की कमाई खाने वाले व्यक्ति के लिए।

**खसम खपावणी रांड।** २७९८

खसम को खत्म करने वाली कुलटा।

—जिस कुलटा के सताने से पति मरा हो।

—घर में निरंतर कलह व अशांति रखने वाली औरत के लिए।

—जो पत्नी, पति के जीवन की भी परवाह न करे।

मि. क. सं. २६३३

**खसम-बायरी रांड।** २७९९

पति-विमुखा राँड।

—जो कुलटा पति का रंचमात्र भी कहना न माने।

—जो पत्नी अपने स्वामी की कतई परवाह न करे।

**खसम मर्‌यां रांड कमावै।** २८००

खसम मरने पर औरत कमाने लगती है।

—दुख पड़ने पर ही नसीहत मिलती है।

—जो व्यक्ति खूब हानि उठाने के बाद समझदारी बरते तब!

**खसम मर्‌यां रौ धोखौ कोनीं, सपनौ साचौ व्हैणौ चाहीजै।** २८०१

खसम मरे का धोखा नहीं, सपना सच होना चाहिए।

**संदर्भ-कथा :** एक औरत ने सपने में पति को मरा देखा। संयोग का करिश्मा कि दोपहर को खाना खाते ही पति के पेट में असह्‌य दर्द हुआ और वह तत्काल ही चल बसा। तब पत्नी ने मन-ही-मन सोचा कि पति के मरने का दुख नहीं, सपना सच तो हुआ, उसकी खुशी जरूर है।

—जो व्यक्ति अपने नगण्य अहम् की तुष्टि के लिए भारी क्षति उठाने की भी परवाह न करे।

—बेइंतहा हठी व्यक्ति के लिए जो किसी भी कीमत पर अपना हठ छोड़ने को तैयार नहीं।

—जो व्यक्ति क्षणिक आवेश या सनक में कुछ भी आगा-पीछा न सोचे।

**खसम री कांच दबावण नै गी, छोरा री निकळगी।** २८०२

खसम की काँच दबवाने गई, छोकरे की बाहर निकल आई।

—एक तकलीफ के मिटने पर दूसरी तकलीफ आ पड़े तब।

—गले में एक और उलटी आफत आ पड़े तब।

—जिस व्यक्ति का भाग्य ही प्रतिकूल हो।

**खसम री कांण नै रांमजी री आंण।** २८०३

खसम का मान और राम की कसम।

—औरत के लिए पति की मर्यादा और राम की सौगंध से बढ़कर और किसी बात का माहात्म्य नहीं होता।

—जिस व्यक्ति को सभी मर्यादाओं का समान रूप से निबाह करना हो।

**खांखरा नी खळी, हूं जाणें हग ना हवाक।**–भी.१५४ २८०४

पलाश की गिलहरी, डाल-पके आम का स्वाद क्या जाने।

—अकिंचन व्यक्ति बड़ी-बड़ी चीजों से निपट अनभिज्ञ रहता है।

—मूर्ख व्यक्ति आध्यात्मिक ज्ञान का अनुभव कैसे कर सकता है!

—गुलशन नंदा का पाठक गुरुदेव की कृतियों के मर्म तक कैसे पहुँचे?

**खांखळियौ तौ ई दीह।** २८०५

धुँधला गया तो भी सूर्य है।

—विपत्तियों से घिरकर भी शूरवीर तो शूरवीर ही है, वह कायर नहीं हो जाता।

—धूल से भरा होने पर भी मोती तो मोती ही है।

पूरा दोहा : **गूदळियौ तौ ई गंग-जळ, खांखळियौ तौ ई दीह।**

**खरौ विखाती 'खीमरौ' सांकळियौ तौ ई सीह॥**

गँदला होने पर भी गंगाजल है, धुँधला होने पर भी सूर्य है। विपत्तियों से घिरा होने पर भी 'खीमरा' है, हड्डियों का ढाँचा होने पर भी सिंह है।

**खांच-खांच—बाड़ौ लाजै।** २८०६

खींच खींच—बाड़े की लाज रख।

**संदर्भ-कथा :** एक जाट को अपने बैलों से बेइंतहा प्यार था। उसके बैल निहायत सुंदर, हष्ट-पुष्ट व गुणों की खान थे—चौधरी के लिए प्राणों से भी बढ़कर। उनका बखान करते समय वह कई बार ठाकुर को कहता कि वे ठिकाने के घोड़े व ऊँटों को भी दौड़ में पीछे छोड़ सकते हैं, जब इच्छा हो इसकी पड़ताल करके देख लें। एक बार संयोग की बात ऐसी हुई कि रात को चोर गाड़ियों सहित बैलों की दो जोड़ियाँ लेकर चंपत हो गये। चौधरी मुँह लटकाए ठाकुर के पास गया और गिड़गिड़ाते बोला—हुजूर, घोड़े दौड़ाकर चोरों को पकड़ना होगा। मेरे घर की

इज्जत के साथ ठिकाने की भी इज्जत जाएगी। ठाकुर ने मजबूरी प्रकट करते कहा—पर चौधरी तेरे बैलों को पकड़ें जैसे घोड़े मेरे पास हैं ही कहाँ ? तेरे बैल तो हवा को भी पीछे रखते हैं। अब तो पछताने के अलावा न मेरे पास उपाय है और न तेरे पास।

ज्यादा आरजू-मिन्नत करने पर आखिर ठाकुर को रवाना होना ही पड़ा। गाड़ियों की लीक-लीक दौड़ते घोड़ों ने आखिर बैलों को देख ही लिया। कुछ ही देर में चोरों को धर दबा लेंगे, यह सोच ठाकुर ने चौधरी से मजाक करते कहा—तेरे बैलों की परख हो गई। अब आगे कभी डींग मत हाँकना।

चौधरी के दिल में तीर-सा चुभा। बड़े धर्म संकट में फँसा—चोर पकड़े जाते हैं तो बाड़े की मर्यादा नष्ट होती है, न पकड़े जाएँ तो घर की मर्यादा नष्ट होती है। उसने अदेर मन में फैसला कर लिया कि घर की मर्यादा नष्ट हो-तो-हो, उसे तो बाड़े की मर्यादा बचानी है। अपने घोड़े को एड़ लगाकर वह ठाकुर से आगे निकला और चोरों के पास जाकर जोर से बोला—मेरे बैलों को हाँकने की तरकीब नहीं जानते तो चोरी करने के लिए मुँह क्यों धोया ? पकड़े गये तो मारे जाओगे और मेरे बाड़े की मर्यादा धूल में मिल जाएगी। रास खींचकर टिचकारी दो-टिचकारी। हवा की नाईं उड़ने लगेंगे।

उस उपाय के बाद चोरों को और क्या चाहिए था। जैसा चौधरी ने कहा, वैसा ही किया और सचमुच बैलों की गति चौगुनी हो गई, मानो बैलों की बजाय गाड़ी में हिरण जुते हों। चौधरी ने ठाकुर को चुनौती दी कि अब वे चोरों को पकड़ने में कसर न रखें। पर कसर तो रह ही गई। चोर तो देखते-देखते आँखों से ओझल हो गये। और फासला निरंतर बढ़ता ही गया। ठाकुर ने कहा—पगले, ठेट आकर तूने यह क्या खिलवाड़ किया ?

तब चौधरी ने मुस्कराते कहा—जिंदा रहा तो बैल और खरीद लूँगा, पर हुजूर बाड़े की खोई मर्यादा वापस कहाँ से लाता ? आप चिंता न करके मेरे साथ खुशी मनाएँ कि गाँव के चौधरी के बाड़े की इज्जत रह गई। ठाकुर ने लंबा साँस खींचकर कहा—हाँ, सो तो रह गई। तेरे बाड़े की इज्जत में ही मेरे ठिकाने की इज्जत है। अब बेकार घोड़ों को थकाने से कोई फायदा नहीं। चलो, लौट चलें। गाँव वाले तुझे मूर्ख कहते हैं, सो यों ही नहीं कहते। पर ठकुरानी से मशविरा करके मैं तुझे कुछ-न-कुछ इनाम दूँगा। वाकई आज तेरी हेकड़ी से मैंने भी एक नया सबक सीखा।

—कभी-कभार भौतिक हानि से अभौतिक मर्यादा का मोल ज्यादा होता है।

—सारी बातें हानि-लाभ की तुला पर ही नहीं तौली जातीं।

**खांचौ अर ओढ़ौ।** २८०७

खींचो और तानो।

—अपने काम की जिम्मेवारी आप ही को सँभालनी है।

—सीमित-साधनों में जस-तस गुजर-बसर करनी है।

**खांट आप तौ न द्यै, बीजी रौ ही ढुळावै।**–व.१५९ २८०८

खाँटी खुद तो न दे, दूसरी का भी गिरा देती है।

खांट = आसानी से दूध न दुहने देने वाली गाय।

—बदमाश गाय खुद तो दूध देती नहीं,दूसरी गायों का दूहा भी लात मारकर गिरा देती है।

—दुष्ट व्यक्ति खुद तो किसी काम का होता नहीं,पर वह दूसरे के लाभ में रोड़े अटकाता है।

—क्या मजाल कि दुष्ट या बंड व्यक्ति अपने वश रहते किसी का कोई भी काम आसानी से होने दे।

**पाठा : खांट गाय आपरौ दूध कोनीं देवै, दूजी रौ ई ढोळाय दै।**

**खांड खायां हाड गळै।** २८०९

खाँड खाने से हड्डियाँ गलती है।

—अधिक मीठा खाना हानिकारक होता है।

—अपब्यय से आर्थिक स्थिति बिगड़ती है।

**खांड गळै जद सगळा जावै, हाड गळै तद कुण ई नीं आवै।** २८१०

खाँड गलने पर सब जाते हैं, हाड गलने पर कोई नहीं आता।

—मौज व सुख के सब संगाती हैं ,पर दुख में कोई पास नहीं फटकता।

—ऐश-आराम के समय अनचाही भीड़ हो जाती है,पर दुख में चाहने पर भी कोई पास नहीं आता।

**पाठा : खांड गळी.रा सै सीरी, रोग गळी रौ कुण-कांई!**

खाँड गली के सब साथी,रोग की वेला कोई नहीं!

**खांड दियां मरै उणनै विस क्यूं देणौ ?** २८११

खाँड़ दिये मरे उसको विष क्यों देना ?

—निहायत शालीन व सज्जन व्यक्ति के लिए जो दो बोल सुनकर ही लज्जित हो जाय, उसे खामखाह जहर क्यों दिया जाय ?

—बड़ा व्यक्ति तो मामूली उपेक्षा से ही मर जाता है तब उसे गालियाँ क्यों दी जायँ।

**खांडद्यू भेंडद्यू घराड़ो घाले, हींगालल्या ना हींग भागे।**–भी.१५५ २८१२

बिना सींग वाले बैल और मुड़े सींगों वाली गाएँ चिल्लाती हैं तो सींग वालों के सींग टूटते हैं।

—कमजोर व्यक्ति सहायता के लिए गुहार मचाते हैं तो बहादुर व शूरवीर कट मरते हैं।

—साधनहीन व्यक्ति संकट की वेला चिल्लपों मचाकर साधन-संपन्न महानुभावों को परस्पर भिड़ाने में कामयाब हो जाते हैं।

**खांड पैली गरज गळै।** २८१३

खाँड से पहिले गर्ज पिघलती है।

—स्वार्थी मनुष्य को अपना मतलब सिद्ध करने के लिए विनम्र बनना पड़ता है।

—मतलब पूरा करने के लिए मनुष्य को कई स्वाँग लाने पड़ते हैं।

**खांड में खायौ जाय नीं गुळ में खायौ जाय।** २८१४

खाँड में खाया जाय न गुड़ में खाया जाय।

—जो व्यक्ति किसी भी युक्ति से वश में नहीं किया जा सके।

—जो व्यक्ति किसी भी उपाय से न समझे तब।

—जिस व्यक्ति के लिए कोई भी उपाय कामयाब न हो।

**खांडै-खांडै पिंडत।** २८१५

खंडे-खंडे पंडितम्।

—खंडित-खंडित अक्षर सीखने से ही कोई व्यक्ति पंडित होता है।

—टूटे-फूटे अक्षरों को नित्य-प्रति जोड़ने से ही पारंगत होना संभव है।

**खांडै री धार।** २८१६

तलवार की धार।

—दुधारी तलवार पर चलना दुश्वार है।

—सच्चाई की राह तलवार पर चलने के समान कठिन है ।

—प्रेम व सत्य का पालन बड़ा मुश्किल है ।

—जो काम अत्यंत कठिन हो ।

**खांडौ बाज्योड़ौ चोखौ पण दांत बाज्योड़ा खोटा ।** २८१७

तलवार बजी हुई अच्छी पर दाँत बजे हुए बुरे ।

—घर में आपसी कलह,तलवारों के युद्ध की अपेक्षा ज्यादा घातक होती है । युद्ध तो कुछ दिन चलकर जल्दी ही समाप्त हो जाता है,पर कलह बरसों तक नहीं मिटती ।

—जबान की लड़ाई तलवार की लड़ाई से अधिक घिनौनी व खराब है ।

**खांण व्है जैड़ा नीपजै ।** २८१८

खान हो जैसा खनिज ।

—जैसे माँ-बाप वैसी संतान ।

—बुरों के बुरे ही पैदा होते हैं ।

—कोख का प्रभाव तो हर किसी पर पड़ता है ।

**खांणौ खलकां रौ पण पेट तौ आपरौ है ।** २८१९

खाना तो दूसरों का पर पेट तो अपना है ।

—जिस उदर-पूर्ति से अपना पेट खराब हो तो दूसरों का भोजन भी उचित-मात्रा में ही खाना चाहिए ।

—जिस स्वार्थ से स्वयं का नुकसान हो वैसा काम नहीं करना चाहिए ।

—लोभवश ऐसा काम नहीं करना चाहिए,जिससे खुद की पेरशानी बढ़े ।

**खांणौ नीं तौ ढोळाय दैणौ ।** २८२०

खाना नहीं तो गिरा देना ।

—स्वयं का लाभ न हो तो दूसरों को भी उससे वंचित रखने वाले व्यक्ति के लिए ।

—कोई दूसरा भी क्या लाभ उठा ले—इस तरह की हीन प्रवृत्ति वालों के लिए ।

**खांणौ प्रेम रौ, व्हौ भलाईं जैर ई ।** २८२१

खाना तो प्रेम का, हो भले जहर ही ।

—प्रेम-रहित पकवान भी फीके पर प्रेम का सामान्य खाना भी श्रेष्ठ होता है। प्रेम का माहात्म्य।

**खांणौ मन भातौ, पैरणौ जग भातौ।** २८२२

खाना मन सुहाता, पहिनना जग सुहाता।

—जैसा रुचे व पचे वैसा खाना चाहिए और जैसा दूसरों को सुहाये वैसा पहिनना चाहिए।

—प्रत्येक कार्य का अपना अलग ही औचित्य होता है।

**पाठा : खांणौ पेट सुहातौ, पैरणौ जग सुहातौ।**

खाना पेट सुहाता, पहिनना जग सुहाता।

**खांधा माथै घाघरौ नै घूंघटौ काढ़ै।** २८२३

कंधे पर लहँगा और घूँघट निकाले।

—झूठी लज्जा का व्यर्थ दिखावा।

—जिस व्यक्ति की समझ में कोई तारतम्य न हो।

—अकिंचन मर्यादा के पीछे बड़ी मर्यादा गँवाने वाले व्यक्ति के लिए।

—रूढ़ि की लीक पीटने वाले नासमझ व्यक्तियों पर कटाक्ष।

**खांधिया किणी रै ई भाड़ै नीं आवै।** २८२४

कंधा देने वाले किसी के लिए भी किराये पर नहीं आते।

—हर बात पैसे के जोर पर पार नहीं पड़ती।

—आपसी सहयोग से ही सब काम संपन्न होते हैं।

—कैसे भी बड़े आदमी का वक्त पर साधारण आदमी से भी काम पड़ जाता है।

—समाज में रहकर अकेले जीना आसान काम नहीं।

**खांधिया खांध दे, भेळा नीं बळै।** २८२५

काँधिये कंधा देते हैं, साथ नहीं जलते।

—एक सीमा तक वांछित सहयोग दिया जा सकता है, उसके आगे दुख की पीड़ा खुद ही को भोगनी पड़ती है।

—हर सहयोग की एक सीमा होती है।

—किसी भी सहयोगी से अनुचित प्रत्याशा रखना मुनासिब नहीं होता।

**पाठा : खांधिया थोड़ा ई बळै ! काँधिये थोड़े ही जलते हैं ।**

**खांधिया कोनीं बळै ! काँधिये नहीं जलते ।**

**खांधै कस्सी तौ उधार किसी ?** २८२६

कंधे पर कस्सी तो उधार कैसी ?

कस्सी = निराई करने व जमीन की हलकी खुदाई के निमित्त कृषि का एक उपकरण ।

—नकद मजदूरी और नकद पैसा ।

—मजदूरी करके पेट भरने वाले के लिए उधार कैसी ?

—मजदूर वहीं काम पर जाएगा, जो रोकड़ पैसा देगा ।

**खांधै कोथळौ तौ मुलक मोकळौ ।** २८२७

कंधे झोला तो खलक बहुतेरा ।

—जब भीख माँगने के लिए कंधे पर झोला लटका लिया तो माँगने के लिए सारा संसार पड़ा है । मेहनत मजदूरी तो सीमित दायरे में ही की जाती है ।

—जब लज्जा ताक में रखकर भीख माँगनी ही शुरू कर दी तो क्या परिचित, क्या अपरिचित, क्या अपना गाँव और क्या पराया गाँव !

**खांधै खांपण ।** २८२८

कंधे पर कफन ।

—सिर पर कफन बाँधकर चलने वाले निडर व्यक्ति के लिए ।

—जिस व्यक्ति को मरने की कतई चिंता न हो ।

**खांधै खुदाळी , खुरपी हाथ , लट्ठ दातळौ राखै साथ ।** २८२९
**वाढ़ै घास अर साख निंदाणै , सै उणनै करसांण बखांणै ॥**

कंधे पर कुदाल, खुरपी हाथ, लाठी हँसिया रखे साथ ।
काटे घास और फसल निराये, तभी वह किसान कहाये ॥

—उपरोक्त उपकरणों के साथ जब स्वयं मेहनत करे तभी वह कृषक कहलाने का अधिकारी है ।

—हुक्म और साधन के बूते पर जो दूसरों के द्वारा खेती करवाये वह सच्चा किसान नहीं है ।

**खांधै छोरौ गांव ढिंढोरौ ।** २८३०

कंधे पर लड़का, गाँव में ढिंढोरा ।

—पास रखी हुई चीज को अन्यत्र खोजने वाले के लिए ।

—अकारण परेशानी उठाकर हो-हल्ला मचाने वाले के लिए ।

पाठा : **खाक में छोरौ , गांव में हेरौ ।** बगल में छोकरा, गाँव में खोज ।

**खांधै दीधां बळदां नै भार ।** २८३१

जुआ धरने पर बैलों को भार ।

—एक बार गाड़ी में जुतने पर सारा भार बैलों को ही ढोना पड़ता है ।

—जो व्यक्ति बैलों के उनमान घर का समूचा बोझ वहन करे ।

—जिसकी जिम्मेवारी होती है, उसे हर सूरत में निबाहना पड़ता है, उससे टला नहीं जा सकता ।

**खांद्यौ खांद दिये ते खाइन जाय, खवड़ावी ने नी जाय ।**– भी.१६२ २८३२

कंधा देने वाला कुछ खाकर ही जाता है, खिलाकर नहीं जाता ।

—मरे हुए व्यक्ति को कंधा देकर मसान तक ले जाने वाले वापस मृतक के घर लौटते हैं तो बारह दिन तक कुछ-न-कुछ खाकर ही जाते हैं, खिलाकर नहीं जाते ।

—प्रत्येक छोटे-बड़े काम के पीछे एक अदृष्ट आशा छिपी रहती है ।

**खांधौ देय वांधौ कस्यौ ।** २८३३

कंधा देकर झंझट किया ।

—अधूरा सहयोग देकर छोड़ने वाले व्यक्ति के लिए ।

—मामूली सहयोग देने पर पूरी जिम्मेवारी गले पड़ जाय तब ।

**खांनजादा खेती करै, तेली चढ़ै तुरंग ।** २८३४

खानजादे खेती करें, तेली चढ़ें तुरंग ।

—योग्य व्यक्ति कष्ट उठाएँ और अयोग्य व्यक्ति मौज करें तब ।

—जमाने के फेरबदल की बलिहारी ।

**खांन-बावड़ी माथै जोवौ ।** २८३५

खान-बावड़ी पर देखो ।

—ऐसे बेवकूफ और कहीं तलाश करना।

—जो व्यक्ति हर किसी को बेवकूफ बनाना चाहे तब परिहास में इस उक्ति का प्रयोग होता है कि ऐसे नादान और कहीं ढूँढ़ना।

दे.क.सं.१५७३

**खांन माता खावै खोपरा, भैरूं खावै भाटा।** २८३६
**बळदां में करार व्है तौ आपै ई जावै न्हाटा॥**

खान माता खाये खोपरा, भैंरू खाये पत्थर।
बैलों में शक्ति हो तो खुद ही भागें सत्वर॥

—लोक-जीवन में ईश्वर, धर्म और अदृष्ट के प्रति आस्था की कोई कमी नहीं, पर उसका जो प्रदर्शन लोकोक्तियों से उजागर हुआ है वहाँ निखालिस व्यावहारिक सत्य है—आस्थाओं के प्रति नितांत अस्वीकृति का भाव है।

खांन = कुएँ में एकत्रित मिट्टी व कचरा। जरूरत पड़ने पर उसे बाहर नहीं निकाला जाय तो पानी का स्रोत बंद हो जाता है। किसान कुआँ सींचते समय खान माता की पूजा करता है और एक भैंरू की। भैंरू का थान कुएँ के पास होता है, उसकी पुतली होती है। पर खान-माता का कोई उपास्य रूप नहीं है। किसान उसे पाताल की देवी मानता है। मन-ही-मन उसके अमूर्त रूप का ध्यान करता है। खान-माता को तो वह अवश्य खोपरा या नारियल खिलाएगा। और भैंरू अपनी इच्छा से कुछ खाना चाहें तो पत्थर हाजिर हैं। बैलों में ताकत और किसान की भुजाओं में बल हुआ तो यह तथा-कथित देव तुरत नौ-दो ग्यारह हो जाएँगे। भारतीय किसान का दुहरा जीवन है—एक तरफ तो वह पूरमपूर व्यावहारिक और भौतिकवादी है और दूसरी ओर संपूर्ण-रूप से आस्तिक। यह उक्ति उसके उसी दोहरे जीवन को लक्षित करती है।

**खांमचण अैड़ी के बड़ां खातर आधण चाढ़ै।** २८३७

निपुण ऐसी कि बड़े बनाने की खातिर अदहन चढ़ाये।

—बड़े बनाने के लिए अदहन की जरूरत नहीं पड़ती। दाल पकाने के लिए कुछ समय पूर्व पानी चूल्हे पर चढ़ा दिया जाता है, उसमें दाल डालने से वह चाकी में पीसने योग्य बन जाती है। पर जरूरत से ज्यादा निपुण औरत उबलता अदहन तैयार करती है, जो बड़े बनाने में कुछ काम नहीं आता। उसके मूर्खतापूर्ण काम को व्यंग्य में निपुणता कहा गया है।

—जो व्यक्ति निपुणता का दिखावा करे, पर वास्तव में पूरा ठोट हो।

**खांमचण रौ बुगच्यौ व्है ज्यूं।** २८३८

चतुर औरत के बुगचे की तरह।

बुगच्यौ = पहिले कपड़े रखने के लिए पेटी या मजूस की जगह कपड़े का त्रिकोण थैला काम में लाया जाता था। चतुर औरतें बड़ी मेहनत से बुगचों पर सुरंगा काम करती थीं।

—जो व्यक्ति हरदम साफ-सुथरा व सलीके से रहता हो।

**खांमची रौ हळ डोढ़ गोळ इज बेवै।** २८३९

अति निपुण का हल आधी देर ही चलता है।

—जरूरत से ज्यादा चतुर व्यक्ति हल के उपकरणों को दुरुस्त करता ही रहता है, इसलिए उसका हल चलने की बजाय ज्यादा पड़ा रहता है।

—ज्यादा होशियारी बरतने पर मनुष्य के गुण भी दोष बन जाते हैं।

**खांम दियां खीच सीझै।** २८४०

खाम देने पर खीच पकता है।

खांम = किसी बर्तन को चारों ओर से गीले आटे के द्‌वारा इस तरह बंद कर देना ताकि उसकी भाप बाहर न निकले। आधुनिक कुकर के पहले इस तरह खाम देने की प्रक्रिया से इसकी पूर्ति हो जाती थी।

—पूरी युक्ति करने से ही कोई काम सफल होता है।

—कष्ट पाने से ही आदमी सुधरता है।

**खांमीड़ौ भेळौ ई गियौ।** २८४१

खामीड़ा साथ ही गया।

खांमीड़ौ = रहँट के अलावा कुएँ से पानी निकालने की एक प्रक्रिया विशेष में बैल हाँकने वाला—जो बैलों के पीछे लंबी लाव (चमड़े का मोटा रस्सा) पर बैठा रहता है। कभी-कभी दुर्घटना में हाथ से लाव छूटने पर 'खामीड़ा' उसकी लपेट में कुएँ के भीतर जा गिरता है।

—हिमायती या सहयोगियों की एक साथ क्षति हो तब।

—मदद करने वाला आफत में फँस जाय तब।

**खां सा'ब बळीतौ फाड़ौ के औ कांम काफर रौ ।** २८४२
**खां सा'ब खीचड़ी खावौ के बिसमिल्ला झट हाथ धुपावौ ॥**
खाँ साहब लकड़ियाँ फाड़ो कि यह काम काफिर का ।
खाँ साहब खिचड़ी खाइये कि बिस्मिल्ला चट हाथ धुलाइये ॥
—जो व्यक्ति मेहनत के कठिन काम की खातिर बहाने बनाये और लाभ के काम में तुरत तैयार हो जाय ।

**खाई करै उपाई ।** २८४३
खाई करे उपाय ।
—पुराने जमाने के किले व गढ़ के चारों ओर गहरी-चौड़ी खाई खुदी रहती थी, जो युद्ध के समय सुरक्षा के काम आती थी ।
—खाई सुरक्षा के लिए उपयुक्त उपाय है ।
—आने वाले खतरों का सामना करने के लिए पहले उपाय सोचा हुआ काफी लाभप्रद रहता है ।

**खाई खुदगी रे भाया ।** २८४४
खाई खुद गई रे भाई ।
—फिर आफत आ गई ।
—झूठा इलजाम आ पड़ने पर ।
—जिस भावी संकट की संभावना हो, वह सिर पर आ पड़े तब ।

**खाई-खोई नै मांहीनै रोयौ ।** २८४५
खा-पीकर भीतर-ही-भीतर रोया ।
—गुलछर्रे उड़ाकर बाद में सिर पीटने वाले व्यक्ति के लिए ।
—बिना सोचे-समझे अंधाधुंध अपव्यय करके बाद में पछताने वाले व्यक्ति के लिए ।

**खाई खोयो माहले रेई ने रोयो ।**– भी.१५६ २८४६
खा-पीकर भीतर-ही-भीतर रोया ।
दे.क.सं.२८४५

**खाई रौ कांई खावै ?** २८४७

**खाई हुई का क्या खाना ?**

—किसी की जूठन खाने वाले के लिए या किसी की हूबहू नकल करने वाले के लिए।

—किसी कुलटा से सहवास करने वाले के लिए।

**खाई वाल्ही , माई वाल्ही नीं ।**–व.३२३ २८४८

**खाई प्यारी, माँ प्यारी नहीं ।**

—खिलाने-पिलाने वाला माँ की अपेक्षा अधिक प्रिय होता है।

—परवरिश करने वाला माँ से ज्यादा अपना होता है।

—जिससे स्वार्थ की पूर्ति हो वही आत्मीय है।

**खाऊं ते खाडो पड़े , नीं खाऊं तो रोड़ी वळे ।**– भी.१५७ २८४९

खाऊँ तो गड्ढा पड़े, न खाऊँ तो रोड़ी जले ।

रोड़ी = उकरड़ी = घूरा ।

—भेड़ या पशुपालक घूरे की ठीक हिफाजत न रखें या शुरुआत में ही थोड़ा-थोड़ा बेच दें तो नुकसान होता है,कमाई में गड्ढा पड़ जाता है और उसे इकट्ठा करते रहने पर वह दुर्योग से जल भी जाता है।

—उपयोग में न लाने से यदि कोई वस्तु नष्ट होती हो तो उसे उपयोग में लाकर समाप्त करना बेहतर है।

—कोई दुविधा-जनक स्थिति खड़ी हो जाय तब !

**पाठा : खावूं तौ खाडौ पड़ै , नीं खावूं तौ रोड़ी बळै ।**

**खा अे बंदी खीर अर खांड , रोसी बोहरौ अर बोहरा री रांड ।** २८५०

खा ए बंदी खीर और खाँड, रोएगा बोहरा व बोहरे की राँड ।

—उधार लेकर न चुकाने वाले पर कटाक्ष।

सं. ऋणम् कृतम्, घृतं पीवेत, यावत जीवेत, सुखं जीवेत ।

मि.क.सं.१८१९

**खाक उघाड़ियां काळजौ दीसै ।** २८५१

बगज़ उघाड़ने पर कलेजा दिखता है

—निहायत गरीब व्यक्ति के लिए।

—घर का भेद बताने पर घर की बदनामी होती है।

—धर्म-संकट में पड़े व्यक्ति के लिए।

**खाक जळ सो जळ, बांह बळ सो बळ।** २८५२

बगल का जल सो ही जल, बाँह का बल सो ही बल।

—बगल में लटका पानी और अपनी भुजाओं का बल ही समय पर काम देता है।

—जरूरत पड़ते ही जो चीज मौजूद मिले उसी का महत्त्व है।

**खाक में कटारी, चोर नै घोदा मारै।** २८५३

बगल में कटारी, चोर को मुक्के मारे।

—जो व्यक्ति समय पर किसी चीज का सही उपयोग नहीं कर सके।

—समय पर जिस व्यक्ति के दिमाग में सही बात न उपजे।

—जो व्यक्ति वक्त पर यथोचित निर्णय न कर सके। अव्यावहारिक व्यक्ति के लिए।

दे.क.सं.१७३२

**खाक में छुरी, मूंडै रांम।** २८५४

बगल में छुरी, मुँह में राम।

—कपटी या ढोंगी व्यक्ति पर कटाक्ष।

—जो व्यक्ति जबान से मीठा हो और आचरण में दुष्ट हो।

**खाक में सोटौ अर नांव गरीबदास।** २८५५

काँख में लट्ठ और नाम गरीबदास।

—नाम के विपरीत गुण। इस तरह की अनेक उक्तियाँ हैं।

**खाकां मांय सूं हंसी निकळै।** २८५६

बगल से हँसी फूटती है।

—नितांत वाहियात और निराधार बात के लिए।

—खामखाह ऊलजलूल बात करने वाले के लिए।

**खा कालिंदर थारी दाय पड़ै ज्यूं।** २८५७

खा साँप तेरी इच्छा हो ज्यों।

—विपत्तियों से घिरे मनुष्य का आत्म-समर्पण कि हे साँप जहाँ तेरी इच्छा हो वहीं खा ले, मुझे तो हर हालत में मरना ही है।

—जब कोई गरीब दुष्ट व्यक्ति के चंगुल में फँस जाए तब।

—जिस व्यक्ति के लिए बचाव का कोई उपाय न हो।

**खाखला रा बीज व्है जद तीज करीजै।** २८५८

भूसे के बीज हों तब तीज मनाई जाती है।

—राजस्थान में औरतों के लिए सावन-भादों की तीज का त्योहार बहुत ही महत्त्वपूर्ण होता है। पर भूसे का बीज यानी गेहूँ होने पर ही उसे मनाया जा सकता है, अन्यथा नहीं।

—आर्थिक-स्थिति ठीक होने पर त्योहार का आनंद है।

—अर्थाभाव में खुशी के प्रतीक उत्सवों का कोई महत्त्व नहीं होता।

—किसी भी छोटे-बड़े काम की खातिर पर्याप्त साधन जरूरी हैं।

**खा गुळ—सतरै सेर !** २८५९

खा गुड़—सत्रह सेर !

—डींग मारने वाले किसी व्यक्ति के सामने कोई चुनौती प्रस्तुत हो तब।

—मौके-बेमौके हर वक्त अनुचित लाभ उठाने वाले व्यक्ति के लिए।

—जब-तब अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए तत्पर व्यक्ति की बात पार न पड़ने पर।

**खाज चालसी सो भेळी सोसी !** २८६०

खुजली चलेगी वह साथ सोएगी !

—जिसे गर्ज होगी वह पहल करेगा।

—गर्जमंद की मजबूरी।

**खाज तौ खिणियां भागै।** २८६१

खुजली तो खुजलाने से ही मिटती है।

—काम तो करने से ही संपन्न होता है।

—इच्छा पूर्ति होने पर ही संतुष्टि होती है।

—जिस चीज की आसन्न माँग हो, वह तत्काल हाथ लगे तभी सांत्वना मिलती है।

**खाज माथै आंगळी पाधरी जावै।** २८६२

खुजली पर अँगुली सीधी पहुँचती है।

—मतलब की बात अनजाने ही हर किसी को दिख जाती है।

—अपनी जरूरत ही सबसे पहले महसूस होती है।

—अंधे व्यक्ति को भी अपना स्वार्थ खूब दिखता है।

**खा जावै नै खाडौ कूट जावै।** २८६३

खा जाये और खड्ढा कूट जाये।

—उस कृतघ्न व्यक्ति पर कटाक्ष जो पर-स्त्री के साथ सहवास करके उसका माल भी डड़ा ले जाए।

—दुहरा लाभ उठाने वाले मुफ्तखोरों के प्रति व्यंग्य।

**खाजू, बीजू रौ भाव कोनीं, मिळै जिण भाव लैणी पड़ै।** २८६४

खाद्य व बीज का कोई भाव नही, मिले उसी भाव से लेना पड़ता है।

—वक्त पर खाना व फसल के लिए बीज तो अनिवार्य है, उन्हें टाला नहीं जा सकता। इनका भाव-ताव नहीं किया जाता।

—जीवन तथा उत्पादन से बढ़कर दूसरी कोई वस्तु मूल्यवान नहीं होती।

**खाजौ नै खपजौ।** २८६५

खाना और खपना।

—असहाय व्यक्ति को किसी समर्थ के द्वारा सताये जाने पर इस प्रकार शाप के द्वारा कोसा जाना।

—विवश व्यक्ति की हाय किसी अत्याचारी के लिए।

**खाटा तोरा मदड़ा पीवा मरदां ना काम।**– भी. १५९ २८६६

खट्टा-तुआ, मद पीना मर्दों का काम।

—भला-बुरा,ऊँच-नीच और कैसा भी सरल-कठिन काम किसी कायर के वश की बात नहीं, बहादुर व्यक्ति ही जरूरत पड़ने पर जोखिम उठा सकता है।

—पुरुषों का गर्व-गुमान इसी तरह तुष्ट होता है।

**खांटी छाछ उखरड़ै ढोळौ।** २८६७

खट्टी छाछ घूरे पर डालो।

—जो व्यक्ति जिस योग्य होता है,उसके साथ वैसा ही व्यवहार संगत है।

—प्रतिष्ठा के अनुरूप आदर।

—अयोग्य व्यक्ति की कहीं भी कद्र नहीं होती,उसे कोई मुँह नहीं लगाता।

**खाटै सूं मन फाटौ, देख जंवाई न्हाटौ।** २८६८

कढ़ी से मन फटा और दामाद भागा।

—वांछित सत्कार और वांछित तिमारदारी न होने का परिणाम यही होता है कि संबंधित व्यक्ति का मन उचट जाए।

—निरादृत व्यक्ति को आखिर हैरान होकर जाना ही पड़ता है।

**खाटौ सुधरनै कांई खीर बणै?** २८६९

कढ़ी सुधरकर क्या खीर बन सकती है?

—हीन व्यक्ति को सुधारने की गुंजाइश बहुत कम रहती है।

—जिसका जैसा स्वभाव होता है,वह बदलता नहीं।

—किसी भी व्यक्ति में अपेक्षित बुद्धि होने पर ही विकास संभव है।

**खाड खिणै जिणरै कूवौ त्यार।** २८७०

गड्ढा खोदे उसके लिए कुआँ तैयार।

—दूसरों को क्षति पहुँचाने वाले के लिए उससे भी बड़ी क्षति अपरिहार्य है।

—दूसरों का बुरा करने वाला,दुष्परिणाम से बच नहीं सकता।

**पाठा: खाड खनै जो अवर को, ताकौ कूप तैयार।**

**खाड सूं काढ़्यौ तौ वाळहा में पड़्यौ।** २८७१

गड्ढे से निकला तो नाले में गिरा।

—मामूली हानि से बचाव हुआ तो अधिक हानि सिर पर तैयार।

—जिस व्यक्ति की परेशानियों का सिलसिला खत्म ही न हो।

पाठा : खाड सूं निकळनै बेरा में थरकीज्यौ।

गड्ढे से निकलकर कुएँ में जा पड़ा।

**खाडां री ठौड़ धड़ा अर धड़ां री ठौड़ खाडा।** २८७२

गड्ढों की ठौर टीले और टीलों की ठौर गड्ढे।

—परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है, इस में कोई अपवाद नहीं होता।

—जो कल ऊँचा था वह तो नीचे दब गया, जो कल पाँवों तले दबा हुआ था, वह सबसे ऊपर आ गया।

**खात पड़ै तौ खेत, नींतर कचरौ रेत।** २८७३

खाद पड़े तो खेत, वरना कचरा रेत।

—खाद के द्वारा पौधा संस्कारित होता है, उपज अधिक देने की उस में क्षमता बढ़ जाती है।

—संस्कार पड़े तो मनुष्य, अन्यथा ढेला-पत्थर।

—शिक्षा की सिंचाई होती रहे तो मनुष्य भी पौधे के उनमान लहलहाने लगता है।

**खात पाड़ी ने खोटी थाद्या।**– भी.१६० २८७४

खाद डाला और व्यर्थ गँवाया।

—ऊसर खेत में खाद डाला हुआ बिल्कुल बेकार जाता है। किसान का सारा परिश्रम और खर्च निरर्थक।

—यदि परिश्रम का उचित पारिश्रमिक न मिले तो समय और शक्ति हवा में उड़ जाती है।

**खातां खांण न पीतां पांणी।** २८७५

न खाते बन पड़े न पीते बन पड़े।

—खस्ता हालत का सहज परिणाम।

—साधन-हीन व्यक्ति की गुजर-बसर बहुत मुश्किल है, उसे बेहद कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

—अभाव में रहने वाला व्यक्ति कभी एक चीज जुटा पाये तो दूसरी कम पड़ जाती है।

पूरा दोहा :

**अेक सोड़ अर जणा पचास, सगळा करै ओढ़ण री आस।**

**सांझ पड़्यां व्है खींचा-तांणी, खातां खांण न पीतां पांणी ॥**

**खातां-खातां बचग्यौ सो बीज, मरतां-मरतां बचग्या सो बडेरा।** २८७६

खाते-खाते बच गया सो बीज, मरते-मरते बचे सो बुजुर्ग।

बीज = बाजरा, ज्वार, चना और गेहूँ आदि का बीज।

—जो अनाज घर में खाते-खाते बच जाय, वह खेती में बीज के लिए काम आ जाता है।

—भाग्य से जो बच जाय वही सार्थक है।

—बिना सोचे हुए जो काम स्वतः बन जाय तब।

—जिस वस्तु का दुहरा उपयोग हो।

—समय पर जो चीज हाथ लग जाय सो उत्तम है।

**खातां-पीतां ई मूंडौ दूखै।** २८७७

खाते-पीते भी मुँह दुखता है।

—सुविधाओं के बीच भी तकलीफ का बहाना करने वाले व्यक्ति के लिए।

—खामखाह की बहानेबाजी करने वाले व्यक्ति पर कटाक्ष।

**खातां-पीतां ना मरै, ऊंघतड़ां मर जाय।** २८७८

खाने-पीने से न मरे, सोते-सोते मर जाय।

—खाने-पहिनने के निमित्त खर्च करने से मनुष्य को नुकसान नहीं होता, पर काम करने की बजाय, आलस्य के कारण पड़ा रहना अत्यधिक हानिप्रद है—मरने के बराबर।

—आलस्य व निठल्लेपन की प्रताड़ना।

**खातां-पीतां हर मिळै तौ म्हांनै कैजौ।** २८७९

खाते-पीते हरि मिले तो हमें कहना।

—बड़े काम का फल सहज प्राप्त नहीं होता।

—आरामतलबी से बड़ी आकांक्षा फलीभूत नहीं होती।

—अथक परिश्रम व तपस्या किये बिना बड़ी चीज हाथ नहीं लगती।

**खाती खांमची व्है तौ बांका ई पाधरा करै।** २८८०

बढ़ई प्रवीण हो तो बाँके भी सीधे कर देता है ।

—काम करने की योग्यता हो तो टेढ़ा काम भी आसान हो जाता है ।

—कैसा भी जटिल काम कुशल व्यक्ति के हाथ में आने पर स्वतः सुधरता रहता है ।

**खाती जाय, पीती जाय, घर रा डांडा गिणती जाय।** २८८१

खाती जाये, पीती जाये, घर के डंडे गिनती जाये ।

—जो व्यक्ति अपने घर का भला-बुरा सोचे बिना अधिक खर्च करे उसके लिए।

—बेहिसाबी व्यक्ति के लिए,जो आदत के अनुसार खर्च भी करता रहे और पछताता भी रहे ।

**खाती नै देख'र मारग वेवता री गेडी लांबी व्है जावै।** २८८२

खाती को देखकर, राहगीर की लाठी लंबी हो जाती है ।

—कुछ व्यक्तियों का स्वभाव ही ऐसा होता है कि कारीगर को देखते ही उन्हें वैसा ही काम याद आ जाता है और बेगार बता देते हैं । यह पहिले के जमाने की बातें हैं, आज तो पैसों के बिना झाँकते तक नहीं । मसलन कपड़े से कई गुना सिलाई लगती है ।

—खाती नजर आया नहीं कि लाठी की लंबाई बढ़ जाती है और उसे काटकर छोटा करने की बेगार खाती के जिम्मे पड़ जाती है ।

**खाती मरै जणा दोय साथै मरै।** २८८३

बढ़ई मरे तो एक साथ दो मरते हैं ।

—कोई बड़ा जंगी पेड़ हो तो बारी-बारी से दो बढ़ई साथ काटते हैं । एक बढ़ई के थकने पर दूसरा कुल्हाड़ी चलाने लगता है । यदि उनके अनुमान से पहिले पेड़ गिर पड़ता है तो दोनों बढ़ई एक साथ दबकर मर जाते हैं ।

—निर्जीव पेड़ भी अपने अस्तित्व मिटाने वालों से बदला लेता है ।

**खाती रा मन में बांवळियौ बसै।** २८८४

खाती के मन में बबूल ही बसा रहता है ।

—बबूल के हरे-भरे छोटे पौधे को देखने पर खाती के मन में हिलोरें जाग उठती हैं कि बबूल कितना बढ़ेगा और उससे काम की कितनी लकड़ी मिलेगी ।

—इस उक्ति में सापेक्षकता का सिद्धांत स्पष्ट है कि जो व्यक्ति जिस हुनर में पारंगत है, उसे प्रकृति का वैसा ही उपयोग अदेर सूझता है।

**खाती री बेटी सासरै सिधावै अर गतराड़ौ गाती मारै के म्हारै मर्‌यां जासी।** २८८५

खाती की बेटी ससुराल जाये और नाजर गाती मारे कि उसके मरने पर जाएगी।

गाती मारणौ = खेसनुमा लंबे-चौड़े वस्त्र को कंधे व कमर से इस तरह कसकर बाँधना कि वह लड़ते समय कवच जैसा ही काम दे और सर्दी से बचाव करे।

—नाजर को औरत से कोई सरोकार नहीं पर किसी की भी बेटी ससुराल जाये तो वह गाती मारकर लड़ने को उद्यत हो जाता है कि अब तो उसके मरने पर वह ससुराल जाएगी। नाजर के कहने की लोग विशेष परवाह नहीं करते। हँसी-ठिठौली का मसला समझकर उसे माफ कर देते हैं।

—जो व्यक्ति किसी भी काम में व्यर्थ अड़ंगा लगाये।

**खाती वाळौ दीवौ।** २८८६

बढ़ई वाला दीपक।

**संदर्भ-कथा**: एक बढ़ई-परिवार की बहू आलसी और लापरवाह थी। सूर्योदय होते ही श्वसुर ने कहा, 'बहू दीया करो' बहू ने आश्चर्य से पूछा, 'अभी ? इस वक्त ?' श्वसुर ने जवाब दिया, 'अभी कहूँगा तो साँझ तक भी बड़ी मुश्किल से होगा। तू अपनी आदत जानती नहीं।'

'जानती तो हूँ ! पर आप कहें तो अभी कर दूँ !'

'साँझ तक भी कर दे तो गनीमत है।' श्वसुर ने कुल्हाड़ी से लकड़ी छीलते कहा।

—बहुत पहिले हिदायत देने पर भी जो व्यक्ति समय पर काम न करे।

**खातौ जाय अर खप्पर फोड़तौ जाय।** २८८७

खाता जाय और खप्पर फोड़ता जाय।

—जो एहसान-फरामोश व्यक्ति भला करने वाले को ही नुकसान पहुँचाये।

—कृतघ्न व्यक्ति पर कटाक्ष।

**खादे भूख जाये, दीठै भूख नीं जाये।**– भी.१६१ २८८८

खाने से भूख मिटती है, देखने से नहीं मिटती।

**खाध करै उपाध।** २८८९

तृप्ति उपद्रव करती है।

—संपन्न व्यक्ति दूसरों के लिए संकट पैदा करता है।

—जिस व्यक्ति के पास जरूरत से अधिक होता है,उसे शैतानी सूझती है।

—अच्छा खाने से शरीर पुष्ट होता है,ताकत बढ़ती है,जिससे कलह करने की सूझती है।

**खाधां भागै भूख, दीठां भूख न जाय।** २८९०

खाने से भूख मिटती है, देखने से नहीं।

—पूर्ति होने पर ही तृप्ति होती है,देखने मात्र से कुछ नहीं होता।

—इच्छा पूरी होने से ही संतुष्टि होती है,उसकी चर्चा करने से नहीं।

—सुंदर स्त्री के सहवास से ही वासना शांत होती है,उसे देखने भर से नहीं।

**खाधानी ते बग पड़े ने मोटी-मोटी वात करें।**–भी.१६८ २८९१

खाने के तो लाले पड़ते हैं और बड़ी-बड़ी बातें बघारता है।

—आर्थिक स्थिति ठीक न होने पर भी जो बढ़-बढ़कर बातें बघारे।

—जो व्यक्ति अपनी परिस्थिति का मिथ्या प्रदर्शन करे।

**खाधा नै के खावै, पीधा नै के पीवै।** २८९२

खाये को क्या खाना, पीये को क्या पीना।

—एक बार जिस चीज को खा-पी लिया उसे बार-बार खाने-पीने का वह स्वाद नहीं आता।

—जिस बात का एक बार अनुभव कर लिया,उसका बार-बार क्या अनुभव करना।

—किसी की जूठन का क्या खाना! दूसरों की भोगी हुई स्त्री का क्या भोगना!

**खाधौ रे परड़ोटियौ के काळिंदर कठा सूं लावूं।** २८९३

खाया रे परड़ोटिया कि नाग कहाँ से लाऊँ।

परड़ोटियौ = परड़ = एक किस्म का छोटा सर्प।

काळिंदर = काला साँप,नाग। अत्यधिक जहरीला।

**संदर्भ-कथा :** एक किसान किसी बनिये के यहाँ ऋण लेने के लिए गया। गर्मी की ऋतु थी। अहाते में घुसते ही उसे परड़ ने डस लिया कि यों ही बहाना बनाकर वह जोर से चिल्लाया—उफ्फ ! मुझे तो परड़ खा गई। बनिया पास ही खड़ा था। उसने जवाब दिया कि वह नाग कहाँ से लाये—जो यहाँ उपलब्ध होगा, वही तो खाएगा। बनिये के कहने का आशय यह था कि वह किसी भी सूरत में पहले का ऋण चुकाये बिना और ऋण नहीं देगा।

—किसी के छिपे आशय को कोई भाँप जाय तब।

—जहाँ किसी की चालाकी की पार न पड़े तब।

—दूसरों के संकट का मखौल उड़ाने वाले व्यक्ति की परोक्ष भर्त्सना है।

**खा बांणिया गुळ थारौ इज है।** २८९४

खा बनिये गुड़ तेरा ही है।

**संदर्भ-कथा :** एक बनिये के घर से गुड़ चोरी करके चोर उसी के यहाँ कुछ दिन बाद वही गुड़ बेचने के लिए आया। चालाक बनिया चखने के बहाने बार-बार गुड़ खाने लगा। तब चोर ने कहा—मजे से खाओ, गुड़ तुम्हारा ही है।

—जो व्यक्ति अनजाने में स्वयं को हानि पहुँचाये।

**खाबौ खीर रौ अर वाबौ तीर रौ।** २८९५

खाना खीर का और चलाना तीर का।

—खाने में खीर अच्छी और चलाने में तीर अच्छा।

—निहायत सहज व सरल चीज का बखान करना पड़े तब इस तरह की लयात्मक उक्तियों का सृजन होता है।

**खाबौ सीरा रौ अर मिळबौ वीरा रौ।** २८९६

खाना हलुवे का और मिलना भाई का।

—खाने में हलुवा स्वादिष्ट है और मिलने में भाई का सम्मिलन आनंददायक है।

—भोजन में हलुवे के महत्त्व के प्रति इंगित है और रिश्ते में भाई के महत्त्व की ओर।

**खाय करै उपाय।** २८९७

खाना करे उपाय।

—पेट भरा होने से ही उपाय सूझते हैं। मतलब कि दिमाग काम करता है।

—खाने से देह संपुष्ट होती है और मनुष्य के सारे क्रिया-कलाप उसकी देह से ही संचालित होते हैं इसलिए शारीरिक शक्ति अनिवार्य है और वह खाने से बढ़ती है।

**खाय खपीड़ा तौ उडै झपीड़ा।** २८९८

करोगे उलटा आचार तो पड़ेंगे जूत पैजार।

—बुरे काम का बुरा ही परिणाम।

—जैसा काम वैसा ही इनाम।

**खायखूय खमड़ा मार।** २८९९

खा-पीकर जूत मारे।

—एहसान न मानकर जो व्यक्ति उलटी हानि पहुँचाये।

—कृतघ्न व्यक्ति के लिए।

—जो बदजात पति खा-पीकर पत्नी पर हाथ चलाये खासकर उसके लिए।

**खायग्या अर खाहरड़ा मारग्या।** २९००

खा गये और जूते मार गये।

—अपना काम बनाकर जो व्यक्ति बाद में बदनामी करे या नुकसान पहुँचाये।

—कृतघ्न व्यक्ति के लिए।

—जो व्यक्ति दूसरों को ठगकर अपना उल्लू सीधा करता रहे।

**खाय जांणै सो पचाय जांणै।** २९०१

जो खाना जानता है, वह पचाना भी जानता है।

—जो व्यक्ति हिसाब से खाना खाता है, वह सहज ही पचा पाता है।

—रिश्वत लेने वाला व्यक्ति उसे हजम करना भी जानता है।

—सोच-समझकर चलने वाले व्यक्ति के लिए।

—अत्यधिक होशियार व्यक्ति के लिए।

**खाय नै आडौ व्है जांणौ अर मार नै अदीठ व्है जांणौ।** २९०२

खाकर लेट जाना और मारकर अदीठ हो जाना।

—खाकर लेटने से स्वास्थ्य ठीक रहता है और मारकर भग जाने से शारीरिक हानि से बचाव हो जाता है। यह सरल-सा एक नीति वाक्य है। जैसा किसान का सरल जीवन है, वैसी उसकी नीति भी सरल है।

**खाय पचै सो गुणकारी।** २९०३

खाकर पचे वही गुणकारी।

—केवल खाने से कुछ नहीं होता, पचना भी जरूरी है।

—भोजन वही अच्छा जो सहज हजम हो।

—क्षमता के अनुसार काम करना ही श्रेयस्कर है।

**खाय-पीयनै खप्पर नीं फोड़णौ।** २९०४

खा-पीकर खप्पर नहीं फोड़ना चाहिए।

—किसी के घर खाना खाकर उसे क्षति नहीं पहुँचानी चाहिए या उसकी बदनामी नहीं करनी चाहिए।

—स्वार्थ-सिद्धि होते ही मुँह नहीं मोड़ना चाहिए।

**खाय-पीयनै माथै पांणी फेर दियौ।** २९०५

खा-पीकर ऊपर पानी फिरा दिया।

—बना बनाया काम बिगड़ जाय तब।

—रंग में भंग करने वाले व्यक्ति के लिए।

—गैर-जिम्मेदार व्यक्ति के लिए।

**खाय-पीयनै सो जांणौ, मार-कूटनै न्हाट जांणौ।** २९०६

खा-पीकर सो जाना, मार-पीटकर भग जाना।

—परिस्थिति के अनुकूल आचरण करना ही लाभ-दायक है।

—जैसा मौका हो, वैसा ही दाँव चलना चाहिए।

मि.क.सं.२९०२

**खाय-पीयर लारै पड़णौ।** २९०७

खा-पीकर पीछे पड़ना।

—जो व्यक्ति किसी का बुरा करने पर उतारू हो।

—किसी के पीछे हाथ-धोकर पड़ने वाले के लिए।

—हरदम बुरा चाहने वाले के लिए।

**खाय-पीयर हुवा सुखी, अेंठौ मांजतां बहू दुखी।** २९०८

खा-पीकर हुए सुखी, बासन माँजते बहू दुखी।

—बाकी घर वाले तो खा-पीकर फारिग हो जाते हैं और सारा काम बहू के गले पड़ जाता है।

—जिम्मेवार व्यक्ति ही आफत उठाता है और मौज करने वाले मौज करते हैं।

—समाज में दो तरह के तबके होते हैं—एक आराम-तलब और एक काम में खटने वाला।

**खायर नुगरौ व्हैगौ।** २९०९

खाकर कृतघ्न हो गया।

—मतलब पूरा होते ही जो व्यक्ति विमुख हो जाय।

—जो व्यक्ति उपकार का कभी एहसान न माने।

**खाय हंगाया कदै न धाया।** २९१०

खाकर हँगने जाय, वह कभी न अघाय।

—बार-बार शौच जाने वाले व्यक्ति की भूख नहीं मिटती।

—जिसकी पाचन-शक्ति ही खराब हो वह भोजन का आनंद नहीं ले सकता।

**खायां किसा खाडा पड़ै।** २९११

खाने से गड्ढे थोड़े ही पड़ते हैं।

—खाने से कुछ भी कमी नहीं पड़ती। कमाई न करने से कमी पड़ती है।

—खाने में कंजूसी करना कुछ भी माने नहीं रखता।

**खायां खाईजै, भर्‌यां भरीजै।** २९१२

खाने से खाया जाता है, भरने से भरा जाता है।

—खर्च करने से खर्च होता है, संचय करने से धन जुड़ता है।

—जो व्यक्ति जैसा काम करेगा, उसे वैसा ही परिणाम मिलेगा।

**खायां खूटै, खींच्या तूटै।** २९१३

खाने से कमी पड़ती है, खींचने सें टूटती है।

—कोई भी चीज निरंतर उपयोग से कम होती है और कोई बात अधिक तानने से टूटती है, जिस प्रकार ज्यादा खींचने से रबड़ टूटता है।

—खर्च के साथ-साथ आमदनी का भी ध्यान रखना चाहिए।

**खायां बिना रै जाय, पण कह्यां बिना नीं रहीजै।** २९१४

खाये बिना रह जाय, पर कहे बिना नहीं रहा जाता।

—बहुधा औरतों के लिए इस उक्ति का प्रयोग होता है कि वे बिना खाये रह सकती हैं, मगर बिना कहे नहीं रह सकतीं।

—औरतों के पेट में बात नहीं पचती, इसलिए विशेष भेद की बात उन्हें कभी बतानी नहीं चाहिए।

—सामाजिक प्राणी होने के नाते मनुष्य आपसी संपर्क व बातचीत किये बिना नहीं रह सकता। खाने की अनिवार्यता की अपेक्षा बोलने की मजबूरी बड़ी होती है।

**खायां भाखर निठै।** २९१५

खाने से पहाड़ निःशेष हो जाते हैं।

—बिना कुछ कमाई किये बैठे-बैठे खाने से कैसा भी खजाना आखिर खत्म होकर रहता है।

—निठल्ले व्यक्ति के लिए सीख।

**खाया गटका, आवै भटका।** २९१६

खाये गटके, आयें भटके।

—कभी किसी समय गुलछर्रे उड़ाने वाला व्यक्ति अर्थाभाव में पुरानी यादों को बिसुरता रहे तब।

—ऐयाशी के बाद जब दुर्दिन आते हैं तो गुजरा हुआ सुख अधिक कष्ट पहुँचाता है।

—अपव्ययी व्यक्ति आखिर दुख उठाता है।

**खाया जका नै मगरौ खाया, मगरा नै कुण खावै?** २९१७

खाया जिसे 'मगरे' ने खाया, 'मगरे' को कौन खाये?

मगरा = अरावली पर्वत से सटा हुआ इलाका। यहाँ के निवासी रावत-मेहरावत तथा मीणे खूब चोरियाँ और डाकाजनी करते थे। किसी को लूटा या नुकसान पहुँचाया तो उन्होंने पहुँचाया, भला उन्हें क्षति पहुँचाने वाला कौन? अर्थात् कोई नहीं।

—जो व्यक्ति हमेशा किसी का नुकसान करता रहे और स्वयं का कुछ भी न बिगड़ने दे।

—अत्यधिक धूर्त या दुष्ट व्यक्ति के लिए।

**खाया जित्ता चाया कोनीं।** २९१८

**खाया जितना चबाया नहीं।**

—कम चबाया हुआ भोजन कुछ मुश्किल से पचता है।

—सब तरफ चौकसी न रखने वाले व्यक्ति के लिए।

—जो व्यक्ति सलीके से काम करना न जाने।

—जो व्यक्ति होशियारी से रिश्वत न खाये और बदनाम जल्दी हो जाए।

**खाया, पीया खरचिया, दीन्हा सो ई दत्त।** २९१९
**जसवंत धर पोढ़ावतां माल पराये हत्थ॥**

खाया, पिया खर्च किया, दिया सो ही दत्त।
जसवंत धर पोढ़ते, माल पराये हत्थ॥

**संदर्भ-कथा:** जोधपुर के महाराजा जसवंतसिंह जी काफी गुणी और ज्ञानी थे। साथ-ही-साथ उन्हें आभूषणों का भी पूरा शौक था। नये-नये महँगे आभूषण बनवाते और पहिनते। अपने हाथ से दान-पुण्य करने में भी उनकी हार्दिक रुचि थी। किसी को मना करना तो वे जानते ही न थे। एक दिन उन्होंने परिजनों को एकत्रित करके पूछा, 'मरने के बाद मेरे शव से आभूषण उतारोगे तो नहीं? मैं साथ रखना चाहता हूँ।' सभी ने उनके सुझाव का पुरजोर समर्थन करते हुए कहा, 'खजाने में किस बात की कमी है। आपने खूब ही अर्जित किया और खूब ही पुण्य कमाया। आभूषण आप ही के तो हैं, जैसा चाहें करें।'

महाराजा बड़े चतुर थे। परिजनों की हामी सुनकर भी वे आश्वस्त नहीं हुए। कुछ दिन बाद श्वास चढ़ाकर वे समाधिस्थ हो गये। वे इस क्रिया में भी पूर्णतया पारंगत थे। दरबार में सर्वत्र कोहराम मच गया। निर्जीव शव को नीचे उतारा। काठ की तरह देह अकड़ गई थी। आत्मीयजनों ने पहिला काम यही किया कि उनके शव से सारे गहने उतार लिए। अँगूठी तक

नहीं छोड़ी । कोई घड़ी सवा-घड़ी बाद महाराजा जम्हाई लेकर उठ बैठे । आश्चर्य-चकित होकर पूछा, 'मुझे नीचे क्यूँ उतारा ?' परिजन क्या जवाब देते । चुपचाप सर झुकाए खड़े रहे । फिर दूसरा प्रश्न किया,'मेरे सब गहने क्या हुए ? किसने उतारे ?'

कौन क्या जवाब देता ? और कोई जवाब था भी नहीं । महाराजा के मुँह से हठात् यह दोहा छिटका पड़ा :

**खाया पीया खरचिया, दीन्हा सो ई दत्त ।**
**जसवंत धर पोढ़ावतां, माल पराये हत्थ ॥**

फिर हाथ का इशारा करते कहा,'तुम सब जाओ,मुझे कुछ देर शांति से सोचने दो ।'

और अंत में उनके सोचने का यह परिणाम हुआ कि वे पहिले से भी ज्यादा दान-पुण्य करने लगे ।

**खाये जो जी खाये नी तो खाये हाये ?**– भी.१६३ २९२०
खाया भोजन पचता नही है तो खाते ही क्यों हो ?

—जब तक खाया भोजन पचे नहीं, दुबारा भोजन नहीं करना चाहिए । यह स्वास्थ्य का मूलभूत सिद्धांत है ।

—खाने के अलावा धन भी उतना ही अर्जित करना चाहिए जो पच जाय । संचित धन का अहंकार अपच ही की निशानी है ।

**खाये ते डाकण नीं खाये ते डाकण ।**– भी.१६४ २९२१
खाये तो डायन और न खाये तो भी डायन ।

—कलाली दूध भी बेचे तो लोग सोचते हैं कि वह शराब बेच रही है ।

—चोर चोरी न करे तो भी उसे चोर ही समझा जाता है ।

—बुरा व्यक्ति बुराई न भी करे तो उसे बुरा ही समझा जाता है ।

—एक बार जो बदनामी फैल जाती है,वह आसानी से मिटती नहीं ।

**खायौ ई को खूटै नीं ।** २९२२
खाने से भी नहीं खत्म होगा ।

—इस उक्ति के दो अर्थ हैं—जिस व्यक्ति के पास इतनी पूँजी हो कि बैठे-बैठे खाने पर कभी समाप्त नहीं होगी। दूसरा अर्थ है—उल्टे-सीधे काम करने वाले के लिए व्यंग्य में कहा जाता है कि कभी-न-कभी उस में ऐसी बीतेगी, जिस से छुटकारा पाना मुश्किल हो जाएगा।

—अनर्थ करने वाले को चुनौती।

पाठा : खायौ ई को खाईजै नीं। खाने से भी खाया नहीं जाएगा।

**खायौ-पीयौ अेक नांव, मार्‌यौ-कूट्यौ अेक नांव।** २९२३

खाया-पीया एक नाम, मारा-पीटा एक नाम।

—खिलाने-पिलाने व मारने में कोई जोड़-बाकी नहीं होती। दोनों की अलग-अलग प्रतिक्रिया होती है।

—भलाई की जगह भलाई और झगड़े की जगह झगड़ा।

पाठा : खाधौ-पीधौ अेक नांव, मार्‌यौ-कूट्यौ अेक नांव।

**खार उगटै जठै साख ई को ऊगै नीं।** २९२४

क्षार पैदा होने वाली जमीन पर फसल नहीं उगती।

साख = फसल, रिश्ता।

—कड़वापन हमेशा घातक होता है।

—द्‌वेष पैदा होने पर रिश्ते का भी ध्यान नहीं रहता।

**खारड़ा मां कांटौ, भील मां आंटौ हदा रै।**– भी.१५८ २९२५

जूते में काँटा और भील में बैर-भाव सदा रहता है।

—भील अमूमन पहाड़ी क्षेत्र में रहते हैं या जंगलों में। चलते समय ठौर-ठौर जूतों में काँटे चिपक जाते हैं। भीलों के पाँव चुभन के अभ्यस्त हो जाते हैं। पर उनके हृदय से बैर का बदला लेने की चुभन कभी मिटती नहीं। जो भील ऐसा न कर सके, उसके जीवन को ही धिक्कार है।

**खार बिना कांम रौ नीं।** २९२६

क्षार बिना काम का नहीं।

—कोई भी व्यक्ति क्रोध व जोश के बिना व्यर्थ है।

—उचित जगह पर गुस्सा, द्वेष व घृणा इत्यादि आवश्यक है।

**खारा खावै जकौ मीठा ई खासी।** २९२७

कड़वा खाने वाला मीठा भी खाएगा।

—जी तोड़ मेहनत करने वाला बाद में सुख पाता है।

—शुरुआत में दुख उठाने वाला समय पर सुख भी पाता है।

—सुख-दुख का जोड़ा है।

**खारा बोली मावड़ी नै मीठा बोला लोग।** २९२८

कड़वे बैन माँ के और मीठे बोल जहान के।

—जो अपने होते हैं वे वक्त-जरूरत डाट-फटकार करते हैं और पराये लोग सराहना करते हैं।

—चुभने वाली बात तो फकत शुभचिंतक ही कह सकते हैं, दूसरे लोग तो केवल सुहावनी बातें ही करते हैं, चाहे वे गलत रास्ते पर ले जाने वाली ही क्यों न हों।

—स्वजन इसलिए बुरा-भला कहते हैं कि उनका दिल दुखता है और पराये लोग तो तमाशबीन होते हैं—किसी की भलाई-बुराई से सर्वथा उदासीन।

**खारा समंद में मीठी बेरी।** २९२९

कड़वे समुद्र में मीठी कुईं।

—किसी दुष्ट परिवार में भली संतान की सज्जनता देखकर।

—बदनाम व्यक्ति की नेक संतान के लिए।

**खारी बेल री तूमड़ी उण सूं ईं खारी।** २९३०

कड़वी बेल की तुंबी उससे भी कड़वी।

—किसी दुष्ट पिता की संतान जब उससे भी कुछ बढ़कर कुटिल हो।

—वंशानुगत-प्रभाव अवश्यंभावी है।

**खारी रै चौकी लागै, साकर सूनी जाय।** २९३१

नमक के चौकी लगे, शक्कर सूनी जाय।

—अंग्रेजों के राज्य में नमक बनाने पर बंदिश तो थी ही पर तैयार नमक के आयात-निर्यात पर चौकी लगती थी, उसी संदर्भ में।

—सस्ती चीज पर निगरानी और महँगी वस्तु पर चौकसी न रखी जाय तब।

—अव्यवस्था के प्रति कटाक्ष।

—दुष्ट व्यक्ति पर नियंत्रण और सज्जन लोगों के लिए स्वतंत्रता ही अपेक्षित है।

**खाल जणाज ना हेवा।**– भी.१६५ २९३२

चमड़ी उसीकी सीवन।

—जो व्यक्ति सूई की नोक से प्रिय-जन की चमड़ी वेधता रहे जैसे कोई कपड़ा हो।

—किसी का बनकर उसीको सताना उचित नहीं।

**खालड़ा तौ खटीक नै ई सोहै।** २९३३

चमड़ा तो खटीक को ही सुहाता है।

—बुरी चीज बुरे व्यक्ति को ही शोभा देती है।

—योग्यता के अनुरूप कार्य संगत लगता है।

—जिस प्रकार नशाखोर नशीली वस्तु के लिए तरसता रहता है,उसी प्रकार बुरा व्यक्ति बुराई की ओर आकर्षित होता है।

**खालड़ा नी लाडी खाअेड़ा नी पूजा।**– भी.१६६ २९३४

चमड़े की देवी को जूते की पूजा।

आ.दे.क.सं.२९३५

**खालड़ा री देवी रै खाहरड़ा री पूजा।** २९३५

चमड़े की देवी को जूते की पूजा।

—जो व्यक्ति जिस योग्य हो उसके साथ वैसा ही व्यवहार होना चाहिए।

—दुष्ट व्यक्ति के साथ सद्व्यवहार उचित नहीं।

**खाल पराई लाकड़ी, जांणै फूस में जाय।** २९३६

दूसरों की खाल में लकड़ी भूसे की तरह घुसती है।

—अपनी छोटी-सी पीड़ा भी मनुष्य को बहुत अधिक महसूस होती है तथा इसके विपरीत दूसरों का बेइंतहा दर्द भी मखौल-सा लगता है।

—मनुष्य दूसरों के दुख-दर्द के प्रति रंचमात्र भी संवेदनशील नहीं होता।

**खाल में खुस्याळ है।** २९३७

खाल में प्रसन्न है ।

—अपनी योनि के अलावा किसी प्राणी को दूसरी अनुभूति ही कहाँ होती है ! इस कारण वह अपने ही हाल में खोया रहता है ।

—जो व्यक्ति अपनी ही धुन में मस्त हो ।

**खाल रा खुलिया करावूं तौ ई थोड़ा है।** २९३८

खाल के जूते कराऊँ तो भी कम है ।

—दुख के समय अत्यधिक मदद करने वाले व्यक्ति के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने पर इस उक्ति का प्रयोग होता है ।

— कृतज्ञता प्रकट करने की एक अभिव्यक्ति विशेष ।

—जिस व्यक्ति के एहसानों का बोझ असह्य हो ।

**खाला खसम कराय दै के म्हैं तौ खुद हेरती फिरूं।** २९३९

अरी ख़ाला, कोई खसम तो बता कि मैं तो ख़ुद तलाश मे हूँ ।

—किसी असमर्थ व्यक्ति से सहयोग की आशा रखना व्यर्थ है ।

— अक्षम से याचना हमेशा बेकार जाती है ।

—जो व्यक्ति स्वय का भला नहीं कर सकता, वह दूसरों का क्या भला करेगा ?

**खाली आवै खाली सिधावै।** २९४०

खाली हाथ आना और खाली हाथ जाना ।

—जन्म के समय न मनुष्य कुछ भी साथ लाता है और न मृत्यु के समय कुछ भी साथ लेकर जाता है ।

—मानवीय प्रपच की असारता कि वह मरते समय कुछ भी साथ नहीं ले जा सकता ।

—सचय की भावना उचित नहीं है ।

**खाली ऊखळ चोट दौरी बाजै।** २९४१

खाली ओखली में चोट मुश्किल से लगती है ।

—व्यर्थ का परिश्रम कोई भी नहीं करना चाहता ।

—झूठी शान अधिक नहीं चलती।

—गरीबी में न आडंबर की क्षमता होती है और न स्वाँग ही।

**खाली तजारा माजे चोकी।**– भी.१६७ २९४२

खाली छिलकों पर चौकी।

—अकिंचन वस्तु पर सख्त पहरा रखना मूर्खता है।

—इसका दूसरा छिपा अर्थ यह भी है कि नगण्य वस्तुओं पर इसलिए कड़ी निगरानी है कि महँगी चीजों की लूट मच रही है। पहरे के नाम से लोगों को भ्रमित किया जा रहा है।

**खाली बासण खड़बड़ै।** २९४३

खाली बासन टकराते हैं।

—शामिल रखे खाली बरतन टकराते ही हैं। साथ रहने वालों में मनमुटाव होता रहता है।

—निठल्ला व्यक्ति खामखाह बतियाता है, कलह करता है।

—अयोग्य या गुणहीन व्यक्ति बेकार डींग हाँकता है।

**खाली बैठां उतपात सूझै।** २९४४

खाली बैठने पर उत्पात सूझता है।

—निठल्लापन कलह का मूल।

—परिश्रमी व्यक्ति को झगड़े-फसाद का समय ही नहीं मिलता।

**खाली भंवारौ पांनां सूं नीं भरीजै।** २९४५

खाली तहखाना पत्तों से नहीं भरता।

—तहखाना पत्तों की बजाय ठोस वस्तुओं से भरा जाता है। उसके लिए अथक परिश्रम और तेज बुद्धि की जरूरत है।

—बड़े काम संपूर्ण करने के लिए जब उचित प्रयास नहीं होते तब यह उक्ति काम में ली जाती है।

**खाली मालण सूं ईं लड़ै कीणा सांम्ही तौ जोय।** २९४६

केवल मालन से ही झगड़ता है, अपने अनाज को भी देख।

कीणौ = प्रायः देहात में शाक-तरकारी आदि खरीदने के बदले दिया जाने वाला अनाज।

—अपने सड़े-गले तथा मिलावटी अनाज का कुछ भी खयाल न करके केवल मालिन से सब्जी के लिए तकरार करने वाले पर व्यंग्य।

—जो व्यक्ति दूसरों से कलह करते समय अपने अवगुणों को भूल जाए।

—अपनी बुराई को अनदेखा करके दूसरों से झगड़ना उचित नहीं।

—दूसरे की निंदा करने से पहिले हर व्यक्ति को गिरेबान के भीतर झाँक लेना चाहिए।

—बुरा जो देखन मैं चला, मुझ-सा बुरा न कोय।

**खाली लल्लौ ई सीख्यौ, दद्दौ कोनीं सीख्यौ।** २९४७

केवल लल्ला ही सीखा है, दद्दा नहीं सीखा।

—जो व्यक्ति लेना-ही-लेना जाने, देना नहीं, उसके लिए।

—मुफ्तखोर के प्रति कटाक्ष।

**खाली सुळिया दळै।** २९४८

खाली सड़ा हुआ अनाज दलता है।

—घुन लगे अनाज को दलना व्यर्थ है।

—खामखाह की बकवास करने वाले व्यक्ति के लिए।

—निरर्थक बतियाने वाले व्यक्ति की बात पर कोई कान नहीं देता।

दे.क.सं. २७२२

**खाली हांडी ताट मेलै।** २९४९

खाली हँडिया तड़क जाती है।

—जब हँडिया में कुछ भरा न हो और उसे चूल्हे पर चढ़ाया जाय तो उसे उतारकर नीचे धरते ही वह बिखर जाती है।

—लाचार व्यक्ति को सताने का भी यही परिणाम होता है।

**खाली हाथ मूंडा सांम्ही नीं जावै।** २९५०

खाली हाथ मुँह की तरफ नहीं जाता।

—स्वार्थ के बिना कोई किसी का काम नहीं करता।

—स्वार्थ की यथोचित पूर्ति होने पर ही मन व बुद्धि में स्फूर्ति का संचार होता है।

—स्वार्थ ही सब क्रिया-कलापों का संचालन करता है।

—मुफ्त में कोई किसी की बेगार नहीं करना चाहता।

—लोभ ही हर कार्य को गति देता है।

—दूसरा अर्थ और भी कि निर्धन व्यक्ति खर्च करने के लिए सक्षम नहीं होता।

**खाळी खटीक सूं धीजै।**—व.१३ २९५१

बकरी खटीक से ही बहलती है।

खाळी = छाळी = बकरी। खटीक = चमड़ा बेचने वाली एक जाति विशेष।

—कुटिल व्यक्ति हर किसी को सहज ही बरगला लेता है।

—बकरी की तरह नासमझ व्यक्ति बुरे के फंदे में जल्दी फँसता है।

—जिस व्यक्ति को अपने हितैषियों की पहिचान न हो और जो दुर्जन के झाँसे में जल्दी आ जाता हो।

**खाळू पाड्यौ नै खेल विखेरीयौ।**—व.३१ २९५२

नायक पड़ा और खेल बिखरा।

खाळू = कबड्डी के खेल का प्रमुख नायक। उसके हारते ही सारा खेल बिखर जाता है। उसी तरह युद्ध में सेनापति के मरने पर पराजय हो जाती है।

—परिवार, खेल, युद्ध में प्रमुख-नायक दब जाते हैं तो वापस ऊपर उठना मुश्किल है।

—सब का प्रयत्न होना चाहिए कि प्रमुख की रक्षा करें।

**खावण नै खेलरौ ई कोनीं अर ठकराई फोड़ै।** २९५३

खाने के लिए खेलरा भी नहीं और ठकुराई बघारे।

खेलरौ = बरसाती ककड़ी काटकर सुखाये गये टुकड़े जिसे गरीब किसान अकसर साग बनाकर खाते हैं।

—जो निर्धन व्यक्ति खामखाह का बड़प्पन दरसाये।

—जो अभाव-ग्रस्त आदमी थोथी शान बघारे।

**खावण नै खोखा अर पैरण नै चोखा।** २९५४

खाने को खोखे और पहिनने को चोखे।

खोखौ = शमी वृक्ष की सूखी फली जो खाई भी जाती है। अकिंचन या तुच्छ खाद्य-सामग्री, जिससे गरीबों के बच्चों का मन बहल जाता है।

—जिस व्यक्ति को खाने के लाले पड़ें और वह कपड़े अच्छे पहिने, उस पर कटाक्ष।

—अपनी हैसियत के परे झूठी शान बघारने वाले के लिए।

**खावण नै खोखा ई कोनीं अर पीढ़ा माथै पुरसौ।** २९५५

खाने के लिए खोखे ही नहीं और पाटे पर परोसो।

—अपनी औकात को भूलकर जो व्यक्ति खामखाह अधिकार जतलाये।

—अपनी हैसियत से बढ़-चढ़कर जो व्यक्ति थोथा रुतबा गाँठे।

**खावण नै तिणकलौ ई कोनीं अर नांव लखपत राय।** २९५६

खाने को तिनका भी नहीं और नाम लखपत राय।

—नाम के विपरीत लक्षण।

**खावण-पीवण नै खेमली, नाचण नै नगराज।** २९५७

खाने-पीने को खेमली, नाचने को नगराज।

खेमली = किसी चरित्र-हीन स्त्री का नाम। नगराज = किसी विशिष्ट व्यक्ति का नाम।

—जो विवेकहीन व्यक्ति हरदम काम में आने वालों को भूलकर खामखाह के आदमियों की आवभगत करे।

—जिस व्यक्ति को भले-बुरे मित्र की पहिचान न हो कि कौन उसका हितैषी है और कौन उसकी उपेक्षा करने वाला है।

—मौज करे कोई, मेहनत करे कोई।

**खावण-पीवण नै दीवाळी, कुटीजण नै छाज।** २९५८

खाने-पीने को दीवाली, पिटने के लिए सूप।

—दीवाली के पहले धन-तेरस को जब लक्ष्मी की पूजा होती है, तब सूप पीटकर बजाया जाता है, इस विश्वास पर कि इससे लक्ष्मी आएगी! फिर दीवाली के मांगलिक त्योहार पर मिष्ठान्न व अन्य स्वादिष्ट भोजन का ठाट रहता है। इसी संदर्भ में यह कहावत प्रयुक्त होती है।

**खावण में आगै, कांम सूं भागै।** २९५९

खाने में आगे, काम से भागे।

—जो व्यक्ति खाने-पीने के लिए आतुर हो पर काम करने की खातिर जी चुराये।

—कामचोर पेटू आदमी के लिए।

**खावण में चटणी, सेजां में नटणी।** २९६०

खाने में चटनी, सेज पर नटनी।

नटणी = वेश्यावृत्ति से कमाई करने वाली एक जाति विशेष की स्त्री।

—जिस प्रकार खाने में चटनी की लज्जत ही अलग होती है, उसी प्रकार बिस्तर पर नटनी के साथ काम-क्रीड़ाओं का आनंद ही निराला होता है।

—चटनी और नटनी के स्वाद का बखान।

पाठा: **भोजन में चटणी, सेजां में नटणी।**

**खावण रा सांसा, पांवणा रा वासा।** २९६१

खाने-पीने की तंगी, पाहुनों की रंगारंगी।

—जो व्यक्ति खाने-पीने की कमी के बावजूद मेहमानों की अगुवाई करे उसके प्रति व्यंग्य।

—अव्यावहारिक व्यक्ति के लिए परिहास में।

**खावणौ नीं तौ ढुळाय दैणौ।** २९६२

खाना नहीं तो गिरा देना।

—स्वयं का लाभ न होता देख दूसरों को भी उस लाभ से महरूम रखने वाला।

—समाज-विरोधी व्यक्ति की प्रवृत्ति ऐसी ही होती है कि वह परोक्ष रूप से भी किसी का हित बर्दाश्त नहीं कर सकता।

**खावतां-पीवतां पेट दूखै।** २९६३

खाते-पीते पेट दुखता है।

—जो व्यक्ति सुविधाओं के रहते भी उनसे विमुख होना चाहे।

—जो व्यक्ति स्वयं अपने हाथों अपना अहित करे।

**खावता जावै अर भांडता जावै।** २९६४

खाते जाएँ और निंदा करते जाएँ।

—उस कृतघ्न व्यक्ति पर कटाक्ष जो सहयोग लेने के बावजूद बराबर बुरा करता रहे।

—उस एहसान-फरामोश का चरित्र जो निःसंकोच सहयोग ले और बेहिचक बुराई करे।

**खावती रा गाल अर सांपड़ती रा बाळ छांना नीं रैवै।** २९६५

खाती हुई के गाल और नहाती हुई के बाल छिपे नहीं रहते।

—जो व्यक्ति व्यर्थ किसी बात को गुप्त रखने की चेष्टा करे। उसके लिए...।

—जिस बात को छिपाकर नहीं रखा जा सकता, उसे छिपाने की चेष्टा करना व्यर्थ है।

**खावतौ-पीवतौ भांबियां री हांड्यां रांचै।** २९६६

खाता-पीता भाँबियों की हँड़िया के लिए ललचाये।

—जो व्यक्ति घर के अच्छे भोजन से संतुष्ट न होकर दूसरों के घर खाने की खातिर भटकता फिरे। निम्न-कोटि के चटोरे की प्रवृत्ति का चित्रण।

—सुंदर पत्नी के बावजूद जो व्यक्ति इधर-उधर भद्दी जगह दुराचार की नीयत रखे।

**खावतौ-पीवतौ मरै, जिणरौ कोई कांई करै!** २९६७

खाता-पीता मरे, उसका कोई क्या करे!

—साधन होते हुए भी जो व्यक्ति कष्ट उठाये उसका कोई क्या कर सकता है!

—जिस अभागे व्यक्ति का खुशहाली के बीच भी रोना-धोना न मिटे।

**खावा नी वेळा अग्गो, काम नीं वेळां पाचो।**–भी.१६९ २९६८

खाने के समय आगे और काम के समय पीछे।

—जो अकर्मण्य व्यक्ति मौज-मस्ती व उत्सव का मौका कभी नहीं चूके, उस पर कटाक्ष।

—जो आलसी व्यक्ति काम से घबराये और खाने में आगे, उसका उपहास इस उक्ति में है।

**खावै आंबा तौ हुय जावै लांबा।** २९६९

खाये आम तो डूब जाये काम।

—यों आम खाना बदफैली की बात नहीं है, पर अभावग्रस्त व्यक्ति के लिए वह भी फिजूल-खर्ची में शुमार होता है। इस उक्ति का सीधा-सादा अर्थ यही है कि जो व्यक्ति अपनी हैसियत से अधिक खर्च करता है, उसकी दुर्दशा निश्चित है।

—अपव्ययी व्यक्ति हर सूरत में आखिर कष्ट उठाता ही है। तुकबंदी का मोह।

**खावै-खरचै सो आपरौ।** २९७०

खाये-खर्चे सो अपना।

—जो खा पी लिया वही अपना है, बाकी कुछ भी साथ नहीं चलता।

—जीवन में सुख भोगना है जितना भोग लो, मरने पर सब संचित माया यहीं धरी रह जाती है। किसी बात की चिंता किये बिना मौज-मस्ती से जीवन बिताने वालों का चार्वाक-दर्शन।

**पाठा : खावैं-पीवैं सो आपरौ।**

**खावै गधौ अर डंडीजै कूंभार।** २९७१

खाये गधा और दंडित हो कुम्हार।

—अपराध करे कोई और दंड पाये कोई।

—जो जिम्मेवार होता है, उसे ही खमियाजा भुगतना पड़ता है।

**खावै जकी थाळी में हंगै।** २९७२

खाये उसी थाली में हॅगता है।

—उपकार करने वाले पर जो व्यक्ति उलटा लांछन लागये।

—कृतघ्न व्यक्ति का स्वभाव ऐसा ही दूषित होता है कि वह भलाई करने वाले की ही निंदा करता है।

**खावै जठै ई फोड़ै।** २९७३

खाये वही फोड़ता हैं।

—जो व्यक्ति भला करने वाले को ही नुकसान पहुँचाये। कृतघ्न व्यक्ति पर कटाक्ष।

मि.क.सं. २९७२

**पाठा : खावैं जिणरी ई फोड़ै।** खाये उसी की फोड़ता है।

**खावैं जकी हांडी में ई तीणौ करै।** खाये उसी हँड़िया में छेद करता है।

**खावै जिणरी गावै।** २९७४

खाये जिसका गाये।

—पालन-पोषण करने वाले का यशगान करना पड़ता है।

—सहयोग करने वाले का हर कोई बखान करता है।

पाठा : **खावै जका रौ बजावै** । खाये जिसका बजाये ।

**खावै जित्ती ई भूख अर सोवै जित्ती ई नींद ।** २९७५

खाये जितनी ही भूख और सोये जितनी ही नींद ।

—किसी काम की सीमा मनुष्य की तृष्णा या लालसा पर निर्भर करती है ।

—संतोष के अलावा मनुष्य की आकांक्षाओं का कोई अंत नहीं ।

**खावै तौ ई डाकण, नीं खावै तौ ई डाकण ।** २९७६

खाये तब भी डायन, न खाये तब भी डायन ।

—एक बार बदनामी होने पर डायन न खाये तब भी उसका लांछन मिट नहीं सकता ।

—सामाजिक प्रतिष्ठा-अप्रतिष्ठा के अनुरूप ही समाज में चर्चा होती है ।

**खावै-पीवै उण नै भगवांन देवै ।** २९७७

खाये-पीये उसे भगवान देता है ।

—खुले हाथ खर्च करने वाले को भगवान भी दिल खोलकर देता है ।

—खर्च के अनुरूप आमदनी का जुगाड़ हो ही जाता है । कंजूसी की प्रताड़ना ।

मि.क.सं.२७७०

**खावै पूण, जीवै दूण ।** २९७८

खाये पौन, जीये दून ।

—कम खाने से स्वास्थ्य बेहतर रहता है । अधिक खाना अहितकर है ।

—लालसाएँ बढ़ाने की अपेक्षा संतोषी अधिक सुखी एवं स्वस्थ रहता है । ऐसा अर्थ संकेत भी इस उक्ति में है ।

**खावै पूत, लड़ै भतीजा ।** २९७९

खाये पूत, लड़े भतीजे ।

—उत्तराधिकार के लिए तो पुत्र और लड़ने के लिए भतीजे । जो व्यक्ति अनुचित पक्षपात करे उसके लिए ।

—स्वार्थ-परक झूठी आत्मीयता दिखाने वाले पर कटाक्ष ।

**खावै भीम, हंगै सकूनी।** २९८०

खाये भीम हँगे शकुनि।

—शकुनि दुर्योधन का मामा था। भानजे की देखरेख व पांडवों से द्वेष रखता था।

—भीम खाने का बड़ा शौकीन था और उसे पचता भी खूब था। वह खाने का आनंद लेता था। और शकुनि भीम की बेइंतहा खुराक व उसकी मस्ती देखकर जलता था। उसके पेट में खलबली मच जाती थी। बार-बार हाजत होती रहती थी। मतलब कि मौज तो मनाये भीम और तकलीफ उठाये शकुनि।

—जिस व्यक्ति की मौज-मस्ती के लिए किसी दूसरे को तकलीफ उठानी पड़े तब।

**खावै मांटी रौ अर गीत गावै वीरै रा।** २९८१

खाये खसम का और गीत गाये भाई का।

—खाये किसी का और गुणगान करे किसी का।

—जिस नासमझ व्यक्ति को कृतज्ञता प्रकट करने का ही सलीका न हो।

—जो पत्नी मायके वालों की हरदम प्रशंसा करती रहे।

**खावै मूंडा नै कूटीजै ढूंढा।** २९८२

खाये मुँह और पिटे नितंब।

—जानवर किसी दूसरे के खेत में मुँह डालते हैं तो पीठ या पसलियों पर मार पड़ती है।

—कसूर करे कोई और मार खाये कोई। जहाँ न्याय मिलने की कतई संभावना न हो।

**खावै मूंडौ पचावै पेट, बिगड़ै बहू अर लाजै जेठ।** २९८३

खाये मुँह पचाये पेट, बिगड़े बहू लजाये जेठ।

—किसी एक की जिम्मेवारी दूसरे पर आ पड़े तब।

—घर की मर्यादा का ध्यान बड़े व्यक्तियों को ही रखना पड़ता है।

**खावै मूंडौ लाजै आंख।** २९८४

खाये मुँह और लजाये आँख।

—किसी के यहाँ भोजन करने पर मुँह की बजाय आँखों को एहसान की खातिर झुकना पड़ता है।

—जिसकी जैसी समझ होती है, वह वैसी ही जिम्मेवारी महसूस करता है।

—समझदार व्यक्ति पर ही शिष्टाचार निभाने का बंधन रहता है।

**खावै सूर कुटीजै पाडा।** २९८५

खायें सूअर और पिटें पाड़े।

—अराजक राज्य-व्यवस्था की न्याय-प्रणाली पर कटाक्ष।

—किसी बड़े व्यक्ति का कसूर गरीब के मत्थे पड़े तब।

—दुष्कर्म करे कोई, सजा पाये कोई।

**खावौ तिंवार, चालौ बवार।** २९८६

खाओ त्योहार, चलो व्यवहार।

—अच्छा खाना तो भले ही त्योहार पर खाया जाय पर अच्छा व्यवहार तो हर वक्त हर किसी के साथ रखना चाहिए। सद्‌व्यवहार की सीख।

**खावौ बेटा घी अर खांड, रोसी बोहरौ अर बोहरा री रांड।** २९८७

खाओ बेटा घी और खाँड, रोएगा बोहरा व उसकी राँड।

—कर्जा करो और मौज मनाओ, बोहरा-बोहरी खूब आँसू बहाओ।

—लोगों से उधार या ऋण लेकर गुलछर्रे उड़ाने वाले पर कटाक्ष।

मि.क.सं.१८१९, २८५०

**खावौ मुंडे बारै-बारै।** २९८८

खाओ मुंडे बाहर-बाहर।

—दूसरों के सहारे मौज करने वाला परजीवी।

—अपना घर बचाकर दूसरों के यहाँ ऐश करने वाले के लिए।

**खासी जकौ तौ बेटौ बणनै खासी, बाप बणनै को खासी नीं।** २९८९

खाएगा तो बेटा बनकर, बाप बनकर नहीं खा सकता।

—पुत्र ही पिता की संपत्ति का उत्तराधिकारी होता है। इस कारण कोई व्यक्ति पुत्रवत् बनकर तो किसी से फायदा उठा सकता है, पर धौंस जमाकर नहीं।

—विनम्रता से स्वार्थ-सिद्‌धि हो सकती है, हेकड़ी से नहीं।

**खासौ भरम हौ।** २९९०

काफी भ्रम था।

—जिस बड़े व्यक्ति की कलई खुल जाय तब।

—अनुमान और वास्तविकता का मेल न बैठे तब।

**खासौ भरोसौ हौ।** २९९१

काफी भरोसा था।

—किसी पर अटूट विश्वास हो और वह अचीता टूट जाय तब।

—जब कोई विश्वसनीय व्यक्ति सहसा विमुख हो जाय तब।

**खाहड़ै कना सूं पग कुण बढ़ावै ?** २९९२

जूते से पाँव कौन कटाये ?

—कोई भला आदमी फायदा उठाये तो कोई बात नहीं, पर किसी अधम व्यक्ति के दवारा कोई क्यों हानि उठाये ?

—हीन व्यक्ति को दूर रखना ही बेहतर है, उसे मुँह लगाना ठीक नहीं।

—आदमी को अच्छी तरह पहचानने के बाद ही उसे सहयोग देना चाहिए, पहले नहीं।

**खाहड़ै सूं वढ़्योड़ा रौ औखद खाहड़ा रौ मलम।** २९९३

जूते से कटे हुए की औषधि जूते का मरहम।

—जैसी पीड़ा, वैसी दवा। जैसे को तैसा।

—नीच व्यक्ति उपदेशों से नहीं सुधरता, बल्कि माकूल दंड ही उसका यथोचित उपचार है।

# खिं - ख्या

**खिंडियोड़ा दांणा चुग्यां कीं सांधौ लागै नीं।** २९९४

बिखरे हुए दाने बीनने से कुछ गर्ज नहीं सरती ।

—यथायोग्य परिश्रम से ही वांछित फल मिलता है । व्यर्थ की मेहनत से पार नहीं पड़ता ।

—नगण्य काम से बड़ी सिद्धि हासिल नहीं हो सकती ।

—पर्याप्त साधन व यथोचित मेहनत से भरी-पूरी फसल हाथ लगती है ।

**खिजूर खाय सो झाड़ चढ़ै।** २९९५

खजूर खाये सो पेड़ चढ़े ।

—जिसे खजूर खाना हो वह उतनी ऊँचाई पर चढ़ने की जोखिम उठाये, तभी उसकी इच्छा पूरी हो सकती है अन्यथा नहीं ।

—जिसे लोभ हो वह खतरा मोल ले ।

**खिजूर सूं हेटै पड़्यां कांई बंचैला के गरुड़-पुरांण बंचैला।** २९९६

खजूर से नीचे पड़ने पर क्या बचेगा कि गरुड़ पुराण बँचेगा ।

—हिंदू प्रथा के अनुसार मृत्यु के बाद गरुड़-पुराण का पाठ होता है । खजूर की ऊँचाई से गिरने के बाद निश्चित रूप से मृत्यु है । और मृत्यु के बाद तो गरुड़-पुराण ही बाँचा जाएगा ।

—कार्य के अनुसार ही उसका परिणाम होता है ।

**खिणतां-खिणतां जलम गमायौ, बाबौजी उखरड़ौ लगायौ।** २९९७

खनते-खनते जन्म गँवाया, बाबाजी ने घूरा लगाया ।

—जो व्यक्ति सारी उम्र प्रयास करे और जिसका नतीजा कुछ भी नहीं निकले ।

—जिस काम का कोई फल हाथ न आये और जिसके लिए तमाम उम्र खो दी हो ।

—व्यर्थ जीवन गँवाने वाले के लिए ।

**खिणसी सो पड़सी ।** २९९८

खोदेगा वह गिरेगा ।

—जो दूसरों के लिए गड्ढा खोदेगा, वही उसमें गिरेगा ।

—दुष्कर्म का बुरा फल मिलकर ही रहता है ।

—जो जैसा करेगा, वैसा फल पाएगा ।

पाठा : **खिणै जकौ पड़ै** । खोदेगा वही गिरेगा ।

मि.क.सं.२८७०

**खिण्यौ डूंगर निकळ्यौ ऊंदर ।** २९९९

खोदा पहाड़, निकली चुहिया ।

—बहुत बड़े परिश्रम का अकिंचन फल हाथ लगे तब ।

—लंबा-चौड़ा आयोजन एकदम व्यर्थ हो जाय तब ।

पाठा : **खोद्यौ डूंगर काढ़्यौ ऊंदर** । खोदा पहाड़, निकला चूहा ।

**खिरी काकड़ी कांनौ खावै, मोर कुटावण मुकनौ जावै ।** ३०००

पकी हुई ककड़ी कन्हैया खाये, मार खाने मुकना जाये ।

—चोरी करके लाभ कोई उठाये और बदले में सजा दूसरा ही पाये ।

—दूसरे की गलती का खमियाजा किसी और को भरना पड़े तब ।

**खिलकां चढ़योड़ी घणा ठीं-ठीं मतकर, पेट दूखैला तद रोवैला ।** ३००१

अलमस्ती में चढ़ी हुई ज्यादा ठिन-ठिन मतकर, पेट दुखेगा तब रोएगी ।

—जवानी में मदहोश अल्हड़ लड़की को चेतावनी कि अभी तो मौज कर रही है जब गर्भ के कारण पेट दुखेगा तब पता चलेगा ।

—हर व्यक्ति को संयम से काम करना चाहिए ।

**खिसियानी मिनकी थांभौ लबूरै ।** ३००२

खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे ।

—पंजों में फँसा शिकार छूट जाए तो बिल्ली खीज के मारे खंभा नोचने लगती है, जैसे नाखून तेज कर रही हो ।

—आदमी को सफलता मिलते-मिलते रह जाय तो वह खिसियाकर बाल नोचने लगता है ।

**खींचौ मत कबांण, छोड़ौ मत जबांन ।** ३००३

खींचिए न कमान, छोड़िए न जबान ।

—कमान से छूटा तीर व जीभ से निकला बोल वापस लौटाया नहीं जा सकता । इसलिए कोई भी काम बहुत सोच-विचारकर करना चाहिए ।

—जबान से निकले बोल भी तीर जैसा ही बींधते हैं, इसलिए वाणी पर नियंत्रण रखना जरूरी है ।

**खींपड़ा रा तौ नोड़िया ई नीरसी ।** ३००४

खींप का तो रस्सा ही बनेगा ।

खींपड़ौ = एक जंगली झाड़ी, जिसके पत्ते नहीं होते । मोटे धागे की नाई निहायत पतली-पतली टहनियाँ होती हैं । जिन्हें तोड़कर मोटा रस्सा भी बनाया जाता है ।

—जो वस्तु किसी खास उपयोग में न आये ।

—जो व्यक्ति जिस योग्य हो उसके साथ वैसा ही व्यवहार होना चाहिए ।

**खींपड़ा री ताटी अर गुजराती ताळौ ।** ३००५

खींप की टाटी और गुजराती ताला ।

खींपड़ौ = मरुस्थल का एक जंगली पौधा जिसका तना पतला व समूह में होता है और उसके पत्तियाँ नहीं होतीं । जिसके डंठलों से रस्से, खाट, टाटी आदि बनते हैं । मकान छाने के लिए भी काम आता है ।

—किसी भी सुरक्षा के लिए खींप की टाटी व्यर्थ है, तिस पर गुजराती ताला । जब कोई व्यक्ति अपनी गरीबी के बावजूद कृत्रिम बड़प्पन का दिखावा करे ।

**खींपड़ा रै तौ खींपोळिया ई लागसी ।** ३००६

खींप की झाड़ी पर तो खींपोड़े ही लगेंगे ।

—निकम्मे बाप की निकम्मी औलाद, जिनमें बड़े काम की योग्यता ही नहीं होती।

—गरीब के घर का बालक गरीब ही होगा, जिसके भाग्य में दुख उठाना ही लिखा है।

**खीच ठरै अर दूध ऊंनौ व्है।** ३००७

खीच ठरे और दूध गर्म हो रहा है।

खीच = बाजरी के दलिये का उबला हुआ व्यंजन।

—ठंडे खीच के साथ गर्म दूध का मेल बहुत स्वादिष्ट होता है।

—जब धैर्य-पूर्वक प्रतीक्षा में दुहरा लाभ हो तब।

—धैर्य का हमेशा अच्छा परिणाम ही होता है।

**खीचड़ खायौ, पेट कुटायौ, थारा राज में कांई सुख पायौ?** ३००८

खीच खाया, पेट कुटाया, तेरे राज में क्या सुख पाया?

—किसी हतभागिनी स्त्री का अपने दुष्ट पति को उलाहना।

—पीड़ित प्रजा की अपने राजा के लिए अंतर्वेदना।

**खीचड़ी खावतां ई पुणचौ उतरै।** ३००९

खिचड़ी खाने पर भी पहुँचा उतर जाता है।

—अत्यधिक निर्बल व्यक्ति के लिए।

—बेहद नजाकत वाले व्यक्ति के लिए।

—सहयोग व आराम देने पर भी जो व्यक्ति उलटा अभियोग लगाये।

**खीचड़ी खूटगी तौ ई कड़ाव रौ पींदौ है।** ३०१०

खिचड़ी खत्म हो गई फिर भी कड़ाह का पैंदा है।

—किसी बड़े आदमी की आर्थिक स्थिति गिर जाने पर भी साधारण व्यक्ति से तो वह हर हालत में बढ़कर होता है।

—धनाढ्य व्यक्ति का दिवाला निकलने के बाद भी काफी-कुछ शेष रहता है।

—सहनशील व्यक्ति आसानी से धीरज नहीं खोता।

**खीच लारै खाटौ इज आवै।** ३०११

खीच के पीछे कढ़ी ही आती है।

—व्यक्तित्व के अनुसार ही सत्कार होता है।

—जो जैसा कहेगा,वैसा सुनेगा।

—जो जैसा बरताव करेगा,बदले में वैसा ही बरताव पाएगा।

**खीमत खावै सो बडौ व्है।** ३०१२

सहन करने वाला सदा ही बड़ा होता है।

—गम खाने वाला व्यक्ति बड़ा होता है।

—सब्र की महिमा बड़ी है।

**खीमला खीमला खीर मीठूं, खाये जणाये खबर।**– भी.१७० ३०१३

खीमला खीमला ! खीर मीठी कि जो खाये वह जाने।

—किसी वस्तु का उपयोग नहीं करने वाले को उसके गुण-दोष के बारे में पूछना मूर्खता है।

—वास्तविक उपयोग के बिना किसी भी वस्तु के गुण-दोष का पता नहीं चलता।

पाठा : **खेमला खीर मीठी के खावै सो जांणै।**

**खीर-खीचड़ी मुधरी आंच।** ३०१४

खीर व खिचड़ी को धीमी आँच।

—खीर एवं खिचड़ी धीमी आँच में ही अच्छी पकती हैं।

—बहुत से कार्य धैर्य से ही सुधरते हैं।

—आवेश में हर काम बिगड़ता है।

**खीर बिगड़गी तौ ई खाटा सूं माड़ी कोनीं।** ३०१५

खीर बिगड़ भी जाय तो कढ़ी से बुरी नहीं।

—बड़े व्यक्ति को घाटा भी लग जाय तो सामान्य आदमियों से बढ़कर ही होता है।

—कुलीन व्यक्ति गरीब भी हो तो दोगले से अच्छा होता है।

**खीर में मूसळ।** ३०१६

खीर में मूसल।

—किसी काम के संपन्न होते-होते कोई व्यक्ति उस में अकस्मात् बाधा उपस्थित कर दे तब।

—ऐन वक्त पर कोई कुटिल व्यक्ति किसी काम में प्रतिरोध उपस्थित करे तब।

**खीरां उतरी खीचड़ी अर टीलौ आयौ टप्प।** ३०१७

**खिचड़ी पकी और बंदर टप्प से हाजिर।**

**संदर्भ-कथा :** एक बुढ़िया की झोंपड़ी के पास ही एक बंदर रहता था। बुढ़िया अकेली थी। वह जब भी अपने लिए खिचड़ी बनाती और थाली में ठंडी करती, तभी वह बंदर फलाँगकर आँगन में आ जाता। बुढ़िया को दाँत दिखाकर, डराकर खिचड़ी खा जाता। बुढ़िया की फिर हिम्मत ही नहीं होती कि खिचड़ी बनाकर खाये। वह काफी दिनों तक भूखी रही तो एकदम निढाल हो गई। हड्डी-हड्डी दिखने लगी। एक दिन संयोग से उसकी इकलौती विवाहिता बेटी माँ की खोज-खबर लेने आई तो स्तब्ध रह गई। माँ को पूछा तो उसने डरते-डरते बेटी को सारा हाल बता दिया। उसने माँ को आश्वस्त किया कि आज वह बंदर को स्वयं अपने हाथ से खिलाएगी। उस दिन उसने खिचड़ी कुछ ज्यादा बनाई। थाली भरकर गरमागरम खिचड़ी चौक में रखी और बंदर कूदकर नीचे आया। वह किंवाड़ की ओट में जलती लकड़ी लेकर खड़ी रही। बंदर ने ज्यों ही दोनों हाथों में भरकर खिचड़ी मुँह में डाली तो उसका मुँह जल गया। वह भौचक्का-सा थाली की ओर देखने लगा कि इतने में बुढ़िया की बेटी ने पूरी ताकत से बंदर की पीठ पर जलती लकड़ी का वार किया। बंदर तो चक्कर खाकर नीचे लुढ़क पड़ा। तब उसने बंदर के मुँह पर दो-तीन प्रहार किये। बंदर बड़ी मुश्किल से अपनी जान बचा कर भागा। दूसरे दिन भी उसने थाली भरकर गर्म खिचड़ी रखी। पर बंदर तो उधर फटका ही नहीं। सात दिन माँ की तीमारदारी करके वह अपने ससुराल चली गई और बुढ़िया की खातिर हमेशा के लिए आराम कर गई।

—बंदर के समान चालाक व्यक्ति जो अपना स्वार्थ पूरा करने में कभी न चूके और काम के समय मुँह तक न दिखाये। उसके साथ ऐसा ही व्यवहार करना संगत है।

—जो व्यक्ति काम के समय दूर तथा लाभ उठाने के लिए सबसे आगे रहे। उस पर तीखा कटाक्ष।

**खीरां माथै खेती।** ३०१८

**अंगारों पर खेती।**

— अंगारों पर धरी रोटी जल्दी उठा ले तो कच्ची रह जाय और ज्यादा रखे तो जल जाय। ऐसा कठिन कार्य जो ध्यान चूकते ही बिगड़ जाय।

—अत्यंत सतर्कता-पूर्वक संपन्न हो सकने वाला कार्य।

**खीरां म्हारी, तवै थारी।** ३०१९

अंगारों पर मेरी, तवे पर तेरी।

—पहले तवे पर रोटी आधी सिकती है, फिर अंगारों पर पूरी पकती है। इसलिए अंगारों पर पकने वाली रोटी तो हर हालत में उसी व्यक्ति को मिलेगी, जिसने उपरोक्त सुझाव रखा। और तवे पर की रोटी के लिए तो उसकी आशा करने वाला हर बार निराश ही होगा— क्योंकि आखिर अंगारों पर ही रोटी पूर्णतया पकती है। उपरोक्त सुझाव के अनुसार तो तवे वाली रोटी के इंतजार में वह हर बार हताश ही होगा।

—जो व्यक्ति हर बात में दुहरा लाभ उठाना चाहे, उस पर व्यंग्य।

**खीसा तरमतर तौ दाय पड़ै ज्यूं कर।** ३०२०

जेब तरबतर तो इच्छा हो सो कर।

—कैसी भी छोटी-बड़ी, सस्ती-महँगी चीज पैसों के बिना नहीं मिलती। जेब भरी हो तो कुछ भी वस्तु अप्राप्य नहीं।

—मनुष्य की दुनिया में पैसे का ही एकछत्र राज्य है।

—रुपया ही सब इच्छाओं की पूर्ति का एकमात्र साधन है।

पाठा : खीसा तर तौ भावै ज्यूं कर।

**खीसै में काकौ तौ सै बजार थाकौ। कनै कोनीं काकौ तौ टकटक झांकौ।** ३०२१

जेब में जोर तो रात को ही भोर। जेब खाली तो करो हमाली।

—तुक की वजह से शब्द तो जरूर बदले हैं, पर आशय वही है।

—आजकल पैसा ही दिग्विजय का एक-मात्र साधन है।

—रुपये की महिमा को भला कौन चुनौती दे सकता है?

**खीसै में कोनीं टक्का तौ बाप खावै धक्का।** ३०२२

जेब में नहीं टक्का तो बाप खाय धक्का।

—पैसे के अभाव में बाप-दादा तक की प्रतिष्ठा नहीं रहती। उन्हें भी दर-दर की राख छाननी पड़ती है।

—ईश्वर भी गरीब का हिमायती नहीं बनना चाहता।

**खुड़कौ व्हियौ अर चोर भरणाटै।** ३०२३

आहट हुई और चोर चंपत।

—चोर का मन बहुत ही कमजोर होता है, आहट के साथ ही वह भाग खड़ा होता है।

—अपराधी के दिल में प्रतिक्षण आशंका बनी रहती है।

**खुड़कौ व्हियौ नीं खोज।** ३०२४

न कोई आहट हुई और न भनक।

—बड़ी-बड़ी सत्ताएँ ध्वस्त होने पर जब उनके बारे में कोई हलचल न हो।

—किसी बड़ी घटना की किसे भी कानोकान खबर न हो तब।

**खुणा रौ भाटौ पींजणियां भांगै।** ३०२५

कोने का पत्थर पींजनियाँ तोड़ता है।

पींजणियां = बैलगाड़ी के पहिए में आगे की धनुषाकार वह लकड़ी जिसके छेद से होकर धुरा निकला रहता है।

—जो व्यक्ति हर काम में विघ्न डाले उसके लिए।

—दुष्ट व्यक्ति सदा नुकसान ही पहुँचाता है।

**खुणी रौ गुळ।** ३०२६

कोहनी का गुड़।

—कोहनी पर लगा हुआ गुड़ नजर तो आता है पर खाया नहीं जाता।

—दिखती हुई आशा जो कभी पूरी नहीं होती।

**खुणी है तौ नैड़ी पण मुंहडै तांई नंह पूगै।** ३०२७

कोहनी है तो पास पर मुँह तक नहीं पहुँचती।

—जो व्यक्ति रिश्ते में नजदीक होते हुए भी मन से दूर हो।

—परिजन वास्तव में किसी के आत्मीय नहीं होते। वे शिष्टाचार के नाते आत्मीयता का प्रदर्शन भर करते हैं।

**खुद ई नाचै, खुद ई वारणा लै।** ३०२८

खुद ही नाचे, खुद ही बलैयाँ ले।

—जो व्यक्ति अपने काम की अपने ही मुँह से प्रशंसा करे।

—अपने मुँह मियाँ-मिट्ठू बनने वाले के लिए।

**खुद रहै सेंठौ तौ जगत रोवै बैठौ।** ३०२९

खुद रहे सँभलकर तो जगत रोये बैठकर।

—आखिर तो अपनी सावचेती, अपनी क्षमता और अपनी सूझ-बूझ ही काम देती है।

—खुद अपने मोर्चे पर मुस्तैद रहे तो दुनिया कुछ नहीं बिगाड़ सकती।

**खुद री फजीत, खलकां री नसीत।** ३०३०

खुद की फजीहत, दूसरों की नसीहत।

—अपनी बदनामी दूसरों के लिए नसीहत का काम करती है कि वे बुरे कर्म से दूर रहें।

—अपनी कमजोरियों से लोग सबक सीखते हैं।

**खुद रै तौ तिणकला रौ ई तबोड़ौ अर दूजां रै मूळ-रा-मूळ पजावै।** ३०३१

खुद के लिए तो तिनके की चुभन और दूसरों के लट्ठ घुसाये।

—जिस व्यक्ति के लिए अकिंचन तकलीफ भी असह्य हो और जो दूसरों को बेइंतहा कष्ट पहुँचाये, उस पर कटाक्ष।

—मनुष्य-मात्र का स्वभाव ही ऐसा होता है कि दूसरों की गर्दन कटने से भी अपना नाखून उखड़ने की फिक्र ज्यादा करता है।

**खुद होवै ढीलौ तौ जगत घालै खीलौ।** ३०३२

खुद रहे ढीला तो जगत डाले खीला।

—गफलत हुई नहीं और दुनिया ऊपर चढ़ी नहीं।

—कब किसको दबोचे, दुनिया तो इसी ताक में रहती है, मौका मिला नहीं और सवारी गाँठी नहीं।

**पाठा : खुद होवै पोचौ तौ जगत घालै घोचौ।**

**खुदा जेहड़ा फरेस्ता।** ३०३३

खुदा जैसे फरिश्ते।

—जब राजा और दरबारी एक जैसे अकुशल हों।

—जब मालिक और उसके नौकर सभी वाहियात हों।

—जब घर का मुखिया और अन्य सदस्य एक-से-एक बढ़कर नमूने हों।

**खुदा थारी खुदाई, मारै हौ गधी अर मरगी गाई।** ३०३४

खुदा तेरी खुदाय, मरनी थी गधी और मर गई गाय।

**संदर्भ-कथा :** एक हकीम के पास कुम्हार का घर था। हकीम दिन-भर दवा-दारू करके रात को घर लौटता तो कुम्हार की गधी जब-तब जोर-जोर से रेंकती रहती। थके हुए हकीम की नींद उचट जाती। आखिर उसने हैरान होकर खुदा से फरियाद की कि कुम्हार की गधी को मार डाले। पर हुआ उलटा। दूसरे दिन हकीम की गाय मर गई। तब हकीम खुदा को कोसता हुआ मन-ही-मन बड़बड़ाया,वाह रे खुदा,जैसा तू वैसी तेरी खुदाई। गधी को मारने की फरियाद की और तूने मेरी गाय मार डाली।

—लाभ के बदले जब कोई बड़ा आदमी हानि पहुँचा दे तब।

—किसी बड़े व्यक्ति के द्वारा आशा के विपरीत कोई काम हो जाये तब।

**खुदा देसी तौ छप्पर फाड़नै देसी।** ३०३५

खुदा देगा तो छप्पर फाड़कर देगा।

—खुदा मदद करना चाहे तो किसी भी तरह कर सकता है उसके लिए कुछ भी मुश्किल नहीं।

—जिस व्यक्ति का ईश्वर, खुदा या भाग्य पर अटल विश्वास हो।

—मेहनत की अपेक्षा तकदीर या अल्लाह पर अधिक आस्था रखना।

**खुदा री महर तौ लीला लहर।** ३०३६

खुदा की मेहर तो सरसब्ज लहर।

—खुदा की मेहरबानी हो तो सब ठाट-ही-ठाट है।

—सिर पर भगवान का वरद-हस्त होने पर कुछ भी कमी नहीं रहती।

**खुरचण ई को छोडी नीं।** ३०३७

खुरचन भी नहीं छोड़ी।

खुरचण = पकाते या औटाते समय बर्तन के तले में चिपक जाने वाला खाद्य पदार्थ का वह अंश जो बाद में कुरेदकर निकाला जाय।

—जो चटोरा व्यक्ति समूचा भोजन चट कर जाय,पीछे खुरचन तक न छोड़े।

—जो दुष्ट व्यक्ति किसी के घर को बर्बाद करने पर उतारू हो, उसके लिए।

—जो अकर्मण्य संतान बैठे-बैठे परिवार की तमाम पूँजी समाप्त कर दे तब।

**खुर तातौ, खर मातौ।** ३०३८

खुर ताता, खर माता।

मातौ = पुष्ट।

—गधा एक ठौर नहीं रुकता, वह चलता-फिरता ठौर-ठौर घास चरता है। खुर ताजा बने रहें तो गधा मोटा हो जाता है।

—परिश्रम करने वाला जस-तस अपना पेट भर लेता है।

**खुरसांण चढ़ायां ईं धार आवै।** ३०३९

खुरसान चढ़ाने पर ही धार लगती है।

खुरसांण = शस्त्र पैना करने का एक औजार।

—किसी व्यक्ति को सिल्ली चढ़ाकर उकसाने से ही उसका हौसला बढ़ता है।

—कटु अनुभवों के घर्षण से ही कोई व्यक्ति तेज होता है।

**खुल्ला खाता।** ३०४०

खुले खाते।

—जहाँ आने-जाने की कोई औपचारिकता न हो।

—जहाँ रंच-मात्र भी लाग-लपेट न हो।

—जो व्यक्ति कुछ भी छिपाकर कोई काम न करे।

**खुल्लै किंवाड़ां पोल धसै।** ३०४१

खुले दरवाजों में पोल घुसती हैं।

—माकूल व्यवस्था के बिना सब गड़बड़-झाला होता है।

—जहाँ समुचित देखरेख नहीं होती, वहीं घोटाला होता है।

**खुसामद किणनै खारी लागै?** ३०४२

खुशामद किसे कड़वी लगती है?

—खुशामद में एक ऐसा अद्भुत मिठास है कि हर किसी को उसका स्वाद बहुत अच्छा लगता है।

—हर व्यक्ति खुशामद-पसंद होता है।

**खुसामद खरौ रूजगार।** ३०४३

खुशामद खरा रोजगार।

—खुशामद एक ऐसा रोजगार है, जिस में कभी घाटे की संभावना नहीं रहती।

—खुशामद से सब काम हल होते हैं।

—खुशामद करने वाले को हर क्षेत्र में निर्बाध सफलता मिलती है।

**खूंटा री पैठ बिकै।** ३०४४

खूँटे की साख बिकती है।

—घर की मर्यादा व प्रतिष्ठा का सर्वत्र मोल है।

—कुलीनता को कोई चुनौती नहीं दे सकता, उसकी महिमा असंदिग्ध है।

**खूंटा रै बळ बाछड़ौ कूदै।** ३०४५

खूँटे के बल पर ही बछड़ा कूदता है।

—बछड़ा अपने मालिक की ताकत के जोर पर ही उछलता है।

—जो व्यक्ति दूसरों की ताकत पर हेकड़ी दिखलाता हो।

—पीछे जोर हो तो कोई व्यक्ति मनमानी कर सकता है।.

**खूंटा रौ खोज जावै जद भैंस चंवरा पाडा लावै।** ३०४६

खूँटे का सर्वनाश हो तब भैंस चँवरे पाड़े लाती है।

—पूँछ पर सफेद धब्बे वाले पाड़े को चँवरा कहते हैं। वह अमंगल का प्रतीक होता है।

—चँवरे पाडे के अपशकुन से खूँटा और घर दोनों सूने हो जाते हैं।

**खूंटी सारू मैल पाड़णौ।** ३०४७

खूँटी के लिए महल गिराना।

—जो व्यक्ति अपने अकिंचन स्वार्थ की पूर्ति के लिए बड़ा नुकसान पहुँचाने पर आमादा हो।

—अपने अदने से मतलब के लिए किसी को घातक हानि पहुँचाना।

**खूंटे हार गळे बीजो हूं करे !**– भी.१७१ ३०४८

अलगनी हार निगले तो दूसरा क्या कर सकता है !

—इस उक्ति का आधार शनि की दशा से है,उससे संबंधित कथाएँ सारे भारतवर्ष में प्रचलित हैं। शनि के कोप से एक राजा दर-दर भीख माँगता है। खूँटी हार निगल जाती है।

—किसी भी दुर्भाग्य, खराब दशा या ईश्वरीय कोप से निरंतर हानि-पर-हानि होने लगे तो दूसरा कौन बचा सकता है ?

—जब रक्षक ही भक्षक हो जाए।

—जब आश्रयदाता ही विमुख हो जाए फिर कोई निस्तार नहीं।

**खूंटै खाखलौ ई कोनीं।** ३०४९

खूँटे पर भूसा भी नहीं।

—जिस व्यक्ति के घर मवेशी के लिए खूँटे पर भूसा ही न हो तो मवेशी टिकेंगे क्योंकर। पर बड़प्पन की डींग मारने में तो एक धेला भी खर्च नहीं होता।

—जिस व्यक्ति के घर में भूसा तक न हो और वह बड़ी-बड़ी बातें बनाये तब।

**खूंटै खाखलौ व्है तौ ओखर खावै ई क्यूं ?** ३०५०

खूँटे पर भूसा हो तो मैला खाने जाये ही क्यों ?

—यदि खूँटे पर गाय के लिए भूसा हो तो वह इधर-उधर मैला खाने की खातिर भटके ही क्यों ?

—यदि घरवाली ठीक या सुंदर हो तो पुरुष दूसरी औरतों के पास जाये ही क्यों ? यह उक्ति औरतों के लिए भी प्रयुक्त होती है।

पाठा : **खूंटै खाखलौ व्है तौ पराया ओळ्बा लावै ई क्यूं ?**

**खूंटौ अर खावौ।** ३०५१

चूँटो और खाओ।

—गिरी हुई आर्थिक-स्थिति को ध्यान में रखते हुए उसके अनुरूप ही अपना काम करना चाहिए।

—अपने हाथों कमाई करो और अपना गुजर-बसर चलाओ। जैसे-तैसे गुजारा करना।

**खूंटौ कोरड़ौ किण रै हाथ है ?** ३०५२

खूँटा व चाबुक किसके हाथ है ?

—इस कहावत के दो अर्थ हैं। पहला—जो घर का मालिक होता है, खूँटे पर बँधा बैल उसके अधिकार में ही रहता है। और मालिक के ही अधिकार में घोड़ा और चाबुक दोनों रहते हैं। जिसका स्वामित्व होता है, वही उसका वास्तविक अधिकारी होता है।

—दूसरा अर्थ यह कि अधिकार व सत्ता एक हाथ से दूसरे हाथ में बदलती रहती है। स्थायी स्वामित्व किसी का नहीं रहता।

—समय के साथ मिलकियत के अधिकारों में बदलाव होता रहता है।

**खूंटौ चोखौ चाहीजै।** ३०५३

खूँटा अच्छा चाहिए।

—इस कहावत का दोनों पक्षों के लिए उपयोग होता है—बेचने वाले का खूँटा अच्छा है तो पशुओं की नस्ल व पोषण बढ़िया ही होना चाहिए। और यदि खरीददार का खूँटा भी प्रतिष्ठित है तो पशु आराम से रहेंगे। इसलिए बेचने वाला निश्चिंत हो जाता है।

—सहारा मजबूत होना चाहिए। नियंत्रण अच्छा रहना चाहिए।

**खूंसड़ा कना सूं पग नीं बढ़ावणौ।** ३०५४

जूते से पाँव नहीं कटाना चाहिए।

दे.क.सं.२९९२

**खूटी री बूटी नीं।** ३०५५

मृत्यु की कोई जड़ी-बूटी नहीं होती।

—बीमारी की तो औषधि है, पर मृत्यु का कहीं कोई उपचार नहीं।

—मृत्यु अवश्यंभावी है। न राजा का उसे लिहाज है और न रंक पर उसे दया महसूस होती है।

**खूटै खानजादा तौ लूटै पीरजादा।** ३०५६

खानजादे निर्बल हों तो पीरजादे लूट मचाते हैं।

—राज्य-सत्ता कमजोर होने पर धर्म के मुस्टंडों की बन आती है।

—राजा की कमजोरी का लाभ दरबारी उठाते हैं।

—अधिकारी वर्ग निकम्मा होता है तो आम-आदमी मनमानी करता है।

**खूट्योड़ां री कमाई खलकां सारू।** ३०५७

गये-गुजरों की कमाई दूसरों के लिए।

—मूर्खों का माल मसखरे उड़ाते हैं।

—पुरुषार्थहीन को लोग बेवकूफ बनाकर उसका धन हड़पते रहते हैं।

**खूट्योड़ौ किराड़ चौपड़ा बांचै।** ३०५८

दिवालिया सेठ बही-खाते बाँचता है।

—दिवालिया सेठ जब नये व्यवसाय के लिए असमर्थ हो जाता है तो पुराने बही खाते बाँच कर मन बहलाने लगता है

—हताश व्यक्ति जस-तस अपना समय काटता है।

—कोई भी अन्य चारा न रहने की मजबूरी।

**खूट्यौ बांणियौ जूंना खाता जोवै।** ३०५९

हताश बनिया पुराने बही-खाते टटोलता है।

दे.क.सं.३०५८

**खून रै बदळै फांसी।** ३०६०

खून के बदले फाँसी।

—यथायोग्य प्रतिकार।

—जैसा अपराध हो उसी के अनुसार सजा मिलनी चाहिए।

**खेजड़-पींपळ अेकण थांणै, औ हथळेवौ बडै ठिकांणै।** ३०६१

शमी-पीपल एक ही ठांर, ऐसा पाणिग्रहण श्रीमंतों के जोर।

—सामाजिक मान्यताओं को अनदेखा करके श्रीमंत कैसा भी बेमेल काम कर सकते हैं—उन्हें टोकने वाला कौन।

—बड़े आदमियों की बुराइयों पर भला कौन टीका-टिप्पणी करे।

**खेजड़ा पड़ी नैं ठैं।**–व.२८३ ३०६२

शमी से गिरी और टें।

—ऊपर से गिरने के बाद कोई बचाव नहीं, सीधा नीचे।

—जब कोई आदमी पतन की राह गिरने लगता है तो गिरता ही जाता है।

**खेड़ा री लूंकी बाघ नै डरावै।** ३०६३

बस्ती की लोमड़ी बाघ को डराती है।

—अपने गाँव में कायर को भी जोश चढ़ जाता है।

—हिमायतियों के बीच कमजोर भी बहादुरी दिखाता है।

मि.क.सं.८९७

**खेड़ा व्है जठै चेड़ा व्है।** ३०६४

बस्ती के बीच प्रेत भी होते हैं।

—बस्ती या गाँव में अच्छे-बुरे सभी आदमी बसते हैं।

—प्रत्येक गाँव में दुष्ट व्यक्ति तो होते ही हैं।

**खेड़ा व्है जठै झगड़ा सदा ई व्है।** ३०६५

गाँव होता है वहाँ झगड़े भी होते हैं।

—जहाँ आबादी होती है, वहाँ फसाद भी होता है।

—साथ रहने पर कुछ-न-कुछ रंजिश होकर रहती है।

**खेत अर माथा कदै ई सळिया को व्है नीं।** ३०६६

खेत और सिर कभी साफ नहीं हो सकते।

—किसी भी खेत में चाहे जितनी निराई क्यों न की जाय, अनचाही वनस्पति उग जाती है और सिर को कितनी ही बार क्यों न मुंडाया जाय, बाल फिर बढ़ आते हैं।

—मनुष्य शांत रहने की चाहे जितनी चेष्टा करे, नई उलझनें पैदा होती ही रहती हैं। उनसे बचा नहीं जा सकता।

—जीवन के झंझट कभी नहीं मिटते।

**खेत खाय गधेड़ौ अर मार खाय कूंभार।** ३०६७

खेत खाये गधा और मार खाये कुम्हार।

—अपराध कोई करे और सजा दूसरे को मिले तब।

—बड़ा अधिकारी, नेता या मंत्री रिश्वत खाये और मारे जाएँ छोटे कर्मचारी।

**खेत खावौ कमेड़ा, पांचां रोटां कांम।** ३०६८

खेत खाये चिड़ियाँ, पाँच रोटी से काम।

—अपनी बला से मालिक का नुकसान हो-तो-हो, नौकरों को तो पेट भरने से मतलब है।

—जो व्यक्ति अपने स्वार्थ की खातिर गैर-जिम्मेवारी बरते।

—जो व्यक्ति अपने कर्तव्य के प्रति उदासीन हो।

**खेत नै खावै गेली अर मोडै नै खावै चेली।** ३०६९

खेत को खाये 'गेली' और साधु को खाये चेली।

गेली = राह, रास्ता।

—खेत के बीच मार्ग हो तो आने-जाने वाले लोग और मवेशी उसे नुकसान पहुँचाते हैं और साधु के चेली हो तो निःसंदेह उसका व्रत-भंग होता ही है।

—कमजोरी की तो राह ही बुरी, मौका मिलते ही वह प्रकट होकर रहती है।

**खेत बड़ौ अर घर सांकड़ौ।** ३०७०

खेत बड़ा और घर सँकड़ा।

—खेत बड़ा हो तो उपज ज्यादा होती है और घर सँकड़ा हो तो सफाई व देख-रेख ठीक होती है।

—खेत काफी दूर फैला हो तो उपादेय और परिजन नजदीक बसे हों तो बेहतर है।

—हर काम की अपनी अलग ही उपयोगिता होती है।

**खेत बिगड़ै तौ खात सूं सुधरै, पण बिगड़ियोड़ी औलाद कीकर सुधरै ?** ३०७१

खेत बिगड़े तो खाद से सुधर सकता है, पर बिगड़ी हुई औलाद क्योंकर सुधरे ?

—भौतिक या आर्थिक क्षति-पूर्ति के अनेक उपाय हैं, पर संतान का चरित्र क्षय हो तो उसका कोई निवारण नहीं।

—मनुष्य को आर्थिक बहबूदी की अपेक्षा संतान के परिष्कार की ओर अधिक ध्यान देना चाहिए।

**खेत में वाळी अर घर में साळी खोटी व्है।** ३०७२

खेत में बुरी नाली और घर में बुरी साली।

दे.क.सं.३०६९

**खेत में वाळौ, घर में साळौ अर भींत में आळौ।** ३०७३

खेत में नाला, घर में साला और दीवार में आला।

आळौ = ताक।

—नाले से खेत की मिट्टी कटती है, घर में साला मनमानी करके नुकसान पहुँचाता है और दीवार में ताक होने से चोरों को सेंध लगाने में आसानी रहती है—अतएव ये तीनों चीजें बुरी हैं। इसलिए त्याज्य हैं। नसीहत देने वाला कथन।

**खेत में व्है सो खळै आवै।** ३०७४

खेत में हो तो खलिहान में आये।

—कमाई का जुगाड़ हो तो तभी आमदनी होती है।

—जिस प्रकार खलिहान खेत की उपज का मोहताज होता है, उसी प्रकार खर्च आमदनी पर ही निर्भर करता है। और खेत में फसल परिश्रम व साधनों से उत्पन्न होती है।

—जो मेहनत करता है, उसे ही मेहनत का फल मिलता है।

मि.क.सं.२६८०

**खेत राखै बाड़ नै, बाड़ राखै खेत नै।** ३०७५

खेत रखे बाड़ को, बाड़ रखे खेत को।

—खेत में फसल अच्छी हो तो बाड़ की मरम्मत जरूरी हो जाती है और बाड़ ठीक हो तो खेत की सुरक्षा रहती है।

—जिनका स्वार्थ एक-दूसरे पर निर्भर करता हो, उन्हें परस्पर एक-दूसरे के स्वार्थ की रक्षा करनी चाहिए।

—दूसरों के स्वार्थ की रक्षा करने से अपने स्वार्थ की स्वयमेव रक्षा हो जाती है।

**खेतरी नै पतिवाड़ा कहै।**–व.२६९ ३०७६

कुलटा को प्रतिव्रता कहना।

—बुरे व्यक्ति की स्तुति की जाय, तब।

—भ्रष्ट लोगों का सत्कार हो, तब।

**खेत रै अड़वा री गळाई।** ३०७७

खेत के बिजूका की नाईं।

अड़वौ = बिजूका = खेत की रखवाली के लिए लकड़ियों के ढाँचे पर कपड़े पहनाकर आदमी का भ्रम पैदा करने वाली आकृति।

—जो व्यक्ति न स्वयं लाभ उठाये और न दूसरों को उठाने दे।

—बेडौल या निठल्ले व्यक्ति के लिए भी।

**खेतां मांय हाळ कराळ, घेर मांये रांड लड़ाक, खळां मांये ताण परान।**–भी.१७२ ३०७८

खेत में गहरा पैंठ जाने वाला हल, घर में कलहगारी पत्नी और खलिहान में भूसा।

—गहरा धँसने वाला हल खेत को कमजोर करता है।

—उपरोक्त तीनों चीजें किसान के लिए कष्ट देने वाली हैं।

—जो व्यक्ति चारों ओर से विपत्तियों में घिरा हो।

**खेतार री खेळी में मूंडौ धोयौ ?** ३०७९

खेतार के कुंड में मुँह धोया ?

खेतार = एक गाँव, जहाँ पानी की भीषण कमी है। इसलिए वहाँ के कुंड में मुँह धोने का प्रश्न ही नहीं उठता।

—जो अयोग्य व्यक्ति बड़ा काम करने की डींग मारे तब परिहास में इस उक्ति का प्रयोग होता है।

—खामखाह जोश दिखाने वाले व्यक्ति के लिए।

**खेती कणाये नी पूगवा दिये।**– भी. १७३ ३०८०

खेती किसी को पहुँचने नहीं देती।

—दूसरे धंधों की अपेक्षा खेती श्रेष्ठ है। उसमें कमाई के साथ सृजन का सुख भी है।

—सामंती काल में जब खेती ही मुख्य धंधा था। अब तो एक उद्योगपति हजारों किसानों से अधिक कमाता है।

**खेती करै अर बिणज नै धावै, अैड़ौ डूबै के थाग न पावै।** ३०८१

खेती करे और व्यापार को धाये, ऐसा डूबे थाह न पाये।

—उपज को रोककर ऊँचे भावों की आशा करने वाला किसान बर्बाद होता है।

—काम की एकाग्रता ही सफलता की बुनियाद है।

**खेती करै नीं बिणज नै जाय, विद्या रै बळ बैठौ खाय।** ३०८२

खेती करे न करे व्यापार, विद्या का बल बेशुमार।

—पढ़ा-लिखा व्यक्ति मजे में अपना निर्वाह कर सकता है, उसे न खेती की जरूरत और न व्यापार की।

—विद्या की महिमा खेती व व्यापार दोनों से बढ़कर है।

**खेती करै, रात घर सोवै, वाढै चोर हाथ धर रोवै।** ३०८३

खेती करे, रात घर सोये, काटे चोर हाथ धर रोये।

—जो किसान खेत की बजाय रात को घर आकर सोता है, उसकी फसल चोर काट ले जाते हैं, तब सिर थामकर रोने के अलावा दूसरा कोई चारा नहीं रहता।

—किसी भी काम में गफलत हुई और मामला चौपट।

**खेती जैड़ा दांणा।** ३०८४

खेती जैसे दाने ।

—जैसी मेहनत वैसा फल ।

—परिश्रम के अनुसार परिणाम ।

**खेती धणियां सेती।** ३०८५

खेती मालिक की मुस्तैदी पर ।

—मालिक खुद खेत पर न जाकर केवल मजदूरों के भरोसे ही रहे तो वह नुकसान उठाता है ।

—केवल खेती ही क्या मालिक की निगरानी और कर्मठता के बिना कोई काम सफल नहीं हो सकता ।

**खेती नो खाडो खेती कीदेज भराय है।**– भी.१७४ ३०८६

खेती का गड्ढा वापस खेती से ही भरता है ।

—खेती की पैदावार में कमी रहे तो वह खेती से ही पूरी होती है ।

—किसी भी काम के घाटे की पूर्ति, निरंतर उसी काम में जुटे रहने से ही होती है ।

**खेती, पाती, वीणती अर घोड़ा रौ तंग।** ३०८७
**हाथौहाथ संवारजै, लाख लोग व्है संग॥**

खेती, पाती, विनती और घोडे का तंग, हाथोंहाथ सँभालिये लाख लोग हो संग ।

तंग = घोड़े की जीन पर कसे जाने वाली पेटी ।

—यह एक नसीहत-प्रदान उक्ति है कि प्रत्येक काम स्वयं अपने हाथ से न करने पर, खुद की आँखों से हरदम चौकसी न रखने पर उसकी सफलता संदिग्ध है ।

**खेती सूख्यां बिरखा कांई कार री?** ३०८८

खेती सूखने पर बारिश किस काम की ?

—समय पर किया हुआ सहयोग ही फलदायक होता है ।

—हर बात की सफलता के लिए समय की प्राथमिकता अनिवार्य है ।

**खेती हार्‍या कोई जमारौ थोड़ौ ई हार्‍या।** ३०८९

खेती हारे कोई जिदगी तो नहीं हारे ।

—जीवन में कई उतार-चढ़ाव आते हैं, मनुष्य को असफलताओं से निराश नहीं होना चाहिए।

—मनुष्य-जीवन की नियामत हार की हताशा से बहुत बड़ी है, जिसके सामने छोटी-मोटी असफलताएँ कुछ भी माने नहीं रखतीं।

—निराश व्यक्ति को ढाढ़स बँधाने के लिए।

**खे देख'र घोड़ा मत वाळौ।** ३०९०

खेह देखकर घोड़े मत मोड़ो।

—संभव है, सामने उड़ती गर्द दुश्मन के सैनिकों की न हो, किसी वातचक्र की हो या किसी अंधड़ की हो, उससे भयभीत होकर अपने घोड़ों को वापस मत मोड़ो, आगे बढ़ने दो।

—केवल आशंका मात्र से घबराकर किसी कार्य को बंद करना उचित नहीं।

**खेबली सासू अर अेबली बहू रांम रूसै तौ मिळै।** ३०९१

खराब सास और बदमाश बहू राम रूठे तो मिले।

—दुहरा दुर्योग बड़ा घातक होता है।

—विकट दुर्भाग्य होने पर ही उपरोक्त संयोग घटित होता है।

**पाठा : खाबड़ी सासू अर अेबली बहू रांम रूसं तौ मिळै।**

खाबड़ी = खराब।

**खेम-खूसळ कैड़ी, जठै बाड़ खेत नै खाय।** ३०९२

क्षेम-कुशलता कैसी, जहाँ बाड़ खेत को खाये।

—जब रक्षा करने वाला ही विनाश करने लगे तो फिर कैसी कुशलता।

—जहाँ रक्षक ही भक्षक हो जायें वहाँ शांति कैसी।

**खेमली खिलकां री भूखी।** ३०९३

खेमली तमाशों की भूखी।

खेमली = खिलवाड़ करने वाली किसी औरत का नाम।

—जिस व्यक्ति को दूसरों के झगड़ों से आनंद मिलता हो।

—जो व्यक्ति कलह-प्रिय हो।

**पाठा : खेमलौ खिलकां रौ भूखौ।** खेमला तमाशों का शौकीन।

**खेरणी में दूवै अर भाग नै भांडै।** ३०९४

चलनी में दूहना और भाग्य को कोसना।

—अगणित छेदों वाली चलनी में जो दूध दूहेगा, वह सब नीचे गिरेगा, फिर भाग्य को दोष देना और भी बड़ी नादानी है।

—जो व्यक्ति स्वयं अपने हाथ से बेहूदा काम करे और बाद में बुरे परिणाम की खातिर भाग्य को दोष दे तब!

—गलत काम का सदा गलत ही अंजाम होता है, भाग्य का उससे दूर का भी वास्ता नहीं!

पाठा: **खेरणी में दूवै अर करमां नै दोसण देवै।** चलनी में दूहे और भाग्य को दोष दे।

**खेरणी सूई नै हंसै।** ३०९५

चलनी सूई पर हँसती है।

—सहस्र छेदों वाली चलनी एक छेद वाली सूई पर लांछन लगाती है।

—आकंठ बुराइयों में डूबा मनुष्य जब मामूली-सी गलती करने वाले पर कटाक्ष करे तब।

—मसलन कोई शराबी बीड़ी पीने वाले की भर्त्सना करे तब।

**खेल खतम पीसा हजम।** ३०९६

खेल खतम, पैसा हजम।

—खेल-खेल में उल्लू सीधा करना।

—जो व्यक्ति बातों-ही-बातों से अपना काम बनाये।

**खेल खेलारां रा, घोड़ा असवारां रा।** ३०९७

खेल खिलाड़ियों के और घोड़े सवारों के।

—किसी भी काम में सफलता, निपुण व्यक्ति को ही मिलती है।

—साहसी व योग्य व्यक्ति के लिए सफलता सुनिश्चित है।

मि.क.सं.२७६१

**खेल मती जुवा, कूद मती कुवा।** ३०९८

खेलिए न जुआ, डाकिये न कुआँ।

—उपरोक्त दोनों ही बातें त्याज्य हैं, जो नहीं माने तो उसका विनाश अवश्यंभावी है।

—बुरे काम से हमेशा दूर रहना ही लाभकारी है।

दे.क.सं.२५४६

**खेळी कोठा में पांणी कूवा सूं ईं आवै।** ३०९९

हौज-कुंड में पानी कुएँ से ही आता है।

—आमदनी के स्रोत से ही खर्च की सारी पूर्ति होती है।

—आमदनी का केंद्र एक और खर्च के मद अनेक।

मि.क.सं.२६८०

**खेळी धोयां कादौ निकळै।** ३१००

कुंड धोने पर कीचड़ निकलता है।

—किसी की बदनामी को कुरेदने से बदबू ही फैलती है।

—किसी की बुराई करने से जबान ही गंदी होती है।

—ऊपर से साफ दिखने वालों के भीतर भी गंदगी छिपी रहती है।

मि.क.सं.२६८२

**खैर रा खूंटा सूं फाड़नै मर जावूं, पण देवर रौ घर नीं मांडूं।** ३१०१

खैर के खूँटे से फाड़कर मर जाऊँ पर देवर का घर नहीं बसाऊँगी।

खैर = खदिर। बबूल की जाति का एक पेड़ जो बबूल से बड़ा होता है और मजबूत भी।

—खैर के सख्त खूँटे में योनि डाल-डालकर मर भले ही जाये,देवर से पुनर्विवाह नहीं करने की खातिर जिस औरत ने दृढ़ संकल्प किया हो।

—जो व्यक्ति मरने पर भी घरवालों का हित न करना चाहे।

—अन्याय के प्रतिकार की खातिर जो व्यक्ति मरने के लिए आमादा हो।

**खैर रौ खूंटौ।** ३१०२

खैर का खूँटा।

—खैर वृक्ष की लकड़ी बहुत मजबूत होती है। इसी के उबले टुकड़ों के रस से कत्था बनता है।

—अत्यधिक दृढ़ निश्चय वाले व्यक्ति के लिए। मजबूत व साहसी मनुष्य के लिए।

**खैरात बंटै जठै मंगता आपै ई पूगै।** ३१०३

खैरात बँटती है वहाँ भिखारी स्वत: ही पहुँच जाते हैं।

—भिखारियों को निमंत्रण देने की आवश्यकता नहीं होती।

—अपने स्वार्थ की भनक हर व्यक्ति को दूर से पड़ जाती है।

**खोई नथ खंधेड़ा में, नणद रै नांव।** ३१०४

खोई नथ खंदक में, ननद के नाम।

दे.क.सं.२३९०,२७५३

**खोखर बडौ खुराकी, खायौ हापा सरीखौ डाकी।** ३१०५

'खोखर' बड़ा खुराकी, खाया 'हापा' जैसा डाकी।

खोखर = राठौड़ राव छाडोजी का पुत्र खोखर एक महाबली योद्धा हुआ था। जिसने 'हापा' जैसे पराक्रमी राजा को मार गिराया।

—दुनिया में एक-से-एक बढ़कर व्यक्ति होते हैं।

—सेर को सवा सेर मिल ही जाता है।

**खोखा खा, पांणी पी, काली डोकरी रोवै की?** ३१०६

खोखे खाओ, पानी पीओ, पगली बुढ़िया मत रोओ!

खोखौ = शमी वृक्ष की सूखी फली जो खाई भी जाती है। निम्नतम खाद्य-पदार्थ।

—बुढ़िया के बहाने मनुष्य मात्र को सीख कि जो कुछ भी सहज प्राप्त है,उसे खा-पीकर संतोष करना चाहिए,बेकार चिंता करने से क्या फायदा।

—संतोष ही मनुष्य की समस्त लालसाओं का समाधान है।

**खोखा खाय'र दिन काढ़ै, पंचायती में जाय'र ताडै।** ३१०७

खोखे खाकर दिन तोड़े, पंचायती मे खूब दहाड़े।

—जो व्यक्ति अपनी निम्न हैसियत को भूलकर बाहर डींग मारे।

—जो गरीब व्यक्ति अन्य कामों में अपना समय गँवाये।

**खोखा खायां तौ बाव ई सुरै।** ३१०८

खोखे खाने से तो अपान-वायु ही निकलती है।

—मनुष्य की समझ भोजन पर ही निर्भर करती है—जैसा खाना वैसी समझ या वैसा प्रभाव।

—गंदे व्यक्ति की संगति से गंदगी ही बढ़ती है।

**खोखाल में तौ घू-घू ई व्यावै।** ३१०९

खोखल मे तो उल्लू ही पैदा होते है।

—परिवेश के अनुसार ही मनुष्य का व्यक्तित्व ढलता है।

—समाज से विच्छिन्न एकांत ठौर पर तो मूर्ख ही मिलते हैं।

**खोखा व्है तौ खावां, गीत व्है तौ गावां।** ३११०

खोखे हो तो खालें, गीत हो तो गालें।

—पास में हो तो कुछ भी खालें, खुशी का अवसर हो तो गीत गालें।

—जैसी परिस्थिति हो, उसी के अनुसार चलना चाहिए।

**खोज जावै पण खरणौ कठै जावै!** ३१११

निर्वश होने पर गोत्र कहाँ मिटता है!

खरणौ = गोत्र, अनुवांशिकता, पुश्तैनी लक्षण।

—एक व्यक्ति का वंश नष्ट होने से शेष गोत्र तो समाप्त नहीं होता।

—एक सदस्य के बिगड़ने से सारा कुल तो नहीं बिगड़ता।

—व्यक्ति का भले ही देहावसान हो, कुटुंब नहीं मिटता।

**खोटाई रौ खाटलौ।** ३११२

कुटिलता की खटिया।

—जिस व्यक्ति के भीतर जाल-साजी का ताना-बाना हो।

—कपट-जाल से गुँथे हुए व्यक्ति को लक्ष्य करके।

**खोटा कांम ठेट सूं कीन्हा, घर खाती नै मांग्या दीन्हा।** ३११३

बुरा काम टेट से किया, घर बढ़ई को सौंप दिया।

—बढ़ई के हवाले घर करने से लकड़ी के काम की खटाखट चलती रहती है—आँगन टूट जाता है—पास रहने वाले सो नहीं पाते। बढ़ई को घर सौंपना हर दृष्टि से खराब काम है।

—बिना सोच-समझकर काम करने से बाद में पछताना पड़ता है।

**खोटा खत में मरयोड़ा री साख।** ३११४

खोटे खाते मे मरे हुए की साक्षी।

—कोई काम दुहरा गलत हो तब। इसी उक्ति के अनुसार खाता खोटा यानी गलत, तिस पर मरे हुए व्यक्ति की साक्षी।

—गलत काम की शुरुआत करने से गलतियाँ जुडती रहती है।

**खोटा-खरा री रांम जांणै।** ३११५

खोटे खरे की राम जाने।

दे क मं. २७८६

**पाठा : खोटा खरा रौ राम साखी।** खोटे खरे का राम साक्षी।

**खोटा ना खटका मसाणा माते निकळे।**– भी. १७५ ३११६

बुरों के बदले मसान पर निकलते है।

—दुष्ट व्यक्ति जब तक जिदा रहता है, तब तक तो उसका सामना करने का साहस नहीं होता। उसका बदला तो मरने के बाद लिया जाता है। बहुत कम व्यक्ति उसकी दाहक्रिया में जाते है और जाने वाले श्मशान में उसकी निदा करते हैं।

—आततायी का मरने के बाद नाम ही भुला दिया जाता है, यदि रहता भी है तो बदनामी के रूप में ही।

**खोटा नू खरु करे जणां नो नाम आदमी।**– भी १७६ ३११७

खोटे को खरा बनाये उसी का नाम आदमी।

—बुरे काम को सुधारे, यही आदमी की सही पहिचान है।

—बुरे व्यक्ति को भला बनाने मे ही आदमी की सर्वोपरि सिद्धि है। इसीलिए हृदय-परिवर्तन बापू का मूल मंत्र था।

**खोटा रा खुरचणा मसांणां में निकळै।** ३११८

खोटे की निदा मसान मे होती है।

—बुरे व्यक्ति की अपकीर्ति मरने के बाद होती है।

—बदनाम व्यक्ति की निंदा चिता के साथ भी नहीं जलती, बल्कि और भी प्रज्वलित होती है।

मि.क.सं.३११६

**खोटा रा परवाड़ा खोटा व्है।** ३११९

खोटे का परिणाम खोटा ही होता है।

—बुरे का नतीजा बुरा होता है।

—सत्कार्य के लिए प्रेरणा।

**खोटी करां नीं हाथ जोड़ां।** ३१२०

न खोटी करे न हाथ जोड़े।

—जो व्यक्ति बुरा काम करेगा उसे लोगों की खुशामद करनी होगी। सीधे रास्ते चलने वाले को भला किसका डर!

—सज्जन व्यक्ति को किसी से दबने की जरूरत नहीं।

**खोटी-खरी वगत माथै कांम आवै।** ३१२१

खोटी-खरी वक्त पर काम आती है।

—भली-बुरी का परिणाम समय पर होकर रहता है।

—भले का नतीजा भला और बुरे का अजाम बुरा तत्काल न भी हो पर समय बीतने पर होता ही है।

**खोटी बातां में हुंकारौ ई पाप।** ३१२२

खोटी बाते सुनना भी पाप।

—बुरी बात का समर्थन करना भी पाप है।

—जो व्यक्ति बुरी बातें सुनना तक पसंद न करे।

**खोटी मिन्नी कांई अपसूंणां सूं ई गी।** ३१२३

खोटी बिल्ली क्या अपशकुनो से ही गई।

—बिल्ली का रास्ता काटना अपशकुन माना जाता है। बिल्ली कैसी ही मरियल हो, बुरी हो, राह काटने पर अपशकुन तो कर ही डालती है।

—बुरा व्यक्ति राह चलते बुराई कर देता है, आदत से लाचार जो है।

**खोटी संगत रा फळ ई खोटा।** ३१२४

खोटी संगत के फल ही खोटे।

—जिस प्रकार पागल कुत्ते से बचना जरूरी है, उसी प्रकार बुरी संगत से बचना भी जरूरी है, क्योंकि उसका बुरा फल सुनिश्चित है।

—संगति का प्रभाव अवश्यंभावी है। अच्छी संगत का असर पड़े-न-पड़े पर बुरी संगति का बुरा प्रभाव तो पड़ता ही है।

**खोटी संतान, रूस्यौ भगवांन।** ३१२५

खोटी संतान, रूठा भगवान।

—भगवान के विमुख होने पर ही बुरी सतान पैदा होती है।

—बुरी सतान से बढकर अन्य कोई दुर्भाग्य नही।

**खोटै खतां साख कुण घालै ?** ३१२६

खोटे खातो का साक्षी कौन बने ?

—जान-बूझकर बुरे काम में हाथ कौन डाले।

—बुरे काम मे सहयोग देना भी बुरा है।

पाठा : **खोटा खत में साख घालै जैड़ा है।**

खोटे खत में साख डाले जैसे है।

**खोटै बाटां साचौ तोल नीं निकळै।** ३१२७

खोटे बटखरो से सही तोल नही निकल सकता।

—गलत मापदड से सच्चाई की परख नहीं होती।

—सत्य का अन्वेषण तभी सभव है जब उसे प्राप्त करने के साधन भी उत्तम हों।

—गलत राह मे आदर्श मजिल तक नहीं पहुँचा जाता।

**खोटौ-खरौ तौ ई गांठ रौ, भूंडौ-भलौ तौ ई पेट रौ।** ३१२८

खोटा-खरा फिर भी गाँठ का, बुरा-भला फिर भी पेट का।

—अपना व्यक्ति ही समय पर काम आता है, चाहे वह कैसा ही बुरा-भला क्यों न हो।

—अपना सो अपना ही।

**खोटौ खरौ वगत पड़्यां कांम आवै।** ३१२९

खोटा-खरा वही जो वक्त पर काम आये।

—बुरा व्यक्ति भी कठिनाई में काम आ सकता है, इसलिए बुरे लोगों की अवज्ञा नहीं करनी चाहिए। रिश्तेदार बुरा भी है तो वक्त पर काम आता है।

—बुरों के प्रति सद्व्यवहार की नसीहत।

**खोटौ खावणौ अर खरौ कमावणौ।** ३१३०

रूखा-सूखा खाना और खरा कमाना।

—कमाई के अभाव में रूखे-सूखे से ही संतोष कर लेना चाहिए, पर किसी भी सूरत में बुरी कमाई नहीं करनी चाहिए।

—रहन-सहन का स्तर भले ही गिर जाय, पर आचरण नहीं गिरना चाहिए।

दे.क.सं.२७८७

**खोटौ खोटा री कमाई जावै।** ३१३१

खोटा खोटे की कमाई जाय।

—जो बुरा काम करेगा वह उसका दुष्परिणाम भोगेगा, यह सोचकर जब क्षमाशील किसी व्यक्ति को क्षमा करे तब इस उक्ति का प्रयोग करता है।

—बुरा करने वाला स्वय कभी-न-कभी उसकी सजा पाकर रहता है।

**खोटौ टकौ व्है ज्यूं।** ३१३२

खोटे टके की नाईं।

—जो व्यक्ति किसी काम का न हो, उसकी कद्र खोटे सिक्के की तरह ही होती है।

—जो व्यक्ति इधर-से-उधर भटकता रहे।

**खोटौ दिन आवै जद पूछ'र कोनीं आवै।** ३१३३

खोटे दिन आते हैं तो पूछकर नहीं आते।

—बुरे दिनों की पूर्व सूचना नहीं मिलती।

—दुर्दिन अकस्मात् आ धमकते हैं।

पाठा : **खोटौ दिन बूझ'र कोनी आवै।** खोटा दिन पूछकर नहीं आता।

**खोटौ नारेळ होळी देवरै।** ३१३४

खोटा नारियल होली व देवता के लिए।

—सड़ा-गला नारियल कोई खाने के लिए काम न भी ले, पर होली में जलाने के लिए या देवताओं को चढ़ाने कि लिए तो काम आ ही जाता है।

—बड़े आदमियों के यहाँ बुरे-भले सब पलते हैं।

—जहाँ पोल होती है, वहाँ गड़बड़ की गुंजाइश रहती है।

**खोटौ बळद धणी नै गाळ कढ़ावै।** ३१३५

खोटा बैल मालिक को गाली दिलवाता है।

—बदमाश बैल किसी की फसल में मुँह मारता है तो लोग उसके मालिक को गालियाँ देते हैं।

—बुरा या दुष्ट व्यक्ति सारे परिवार को लांछित करता है।

—कुटिल व्यक्ति का आचरण केवल उस तक ही सीमित नहीं रहता, वह सारे परिवार को प्रभावित करता है।

**खोटौ बळद बुचकारा रै हेवा।** ३१३६

खोटा बैल पुचकारने का आदी।

—ढीला बैल गाड़ीवान के पुचकारते ही रुक जाता है, जैसे उसी की प्रतीक्षा हो।

—आलसी व्यक्ति को काम छोड़ने का बस बहाना भर चाहिए।

—कामचोर व्यक्ति हरदम किसी-न-किसी बहाने की ताक में रहता है।

पाठा : **खोटौ बळद बुचकारै री वाट जोवै।**

**खोटौ बेटौ खोटौ पीसौ, अड़ी-भिड़ी में कांम आवै।** ३१३७

खोटा बेटा और खोटा पैसा, वक्त-बेवक्त काम आता है।

—जिस प्रकार निठल्ला लड़का हरदम घर पर ही रहता है,उसी प्रकार खोटा सिक्का बाजार में नहीं चलने की वजह से घर में रखा रह जाता है। जरूरत के वक्त ये किसी-न-किसी काम में आ जाते हैं।

—हर बुरी-भली चीज की कुछ-न-कुछ उपयोगिता तो होती है।

**खोटौ सिक्कौ चालै कोनीं।** ३१३८

खोटा सिक्का चलता नहीं।

—दोष छिपे नहीं रहते,उनकी अदेर पहिचान हो जाती है।

—कामचोर या बुरे व्यक्ति की कहीं पूछ नहीं होती।

**खोड़ली खाट खोड़ला पाया, खोड़ली रांड खोड़ला ई जाया।** ३१३९

टूटी खटिया टूटे पाये, बदजात राँड ने बदजात ही जाये।

—जैसा परिवेश वैसा आचरण।

—जैसा खानदान वैसी संतान।

**खोड़ावै ऊंट अर डांमीजै गधौ।** ३१४०

लँगड़ाये ऊँट और गधा दाग भुगते।

—ऐसी मान्यता है कि ऊँट के पाँव में कोई गड़बड़ हो जाय तो गधे को दाग लगाते हैं। जिस से ऊँट स्वत: ठीक हो जाता है।

—अपराध तो कोई दूसरा करे और उसकी सजा निर्दोष व्यक्ति को मिल जाय, तब।

मि.क.सं.३२६,१२८८

**खोड़ी बाई फूस बुहारौ के नव जणा टांग उंचावौ।** ३१४१

लँगड़ी बाई फूस निकालो कि नौ जन टाँग उठाओ।

—अयोग्य व्यक्ति को काम सौंपने से वह अपने साथ दूसरों का समय भी नष्ट करता है।

—अकर्मण्य व्यक्ति की बहानेबाजी पर व्यंग्य।

**पाठा : खोड़ी वऊ वाईदौ काढ़ै अर सात जणा टांग जमावै।**

लँगड़ी बहू फूस निकाले और सात जन टाँग जमाएँ।

**खोड़ीया ढीला मेलो, अदर अदर फरय्ये काम नी चाले।**– भी.१७८ ३१४२

कंधे ढीले करो, आराम के साथ घूमने से काम नही चलता।

—काम करते समय कंधों को तनिक ढीला छोड़ना पड़ता है, वरना दिक्कत होती है।

—आराम की अवहेलना और कर्मठता का बखान।

—आराम हराम है और काम ही इनाम है। आराम का तिरस्कार और काम को पुरस्कार।

**खोतरे ज्योत पड़े, वावे जो लूणे।**– भी.१७९ ३१४३

खोदेगा सो पड़ेगा, बोयेगा सो काटेगा।

—दूसरों को नुकसान पहुँचाने वाला, खुद नुकसान उठायेगा। जो स्वयं खेती करेगा वही खेती का अधिकारी होगा।

—बुरे का नतीजा बुरा। परिश्रम करने वाले को ही अधिकतम पारिश्रमिक मिले, इस कथन के ये दो ही प्रमुख संदेश हैं।

**खोदत पांणी नै घोखत विद्या।** ३१४४

खुदाई से पानी और रटने से विद्या।

—निरंतर खोदने से आखिर पानी निकलता ही है और हरदम पढ़ने या रटने से विद्या हासिल होती ही है।

—अभ्यास व परिश्रम से आखिर सफलता मिलती ही है।

**खोदसी सो पड़सी।** ३१४५

खोदेगा वही गिरेगा।

दे.क.सं. २८७०, २९९८

**खोदै ऊंदर नै भोगै सांप।** ३१४६

खोदे चूहा और भोगे साँप।

—दूसरों की संपत्ति को हथियाने वाले के लिए।

—गरीब का शोषण शक्तिशाली करता ही है।

**खोदै सो पड़ै, बावै सो लूणै।** ३१४७

खोदेगा वह गिरेगा, बोएगा वही बीनेगा।

दे.क.सं.३१४३

**खोद्यौ डूंगर, काढ़्यौ ऊंदर।** ३१४८

खोदा पहाड़ और निकली चुहिया।

दे.क.सं.२९९९

**खोधा-खोधा आथड़ै बांटां रौ खोगाळ।** ३१४९

साँडों की लड़ाई में झाड़ियों का विनाश।

—बड़े आदमियों के झगड़े में छोटे व्यक्तियों को हानि उठानी पड़ती है।

—राजाओं की लड़ाई में निरीह प्रजा का कचूमर निकल जाता है।

**खोपड़ी-खोपड़ी री मत न्यारी।** ३१५०

खोपड़ी-खोपड़ी की भिन्न मति।

—हर व्यक्ति का स्वभाव भिन्न होता है।

—किसी भी व्यक्ति की बुद्धि एक-सी नहीं होती।

—सं. मुंडे-मुंडे मतिर्भिन्ना।

**खोपड़ी-खोपड़ी री रंगत न्यारी।** ३१५१

खोपड़ी-खोपड़ी का रंग निराला।

—हर व्यक्ति के मिजाज का रंग निराला ही होता है।

—संसार में जितने भी व्यक्ति हैं, सबके भाव और विचार भिन्न होते हैं।

**खोपरौ देय खोपौ लिख्यौ।** ३१५२

खोपरा (नारियल) देकर (खोपा) बैंल लिखा।

—लिखावट में अकिंचन फर्क होने पर भी दोनों के मोल में वहुत फर्क है। जो बोहरा किसान को 'खोपरा' उधार देकर 'खोपा' लिखकर उसका शोषण करे, उसके प्रति कटाक्ष।

—कसाई छुरी से बकरे को हलाल करता है और बोहरा कलम से इनसानों का गला घाक करता है।

—जो कुटिल सरासर विश्वासघात करे, उस पर व्यंग्य।

**खोपरौ फिर्‌यां पछै सावौ तै छै।** ३१५३

नारियल फिरने पर लग्न तय है।

—बात पुख्ता करने के लिए 'ताम्रपत्र' लिखना जरूरी नहीं होता, मामूली रस्म ही काफी होती है।

—सच्चे व्यक्ति हर सूरत में बात की पाबंदी रखते हैं।

**खोपा खड़ै डोफा।** ३१५४

बैल हाँके गँवार।

—जो जिस योग्य होता है, वह वैसा ही काम करता है।

—गँवार व्यक्ति का गँवारूपन उसके काम से ही चरितार्थ हो जाता है।

—श्रीमंत खेती या शारीरिक श्रम को हिकारत की दृष्टि से देखते हैं।

**खो री माटी खो में रैवै।** ३१५५

खोह की मिट्टी खोह में रहती है।

—घर की बात घर में ही रह जाय तब।

—जो कंजूस व्यक्ति कभी किसी के काम न आये।

**पाठा : खूह री माटी खूह में जाय।** खोह की मिट्टी खोह में जाए।

**खो री माटी खो में लागै।** खोह की मिट्टी खोह में लगती है।

मि.क.सं. २३९६

**खोळ लेवण आई अर खेत री धणियाप।** ३१५६

घास काटने के लिए आई और खेत पर अधिकार।

खोळ लेवणी = पके हुए घास को काटना।

— यत्‌किंचित् फायदा देने पर जो व्यक्ति अधिकतम लाभ का हठ करे तब।

—मामूली अधिकार की छूट मिलते ही हर व्यक्ति पूरा अधिकार जमाना चाहता है। यह मनुष्य की सहज प्रवृत्ति है। ईस्ट इंडिया कंपनी इसका उपयुक्त उदाहरण है।

**खोळायत बेटौ अर लौड़ी लुगाई तौ मौज मनावण नै ई आवै।** ३१५७

गोद का बेटा और लौंड़ी पत्नी तो मौज मनाने को ही आते हैं।

—गोद का लड़का तो मुफ्त का माल हड़पने ही आता है, फिर मौज क्यों नहीं मनायेगा ! छोटी बहू के प्रति आकर्षण अधिक होता है, प्रेम का नया आधार जुड़ता है और इसके विपरीत बड़ी पत्नी से अरुचि होने लगती है । तब छोटी पत्नी मौज करने के लिए क्यों चूके ? अपना-अपना दॉव है ।

**खोळायत बेटौ फाटा गाभा रै कारी ज्यूं ।** ३१५८

गोद का बेटा फटे वस्त्र पर पैबंद की नाईं ।

—गोद आये पुत्र को तो घरवालों के प्रति लगाव होता नहीं, वह तो ऊपरी मन से अपने स्वार्थ की खातिर बनाकर रखता है जैसे फटे कपड़े पर पैबंद लगा हो ।

—खून के सगे रिश्ते में ही सच्ची आत्मीयता होती है ।

**खोळा रौ बेटौ नै नातायत रौ कांई भरोसौ !** ३१५९

गोद के पुत्र व नाते आई औरत का क्या भरोसा !

नातायत = पति के मरने पर या जीते जी जो औरत दूसरे से शादी करे उसे नातायत कहते हैं ।

—लोभ या संपत्ति के वशीभूत जो व्यक्ति आत्मीयता का दिखावा करे उसका क्या भरोसा ?

—स्वार्थ के संबंध ज्यादा टिकाऊ नहीं होते ।

**खोळी व्है तौ पूर आपै ई घाल़ीजै ।** ३१६०

गिलाफ हो तो चिथड़े स्वत: आ जाते हैं ।

—कुछ-न-कुछ आधार होने पर शेष साधन अपने-आप जुट जाते हैं ।

—बीमार की देह बच जाये तो बाद में माँस, मज्जा, रक्त अपने-आप बढ़ने लग जाते हैं ।

**खोळै मांयला नै छोड पेट मांयला री आस करै ।** ३१६१

गोदी के बच्चे को छोड़कर कोख वाले की आशा करे ।

—निश्चित लाभ के बदले जो व्यक्ति अनिश्चित लाभ की कामना करे ।

—सामने का प्रत्यक्ष फायदा छोड़कर जो व्यक्ति अदृष्ट फायदे की चेष्टा करे ।

**ख्याल खिलाड़ियां रा अर घोड़ां असवारां रा ।** ३१६२

खेल खिलाड़ियों के और घोड़े सवारों के ।

—अपनी-अपनी प्रवीणता के अनुरूप ही हर बात शोभा देती है।

—जो व्यक्ति जिस काम में कुशल या सिद्धहस्त हो उसे वही काम करना चाहिए।

—हर काम हर व्यक्ति के वश का नहीं होता।

—अयोग्य व्यक्ति से कोई काम पार न पड़े तब ...।

# गं - ग

**गंगा कुण खुदाई ?** ३१६३

गंगा किसने खुदाई ?

—जो काम किसी भी व्यक्ति के वश का न हो।

—जो व्यक्ति अनहोना काम करने का प्रयास करे तब व्यंग्य में कहा जाता है कि शायद गंगा तुमने तो नहीं खुदाई।

**गंगा गियां गंगादास, जमनां गियां जमनादास।** ३१६४

गंगा गये गंगादास, जमुना गये जमुनादास।

—जो व्यक्ति मौका देखकर अदेर अपनी धारणा बदले।

—निपट अवसरवादी व्यक्ति के लिए। आज के नेताओं का प्रमुख लक्षण।

**गंगाजी जावतां कोढ़ उपड़ियौ।** ३१६५

गंगाजी जाते समय कोढ़ उघड़ा।

—शुभ कार्य के समय अकस्मात् कोई अड़चन आ खड़ी हो तब।

—दुर्भाग्य अवसर की प्रतीक्षा नहीं करता।

—पुण्य अवसर पर कोई अमंगल हो तब।

—एक संकेत यह भी हो सकता है कि उपयुक्त समय पर ही आफत आई, जबकि इसके निवारण का उपाय भी सामने है। जिस प्रकार गंगाजी जाते समय यदि कोढ़ भी उघड़े तो चिंता की बात नहीं, गंगा के पानी का चमत्कार ही ऐसा है कि उस में नहाते ही कोढ़ मिट जाता है। ऐसा विश्वास है।

**गंगाजी तिगरा में कद मावै ?** ३१६६

गंगाजी तिगरे में कहाँ समाये ?

तिगरौ = पक्षियों को पानी पिलाने के लिए मिट्टी का छोटा बासन जो अमूमन वृक्षों की डाली में टाँक दिया जाता है।

—जो व्यक्ति अपने मिथ्या अहंकार में असंभव काम को संपन्न करने की निरर्थक चेष्टा करे।

—पर्याप्त साधनों के अभाव में कोई भी बड़ा कार्य पूरा नहीं हो सकता।

—जो व्यक्ति अकिंचन दान के बदले बड़े पुण्य की आकांक्षा करे तब।

—जब कोई लंपट व्यक्ति किसी पतिव्रता औरत के सहवास की कामना करे तब !

**गंगाजी रौ आवणौ अर भागीरथ नै जस।** ३१६७

गंगा का आना और भगीरथ को यश।

—संयोग का करिश्मा कि स्वत: घटित होने वाले कार्य का किसी को खामखाह यश मिल जाय तब।

—किसी श्रेष्ठ कार्य का अवांछित फल किसी को झूठ ही मिल जाय तब।

**गंगाजी सांपड़िया अर संखिया लाया।** ३१६८

गंगाजी नहाये और शंखिये लाये।

संखियौ = एक प्रकार का छोटा घोंघा।

—निहायत नासमझ या नादान व्यक्ति जो नगण्य काम के लिए भारी परिश्रम उठाये।

—जो व्यक्ति अत्यंत महत्त्वपूर्ण पर्व का किंचित् भी लाभ न उठा सके।

**गंगा न्हायां गधौ किसौ घोड़ौ व्है !** ३१६९

गंगा नहाने से गधा घोड़ा नहीं होता !

—अधम व्यक्ति ज्ञान, विद्या या परिष्कार से बड़ा नहीं बन सकता।

—दुष्ट व्यक्ति उपदेशों से नहीं सुधरता।

—ऊपरी आडंबर से मूलभूत स्वभाव नहीं बदलता।

**गंगा न्हाया।** ३१७०

गंगा नहाये।

—जब कोई व्यक्ति बड़ा काम संपन्न करके अपनी जिम्मेवारी से मुक्त हो जाय तब वह संतोष का श्वास लेते हुए इस उक्ति का प्रयोग करता है।

—किसी बड़ी आफत से छुटकारा पाने पर।

**गंगा रौ इज नीर।** ३१७१

गंगा का ही नीर।

—अत्यंत निर्मल व निष्कपट व्यक्ति के लिए।

—निहायत सज्जन व शालीन व्यक्ति के लिए संबोधन।

**गंजा रै भाग रा गिड़ा पड़ै।** ३१७२

गंजे के भाग्य से ओले गिरें।

—अभागे व्यक्ति पर दुर्योग की मार पड़े तब।

—निरीह व्यक्ति पर जब कोई अचीती आफत आ जाय तब!

**गंजी माथौ गुंथावण चाली।** ३१७३

गंजी सिर गुँथवाने चली।

—अक्षम व्यक्ति निरर्थक आकांक्षा करे तब।

—अभावग्रस्त व्यक्ति हवाई-महल बनाये तब।

—अदने मनुष्य की बड़ी महत्त्वाकांक्षा।

**गंजै नै नाई रौ के धरावणौ ?** ३१७४

गंजे पर नाई का क्या एहसान ?

—जिस व्यक्ति को किसी से दूर का भी सरोकार न हो, तब भला वह क्यों उसकी परवाह करे।

—जिस चीज की सपने में भी जरूरत न हो, तब कोई उसके बारे में क्यों सोचे!

**गंजै नै रांमजी नख को देवै नीं।** ३१७५

गंजे को भगवान नाखून नहीं देता।

गंजौ = सामान्यतया बढ़ती उम्र के साथ धीरे-धीरे बाल उड़ने वाली गंज से यहाँ तात्पर्य नहीं है। राजस्थानी में जिसे (चांय) कहते हैं, उसमें लच्छे-के-लच्छे बाल उड़ते हैं, पीप रिसती है

और काफी खुजली चलती है। तब मजबूर होकर गंजे को सिर खुजलाना पड़ता है। तीखे नाखून हों तो गंज लहूलुहान हो जाय। इस कारण गंजे को भगवान नाखून नहीं देता—ऐसी लोक मान्यता है। फलस्वरूप गंजा दोहरी मार से बच जाता है।

—नासमझ व्यक्ति साधन या अधिकारों का दुरुपयोग करके अपना ही अहित करता है।

—दुष्ट व्यक्ति को यदि कोई खतरनाक शस्त्र या अन्य अधिकार मिले तो वह दूसरों को तबाह कर दे।

—किसी धूर्त व्यक्ति को उसकी इच्छा के अनुरूप पर्याप्त साधन न मिलें तब।

**गंजो'र कांकरां में लुटै।** ३१७६

गंजा और फिर कंकरों में लोटे।

—जिस नादान व्यक्ति को अपने भले-बुरे का कतई ध्यान न हो।

—जो व्यक्ति नासमझी से अपना दुहरा नुकसान करे।

पाठा : **गंजो'र कांकरां में गुळांचां खावै।** गंजा और फिर कंकरों पर कुलाँचें खाये।

**गंडकडूं हूं गोठी पणा चेनाळ ना हूं संग।**– भी.१८२ ३१७७

कुत्ते से क्या यारी और छिनाल का क्या संग।

—दुष्ट की मित्रता और कुलटा के सहवास का एक ही परिणाम होता है, किसी-न-किसी तरह की हानि और बदनामी।

—उक्ति की सीख के मुताबिक मनुष्य को दुष्ट व्यक्ति से दोस्ती और छिनाल का साथ नहीं करना चाहिए।

**गंधी देहीना हूं भरोसो !**– भी.१८६ ३१७८

गंदी देह का क्या भरोसा !

—देह के भीतर भी गंदगी है और नाशवान भी है, कब विनष्ट हो जाय, पता नहीं चलता।

—जब मनुष्य की देह क्षणभंगुर है तो उसे शाश्वत माया के स्वप्न नहीं सँजोने चाहिए और हमेशा सत्कार्यों की ओर ही प्रवृत्त होना चाहिए।

**गई आबरू पाछी नीं आवै।** ३१७९

गई आबरू वापस नहीं आती।

—मनुष्य को ऐसा कोई काम नहीं करना चाहिए, जिससे घर की इज्जत या आबरू पर बट्टा लगे।

—एक बार इज्जत गई सो गई, वापस नहीं सुधरती।

**गई तिथ बांमण ई को बांचै नीं।** ३१८०

गई तिथि ब्राह्मण भी नहीं बाँचता।

—जो समय गुजर गया सो गुजर गया, उसके बारे में परेशान होना या उसे याद करना कुछ भी माने नहीं रखता।

—बीते हुए समय का कोई महत्त्व नहीं, भविष्य का ध्यान रखना चाहिए।

**गई तीजै कांन अर फैली जहांन।** ३१८१

गई तीसरे कान और फैली जहान।

—भेद मुँह से प्रकट हुआ और वह हवा की नाई सर्वत्र फैला।

—कैसे भी विश्वस्त व्यक्ति को रहस्य की भनक तक नहीं पड़ने देनी चाहिए।

**गई बहू गियौ कांम, आई बहू आयौ कांम।** ३१८२

गई बहू गया काम, आई बहू आया काम।

दे.क.सं.६०३

**गई बात नै घोड़ा ई नीं पूगै।** ३१८३

गई बात को घोड़े भी नहीं पकड़ सकते।

—दुनिया की कैसी भी वेगवान शक्ति बीते समय को नहीं पकड़ सकती।

—समय की गति विचित्र है, वह आगे-ही-आगे चलता है, पीछे नहीं लौट सकता, इसलिए उसका एक पलांश भी व्यर्थ न खोकर भविष्य के प्रति सतर्क रहना चाहिए।

**गई बात नै जांण दे, रही बात नै सीख।** ३१८४

गई बात को जाने दे, रही बात को सीख।

—गया सो गया, अब निःशेष समय से या धन से या मान से सबक लेना चाहिए।

—गया लौटाया नहीं जा सकता, तब बचे हुए की हिफाजत करना ही श्रेयस्कर है।

**गई बात रौ कांईं कैणौ-कथीणौ !** ३१८५

**बीती बात का क्या कहना-सुनना !**

—गुजरी हुई बात की चर्चा करना व्यर्थ है। समय की बर्बादी के अलावा कुछ भी हासिल नहीं होता।

—बीती बातों को भुला देना चाहिए, वरना बेकार तनाव या फितूर रहता है।

**पाठा : गई बातां रौ कांईं पिछतावौ !** गई बातों का क्या पछतावा !

**गई भूख नै हेला पाड़ै।** ३१८६

गई बला को पुकारता है।

—जो व्यक्ति बार-बार उलटे-सीधे काम करके नुकसान की राह आगे बढ़े।

—जो व्यक्ति जान-बूझकर आफत को न्योता दे।

**गई भैंस पांणी में।** ३१८७

गई भैंस पानी में।

—आशा के विपरीत जब कोई काम बिगड़ जाए तब।

—देखने-देखते भारी नुकसान हो जाए तब।

—जिस बात को सुधारने की रंचमात्र भी गुंजाइश न रहे तब।

**गई साख तौ बेचौ राख।** ३१८८

गई साख तो बेचो राख।

—यदि प्रतिष्ठा ही विगड़ गई तो सारा जीवन ही व्यर्थ है, राख बेचने के समान है।

—बदनाम व्यक्ति जीता नहीं, झख मारता है।

**गई ही छाछ लावण नै, दोवणी वौळाय आई।** ३१८९

गई थी छाछ लाने, हँडिया ही छोड़ आई।

—किसी काम के बहाने लेने-के-देने पड़ जाएँ तब।

—स्वार्थ पूरा होने की बजाय उस में क्षति हो जाय, तब।

**गऊं तौ गुटली-बायरौ मेवौ है।** ३१९०

गेहूँ तो गुटली-रहित मेवा है।

—जीवन का पोषण करने वाले गेहूँ से बढ़कर अन्य कोई मेवा नहीं।

—दूसरे अनाज की अपेक्षा गेहूँ ज्यादा पौष्टिक है। मेवे के समान गेहूँ की प्रशस्ति।

**गऊं नै गोयलौ तौ भेळा ई निपजै।** ३१९१

गेहूँ और गोयला तो साथ ही पैदा होता है।

गोयलौ = गेहूँ के साथ पैदा होने वाली घास या खरपतवार।

—इस दुनिया में अच्छे और बुरे सब साथ ही उत्पन्न होते हैं और साथ-साथ ही पनपते हैं।

—संसार में अच्छाई के साथ बुराई भी जुड़ी हुई हैं।

**पाठा : गवूं अर गोयलौ भेळा इज मोटा व्हिया।**

**गऊ मार्‌यां रौ पाप लागै।** ३१९२

गाय मारने का पाप लगे।

—जो व्यक्ति जाने या अजाने किसी भी तरह का गलत काम कर डाले और पछतावा करते यह शपथ ले कि भविष्य में ऐसी गलती दुहराये तो उसे गाय मारने का पाप लगे।

—आगे के लिए गलत काम न करने का संकल्प।

**गऊ-मुखौ नाहर।** ३१९३

गौ-मुखा नाहर।

—जो व्यक्ति दिखने में भोला व सरल हो, किंतु वास्तव में मन का निहायत कुटिल व दुष्ट हो।

—जो दुष्ट व्यक्ति विनम्रता का मिथ्या ढोंग रचे।

**गऊ-संतन रै कारणै हर बरखावै मेह।** ३१९४

गाय व संतों की खातिर प्रभु बरसाये मेह।

—भोली गायों व महात्माओं के भाग्य से सभी को कुदरत के अच्छे फल प्राप्त होते हैं।

—सज्जन व्यक्तियों की खातिर ही प्रकृति सबको सुख प्रदान करती है।

**गडर-प्रवाही लोक।**—व.२५० ३१९५

भेड़-चाल रैयत।

—एक भेड़ कुएँ में गिरती है तो उसके पीछे सारी भेड़ें गिर पड़ती हैं।

—आम जनता की प्रवृत्ति भेड़ों के समान होती है।

—एक दूसरे की देखा-देख काम करना, मनुष्य का स्वभाव है।

**गड़ फूटौ अर वेदन मिटी।** ३१९६

गड़ फूटा और वेदना मिटी।

गड़ = नितंबों पर पका फोड़ा।

—कलह व झगड़े का मूल कारण मिटा और झंझट खत्म हुआ।

—दुख देने वाली बुनियाद दूर हुई और जी को शांति मिली।

**गडूरड़ा तौ मैलौ इज खासी।** ३१९७

ग्राम-शूकर तो मैला ही खाते हैं।

गडूरड़ौ = सूअर से मिलता-जुलता एक जानवर जो बस्ती में गंदे स्थानों पर रहता है और मनुष्य के मल का भक्षण करता है। सूअर की भाँति इसके मुँह से बाहर निकले हुए दाँत नहीं होते। हरिजन इसे पालते हैं और इसका माँस भी खाते हैं।

—हीन स्वभाव वाला व्यक्ति किसी भी सूरत में अपनी हीनता नहीं छोड़ पाता।

—गंदे आदमी के आचरण से गंदगी कभी नहीं मिटती।

**पाठा : गडूरड़ा तौ मैलौ इज फिरोळै।** ग्राम-शूकर तो मैला ही छितराते हैं।

**गडू जोई ने गुणते घाल्यू तो काम आघूं।**– भी.१८३ ३१९८

बुड्ढा देखकर बोरे में डाला तो काम आ गया।

**संदर्भ-कथा :** एक राजा बड़ा सनकी था। उसकी हर सनक से राज्य के खजाने की काफी क्षति होती थी। एक बार उसने राज के पंडितों से सूर्य-ग्रहण के बारे में सुना तो पूछा कि सूर्य-ग्रहण क्यों होता है? पंडितों ने कहा—राहु नामक ग्रह सूरज को ग्रस लेता है, तब सूर्य-ग्रहण होता हे? क्यों ग्रस लेता है, कैसे ग्रस लेता है? ग्रसने के बाद छूटता कैसे है? राजा के सवालों का माकूल जवाब नहीं मिला तो राजा की सनक दिमाग में खदबदाने लगी। आदेश दिया कि इसी सूर्य-ग्रहण से एक महीने पूर्व सूरज तक पहुँचकर ग्रहण का सही पता करना है। सो हृष्ट-पुष्ट हजार घोड़े और हजार ही हृष्ट-पुष्ट नौजवान सूर्य की खोज में निकलेंगे। एक भी घोड़ा न पाँच बरस से कम हो न बड़ा। और न एक भी सवार पच्चीस बरस से छोटा हो न बड़ा। यदि किसी ने भूल-चूक से भी किसी बूढ़े व्यक्ति को साथ ले लिया तो उसकी खैर नहीं है। पर एक

सिपाही के घर में बूढ़े बाप के अलावा दूसरा कोई व्यक्ति नहीं था। बाप भी मरियल और बुद्धिमान ! उसने तो किसी से भी सलाह नहीं ली। और भातड़े में डालकर पीठ पर बाँध लिया। भातड़े में दस-बीस छेद कर दिये ताकि पिता सांस ले सके। बस, राजा की सनक के आगे, किसका विवेक काम देता। सो पंद्रह दिन पहले वह हजार सिपाही लेकर सूर्य-ग्रहण का पता करने गाजे-बाजों के साथ रवाना हो गया।

संयोग की लीला ऐसी हुई एक भीषण अँधेरे जंगल के बीच वे बुरी तरह फँस गए। तीन दिन चक्कर मारते रहे पर बाहर निकलने की बजाय उलटे अँधेरे में धँसते गए। न पानी न खाना। मौत अँधेरे का रूप धरकर आई, इस में कोई संदेह नहीं। किसी भी सिपाही का दिमाग काम नहीं दिया। राजा भी पूर्णतया हताश हो गया। ऐसी मौत मरेगा, इसकी कल्पना तक नहीं थी। साँस उखड़ने लगी। तब उसने झीने स्वर में कहा—सौ ही गुनाह माफ है। यदि कोई मेरी आज्ञा के खिलाफ किसी बूढ़े व्यक्ति को साथ लाया हो तो उस से पूछो—वरना सभी बेमौत मरेंगे। तब एक सिपाही ने भातड़े से पिता को बाहर निकाला। उसने समाधान तो भातड़े से बाहर निकलने के पहिले सोच लिया था। उसके कहते ही एक ताजी ब्याई घोड़ी लगाम से मुक्त होते ही बछेरे से मिलने की खातिर राज-दरबार की दिशा में तेजी से दौड़ी। तब उसके पीछे-पीछे हजार सवार भी दौड़ पड़े। राजा का घोड़ा सबसे आगे था। घोड़ी का पीछा करते-करते सभी सवार राजा के साथ राज-दरबार में पहुँचे। आराम से पानी पिया। सबकी जान बची। पिता की उम्र सौ वर्ष की थी, सो उसे सौ मोहरें पुरस्कार में मिलीं। तब से उस राजा ने पुख्ता तय कर लिया कि राज्य के खास दीवान की उम्र सौ वर्ष से कम नहीं होगी। वृद्ध दीवान को हरदम साथ रखता और उसका पूरा आदर करता। दुबारा प्राण तो उसी ने बख्शे हैं। हजार सिपाही तो और रख लिए जाते, पर इतना अनुभव और ऐसी सूझ-बूझ कहाँ से आती !

—वृद्धावस्था के अनुभव की पूँजी किसी राज्य के खजाने व राजा से बड़ी है।

**गड्डु ते मरे खोजे , मोट क्यार मरे लाजे ।**– भी. १८१ ३१९९

बुड्ढे अपनी आदत से मरते हैं लेकिन बड़े अपनी लाज के मारे।

—आदत के वशीभूत ऐसा काम नहीं करना चाहिए, जिस से किसी को दुख हो।

—वृद्ध लोग परंपरागत रीति की राह चलते हैं और बड़े लोग अपनी प्रतिष्ठा बनाये रखने की हर-चंद चेष्टा करते हैं।

**गड्डा टाळ ते गामनी ने खेड़ा टाळ ते वैरनी ।**–भी.१८० ३२००

बुजुर्गों के बिना गाँव नहीं, वक्त-सर वर्षा के बिना फसल नहीं ।

—अनुभवी बुजुर्गों से ही गाँव की पूछ होती है । वे वक्त पर बिगड़ी बात को सँभाल लेते हैं । और फसल के लिए जरूरत मुताबिक वारिश होती रहे तो वह अच्छी तरह पकती है ।

—गाँव में बड़े बुजुर्ग और बरसात का समान महत्त्व है ।

**गढ़-किला तौ बांका ई भला ।** ३२०१

गढ़-किले तो बाँके ही भले ।

—गढ़-किले तो निराले और मजबूत ही होने चाहिएँ ।

—बड़े काम तो अपनी शोभा के अनुरूप ही संपन्न होते हैं ।

—बड़े आयोजन का ठाट ही बड़ा ।

**गढ़, गढ़ां रै पांवणा ।** ३२०२

गढ़, गढ़ों के पाहुन ।

—गढ़ के मेहमान गढ़ ही होते हैं ।

—श्रीमंत ही श्रीमंतों के अतिथि होते हैं, बाकी इनका सत्कार करने की किसकी औकात है भला ।

—बड़ों के संबंध भी बड़ों से ही होते हैं ।

**गढ़ गली भराणी, भीलड़ी धादी ।**–भी.१८४ ३२०३

'घड़े' जैसा छोटा बासन भी अनाज से भर जाय तो भीलनी तृप्त है ।

—संतोष की इससे सुंदर मिसाल क्या मिल सकती है कि घड़े भर अनाज से भीलों का जीवन तुष्ट हो जाता है । आर्थिक अभाव के प्रति लज्जा महसूस करने की बजाय वे गर्व अनुभव करते हैं । खुशी से नाचते हैं । गाते हैं ।

—मनुष्य को धन की अंतहीन लालसा न करके थोड़े ही में खुश रहने का दर्शन सीखना है । थोड़ा जितना ही मीठा !

**गढ़ बांका कोनीं गढ़पति बांका है ।** ३२०४

गढ़ बाँके नहीं गढ़पति बाँके हैं ।

—रण-बाँकुरे गढ़पति ही गढ़-किलों पर विजय पाते हैं और उनकी रक्षा करते हैं।

—यदि राजा शक्तिशाली है तो किला भी सुरक्षित है, अन्यथा कैसे भी सुदृढ़ किले को ढहते क्या देर लगती है !

**गढ़ रै पिछाड़ी अर मढ़ रै अगाड़ी।** ३२०५

गढ़ के पीछे और मढ़ के आगे।

दे.क.सं.२६७८

**गढ़ां-मढ़ां बंट होवै नीं।** ३२०६

गढ़ व मठ का बँटवारा नही होता।

—सामंत-काल में समाज की रक्षा का भार राजा पर तथा धर्म की जिम्मेवारी मठ-मंदिरों पर निर्भर करती थी। यदि राज्य व मंदिरों का बँटवारा हो तो वे धीरे-धीरे कमजोर पड़ने लगते हैं।

—केंद्रीय-सत्ता का सुदृढ़ होना नितांत अनिवार्य है।

**गढ़ां रै गढ़ ई जाया।** ३२०७

गढ़ों के गढ़ ही पैदा होते है।

—गढ़ में ही गढ़ को जन्म देने का सामर्थ्य होता है।

—बड़े कुल में ही महान-हस्तियों का जन्म होता है।

—शूरवीर की संतान भी योद्धा होती है।

**गत उलटी गोपाळ री देखी मुरधर देस।** ३२०८

गत औंधी गोपाल की देखी मरुधर देश।

—मरुधर देश का अवलोकन करने पर ही विधाता (गोपाल) की औंधी मति का पता चलता है।

—मरुधर देश यानी मारवाड़ का हाल बड़ा बेहाल है—वर्षा का अभाव, गहरा पानी, काँटे वाले पेड़, फल के नाम पर बेर व ढालू।

—जिस समाज का ढर्रा बेढंगा-ही-बेढंगा हो उसके लिए।

**गत जैड़ी मत।** ३२०९

जैसी गति वैसी मति।

—जैसी पहुँच वैसी समझ।

—जैसा चलन वैसा आचरण। तदनुरूप परिणाम।

**गत रांम तणी देखौ गजब, 'बाघौ' ई पिंडत बाजियौ।** ३२१०

गति राम की देखो गजब, 'बाघा' भी पंडित कहलाया।

बाघौ = किसी व्यक्ति विशेष का नाम जो नितांत मूढ़ था।

—जो सामान्य व्यक्ति प्रतिष्ठा की चोटी पर चढ़ जाए उसके प्रति कटाक्ष।

—अयोग्य व्यक्ति ऊँचे पद पर पहुँच जाय, उसके लिए।

**गतराड़ा ई कदै गांव लूट्या?** ३२११

हिजड़ों ने कभी गाँव लूटे है?

—कायरों से वीरता की आशा नहीं रखनी चाहिए।

—किसी भी काम की सफलता के लिए यथोचित शक्ति व साहस अनिवार्य है।

**गतराड़ा घोड़ै चढ़ै अर पिंडत पाळा जाय।** ३२१२

हिजड़े घोड़ों पर चढ़ें और पंडित पैदल जाएँ।

—जहाँ योग्य व्यक्तियों की बजाय अयोग्य व्यक्तियों की पूछ हो।

—जहाँ योग्यता पानी भरे और अयोग्यता मौज मनाये।

—देश की आजादी के बाद हूबहू यही दशा घटित हुई है।

**गतराड़ा रै पूंछड़ै गाती मांडै।** ३२१३

हिजड़ों के भरोसे ललकारना।

गाती मांडणौ या गाती मारणौ = कमर के वस्त्र को कसकर लड़ने को उद्‌यत होना।

—जिसके पास अपना कुछ भी बल न हो तो दूसरों की सहायता से कुछ भी लाभ नहीं हो सकता।

—अयोग्य व्यक्तियों की सहायता से कोई भी कार्य सिद्‌ध नहीं हो सकता।

**गतराड़ै आळी गाती मारणी।** ३२१४

हिंजड़े की नाईं कमर कसना।

—जो अकर्मण्य व्यक्ति काम करने का जोश तो दिखाये, पर करे कुछ भी नहीं।

—आलसी फकत काम का शोर मचाता है, काम करता नहीं।

**गधहड़ै रै ग्यांन नै दातरड़ै रै म्यांन।**–व.२६ ३२१५

**गधे में ज्ञान और हँसिये के म्यान।**

—गधे में ज्ञान नहीं होता और हँसिये के म्यान नहीं होता।

—जिस व्यक्ति में सद्बुद्धि व गुणों का नितांत अभाव हो।

**पाठा : गधै में ग्यांन नीं, मूसळ रै म्यांन नीं।** गधे में ज्ञान नहीं, मूसल के म्यान नहीं।

**गधां गेवाळ ओळखियौ।** ३२१६

**गधों ने ग्वाले की पहिचान कर ली।**

—जब किसी मूर्ख अधिकारी को उसके मातहत अच्छी तरह पहिचान लें तब...!

—अयोग्य अधिकारी के प्रति कटाक्ष।

—मालिक की कमजोरी पहिचानने के बाद नौकर उद्दंड हो जाते हैं।

**गधां रै किसा सींग हुवै!** ३२१७

**गधों के सींग नहीं होते!**

—मूर्खों के भाल पर कोई अलग से निशान हो तो देखते ही पता लग जाय!

—मूर्ख व्यक्ति तो अपने आचरण से ही पहिचाना जाता है।

**गधा क्यूं न्हावै गंगा, उखरड़ा ई चंगा।** ३२१८

**गधे क्यों नहाएँ गंगा, घूरा ही चंगा।**

—मैले-कुचैले व गंदे व्यक्ति के लिए जो महीनों स्नान न करता हो।

—आकांक्षा-रहित व्यक्ति के लिए।

—हर व्यक्ति अपने सीमित दायरे में ही व्यस्त रहता है।

**गधा नै खवाड़्यां पुन्न कद होवै, ज्यां डोकर नै खवाड़्यां गूंजी धोवै।** ३२१९

गधे को खिलाने से भला पुण्य कब होता है, जैसे बुड्ढे को खिलाने से धन नष्ट होता है।

—काम की दृष्टि से गधे को जैसा-तैसा कुछ भी खिलाया जा सकता है, पर पुण्य की दृष्टि से उसे खिलाना व्यर्थ है। वृद्धावस्था में काम करना कठिन है, अतएव बुड्ढों को सामाजिक शिष्टाचार के नाते भले ही दो जून खिला दें, पर उसे कार्य की सिद्धि नहीं होती। मुँह से

कहता कोई नहीं मगर वृद्ध पर किया गया खर्च किसी को भी अच्छा नहीं लगता और न उनका चिड़चिड़ापन ही सुहाता है।

**गधा नै गंगा में नुहायां घोड़ौ थोड़ौ ई व्है।** ३२२०

गधे को गंगा में नहाने से वह घोड़ा नही होता।

दे.क.सं.३१६९

**गधा नै गुळकंद।** ३२२१

गधे को गुलकंद।

—यह कहावत दुहरे अर्थ में प्रयुक्त होती है। एक तो यह कि गधे को गुलकंद से क्या सरोकार? दूसरा—गधे को गुलकंद खिलाने पर कटाक्ष।

—गँवार व्यक्ति का अध्यात्म से क्या वास्ता!

—मूर्ख व्यक्ति का जरूरत से ज्यादा सत्कार करने पर।

**गधा नै गूणती रौ कांई भार!** ३२२२

गधे पर बोरे का क्या बोझ!

—जो बोझ ढोने के लिए ही बना है, उसे बोझ की क्या तकलीफ।

—मूर्ख व्यक्ति के लिए शारीरिक श्रम कठिन नहीं होता।

**गधा नै घी कुण घातै?** ३२२३

गधे को घी कौन खिलाए?

—मूर्ख व्यक्ति का कोई आदर-सत्कार नहीं करता।

—जिसके जैसे लच्छन होते हैं, उसी के अनुसार उसकी आव-भगत होती है

—जैसा ज्ञान, वैसी पूजा!

**गधा नै घी दियौ तौ ई आंख फोड़ै!** ३२२४

गधे को घी दिया तब भी आँख फोड़ रहा है!

—मूर्ख व्यक्ति भलाई की बात को भी बुराई के रूप में ग्रहण करता है।

—गँवार को अपने भले-बुरे की भी पहिचान नहीं होती।

**गधा नै मिसरी क्यूं?** ३२२५

गधे को मिश्री क्यों?

—गँवार का ऊँची चीज से क्या वास्ता ?

—मूर्ख को ज्ञान देना व्यर्थ है ।

**गधा पैली गूंण उछळै !** ३२२६

गधे के पहले बोरा उछले !

—छोटे व्यक्ति का अहंकार शीघ्र प्रकट होता है ।

—अनधिकृत व्यक्ति खामखाह रुतबा जमाये तब ।

आ.मि.क.सं.३२६१

**गधा राज का कै व्याज का ।**–व.२८९ ३२२७

गधे राज के या ब्याज के ।

—गधों के समान मूर्ख लोग ही राज्य की बेगार के काबिल माने जाते हैं । उन्हें जब-तब बेगार के लिए ठाकुर या राजा भेज देते हैं । दूसरी ओर बोहरों के कर्जदार भी वही होते हैं । एक बार कर्ज लेने के बाद जीवन भर उनका पीछा नहीं छूटता ।

—मूर्ख लोगों की तमाम उम्र या तो बेगार करने में या बोहरे को ब्याज चुकाने में ही समाप्त हो जाती है ।

**गधा री गूण में किस्तूरी कुण घातै ?** ३२२८

गधे के बोरे में कस्तूरी कौन डाले ?

—मूर्ख व्यक्ति को उसकी मूर्खता के अनुरूप ही बरतना चाहिए ।

—अबोध व्यक्ति को बड़ी जिम्मेवारी नहीं सौंपी जाती ।

**गधा री यारी लातां री त्यारी ।** ३२२९

गधे की यारी, लातों की बारी ।

—त्यारी का अर्थ तैयारी होता है । अर्थ न बदले और तुक से खूबसूरती बढ़े इसलिए 'यारी' के साथ 'बारी' की तुक मिलाई है ।

—मूर्खों की संगति से हमेशा खतरा ही बना रहता है ।

—नासमझ व्यक्ति की सोहबत हानिकारक होती है ।

पाठा : **गधा री यारी, लातां री मनवारी ।**

**गधा री लीद सूं पापड़ बणै तौ उड़द-मूंग नै कुण बूझै ?** ३२३०

गधे की लीद से पापड़ बनें तो उड़द-मूँग को कौन पूछे ?

—यदि मूर्ख-गँवारों से अच्छा काम बन सकता हो तो समझदारों को कौन पूछे ?

—अयोग्य व्यक्ति की कहीं भी कद्र नहीं होती।

**गधा रौ भूंकणौ अर ओछा री प्रीत तर-तर घटै।** ३२३१

गधे का रेंकना और ओछे की प्रीत निरंतर घटती रहती है।

—शुरुआत में पूरी ताकत से रेंकते हुए गधे की आवाज धीरे-धीरे कम होने लगती है, उसी प्रकार हीन व्यक्ति की मित्रता भी दिन-ब-दिन घटने लगती है।

—ओछे व्यक्ति की मित्रता का एतबार नहीं करना चाहिए।

**गधा रौ मांस कुत्ता रौ फूड़ौ घाल्यां टाळ नीं सीझै।** ३२३२

गधे का माँस कुत्ते का मल डाले बिना नहीं पकता।

—ऐसी मान्यता है कि गधे का गोश्त कुत्ते का मल डाले बिना पकता ही नहीं।

—अधम या दुष्ट व्यक्ति उपदेश की बजाय पिटने से जल्दी समझता है।

—नीच व्यक्ति के साथ नीचता ही अपेक्षित है।

**गधा रौ मूंडौ कुत्तौ चाटै तौ किसौ असुद व्है !** ३२३३

गधे का मुँह कुत्ता चाटे तो कैसा अशुद्ध !

—निर्लज्ज व्यक्ति पर बदनामी का कुछ भी असर नहीं होता।

—नासमझ व्यक्ति को मान-मर्यादा का जाने-अजाने कुछ भी खयाल नहीं रहता।

**गधा हळ जुतै तौ बळदां नै कुण बूझै ?** ३२३४

गधे हल जुतें तो बैलों को कौन पूछे ?

—यदि अयोग्य व्यक्ति से काम संपन्न हो जाय तो योग्य व्यक्तियों की कौन पूछ करे ?

—जिसकी जैसी योग्यता हो उसे वही काम सौंपना चाहिए।

**गधी वाळा नग !** ३२३५

गधी की संतान !

—जो माँ अपने बच्चों का ठीक तरह पालन नहीं कर सके, उसके लिए ...!

—मूर्ख औरत की संतान तो मूर्ख होती ही है।

**गधेड़ा ओले ढाही वांदी वे भोंकण लागी।**– भी.१८५ ३२३६

गधे के पास गाय बँधी तो वह भी रेंकने लगी।

—कुसंगति का असर हर सूरत में पड़ता ही है।

—बुरे के साथ भला रहे तो वह भी बिगड़ जाता है।

—मनुष्य को हर हालत में खराब संगति से बचना चाहिए।

**पाठा : गधेड़ा रै पाखती गाय बाधी, तीजै दिन भूंकण लागी।**

**गधेड़ा ई मुलक जीतलै तौ घोड़ा नै कुण बूझै?** ३२३७

गधे ही मुल्क जीत लें तो घोड़ों को कौन पूछे?

—निपट अयोग्य व्यक्ति भारी योग्यता का दावा करे तब!

—यदि अयोग्य व्यक्तियों से काम संपन्न हो जाय तो दुनिया में योग्यता की पूछ ही न हो।

मि.क.सं.३२३४

**गधेड़ा माथै अंबाड़ी नीं सोहै।** ३२३८

गधे पर अंबारी शोभा नहीं देती।

—अदने व्यक्ति के लिए बड़ों की नक़ल उपहासास्पद है।

—साज-शृंगाार से कोई ओछा व्यक्ति बड़ा नहीं हो जाता।

**गधेड़ा री गूणती में नव मण रौ वांदौ नीं।** ३२३९

गधे के बोरे में नौ मन की भूल नहीं होती।

—मामूली हिसाब में बड़ा गबन नहीं हो सकता।

—बड़ा अधिकारी ही बड़ी रिश्वत ले सकता है।

—समर्थ व्यक्ति ही भारी क्षति पहुँचा सकता है।

**गधेड़ा रै पाखर घातियां घोड़ौ नीं व्है।** ३२४०

गधे पर झूल डालने से घोड़ा नहीं होता।

—मूर्ख को बड़ा पद मिलने से ही वह बुद्धिमान नहीं हो सकता।

—मूर्खता को बाहरी आडंबर से छिपाया नहीं जा सकता।

**गधेड़ा लारै भदर व्हैगा।** ३२४१

गधे के पीछे सिर मुँडवाया।

भदर = कुटुंब में माता-पिता या निकटतम वृद्ध पुरुष की मृत्यु के समय सिर, दाढ़ी, मूँछ के बाल मुँडवाने की क्रिया।

—अकिंचन व्यक्ति की हिमायती से अधिक क्षति उठाने पर इस उक्ति का प्रयोग होता है।

—चलते रास्ते खामखाह किसी के द्वारा नुकसान उठाने पर।

—बुत्तेबाज नेता के भरोसे बर्बाद होने पर।

**गधेड़ी गंगाजी न्हायां पवीत थोड़ी ई व्है।** ३२४२

गधी गंगा-स्नान करने से पवित्र नहीं होती।

—नासमझ व्यक्ति तीर्थ करने से साधु नहीं हो जाता।

—थोथे आडंबर से असलियत नहीं छिपती।

मि.क.सं.३१६९,३२२०

**गधेड़ी चावळ ल्यावै तौ वा थोड़ी ई खाय।** ३२४३

गधी चावल लाये तो वह थोड़े ही खाती है।

—भार ढोने से ही कोई माल का अधिकारी नहीं हो जाता।

—मेहनत करने वाला तदनुरूप फल भोगे, यह जरूरी नहीं।

—प्रत्येक व्यक्ति के अधिकारों का अपना दायरा होता है।

**गधेड़ी नै गज गाव!** ३२४४

गधी पर हाथी की झूल!

—अयोग्य व्यक्ति को ऊँचा सम्मान देने से ही वह उसके योग्य नहीं हो जाता।

—पुरस्कार से योग्यता प्रमाणित नहीं होती।

—स्तर के अनुरूप ही आदर-सत्कार होना संगत है।

**गधेड़ै नै जेठ में धूंदी चढ़ै।** ३२४५

गधा जेठ-मास में मुटियाता है।

—ऐसी धारणा है कि वर्षा ऋतु की हरियाली देखकर गधा मन-ही-मन सोचता है कि इतनी हरियाली कौन खाएगा, इसी चिंता के कारण वह दुबला होता रहता है। और इसके विपरीत वैशाख-जेठ के महीनों में जब हरियाली कहीं नजर नहीं आती, तब वह मोटा होने लगता है, इस खुशी में कि सारा घास वह चटकर गया।

—मूर्ख व्यक्ति को अपने सुख-दुख की भी सही पहिचान नहीं होती।

—निपट औंधे काम की जिम्मेवारी मूर्खों के हिस्से में ही आती है।

—जो व्यक्ति अकारण ही दुखी या सुखी होने का भ्रम पाले।

**गधेड़ै पाड़्यौ नै गांव सूं रूसणौ !** ३२४६

गधे ने गिराया और गांव से रूठना !

—जो व्यक्ति अकारण ही किसी से नाराज हो।

—जो व्यक्ति किसी और का गुस्सा दूसरे पर उतारे तब।

—असंगत व्यवहार वाले व्यक्ति पर व्यंग्य।

**गधेड़ै रौ मांस तौ खार घाल्यां ईं सीझै।** ३२४७

गधे का मांस तो क्षार डालने पर ही पकता है।

दे.क.सं.३२३२

**गधेड़ौ अखूरड़ी देखनै भूंकै।** ३२४८

गधा घूरा देखकर रेंकता है।

—मूर्ख व्यक्ति की खुशी सर्वथा बेतुकी होती है।

—गंदा व्यक्ति गंदगी से ही संतुष्ट होता है।

**पाठा : गधेड़ौ अखूरड़ी माथै ई रंजै।** गधा घूरे को देखकर ही तुष्ट होता है।

**गधेड़ौ अखूरड़ी माथै ई लुटै।** गधा घूरे पर ही लोटता है।

**गधे री पूंछ झिलाई।** ३२४९

गधे की पूँछ पकड़ाई।

—किसी मूर्ख व्यक्ति को बेकार हठ लगा दे तब।

—खामखाह जिद करने वाला व्यक्ति, जो अंततः नुकसान उठायेगा ही।

**गधे चढ़नै अजैपाळ भेटणौ।** ३२५०

**गधे पर चढ़कर अजयपाल से भेंट।**

अजैपाळ = अजयपाल। अजयपाल दिल्ली का राजा था। पृथ्वीराज चौहान का नाना। जब वह तीर्थ करने गया तो अजमेर से पृथ्वीराज को बुलाकर गद्दी सौंपी। पर तीर्थ से लौटने पर पृथ्वीराज चौहान ने वापस राज्य सौंपने से मना कर दिया। तब से जयचंद और पृथ्वीराज में तन गई। वे दोनों मौसेरे भाई थे।

—मामूली सवारी और बड़े आदमी से मुलाकात।

—अति सामान्य हैसियत वाला बड़ी महत्त्वाकांक्षाएँ पाले तब।

—जिस व्यक्ति के काम में कोई तारतम्य या सलीका न हो।

**गधै नै मास्यां घोड़ौ को हुवै नीं।** ३२५१

गधे को पीटने से घोड़ा नही होता।

—मूर्ख व्यक्ति पिटाई से शिक्षित नहीं हो सकता।

—लाख चेष्टा करने पर भी बौड़म को बुद्धिमान नहीं बनाया जा सकता।

—जन्मजात संस्कारों को मिटाना संभव नहीं है।

**गधै री गूण में कणां रौ वांदौ व्है मणां रौ नीं।** ३२५२

गधे के बोरे में कणो की भूल रह सकती है मनों की नहीं।

दे.क.सं.३२३९

**गधै री लात सूं गधौ को मरै नीं।** ३२५३

गधे की लात से गधा नहीं मरता।

—गँवार की मार से गँवार नहीं मरता।

—आपसी हाथापाई से बच्चों का कुछ नहीं बिगड़ता।

—गधामस्ती करने वालों को देखकर समझदारों को उनकी परवाह नहीं करनी चाहिए।

**गधै रै तौ जीव री पड़ी नै स्याळिया रै हूंकणी चालै।** ३२५४

गधे के तो जी की पड़ी और सियार चिल्लाने पर उतारू।

**संदर्भ-कथा :** एक गधा और सियार दोनों मित्र थे। गधा अपने हाल में मस्त इधर-उधर चरकर अपना पेट भर लेता था। एक दिन सियार उसे बरगला कर पास के खेत में ककड़ियाँ खाने के लिए ले गया। गधे ने काफी आनाकानी की। पर सियार के आगे उसका कुछ भी जोर नहीं चला। ककड़ियाँ खाने से दोनों को खूब मजा आया। दूसरे दिन फिर वही मौज। खेत का मालिक पहिले दिन का नुकसान देखकर जल-भुन गया था। आधी रात को दोनों फिर चुपके से खेत में घुसे। पेट भर ककड़ियाँ खाईं। तब सियार ने कहा, 'भाई जोर से चिल्लाये बिना मुझे ककड़ियाँ हजम नहीं होतीं। पेट काफी फूल गया है।' गधे ने मना किया, फिर भी सियार नहीं माना। उसके चिल्लाते ही खेत का मालिक लट्ठ लेकर दौड़ा। चालाक सियार तो चंपत हो गया, पर गधे पर खूब मार पड़ी।

—कुटल या दुष्ट व्यक्ति की संगति करने पर सीधे आदमी को नुकसान उठाना पड़ता है।

—कपटी का साथ करने पर दुष्परिणाम अवश्यंभावी है।

—मूर्ख व चालाक व्यक्ति का साथ अधिक दिन नहीं चलता।

**गधौ उन्हाळै माचै।** ३२५५

गधा गर्मियों में मोटा होता है।

दे.क.सं.३२४५

**गधौ खायौ खेत, नीं पाप नीं पुन्न।** ३२५६

गधे ने खाया खेत, न पाप न पुण्य।

—जानकर अपनी इच्छा से की हुई भलाई तो पुण्य है, पर अजाने में कोई कुछ लाभ उठा जाय तो वह किसी कोटि में शुमार नहीं होता, न पाप में और न पुण्य में।

—योग्य व्यक्ति अनजाने में कोई लाभ भी उठा ले तो वह पुण्य माना जा सकता है, पर इसके विपरीत अयोग्य व्यक्ति अनजाने लाभ उठा ले तो वह पुण्य में शुमार नहीं हो सकता।

**गधौ गंगाजळ रौ महातम कांई जांणै?** ३२५७

गधा गंगाजल का माहात्म्य क्या जाने?

—गँवार या मूर्ख व्यक्ति को कला, दर्शन जैसी ऊँची बातों से दूर का भी सरोकार नहीं होता।

—मूर्ख व्यक्ति केवल पेट भरना व सोना जानता है, उसे झीनी व सुरुचिपूर्ण बातों से क्या वास्ता!

**गधौ गळियार नै आदमी रुळियार !** ३२५८

आवारा गधा और लंपट मानुस !

—आवारा गधा और लंपट मनुष्य—दोनों समान होते हैं।

—गली-गली भटकने वाले गधे और कामुक व्यक्ति का कोई ठिकाना नहीं।

**गधौ घोड़ौ अेकण भाव !** ३२५९

गधे और घोड़े का एक ही भाव !

—जिस व्यक्ति और समाज की दृष्टि में मूर्ख, विद्वान तथा भले-बुरे की पहिचान न हो।

—जहाँ मनुष्य के गुणों की कोई कद्र न हो, वहाँ रहना उचित नहीं।

**गधौ जांणै सांवण सदा ई सुरंगौ रैसी।** ३२६०

गधा जानता है कि सावन सदा ही सुरंगा रहेगा।

—जो व्यक्ति अपने सुख व ऐश्वर्य में एकदम खोया हो।

—जिस व्यक्ति को दुर्दिनों की रंचमात्र भी चिंता न हो।

—सभी दिन एक से सुखप्रद समझने वाले पर कटाक्ष।

**गधौ तौ कूदै ई नीं अर आथरिया पैली कूदै।** ३२६१

गधा तो कूदता ही नहीं और 'आथरिया' पहिले कूदता है।

आथरिया = ऊँट, घोड़े व गधे की पीठ पर रखे जाने वाला मोटा वस्त्र।

—जिस बड़े व्यक्ति पर सारा उत्तरदायित्व हो, वह तो कुछ न कहे और उसके अधीन व्यक्ति बेकार रुतबा जमाएँ तब ...।

—कोई अनधिकृत व्यक्ति खामखाह की हेकड़ी जताये तब।

—बिचौलिये ज्यादा वाचाल होते हैं।

**गधौ तौ सागै पण आथरियौ बीजौ।** ३२६२

गधा तो वही पर 'आथरिया' दूसरा।

आथरिया = सर्दी आदि से बचने के लिए मवेशियों पर डाला जाने वाला मोटा वस्त्र, जिसके द्वारा चलने में कोई रुकावट नहीं होती।

—बनावट या ऊपरी टीमटम से मूर्खता नहीं छिपती।

—वेश बदलने से व्यक्तित्व नहीं बदलता।

**पाठा : गधौ तौ सागै पण आथरिया बदळियोड़ा।**

**गधौ मंझ सांवण भूखां मरै।** ३२६३

गधा चढ़ते सावन में भूखों मरता है।

दे.क.सं.३२४५,३२६०

**गधौ मिसरी-सार कांई जांणै ?** ३२६४

गधा मिश्री की लज्जत क्या जाने ?

—मूर्ख या अज्ञानी अच्छी चीज की कद्र क्या जाने ?

—गँवार व्यक्ति सुरुचि-संपन्न बातों में क्या समझे ?

मि.क.सं.३२२५

**गधौ लावै जिकौ किसौ गधौ इज खावै।** ३२६५

गधा ढोकर लाये उसे गधा थोड़े ही खाता है।

दे.क.सं.३२४३

**गना में साडू अर जीमण में लाडू।** ३२६६

रिश्ते में साढू और भोजन में लाडू।

लाडू = लड्डू।

—साढू का रिश्ता उत्तम और भोजन में लड्डू उत्तम।

—एक-दूसरे की तुलना के द्वारा दोनों की प्रशंसा।

**गपकै गोळी खाय, मियांजी पींजण भला।** ३२६७

सटाक गोली खाय, मियाँजी धुनकी भली।

**संदर्भ-कथा** : एक पिंजारे को रूई पींजने का काम बहुत बुरा लगता था। एक दिन संयोग से एक डाकू रूई लेकर उसके पास आया। उसके हाथ में लंबा-सा कोई औजार था। पिंजारे ने उसके बारे में पूछा तो डाकू ने अचरज से बताया कि—वाह रे मूर्ख, तू 'लमछड़' बंदूक में भी नहीं समझता ! इससे तो हजारों के वारे-न्यारे होते हैं। सामने तानते ही लोग धन-माल सौंप देते हैं। अब तक पचास बारातें इससे लूटी हैं। पिंजारे ने आगे कोई पूछताछ नहीं की। उसने

मन-ही-मन एक तरकीब सोच ली थी। उसकी धुनकी क्या लमछड़ बंदूक से कम है। वह भी इसे सामने करके क्यों नहीं लूट सकता ? डाकू के जाते ही उसने पींजने का काम बंद किया। धुनकी साफ की। बगल में दबाकर जंगल की ओर रवाना हो गया। थोड़ी ही दूर दो घाटियों वाला मार्ग था। वहाँ से कोई-न-कोई बारात जरूर निकलेगी,यही सोचकर वह एक बड़े पत्थर की ओट में छिपकर बैठ गया। भाग्य की बात कि उसे बारात की हलचल सुनाई पड़ी। बारात की गाड़ियाँ पास आते ही वह धुनकी तानकर खड़ा हो गया। दूल्हे की गाड़ी पर रक्षक के रूप में तीनेक राजपूत बैठे थे। एक ने आव देखा न ताव झट से गोली दाग दी। पिंजारा तो धुनकी समेत वहीं लुढ़क पड़ा। अरे ! यह तो पिंजारा ! बेचारा,खामखाह मारा गया। बंदूक की भी मर्यादा घटी। चार जूते ही काफी थे। मूर्ख कहीं का—धुनकी के जोर पर बारात लूटने चला था।

—अपना पुश्तैनी काम छोड़कर जो व्यक्ति किसी बड़े काम में हाथ डाले तब...!

—किसी जटिल काम में पूर्णतया कुशल हुए बगैर उस में हाथ डालने का नतीजा बुरा होता है।

**गप्पियां तणा उडै गोळा, गप्पी भंवै गांव रै दौळा !** ३२६८

गप्पियों के उड़ें गोले, गप्पी घूमें गाँव के दौले !

दौळा = दोला = चारों तरफ।

—बिना सींग पूँछ की गप्प हाँकने वाले व्यक्ति के लिए।

**गप्पियां रौ पातस्या।** ३२६९

गप्पियों का बादशाह।

—जो व्यक्ति हरदम डींग मारे,झूठ बोले या गप्प हाँके।

—जो गप्पी सबसे बढ़कर हो।

**गम खांणौ, कम खांणौ।** ३२७०

गम खाना, कम खाना।

दे.क.सं.१७९५

**गम खावै, कम खावै, हाकम वैद रै कदै न जावै।** ३२७१

गम खाये, कम खाये, हाकिम वैद्य के कभी न जाये।

—गम खाने से अर्थात् बर्दाश्त करने से झगड़ा नहीं होता। झगड़ा न हो तो हाकिम के यहाँ चक्कर लगाने व पैसा खर्च करने की जरूरत नहीं। समय, परेशानी और पैसे की बचत। कम खाने से स्वास्थ्य ठीक रहता है, अतएव हकीम या वैद के यहाँ जाने की जरूरत नहीं। इस में भी आर्थिक लाभ है। स्वास्थ्य लाभ भी। स्वास्थ्य बिगड़ने से काम का हरजाना भी होता है।

—छोटी-सी नसीहत कितनी लाभप्रद हो सकती है, इस उक्ति से यह प्रमाणित होता है।

**गम बड़ी रे भाई गम बडी, गम रा बाजै ढोल !** ३२७२

गम बडी रे भैया गम बड़ी, गम के बजें ढोल !

**संदर्भ-कथा :** एक भील की औरत बड़ी कुलटा थी। एक बार आँखों से देखने पर भी भील ने गम खाई। अनदेखी करके उसने सब्र करना ही उचित समझा। समय गुजरने के साथ बात पुरानी होती गई और उम्र बढ़ती गई। पति-पत्नी दोनों प्रौढ़ हो गये। बड़े लड़के की शादी पर ढोल बजे तो भील खुशी में नाचता हुआ गाने लगा—गम बड़ी रे गम बड़ी, गम रा बाजै ढोल।

—सब्र का फल मीठा होता है।

—दूसरा छिपा संकेत यह भी है कि सब्र के बहाने कायर व्यक्ति अपनी कमजोरी का औचित्य इसी तरह सिद्ध करता है।

**गमियौ ऊंट घड़ा में सोधै !** ३२७३

खोया ऊँट घड़े में खोजे !

—चोट खाया हुआ दुखी या हताश व्यक्ति संज्ञा-विहीन हो जाता है। उसे उचित-अनुचित का भी ध्यान नहीं रहता ! वह सर्वथा अपनी सुध-बुध बिसर जाता है—तभी घड़े में ऊँट मिलने की आशा रखता है, जो नितांत अकल्पनीय है।

—विचलित मनुष्य की मानसिक दशा इस उक्ति में कितनी मार्मिक तरह से व्यक्त हुई है।

**पाठा : गमियौ हाथी घड़ा में सोधै।**

**गमेती ने हाथ में कात, नी आवे रळी गाय नी वात।**—भी.१८७ ३२७४

प्रमुख के हाथ में काम, न आये छुट्टी गाय की बात।

गमेती = राज्य प्रशासन द्वारा नियुक्त गाँव का मुखिया। छुट्टी गाय = खुली गाय। बंधन मुक्त गाय।

—गाँव की छोटी-मोटी व्यर्थ बात को लेकर उसके पास शिकायत करने कोई नहीं जाता। क्योंकि वह स्वयं काम न करके दूसरों से ही बेगार लेता है।

—अपना काम निकलवाने को इच्छुक व्यक्ति ही दूसरों को सहयोग देता है।

**गमै तौ ई घरां नै लाधजौ।** ३२७५

खोये तो भी घरवालों को मिले।

—आपसी व्यवहार व लेन-देन में छोटे-मोटे लाभ को नजर-अंदाज करने वाला यह सोचकर मन को समझाता है कि—सामने वाला व्यक्ति भी तो अपना है—मामूली हानि हो जाये तो कोई हर्ज नहीं।

—अपने हाथ से जाने वाली चीज यदि घरवालों के हाथ लग जाय तो ठीक ही है।

—मजबूरन फायदा देने की स्थिति में खामखाह एहसान जतलाने वाले के लिए।

पाठा : **गमै तौ ई गांव रा नै लाधजौ**। खोये तो भी गॉव वालों को मिले।

**गयां लारै जावै सो घणा धक्का खावै।** ३२७६

गये के पीछे जाय, वह खूब धक्के खाय।

—अतीत के महान व्यक्तियों का अंधानुकरण सर्वथा घातक है।

—बिना सोचे-समझे बड़े आदर्शों की राह चलना नितांत अहितकर है।

**गया दक्खण, वै ई लक्खण।** ३२७७

गये दक्षिण, वे ही लक्षण।

—जो व्यक्ति सर्वत्र घूमकर वैसा ही गँवार रहे।

—जो व्यक्ति पढ़-लिखकर भी मूर्खता की बातें करे तब।

**गया बिचारा रोजला, घणा रह्या दस-बीस।** ३२७८

गये बेचारे रोजे, बाकी रहे दस-बीस।

—दुख के दिन अब रहे ही कितने हैं—थोड़ी हिम्मत रखने से पार पड़ जाएगी।

—बुरे दिनों में आदमी को धैर्य व साहस से काम लेना चाहिए।

**गया-बीता रै किसा सींग व्है।** ३२७९

गये-गुजरे के सींग थोड़े ही होते हैं।

दे.क.सं.३२१७

**गयेड़ै नै भूल ज्याय, आयेड़ै नै कोनीं भूलीजै।** ३२८०

गये हुए को भूल जाय, आये हुए को नहीं भूला जाता।

—गये मेहमान को भुला दिया जाता है, पर आये अतिथि को नहीं भुलाया जा सकता, उसका आदर-सत्कार करना पड़ता है।

—बीता दुख बिसर जाता है, पर वर्तमान में घटित ताजे दुख को नहीं भुलाया जा सकता।

—मरे हुए को भुलाया जा सकता है, पर नये जन्मे बच्चे को नहीं भुलाया जा सकता, उसकी हरदम चौकसी रखनी पड़ती है।

**गयोड़ा कदै ई पाछा आवै ?** ३२८१

गये हुए कभी वापस आते हैं ?

—गया हुआ व्यक्ति एक भी वापस नहीं आता, फिर किसी की याद में रोना अज्ञान है।

—बीती बातों को याद करना व्यर्थ है।

—गुजरे हुए बुजुर्गों को चितारना बेकार है, स्वयं का वर्तमान पुरुषार्थ ही सब-कुछ है।

**गयौ तौ निंवाज छोडण नै रोजां री गळा में आयगी।** ३२८२

गया तो नमाज छोड़ने के लिए, रोजों की गले आ पड़ी।

आ.दे.क.सं.३५९७

**गयौ म्हारै बडेरां रौ भातौ लेयनै।** ३२८३

गया मेरे पुरखों का खाना लेकर।

—जो निठल्ला व्यक्ति खामखाह इधर-उधर भटककर अपना समय बर्बाद करे तब उसके प्रति गुस्सा व्यक्त करते समय घरवाले इस कहावत का प्रयोग करते हैं।

—अकर्मण्य व गैर-जिम्मेवार आत्मीय के प्रति खीज का प्रदर्शन।

**गयौ वित्त, वोलावौ मांगै !**–व.७१ ३२८४

गया वित्त, खमियाजा माँगे !

वित्त = मवेशी, धन। यदि मवेशी या धन खो जाता है तो उसे तलाश करने में खर्च होता है।

—किसी नुक्सान की पूर्ति के लिए जब फिर कुछ-न-कुछ हानि उठानी पड़े तब।

—किसी क्षति-विशेष को पूरा करने के लिए और खर्च करना पड़े तब।

**पाठा : गयौ धन वोळाई मांगै।**

**गयौ वैती रै वाळै।** ३२८५

गया नाले की धार में।

—भारी नुकसान का सामना करना पड़े तब।

—अचीते रूप से प्राणघाती खतरा उठाना पड़े तब।

**गयौ सिंदूर री फळियां नै।** ३२८६

गया सिंदूर की फलियाँ लाने।

—सिंदूर की फलियाँ होती ही नहीं हैं—एक अनहोनी बात।

—आवारा भटकने वाले पर कटाक्ष।

—जो व्यक्ति अनहोने काम की खातिर भटकता फिरे।

**गयौ हरिदास ज्यूं नीचा नैण करनै।** ३२८७

गया हरिदास ज्यों नीचे नयन करके।

हरिदास = रामस्नेही संप्रदाय के एक महात्मा, जो दुष्कृत्य में रँगे हाथों पकड़े गये और उन्हें लज्जित होकर गाँव छोड़ने को बाध्य होना पड़ा।

—अपना-सा मुँह लेकर जाने वाले व्यक्ति के प्रति व्यंग्य।

—अपनी फजीहत से शर्मिंदा व्यक्ति के लिए।

**गरज गधै नै बाप कुहावै।** ३२८८

गर्ज गधे को बाप कहलवाती है।

दे.क.सं.८९५

**गरज जतरे नोकर, गरज मटे ने दियौ ठोकर।**-भी.१८८ ३२८९

गर्ज रहने तक नौकर, गर्ज मिटने पर दो ठोकर।

—मालिक अपना स्वार्थ रहे तब तक किसी को नौकर रखता है। गर्ज मिटते ही उसे ठोकर मारकर निकाल देता है।

—मनुष्य के लिए अपना स्वार्थ ही सर्वोपरि सिद्धांत या दर्शन है।

**गरज जित्तै चाकर, गरज मिट्यां ठाकर।** ३२९०

गर्ज तब तक चाकर, गर्ज मिटने पर ठाकुर।

—गर्ज हो तो श्रीमंत भी चाकर की तरह विनम्र हो जाते हैं, गर्ज मिटने पर गरीब भी हेकड़ी दिखलाने लगते हैं।

—गर्जमंद की चारित्रिक विशेषता।

**गरज दीवांणी गूजरी, नूंत जीमाती खीर।** ३२९१

गर्ज बावरी गूजरी, न्योत खिलाती खीर।

—गर्ज में अंधे व्यक्ति का छद्म व्यवहार कि गर्ज रहते वह क्या-कुछ नहीं करने को तैयार, पर गर्ज मिटने पर सीधे मुँह बात भी नहीं करता।

—गर्जमंद व्यक्ति के स्वार्थ का घिनौना चित्रण।

**पाठा : गरज दीवांणी गूजरी, घर में मांदौ पूत।**
**सांवण छाछ न घालती, भर बैसाखां दूध॥**
गर्ज दीवानी गूजरी, घर में पीड़ित पूत।
सावन छाछ न डालती, भर बैसाख में दूध॥

**गरज पड़्यै थारूर मारू करवौ पड़ै।**– भी.१८९ ३२९२

गर्ज पड़ने पर तेरा-मेरा करना पड़ता है।

—गर्ज पड़ने पर उसकी-इसकी चिरौरी करनी पड़ती है।

—जरूरत हो तो इधर-उधर से माँगकर काम चलाना पड़ता है।

**गरज पड़ै तद नख में वड़ै।** ३२९३

गर्ज पड़े तब नाखून में घुसता है।

—नाखून में घुसना बड़ा कठिन कार्य है। पर गर्ज की मार ऐसी होती है कि मर्यादा खोकर भी खुशामद करनी पड़ती है।

—जो व्यक्ति गर्ज पड़ने पर एकदम अपना हो जाता हो और गर्ज मिटते ही पराया।

**गरज पड़्यां मन दूजौ, गरज सर्‍यां मन दूजौ।** ३२९४

गर्ज पड़े मन दूसरा, गर्ज मिटे मन दूसरा।

—गर्जमंद व्यक्ति गर्ज मिटते ही गिरगिट की नाईं दूसरा रंग धारण कर लेता है।

—गर्जमंद व्यक्ति का दुहरा चरित्र,जिसमें परस्पर कोई साम्य नजर नहीं आता,जैसे कोई भिन्न ही व्यक्तित्व हों।

**गरज बडी।** ३२९५

गर्ज बड़ी है।

—मनुष्यों की इस दुनिया में केवल गर्ज के कारण ही छोटे-बड़े का भेद होता है।

—गर्ज से बड़ा तत्त्व दुनिया में और कोई नहीं। जिस व्यक्ति से गर्ज पड़ती है वह बड़ा और जिसे गर्ज होती है वह छोटा।

**गरज बावळी।** ३२९६

गर्ज बावरी।

—स्वार्थ मनुष्य को अंधा या पागल बना देता है।

—गर्जमंद को अपने स्वार्थ के सिवाय कुछ नहीं सूझता।

**गरज बावळी है, आदमी बावळो नी है।**– भी.१९० ३२९७

गर्ज बावली होती है, आदमी बावला नहीं होता।

—सामान्यतया कोई आदमी अपनी हेटी नहीं लगाना चाहता। किसी की खुशामद नहीं करना चाहता। अपना विवेक बनाये रखना चाहता है। पर गर्ज का मारा कुछ भी करने को विवश हो जाता है।

—गर्ज आदमी का विवेक और स्वाभिमान छीन लेती है।

**गरजमंद मारीजै।** ३२९८

गर्जमंद मारा जाता है।

—गर्जमंद सर्वत्र ठगाया जाता है।

—गर्जमंद पर कोई दया नहीं करता, सभी उसका शोषण करते हैं।

**गरज मिटी, गूजरी नटी।** ३२९९

गर्ज मिटी, गूजरी नटी।

—गर्ज मिटने के बाद कोई सीधे मुँह बात नहीं करता।

—आपसी गर्ज या स्वार्थ ही आत्मीयता का सबसे अटूट बंधन होता है।

मि.क.सं.३२९१

**गरज मिटी रे गांगला गांव सूं आटौ मांगला।** ३३००

गर्ज मिटी रे 'गाँगला' गाँव से आटा मॉंगला।

**संदर्भ-कथा :** एक बीमार साधु को तीमारदारी करने के लिए चेले की आवश्यकता हुई तो उसने 'गॉंगला' नाम के व्यक्ति को चेला बना लिया और उसे खुशी-खुशी सारा मठ सौंप दिया। चेला स्वयं मौज करता और गुरु की सेवा-टहल करता। गुरु की बीमारी के दौरान चेले को सभी बातों की पूरी छूट थी। पर ज्यों ही धीरे-धीरे चेले की तीमारदारी से गुरु ठीक हुआ तो उसने साफ तौर पर 'गाँगला' को जतला दिया कि अब बैठे-ठाले खाने से काम नहीं चलेगा। 'गाँगले' को गॉंव से प्रतिदिन दोनों के लिए मॉंगकर भोजन लाना होगा।

—गर्ज मिटते ही मनुष्य का रुख स्वयमेव बदल जाता है।

**गरज मिटी रे गांगला, बळद गायां में जाय।** ३३०१

गर्ज मिटी रे 'गॉंगला', बैल गायों में जायँ।

—जब तक हल या गाड़ी में जोतने के लिए बैलों की गर्ज होती है तो घर पर ही उन्हें चारा-बॉंटा खिलाया जाता है। पर गर्ज पूरी होते ही उन्हें गायों के साथ जंगल में भेज दिया जाता है।

—दुनिया में गर्ज का चक्कर सबसे बड़ा है।

**गरज रौ मांटी।** ३३०२

गर्ज का साथी।

—गर्ज हो तो अभिन्न मित्र, गर्ज मिटे तो अनजान।

—जब तक गर्ज, तब तक साथ।

**गरजवांन री अक्कल जाय, दरदवांन री सिक्कल जाय।** ३३०३

गर्जवान की अक्ल जाये, दर्दवान की शक्ल जाये।

—गर्जवान को भले-बुरे का कुछ भी ध्यान नहीं रहता, उसकी बुद्धि मर जाती है। और दर्दवान की सूरत का रंग बदल जाता है।

—गर्जमंद तथा दर्द मंद दोनों की दुर्दशा होती है।

**गरज विहूणौ गांगलौ, गरजां गांगौ साह।** ३३०४

गर्ज-बिहीन गंगला और गर्ज पड़े गंग-शाह।

—अपना मतलब सिद्ध करने के लिए छोटे आदमी को भी परम आदर के साथ संबोधित किया जाता है अन्यथा उसे दुत्कार के अलावा कभी कुछ नहीं मिलता।

—गर्ज ही आदर-सत्कार का मूल-मंत्र है।

**गरज व्हैसी तौ लटका लेता आसी।** ३३०५

गर्ज होगी तो हाथ जोड़ते आएँगे।

—गर्जवान अपनी हेकड़ी निबाह नहीं सकता, उसे झुकना ही पड़ता है।

—गर्जमंद को कदम-कदम पर समझौता करना पड़ता है। नीचे देखना पड़ता है।

—किसी औरत से रूठकर या क्रुद्ध होकर जुदा होने वाले व्यक्ति के लिए कि उसे क्यों मनाने जाय, गर्ज होगी तो नाक रगड़ता आएगा।

**गरज सरी अर वैद बैरी।** ३३०६

गर्ज मिटी और वैद्य बैरी।

—बीमारी के दौरान वैद्य की जितनी खुशामद की जाय थोड़ी है, पर बीमारी मिटते ही वैद्य बैरी के समान अवांछित व बुरा लगता है।

—मतलब पूरा होने के बाद कोई नहीं पूछता।

**गरजां-दरजां सै भला, बेगरजां बेकांम।** ३३०७

गर्ज के समय सब भले, बिना गर्ज सब बेकार।

—दुनिया में गर्ज के सिवाय कोई दूसरा महामंत्र नहीं।

—मनुष्य के लिए केवल गर्ज ही गीता है, वेश्या ही सीता है। गर्ज ही कुरान है, गर्ज ही ईश्वर और गर्ज ही खुदा है।

—स्वार्थ का दर्शन सभी दर्शनों से बड़ा है।

**गरजे गदेड़ा अे बाप केवी हैं।**–भी.१९२ ३३०८

गर्ज गधे को बाप कहलवाती है।

—गर्ज पड़ने पर लंपट को भीष्म, कंजूस को कर्ण, कायर को अर्जुन, महामूर्ख को चाणक्य कहने के लिए विवश होना पड़ता है।

—गर्ज हो तो गँवार को भी बड़ा बुद्धिमान कहना पड़ता है।

**पाठा : गरज पड़्यां गधा नै ई बाप कैवणौ पड़ै।**

**गरजै सो बरसै नीं, भुसै वौ खावै नीं।** ३३०९

गरजे सो बरसे नहीं, भोंके वह खाये नहीं।

—गर्जन करने वाले बादल कम बरसते हैं और भोंकने वाले कुत्ते काटते नहीं।

—डाँट-डपट करने वाला अधिकारी भीतर से कमजोर होता है, तभी ऊपर से दबदबा रखना चाहता है।

—बड़ी-बड़ी बातें बनाने वालों से काम नहीं होता।

—ज्यादा डींग मारने वाले की असलियत दूसरी ही होती है।

**गरब तौ रांवण रौ ई नीं रह्यौ।** ३३१०

गर्व तो रावण का भी नहीं रहा।

—बड़े-से-बड़े व्यक्ति का भी गर्व नहीं टिकता।

—आखिर गर्व को ध्वस्त होना ही पड़ता है।

—गर्व की प्रताड़ना।

**गरबै मत अे गूजरी, देख मटूकी छाछ।** ३३११

गर्व मतकर गूजरी, देख घनेरी छाछ।

—सभी दिन एक-से नहीं रहते, इसलिए गर्व करना व्यर्थ है।

—जो व्यक्ति आज धनाढ्य है, वह कल कंगाल हो सकता है। और जो आज कंगाल है वह कल धनाढ्य हो सकता है। इसलिए वैभव का गर्व करना निरर्थक है।

**गरम थूक वाळा नै राख!** ३३१२

गर्म थूक वाले को रख!

—कैसा भी बहाना बनाकर बच निकलने का उपाय खोजना।

—बहाने-बाजी करने वाला कुछ भी संगत-असंगत नहीं देखता।

**गरीब तौ मैल व्है।** ३३१३

गरीब तो मैल होता है।

—मैल से सभी छुटकारा चाहते हैं, क्या अमीर क्या गरीब, इसलिए उससे गरीब कोई दूसरा नहीं।

—जिससे हर कोई घिन करे वही गरीब और मैल से सभी घिन करते हैं।

—दूसरा अर्थ यह भी कि गरीब तो स्वयं मैल के समान तुच्छ है, उससे सभी पीछा छुड़ाते हैं।

**गरीबदास री तौ हवा ई हवा है।** ३३१४

गरीबदास की तो बस हवा ही-हवा है।

—गरीबदास का तो नाम-ही-नाम है, धन तो दूसरों का खर्च हो रहा है।

—दूसरों का धन उड़ाकर नाम कमाने वाले व्यक्ति पर कटाक्ष।

**गरीब दोय के बेटी के बळद।** ३३१५

गरीब दो ही हैं, बेटी या बैल।

—घरवाले बेटी को जहाँ भेजते हैं, वह बिना प्रतिरोध के चुपचाप ससुराल चली जाती है, अपनी इच्छा तक प्रकट नहीं करती। और ससुराल में जाते ही सबकी गुड़कियाँ सहन करती है और सारा काम सँभालती है। तब इससे ज्यादा गरीब भला और कौन हो सकता है?

—दूसरा गरीब बैल—उसे चाहे गाड़ी में जोतो या हल में, बिना गर्दन हिलाये सारा दिन खटता रहता है। जो भी चारा डालो खा लेता है। काम के दौरान मार पड़ती है सो अलग से।

**गरीब नै नरक में ई जागा कोनीं।** ३३१६

गरीब को नर्क में भी जगह नहीं मिलती।

—नर्क भी दुष्ट व पापियों के लिए है, गरीब को तो वहाँ भी ठौर नहीं। और स्वर्ग के द्वार तो उसके लिए यों ही बंद हैं।

—गरीब व्यक्ति का प्रवेश: हर कहीं निषिद्ध है।

**गरीब माथै गूणती वत्ती न्हाकै।** ३३१७

गरीब पर एक और बोरी का भार।

—जो बैल या गधा ज्यादा सीधा होता है उस पर वजन ज्यादा डाला जाता है।

—जो प्रतिरोध नहीं करता उसका अधिक शोषण होता है।

**गरीब री हाय, जड़ां-मूळ सूं जाय।** ३३१८

गरीब की हाय, वह जड़-समेत जाय।

—गरीब को सताने से सर्वनाश होता है,क्योंकि वह जिंदा मनुष्य की हाय है,जबकि मरे पशु की हाय से लोह तक भस्म हो जाता है। इसी संदर्भ में रहीम का दोहा—

**रहिमन हाय गरीब की कबहुं न निरफळ जाय।**
**मुई खाल की हाय से, लोह भसम हो जाय ॥**

**गरीब री लुगाई, जगत री भौजाई।** ३३१९

गरीब की जोरू, सबकी भावज।

दे.क.सं.१७९८

**गरीब री हाय, सरबस खाय।** ३३२०

गरीब की हाय, सब-कुछ खाय।

दे.क.सं.३३१८

**पाठा : गरीब री हाय खोटी।** गरीब की हाय बुरी!

**गरीब रै पेट में दांत व्है।** ३३२१

गरीब के पेट में दाँत होते हैं।

—गरीब सामने वार नहीं करता,विश्वासघात करता है इसलिए ज्यादा खतरनाक होता है।

—गरीब ऊपर से सीधा पर भीतर से कुटिल व हिंस्र होता है।

**गरीब रौ बेली रांम।** ३३२२

गरीब का हितैषी राम।

—राम व भाग्य के सहारे ही गरीब दुख के दिन काटता है।

—भगवान के विश्वास पर ही गरीब दुख का सामना करता है,परिस्थिति से जूझता है।

**पाठा : गरीब रौ विळू रांम।** गरीब का हिमायती राम।

**गरीबां रै तौ टाबर-टूबर ई धन व्है।** ३३२३

गरीब के लिए तो बाल-बच्चे ही धन हैं।

—गरीब के घर में जितने छोटे-बड़े शरीर,उतनी ही मजदूरी।

—शरीर से मेहनत-मजदूरी करने वाले बाल-बच्चे ही तो असहाय का असली धन होते हैं।

**गरीबी में आटौ गीलौ।** ३३२४

गरीबी में आटा गीला।

—गरीब के लिए चारों तरफ अभाव-ही-अभाव छिपा रहता है।

—मुसीबत में एक और मुसीबत खड़ी हो जाय तब !

—एक मात्र सहारा टूट जाय तब।

**गरीबी सूं बडौ भाई-चारौ कोनीं।** ३३२५

गरीबी से बढ़कर भाई-चारा नहीं।

—विनम्रता से बढ़कर कोई दूसरा आत्मीय नहीं।

—विनम्र और सहनशील व्यक्ति का कोई दुश्मन नहीं होता।

**गरु कनै तौ ग्यांन इज लाधै।** ३३२६

गुरु के पास तो ज्ञान ही मिलता है।

—धन, सत्ता या कीर्ति के भरोसे किसी को गुरु करना व्यर्थ है। गुरु के पास ज्ञान के अतिरिक्त कुछ भी नहीं होता।

—जिसे ज्ञान की आवश्यकता हो वह गुरु की शरण में जाए।

**गरु कीजे जांण, पांणी पीजै छांण।** ३३२७

गुरु करना जानकर, पानी पीना छानकर।

—सौ बार सोचकर किसी को गुरु बनाना चाहिए। तथा पानी अच्छी तरह छानकर पीना चाहिए।

—किसी भी काम को सतर्कता-पूर्वक करने से आगे कठिनाई नहीं होती।

**गरु कैवै ज्यूं करणौ, गरु करै ज्यूं नीं करणौ।** ३३२८

गुरु कहे ज्यों करना, गुरु करे ज्यों नहीं करना।

—गुरु के बुरे-भले आचरण का अनुकरण नहीं करके, उसके सद्-उपदेशों का ही पालन करना चाहिए।

—बुरे कर्मों को सीखने की बजाय, अच्छी बातों को जीवन में ढालने की कोशिश करनी चाहिए।

**गरु-गरु विद्या, सिर-सिर बुद्धि।** ३३२९

गुरु-गुरु विद्या, सिर-सिर बुद्धि।

—हर गुरु के पास अपनी अलग विद्या होती है और हर शिष्य के पास अपनी अलग-अलग समझ होती है।

—गुरु अपने हिसाब से ज्ञान देता है और शिष्य अपने हिसाब से उसको ग्रहण करता है।

**गरु गुळ अर चेला चीणी।** ३३३०

गुरु गुड़ और चेले चीनी।

—जो शिष्य गुरु से भी आगे बढ़ जाएँ।

—गुरु की सार्थकता यही है कि वह शिष्य को अपने से बेहतर बनाये।

**गरुजी चेला घणा के भूखां मरयां मतै ई टुर जासी।** ३३३१

गुरुजी चेले बहुतेरे कि भूखों मरने पर आप ही खिसक जाएँगे।

—स्वार्थ-सिद्धि न होने पर कैसा भी संगठन तितर-बितर हो जाता है।

—खरे आदर्शों पर केवल आकर्षण या स्वार्थ के कारण टिका नहीं रहा जा सकता, तपस्या व त्याग आवश्यक है।

**गरुजी बेल बधज्यौ के म्हारै तांई!** ३३३२

गुरुजी बेल बढ़े कि मुझ तक ही!

—संत महात्मा विवाह नहीं करते, इस कारण संतति की संवृद्धि का कोई प्रश्न ही नहीं उठता—उनकी वंश-बेल उनके मरते ही सूख जाती है।

—जिस व्यक्ति के कारण घर की उन्नति और विकास के सारे रास्ते अवरुद्ध हो गये हों।

—जो व्यक्ति घर की गिरती अवस्था का मूल कारण हो।

**गरुजी राती भाजी खावौ के बेटा अेवाड़ा किण रा फाड़ां?** ३३३३

गुरुजी लाल भाजी का शौक है कि बेटे बाड़े किसके लाँघें?

लाल भाजी = गोश्त, माँस।

—सामर्थ्य व साहस के बिना इच्छाएँ मन-की-मन में रह जाती हैं।

—मजबूरी में किसी आदर्श का पालन करने वाले के प्रति।

—गहरी इच्छा होने पर भी जो चीज प्राप्त न हो तब!

**गरु बिन मिळै न ग्यांन।** ३३३४

गुरु बिन मिले न ज्ञान।

—ज्ञान के लिए पोथियों की सुलभता ही पर्याप्त नहीं होती, गुरु के माध्यम से ही उन में निहित ज्ञान को प्राप्त किया जा सकता है।

—भारतीय चिंतन परंपरा में गुरु का दर्जा ईश्वर के समकक्ष ही माना गया है—

**गुरु गोविंद दोनों खड़े, काकै लागूं पांव।**

**बलिहारी गुरु देव की, गोविंद दियौ बताय॥**

**गरु मारै धमधम, विद्या आवै घमघम।** ३३३५

गुरु मारे धमाधम, विद्या आये घमाघम।

—गुरु की मार से ही मंगलदायिनी विद्या उपलब्ध होती है।

—कष्ट उठाये बिना ज्ञान प्राप्ति नहीं होती।

पाठा : **गरु मारै धमधम, विद्या आवै छमछम।**

**गरु रा ठोल, मोत्यां मोल।** ३३३६

गुरु के ठोल, मोतियों के मोल।

ठोलौ = मुट्ठी बंद करके बिचली अँगुली को इस मुद्रा में रखना, जिससे उसके पीछे का जोड़ दूसरी अँगुलियों से कुछ आगे निकल आए। उस उठे हुए भाग से जब सिर पर प्रहार किया जाए तो उसे 'ठोला' कहते हैं।

—गुरु के हाथों की पिटाई विद्या का निमित्त बनती है। और विद्या या ज्ञान के सामने हीरे-मोतियों का मोल ही क्या है?

—गुरु की लात, मोतियों की सौगात!

**गरु री करणी गरु नै अर चेला री करणी चेला नै।** ३३३७

गुरु की करनी गुरु को और चेले की करनी चेले को।

—करनी के फल में किसी का सहयोग व उपदेश सहायता नहीं करता।

—जो जैसा करे वैसा फल पाये।

—अपने-अपने कार्य की अपनी-अपनी जिम्मेवारी।

**गरु री चोट, विद्या री पोट।** ३३३८

गुरु की चोट, विद्या की पोट।

पोट = गठरी।

—गुरु के पीटने का कभी बुरा नहीं मानना चाहिए,विद्या की राह यही है।

—गुरु के डंडे में ही विद्या का मंत्र छिपा हुआ है।

मि.क.सं.३३३४,३३३६

**गरु री विद्या गरु नै फळी।** ३३३९

गुरु की विद्या गुरु को फली।

—जो बुरा सिखाता है,वही एक दिन उसी बुराई के फंदे में फँसता है।

—बुराई से शुरुआत में भले ही लाभ हो,पर अंत में उसका बुरा नतीजा निश्चित है।

—बदमाशों के सरदार को अपने बुरे कर्मों की सजा मिले तब।

**गरु रौ फरमांण, अकल परवांण।** ३३४०

गुरु का फरमान, बुद्धि के अनुसार।

—बड़े आदमियों का उपदेश तो सभी के लिए एक-सा होता है,पर उसे ग्रहण करने वालों की भिन्न समझ के कारण उसे अनेक तरह से ग्रहण किया जाता है।

—समझने वालों की बुद्धि किसी भी बात को अपने हिसाब से ही अंगीकार करती है।

**गरु सूं चेलौ सवायौ!** ३३४१

गुरु से चेला सवाया!

—जो चेला गुरु से बढ़कर निकल जाय।

—जो लड़का बाप से अधिक कुटिल या कंजूस हो।

—यह कहावत भले-बुरे दोनों अर्थ में प्रयुक्त होती है।

**गळ बंधिया घूघू मरै।** ३३४२

गले बँधे हुए उल्लू मरते हैं।

—घनिष्ठ मैत्री आखिर टूटकर रहती है।

—पूर्णतया आश्रित व्यक्ति आखिर कष्ट उठाता है।

—किसी बुरे काम में संलग्न रहने से अंत में नुकसान होता ही है।

—प्रेम के पीछे सुध-बुध भूले हुए व्यक्ति को समझाने में इस उक्ति का प्रयोग होता है।

**गळवांणी सूं गरज नीं सरै।** ३३४३

गुड़वाणी से गरज नहीं मिटती।

गळवांणी = घी में सिके हुए आटे व गुड़ से बना तरल पेय।
—जिस व्यक्ति से अधिक की आशा हो और वह बहुत कम दे तब।
—पूरे सहयोग के बिना बात सफल नहीं होती।
—अपर्याप्त साधनों से कामयाबी नहीं मिलती।

**गळा में आयगी।** ३३४४
गले में आ गई।
—उलटी आफत गले में आ पड़े तब।
—किसी दूसरे निपटारे में अचीती जिम्मेवारी सिर पर आ पड़े तब।

**गळा में डाळौ आयग्यौ।** ३३४५
गले में फंदा आ फँसा।
—चलते रास्ते किसी काम का भार मत्थे आ पड़े तब।
—अप्रत्याशित खतरे का सामना करना पड़े तब।

**गळियारा तौ वैता ई भला।** ३३४६
गलियारे तो चलते रहें तो बेहतर।
—मार्ग तो हरदम चलते रहने से कायम रहते हैं।
—निरंतर चहल-पहल ही राह की शोभा बढ़ाती है।
—परंपरा के पथ तो चालू रहने से ही स्थायी बने रहते हैं।
—रीति-रिवाजों का सिलसिला टूटना नहीं चाहिए।

**गळियारै रौ घर रांम-रांम में जासी।** ३३४७
गलियारे का घर राम-राम में जाएगा।
—राह पर बसे घर का अधिकांश समय अभिवादन में ही बीत जाता है, तिस पर छोटी-मोटी मनुहार में खर्च करना पड़ता है, वह अलग से।
—छोटे-मोटे नगण्य खर्चों से छुटकारा न मिले तब!
—जो व्यक्ति दिखावे की खातिर लोगों का सत्कार करे तब!

**गळियो लागे जो गोळ नी खारी लागे जो खांड।**–भी.१९३ ३३४८
मीठा लगे वह गुड़ नहीं और कड़ुवी लगे वह खाँड नहीं।

—व्यक्ति जैसा प्रदर्शित करता है, वास्तव में वैसा होता नहीं। हर मीठी लगने वाली चीज गुड़ नहीं होती। और यदि जो चीज चखने पर कड़ुवी लगती है तो वह शक्कर के अलावा कुछ और ही है। बुरा दिखने वाला व्यक्ति संभव है अच्छा हो।

—भला दिखने वाला व्यक्ति बुरा हो सकता है और बुरा दिखने वाला अच्छा हो सकता है। आदमी की सही पहिचान मुश्किल है।

**गळी रा गिंडक ई को बूझै नीं !** ३३४९

गली के कुत्ते भी नहीं पूछते !

—जो व्यक्ति खामखाह अपनी बड़ाई करे, पर वास्तव में उसके मोहल्ले में भी कोई कद्र न करे।

—अकिंचन व्यक्ति की कोई परवाह नहीं करता।

—जिस कंजूस के पास माया तो खूब हो, पर जिसकी कद्र कानी कौड़ी जितनी भी न हो।

**गळी सांकड़ी अर बळद मारणौ।** ३३५०

गली सँकड़ी और बैल मारने वाला।

—गली सँकड़ी हो और सामने बदमाश बैल खड़ा हो तो मंजिल कैसे तय की जाय।

—जिस आफत से बचने का कोई उपाय न हो।

—किसी भी तरह न टलने वाली विपदा से सामना हो जाय तब।

**गळै आया चोर नै खांधै करनै काढ़णौ पड़ै।** ३३५१

गले पड़े चोर को कंधा देकर निकालना पड़ता है।

—कभी-कभार ऐसी स्थिति आ खड़ी होती है जब नुकसान पहुँचाने वाले को भी उलटा सहयोग देने के लिए मजबूर होना पड़ता है।

—जैसी परिस्थिति होती है, उसी के अनुसार उससे निपटना पड़ता है।

पाठा : **धंसियौ चोर खांधै करि काढ़ीजै।**

कीचड़ में धँसे चोर को कंधा देकर निकालना पड़ता है।

मि.क.सं.१९१०

**गळै आई बजावणी पड़ै।** ३३५२

गले पड़ी बजानी पड़ती है।

—इच्छा के विपरीत मजबूरी में कोई काम करना पड़े तब।

—मन के प्रतिकूल कोई काम करने की विवशता।

**गळै आयोड़ी घूंट ही।** ३३५३

गले आई घूँट थी।

—जो काम संपन्न होते-होते बिगड़ जाय।

—सफलता के करीब आकर कोई काम नष्ट हो तब!

—किसी काम में लाभ होते-होते हानि हो जाय तब!

—दूसरा अर्थ यह भी कि गले पड़ी जिम्मेवारी को जस-तस निगलना पड़े यानी किसी तरह निभाना पड़े तब!

**गळै-ताळवै ई को लागै नीं।** ३३५४

गले-तालू में भी नहीं लगे।

—एकदम अपर्याप्त वस्तु के लिए।

—जिस नगण्य सहयोग से कुछ भी पूरा न पड़े तब।

**गळै बंध्यौ ढोल तौ बजायां ई सरै।** ३३५५

गले बँधा हुआ ढोल तो बजाना ही पड़ता है।

—इच्छा के विपरीत किसी काम को पूरा करने की लाचारी।

—सिर पर आ पड़ी जिम्मेवारी को जब निबाहने के अलावा अन्य कोई चारा न हो तब।

—आश्रित-प्राणियों का पालन-पोषण तो करना ही पड़ता है।

मि.क.सं.३३५२

**गळै में गंगा इज बैवै।** ३३५६

गले में मानो गंगा ही बह रही हो।

—जिस व्यक्ति की वाणी गंगा की तरह पवित्र, शीतल व निर्मल हो और जो कभी झूठ न बोले।

—व्यंग्य के रूप में भी इस उक्ति का प्रयोग होता है जब कोई व्यक्ति निहायत गंदी या कड़वी बात करता हो।

**गळै में हरदम सिगड़ी जळती ई रैवै ।** ३३५७

गले में हरदम सिगड़ी जलती ही रहती है ।

—जो व्यक्ति हरदम गुस्से में आग-बबूला होता रहे ।

—क्षण भर के लिए भी जिस व्यक्ति के क्रोध की आँच शांत न हो ।

**गवर रूठी तौ सुहाग लैसी, भाग तौ लेवण सूं री ।** ३३५८

गवर रूठे तो सुहाग लेगी, भाग्य तो लेने से रही ।

—अपने-अपने सुहाग की मंगल-कामना के लिए विवाहित औरतें शुक्ला द्वितीया पर गनगौर की पूजा करती हैं । पूजा न करने पर सुहाग ही तो छिनेगा, कोई भाग्य तो छिनने से रहा ।

—जब भाग्य साथ है तो कोई व्यक्ति आखिर कितना नुकसान पहुँचा सकता है ।

—सहयोग देने वाला व्यक्ति मुकरने लगे तब ।

—स्वाभिमानी परिस्थितियों से समझौता न करके कोई भी क्षति उठाने को तैयार रहता है ।

**पाठा : गिणगौर रूसै तौ आपरौ सुहाग राखै ।**

गनगौर रूठे तो अपना सुहाग रखे ।

**गवां भेळा घुण पीसीजै ।** ३३५९

गेहूँ के साथ घुन पिसता है ।

—घुन को अनाज़ खाने से सुख मिलता है तो साथ पिसे जाने पर उसे मरना भी पड़ता है ।

—सुख में साथ रहने पर, दुख में भी पूरा हिस्सा बँटाना ।

—पेट भरने के लिए मौत का खतरा भी झेलना पड़ता है ।

—बड़ों की संगति छोटों के लिए घातक होती है ।

—विषम संगति का दुष्परिणाम लाजिमी है ।

**गवां री घरटी में गवार दळ न्हाकियौ ।** ३३६०

गेहूँ की चक्की में ग्वार दल डाला ।

—अपनी पारिवारिक मर्यादा बिगड़ने पर बनिये लाक्षणिक ढंग से इस भाषा में इंगित करते हैं । मसलन किसी शाह-साहूकार की औरत के साथ कोई निम्न जाति का व्यक्ति सहवास करे तो वह 'गेहूँ की चक्की में ग्वार दलने' की बात द्वारा जरूरत पड़ने पर उस छिपे रहस्य

को प्रकट करता है। या दिसावर में व्यवसाय करते मुखिये को पत्र में इस तरह इशारे से लिखने पर वह असली बात समझ लेता है।

—किसी वस्तु का ठीक या संगत उपयोग न होने पर।

**गवां री रोटी रौ कांईं पोवणौ।** ३३६१

गेहूँ की रोटी का क्या पोना।

—काफी नर्म और लोचदार होने से गेहूँ की रोटी को पोना काफी आसान है।

—जो कार्य निहायत सरल हो उसे कोई भी कर सकता है।

—अत्यधिक सीधा व्यक्ति जो किसी का भी कहा नहीं टाले और जो समझाते ही अदेर मान ले।

**गवां री लोथ।** ३३६२

गेहूँ की लोथ।

—गेहूँ के भीगे हुए आटे में बहुत लोच व कोमलता होती है इसलिए अत्यधिक सीधे व सरल व्यक्ति की उससे उपमा दी जाती है।

—जो व्यक्ति हर किसी का कहा मान जाय तब उसकी सज्जनता को लक्षित करके यह उक्ति कही जाती है।

**पाठा : गवां रौ लोयौ।** गेहूँ का लोया।

**गवां रौ कांईं पीसणौ, धणी-लुगाई रै कांईं रूसणौ।** ३३६३

गेहूँ का क्या पीसना, पति-पत्नी का क्या रूठना।

—दूसरे अनाज की अपेक्षा गेहूँ का पीसना आसान होता है। पति-पत्नी का रूठना भी अधिक चलता नहीं। सुबह रूठे, शाम मेल, शाम रूठे और रात को मेल। पति-पत्नी की मान-मन्नत भी जटिल न होकर आसान होती है।

—तुकबंदी की खातिर रची हुई उक्ति।

**गवाड़ै वाळी केरड़ी'र उरण हुवौ गेवाळ।** ३३६४

बाड़े में डाली बछिया, उऋण हुआ ग्वाल।

—सौंपी हुई जिम्मेवारी से मुक्त होने पर।

—किसी भी कर्तव्य की पूर्ति के पश्चात मनुष्य स्वयं को पूर्णतया मुक्त महसूस करता है।

**गवाळ-बंदी नीं रैवै, सीळ-बंदी रैवै।** ३३६५

ग्वाल-बंदी नहीं रहती, शील-बंदी रहती है।

—पहरेदारी से औरतों के शील की रक्षा नहीं होती, वे अपने मन से चाहें तो शील रखा जा सकता है।

—बाहर के बंधन की अपेक्षा मन का बंधन ज्यादा कारगर होता है।

**गवूं खेत में, बेटौ पेट में नै लगन पांचम रौ सीदौ।** ३३६६

गेहूँ खेत में, बेटा पेट में और लग्न पंचमी का भोजन।

—बेहद जल्दबाजी करने वाले व्यक्ति के लिए।

—खामखयाली के भरोसे निश्चित योजना बनाना उपहासास्पद है।

—आधार-रहित आशावादिता पर व्यंग्य।

—हवाई-किले बनाने वाले के प्रति कटाक्ष।

**गहण लाग्यौ ई कोन्या, मंगता पैला ई भेळा व्हैगा।** ३३६७

ग्रहण लगा ही नहीं, भिखारी पहले ही इकट्ठे हो गये।

—किसी आयोजन के पहिले ही भीड़ हों जाय तब।

—किसी आशंकित विपदा के पहिले ही लोग क्लेश पहुँचाने लगें तब।

**गहणौ धायां रौ सिणगार नै भूखां रौ आधार।** ३३६८

गहना अमीरों का शृंगार और गरीबों का आधार।

—आर्थिक संपन्नता के दौरान आभूषण शृंगार की शोभा बढ़ाते हैं पर स्थिति बिगड़ने पर वे ही गहने दुख में सहारा बन जाते हैं।

—जिस वस्तु से दोहरा लाभ पहुँचे तब।

**गहणौ चांदी रौ, नखरौ बांदी रौ।** ३३६९

गहना चाँदी का, नखरा बाँदी का।

—चाँदी के गहनों की क्वणन ध्वनि और बाँदी का नखरा हर किसी का ध्यान आकर्षित कर लेता है। इसलिए दोनों ही प्रशंसा के योग्य हैं।

—आकर्षित करने वाली चीज़ पर स्वतः ध्यान चला जाता है।

# गां - गा

**गांगड़तां ऊंट पिलांणीजै ।** ३३७०

चिल्लाते ऊँटों पर ही जीन कसी जाती है ।

दे.क.सं.३२५

**गांगली कोई रोवण में रोईजै अर नीं कोई गीतां गाईजै ।** ३३७१

'गाँगली' न कोई रोने के काम की और न गीतों में गाने के काम की ।

गांगली = आषाढ़ या सावन मास में दक्षिण व पश्चिम के बीच चलने वाली हवा जो वर्षा को रोकती है ।

—उस व्यक्ति के लिए जो न किसी बदनामी के काबिल हो और न किसी प्रतिष्ठा के योग्य हो ।

—निहायत निकम्मे आदमी के लिए ।

**गांगी गोळ हालै के मोह री मारी ।** ३३७२

गंगा दिसावर चलेगी कि प्रेम की मारी ।

गांगी = किसी औरत का नाम ।

गोळ = अकाल के समय अपना गाँव छोड़कर मवेशियों की खातिर पास या दूर किसी सरसब्ज इलाके में जाने के लिए 'गोळ' शब्द का प्रयोग होता है । पहले अकसर मालवा की तरफ लोग मवेशी लेकर जाते थे ।

—बिना मतलब केवल प्रेम की खातिर साथ निभाने वाले व्यक्ति के लिए ।

—जिस व्यक्ति के पास करने-धरने को कुछ काम न हो, वह किसी के साथ कोई बहाना बना कर चल देता है ।

**पाठा : गांगी गोळ हालै के बायड़ तौ कोनीं, असकेल री खातर हालूं ।**

गंगा दिसावर चलेगी कि इच्छा तो नहीं है, दिल्लगी की खातिर चलूँगी ।

**गांगी गोळ हालै के गी तौ कोनीं पण ईसकै री मारी हालूं ।**

गंगा दिसावर चलेगी कि गई तो नहीं, पर डाह की मारी चलूँगी ।

**गांटे मौत लेई ने फरे, जणांये हूं करवो ।**– भी.१९४ ३३७३

गाँठ में मौत लेकर फिरे, उसका क्या उपाय किया जा सकता है ।

—जो व्यक्ति अपनी झूठी हेकड़ी में हरदम मरने-मारने की बात करे, भला उसे कौन बचा सकता है, कोई उपाय भी तो नहीं ।

— मिथ्या दंभ और झूठी अक्खड़ का अंत विनाश में ही होता है ।

**गांठ रौ गमावूं नीं लोगां साथै जावूं ।** ३३७४

न तो गाँठ का गँवाऊँ न दूसरों के साथ जाऊँ ।

—जिस व्यक्ति की संगति से हानि उठानी पड़े उसका साथ ही क्यों करना ?

—जो व्यक्ति तनिक भी खतरे का काम न करे ।

**गांठ रौ जाय अर लोक हंसाई ।** ३३७५

गाँठ का जाय और जग-हँसाई ।

—घर का पैसा खर्च हो और उलटे लोग हँसें—ऐसा काम ही क्यों करना चाहिए ।

—जो व्यक्ति घर का पैसा खर्च करने के बाद भी खिलवाड़ का लक्ष्य बने उसकी सीख के लिए यह कहावत प्रयुक्त होती है ।

**गांठ रौ भरम क्यूं गमावणौ ?** ३३७६

गाँठ का भ्रम क्यों गँवाना ?

—जब तक दुनिया में भ्रम बना रहे, तब तक सब सुचारु रूप से चलता है, किंतु भ्रम मिटते ही कदम-कदम पर कठिनाइयाँ शुरू हो जाती हैं । इसलिए अपनी गाँठ का भ्रम कभी तोड़ना नहीं चाहिए ।

—अपनी आर्थिक स्थिति की असलियत कभी किसी को पता न लगे तो अच्छा है ।

**गांठां तौ घुळी पण घुळी ।** ३३७७

गाँठें तो बेहद उलझीं ।

—जो काम बेइंतहा पेचीदा हो जाय, तब ।

—परस्पर बहुत तनाव उत्पन्न हो जाय, तब ।

**गांधी गांधी रौ बैरी ।** ३३७८

गाँधी गाँधी का बैरी ।

—समान धंधे वालों में ईर्ष्या होना स्वाभाविक है ।

—हम-पेशेवर व्यक्तियों की आपसी डाह ।

**गांम मांये घेर नी, उजाड़ मांये खेती नी, मुडुं दांत नीं ।**–भी.१९५ ३३७९

गाँव में घर नहीं, बाहर खेती नहीं, मुँह में दाँत नहीं ।

—भला ऐसे निराश्रित व्यक्ति को कौन उधार दे या कौन उसकी जमानत दे ? यदि दे भी दे तो उससे वसूल क्या किया जा सकता है ?

—जिस बेसहारा व्यक्ति को सबसे अधिक सहारे की जरूरत होती है, उसे कोई सहारा नहीं देता । समर्थ को ही सब सहयोग देना चाहते हैं ।

**गांम रा छांणा ई मारै ।**–व.३९१ ३३८०

गाँव के कंडे भी मारते हैं ।

—पोटे या गोबर करने वाले जानवर तो अपने सींगों से किसी को मारें तो इस में कोई आश्चर्य की बात नहीं । पर उनके सूखे हुए कंडे भी वैसा जोर दिखाएँ तो अवश्य अनहोनी बात है । पर अपने गाँव की सीमा में सूखा-कंडा भी तैश खाये बिना नहीं रहता ।

—अपनी ठौर के जोश पर कुत्ते बिल्ली ही क्या निर्जीव चीजें भी खूँखार हो जाती हैं ।

—परिचितों के बीच कमजोर व्यक्ति का भी जोश उमड़ने लगता है ।

**गांम रा छोकरा न मोरा, हूं मुंहडै ची भारणि ।**–व.६८ ३३८१

गाँव के छोकरे निर्लज्ज, मेरे मुँह में लिहाज ।

—लिहाजी स्वभाव के कारण न चाहते हुए भी किसी हीन काम में लिप्त होना ।

—दूषित वातावरण या परिवेश का प्रभाव अंततः प्रभावित करता ही है ।

**गांव कनै आय खोळा टांकणा।** ३३८२

गॉव के पास आकर पॉयचे टॉकना।

खोळा टांकणा = गॉव में खेती का काम या मजूरी करते समय लोग पॉयचे टॉक लेते हैं, जिससे सुविधा रहती है। वरना धोती टखने या घुटनों तक नीचे रहती है। बिना काम गॉव में पॉयचे टाँकना सामान्य शिष्टाचार के विरुद्ध भी है।

—डरपोक व्यक्ति के लिए जो गॉव के पास आकर कमर कसे या बहादुरी का प्रदर्शन करे।

—औंधा काम करने वाले व्यक्ति के लिए।

—जो व्यक्ति रहन-सहन का सलीका न जानता हो।

—अकर्मण्य व्यक्ति काम करने का दिखावा करे तब।

**गांव करै ज्यूं गिंवार करै।** ३३८३

गॉव करे ज्यो गॅवार करे।

—समूह या समाज की देखादेखी काम करने वाले के प्रति।

—समाज के अनुसार ही व्यक्ति को आचरण करने के लिए मजबूर होना पड़ता है।

—किसी भी गँवार में इतनी अक्ल तो होती है कि वह दूसरों की देखादेखी काम कर ले।

—गँवार व्यक्ति गाँव से टलकर आचरण नहीं कर सकता।

—रस्म-रिवाजों के प्रचलन का औचित्य।

—गाँव के अनुसार चले वही गँवार, विवेकशील व्यक्ति बहुत सोच-विचारकर काम का औचित्य खोजता है।

**गांव कसोटी।** ३३८४

गॉव कसौटी है।

—किसी भी व्यक्ति के आचरण की कसौटी गाँव की नजरें ही हुआ करती हैं।

—जिसके बारे में जो गाँव की राय है—वही सही राय है। हर मनुष्य को समाज के बीच रह कर ही जीना होता है, इसलिए सामाजिक राय ही उसके लिए अंतिम राय होती है।

**गांव कोटवाळी मतै ई सिखावै।** ३३८५

गॉव कोतवाली अपने-आप सिखा देता है।

—जिम्मेवारी गले पड़ने पर स्वतः दक्षता हासिल हो जाती है।

—सामाजिक अनुभव से बड़ा कोई शिक्षक नहीं होता।

**पाठा : कांम ई गरु व्है** । काम ही गुरु होता है।

मि.क.सं. २०२९,२०४३

**गांव-गांव खेजड़ौ अर गांव-गांव गोगौ।** ३३८६

गाँव-गाँव खेजड़ी और गाँव गाँव गोगा।

खेजड़ौ = शमी-वृक्ष। गोगा = नागदेव,साँप।

—जो चीज सर्वत्र बहुतायत से मिलती हो।

—बड़े व्यक्तियों की भी कमी नहीं और उन्हें पूजने वालों की भी कमी नहीं।

—सिद्ध और साधक के प्रति कटाक्ष।

—दूसरा अर्थ यह भी कि प्रत्येक गाँव में साँप मिलता है, किंतु उसके उपचार-स्वरूप शमी-पेड़ भी हर गाँव में मौजूद है। जहाँ दुष्ट व्यक्ति होते हैं, वहाँ दुष्टों का इलाज करने वाला भी कोई-न-कोई मिल जाता है।

**गांव गिणै नीं गैला नै अर गैलौ गिणै नीं गांव नै।** ३३८७

गाँव माने नहीं पगले को और पगला माने नहीं गाँव को।

—जब कोई दो व्यक्ति एक-दूसरे को उपेक्षा की दृष्टि से देखें।

—अपनी धुन में खोये रहने वाले के प्रति—जो न समाज को मानता है और न समाज उसे।

—उस व्यक्ति के लिए भी जिसे समाज अच्छी तरह समझ न सके।

—आज के तथाकथित नेताओं के प्रति भी व्यंग्य, जो न लोगों की परवाह करते हैं और न लोग उनकी परवाह करते हैं।

**गांव गियौ आवै, सूत्यौ जागै ?** ३३८८

गाँव गया आये, सोता जगे ?

—गाँव गया हुआ व्यक्ति कब आता है और सोया हुआ व्यक्ति कब उठता है, इसका कुछ पता नहीं चलता।

—बिना अते-पते की बात या व्यक्ति के लिए।

**पाठा : गांवतरै गियौ कद आवै, सूतौ कद जागै ?**

दूसरे गाँव गया कब आये और सोया कब जागे ?

**गांव गैल बुराई सगळै हुवै।** ३३८९

हर गाँव में बुराई होती ही है।

—जहाँ गाँव होता है वहाँ गंदगी होती ही है।

—हर गाँव में भले-बुरे व्यक्ति बसते हैं।

**पाठा : गांव जठै सूगलवाड़ौ।** जहाँ गाँव वहाँ गंदगी।

**गांव छोडणौ पण कांम नीं छोडणौ।** ३३९०

गाँव छोड़ना पर काम नहीं छोड़ना चाहिए।

—गाँव तो दूसरा भी मिल सकता है—अच्छा या बुरा, पर काम छोड़ने से तो निर्वाह मुश्किल है।

—मनुष्य को हर स्थिति में काम तो करना ही पड़ता है। मनुष्य के जीवन का अर्थ ही कर्म है।

**गांव जैड़ी गळियां।** ३३९१

गाँव जैसी गलियाँ।

—गाँव के अनुरूप ही गाँव का सारा परिवेश होता है।

—जैसी क्षमता वैसी चमक-दमक।

—जैसी हैसियत वैसा ठाट।

**गांव जैड़ी दीवाळी !** ३३९२

गाँव जैसी दीवाली !

—गाँव की औकात के अनुसार ही वहाँ के उत्सव-त्योहार होते हैं।

—जैसी क्षमता होती है, उसीके अनुरूप उसका प्रदर्शन होता है।

दे.क.सं.३३९१

**गांवड़िया गांव में इरंडियौ ई रूंख।** ३३९३

छोटे गाँव में एरंड ही गाछ।

दे.क.सं.२०७,२३९९

**गांवड़ियां गांव में ढोलण ई वूजी।** ३३९४

छोटे गाँव में ढोलन भी माई।

दे.क.सं.५०,२३९९

**गांवड़ियौ गिंवार नीं जांणै वार-तिंवार।** ३३९५

गाँव का गँवार न जाने वार-त्योहार।

—जिस व्यक्ति में शालीनता व शिष्टाचार की एकदम कमी हो।

—बेशऊर व्यक्ति के प्रति कटाक्ष।

—शहरी लोग अपने मापदंड से गाँव वालों का आकलन करते हैं तो वे इसी नतीजे पर पहुँचते हैं कि गाँव में रहने वाला गँवार ही होता है और उसे बातचीत का कोई शऊर नहीं होता।

**गांव तौ बस्यौ ई कोनीं अर अन्याव पैली !** ३३९६

गाँव तो बसा ही नहीं और अन्याय पहिले !

—सत्ता तो हाथ में आई ही नहीं और पहले उच्छृंखलता !

—अधिकार मिलने से पूर्व ही जो व्यक्ति सख्ती करने लगे।

**गांव तौ बस्यौ ई कोनीं, मालजादां रा मांचा पैला ई आ बाज्या।** ३३९७

गाँव तो बसा ही नहीं, मालजादों के पलंग आ धमके।

—जब किसी अच्छाई के पहले बुराई का आगमन हो।

—किसी आयोजन के पहले जो व्यक्ति ऊधम मचाना शुरू कर दे।

—जिस काम का आरंभ ही अशुभ या बुरा हो।

**पाठा : गांव तौ बस्यौ ई कोनीं, चोर पैला ईं आयग्या।**

**गांव तौ बस्यौ ई कोनीं, मंगता पैली ई आयग्या।**

**गांव थारौ, नांव म्हारौ।** ३३९८

गाँव तेरा, नाम मेरा।

—खामखाह किसी व्यक्ति के साथ जुड़ना चाहे,उसके लिए।

—कुछ भी काम किये बिना उसका श्रेय लेने वाले व्यक्ति पर छींटाकशी।

—कोई निठल्ला व्यक्ति कर्मठ व्यक्ति से प्रमुख स्थान लेना चाहे तब।

—अवैध संतान तो पिता की ही कहलाती है,प्रेमी की नहीं।

—किसी की ओट में अपना हित साधन करना चाहे तब।

**गांव धणी री धी परणै, गतराड़ौ गाती मारै।** ३३९९

ठाकुर की बेटी ब्याहे, हिंजड़ा अड़ंगा लगाये।

—अनधिकृत व्यक्ति जब व्यर्थ की पंचायती करे तब।

—जो अयोग्य व्यक्ति खामखाह का जोश बघारे।

पाठा : **बांणिया री छोरी परणै, गतराड़ौ गाती मारै।**

बनिये की बेटी ब्याहे, हिंजड़ा अधिकार जताये।

**गांव बळै अर डूंम तिंवारी मांगै।** ३४००

गाँव जले और डोम त्योहारी माँगे।

—अपने क्षुद्र वैयक्तिक स्वार्थ के सामने जो व्यक्ति दूसरों के भारी नुकसान की कुछ भी परवाह न करे।

—मुझे तो अपने जी की पड़ी और तुम अपनी ही गा रहे हो।

—दूसरों की बर्बादी के बीच जो व्यक्ति अपने स्वार्थ का ही रोना रोये।

पाठा : **गांव तौ उछाळै अर डूंम तिंवारी मांगै।**

गाँव तो आंदोलित और डोम त्योहारी माँगे।

उछाळौ = ठाकुर पर किसी कारण से नाराज होकर प्रजा का सामूहिक रूप से पलायन करना व एक साथ मिल्कियत लेकर रवाना होना।

**गांव बळ्यां री सबूरी पण पेट बळ्यां री सबूरी नीं व्है।** ३४०१

गाँव जलने की सब्र, मगर पेट जलने की सब्र नहीं होती।

—गाँव जलने की त्रासदी झेली जा सकती है पर मरे लड़के का सदमा नहीं झेला जा सकता।

—भौतिक या आर्थिक क्षति चाहे वह कितनी ही बड़ी क्यों न हो, भावनात्मक सदमे से उसकी कोई तुलना नहीं।

—देश व समाज की कैसी भी बड़ी हानि नजर-अंदाज की जा सकती है, पर अपनी वैयक्तिक हानि सहन कहाँ होती है ?

**गांव बसायौ बांणियै, पार पड़ै जद जांणियै।** ३४०२

गाँव बसाया बनिये ने, पार पड़े तब जानें।

—पुराने जमाने में सामंती प्रथा के दौरान लूट-खसौट, चोरी व झगड़ा-फसाद की सारी जिम्मेवारी ठाकुर की होती थी। अस्त्र-शस्त्रों से लैस ठाकुर गाँव की रक्षा करता था। इस

कारण बनिये के द्वारा बसाये गाँव में वैसी सुरक्षा संभव नहीं थी। पर आजकल पूँजीपतियों द्वारा बसाये अनेकों शहर दूसरे शहरों की अपेक्षा ज्यादा अच्छे व आबाद हैं। शाब्दिक अर्थ में अब यह कहावत उतनी प्रासंगिक नहीं रही। पर लाक्षणिक अर्थ में इसका अब भी महत्त्व है। इतिहास के ऐसे ही अस्तरों में छिपी तत्कालीन सच्चाई से हमारा साक्षात्कार होता है।

—अयोग्य व्यक्ति के द्वारा काम की शुरुआत तो उमंग के साथ हो जाती है, पर वह अंततः संपन्न नहीं होता।

—जब कोई अक्षम व्यक्ति किसी बड़े काम की जिम्मेवारी लेना चाहे तब।

**गांव बिगाड़्यौ गोरी, मरद बिगाड़्या छोरी।** ३४०३

गाँव बिगाड़ा ग्वाला ने, मर्द बिगाड़े बाला ने।

—चरवाहे अपनी मवेशियों के द्वारा गाँव की फसल बिगाड़ते हैं और लड़कियाँ अपनी ओर आकर्षित करके युवकों को बिगाड़ती हैं। कुछ कहावतें केवल तुक-बंदी के मिलान की खातिर जोड़नी पड़ती हैं। यह कहावत भी वैसी है।

पाठा : **गांव बिगाड़्यौ गोरी, ब्याव बिगाड़्यौ मेह।**

**गांव बिचाळै बेरौ, कोई कैवै ऊंडौ अर कोई कैवै सेवौ।** ३४०४

गाँव के बीच में कुआँ, कोई बताये गहरा और कोई बताये उथला।

—एक ही बात पर लोगों के विभिन्न मत हों तब कोई विवेकसम्मत आधार नहीं होता।

—लोगों के मतामत की कोई पुख्ता दलील नहीं होती।

**गांव में गाडा जाय, कांनां बटीड़ा थाय।** ३४०५

गाँव में गाड़ियाँ चलें, कान भीतर तक जलें।

—खामखाह की नजाकत के प्रति कटाक्ष।

—जो व्यक्ति अकारण परेशानियों का व्यर्थ हवाला देता हो।

**गांव में घर कोनीं, रोही में खेत कोनीं, नांव किरोड़ीमल्ल।** ३४०६

गाँव में घर नहीं, बाहर खेत नहीं और नाम करोड़ीमल्ल।

—नाम के विपरीत लक्षण।

—अपनी हैसियत को भूलकर जो व्यक्ति खामखाह की फौकियत बघारे।

मि.क.सं.३३७९

**गांव में पड़्यौ भजाड़ौ, के करेगौ सांम्ही तारौ।** ३४०७

गाँव में महामारी का जोर, क्या करेगा तारा और।

—गुरु या शुक्र नक्षत्र के अस्तकाल से उदयकाल तक का समय अशुभ माना जाता है। इस उक्ति में 'सांम्ही तारौ' का यही अर्थ है।

—जब सारे गाँव में महामारी का प्रकोप है तो यह अशुभ तारा और क्या नुकसान पहुँचाएगा।

—संकट के समय शुभ-अशुभ शकुनों की परवाह न करके उसके निवारण की चिंता करना ही श्रेयस्कर है।

**गांव रा खाड-खंधेड़ा गांव रौ आंधौ ई जांणै।** ३४०८

गाँव के गड्ढे-पोखर गाँव का अंधा भी जानता है।

—रात-दिन का नियमित संपर्क ही जानकारी का मुख्य आधार होता है—जो एक अंधे व्यक्ति को भी अभ्यास से सुलभ हो जाता है।

—गाँव की भली-बुरी बातें गाँव के नादान व्यक्ति से भी छिपी नहीं रहतीं।

**गांव रा छोरा गांव में ई रमसी।** ३४०९

गाँव के छोकरे गाँव में ही खेलेंगे।

—भला-बुरा जैसा भी काम है—गाँव के लड़के गाँव में ही करेंगे, कोई दूसरे गाँव तो जाकर करने से रहे।

—किसी गाँव के निवासी से जाने-अजाने कोई छोटी-मोटी गलती हो जाय तो उसके पक्षधर सफाई देने के लिए इस कहावत का सहारा लेते हैं।

—गाँव का बाशिंदा कोई मामूली अपराध कर बैठे तो उसे नजर-अंदाज कर देना चाहिए।

**गांव री गत खेड़ा देवै।** ३४१०

गाँव का ब्योरा बसावट देती है।

खेड़ा = पुराना गाँव जो उजड़ चुका हो, उसे खेड़ा कहते हैं। और छोटी बस्ती को भी। पर हिंदी में 'खेड़ा' के लिए उपयुक्त शब्द नहीं मिला। तब कहावत के भाव को स्पष्ट करने के लिए उसका अर्थ बसावट करना पड़ा।

**ऊजड़ खेड़ा भल बसै, निरधनियां धन होय।**

**गियौ न जोबन बावड़ै, मूवौ न जीवै कोय॥**

—किसी गाँव या व्यक्ति की हैसियत का अनुमान उसके वातावरण से हो जाता है।

**गांव री गधी ई को बूझै नीं।** ३४११

गाँव की गधी भी नहीं पूछती।

—अकिंचन व्यक्ति की भला कौन परवाह करता है ? मनुष्यों की बात तो अलग गाँव के पशु भी उनके प्रति उदासीन रहते हैं।

—जो छैला औरतों के संबंध में डींग मारे,उसके प्रति कटाक्ष।

**गांव री छिब गोरवै अर घर री छिब बारणै।** ३४१२

गाँव की छवि सीमा से और घर की छवि मुख्य दरवाजे से।

—गाँव की स्थिति का सीमा से पता चल जाता है और घर की स्थिति का पता मुख्य दरवाजे से या बाहर से हो जाता है।

**गांव री छोरी, गांव में ईं सोरी।** ३४१३

गाँव की बाला, गाँव में ही आला।

—गाँव की लड़की को बड़े शहर की बजाय गाँव में ब्याहना चाहिए, ताकि अपने स्तर के अनुसार वह मुक्त महसूस कर सके।

—भिन्न वातावरण हर किसी को अटपटा लगता है।

**गांव-रीत सो ई गवाड़ी रीत।** ३४१४

गाँव का रिवाज, वही घर का रिवाज।

—समाज के नियम-कायदों से ही घर चलता है।

—घर के रस्म-रिवाज समाज से हटकर नहीं हो सकते।

**गांव री नेपै बाड़ा बतावै।** ३४१५

गाँव की उपज बाड़े बता देते हैं।

—बाड़ों में पड़ी घास व चरी के ढेरों से गाँव की फसल व खुशहाली का अनुमान सहज ही हो जाता है।

—जो व्यक्ति अपनी हैसियत का ज्यादा दिखावा करे तब सामने वाला इस उक्ति द्वारा प्रतिवाद करता है।

**पाठा : सींव री पेठ बाड़ा देवै।**

**गांव री पेठ बाड़ा देवै।** ३४१६

गाँव की हैसियत बाड़े बताते हैं।

—गाँव की आर्थिक स्थिति का अनुमान बाड़ों की हालत से हो जाता है।

—हर व्यक्ति अपनी मित्र-मंडली से पहिचाना जाता है।

—व्यक्ति के आचरण से उसके स्वभाव का पता लगता है।

**पाठा : गांव री साख बाड़ा देवै।** गाँव की साक्षी बाड़े देते हैं।

**गांव रै गोरवै गवूं पकावै।** ३४१७

गाँव के पास ही गेहूँ पकाना।

—जो व्यक्ति हर काम को सहज ही बिना कठिनाई के पूरा कर लेता हो, उसकी कुशलता को लक्ष्य करके इस कहावत का प्रयोग होता है।

—जो काम आसानी से हो जाय।

**गांव रै दांतां नीं चढ़णौ।** ३४१८

गाँव के दाँतों पर नहीं चढ़ना।

—ऐसा कोई कार्य नहीं करना जिससे गाँव वालों को निंदा करने का मौका मिले।

—बुरा काम न करने की सीख।

**गांव रै मूंडै किसौ गरणौ लागै!** ३४१९

गाँव के मुँह पर गरणा थोड़े ही लगता है!

गरणौ = पानी छानने का कपड़ा।

—गरणे शब्द का यहाँ विशिष्ट अर्थ में प्रयोग हुआ है। गरणे के अभाव में लोग बिना छानी हुई बात करते रहते हैं—अर्थात् बिना सोचे-समझे।

—लोगों की जबान पर नियंत्रण नहीं रखा जा सकता।

**गांव रै स्यारै हळ बावै किणी सूं बावतां बैर, कोई अकराळ बतावै।** ३४२०

गाँव के सहारे हल जोते, किसी से बैर तो कोई विकराल बताये।

—लोगों को केवल टीका-टिप्पणी करने का मौका या बहाना मिलना चाहिए।

—कोई चाहे-न-चाहे लोग तो अपनी राय ठोक ही देते हैं।

**गांव रौ गोपीचंदण ई गमायौ।** ३४२१

गाँव का गोपीचंदन ही गँवाया।

गोपीचंदण = गोपीचंदन = एक प्रकार की पीली-मिट्टी जो द्‌वारिका के एक सरोवर से निकलती है। वैष्णव लोग इसका तिलक लगाते हैं।

—जिन तिलक-धारियों के द्‌वारा गाँव बदनाम हो।

—कोई निरर्थक ही सारे गाँव को घाटे में डाले तब !

—जब कोई मुखिया गाँव की प्रतिष्ठा गँवाये तब।

**गांव रौ छोरौ अर बारलौ वींद।** ३४२२

गाँव का छोकरा और बाहर का दूल्हा।

—ठेठ बचपन से जान-पहिचान होने के कारण गाँव के दूल्हे को भी वहाँ के लोग छोकरा कह कर संबोधित करते हैं, पर बाहर के सामान्य व्यक्ति का भी दूल्हे की तरह सम्मान करते हैं।

—अपने गाँव में किसी की प्रतिष्ठा या कद्र नहीं होती।

**गांव रौ जोगी जोगड़ौ अर पार गांव रौ सिद्ध।** ३४२३

गाँव का जोगी जोगड़ा और पराये गाँव का सिद्‌ध।

—सदा परिचितों के साथ रहने से गुणों की बजाय अवगुण ज्यादा उजागर होते हैं और अजाने व्यक्ति के अवगुणों की तो पहिचान बाद में होती है, पहिले उसका साधु-वेश ही प्रभाव उत्पन्न कर देता है।

—अपनों की प्रतिभा आसानी से पहिचानी नहीं जाती और दूसरे की थोड़ी प्रतिभा भी बड़ी दिखती है।

—साथ रहने में लाभ की बजाय हानि भी कम नहीं होती।

**गांव रौ ठाकर केरड़ी मार दी , पण म्हे क्यूं कैवां !** ३४२४

गाँव के ठाकुर ने बछिया मार दी, पर हम क्यों कहें !

—किसी बात का भेद प्रकट करके भी भेद न प्रकट करने का भोलापन दिखाना।

—छिपाने का दिखावा करते हुए किसी का गुप्त भेद स्पष्ट कर देना।

—बड़े लोगों का अपराध प्रत्यक्ष रूप से कहने की हिम्मत न हो तो अप्रत्यक्ष रूप से इशारा कर देना।

मि.क.सं.२४०८

**गांव रौ नांव ई खारी तौ मीठौ कांई?** ३४२५

गाँव का नाम ही 'खारी' तो यहाँ मीठा क्या है?

खारी = हिंदी में इसका अर्थ करें तो कड़वी होता है। राजस्थान में खारी, खारिया, बासनी, गुड़ा इत्यादि नाम से कई गाँव है।

—जैसा नाम उसी के अनुरूप गुण—यथा नामः तथा गुणाः।

—जिस गाँव के अधिकांश निवासी बदजबान, उद्दंड व कुटिल हों।

**गांव रौ मूंडौ कुण पकड़ै?** ३४२६

गाँव का मुँह कौन पकड़े?

—लोग किसी के बारे में कुछ भी कहें तो उसे रोक कौन सकता है?

—दुनिया की बातों पर कतई ध्यान न देकर अपने काम में जुटे रहना चाहिए, लोगों के मुँह में जबान है तो वे बोले बिना नहीं रह सकते, उन्हें बोलने दो।

मि.क.सं.२७९०

**गांव रौ वींद नै बारलौ टाबर।** ३४२७

गाँव का दूल्हा और बाहर का छोकरा।

—गाँव के दूल्हे की कद्र बाहर के छोकरे जितनी ही होती है।

दे.क.सं.३४२२

**गांव लार गिंडक लाधै।** ३४२८

गाँव में कुत्ते भी मिलते हैं।

—हर गाँव में बदमाश व लंपट होते हैं। जहाँ मनुष्य नाम के प्राणी की बस्ती है वहाँ हर बुराई संभव है।

—दुनिया में ऐसा कोई गाँव नहीं जहाँ भले-बुरे सभी प्रकार के आदमी न रहते हों।

**पाठा: गांव लारै गिंडक ई हुवै।** गाँव में कुत्ते भी होते हैं।

**गांव वाळा कूटै तौ माईतां कनै जावै पण माईत कूटै तौ कठै जावै ?** ३४२९

गाँव वाले पीटें तो माँ-बाप के पास ज़ाये पर माँ-बाप पीटे तो कहाँ जाये ?

—बाहर के दुश्मनों का सामना करने की खातिर किसी भी व्यक्ति के लिए घरवालों का सहयोग अपेक्षित है, पर जब घर वाले ही दुश्मन हो जाएँ तो वह किसके सहयोग की अपेक्षा करे ?

—जब डाकू लूट-खसोट करें तो राज्य के पास फरियाद की जा सकती है, पर जब राज्य ही लूट-खसोट करने लगे तो फिर बचाव का कोई उपाय नहीं।

**गांव व्है जठै उकरड़ी ई व्है।** ३४३०

गाँव में घूरा भी होता है।

—गाँव में अच्छे-बुरे व गंदे-सुथरे सभी प्रकार के लोग रहते हैं। किसी का आचरण कैसा तो किसी का कैसा।

—कोई भी गाँव कुटिलता व दुराचार से बचा हुआ नहीं होता।

मि.क.सं. ३३८९

**गागर मांय सागर।** ३४३१

गागर में सागर।

—गागर के समान निहायत छोटी बात में सागर-सा विशाल भाव भर देने पर।

—छोटी-सी उक्ति में बड़े मर्म का महत्त्व दर्शाने के लिए इस कहावत का काव्यात्मक प्रयोग होता है।

**गाछ गेल बेल बधै।** ३४३२

गाछ के सहारे बेल बढ़ती है।

—बड़े आदमी के सहारे छोटे आदमी पल जाते हैं।

—गरीब व्यक्ति को पनपने के लिए किसी बड़े आदमी का किंचित् सहयोग भी पर्याप्त होता है। जिसके सहारे वह पनप सकता है।

**गाछ नीं व्है उठै इरंड ई रूंख।** ३४३३

पेड़ न हों वहाँ एरंड ही पेड़।

—गँवारों के बीच अधपढ़ भी विद्‌वान।

—छोटे गाँव में सामान्य प्रतिभा वाला भी अपना दबदबा जमा लेता है।

दे.क.सं.२०७, २३९९

**गाछ माथै चढ़सी जिकौ सीरणी बोलसी।** ३४३४

गाछ पर चढ़ेगा वही सीरनी बोलेगा।

**संदर्भ-कथा :** एक चरवाहा गोंद तोड़ने के लिए बबूल पर चढ़ा। उस जंगी बबूल पर काफी ऊँचाई तक गोंद की डलियाँ लगी हुई थीं। गोंद के लालच में वह ऊपर चढ़ता ही गया। किंतु गोंद समाप्त होने पर वह नीचे उतरने को हुआ तो उसे बड़ा डर लगा। बबूल की तीखी शूलों का दृश्य उसकी आँखों में गड़ने लगा। यदि नीचे गिर पड़ा तो सारा शरीर शूलों से बिंध जाएगा। उसने मन-ही-मन भैरव बाबा को याद करते हुए अरदास की कि वह सकुशल नीचे उतर गया तो सवा पाँच रुपये की सीरनी चढ़ाएगा। सीरनी बोलकर उसने इधर-उधर निगाह दौड़ाई। संयोग का चमत्कार कि उसे नीचे उतरने का सुराग मिल गया। पर ज्यों ही वह बबूल से नीचे ठोस धरती पर उतरा तो सीरनी की बात उसे अखरी। आखिर उतरा तो वह अपने कौशल से ही है! भैरव-बाबा ने कंधा देकर तो उसे नीचे उतारा नहीं। फिर बेकार सीरनी चढ़ाने से क्या फायदा। अगले वर्ष गोंद लगेगा, तब देखा जाएगा। अब तो कोई इस कँटीले बबूल पर चढ़ेगा, वही सीरनी बोलेगा। वह तो सकुशल उतर ही गया है।

—अपना दाँव आने पर कोई नहीं चूकता।

—स्वार्थ या गर्ज मिटने पर जो व्यक्ति अपना रुख तत्काल बदल ले, उसके लिए।

**पाठा : इण बांवळिये चढ़सी सो सीरणी बोलसी।**

इस बबूल पर चढ़ेगा सो सीरनी बोलेगा।

**खिजूर माथै चढ़ै सो सीरणी बोलै।** खजूर पर चढ़े वह सीरनी बोले।

**गाजर रा चोर नै सूळी री सजा!** ३४३५

गाजर के चोर को सूली की सजा!

—निहायत छोटे अपराध की भारी सजा मिले तब।

—सरासर अन्याय की बात हो तब।

**गाजर वाळी पूंगी बाजी जित्तै बजाई, नींतर तोड़ खाई।** ३४३६

गाजर वाली पूँगी, बजी तब तक बजाई, वरना तोड़ खाई।

—जिस वस्तु के रहने से न विशेष लाभ हो और न अभाव में कुछ हानि हो तब।

—जो वस्तु जितनी उपयोग में आई उतनी ही ठीक।

—जिस बात या वस्तु के प्रति खास दिलचस्पी न हो।

—ऐसी वस्तु के प्रति धारणा जो अच्छी एवं बुरी दोनों अवस्था में काम आये।

**गाजा जिण रा बाजा।** ३४३७

गाजे जिस के बाजे।

—जो सत्ता में है,उसकी दुंदुभी बजती है।

—जिसका कुछ भी प्रभुत्व है,उसका सभी गुणगान करते हैं।

—जो व्यक्ति चलता-पुर्जा है,वह सफलता प्राप्त कर लेता है।

**गाजा-बाजा सै वींद रा बाप माथै।** ३४३८

गाजे-बाजे सभी दूल्हे के पिता पर।

—जिसके हाथ में अधिकार होता है,वह जिस तरह चाहे,वैसा काम हो सकता है।

—जिसकी जिम्मेवारी होती है,वही उसके भले-बुरे का भागीदार होता है।

—बारातियों की नाईं जो व्यक्ति दूसरों के खर्च पर मौज उड़ाये,उसके लिए भी।

**गाजौ नीं कोई बाजौ, वींद राजा आय बिराजौ।** ३४३९

न गाजा और न बाजे के स्वर, दूल्हेराम बैठो सत्वर।

—किसी कार्य की गुरुता के अनुरूप आवश्यक पूर्ति न होने पर।

—किसी की योग्यता या बड़प्पन के अनुसार वांछित आदर-सत्कार न हो तब।

**गाडर आंणी ऊंन नै बाधी चरै कपास।** ३४४०

भेड़ मँगाई ऊन को बँधी चरे कपास।

—जिस बात,कार्य या वस्तु के लाभ की आशा हो,किंतु उससे उलटी हानि हो तब।

—अपेक्षित लाभ के बदले क्षति होने पर।

**गाडर गाडर ! थारै ऊंन रौ आथरौ करावस्यूं के म्हारी ऊंन मत कतरज्यौ।** ३४४१

अरी भेड़ ! तेरे लिए ऊन का 'आथरा' बनवाऊँगा कि मेरी ऊन मत कतरना।

आथरौ = सर्दी आदि से बचने के लिए मवेशियों पर डाला जाने वाला मोटा वस्त्र ।

—कुटिल व्यक्ति के उपकार से सतर्क रहने का निर्देश ।

—जो व्यक्ति भलाई का लोभ देकर बाद में अधिक हानि पहुँचाना चाहे, उसके लिए ।

**गाडर-चाल ।** ३४४२

भेड़-चाल ।

—बिना सोचे-समझे किसी का अनुकरण करना ।

—अंधानुकरण ।

मि.क.सं. ३१९५

**गाडर माथै ऊंन कुण छोडै ?** ३४४३

भेड़ पर भला ऊन कौन छोड़ता है ?

—जिस किसी के हाथ में सत्ता हो, गरीब का शोषण तो होगा ही ।

—किसी भी राज्य-सत्ता में असहाय को शोषण से मुक्ति नहीं मिल सकती ।

**गाडर रै पाखती सेडौ इज धन व्है ।** ३४४४

भेड़ के पास सेढ़ा ही धन होता है ।

—गरीब के पास जो कुछ भी होता है, वहीं उसकी पूँजी है ।

—फूहड़ औरत की गंदगी पर कटाक्ष ।

**गाडा टळै पण हाडा नीं टळै ।** ३४४५

बैलगाड़ी टल जाय पर हाड़ा नहीं टलते ।

हाडा = बूँदी रियासत के राजपूतों का एक गोत्र-विशेष जो अपनी बहादुरी व हठ के लिए राजस्थान में प्रसिद्ध हैं ।

—लीक पर चलती बैलगाड़ी के सामने यदि कोई पैदल-यात्री आता है तो वह टलकर गाड़ी को राह दे देता है । पर हाडा राजपूत सामने आये तो गाड़ी को राह छोड़कर टलना पड़ता है । उनकी बहादुरी व हठ को व्यक्त करने के लिए यह उक्ति कही जाती है ।

—जरूरत से ज्यादा हेकड़ी व मनमानी करने वाले के प्रति कटाक्ष ।

**गाड़ा पाड़ा ना हूं भरोसा, वाटे रात राखे।**–भी.१९६ ३४४६

गाड़ी और पाड़े का क्या भरोसा, राह में ही रात बितानी पड़े।

—पहियों वाली और प्राण वाली चीज कब गड़बड़ हो जाय पता नहीं चलता। इनका कुछ भरोसा नहीं, कब विपदा का कारण बन जाय।

—अनिश्चित स्थिति पर निर्भर रहना उचित नहीं।

**गाडी अर लाडी तौ वांगियोड़ी ई सावळ।** ३४४७

गाड़ी और लाडी तो 'वाँगी' हुई बेहतर हैं।

गाडी = बैलगाड़ी। लाडी = पत्नी, स्त्री।

वांगियोड़ी = गाड़ी या रहँट के चक्रों की धुरी में स्निग्ध पदार्थ (तिलहन का तेल या घी, ग्रीस इत्यादि) लगाकर अच्छी तरह चलने-योग्य बनाई हुई। संभोग की हुई, मैथुन की हुई। पिटाई की हुई।

—बैलगाड़ी की धुरी में चिथड़ों को घी या तेल में भिगोकर दिया जाता है, जिससे वह सुगमतापूर्वक चलती रहती है। इसी प्रकार घरवाली को प्रसव के समय पौष्टिक पदार्थ खिलाने से वह स्वस्थ रहती है। चिकनाहट से ही गतिशीलता कायम रहती है।

—स्त्री संभोग से संतुष्ट रहती है।

—वक्त जरूरत औरत की पिटाई होती रहे तो वह लीक पर चलती है, वर ा पथभ्रष्ट हो जाती है।

**गाडी अर लाडी बधावण जोग।** ३४४८

गाड़ी और लाडी (पत्नी) वंदना के योग्य हैं।

—बैलगाड़ी खेती व अन्य कमाई का साधन है तथा पत्नी घर की लक्ष्मी है, घर की शोभा है—वंश बढ़ाने वाली है, इसलिए दोनों ही पूज्य हैं।

—आर्थिक साधन व गृहलक्ष्मी दोनों ही स्तुत्य हैं।

**पाठा : गाडी अर लाडी वधावणी चोखी।**

गाड़ी और पत्नी की पूजा करना श्रेयस्कर है।

**गाडी उलळियां विनायक रौ किसौ कांम?** ३४४९

गाड़ी उलटने पर विनायक का क्या काम?

—काम बिगड़ जाने के बाद किसी से की गई अरदास व्यर्थ है।

—स्वयं गणेश या कोई भी भगवान काम बिगड़ने के बाद उसे सुधार नहीं सकते, फिर उनकी दुहाई का क्या अर्थ।

मि.क.सं.१२७१

**गाडी कनै बळद आयां सरसी।** ३४५०

गाड़ी के पास बैलों को आना ही पड़ेगा।

—गाड़ी स्त्री का प्रतीक है और बैल पुरुष का। अपने कंधों पर गाड़ी का जुआ रखने के लिए बैल स्वयं अपने पाँवों चलकर उसके पास आते हैं। उसी प्रकार पुरुष या पति को औरत के पास आना ही पड़ता है। गृहस्थी का बोझ ढोना ही पड़ता है।

—जिससे स्वार्थ पूरा होता हो, गर्जमंद को उसके पास जाना ही पड़ता है।

**गाडी गिंडक रै पांण थोड़ी ई चालै!** ३४५१

गाड़ी कुत्ते के बूते पर थोड़े ही चलती है!

—राज्य व सत्ता की गाड़ी किसी एक व्यक्ति के बल पर नहीं चलती। जो ऐसा समझता है उसे गाड़ी के नीचे चलने वाले कुत्ते की तरह अपनी योग्यता का मिथ्या भ्रम है।

—किसी काम का झूठा श्रेय लेने वाले व्यक्ति पर कटाक्ष।

मि.क.सं.२४१५

**गाडी गौरवै भूखां मारै।** ३४५२

गाड़ी गाँव के पास भूखा रखती है।

—यदि गाँव के पास ही बैलगाड़ी खराब हो जाय तो उस में भरे माल को छोड़कर गाँव में आना संभव नहीं, इसलिए सवारी का सुविधाजनक साधन होते हुए भी कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

—सुविधा-जनक वस्तु भी कभी-कभार दुविधा या विपत्ति का कारण बन जाती है।

—कमाई व सुख की आशा पूर्ण करने वाली संतान जब बुढ़ापे में कष्ट पहुँचाये तब।

मि.क.सं.३४४६

**गाडी तौ चीलां ईं बैवै।** ३४५३

गाड़ी तो लीक पर ही चलती है।

—गाड़ी, समाज व संस्कृति का ढर्रा परंपरा के पहियों पर ही आगे बढ़ता है।

—सच्चाई व न्याय तो आखिर अपनी लीक पर ही सुगमता से चल पाते हैं।

—सामाजिक नियमों के अनुरूप चलने पर ही कुशलता है।

**गाडी तौ वांगी ई चालै।** ३४५४

गाड़ी तो धुरी पर घी चुपड़ने से ही चलती है।

—मनुष्य की देह पौष्टिक पदार्थ खाने से ही स्वस्थ व सक्रिय रहती है।

—हरदम सँभालते रहने व देखरेख करने से ही समाज की गाड़ी सुचारु रूप से चलती है।

—रिश्वत देने से ही काम सुगमता से होता है।

**गाडी देख लाडी रा पग सूजै।** ३४५५

गाड़ी देखकर लाडी (दुलहिन) के पाँव सूजते हैं।

—सुविधा व आराम के लिए हर व्यक्ति के दिल में चाहना रहती है।

—सामने सुख हो तो उसे कौन छोड़ना चाहता है!

**गाडी धांन री मूठी बांनगी।** ३४५६

गाड़ी भर अनाज की मुट्ठी बानगी।

—नमूने मात्र से पूरी वस्तु की परख हो जाती है।

—थोड़े से संपर्क से किसी भी आदमी के आचरण का पता लग जाता है।

**गाडी नै छाजळै रौ कांई भार?** ३४५७

गाड़ी को सूप का क्या भार?

—किसी भी धनाढ्य व्यक्ति के लिए मामूली दान करना नितांत सहज है।

—समर्थ व्यक्ति को मामूली बोझ का क्या वजन, वह तो चाहे जितना बोझ उठा सकता है।

—बड़ी क्षमता वाले को अकिंचन कार्य का क्या भार?

**गाडी भरनै वाया, खीसा भरनै लाया।** ३४५८

गाड़ी भर कर बोये, जेब भरकर लाये।

—अनुभव व कुशलता के बिना कोई काम करने से असफलता ही हाथ लगती है।

—अयोग्य व अकुशल व्यक्ति के प्रति कटाक्ष।

**गाडी माथै पड़ै सो बळदां नै भारी।** ३४५९

गाड़ी पर पड़े सो बैलों को भारी।

—गाड़ी पर कमोवेश जितना भी बोझ हो, वह बैलों को ही ढोना पड़ता है।

—घर-परिवार में जो कम-ज्यादा खर्च हो वह प्रमुख व्यक्ति को वहन करना पड़ता है।

—प्रजा की सारी जिम्मेवारी राजा को ही उठानी पड़ती है।

**गाडां रै धणी नै गोरवै ई रैणौ पड़ै।** ३४६०

गाड़ी के स्वामी को गाँव के पास ही रुकना पड़ सकता है।

—गाड़ी खराब होने से उसके मालिक को गाँव के करीब आकर भी अकेले रात बिताने के लिए मजबूर होना पड़ता है।

—साधन-संपन्न व्यक्ति को कभी-कभार अभाव का कष्ट उठाने के लिए विवश होना पड़ता है।

—दुर्योग की अड़चन से कोई भी बच नहीं सकता।

—अपने काम का खतरा सबको झेलना पड़ता है।

मि.क.सं.३४४६,३४५२

**गाडी रै पाडी बाधी।** ३४६१

गाड़ी के पाड़ी बँधी है।

**संदर्भ-कथा** : किसी एक व्यक्ति को बेलगाड़ी की जरूरत हुई तो वह अपने पड़ोसी के पास गाड़ी माँगने के लिए गया। पड़ोसी मलिन स्वभाव का था। गाड़ी माँगने पर उसने सीधा इनकार न करके बहाना बनाया कि गाड़ी के पाड़ी बँधी हुई है। तब उस व्यक्ति ने गाड़ी वाले के मन की बात को न समझते हुए समस्या का सरल उपाय बताया और कहा कि वह कहे तो पाड़ी को खोलकर कहीं दूसरी जगह बाँध दे। तब पड़ोसी ने उपहास की हँसी हँसते हुए तुरंत उत्तर दिया—तो क्या मैंने झख मारने के लिए तुम्हारा इतना लिहाज रखा। सीधे मना करने में मुझे शर्म थोड़े ही आती थी।

—सीधा मना न करके इधर-उधर की बहाने-बाजी करने वाले व्यक्ति पर परिहास में व्यंग्य।

**पाठा : गाडै रै पाडौ बाधौ**। गाड़ी के पाड़ा बँधा है।

**गाडी रै पेड़ा ज्यूं लाली हालै।** ३४६२

गाड़ी के पहिये की नाईं जबान चलती है।

—गाड़ी का पहिया आगे तो घूमता ही है, जरूरत पड़ने पर पीछे भी घूम जाता है, गंदी व मैली जगह से भी उसे कोई दुराव नहीं—वह तो सहज गति से चलता रहता है। उसी प्रकार जिस व्यक्ति की जबान हरदम चलती ही रहती हो, आगे-पीछे बदलती रहती हो, अच्छी-बुरी बातों का ध्यान नहीं रखती हो, तब उसकी तुलना गाड़ी के पहिये से की जाती है।

**गाडी रौ पाचरौ लुगाई रौ टाचरौ कूट्योड़ौ ई कांम देवै।** ३४६३

गाड़ी का पाचरा एवं औरत का टाचरा ठोकने पर ही काम देता है।

पाचरौ = लकड़ी के पहिये में चंद्राकार पूठियों के घेरे की रोकथाम के लिए लकड़ी की बड़ी-बड़ी कीलें लगी रहती हैं। गाड़ी के चलते रहने से वे कभी-कभार निकल आती हैं, तब उन्हें ठोकने से अपनी जगह पकड़ लेती हैं। बाहर निकलने वाली उन कीलों को पाचरा कहते हैं। टाचरौ = सिर का पिछला हिस्सा।

—जिस तरह चलती गाड़ी में अड़चन पैदा करने वाले पाचरे को बार-बार ठोककर दुरुस्त किया जाता है उसी प्रकार औरत के सिर पर जब तब जूते लगते रहें तब गृहस्थ की गाड़ी सुचारु रूप से चलती रहती है।

—पुरुष-प्रधान सामंती व्यवस्था में औरतों के बारे में ऐसी कई धारणाएँ प्रचलित हैं, जो अब उचित नहीं जान पड़तीं, असंगत लगती हैं। पर उनका प्रकाशन जरूरी है।

**गाडी रौ पेड़ौ'र मरद री जबांन चालती ई चोखी।** ३४६४

गाड़ी का पहिया व मर्द की जबान चलती रहे तो अच्छी।

—व्यर्थ की बकवास करने वाले व्यक्ति को किसी के द्‌वारा टोकने पर वह अपनी पुष्टि की खातिर इस उक्ति का सहारा लेता है।

**पाठा : गाडी रौ पेड़ौ अर आदमी री जीभ चालती ई चोखी।**

**गाडी लीक सो गाडै लीक।** ३४६५

गाड़ी लीक सो गाड़ा लीक।

गाडी = गाड़ी = छोटी गाड़ी। गाडौ = गाड़ा = बड़ी गाड़ी।

—छोटी गाड़ी की लीक मंडित है तो उस पर बड़ी गाड़ी भी चल सकती है। युवक नया रास्ता बनाएँ तो उस पर आने वाली पीढ़ियाँ भी चल सकती हैं।

—छोटे काम की शुरुआत से ही बड़ा काम संभव बन पाता है।

**गाड़ी भरी ने बोयूं, ने टोपी भरी नै लाद्या।**–भी.१९७ ३४६६

गाड़ी भरकर बोया और टोपी भरकर लाये।

**विशिष्ट टिप्पणी :** भील क्षेत्र में मुसलमान जो टोपी लगाते हैं, उन्हें खेती के उपयुक्त नहीं समझा जाता। अयोग्य व्यक्तियों पर कटाक्ष।

दे.क.सं.३४५८

**गाडै उलळियै विणायक रौ किसौ कांम।**–व.२२० ३४६७

गाड़ी उलटने पर विनायक का क्या काम।

दे.क.सं.१२७१,३४४९

**गाडै पाडौ बाधौ।**–व.९५ ३४६८

गाड़ी के पाडा बँधा है।

दे.क.सं.३४६१

**गाडै लीक सो गाडी लीक।** ३४६९

गाड़ा लीक सो गाड़ी लीक।

गाडौ = गाड़ा बड़ी गाड़ी। गाडी = छोटी गाड़ी।

—बुजुर्ग जिस राह चलते हैं, युवक उसीका अजाने ही अनुकरण करते हैं।

—जिस राह पर पुरखे जीवन पर्यंत चलते रहे, उस पर आने वाली पीढ़ी को चलने में क्या कठिनाई हो सकती है!

—बड़े व अनुभवी आदमियों की बताई राह पर चलना ही श्रेयस्कर है।

मि.क.सं.३४६५

**गाडोल्या लुहार रौ कुण-सो गांव?** ३४७०

गाडिये लुहार का कौन-सा गाँव?

गाडोल्या लुहार = लोहे का काम करने वाली एक जाति, जिसके लिए एक ठौर गाँव में बसकर रहना वर्जित है। घर नहीं बनाते। बैलगाड़ी पर जीवन-बसर करते हैं। आजादी के बाद ये अब कहीं-कहीं बसने लगे हैं। पक्के घरों में भी रहने लगे हैं।

—जिस व्यक्ति का कोई ठौर-ठिकाना न हो उसे लक्ष्य करके।

**गाडौ तौ उलळग्यौ के विणायकजी सहाय करज्यौ ।** ३४७१

गाड़ी तो उलट गई कि विनायकजी सहायता करना ।

—काम बिगड़ जाने के बाद किसी से अरदास करना व्यर्थ है ।

—काम बिगड़ने से पहले सतर्कता अपेक्षित है,बाद में कुछ नहीं किया जा सकता ।

मि.क.सं.१२७१,३४४९,३४६७

**गाढ़वाळै में रहसी जिकौ राज रा घोड़ा पासी ।** ३४७२

रजवाड़े में रहेगा सो राज्य के घोड़े पिलाएगा ।

—ठाकुर या राजा के आदेश की अवज्ञा भला कौन कर सकता है ?

—जो व्यक्ति किसी के अधीन या आश्रित रहता है,उसे स्वामी की बेगार करनी पड़ती है ।

**पाठा : इण ठिकांणै रहसी सो रावळा घोड़ा पासी ।**

जो इस ठिकाने में रहेगा ,वह ठाकुर के घोड़े पिलाएगा ।

**गातां गातां ई कळावंत हुवै ।** ३४७३

गाते गाते ही कलावंत होता है ।

—निरंतर अभ्यास से ही किसी काम में दक्षता हासिल होती है ।

—निष्ठा,मेहनत व अभ्यास ही किसी काम की सफलता का प्रमाण है ।

**गादड़-पट्टौ ।** ३४७४

सियार वाला पट्टा ।

**संदर्भ-कथा :** कुत्तों के डर से सियार गाँव की बस्ती में जाने से डरते हैं । एक सियार को संयोग से एक पुराना कागज मिल गया तो उसने अपनी जमात इकट्ठी की । कागज दिखाकर कहा— मैंने गाँव का पट्टा ले लिया है । देखें ,अब किसकी हिम्मत जो हम पर भौंक सके । भला राजा के पट्टे का कौन मान नहीं रखता ! फिर अपनी जमात भी तो कम नहीं । मौका पड़ा तो डटकर सामना करेंगे । सबसे आगे मैं चलता हूँ ।

सियारों की बिरादरी पट्टे के जोर पर नेता की बात मान गई । वे सभी उसके पीछे-पीछे गाँव की ओर चले । पर गाँव में घुसते ही कुत्तों को सियारों की एकता का पता चला तो सभी तरफ से भौंकते हुए उस जमात पर टूट पड़े । मुखिया-सियार वापस भागने में सबसे आगे था । साथियों ने उसे पट्टे वाली बात याद दिलाते कहा—भाग क्यों रहे हो ? राजाजी वाला पट्टा

दिखाओ, पट्टा। तब उस सियार ने और जोर से भागते हुए कहा—ये सभी अनपढ़ हैं, अनपढ़। फिर किसे पट्टा दिखाऊँ! ये तो फकत काटना जानते हैं। जान बचाकर भागो, वरना बेमौत मारे जाओगे।

—भिड़ने की शारीरिक ताकत न हो तो कागज का प्रमाण ज्यादा माने नहीं रखता।

—झूठे दिलासे की पोल एक दिन खुलकर ही रहती है।

—मूर्खों के सामने ज्ञान की बात करना व्यर्थ है।

—काम बिगड़ जाने के बाद अगुवाई करने वाले तथाकथित नेता इसी प्रकार की बहाने-बाजी करते हैं।

**गादड़ मारी पालथी, मेह धड़ूक्यां हालसी।** ३४७५

सियार ने जमाया आसन, मेह बरसने पर ही हिलेगा।

**संदर्भ-कथा:** एक बार एक चालाक सियार तालाब के किनारे मिट्टी का चबूतरा बनाकर कानों में ऊँट के मींगने लटकाकर, पूरा वेश बदलकर, बड़े रोब से उस पर जम गया। जो भी जानवर पानी पीने आता वह उसे डराकर कहता—मैं इस जंगल का राजा हूँ। यह मेरा सिंहासन है। मेरी स्तुति करने के बाद ही इस तालाब का पानी पी सकते हो।

बड़े आश्चर्य की बात कि बड़े-बड़े खूँखार जानवर तक उसके झाँसे में आ गये। सियार की बताई स्तुति करने के बाद ही वे उस तालाब का पानी पीते। किंतु एक पेड़ पर बैठी गोह उसकी चालाकी समझ गई। तिलक, त्रिपुंड, माला तथा बदले हुए वेश के उपरांत भी सियार की असलियत उससे छिपी नहीं रही। गोह को प्यास लगी तो वह पेड़ से नीचे उतरी। सब कुछ जानते हुए भी उसने अन्य जानवरों की तरह उसकी स्तुति की—वाह, क्या कहना है—हमारे जंगल के महाराजा का! सोने-चाँदी का यह चमकता सिंहासन, गले में मोतियों की माला, कानों में गज-कुंडल और यह सुनहरा वेश। भगवान इंद्र भी आपके सामने पानी भरते हैं।

सियार ने बखुशी उसे पानी पीने की इजाजत दे दी। पर मन-ही-मन भरी हुई गोह प्यास बुझने के बाद स्वयं पर जब्त नहीं कर सकी। कुछ दूर जाकर वह कहने लगी—अरे ढोंगियों के सरताज, तू किसे चकमा दे रहा है। छि:, गोबर-मिट्टी का गंदा चबूतरा। बदबू के मारे मेरा माथा फटा जा रहा है। गंदे मींगनों की यह सड़ियल माला। तेरे नकली वेश में सियार का रूप छिप नहीं सकता। इतना कहकर गोह भागने लगी तो सियार दाँत किटकिटाते हुए उसके पीछे दौड़ा। जब सियार पास आया तो वह पेड़ पर ऊँची चढ़ गई। सियार नीचे टापता रह गया।

पेड़ पर चढ़ना उसके बूते की बात नहीं थी। गोह ने कहा—सियार मामा, तुम कब तक मेरा इंतजार करोगे ? मैं तो महीने भर तक नीचे नहीं उतरने वाली। तब सियार ने कहा—मुझे इसकी चिंता नहीं। मैं तो यहाँ जम गया सो जम गया। आसन मारकर चार महीने तक बैठा रहूँगा। बरसात के बाद ही उठूँगा।

आसानी से भुलावे में आने वाली वह गोह भी नहीं थी। सामने एकटक झाँकती हुई बोली—सियार मामा, कुत्तों की यह फौज क्या आप ही से मिलने आ रही है—जरा देखना तो...।

कुत्तों का नाम सुनते ही सियार तो पूँछ दबाकर वहाँ से भागा। और गोह उसे पुकारती रही—खिलखिल हँसती रही।

—झूठा रुतबा अधिक समय तक नहीं चलता।

—आखिर तो पोल खुलकर ही रहती है।

**गादड़ा रै गळै हाडकौ।** ३४७६

गीदड़ के गले में हड्डी।

—जानवरों में गीदड़ बहुत चतुर जानवर है। यदि वह किसी जाल में फँस जाये तो आश्चर्य ही की बात है। पर कभी-कभार ऐसे आश्चर्य घटित होते रहते हैं। अनिहोनी घटित हो जाती है—जैसे गीदड़ के गले में हड्डी।

—जब किसी बेहद होशियार व्यक्ति से गफलत हो जाए तब।

**गादड़ै री खतावळ सूं बोर थोड़ा ई पाकै।** ३४७७

सियार की जल्दबाजी से बेर नहीं पकते।

—सियार बेर खाने के शौकीन होते हैं, पर उनके शौक या उनकी उतावली से बेर नहीं पकते, वे समय पर ही पकते हैं।

—परिपक्वता की अवधि तो अपना वांछित समय लेकर ही रहती है।

—हर काम का अपना अपेक्षित समय होता है, जल्दबाजी से फायदे की बजाय तनाव और बढ़ता है।

**पाठा : गादड़ै री अंतावळ सूं बोर वैगा कद पाकै !**

सियार की उतावली से बेर कब जल्दी पकते हैं !

**गादड़ै री मारयोड़ी सिकार नाहर कद खावै ?** ३४७८

सियार के मारे हुए शिकार को नाहर कब खाता है ?

—ओछे व्यक्ति का एहसान बड़ा व्यक्ति हर्गिज नहीं लेता ।

—स्वाभिमानी व्यक्ति स्वार्थ की खातिर समझौता नहीं करता ।

—स्वार्थ के लिए अपने आदर्शों की लीक छोड़ना उचित नहीं ।

**गादड़ै री मौत आवै जणा गांव सांम्ही भाजै ।** ३४७९

सियार की मौत आये तब वह गाँव की ओर भागता है ।

—कुत्ते सियारों के जन्मजात बैरी होते हैं—देखने पर छोड़ते ही नहीं । इस डर से सियार गाँव की तरफ मुँह ही नहीं करते ।

—जिस व्यक्ति की अक्ल मारी जाती है—वह अपने से अधिक शक्तिशाली को ललकारता है ।

—जब दुर्योग होता है तो अनिष्ट अनजाने ही अपनी ओर खींचता है ।

**पाठा : गादड़ै री मौत आवै जद गांव सांम्ही मूंडौ करै ।**

**गादड़ै रै मूंडै न्याव ।** ३४८०

सियार के मुँह से न्याय ।

**संदर्भ-कथा :** एक शेर तीन दिन से पिंजरे में बंद था । भूख के मारे बेहाल । यात्रा पर जाते एक वृद्ध बामन को पास से गुजरते देखा तो शेर ने चिरौरी करते कहा—पंडितजी, कमाई के लिए दिसावर जाने की कोई जरूरत नहीं । यदि आप मुझे पिंजरा खोलकर मुक्त कर दें तो मोहरों से भरे सात कलश दूँगा । तीन दिन से भूख के मारे जान निकल रही है । जल्दी कीजिए ।

पंडित ने सहमते स्वर में कहा—मैं तो जल्दी करूँगा ही, पर आपने मुझे खाने की जल्दी की तो ये सात कलश मेरे क्या भाव पड़ेंगे ? शेर अगले पंजे जोड़कर बोला, 'मैं हिंसक जरूर हूँ, पर कृतघ्न नहीं । भला मुझे उबारने वाले के मैं प्राण लूँगा ? आप सपने में भी यह खयाल छोड़ दें । मुझे बोलने में भी कठिनाई हो रही है—जल्दी कीजिए ।'

लोभ अंधा होता है । पंडित ने आगे कुछ भी सोचे-विचारे बिना शेर को पिंजरे से मुक्त कर दिया । पर भूख अंधी-बहरी दोनों होती है । वह बामन को खाने के लिए दहाड़ने लगा तो बामन ने डरते हुए कहा—वचन भूलकर मुझे खाओगे तो तुम सड़-सड़कर मरोगे । भूखे बामन का शाप कभी झूठा नहीं होता ।' बामन के शाप से भूखे शेर को भी डर लगा । बोला—पंडित

जी, यदि सचमुच मेरे पास मोहरों के कलश होते तो प्राण बचने की खुशी में जरूर आपको दे देता। पर मेरे पास तो एक कौड़ी भी नहीं है। मनुष्य के लोभ को जानता हूँ, इसलिए झूठ बोल गया।'

'पर यह तो सरासर अन्याय है। जंगल का राजा भी अन्याय करने लगे तो ...!'

'चलो, इस सियार से न्याय करवा लेते हैं। वक्त पर ठीक आया। भूख तो जबरदस्त लगी है, पर अब तुम्हारे साथ न्याय ही होगा। सियार न्याय करने में माहिर होते हैं।'

शेर जानता था कि सियार को यदि इस जंगल में रहना है तो मेरे पक्ष में ही न्याय करेगा। मौत का डर सबको लगता है।

सियार ने दोनों की बात अच्छी तरह सुनने के बाद कहा, 'मैं सपने में भी नहीं मान सकता कि हमारे राजा इस अदने से पिंजरे में बंद हो सकते हैं। फिर क्या खाक न्याय करूँ? राजा की इच्छा ही सबसे बड़ा न्याय है। वे तुझे खाना चाहें तो भला उन्हें कौन रोक सकता है?'

सिंह ने हँसने की चेष्टा की, पर भूख के मारे उससे हँसा नहीं गया। कहने लगा, 'मैं जो कह रहा हूँ, सच, पंडितजी ने मुझे इसी पिंजरे से बाहर निकाला था।'

सियार ने गर्दन हिलाते प्रतिवाद किया, 'मैं नहीं मानता। आपके दिल में दया बहुत है। आप पंडितजी को झूठा साबित नहीं करना चाहते, इसलिए उनकी बात रख रहे हैं...।'

सिंह ने सियार की बात पूरी सुनी ही नहीं। बीच में बोला, 'यदि मैं फिर से इस पिंजरे में घुसकर बता दूँ तो ...।'

'तब तो मानना ही पड़ेगा। पर मेरा जी कहता है, आप इस में घुस ही नहीं सकते।' और शेर ने वाकई उस पिंजरे में घुसकर सिद्‌ध कर दिया कि उसके लिए पिंजरे में घुसना कितना आसान है। फकत निकलना ही मुश्किल था। सियार पंडितजी को इशारा करे उसके पहले ही उसने पिंजरे की फाटक अच्छी तरह जड़ दी ताकि शेर बाहर न निकल सके। शेर जोर से दहाड़ कर चिल्लाया, 'मुझे भूख लगी है, फाटक जल्दी खोल। पंडित दुबारा न खोले तो तू खोल दे। तुझे अपना मंत्री बनाऊँगा।'

सियार ने अतिशय विनम्रता से कहा, 'न मैं मंत्री का काम जानता हूँ और पिंजरा खोलना ही। यह सब मनुष्य की ही करामात है। पंडितजी एक बार और पिंजरा खोल दो, मैं तुम्हें मोहरों के कलश दिलवा दूँगा।'

पिंजरे में बंद शेर से बिना डरे बामन ने कहा, 'अब जिसे मोहरों की गरज होगी, वह बिना कहे मेरी तरह लोभ में आकर पिंजरा खोल देगा। मैं तो अपनी यात्रा पर जा रहा हूँ। एक बार धोखा खाया वही बहुत है।'

पंडित के रवाना होने पर सियार ने डपटकर कहा, 'रुको पंडित, हमारे राजाजी को बाहर निकालो, नहीं तो मैं तुम्हारा सफाया कर दूँगा।' यह कह कर सियार उसके पीछे रवाना हो गया और शेर को आश्वासन दे गया कि अभी पंडित को पकड़कर ला रहा है। शेर ने जल्दी लौटने की हिदायत दी। पर दोनों में से कोई वापस नहीं लौटा। और शेर जस-तस दहाड़ता तीसरे दिन तड़फ-तड़फ कर मर गया।

—लोभ के वशीभूत दुष्ट व्यक्ति का भला नहीं करना चाहिए।

—उपकार के बदले अपकार करने वाले का आखिर ऐसा ही न्याय होता है।

**गादड़ै हाळा भाटा भिड़ावणा।** ३४८१

सियार वाले पत्थर भिड़ाना।

—जो व्यक्ति दूसरों के बीच कलह करवाने की कुचेष्टा करे।

—इधर की बात उधर और उधर की बात इधर करने वाले व्यक्ति पर कटाक्ष।

**गादा मांये जांणी ने पड़े ते फचड़का उड़ेज।**– भी.१९८ ३४८२

कीचड़ में जान-बूझकर गिरोगे तो छींटे उछलेंगे।

—जान-बूझकर मूर्खता करने पर उसका दुष्परिणाम तो होगा ही।

—समझाने पर भी जो गलत काम करे, उसका खमियाजा तो उसे ही उठाना पड़ेगा।

**गादी नै घाव कुण घातै?** ३४८३

गद्दी पर घाव कौन करे?

—सत्ता का सामना करने की भला कौन हिम्मत कर सकता है?

—राजा को क्षति पहुँचाना अत्यंत कठिन काम है।

**गाभां में सै नागा।** ३४८४

कपड़ों में सब नंगे।

—बाहरी लिबास और शिष्टाचार से मनुष्य का पता नहीं चलता, पर कपड़ों के भीतर तो सभी नंगे हैं।

—कौन ऐसा मनुष्य है जिस में अवगुण नहीं होता।

—हर व्यक्ति स्वयं अपनी कमजोरियों को तो जानता ही है।

—बाहरी पहनावे से सब अलग दिखते हैं, पर भीतर सभी एक हैं अर्थात् निपट पशु हैं।

**गाभा कैवै थूं म्हारौ कुरब राख, हूं थारौ राखस्यूं।** ३४८५

वस्त्र कहते हैं कि तू मेरा मान रख, मैं तेरा मान रखूंगा।

—मैले कपड़ों को धोकर उजले रखने से दोनों की शोभा बढ़ती है।

—दूसरे का मान रखने से ही स्वयं को मान मिलता है और अपमान करने से अपमान।

—आपसी रख-रखाव पर ही मनुष्य-समाज निर्भर करता है।

**गाभा जग सुहाता, खांणौ मन सुहातौ।** ३४८६

कपड़े जग सुहाते, खाना मन सुहाता।

दे.क.सं.२८२२

**गाभा फाटा गरीबी आई, जूती फाटी चाल गमाई।** ३४८७

कपड़े फटे गरीबी आई, जूते फटे चाल गँवाई।

—फटे कपड़ों से गरीबी प्रकट होती है और फटे जूतों से चाल बिगड़ती है।

—फटे कपड़ों की अपेक्षा फटे जूते पहिनना ज्यादा भद्दा है।

**गाभा फाटोड़ा मत जो, जात री ईंदी हूं।** ३४८८

फटे कपड़े मत देख, जात की ईंदी हूँ।

—ईंदा गोत्र के राजपूत कुलीनता में बड़े माने जाते हैं। पर इस संदर्भ से हटकर इस उक्ति के दूसरे अर्थ भी हैं। गरीबी के बावजूद कुलीनता का दावा करने वाले व्यक्ति के लिए।

—फटीचर हालत में भी कुलीनता या रईसी की बू।

—मान-मर्यादा का जीवन फकत आर्थिक-स्थिति पर ही निर्भर नहीं करता।

—पहिनावे की बजाय आदमी के गुणों की कद्र की जानी चाहिए।

**गाभौ, टपरी अर रोटी, दूजी लायपाय खोटी।** ३४८९

रोटी, कपड़ा और निवास, बाकी झंझट सब बकवास।

—अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति ही प्रमुख समस्या है, बाकी सारी बातें गौण।

—जीवन-निर्वाह की प्रमुख जरूरतों को प्राप्त करना ही मनुष्य का सर्वोपरि संघर्ष है—शेष सारा धर्म, ज्ञान-विज्ञान, पोथी-पन्ने, उपदेश व आदर्श दिखावा मात्र है।

**गाभौ सपेत अर घोड़ौ कमेत।** ३४९०

कपड़ा सफेद और घोड़ा कुम्मैत।

कमेत = कुम्मैत = कालापन लिए लाल रंग का लाखी घोड़ा शुभ और कीमती माना जाता है।

—कपड़ा सफेद अच्छा और घोड़ा कुम्मैत अच्छा।

—अकसर सफेद कपड़ों की प्रशंसा के लिए इस उक्ति का प्रयोग होता है।

**गाय अर किन्या तौ देवै जठै ई सिधावै।** ३४९१

गाय और कन्या तो जहाँ भेजो वहीं चली जाती हैं।

—माँ-बाप के परे कन्या की अपनी कोई स्वतंत्र इच्छा नहीं होती, वे जहाँ भी चाहें उसकी शादी करें। वह चुपचाप वहाँ चली जाती है। अकसर कन्या को लक्ष्य करके इस कहावत का प्रयोग होता है।

**गाय किण री गोलौ किण रौ?** ३४९२

गाय किसकी, दास किसका?

—किसी की गाय या मवेशी द्‌वारा दूसरे के खेत में नुकसान होने पर जब खेत का मालिक मवेशी के मालिक को उलाहना देता है तो वह विनम्रतापूर्वक कहता है कि गाय किसकी है और यह बंदा भी किसका है, मतलब कि दोनों ही उन्हीं के हैं। फिर गरीब को उलाहना देने की जरूरत ही क्या है?

—आत्मीयता का इजहार करते हुए जो व्यक्ति रिआयत माँगना चाहे तब ...!

**पाठा : गाय नै गोला किण रा?** गाय और यह बंदा किसका है?

**गाय खड़ खावै सो पेट रै आंटै।**—व.८५ ३४९३

गाय घास खाती है तो पेट के लिए।

—गाय अपने पेट की भूख मिटाने के लिए घास खाती है, मालिक को दूध देने के लिए नहीं।

—अपनी स्वार्थ-सिद्‌धि में यदि किसी का भला हो जाय तो बात दूसरी है, वरना सभी अपना मतलब गाँठने के लिए ही सारा काम करते हैं।

—इस दुनिया में स्वार्थ के अलावा कोई भी कार्य नहीं होता।

**पाठा : गाय खड़ खावै तौ पेट खातर।**

**गाय गी अर गळवांणौ ई लेयगी।** ३४९४

गाय गई और साथ में रस्सी भी ले गई।

—गाय तो घर से निकल भागी सो भागी ही, साथ में रस्सी भी ले गई।

—जाने वाले व्यक्ति द्वारा दुहरी हानि हो तब।

—अकसर गहने या कपड़े-लत्तों को साथ लेकर भाग जाने वाली औरत के लिए।

मि.क.सं. २४३७

**गाय घास सूं धरमेलौ करै तौ खावै की?** ३४९५

गाय घास से यारी करे तो खाये क्या?

—जीवन-निर्वाह के लिए अनिवार्य वस्तुओं को मोहवश छोड़ा नहीं जा सकता।

—जिस चीज या बात से स्वार्थ-सिद्धि होती हो उसका परित्याग असंभव है।

—स्वार्थ व लिहाज दोनों साथ-साथ नहीं चल सकते।

**पाठा : गाय खड़ सूं प्रीत पाळै तौ खावै कांई?**

गाय घास से मित्रता करे तो खाये क्या?

**गाय घास सूं वाहेला करै तौ खावै कांई?**

गाय घास से यारी करे तो खाये क्या?

**गाय जायौ के मां जायौ!** ३४९६

गाय का जाया कि माँ का जाया!

—गाय से जन्मा बैल और माँ के पेट से जन्मा सगा भाई वक्त पर साथ देते हैं।

—दुख के दिन पार लगाने वाला या तो बैल या भाई।

**गाय जैड़ा बाछड़ा।** ३४९७

गाय जैसे बछड़े।

—जैसी माँ वैसी संतान।

—अकसर बुरी माँ की बुरी संतान के लिए यह कहावत प्रयुक्त होती है।

**गाय तिरी, भैंस तिरी, छाळी रांड डूब मरी।** ३४९८

गाय तैरी, भैंस तैरी, बकरी राँड डूब मरी।

—सामाजिक रीति-रिवाजों के प्रवाह में बड़े-बड़े व्यक्ति तो तैरकर पार हो जाते हैं, बेचारे गरीब मझधार में डूब मरते हैं।

—आफत विपदाओं की जो बाढ़ समर्थ व्यक्तियों को प्रभावित नहीं करती, वह गरीबों का मटियामेट कर देती है।

**गाय दूय गिंडकां नै पावै।** ३४९९

गाय दूहकर कुत्तों को पिलाना।

—अथक परिश्रम से उपार्जित संपत्ति का जब कोई व्यक्ति अपव्यय करे तब।

—कोई अपनी संचित माया कुटिल मित्रों पर खर्च करे तब।

—अपना समझकर जिस व्यक्ति का पालन-पोषण किया जाय और वह बाद में उसीसे झगड़ने लगे तब।

—जो व्यक्ति अपात्र की भलाई करे तब।

पाठा : **गाय दूय गिंडकां नै राळै।** राळै = डाले।

**गाय दूयर गधां नै पावै।** गाय दूह कर गधों को पिलाये।

**गाय दूहीनै लीजै, बळध जोतरनै लीजै।**–व.१६५ ३५००

गाय को दूहकर और बैल को जोतकर लेना चाहिए।

—गाय को दूहनें के बाद उसका वाजिब मूल्य आँका जा सकता है और बैल का मूल्य उसे जोतने के बाद।

—ज्ञानी की परख ज्ञान के द्वारा और कर्मठ व्यक्ति की परख कर्म के द्वारा होनी चाहिए।

—जिसकी जैसी वांछित उपयोगिता हो, उसकी वैसी ही कीमत होनी चाहिए।

**गाय नीं बाछी, नींद आवै आछी।** ३५०१

न गाय न बच्छी, नींद आये अच्छी।

—जिस व्यक्ति की कोई पारिवारिक व सामाजिक जिम्मेवारी न हो तो वह निश्चिंत होकर सोता है।

—पत्नी और बच्चे न हों तो फिर नींद आने में क्या कसर!

—फक्कड़ व्यक्ति के लिए।

**गाय नै हळ जोत दी।** ३५०२

गाय को हल जोत दिया।

—किसी सीधे-सादे व्यक्ति को कठिन काम में लगा दे तब।

—निहायत भोली लड़की किसी गँवार व्यक्ति के पल्ले पड़ जाय तब।

**गाय न्याणै री, बहू घरांणै री।** ३५०३

गाय न्याणे की, बहू घराने की।

न्याणौ = एक स्थान विशेष जहाँ की गाएँ मशहूर होती हैं।

—अच्छी गाय लानी हो तो न्याणे की लानी चाहिए और बहू अच्छी लानी हो तो पहिले उसके घराने की पड़ताल करनी चाहिए।

—पूर्णतया देख-भाल के बाद ही घर में किसी का प्रवेश हो तो बेहतर है।

**गाय बापड़ी पूगी धांम, तद चिरमी-जवार रौ के कांम?** ३५०४

गाय बेचारी पूगी धाम, तब चिरमी-ज्वार का क्या काम?

**संदर्भ** : ब्याने के बाद गाय की झर न पड़े तो उसे अखंडित चिरमी और अखंडित ज्वार का ही बाँटा दिया जाता है, ताकि झर सुगमता से पड़ जाय। किंतु जब गाय छटपटाकर मर ही गई तो अब उपचार की क्या जरूरत!

—रोगी को मृत्यु के पश्चात् वैद्य-हकीम की क्या सार्थकता।

—काम बिगड़ने के बाद लाख यत्न करके भी उसे सुधारा नहीं जा सकता।

—समय रहते किसी समस्या का समाधान हो तो वह उपादेय है।

**गाय ब्यावै अर सांड नै पीड़ लखावै।** ३५०५

गाय ब्याये और साँड कसमसाये।

—किसका दर्द और कौन वेदना महसूस करे?

—झूठी हमदर्दी का दिखावा करने वाले व्यक्ति के लिए।

**गाय माथै पिलांण।** ३५०६

गाय पर जीन।

—असंगत व बेतुके काम पर कटाक्ष।

—सर्वथा औंधा काम करने वाले के लिए।

—किसी गरीब को व्यर्थ सताना।

**गाय मारकणी अर गळी सांकड़ी।** ३५०७

गाय मारने वाली और गली सँकड़ी।

दे.क.सं.३३५०

**गाय रा भैंस तळै अर भैंस रा गाय तळै।** ३५०८

गाय के भैंस तले और भैंस के गाय तले।

—गाय के लाभ से भैंस का घाटा पूरा करना और भैंस के लाभ से गाय का घाटा पूरा करना।

—उधर से माँगकर इधर चुकाने और इधर से माँगकर उधर चुकाने वाले व्यक्ति के लिए।

—तंगी की हालत में जो व्यक्ति हरदम हेराफेरी करता रहे।

**गाय रै भैंस कांई लागै?** ३५०९

गाय के भैंस क्या लगती है?

—जिन दो व्यक्तियों में कहीं दूर का भी रिश्ता न हो, उन्हें इस बाबत पूछने पर वे इस उक्ति का प्रयोग करते हैं।

**गाय रै मूंडा सूं खोसनै सांड रौ मूंडौ भरणौ।** ३५१०

गाय के मुँह से छीनकर साँड का मुँह भरना।

—गरीब का हक छीनकर किसी शैतान अमीर को सौंप देना।

—सरासर अन्याय करने वाले व्यक्ति पर कटाक्ष।

**गाय रौ दूध ताड़ हेटै पीवै तौ जांणै ताड़ी पीवै,** ३५११
**अर गाय रै गोडै ताड़ी पीवै तौ जांणै दूध पीवै।**

गाय का दूध ताड़ के नीचे पिये तो जैसे ताड़ी पी रहा हो और गाय के पास ताड़ी पिये तो मानो दूध पी रहा हो।

—मनुष्य की पहिचान संगति से ही होती है।

—अपने-अपने स्थान की अपनी-अपनी मर्यादा व अमर्यादा होती है।

**गाय रौ दूहिनै कूतरै नै पावै ।**–व.३६३ ३५१२

गाय को दूहकर कुत्तों को पिलाये ।

—गाय का दूध घर व बछड़ों की बजाय कुत्तों के काम आये तो सारी प्रक्रिया ही व्यर्थ है ।

—किसी अनधिकृत व्यक्ति को लाभ पहुँचाया जाय तब ।

—दुष्ट व्यक्तियों की सहायता की जाय तब !

दे.क.सं.३४९९

**गाय साथै केरड़ौ अर सांईं साथै सेलड़ौ ।** ३५१३

गाय के साथ बछड़ा और साँईं के हाथ भाला ।

—बछड़े वाली गैया अच्छी व कीमती समझी जाती है उसी प्रकार साँईं के हाथ में भाला हो तो वह सिद्‌ध माना जाता है ।

—जिस वस्तु के जुड़ने से एक दूसरे का मूल्य बढ़े वह अच्छी है ।

**गाय ही नै रतन गिटगी ।** ३५१४

गाय थी और रत्न निगल गई ।

—यदि गाय भूल-चूक से रत्न निगल जाये तो न उसका गला काटा जा सकता है और न उसका पेट फोड़कर रत्न निकाला जा सकता है । नजर-अंदाज या माफ करने के अलावा कोई दूसरा चारा नहीं ।

—निहायत सज्जन या शरीफ व्यक्ति से अनजाने कोई गुनाह हो जाय तो उसके हितैषी उसे बचाने की खातिर इस उक्ति का सहारा लेते हैं ।

—किसी कुलीन घर की लड़की नादानी से पथभ्रष्ट हो जाय तब !

**गायां गायां ब्याव ई निवड़ै ।** ३५१५

गाते-गाते विवाह भी संपन्न हो जाता है ।

—शादी जैसा बड़ा काम भी जब गाते-बजाते संपूर्ण हो जाता है तो दूसरे कामों के बारे में तो कहना ही क्या ?

—मन लगाकर उत्साह से काम करने पर कैसा भी कठिन कार्य पूरा हो जाता है ।

**गायां चारै सो गेवाळियौ ।** ३५१६

गाएँ चराये सो ही ग्वाला ।

—जैसा काम वैसी उपाधि।

—जैसा काम वैसी प्रतिष्ठा।

—काम के अनुरूप ही योग्यता अपेक्षित है।

**गायां चूंघै गांव री, सोच करै स्यारी। ३५१७**
**धांन धणी री ऊपड़ै, कळपै कोठारी॥**

गाएँ चूँघे गाँव की, सोच करे स्यारी।
मालिक का अनाज लगे, तड़के कोठारी॥

स्यारी = एक किस्म की डायन जिसके प्रति ऐसी धारणा है कि वह गाँव के सारे बिलौवनों से मक्खन उड़ाकर अपने बिलौवने में इकट्ठा कर लेती है। यदि गाँव की गायों का दूध बछड़े चूस जाएँगे तो फिर बिलौवना ही कैसे होगा? और बिलौवना न होने पर स्यारी मक्खन कैसे पार करेगी, इसलिए उसे गाँव की सभी गायों-भैंसियों के चूँघने की चिंता लगी रहती है। इसी प्रकार अनाज तो मालिक का खर्च होता है पर कोठारी का जी जलता है।

—दूसरों के द्वारा किसी का भला होने पर जो व्यक्ति मन-ही-मन जले उसके लिए।

—खामखाह अनधिकृत चिंता करने वालों पर व्यंग्य।

**गायां तौ उछरगी नै पोटा लारै छोडगी। ३५१८**

गाएँ तो चली गईं और पोटे पीछे छोड़ गईं।

—किन्हीं नामजद पुरखों की औलाद एकदम बिगड़ जाए तब।

—नई पीढ़ी के प्रति बूढ़े-बुजुर्गों की तिरस्कारपूर्ण धारणा।

**गायां तौ धणियां री है, गुवाळिया रै हाथ में तौ गेडियौ। ३५१९**

गाएँ तो मालिकों की हैं, ग्वाले के हाथ में फकत लट्ठ।

—बड़े आदमियों के नौकर जब उनकी संपत्ति व उनकी शक्ति पर झूठी हेकड़ी का प्रदर्शन करें तब कटाक्ष के रूप में यह उक्ति प्रयुक्त होती है कि लाला यह मिलकियत तो है जिनकी है, तू क्यों बेकार ऐंठ रहा है? जिस तरह ग्वाले के हाथ में अपना कहने को तो केवल लट्ठ है, बाकी गायों की संपदा तो मालिकों की है, उसी प्रकार अपनी मामूली पगार के अलावा उनकी संपत्ति में तेरा कोई अधिकार नहीं है, इस बात को भूलने से काम नहीं चलेगा।

—जो व्यक्ति दूसरों के ठाट को अपना समझने का भ्रम पाले, उसके लिए।

**गायां, भायां, बांमणां भाग्यां ईं परवांण।** ३५२०

गाय, भाई व ब्राह्मणों से भागना ही श्रेयस्कर है।

—गाय, भाई व ब्राह्मणों का सामना न करके उनसे दूर भागना ही संगत है।

—उक्त तीनों को सताना घातक व लज्जास्पद है।

**गायां में कुण गियौ के चूंधौ तौ मार विलोवणौ ऊंधौ।** ३५२१

गायों में कौन गया कि चौंधा तो मार बिलौवना औंधा।

—अयोग्य व लापरवाह व्यक्ति पर काम की जिम्मेवारी सौंपने का परिणाम निस्संदेह घातक ही होता है।

मि.क.सं. १५६०

**गायां रै भाग रौ बरसै।** ३५२२

गायों के भाग्य का बरसता है।

—छल-कपट से रहित गूँगे जानवरों के लिए मेह बरसता है, जिसका लाभ आदमी भी उठा लेता है, वरना मनुष्य के कर्म तो ऐसे हैं कि बादल पानी की बूँद तक न गिराएँ।

—असहाय के संरक्षण का भार भगवान पर है।

**गाया गीत रौ कांईं गावणौ, रांध्या धांन रौ कांईं रांधणौ?** ३५२३

गाये गीत का क्या गाना और सीझे अनाज को क्या पकाना?

—एक ही बात को निरंतर दोहराना व्यर्थ है।

—कोई बात कितनी ही अच्छी क्यों न हो उसे बार-बार सुनने पर अरुचि हो जाती है।

—नवीनता के महत्त्व की ओर संकेत।

**गारडू टाळ विस कोनीं उतरै।** ३५२४

सँपेरे के बिना विष नहीं उतर सकता।

—जो काम अत्यधिक कुशल व्यक्ति के बिना पार न हो।

—जिस प्रमुख व्यक्ति के बगैर झगड़े का जहर न मिटे, उसके लिए।

—जिस जवाँ-मर्द के बिना स्त्री की हविश न बुझे।

**गार-माटी रा बासण फूट्यां सरसी।** ३५२५

गार-मिट्टी के बासन तो फूटेंगे ही।

—गार-मिट्टी के ठीकरों की नाईं क्षणभंगुर देह का विनाश भी निश्चित है।

—शरीर नाशवान है, वह एक दिन तो मिटेगा ही।

**गार में पग, गिदरा माथै बैठवा दै।** ३५२६

गार में पाँव, गद्दे पर बैठने दे।

—अपनी औकात से परे बड़ी आकांक्षा रखने वाले व्यक्ति को परिहास में...।

—अयोग्य व्यक्ति की महती कामना पर कटाक्ष।

**गारे ना गड़्या कळ गळवाना है।**– भी.१९९ ३५२७

मिट्टी के बासन तो नष्ट होंगे ही।

—आज नहीं तो कल मनुष्य की देह जो मिट्टी के बासन ही की तरह क्षण-भंगुर है, वह तो विनष्ट होगी ही।

—काल शाश्वत है, प्राण नश्वर हैं, यही गहरा मर्म इस उक्ति से व्यंजित होता है।

दे.क.सं.३५२५

**गाल थाप रै कांईं आंतरौ?** ३५२८

गाल-थप्पड़ के बीच क्या दूरी?

—जिस बात की सच्चाई का नतीजा निकालना बहुत आसान हो।

—जिस तथ्य की असलियत जानना कतई मुश्किल न हो।

—प्रत्यक्ष बात के प्रमाण की क्या आवश्यकता, अभी सच्चाई सामने आ जाती है।

**पाठा : गाल थाप रै आंतरौ कितरौक।** गाल थप्पड़ की दूरी कितनी!

**गाल बजायां मोटा कोनीं बाजै?** ३५२९

गाल बजाने से बड़े नहीं कहलाते?

—खामखाह डींग मारने से कोई व्यक्ति बड़ा नहीं बन जाता।

—बड़ी बातें बघारने से ही कोई बड़ा बनता हो तो कोई छोटा रहे ही नहीं।

**गाल वाळौ जीतै, माल वाळौ हारै।** ३५३०

गाल वाला जीते, माल वाला हारे।

—चिल्लाने वाला जीतता है और माल वाला बैठा रहता है।

—प्रचार के बिना अच्छा माल भी धरा-का-धरा रह जाता है और प्रचार के सहारे हलका माल भी बिक जाता है।

**गाळ अर गाजर तौ खावण री इज व्है।** ३५३१

गाली और गाजर तो खाने के लिए ही होती हैं।

—जिस व्यक्ति को गाली सुनकर तनिक भी क्रोध न आये तब वह गाजर के साथ तुलना करके यह उक्ति काम में लेता है।

—गाली सुनकर क्रोध न करने की नसीहत।

**गाळ देय गाळ खावणी।** ३५३२

गाली देकर गाली सुनना।

—जैसा कहना वैसा सुनना। अपशब्द कहने वाले को वापस अपशब्द ही सुनने पड़ते हैं।

—जो जैसा व्यवहार करेगा, बदले में वैसा व्यवहार पाएगा।

**गाळ रौ पांणी मगरै नीं चढ़ै।** ३५३३

तलहटी का पानी पठार पर नहीं चढ़ता।

—पहाड़ से ढली हुई हर वस्तु चाहे पानी हो चाहे जड़ी-बूटी, नीचे की तलहटी उसे हमेशा ग्रहण-ही-ग्रहण करती है पर बदले में वापस कुछ दे नहीं पाती।

—देने वाला हमेशा देता ही है और ग्रहण करने वाला हमेशा ग्रहण ही करता है।

—इसी लघुता के भाव-स्वरूप सवर्णों में कन्या-पक्ष वाले वर-पक्ष वालों की कोई चीज ग्रहण नहीं करते।

**गालां में घोड़ा दौड़ै।** ३५३४

गालों में घोड़े दौड़ते हैं।

—जिस व्यक्ति को अपनी आमदनी और खर्च का ध्यान न हो।

—जिस व्यक्ति को अपनी बहबूदी का भारी गुमान हो, जिसके परिणाम-स्वरूप वह सामने वाले मनुष्य को मनुष्य ही नहीं समझता।

**गाळियां सूं किसा गूमड़ा व्है!** ३५३५

गालियों से कौन-से फोड़े होते हैं!

—गाली सुनकर किसी प्रकार का प्रतिकार न करने की सीख।

—गम खाने वाला व्यक्ति किसी भी तरह अपने मन को समझा लेता है।

**गावण वाळी जीभ अर नाचण वाळा पग सचळा नीं रैवै।** ३५३६

गाने वाली जीभ व नाचने वाले पाँव चुप नहीं रहते।

—अपनी कला का इजहार किये बिना कलाकार को शांति नहीं मिलती।

—जिसका जैसा स्वभाव होता है वह अजाने ही प्रकट होकर रहता है।

—कलाकार की आत्मा सदा बेचैन रहती है।

**गावणौ अर रोवणौ कुण नीं जांणै?** ३५३७

गाना और रोना कौन नहीं जानता?

—मनुष्य मात्र जो कानों से सुनता है और आँखों से देखता है वह गाना और रोना भी जानता है।

—यह उक्ति आदिम-कबीलों के लिए ज्यादा उपयुक्त है।

**गावणौ को आवै नीं, गावणै रो भाई तौ आवै।** ३५३८

गाना तो नहीं आता, पर गाने का भाई जरूर आता है।

—गाना तो हर व्यक्ति नहीं जानता पर गाने का भाई, यानी रोना तो हर इनसान जानता है।

—गाना तो एक कला है पर रोना और हँसना तो मनुष्य मात्र की नैसर्गिक प्रवृत्ति है। मौका मिलते ही एक आँखों से प्रकट होता है तो दूसरा अधरों पर चमक उठता है।

**गावतां गावतां ई डूंम व्है।** ३५३९

गाते-गाते ही डोम होता है।

—गाते-गाते ही गायक के रूप में कोई मशहूर होता है।

—अभ्यास से बढ़कर कोई दूसरा गुरु नहीं।

**गावै तौ सीठणा अर लड़ै तौ गाळ।** ३५४०

गाये तो सीठना और लड़े तो गाली।

सीठणा = सगे-समधियों को गीतों में गाये जाने वाली गालियाँ।

—जो व्यक्ति अपने मुँह से अपशब्द के अलावा कुछ भी नहीं बोलना जाने।

—जिस व्यक्ति में अच्छाई नाम की कोई चीज ही न हो।

**गाहक अर मौत रौ कांईं बेरौ ?** ३५४१

ग्राहक और मौत का क्या पता ?

—ग्राहक और मौत कब आ धमके, इसका कुछ पता नहीं।

—अकसर ग्राहक के प्रसंग में इस उक्ति का प्रयोग होता है।

**पाठा : गाहक अर मौत रौ कांईं ठिकांणौ, कद आ ज्याय ?**

ग्राहक और मौत का क्या ठिकाना, कब आ जाय ?

# गिं - ग्वा

**गिंडक अक्खड़ दिखावै जद ढूंगा उघड़ै।** ३५४२

कुत्ता अकड़ दिखाये तब मलद्वार उघड़ता है।

—ओछा व्यक्ति जब व्यर्थ की हेकड़ी दिखाता है तो उसकी पोल आखिर खुलकर ही रहती है।

—बिना हैसियत के जब कोई व्यक्ति बड़ा बनने का दिखावा करता है तो उसकी फजीहत ही होती है।

**गिंडक गंगाजी चाल्या तौ हांडी कुण चाटसी?** ३५४३

कुत्ते गंगाजी चले तो हँडिया कौन चाटेगा?

—यदि छोटे आदमी बड़ा काम करने लगे तो उनका अपना ओछा काम कौन सँभालेगा?

—निकृष्ट व्यक्ति के द्वारा तो निकृष्ट काम ही संभव है।

**पाठा : गिंडक ई गंगाजी जावै तौ अेंठौ कुण खावै?**

कुत्ते गंगाजी जाएँ तो जूठा कौन खाये?

**गिंडकड़ी गी अर पटियौ ई लेयगी।** ३५४४

कुतिया गई और साथ में पट्टा भी ले गई।

मि.क.सं. २४३७, ३४९४

**गिंडकड़ौ तौ लूय-लूय मर्‌यौ, धणी रै भायका ई कोनीं।** ३५४५

कुत्ता तो भोंक-भोंककर मरा, मालिक को परवाह ही नहीं।

—आज्ञाकारी नौकर तो काम के मारे मरा जा रहा है और स्वामी को उसका कुछ ध्यान ही नहीं !

—स्वभावगत अंधे बहरे स्वामी के आगे जो नौकर जरूरत से ज्यादा काम करे ।

—जिस व्यक्ति को अपने हितैषियों की बिल्कुल पहिचान न हो ।

मि.क.सं. २४५९

**गिंडक नारेळ रौ कांईं करै ?** ३५४६

कुत्ता नारियल का क्या करे ?

—गँवार अच्छी वस्तु का उपयोग क्या जाने ?

—कोई नासमझ व्यक्ति मूल्यवान वस्तु का दुरुपयोग करे तब !

—अरसिक व्यक्ति साहित्य या कलाओं के आनंद में क्या समझे ?

मि.क.सं. २४५५

**गिंडक नारेळ-सार कांईं जांणै ?** ३५४७

कुत्ता नारियल की खूबी क्या जाने ?

—अज्ञानी मनुष्य ज्ञान के तत्त्व को क्या समझे ?

—नीरस व्यक्ति कलात्मक मर्म को क्या जाने ?

मि.क.सं. ३५४६

**गिंडक नै सुण्यां गिंडक रोवै ।** ३५४८

कुत्ते को सुनकर कुत्ता रोता है ।

—रात के सूने वातावरण में दूर से किसी कुत्ते का रोना सुनकर कुत्ते स्वतः ही भोंकने लग जाते हैं ।

—बिना सोचे-समझे दूसरों की देखा-देखी शोर-गुल मचाने वालों पर व्यंग्य ।

—खामखाह नारे लगाने वालों के प्रति कटाक्ष ।

—जो व्यक्ति किसी परिजन का कष्ट निवारण न करके उसके साथ रोने-धोने में शामिल हो जाय ।

**गिंडक री मौत आवै जद कुपाळी में कीड़ा पड़ै ।** ३५४९

कुत्ते की मौत आती है तब खोपड़ी में कीड़े पड़ते हैं ।

—शरीर के अन्य हिस्से पर कीड़े पड़ें या कोई घाव हो तो कुत्ता अपनी जीभ से चाट-चाटकर उन्हें साफ कर लेता है। उसकी जीभ के रस से घाव स्वत: ही भर जाता है। पर खोपड़ी में कीड़े पड़ने पर चाटने की युक्ति नहीं बैठती। अतएव उसे सिर धुनधुनकर मरना ही पड़ता है।

—मूर्ख या गँवार के दिमाग में जब किसी औंधी बात का कीड़ा काटने लगता है तभी उसके विनाश का आधार जुड़ता है।

—विनाशकाले विपरीत बुद्धि!

**गिंडक रै कांई गाती मारणी, ऊठ्यौ अर ऊभ-नळ्यां आयौ।** ३५५०

कुत्ते को कैसी तैयारी, उठा और सामना किया।

—जो व्यक्ति कहते ही किसी काम के लिए अविलंब तैयार हो जाय।

—जो व्यक्ति बिना सोचे-समझे तत्काल किसी से भिड़ जाय।

**गिंडक रै पांण गाडी थोड़ी ई चालै।** ३५५१

कुत्ते के जोर से गाड़ी थोड़े ही चलती है।

दे.क.सं.२४१५,२४५२,३४५१

**गिंडक रौ जोर गळी में।** ३५५२

कुत्ते का जोर गली में।

—कुत्ते की बहादुरी अपनी गली तक ही सीमित रहती है,उससे आगे न तो उसकी क्षमता है और न साहस!

—जो गुंडा,बदमाश या दादा अपने सीमित इलाके में ही कुत्ते की तरह जोर खाता हो।

—अपनी परिचित जगह चाहे वह गली हो,मोहल्ला हो या गाँव हो उसका जोश अपने-आप उभर आता है—यह एक स्वाभाविक प्रवृत्ति है।

मि.क.सं.८९७

**गिंडक वाळौ गुमांन।** ३५५३

कुत्ते वाला गुमान।

—बैलगाड़ी के नीचे उसकी छाया में चलने वाले कुत्ते को यह भ्रम होता है कि गाड़ी उसीके बल-बूते पर ही चल रही है।

—जो व्यक्ति भ्रमित कुत्ते की तरह यह गुमान करे कि उसके भरोसे ही सब काम चल रहे हैं।

मि.क.सं.२४१५, ३४५१

**गिंडक सूं कांईं छांनी गळियां।** ३५५४

कुत्ते से क्या छिपी हुई गलियाँ।

—कुत्ते के स्वभाव की नाई हर लंपट गली-गली का पूरा ध्यान रखता है।

—जिस आवारा व्यक्ति के लिए गलियों में भटकने के सिवाय दूसरा कोई काम न हो।

**गिंडकां रा किसा गांव बसै?** ३५५५

कुत्तों के कौन-से गाँव बसते हैं?

—परस्पर झगड़ने की प्रवृत्ति के कारण कुत्ते एक जगह बसकर शांतिपूर्वक नहीं रह सकते।

—आपसी फूट के कारण जो व्यक्ति हिल-मिलकर साथ नहीं रह सकते उनके लिए।

—आश्रित व्यक्ति स्वतंत्र रूप से अपना गुजर-बसर नहीं कर सकते।

—हर गाँव में दुष्ट या कुटिल व्यक्ति सब के बीच ही रहते हैं, उनका कोई अलग बसा हुआ गाँव नहीं होता।

**गिंडकां रै किसा गोहरी व्है?** ३५५६

कुत्तों के कौन-से ग्वाले होते हैं?

—जो व्यक्ति सामूहिक अनुशासन का पालन न करे।

—जो व्यक्ति एक-जुट होकर काम न करे।

**गिंडकां रै संप व्हैता तौ गंगाजी न्हाय आवता।** ३५५७

कुत्तों में एकता होती तो वे गंगा-स्नान कर आते।

—पारस्परिक वैमनस्य व फूट के कारण जो व्यक्ति एक-जुट होकर नहीं रह सकते, उनके लिए।

—गंगा-स्नान के महत् कार्य की भाँति एकता के बिना भी कोई बड़ा कार्य संपन्न नहीं हो सकता।

—ऐसे व्यक्ति जो सामूहिक संगठन में बाधा उपस्थित करें।

मि.क.सं.२४२१

**गिंवार खाय मरै के उंचाय मरै।** ३५५८

गँवार खाकर मरता है या उठाकर मरता है।

—गँवार व्यक्ति या तो जिद में अधिक खाकर तकलीफ पाता है या अधिक बोझा उठाकर।

—गँवार या मूर्ख व्यक्ति अपने निरर्थक हठ के कारण दुख पाता है।

**गिंवार गांव में ऊंट आयौ, कुण देख्यौ, किण नै भायौ?** ३५५९

गँवार गाँव में ऊँट आया, किसने देखा, किसे भाया?

—ऊँट कोई चूहा तो है नहीं, जो किसी को नजर आये-न-आये। पर यहाँ आँखों से देखना नहीं, समझ से देखना है।

—किसी गाँव में कोई विलक्षण व्यक्ति आये और उसे कोई पहिचान नहीं सके तब।

—अनपढ़ों के गाँव में विद्वान का क्या महत्त्व, वह तो ऊँट की नाईं एक अजूबे प्राणी के समान ही है। आँखों से उसका आकलन नहीं हो सकता, केवल बुद्धि से ही हो सकता है।

**गिंवार री गाळ, हांसी में टाळ।** ३५६०

गँवार की गालिएँ, हँसी में टालिए।

—गँवार या मूर्ख व्यक्ति की नाराजगी कोई माने नहीं रखती।

—गँवार की बातों पर अधिक ध्यान नहीं देना चाहिए, वे उपेक्षा के ही पात्र होते हैं।

**गिंवार री जोरू, गांव री भाभी।** ३५६१

गँवार की जोरू, गाँव की भाभी।

—भाभी और देवर का ऐसा सामाजिक रिश्ता है, जिस में हलके-फुलके परिहास की छूट है। और यों भी प्राचीन काल में देवर-द्विवर यानी दूसरा पति ही माना जाता था। पर आज कल यह प्रचलन सिर्फ हँसी-ठिठौली तक ही सीमित रह गया है। पर समर्थ व्यक्ति इतनी छूट भी नहीं लेने देते। किंतु गरीब तो निपट सामर्थ्य-हीन है, उसकी जोरू से सभी मन-वांछित मजाक करते हैं—अच्छी या बेहूदी सब।

—गरीब सर्वथा निरुपाय होता है, उसकी अपने घर में भी दाल नहीं गलती।

**गिंवार रै किसा सींग व्है।** ३५६२

गँवार के कौन-से सींग होते हैं।

दे.क.सं.३२१७,३२७९

**गिंवारां रा किसा न्यारा खेड़ा बसै।** ३५६३

गँवारों के अलग गाँव नहीं बसते।

—समाज के बीच ही शिक्षित और गँवार साथ-साथ रहते हैं,पर पहिचान तो हो ही जाती है कि कौन क्या है ?

—गँवारों की अलग बस्ती हो तो वहाँ जाकर एक साथ ही उन्हें खोजा जा सकता है। मात्र शिक्षा से ही किसी का गँवारपन दूर नहीं हो सकता। केवल उसके क्रिया-कलापों से पहिचान हो सकती है।

**गिगन में सोधतौ, धरती लाधौ।** ३५६४

गगन में तलाश रहा था, धरती पर मिला।

—जिस महानुभाव से क्या आशाएँ थी और वह क्या निकला ?

दे.क.सं.९८

**गिणगौर माता गुण गासी अर टाबरिया फळ खासी।** ३५६५

गनगौर माता गुण गाएगी और बच्चे फल खाएँगे।

फळ = गेहूँ के आटे को गुड़ के पानी में भिगोने के बाद छोटे-शंख के आकार-स्वरूप टुकड़े पानी में उबालकर गनगौर माता को चढ़ाये जाते हैं,उन्हें 'फळ' (फल) कहते हैं। चढ़ाने के उपरांत घर के बच्चे बड़े उछाह से खाते हैं।

—जिस बात से दुहरा लाभ हो,उसके लिए।

**गिणगौरयां ई घोड़ा नीं दौड़ै तौ कद दौड़सी ?** ३५६६

गनगौर पर भी घोड़े नहीं दौड़ेंगे तो कब दौड़ेंगे ?

—जिस चीज का समय पर उपयोग न हो,वह किस काम की ?

—वक्त पर अपने आदमी का सहयोग न मिले तो कैसी आत्मीयता ?

—हर वस्तु की सार्थकता समय पर काम आने के लिए ही होती है।

**गिणती रा बोर।** ३५६७

गिनती के बेर।

—अकिंचन साधन का जिक्र करना पड़े तब।

—काम चलाने लायक आर्थिक-स्थिति की ओर संकेत।

—शबरी के बेरों की भाँति निर्धन व्यक्ति का किंचित् उपहार भी मूल्यवान होता है।

**गिण नै गांठ दैणी।** ३५६८

गिनकर गाँठ देनी।

—मन में किसी भी बात के लिए दृढ़ निश्चय करना।

—अच्छी तरह सोच-समझकर कोई संकल्प करना।

**गिणनै पोवौ, ओलै सोवौ।** ३५६९

गिनकर पोना, ओट में सोना।

—मितव्ययता से खर्च करना चाहिए और सतर्कता-पूर्वक रहना चाहिए।

—सुखी जीवन के लिए नसीहत।

**पाठा : गिणनै पोवौ, सांम्ही जोवौ।** गिनकर पोना, सामने देखना।

**गिणनै पोवौ, संभाळ नै खावौ।** गिनकर पोना, सँभालकर खाना।

**गिणीया पांन चरै गोपाळौ।**—व. ३८३ ३५७०

गिनती के पान चर रहा है गोपाल।

—जीवन बहुत थोड़ा है और वनस्पति के पान अनगिनत हैं। बस, अब गिनती के पान चरने हैं गोपाल को। असंख्य बेशुमार पत्ते, फूल और फल यहीं रह जाएँगे। केवल गोपाल नहीं रहेगा।

—मानव देह क्षण-भंगुर है, यही सोचकर मनुष्य को अपना लक्ष्य स्थापित करना चाहिए।

**गिणै गिणावै नव-रा-नव।** ३५७१

गिने-गिनाये और नौ-के-नौ।

**संदर्भ-कथा :** जुलाहों की एक टोली बुना हुआ कपड़ा बेचने के लिए पास के शहर जा रही थी। रास्ते में लाल-लाल बेरों की झाड़ियाँ आईं तो सभी का मन उन्हें खाने के लिए ललचाया। टोली के मुखिया ने सभी को बड़ी सावधानी बरतने की भोलावन दी। कहीं ऐसा न हो कि गहरी झाड़ियों में कोई खो जाए। सभी व्यक्ति सावधानी बरतते हुए दूर-दूर तक बिखर गये।

काफी देर डटकर बेर खाने के बाद मुखिया ने आवाज दी। मुखिया ने अपनी जिम्मेवारी का पूर्णतया पालन करने के खयाल से सबको एक ठौर खड़ा करके गिनती शुरू की। बड़े दुख की बात कि वैसी सख्त भोलावन के बाद भी एक व्यक्ति गफलत कर गया। मुखिया ने फिर दुबारा गिनती की—पर वे ही नौ जने। वह खुद को गिनना भूल गया था। तत्पश्चात् टोली के हर आदमी ने अलग-अलग गणना की—पर नतीजा वही-का-वही। सचमुच,एक व्यक्ति कम था। वापस गाँव लौटने पर क्या जवाब देंगे। विकट चिंता की बात हो गई। खूब मगजमारी की तब भी पता नहीं चला कि खोया कौन ? संयोग से एक घुड़-सवार पास से गुजरा तो मुखिया ने हाथ के इशारे से उधर बुलाया। विगलित स्वर में अपना दर्द सुनाया। घुड़-सवार ने एक ही नजर में टोली की गणना कर ली। मुस्कराकर कहा—मेरे सामने और गिनो।

उसके कहने से सभी ने फिर गणना शुरू की। और नतीजा वही। एक आदमी खोया सो खो ही गया। सभी की आँखें भर आईं। तब घुड़-सवार ने गंभीर स्वर में कहा—यदि मैं खोए आदमी को खोज निकालूँ तो मुझे क्या इनाम दोगे।

सभी ने एक साथ जवाब दिया कि मनुष्य की देह लाख रुपयों से भी ज्यादा कीमती है। इसका एहसान तो वे नहीं चुका सकते पर बुने हुए कपड़ों के सभी थान उन्हें खुशी-खुशी सौंप देंगे।

घुड़-सवार ने घोड़े पर बैठे-बैठे ही अपने पाँव से जूता निकाला और एक-एक व्यक्ति के सिर पर जूता फटकार कर गिनती करने लगा। मुखिया के माथे पर कुछ जोर से जूता फटकारा तो उसके मुँह से खुशी के मारे निकला—दस। इस तरह घुड़-सवार ने दस बार सभी के मुँह से खुशी का इजहार करवाया—तब कहीं उन्हें पुख्ता भरोसा हुआ कि टोली पूरी है—एक भी व्यक्ति कम नहीं। उन्होंने खुशी-खुशी हाथ से बुने कपड़ों के थान घुड़-सवार को सौंप दिये—लाख रुपयों की देह उन्हें वापस मिल गई थी—बड़ा सस्ता सौदा रहा।

—मूर्खों को उनके तरीके से ही समझाया जाता है।

—इस कहावत का सबसे बड़ा और झीना मर्म यह है कि दुनिया में हर व्यक्ति अपने को भूलकर दूसरों का लेखा-जोखा करता है।

**गिणै तौ देव नींतर भींत रा लेव।** ३५७२

माने तो देव नहीं तो दीवार के लेव।

लेव = कच्ची दीवार से गिरा हुआ सूखा गार।

—किसी भी देवता का वस्तुगत कोई अस्तित्व नहीं होता, वे तो मनुष्य के विश्वास की कोख से जन्म ग्रहण करते हैं।

—मनुष्य के विश्वास में ही ईश्वर का अस्तित्व निहित है।

—अपना-अपना विश्वास ही एक-मात्र सच्चाई है।

**गियां हांण नीं मर्‌यां पिछतावौ।** ३५७३

न गये हानि न मरे पछतावा।

—जिस वस्तु के खो जाने पर कोई हानि न हो और जिस व्यक्ति के मर जाने से पश्चाताप न हो, वैसे प्रसंग में यह उक्ति काम ली जाती है।

—अति वृद्ध-बुजुर्ग के दिवंगत होने पर।

**गिया कनागत आई देवी, बांमण जीमै खीर-जळेबी।** ३५७४

गये कनागत आई देवी, ब्राह्मण खाएँ खीर जलेबी।

—कनागत समाप्त होने पर नवरात्रि आती है, ब्राह्मणों को हवन-पूजा पर खूब दक्षिणा मिलती है, उम्दा भोजन कराया जाता है।

—अपना-अपना समय है, उस में जो मौज मना लें वह अपनी है।

**गिया कनागत तूटी आस, बांमण रोवै चूल्है पास।** ३५७५

गये कनागत टूटी आस, ब्राह्मण रोये चूल्हे के पास।

—श्राद्ध पक्ष बीतने पर न कौओं की पूछ होती है और न ब्राह्मणों की। कौओं ने भी मनचीता भोजन किया और ब्राह्मणों ने भी डटकर शानदार रसोई पाई, अब श्राद्ध बीतने पर ब्राह्मण देवता हताश होकर चूल्हे के पास खिन्न मन से बैठे हैं।

—अच्छा समय बीतते देर नहीं लगती, बुरे दिन हठात् दुःस्वप्न की नाईं आ टपकते हैं।

**गिया जीते हारा जांणे, आवे जी कोनी जाणे।**–भी. २०० ३५७६

गये को सब जानते हैं, आने वाले को कोई नहीं जानता।

—जो समय बीत जाता है, उसे सब जानते हैं, वह स्मृति में शेष है, पर आने वाले आसन्न क्षण का किसे भी पता नहीं चलता कि क्या गुजरेगी ?

—भविष्य अदृष्ट है,जो बीत गया वह लौटकर नहीं आ सकता,इसलिए वर्तमान में जो सत्कर्म करने हैं,कर लो वरना समय पारे की नाईं हाथ से फिसल जाएगा।

**गिया बदरी , काया सुधरी।** ३५७७

गये बद्रीनाथ, काया सुधरी हाथोंहाथ।

—ऐसी धारणा है कि बद्रीनाथ जाने से काया पवित्र,निर्मल व पापमुक्त हो जाती है।

—धार्मिक तीर्थों की महिमा बताकर वहाँ जाने के लिए अनुप्रेरित करना।

**गियौ न जोबन बावड़ै , लाख संधीणा खाय।** ३५७८

गया न यौवन बाहुरे, लाख मलीदा खाय।

—गुजरा हुआ वक्त और बीता हुआ यौवन लाख यत्न करने पर भी वापस नहीं लौटता।

—उम्र का एक क्षण भी व्यर्थ नहीं गँवाना चाहिए। हर क्षण अमूल्य है।

**गिरज तौ मौत ई चावै।** ३५७९

गिद्ध तो मौत ही चाहते हैं।

—दूसरों के विनाश से जिस दुष्ट व्यक्ति की स्वार्थ-सिद्धि हो उसके लिए।

—आतताई तो हमेशा लोगों के अमंगल ही की कामना करता है।

**गिरज तौ व्है जठै टंटेर ई सोधै।** ३५८०

गिद्ध तो जहाँ-तहाँ कंकाल ही खोजता है।

—दुष्ट व्यक्ति को अपनी स्वार्थ-सिद्धि के अलावा कुछ भी ध्यान नहीं रहता।

—निर्लज्ज व्यक्ति जहाँ-तहाँ मुँह मारता फिरता है।

—मनुष्य योनि में जन्म लेकर जो कुटिल व्यक्ति गिद्ध का जीवन जीते हैं—उनके लिए।

**गिरजां नै कुण निंवता देवै ?** ३५८१

गिद्धों को कौन न्योता देता है ?

—जो बेहया व्यक्ति बिना निमंत्रण के ही जहाँ-तहाँ जा धमकते हैं,उनके लिए।

—लंपट व्यक्ति को कौन प्रेम-पाती लिखता है।

—भला दुष्ट लोग किसके निमंत्रण की प्रतीक्षा करें ?

**गिरस्ती कनै कोडी नीं व्है तौ कोडी रौ अर साधू कनै कोडी व्है तौ कोडी रौ !** ३५८२

गृहस्थ के पास कौड़ी न हो तो कौड़ी का और साधु के पास कौड़ी हो तो कौड़ी का !

—विभिन्न जगहों पर एक ही वस्तु का विभिन्न ही आकलन होता है ।

—माया की सर्वत्र सार्थकता नहीं होती । गृहस्थ के लिए तो नितांत उपादेय है और संन्यासी के लिए त्याज्य ।

**गिरस्ती रौ अेक हाथ लील में अेक हाथ कसूंबै में ।** ३५८३

गृहस्थी का एक हाथ नील में और एक हाथ लाल में ।

कसूंबौ = एक प्रकार का पौधा जिससे लाल रंग निकाला जाता है । दूसरा अर्थ है—गलाया हुआ अफीम । जो मांगलिक या शुभ अवसरों पर काम में लिया जाता है ।

—नीला रंग शोक का प्रतीक है और लाल रंग खुशी का । गला हुआ अफीम भी खुशी का सूचक है ।

—मनुष्य का एक हाथ दुख में और एक हाथ सुख में ।

—सुख व दुख के दोनों पहियों पर ही गृहस्थी की गाड़ी चलती है ।

**गिराक अर मौत रौ कांईं बेरौ कद आय जावै ।** ३५८४

ग्राहक और मौत का क्या पता कब आ जाये ।

—व्यापारी के लिए ग्राहक लाभ का प्रतीक है और मौत तो सब के लिए दुखद ही होती है । कब किस क्षण में सुख-दुख प्रकट हो जाय, पता नहीं चलता ।

—अदृष्ट तो प्रकट होने पर ही प्रतीत होता है ।

**गिराक अर रांम सूं ओछा क्यूं मांगणा ?** ३५८५

ग्राहक और राम से कम क्यों माँगना ?

—ग्राहक से जब जैसा अवसर आये, वसूल कर लेना चाहिए । और भगवान से भी कम की क्यों आशा रखी जाये, अधिक-से-अधिक माँगने में क्यों कसर रखी जाय, उसके पास क्या कमी है ।

—अवसर का लाभ उठाने में कमी नहीं रखनी चाहिए ।

**गिराक कदै ई गलत कोनीं व्है ।** ३५८६

ग्राहक कभी गलत नहीं होता ।

—जिससे लाभ हो उसे गलत न मानना ही अच्छा है ।

—दुकानदार को कुछ कमाने की गर्ज से ग्राहक जो कहे सुनना पड़ता है ।

**गिराक नै तौ आंधी रांड ई ठग लैवै, वोपारी नै ठगौ जद जांणां ।** ३५८७

ग्राहक को तो अंधी राँड भी ठग लेती है, व्यापारी को ठगो तब जानें ।

—अमूमन ग्राहक भावों से अनभिज्ञ होता है, पर दुकानदार को तो राई-रत्ती की जानकारी है ।

—ग्राहक को ठगना आसान है और व्यापारी को ठगना बहुत कठिन ।

**गिरै जांणै, डाकौत जांणै ।** ३५८८

ग्रहदशा जाने और जोशी जाने ।

—अपनी आफत की जिम्मेवारी किसी दूसरे के मत्थे डालकर जो व्यक्ति आत्म-संतुष्टि महसूस करे उसके लिए ।

—जो फँसेगा, वही छुटकारे का उपाय सोचेगा ।

**गिळगिचिया रौ कांई गीलौ व्है ?** ३५८९

चिकने कंकर का क्या गीला हो ?

गिळगिचियौ = पानी के बहाव तथा टक्कर से निर्मित गोल-गोल छोटे-बड़े चिकने कंकर ।

—जिस क्रूर व्यक्ति का कैसी भी मर्मांतक वेदना से दिल न पसीजे ।

—जिस व्यक्ति पर आँसुओं का कोई असर न हो ।

**गिळगिचियौ चोट हेटै कद आवै ?** ३५९०

चिकना कंकर चोट के नीचे कब आता है ?

—अनुभव की मार से घिस-घिसकर गोल हुआ व्यक्ति किसी के बहकावे में नहीं आता ।

—जो चालाक व्यक्ति कैसे भी संकट की चोट से चिकने-पत्थर की तरह फिसलकर बच जाय ।

—जो मतलबी इनसान जाने-अजाने कभी किसी के काम न आये ।

**गिलोय अर नींब चढ़ी ।** ३५९१

गिलोय और नीम चढ़ी ।

—अपनी प्रकृति से गिलोय की निहायत कड़वी बेल नीम पर चढ़कर और भी ज्यादा कड़वी हो जाती है।

—बुरा व्यक्ति बुरी संगति पाकर और भी बुरा हो जाता है।

—किसी दुष्ट व्यक्ति को बड़े व्यक्ति का आश्रय मिले जो स्वयं महाधूर्त हो।

**गींडोळां रा जाया तौ गोबर ई उकराळै।** ३५९२

केंचुओं के बच्चे तो गोबर ही कुरेदते हैं।

गींडोळौ = गर्मी व वर्षा ऋतु में पैदा होने वाली एक बड़ी लट जो गोबर, खाद, मिट्टी व घूरे में गड़ी रहकर उन्हें हरदम कुरेदती है।

—किसी कुटिल व अधम बाप के पुत्र बुरा कार्य करें तब ...।

—नीच बाप की संतान नीच ही होती है।

**गींडोळौ गंगाजी न्हावण जावै।** ३५९३

केंचुआ गंगा नहाने जाय।

—घूरे और विष्टे में निर्वाह करने वाला गींडोला पवित्र होने के लिए गंगा स्नान करने चला।

—सवर्णों की अनुसूचित जातियों के लिए विकट वितृष्णा। भारतीय समाज से यह विष न जाने कब समाप्त होगा।

—ओछा व्यक्ति कोई शोभनीय काम करने की लालसा रखे तब।

—दुष्ट व्यक्ति शालीन दिखने का प्रयास करे तब।

**गीत-कोड हेटी, जद तीजी आवै बेटी।** ३५९४

गीत-उछाह सब हेटी, जब तीसरी आये बेटी।

—हिंदू समाज में बेटी के ब्याह पर अधिक खर्च करने का रिवाज है। दहेज प्रथा बेइंतहा घातक है। इसलिए बेटी का जन्म विपदाओं के आगमन की अग्रिम सूचना है। तीसरी बेटी के जन्म पर तो मानो परिवार पर वज्रपात ही हो जाता है। यह मान्यता और प्रथा इस समाज के पतन का कारण है।

**गीतड़ां के भींतड़ां।** ३५९५

गीतों में या गवाक्षों में।

—गाये जाने वाले गीत या लोक-गीतों के अलावा राजस्थानी के डिंगल साहित्य में 'गीत' नामक एक प्रकार का छंद है जिस में अधिकांशतया वीर रस एवं भक्ति रस का साँगोपाँग वर्णन होता है। इसके अनेक प्रकार हैं।

—किसी भी मनुष्य द्वारा किये गये अविस्मरणीय कार्यों की कीर्ति या तो गीतों में अक्षुण्ण रहती है या इमारतों में—अर्थात् शिल्प कला के माध्यम से—मसलन कोणार्क, ताजमहल इत्यादि।

दे.क.सं. २५५८

**गीत में गावण जोगौ नीं अर रोज में रोवण जोगौ नीं।** ३५९६

न गीतों में गाने के योग्य और न रुदन में रोने के योग्य।

—जो व्यक्ति न तो जीते-जी किसी काम का हो और न मरने पर किसी के लिए भी याद करने काबिल हो।

—निहायत गये-गुजरे व्यक्ति के लिए।

—मन का जो अकथनीय दर्द न गीतों के द्वारा प्रकट हो और न आँसुओं की वेदना के द्वारा।

**गी ही गळौ करावण नै, कांच साथै आ पड़ी।** ३५९७

गई तो थी गला करवाने, काँच बाहर आ गई।

—छोटी आफत का समाधान करते समय कोई बड़ी आफत आ पड़े तब।

—मामूली कष्ट के निवारण में कोई अचीता बड़ा कष्ट उठाना पड़े तब।

—लेने-के-देने पड़ जायँ तब!

**गीलै में गोबर नै काठै में भाटौ।** ३५९८

गीले में गोबर और कठोर में पत्थर।

—जो व्यक्ति गोबर की भाँति गीला हो और पत्थर की नाईं सख्त।

—जिस व्यक्ति की न सहृदयता काम की और न सख्ती। सर्वथा निकम्मे व्यक्ति के लिए।

—जिस चटोरे या अघोरी व्यक्ति के लिए खाद्य-अखाद्य कुछ भी माने नहीं रखता हो। जो गीले में गोबर तक खा जाय और कठोर में पत्थर भी न छोड़े।

**गीलै में भाटौ न्हाकियां छांटा ई उछळै।** ३५९९

गीले में पत्थर डालने से छींटे ही उछलते हैं।

—नीच आदमी को छेड़ने पर गंदे बोल ही सुनने पड़ते हैं।

—कुटिल व ओछे आदमी से दूर रहना ही अच्छा है।

मि.क.सं.२१८१

**गीवी तिथ नै बांमण ई को बांचै नीं।** ३६००

गई तिथि तो ब्राह्मण भी नहीं बाँचता।

—बीती ताहि बिसार दै, आगै की सुधि लेय। जो बीत गया सो रीत गया।

—भविष्य की चिंता ही मनुष्य का प्रमुख ध्येय है।

दे.क.सं.३१८०

**गुड़कतां नै ढाळ लाधी।** ३६०१

लुढ़कते हुए को ढाल मिली।

—मन की इच्छा को कामयाब करने के लिए सोचते ही कोई उचित अवसर हाथ लग जाए तब...!

—बहाने-बाजी के लिए तत्क्षण कोई बढ़िया मौका मिल जाय तब...।

**गुड़कै जित्तै तौ घट्टी नींतर भाटा री पट्टी।** ३६०२

चलती रहे तो चाकी, नहीं तो पत्थर की शिला।

—उपयोग में आती रहे तब तक ही किसी वस्तु की सार्थकता है।

—बिना उपयोग के सभी वस्तुएँ एकदम व्यर्थ हैं।

—मनुष्य का जीवन भी प्रायः ऐसा ही है, जब तक चले तब तो सब उत्तम-ही-उत्तम और न चलने पर मिट्टी के समान अधम, जलाने या गाड़ने योग्य।

**गुड़तां-गुड़तां ई गोळ व्है।** ३६०३

लुढ़कते-लुढ़कते ही गोल होता है।

—अनुभव की ठोकरें खाने से ही मनुष्य होशियार होता है।

—किसी काम के निरंतर अभ्यास से ही उस में प्रवीणता हासिल होती है।

—दुख व विपत्ति का सामना करने से ही अनुभव प्राप्त होता है।

—दुखों से घबराने वाले या किसी धंधे में घाटा उठाने वाले व्यक्ति को दिलासा देने के लिए भी...।

**गुण गैल पूजा।** ३६०४

गुणों के अनुसार पूजा।

—जिस व्यक्ति में जैसे गुण होते हैं उन्हीं के अनुरूप उसकी प्रतिष्ठा होती है।

**पाठा : गुणां परवांणै पूजा।** गुणों के अनुरूप पूजा।

**गुण न हिरान्यूं गुण-गाहक हिरान्यूं है।** ३६०५

गुणों की कमी नहीं, गुण-ग्राहकों की कमी है।

—हर व्यक्ति में कुछ-न-कुछ तो गुण होता ही है, पर उसकी पहिचान करने वाले बिरले ही होते हैं।

—प्रतिभाशाली व्यक्ति तो होते ही हैं, पर उनकी परख करने वाले कहाँ मिलते हैं!

**गुणनो तो वन भलो को गुण नो मनख खोटौ।**– भी.२०२ ३६०६

गुण मुक्त वन अच्छा है और गुण मुक्त मनुष्य बुरा है।

—वन के संदर्भ में गुण का अर्थ है घुन। घुन लगे पेड़ समाप्त हो जाते हैं। मनुष्य के अर्थ में अच्छे स्वभाव से है। अतएव गुण-रहित मनुष्य ठीक नहीं।

**गुण री पूजा सगळै व्है।** ३६०७

गुण की पूजा सर्वत्र होती है।

—कुछ-न-कुछ गुण होने पर लोग उसका आदर करते ही हैं।

—गुण कहीं भी छिपा नहीं रहता।

**गुण रौ भाई औगण।** ३६०८

गुण का भाई अवगुण।

—भलाई के बदले बुराई मिले तब।

—जब किसी का भला करने पर वापस उसी के हाथों भला करने वाले का बुरा हो तब!

—गुण और अवगुण का जोड़ा है। कोई भी व्यक्ति सर्व गुण संपन्न नहीं होता।

**पाठा : गुण रौ पूत औगण।** गुण का पुत्र अवगुण।

**गुण लारे पूजा।**– भी.२०३ ३६०९

गुण के पीछे पूजा।

—मनुष्य का सम्मान गुणों के अनुसार ही होता है।

—गुण रहित मनुष्य पशु के समान।

दे.क.सं.३६०४,३६०७

**गुणां री पूजा, आदमी री नीं।** ३६१०

गुणों की पूजा, आदमी की नहीं।

—मनुष्य की देह धारण करने मात्र से उसका आदर नहीं, आदर तो भीतरी गुणों से होता है।

—अच्छे गुण तो अच्छा मनुष्य, आदरणीय। बुरे गुण तो बुरा मनुष्य, तिरस्कार के योग्य।

**गुणां रौ इज गाडौ।** ३६११

गुणों की ही गाड़ी।

—जिस व्यक्ति में बेशुमार गुण हों।

—निहायत सज्जन व्यक्ति के लिए जो दूसरों का भार ढोता रहता है, जो हर किसी के काम आये।

**पाठा : गुणां री जाझ।** गुणों की जहाज।

**गुणी रै गोठ्या घणा अर भगतण रै भरतार घणा।** ३६१२

गुणी के साथी अनेक और वेश्या के यार अनेक।

—गुणी व्यक्ति को हर कहीं साथी मिल जाते हैं और वेश्या को यारों की कमी नहीं रहती।

—गुणी या वेश्या का जब कोई व्यक्ति साथ छोड़े तब यह उक्ति प्रयुक्त होती है।

**गुपतदांन महा-पुन्न।** ३६१३

गुप्त-दान महा-पुण्य।

—किये हुए दान की किसी को भनक तक न पड़े तभी उसकी महिमा है।

—दान के प्रदर्शन से दान की मर्यादा घटती है।

**गुमास्ता रौ बेच्यौ साह बिकै।** ३६१४

गुमाश्ता का बेचा शाह बिकता है।

—व्यावसायिक पेढ़ी का सर्वेसर्वा गुमाश्ता ही होता है।

—गुमाश्ते की जिम्मेवारी सेठ से भी अधिक होती है।

—जो उच्च अधिकारी पूर्णतया मातहतों पर ही निर्भर करता हो।

**गुरां रा नीं पीरां रा।** ३६१५

न गुरु के और न पीर के।

—जो व्यक्ति किसी के प्रति निष्ठावान न हो।

—जो व्यक्ति किसी का भी न हो। कृतघ्न व्यक्ति के लिए।

**गुरांसा छांनै-मांनै।** ३६१६

गुरुजी चुपके-चुपके।

—समाज के डर से जो व्यक्ति छिपकर कोई काम करे।

—जो व्यक्ति अपना भेद किसी पर प्रकट न होने दे या अपनी बुराइयों के प्रति पूर्णतया सतर्क हो।

**गुरांसा बंदगी के चिपियौ तार।** ३६१७

गुरुजी प्रणाम कि गले आ पडा।

—केवल संबोधन मात्र से कोई व्यक्ति के पीछे लग जाय।

—बात करते ही जो व्यक्ति चिपक जाय।

—स्वार्थी आसानी से किसी का पीछा नहीं छोडता।

**गुरांसा रौ सुसियौ।** ३६१८

गुरुजी वाला खरगोश।

—बिना किसी संदेह के जो व्यक्ति स्वयमेव अपना राज प्रकट कर दे।

—चोर का मन अनजाने ही खुल पड़ता है।

—चोर की दाढ़ी में तिनका या चोर के मन में उजाला।

**गुलगुला भावै पण तेल कठा सूं आवै?** ३६१९

गुलगुले भाएँ पर तेल कहाँ से आये?

—उचित साधनों के अभाव में किसी की चाह पूरी नहीं होती।

—जो व्यक्ति आकांक्षाएँ तो ऊँची रखे, पर आर्थिक-स्थिति अनुरूप न हो।

**गुळ खळ अेकण भाव ।** ३६२०

गुड़ खली एक ही भाव ।

—जहाँ अच्छे-बुरे में कोई भेद न हो ।

—जहाँ गुणी व गँवार की समान कद्र हो ।

दे.क.सं.२७९४

**गुळ खारौ लागै तौ जांणौ ताव रौ जोर ।** ३६२१

गुड़ कड़वा लगे तो समझो बुखार का जोर ।

—जिस व्यक्ति को अच्छी चीज बुरी लगे तो समझना चाहिए कि उसकी समझ में ही कुछ दोष है ।

—जिसकी रुचि ही विकृत हो,वह ऊँचे मर्म को क्या समझे !

**गुळ खावै अर गुलगुलां सूं रखौ ।** ३६२२

गुड़ खाये और गुलगुलों से परहेज ।

गुलगुला = गेहूँ के आटे व गुड़ से बने मीठे पकौड़े ।

—मूल वस्तु को तो खाना और उस से बने पकवान से परहेज करना ।

—झूठा दिखावा करने वाले व्यक्ति के लिए ।

—दुहरे चरित्र वाले पाखंडी के लिए ।

पाठा : **गुळ खावै गळवांणी सूं पच्छ करै ।** गुड़ खाये और गलवानी से परहेज ।

**गुळ भोटै अर गुलगुलां सूं परेज ।** गुड़ डकारे और गुलगुलों से परहेज ।

**गुळ खावै सो कांन बिंधावै ।** ३६२३

गुड़ खाये सो कान बिंधाये ।

—जिसे अच्छी चीज की ललक हो वह कष्ट उठाये ।

—सुख का स्वाद चखने वाले को तकलीफ उठानी पड़ती है ।

**गुळ गीलौ व्हैतौ तौ माखियां कदै ई चाट जाती ।** ३६२४

गुड़ गीला होता तो मक्खियाँ कभी चट कर जातीं ।

—हीन व्यक्तियों की इच्छा के अनुरूप सारी बातें होने लगें तो यह दुनिया ही विनष्ट हो गई होती ।

—यदि किसी की इच्छा के अनुरूप सारी बातें हो जाएँ तो कोई कुछ भी कसर न रखे ।

**गुळ घातसी जिसौ गुळीयौ होसी ।**–व १०० ३६२५

गुड़ डालोगे वैसा ही घोल होगा ।

—किसी भी कार्य की अच्छाई या असफलता उस पर किये गये व्यय पर निर्भर करती है ।

—जैसा खर्च वैसा ठाट । जैसी मेहनत वैसा फल ।

**पाठा : गुळ घालसी जिसौ मीठौ होसी । गुळ जित्तौ ई मीठौ ।**

**गुळ जठै माखी , घी जठै कीड़ियां ।** ३६२६

जहाँ गुड़ वहाँ मक्खियाँ, जहाँ घी वहाँ चीटियाँ ।

—जहाँ सपन्नता या बहुलता होगी,वहाँ उसकी ओर घात लगाने वाले भी होंगे ।

—हर वस्तु का अपना विभिन्न ही आकर्षण होता है ।

—हर व्यक्ति की रुचि का अपना-अपना स्तर होता है ।

**गुळ जांणै कै कोथळी !**–व.६१ ३६२७

गुड़ जाने या थैली !

—जब अंदर-ही-अंदर कोई बात दबा दी गई हो ।

—भेद जानने वाला ही जानता है कि असलियत क्या है ?

**गुळ डळियां , घी आंगळियां ।** ३६२८

गुड़ डलियाँ, घी अँगुलियाँ ।

—डली-डली करते गुड़ खर्च हो जाता है और अँगुली-अँगुली चाटते घी समाप्त हो जाता है ।

—थोड़ा-थोड़ा व्यय जुड़कर भी बहुत हो जाता है ।

—नित्य-प्रति के किंचित् उपयोग से कोई भी वस्तु समाप्त हो जाती है ।

—क्षण-क्षण करके ही समय बीत जाता है ।

**गुळ तौ अंधारा में ई मीठौ लागै ।** ३६२९

गुड़ तो अँधियारे मे भी मीठा लगता है ।

—अच्छी चीज कहीं भी छिपी नहीं रहती।

—गुणी के गुणों की पहिचान स्वतः हो जाती है।

—अच्छी वस्तु कैसी भी परिस्थिति में अपनी अच्छाई नहीं छोडती।

**गुळ तौ मिळ्यौ पण दातळै लाग्योड़ौ।** ३६३०

गुड़ तो मिला पर हँसिये पर लगा हुआ।

—गुड से लिथड़ा हँसिया चाटने पर जीभ कटने की सभावना है। लाभ का अवसर तो मिला पर जोखिम भरा। न छोड़ने की इच्छा हो और न ग्रहण करने की।

—अत्यधिक दुविधा-जनक स्थिति के लिए।

**गुळ दियां ई छोरी व्है जिणरौ कुण कांई करै।** ३६३१

गुड देने पर भी लड़की होना चाहे, उसका कोई क्या करे।

—इच्छानुसार पूर्ति होने पर भी जो व्यक्ति न माने उसे कौन मना सकता है?

—निराधार हठ करने वाले व्यक्ति के लिए।

**गुळ दियां छोरी आज हुईजै नीं काल।** ३६३२

गुड़ देने से लड़की आज हो न कल।

—नगण्य उपाय से दुष्कर कार्य को सरल नही बनाया जा सकता।

—न होने वाले कार्य को जो व्यक्ति अकिचन तरकीब से पूरा करना चाहे तब।

**गुळ दियां मरै उणनै विस क्यूं देवणौ?** ३६३३

गुड देने से मरे, उसे विष क्यो देना?

—जो व्यक्ति सीधी बात करने से मान जाय तो उसके लिए लबा-चौड़ा जाल क्यों रचा जाय?

—बातचीत से जो बात सुलझती हो, उसके लिए झगड़ा नहीं करना चाहिए।

—मिठास से काम निकलता हो तो सख्ती क्यों बरती जाय?

**गुळ दे नींतर छोरी व्हूं।** ३६३४

गुड़ दे वरना लड़की हो जाऊँगी।

—छोटी-छोटी बात पर रूठने वाले व्यक्ति के लिए।

—बात-बात पर नाराज होने वाले व्यक्ति को कैसे मनाया जाय?

**गुळ नीं तौ गुळ जैड़ी जीभ तौ राखणी ।** ३६३५

गुड़ नहीं तो गुड़ जैसी जबान तो रखनी चाहिए ।

—किसी को देने के लिए गुड़ नहीं है तो क्या हुआ, मीठी बात करने के लिए गुड़ जैसी जीभ तो है ।

—जो व्यक्ति न किसी के कुछ काम आये और न किसी से अच्छी तरह बात करे उसे समझाने के लिए...।

**गुळ नै पांणी सूं नीं धोईजै ।** ३६३६

गुड़ को पानी से नहीं धोया जाता ।

—किसी कड़वी चीज को धोकर कम कड़वी बनाने की तो चेष्टा की जा सकती है, पर जो चीज संपूर्णतया मीठी हो उसे धोकर और अधिक मीठी बनाने की क्या आवश्यकता ।

—सहृदय व्यक्ति को पानी से धोकर निर्मल बनाने की जरूरत ही नहीं होती ।

**गुळ बिना कसार नीं, लुगाई बिना संसार नीं ।** ३६३७

गुड़ बिना कसार नहीं, औरत बिना संसार नहीं ।

कसार = गेहूँ के आटे को घी में मामूली सेंकने के बाद धनिया डालकर गुड़ के पानी से कसार के लड्डू बनाये जाते हैं । अमूमन गरीबों के उपयोग की चीज है ।

—गुड़ के बगैर कसार फीका तथा औरत के बगैर संसार फीका है ।

—औरत की महिमा बताने के लिए ही कसार में गुड़ की अनिवार्यता दिखलाई गई है ।

**गुळ बिना किसी चौथ, जैतल बिना किसौ रातीजोगौ !** ३६३८

गुड़ बिना कैसी चौथ, जैतल बिना कैसा रतजगा !

जैतल = जैतां = एक पतिव्रता राजपूत रमणी जिसका आख्यान राजस्थान के अंतर्गत रतजगों के गीतों में अवश्य गाया जाता है ।

—कोई मांगलिक चौथ गुड़ के बिना नहीं पूजी जाती । और कोई भी रतजगा जैतल के गीतों बिना संपन्न नहीं होता ।

—जिस व्यक्ति की उपस्थिति हर सूरत में अनिवार्य हो ।

—अपरिहार्य व्यक्तित्व के लिए ।

**गुळ री चोट कोथळी जांणै।** ३६३९

गुड़ की चोट थैली जाने ।

—किसी कपड़े में या किसी थैली में रखे गुड़ को तोड़ने के लिए उसे ही ऊपर उठाकर सख्त आंगन या पत्थर पर पटका जाता है। मीठा होते हुए भी थैली के लिए तो गुड़ पत्थर की तरह चोट पहुँचाने वाला ही होता है।

—जिस पर बीतती है केवल वही अपनी पीड़ा समझता है।

—किसी परिजन के द्वारा कष्ट पहुँचाने पर।

—मुँह से मीठे व्यक्ति की आंतरिक क्रूरता के प्रति कटाक्ष।

**गुळ लाग्यौ नीं डळी, बहू दड़ी-सी आ पड़ी।** ३६४०

गुड़ लगा न डली, बहू गेंद-सी आ पड़ी।

—बिना किसी व्यय के जो काम अप्रत्याशित सरलता से संपन्न हो जाए तब।

—अचीते संयोग से कोई मांगलिक कार्य सुगमता से पूरा हो जाए तब।

**गुळ लारै तंबाखू बळै।** ३६४१

गुड़ के पीछे तंबाकू जलता है।

—औसर-मौसर या विवाह इत्यादि सामूहिक आयोजनों में बड़े खर्चों के साथ कई अन्य छोटे-मोटे खर्चे हो ही जाते हैं।

—बड़े कार्यों के साथ स्वयमेव छोटे कार्यों का निकल आना।

—किसी भी बड़े कार्य में खर्च की निर्धारित सीमा नहीं रहती।

**गुळ वेंट्यां बखांण करै।** ३६४२

गुड़ बाँटने पर बखान करते हैं।

—कुछ-न-कुछ खर्च करने से ही कीर्ति होती है।

—अच्छे काम की शोभा तो होती ही है।

**गुळ सूं मीठी जीभ।** ३६४३

गुड़ से मीठी जुबान।

—वाणी जैसी मधुरता अन्य किसी मीठी वस्तु में नहीं होती।

—मुँह के मिठास से कानों का मिठास अधिक सुहाना होता है।

**गुलाब रै सागै कांटा ई व्है ।** ३६४४

गुलाब के साथ काँटे भी होते हैं ।

—समाज में गुलाब के साथ काँटे भी होते हैं । अच्छे व्यक्तियों के साथ बुरे व्यक्ति भी होते हैं ।

—सर्व गुण संपन्न कोई भी नहीं होता । महापुरुषों में भी कुछ-न-कुछ दोष तो होता ही है ।

—सुख की सौरभ के साथ दुख की चुभन भी होती है ।

**गुवाड़ रौ जायौ बाबौ किणनै कैवै ?** ३६४५

मैंदान में जन्मा पिता किसको कहे ?

—नैतिक मान्यताओं की दीवारों से बाहर जन्मा अवैध पुत्र किसे अपना पिता कहे ।

—जिस असहाय व्यक्ति का समाज में कहीं कोई सहारा न हो ।

**गुवाळ नी वात दोवा वाळी जांणे ।**– भी. २०४ ३६४६

ग्वाले की बात दुहने वाली जानती है ।

—ग्वाले ने जंगल में गाएँ कैसी चराईं, इसका भेद गाएँ दुहने वाली ही जानती है । दूध की मात्रा से अच्छे-बुरे ग्वाले की पहिचान हो जाती है ।

—संबंधित व्यक्ति ही किसी के बारे में नपी-तुली व सही राय दे सकता है ।

**गूंगला रौ वासौ गू में ।** ३६४७

गूँगले का निवास गू में ।

गूंगलौ = गू का कीड़ा ।

—गंदा व्यक्ति गंदगी में ही मस्त रहता है ।

—नीच व्यक्ति तो हमेशा नीच कामों में ही फँसा रहता है ।

—व्यभिचारी का मन हमेशा औरत की देह के पास चक्कर काटता रहता है ।

—छिनाल का मन हमेशा पराये मर्द के साथ सहवास करने में ही मँडराता रहता है ।

**गूंगली ई फुण करै ।** ३६४८

गूँगली भी फन करती है ।

गूंगली = दुमुँहा साँप ।

—जब कोई गरीब व्यक्ति हेकड़ी दिखाये या क्रोध करे तब।

—जब कोई अक्षम व्यक्ति जोश खाये।

**गूंगलौ गलती करै जणा कांनां माथै हाथ धरै।** ३६४९

गूँगा गलती करे तो कानों पर हाथ धरता है।

—नहीं सुनने के कारण गूँगा व्यक्ति गलती भी करे तो उसके कानों का ही कसूर है।

—अनजाने गलती हो जाने पर।

**गूंगा री गत गूंगौ जांणै।** ३६५०

गूँगे की गति गूँगा ही जाने।

—जो व्यक्ति अपनी उलझन को व्यक्त न कर सके।

—जिस पर बीतती है केवल वही उसका अनुभव कर सकता है।

—दुखी आदमी ही दुखी का दर्द समझ सकता है।

**गूंगा री सानी में गूंगौ ई समझै।** ३६५१

गूँगे की सानी को गूँगा ही समझता है।

—गरीब के दर्द को गरीब ही जानता है।

—चालाक व्यक्ति के इशारों को चालाक ही समझ सकता है।

पाठा : गूंगा री फारसी में गूंगौ ई समझै। गूँगे की फारसी गूँगा ही समझता है।

**गूंगा री सैन के तौ समझै माई अर के समझै लुगाई।** ३६५२

गूँगे की सानी या तो समझे माई या उसकी लुगाई।

—जो अपना होता है वही अपनों का दर्द बिना कहे ही समझ लेता है।

—अक्षम व्यक्ति के हितैषी बिरले ही होते हैं।

**गूंगा रौ गुळ खाटौ नीं कोई मीठौ।** ३६५३

गूँगे का गुड़ खट्टा न कोई मीठा।

—स्वाद की अनुभूति होने पर भी जिस व्यक्ति में उसे प्रकट करने की क्षमता न हो।

—जो व्यक्ति किसी भी चीज की परख करने में असमर्थ हो।

**गूंगा वाळौ गुळ।** ३६५४

गूँगे वाला गुड़।

—मन-ही-मन किसी आनंद का अनुभव करके उसे व्यक्त न कर पाना।

—जो व्यक्ति अपनी भावना को प्रकट न कर सके।

**गूंगा वाळौ सपनौ।** ३६५५

गूँगे वाला सपना।

—जो व्यक्ति अपना रहस्य किसी को बता न सके।

—अपनी आंतरिक स्थिति को व्यक्त न कर सकने की विवशता।

**गूंगी अर गीता गावै।** ३६५६

गूँगी और गीता गाये।

—जो व्यक्ति जिस चीज से वंचित हो, वह उसके बारे में क्या समझे?

—अपनी अक्षमता के बावजूद कोई व्यक्ति बड़ा काम करना चाहे तब।

**गूंगे नै समझावणौ, गूंगै री गत आंण।** ३६५७

गूँगे को समझाना हो तो गूँगे का लहजा सीख।

—समझने वाले की क्षमता के अनुरूप समझाने वाले को उसी साँचे में ढलना पड़ता है।

—एक ही ढर्रे से सबको नहीं समझाया जा सकता।

—हर व्यक्ति के समझने की अपनी अलग-अलग क्षमता होती है।

**गूंगौ गावै अर बोळौ सुणै।** ३६५८

गूँगा गाये और बहरा सुने।

—दो अक्षम व्यक्ति एक-दूसरे को सहयोग देने का दिखावा करें तब।

—जब कोई व्यक्ति अनहोना काम करने की चेष्टा करे तब।

—जो काम किसी भी तरह संभव न हो।

**गूंगौ गुळ खावै अर मन में मुसकावै।** ३६५९

गूँगा गुड़ खाये और मन-ही-मन मुस्काये।

—गूँगे को गुड़ मीठा तो लगता है,खाने का आनंद आता है,पर वह अपने मन की बात प्रकट नहीं कर सकता। निर्वाक् होकर मन-ही-मन मुस्कराता रहता है।

—जो व्यक्ति कला,साहित्य व सौंदर्य का रस ग्रहण करने के बाद उसे व्यक्त नहीं कर सके और मन-ही-मन प्रमुदित होता रहे।

**गूंगौ व्है जकौ बोळौ ई व्है।** ३६६०

गूँगा होता है वह बहरा भी होता है।

—सुनकर समझने की योग्यता के अभाव में बहरा होने के परिणाम-स्वरूप वह गूँगा भी होता है।

—एक अक्षमता से दूसरी अक्षमता सहज ही उत्पन्न हो जाती है।

—जो व्यक्ति न तो अपनी पीड़ा प्रकट कर सके और न दूसरों की पीड़ा सुन सके।

**गू ई कैवै म्हनै गोबर री बास आवै।** ३६६१

गू भी कहे कि मुझे गोबर की बदबू आती है।

—जब कोई बड़ी गंदगी छोटी गंदगी से घिन करे तब।

—जब कोई बड़ा चोर छोटे चोर की बुराई करे तब।

—जब कोई माना हुआ भ्रष्ट,निकृष्ट या दुष्ट व्यक्ति अपेक्षाकृत अपने से कम बुरे व्यक्ति की निंदा करे तब।

—जब कोई नेता डाकू की भर्त्सना करे तब।

**गू खायां काळ कोनीं निकळै।** ३६६२

गू खाने से अकाल पार नहीं होता।

—जब कोई व्यक्ति बहुत हीन या अधम काम करके खोटी कमाई करना चाहे तब!

—अत्यधिक लालची,लोभी या कंजूस व्यक्ति पर कटाक्ष।

—निहायत छोटे स्वार्थ के पीछे भागने वाले व्यक्ति पर व्यंग्य।

**गूगरी रा गोठिया, खाय पीयनै ऊठिया।** ३६६३

गोष्ठी व मजे के यार, खाया और चलने को तैयार।

—केवल स्वार्थ की खातिर झूठी मित्रता का दावा करने वाले यार-दोस्तों पर कटाक्ष।

—मित्रता की ओट में मौज करने वाले बनावटी मित्र का चरित्र।

**गूजर चावै ऊजड़।** ३६६४

गूजर चाहे ऊजड़।

—गूजर, चरवाहे या गड़रिये हरदम अपनी मवेशी की खातिर बड़े-से-बड़े चारागाहों के ही उत्सुक रहते हैं।

—जो गँवार निर्जन जंगल में ही खुश रहे।

—अपना-अपना स्वार्थ सभी को प्यारा होता है।

**पाठा : गूजर जठै ऊजड़।** गूजर जहाँ ऊजड़।

**गूजर जठै ई गुजरात।** ३६६५

गूजर वहीं गुजरात।

—गुर्जरों की राज्य-सत्ता के कारण ही गुजरात का नाम-करण हुआ।

—गूजर बसें वही गुर्जरधरा। बंदा बसे वहीं बस्ती।

—विशिष्ट व्यक्ति के लिए।

**गूजर झगड़ौ।** ३६६६

गूजर झगड़ा।

—गूजर लड़ाकू माने जाते हैं। पर अधिकांशतया बिना बात अकिंचन कारण ही आपस में लड़ पड़ते हैं।

—बिना बात कोई बड़ा फसाद हो जाय तब...।

**गूजर सूं ऊजड़ भली।** ३६६७

गूजर से ऊजड़ भली।

—जातीय आक्षेप के अलावा यह कहावत अन्य संदर्भ में भी प्रयुक्त होती है कि गँवार व्यक्ति से संपर्क न रहे तो अच्छा।

—अनिष्टकारी व्यक्ति दूर रहे तो लाभप्रद है।

**गूजरी आपरा दही नै खाटौ कद बतावै?** ३६६८

गूजरी अपने दही को खट्टा कब बताती है?

—अपने मुँह से अपनी चीज या अपने व्यक्तियों की बुराई नहीं की जाती।

—अपनों के प्रति मोह होना स्वाभाविक है।

—भला कोई व्यवसायी अपनी चीज की बुराई कैसे कर सकता है?

**गूदड़-राली सोवै, मरजाद बैठी रोवै।** ३६६९

चित्थड़-गुदड़ी सोये, मर्यादा बैठी रोये।

—धनाढ्य और प्रतिष्ठित व्यक्तियों को अपने धन और अपनी प्रतिष्ठा की निरंतर चिंता बनी रहती है कि वह कब कलुषित या खंडित हो जाय। दोनों कार्य कष्ट-साध्य हैं। सब साधन-सुविधाएँ होते हुए भी वे बेचैन रहते हैं। अच्छी तरह नींद नहीं आती। इसके विपरीत निर्धन व्यक्ति लंबी तानकर सोता है उसके पास न धन खोने को है और न प्रतिष्ठा।

—जिस गरीब को खोने का भय नहीं वह फटे-गंदे बिस्तर पर भी निश्चिंत होकर खर्राटे भरता है।

**गूदड़ी में किसौ लाल को जलमै नीं।** ३६७०

गुदड़ी में कौन-सा लाल पैदा नहीं होता।

—गरीब के घर में कौन-सा बड़ा व्यक्ति पैदा नहीं हो सकता।

—केवल बड़े घरों में ही बड़े व्यक्ति पैदा हों यह जरूरी नहीं।

**गूदड़ी में गरक।** ३६७१

गुदड़ी में बहार।

—छिपी हुई समृद्धता।

—दिखने में गरीब होने पर भी जिस व्यक्ति की आर्थिक हालत काफी अच्छी हो।

**गूदड़ी रौ लाल।** ३६७२

गुदड़ी का लाल।

—गरीबी के वातावरण में पला व्यक्ति बहुत बड़ी उन्नत्ति करे तब।

—होनहार व्यक्ति के लिए।

**गूदळियौ तौ ई गंगजळ।** ३६७३

गदला है फिर भी गंगाजल है।

—गंगाजल गदला भी हो जाय, तब भी उसकी पवित्रता नष्ट नहीं होती।

—कुलीन व्यक्ति जब किसी कुसंगति में पड़ जाय तो भी कइयों से बढ़कर होता है।

—धनाढ्य व्यक्ति दिवाला निकलने पर भी गरीब नहीं होता।

पूरा दोहा इस प्रकार है :

**गूदळियौ तौ ई गंगजळ, सांकळियौ तौ ई सीह।**

**विखायत तौ ई खींवरौ, खांखळियौ तौ ई दीह॥**

गदला होने पर भी गंगाजल है, जर्जर होने पर भी सिंह है।

विपदा में होने पर भी दानवीर 'खींवरा' है, गर्द से ढँका है, तब भी दिन है।

**गूबला वाळी लात गुण आयगी।** ३६७४

कुबड़े वाली लात लाभ कर गई।

—किसी एक व्यक्ति ने क्रोध के वशीभूत कुबड़े की पीठ पर जोर से लात जमाई तो उसकी कूबड़ अंदर धँसकर ठीक हो गई।

—कोई किसी को क्षति पहुँचाना चाहे और उससे ही सामने वाले व्यक्ति का काम सफल हो जाय तब।

—नुकसान वाले काम से फायदा हो जाय तब।

**गूबली रा जाया तौ घाड़किया ई होसी।** ३६७५

कुबड़ी के जन्मे तो बौने ही होंगे।

—बेडौल माँ-बाप के बेडौल ही बच्चे होते हैं।

—बुरे शिक्षक के विद्यार्थी अच्छे थोड़े ही हो सकते हैं?

**गूमड़ौ फूट्यौ नै वेदन मिटी।** ३६७६

फोड़ा फूटा और पीड़ा समाप्त।

दे.क.सं. ३१९६

**गू री ओडी रा ई सुगन मनाईजै।** ३६७७

गू की टोकरी के भी शकुन मनाये जाते हैं।

—गंदी-से-गंदी चीज की भी कुछ-न-कुछ सार्थकता होती है।

—दुनिया में ऐसा कोई अपदार्थ नहीं होता जिसकी कुछ भी उपयोगिता न हो।

**गू रौ गींडोळौ, गू सूं राजी।** ३६७८

गू का केंचुआ गू में ही खुश।

—हर व्यक्ति अपने परिवेश और अपने दायरे में संतुष्ट रहता है।

—प्रत्येक व्यक्ति की रुचि, सौंदर्य-बोध की अपनी समझ होती है और वह उसी में आनंद का अनुभव करता है।

**गू रौ भाई पाद नै पाद रौ भाई गू।** ३६७९

गू का भाई पाद और पाद का भाई गू।

—दो गंदे व्यक्तियों की तुलना करने पर।

—जब कोई दो व्यक्ति एक-से-एक बढ़कर बुरे या निकृष्ट हों।

**गू सूं गू थोड़ौ ई धुपै।** ३६८०

गू से गू थोड़े ही धुलता है।

—बुराई से बुराई खत्म नहीं होती।

—जब कोई भ्रष्ट व्यक्ति भ्रष्टाचार को समाप्त करने की बात करे तब।

—जब कोई नेता दूसरे नेता को लांछित करके उसे सुधारने की बात करे तब!

**गेंडा री खाल बिना ढाल कठै?** ३६८१

गेंडे की खाल के बिना ढाल कहाँ?

—शक्ति के बगैर संरक्षण नहीं हो सकता।

—भारी काम के लिए भारी साधनों की जरूरत होती है।

—लड़ाई के हथियारों की नाईं बचाव के उपाय भी अनिवार्य हैं।

**गेंडा री ढाल है।** ३६८२

गेंडे की ढाल है।

—जिस व्यक्ति में कष्टों की मार सहने की अदम्य क्षमता हो।

—दृढ़ व्यक्ति की प्रशंसा करते समय!

**गेडिया रळग्या ।** ३६८३

लाठी छिन गई ।

—किसी के हाथ से सत्ता छिन जाने पर।

—किसी व्यक्ति के अधिकार या उसका रुतबा समाप्त होने पर।

**गेडी रै किसी आंख व्है ।** ३६८४

लाठी के आँखें नहीं होती ।

—लाठी चलाने वाले को दिखता है पर लाठी तो अंधी होती है, वह निर्दोष, बालक, विधवा, पंडित और बुड्ढे को भी समान रूप से घायल करती है। चलाने वाले की समझ पर ही लाठी निर्भर करती है।

—सत्ता अंधी होती है चाहे वह राज सत्ता हो चाहे धन की सत्ता हो।

—न्याय अंधा होता है।

**गेबावू गोळी ।** ३६८५

छिपी हुई गोली ।

—जो धूर्त व्यक्ति छिपकर विश्वासघात करे।

—घातक व्यक्ति के लिए।

**गेबावू बात रौ साखी रांम ।** ३६८६

गुप्त बात का साक्षी राम ।

—गुप्त बात का कोई साक्षी नहीं होता।

—छिपी हुई बात का रहस्य भगवान जाने।

**गेला री झूंपड़ी रांम-रांम में जावै ।** ३६८७

राह की झोंपड़ी राम-राम में ही जाती है ।

—मार्ग पर झोंपड़ी बसी हो तो आते-जाते राहगीर राम-राम करते हैं, मालिक को अभिवादन का जवाब देना पड़ता है। कोई प्यासा राहगीर पानी माँगे तो पानी भी पिलाना पड़ता है। कभी-कभार परिजनों को खाना भी खिलाना पड़ता है। मालिक न सुचारु रूप से अपना काम कर पाता है और हानि उठाता है वह अलग से।

—लिहाज-लिहाज में आदमी को कई औपचारिकताएँ निभानी पड़ती हैं।

**गेलै बैवतां कुण थड्डो देवै ?** ३६८८

राह चलते कौन धक्का देता है ?

—सीधे रास्ते चलने पर कोई धक्का नहीं देता।

—सच्चाई व न्याय के पथ पर चलने वाले की ओर भला कौन अँगुली उठा सकता है ?

**पाठा : गेलै हालतां कुण ई खावणियौ कोनीं।**

सीधी राह चलने वाले को कोई खाने वाला नहीं।

**गेलै में हंगै अर घुरिया काढ़ै।** ३६८९

राह में हँगे और ठौर जताये।

—जो व्यक्ति गलती करने पर भी व्यर्थ रोब जमाये।

—कसूरवार खामखाह आँखें दिखाये तब।

**गैण में गिंडकां नै मजौ।** ३६९०

ग्रहण में कुत्तों की मौज।

—अँधियारे प्रशासन में भ्रष्ट व लफंगे मौज करते हैं।

—दूसरों का कष्ट गुंडों के लिए सुमंगल।

—अराजकता में समाज-कंटक लाभ उठाते हैं।

**गैण में थोरी फिरै ज्यां।** ३६९१

ग्रहण में थोरी की तरह भटकता है।

थोरी = एक अनुसूचित जाति।

—जो व्यक्ति पेट भरने के लिए दर-दर भटकता फिरे।

—जो व्यक्ति दूसरों के सहारे जीता हो।

**गैण रौ दांन, गंगा रौ सिनांन।** ३६९२

ग्रहण का दान, गंगा का स्नान।

आ.दे.क.सं.३७६४

**गैणौ भूखां रौ ढाकण अर धाप्यां रौ मांडण।** ३६९३

गहना भूखों का सहारा और अघायों का सिंगार।

—आभूषण दुर्दिन में काम आते हैं और अच्छे दिनों में शोभा बढ़ाते हैं।

—गहनों के दुहरे लाभ की नसीहत इस उक्ति में वर्णित हुई है।

—संचित की हुई कोई भी संपत्ति विपदा के समय सहारा देती है और सुख के समय उस में इजाफा करती है।

**गैब रौ धन अैब में जाय।** ३६९४

परोक्ष धन ऐब में नष्ट होता है।

—काला धन काली करतूतों में ही समाप्त हो जाता है।

—मुफ्त का माल टेढ़ी राह चला जाता है।

**गैर-गडी रे भाई गैर-गडी, सासू ल्हौड़ी बहू बडी।** ३६९५

गड़बड़ी रे भैया गड़बड़ी, सास छोटी और बहू बड़ी।

—परिवार का छोटा व्यक्ति बदनामी में आगे निकल जाय तब।

—बड़े भैया सो बड़े भैया, छोटे भैया सुभान-अल्लाह।

**गैल-गैल री घोळ-मथोळ।** ३६९६

तरह-तरह की घन-चकरी।

—हर व्यक्ति की अपनी-अपनी उलझन होती है।

—अपनी-अपनी सनक।

**गैलागूंगां रा गांव किसा न्यारा बसै!** ३६९७

मूर्खों के गाँव कौन-से अलग बसते हैं!

—सबके साथ बस्ती में मूर्ख भी बसते हैं।

—मूर्खों का कोई अलग से पता-ठिकाना नहीं होता।

—मनुष्य जैसा दिखने पर भी जिस में मनुष्य के लक्षण न हों।

मि.क.सं.५१

**गैला नै किसौ घर बारै काढ़ीजै ।** ३६९८

पगलों को कौन-सा घर से बाहर निकाला जाता है ।

—नासमझ व्यक्ति को भी बर्दाश्त करना पड़े तब ।

—इच्छा के बावजूद जैसे-तैसों के साथ मिल-जुलकर रहना पड़ता है ।

**गैलां रा किसा न्यारा गांव व्है !** ३६९९

पगलों के गाँव कौन-से अलग होते हैं !

दे.क.सं.५१, ३६९७

**गैलां रा घर किसा रूंखां माथै हुवै ।** ३७००

पगलों के घर कोई पेड़ पर नहीं होते ।

दे.क.सं.५१, ३६९७

**गैलां री गमाई समझणां सूं नीं बावड़ै ।** ३७०१

पगलों की खोई समझदारों से नहीं लौटाई जा सकती ।

—मूर्खों के द्वारा कोई काम बिगड़ जाने पर कैसे भी समझदारों से वापस सुधारा नहीं जा सकता ।

—किसी भी काम को बिगाड़ना आसान है,पर बिगड़ जाने के बाद उसे सुधारना बहुत कठिन होता है ।

मि.क.सं.२२४९

**गैलां रै किसा घर ?** ३७०२

पगलों के कौन-से घर ?

—पागल को अपने-पराये का ध्यान नहीं रहता ।

—जो मूर्ख या बावरा घर के नफे-नुकसान में नहीं समझे ।

**गैलां रै माथै किसा सींगड़ा व्है !** ३७०३

पगलों के सिर पर सींग थोड़े ही होते हैं !

पाठा : **कालां रै माथै किसा सींगड़ा व्है** ! बावरों के सिर पर सींग थोड़े ही होते हैं ।

दे.क.सं.३२१७,३२७९

**गैला कुत्ता हिरणां लारै दौड़ै।** ३७०४

बावरे कुत्ते हरिणों के पीछे भागते हैं।

—कैसा भी तेज दौड़ने वाला शिकारी कुत्ता हरिण को नहीं पकड़ सकता,इसलिए जो कुत्ता पागल होगा,वही उसका पीछा करेगा।

—असंभव काम के लिए बेकार कष्ट उठाना।

—जो व्यक्ति बेकार की आकांक्षा में खोया रहे।

**गैला गांव बाळै मती के भलां चितास्यौ !** ३७०५

पगले गाँव मत जलाना कि ठीक याद दिलाई !

—नासमझ व्यक्ति को सीख देने से वह ज्यादा बिगड़ता है।

—किसी बुरे काम के लिए मना करने पर जो सिरफिरा व्यक्ति उलटा वही काम करने की जल्दबाजी करे।

—मूर्ख को सीख देना केवल व्यर्थ ही नहीं, घातक भी होती है।

**गैला गिंडक हिरणां लारै दौड़ै, नीं तौ हिरण हाथै आवै अर नीं कोई गिंडक हेटौ पड़ै।** ३७०६

नासमझ कुत्ता हिरणों का पीछा करे, न तो हिरण हाथ आयें और न कुत्ता नीचे गिरे।

—मूर्ख व्यक्ति ही अपनी क्षमता के परे काम करने की ख्वाहिश रखता है।

—कोई साधन-हीन व्यक्ति बड़ा काम करना चाहे तब।

—मूर्ख व्यक्ति परिणाम के बारे में सोचे बिना ही जोखिम उठाता है।

मि.क.सं.३७०४

**गैली अर वळै छींयां।** ३७०७

पगली और तिस पर उन्माद।

—किसी व्यक्ति को दुहरी खराबी लग जाय तो फिर क्या पूछना ?

—जिस व्यक्ति के पागलपन की कोई सीमा न हो।

**गैली बिणियांणी समझणौ जायौ, समझणी रेबारण गैलौ जायौ।** ३७०८

मूर्ख बनियाइन ने समझदार जाया, समझदार रेबारिन ने पगला जाया।

—परिवेश, वातावरण और संस्कारों पर ही सूझ-बूझ अथवा बुद्धि निर्भर करती है। अच्छा वातावरण उपलब्ध होने पर अभिज्ञता बढ़ती है और संकुचित वातावरण में जानकारी सीमित रहती है। बनिये के बच्चे को सब प्रकार की साधन-सुविधाएँ और व्यापार का परिवेश मिलता है और गड़रिये के बच्चे को भेड़ें, लाठी व जंगल। उस वातावरण में उसकी समझ बढ़ने की बजाय कुंद होने लगती है। गड़रिये की फकत उम्र बढ़ती है, अक्ल नहीं! इस उक्ति का यही छिपा संकेत है।

**गैली रांड रा गैला ई पूत।** ३७०९

पगली राँड के पगले ही पूत।

—जिस परिवार के सभी सदस्य सिरफिरे या सनकी हों।

—बिगड़ी हुई औलाद पर कटाक्ष।

मि.क.सं.२२५०

**गैली रांड सासरै जावै ई कोनीं अर जावै तौ पाछी आवै ई कोनीं।** ३७१०

पगली औरत ससुराल जाती ही नहीं और यदि जाये तो वापस आये ही नहीं।

—औंधी जिद करने वाले व्यक्ति पर कटाक्ष।

—जो व्यक्ति अपनी सनक में खोया रहे और जिसका हर काम अव्यावहारिक हो।

**गैली सगळां सूं पैली।** ३७११

पगली सबसे पहिले।

—जो नासमझ व्यक्ति किसी भी गलत काम में सबसे आगे रहे।

—मूर्ख व्यक्ति अपनी काबलियत पर विचार किये बिना ही हर किसी काम में कूद पड़ता है—उसके लिए।

**पाठा : गैली गांव सूं पैली।** पगली गाँव से पहले।

**गैली सासरै गई अर गई।** ३७१२

पगली ससुराल गई और गई।

—जो बावरा अपने बावरेपन को अंत तक न छोड़ना चाहे।

—मूर्ख व्यक्तियों की सनक का कुछ पता नहीं चलता।

मि.क.सं.३७१०

**गैलै आळी पांखड़ी।** ३७१३

बावरे वाली पाँखें।

**संदर्भ-कथा :** पागल की धुन का क्या ओर-छोर! एक बार एक पगले ने मोर की बहुत-सारी पाँखें इकट्ठी कीं। जब मोर पाँखों से उड़ता है तो मनुष्य क्यों नहीं उड़ सकता? पगले की धुन पर कैसा अंकुश! वह किसका कहा माने? एक दिन दोनों ओर बहुत-सारे मोर-पंख बाँधकर वह कें-कें करता हुआ छत से नीचे कूदा। यह सोचकर कि उड़ता हुआ धीरे से जमीन पर उतर जाएगा। पर ऐसा हुआ नहीं। और जो हुआ सो यह कि उसके हाथ-पाँव टूट गये। उड़ने की आशा में चलने से भी महरूम रह गया। दुनिया तो अपनी गति से चलती है, किसी पगले की धुन से नहीं।

—पागल व्यक्ति की सनक बड़ी घातक होती है।

**गैलौ अर वळै दारू।** ३७१४

पागल और फिर शराब।

—पागलपन के साथ नशा जुड़ जाय तो फिर क्या कसर।

—दुहरे अवगुण अत्यंत घातक होते हैं।

**गैलौ पूत पराया नै कमाय घालै।** ३७१५

पागल पूत पराये को कमाकर खिलाता है।

—पागल व्यक्ति की यही निशानी कि वह घरवालों की बजाय, दूसरों के लिए मेहनत करता है। अपनी समझ से नहीं, नासमझी के कारण।

—बावरे को बरगलाकर लोग उसका माल चट कर जाते हैं।

**गैलौ बांणियौ बांमण नै बूझै, आपरी दसा आपनै सूझै।** ३७१६

बावरा बनिया बामन को बूझे, अपनी दशा खुद को सूझे।

—अपनी ग्रह-दशा, अपनी आर्थिक स्थिति और अपना सुख-दुख बामन-ज्योतिषी की अपेक्षा स्वयं को भली भाँति अवगत है, फिर उसके प्रति व्यर्थ जिज्ञासा का क्या अर्थ ?

—परिस्थितियों का सामना करने पर ही उनका समाधान हो सकता है, ज्योतिषी की भविष्यवाणियों पर निर्भर रहना व्यर्थ है।

**गैलौ बेटौ वाभौजी कह्यौ जित्तौ ई आछौ।** ३७१७

पागल बेटे ने 'पिताजी' कहा जितना ही अच्छा।

—अयोग्य या नासमझ व्यक्ति के द्वारा लाभ पहुँचा उतना ही बहुत है।

—बावरे की तो अकिंचन समझदारी भी काफी होती है।

—बावरे की अप्रत्याशित समझदारी का बखान।

**गोईड़ा रै पाप सूं पींपळी बळै।** ३७१८

गोह के पाप से पीपल जलता है।

—ऐसी लोक-मान्यता है कि बादलों की बिजली तेजी से कड़ककर गोह पर गिरती है। और गोहें अमूमन पीपल की खोह में रहती हैं। बिजली की भीषण मार से गोह के साथ पीपल को भी जलना पड़ता है।

—दुष्ट व्यक्ति के कारण निरपराध को भी कष्ट उठाना पड़ता है।

**पाठा : गोह रै पाप पींपळी बळै।**

**गोकळ गांव रौ पेंडौ ई न्यारौ।** ३७१९

गोकुल गाँव की यात्रा ही अलग है।

—जिस व्यक्ति का रहन-सहन, आचरण या विचारधारा सबसे अलग हो।

—जिस व्यक्ति का मिजाज सबसे निराला हो।

पाठा : गोकळ रा तौ गेला ई न्यारा। गोकुल के तो रास्ते ही अलग हैं।

पूरी पंक्ति इस प्रकार है :

सुंदर कोऊ न जान सकै, यह गोकुल गांव को पैंडौ ई न्यारौ।

**गोकळ में रहसी जकौ राधै-गोविंद कहसी।** ३७२०

गोकुल में रहेगा, वह राधे-गोविंद कहेगा।

—आश्रित व्यक्ति को स्वामी की वंदना करनी ही पड़ती है ।

—मातहत मनुष्य की मजबूरी ।

**गोकळ सूं मथरा न्यारी ।** ३७२१

गोकुल से मथुरा भिन्न है ।

—असामान्य व्यक्ति के लिए ।

—जिस व्यक्ति का स्वभाव तथा उसके विचार किसी से मेल न खाते हों ।

**गोगौ गायौ नै गीतां रौ छेह आयौ ।**–व.५९ ३७२२

गोगा गाया और गीतों का अंत आया ।

गोगौ = प्रसिद्ध गोगादेव चौहान । ये बीकानेर राज्य में रतनगढ़ के ददोड़ा गाँव के ठाकुर जेंहवर के पुत्र थे । उनका विवाह राठौड़ पाबूजी की भतीजी केलणदे के साथ हुआ था । उन्होंने तत्कालीन दिल्ली के बादशाह शमसुद्दीन अल्तमिश के पुत्र रुकनुद्दीन फिरोजशाह के साथ भीषण युद्ध करके उसे परास्त किया । उस युद्ध में उनके दो भाई मारे गये थे । युद्ध से लौटने पर उनकी माँ ने भाइयों के मरने एवं उनके जीवित लौटने पर खूब धिक्कारा तो वे वापस रवाना हो गये और जीवनपर्यंत छिपकर रहे । भाद्रपद के शुक्ल पक्ष की नवमी को समस्त राजस्थान में उनकी तिथि मनाई जाती है । कहा जाता है कि इसी दिन एक युद्ध में वे वीरगति को प्राप्त हुए थे । उन्हें आज भी देवता के समान माना जाता है ।

—इन्हीं गोगादेव चौहान की प्रशस्ति का एक लोकगीत, जो सबसे अंत में गाया जाता है ।

—छोटे-बड़े व्यक्ति के यथायोग्य आदर-सत्कार के बाद कोई भी आयोजन समाप्त तो होता ही है ।

—अकिंचन व्यक्ति का भी जब स्वागत हो जाय तो फिर बाकी क्या बचा ?

**गोगौजी परड़ां इज रुखाळै ।** ३७२३

गोगदेव चौहान परड़ों की ही रक्षा करते हैं ।

परड़ = छोटे साँप की एक किस्म, जो काफी जहरीली होती है ।

—राजस्थान में गोगदेव चौहान की पूजा, नागपूजा का ही एक स्वरूप है । इनके नाम की 'ताँती' बाँधने पर, ऐसी मान्यता है कि साँप का जहर उतर जाता है । गोगदेव के अवतार-स्वरूप छोटे-बड़े साँपों को मारना निषिद्ध है ।

—जो बड़ा अधिकारी या नेता भ्रष्टाचारियों को प्रश्रय दे।

**गोगौ नै खेजड़ी गांव-गांव।** ३७२४

गोगदेव और खेजड़ी हर गाँव में।

दे.क.सं.३३८६

**गोगौ बडौ के रांम—के बडौ तौ है जकौ है पण सांपां सूं कुण बैर बसावै ?** ३७२५

गोगदेव बड़ा कि राम—बड़ा तो है सो ही है पर साँपों से कौन बैर बसाये ?

—दूसरे को बड़ा बताकर साँपों के देव गोगा से बैर मोल लेना आसान नहीं। नाराज होकर कहीं साँप कटवा दे तो ? इसलिए साफ-साफ न कहना ही बेहतर है। वरना कहाँ बेचारा गोगदेव और कहाँ राम ?

—दो बराबर के व्यक्तियों में एक की प्रशंसा करने पर जो व्यक्ति बदले की भावना रखे,उस बंदे के लिए।

—डर के मारे जिस व्यक्ति के प्रति वास्तविक राय प्रकट न की जा सके ?

**गोटीपणा मांये गोडा रगड़वा पड़े।**– भी.२०५ ३७२६

दोस्ती में घुटने रगड़वाने पड़ते हैं।

—मित्रता निभाने के लिए जोखिम का काम भी जरूरत पड़ने पर करना पड़ता है।

—दोस्ती के निमिंत्त त्याग करना भी जरूरी है।

—दोस्ती वही जो दुर्दिन में साथ दे।

**गोडां माथै घाट घड़ियौ है।** ३७२७

घुटनों पर घाट घड़ा है।

—जिस व्यक्ति ने अपने घुटनों के जोर पर सारा काम सफलता-पूर्वक किया हो।

—अत्यधिक अनुभवी व्यक्ति के लिए।

**गोडां सूदी खोदै जिणरै कड़ियां सूदौ त्यार।** ३७२८

घुटनों तक खोदे उसके लिए कमर तक तैयार।

—किसी दूसरे का थोड़ा अहित करने पर वापस उससे अधिक के लिए तैयार रहना चाहिए।

—बुराई के बदले बुराई मिलकर ही रहती है।

मि.क.सं. २८७०

**गोडां सूदौ राज।** ३७२९

घुटनों के बल पर राज्य।

—किसी बड़े व्यक्ति के सहारे का विश्वास, जिसके रहते रंचमात्र भी चिंतत होने की आवश्यकता महसूस न हो।

—पीठ पर किसी बड़े व्यक्ति का हाथ होने पर और क्या संबल चाहिए।

**गोडा तौ पेट सांम्ही ई निंवसी।** ३७३०

घुटने तो पेट की ओर ही झुकते हैं।

—अपना आत्मीय सभी को प्रिय होता है।

—अपने आदमी का लिहाज तो आता ही है।

—घरवालों को सभी लाभ पहुँचाना चाहते हैं।

**पाठा : गोडा पेट नै निमै।**

**गोत री गाळ भैंस नै ई खारी लागै।** ३७३१

गोत्र की गाली भैंस को भी बुरी लगती है।

—कैसे भी मूर्ख या नासमझ व्यक्ति को अपने कुटुंब की बुराई तो अखरती ही है।

—अपने परिवार के प्रति अपशब्द नादान-से-नादान व्यक्ति भी सुनना पसंद नहीं करता।

**पाठा : गोत री गाळ तौ भैंस नै ई नीं सुहावै।** गोत्र की गाली तो भैंस को भी नहीं सुहाती।

**गोद रौ छोरौ, राखणौ दोरौ।** ३७३२

गोद आये लड़के को रखना दूभर।

—पराया लड़का तो केवल स्वार्थ की खातिर गोद आता है। स्वार्थ पूरा न हो तो वह उस घर में क्यों रहना चाहेगा?

—स्वार्थ के रिश्ते में आत्मीयता नहीं होती।

**गोद हाळै नै छोड, पेट हाळै री आस करै।** ३७३३

गोदी वाले को छोड़कर, पेट वाले की आशा करना।

दे.क.सं.३१६१

**गोद्यां छोरौ, गांव ढिंढ़ोरौ।** ३७३४

गोद में छोरा, गाँव में ढिंढ़ोरा।

—पास रखी चीज को अनदेखा करके सर्वत्र खोजना।

—नासमझ व्यक्ति की घोर लापरवाही के प्रति संकेत।

**गोधा-गोधा आवड़ै, बांटां रौ खोगाळ।** ३७३५

साँडों की लड़ाई में झाड़ियों का विनाश।

दे.क.सं.३१४९

**गोफणियौ रौ गोफणियौ, साळगरांमजी रा साळगरांमजी।** ३७३६

फेंकने के लिए पत्थर-सा पत्थर और शालिग्राम-सा शालिग्राम।

—स्वार्थ का स्वार्थ और पूजा की पूजा।

—जो वस्तु दुहरे उपयोग में आती हो।

—जिस वस्तु को अनेक स्थानों में विभिन्न रूप से प्रयुक्त किया जा सकता हो। उस पूजनीय व्यक्ति के प्रति जो हर किसी को सलाह देने एवं छोटे-से-छोटा कार्य करने के लिए तैयार हो।

**पाठा : गोफणियौ रौ गोफणियौ नै ठाकुरजी रा ठाकुरजी।**

**गोबर गणेस।** ३७३७

गोबर गणेश।

—बुद्धू आदमी के लिए जिस में गोबर जितनी ही अक्ल हो।

—मिट्टी के लौंदे-सा अकर्मण्य एवं नासमझ व्यक्ति।

**गोबर में तौ गींडोळा ई जलमै।** ३७३८

गोबर में तो गिंडोले ही पैदा होंगे।

गींडोळौ = खाद या गोबर में पैदा होने वाला एक कीड़ा।

—गंदे आचरण वाला व्यक्ति तो गंदा काम ही करेगा ।

—जैसा वातावरण वैसा स्वभाव ।

—नीच व्यक्ति का लड़का तो नीचता ही करेगा ।

मि.क.सं.३६४७

**गोबर रा चांक्योड़ा, फाळ्या रा उघड़ै ।** ३७३९

गोबर से अंकित, जलाने पर ही उघड़ता है ।

—मवेशी के इलाज की खातिर गर्म लोहे से दागने की प्रक्रिया में पहले सही स्थान निर्धारित करके गोबर का निशान लगाया जाता है । फिर उस स्थान पर गर्म लोहा दागने से निशान साफ उघड़ता है ।

—जब किसी बड़े घात की शुरुआत सुहाती बात से हो ।

—जिस कुटिल व्यक्ति की कुटिलता का आरंभ में कुछ भी पता न लगे ।

**पाठा : गोवर रा लाग्या जठै कुस रा लागसी ।**

जहाँ गोबर का निशान लगा है, वहाँ गर्म छड़ से दागा जाएगा ।

**गोबर रौ कूड़ियौ नै काठ री तरवार ।** ३७४०

गोबर का घड़ा और काठ की तलवार ।

दे.क.सं.२५३८

**गोरिये रै पाखती धोळियौ बंधीजै, वरण न ल्यै पण लखण तौ ल्यै ।**–व.२० ३७४१

गोरे के पास सफेद बँधे, रंग न ले पर लच्छन तो लेगा ।

—संगति का प्रभाव अवश्यंभावी होता है ।

—कुसंगति की प्रताड़ना ।

मि.क.सं.२२५२

**गोरियौ गाय में नीं बळद में ।** ३७४२

गोरा न गाय में न बैल में ।

—जो व्यक्ति किसी भी श्रेणी में न हो ।

—सर्वथा निकम्मे या पुंसत्वहीन व्यक्ति के लिए।

**गोरियौ टीबांणै चढ़ियौ रहसी।**–व.१८७ ३७४३

गोरा बैल टीले पर चढ़कर ही रहेगा।

—दुर्व्यसनी अपना दुर्व्यसन पूरा करके ही मानता है।

—जो व्यक्ति अपनी मनमानी करके ही चैन की साँस लेता हो।

**गोलां रै कदै खाटी छास होसी ?**–व.३०४ ३७४४

दोगलों के कभी खट्टी छाछ होगी ?

—दोगलों के घर में कभी इफरात नहीं हो सकती।

—दोगले कभी सुख की जिंदगी बसर नहीं कर सकते।

**गोला किण रा गुण करै, औगणगारा आप।** ३७४५

गोले किसका भला करें जब स्वयं अवगुणों से लिथड़े हों।

—दोगले मनुष्य से किसी अच्छे काम की आशा ही नहीं रखनी चाहिए।

—जो व्यक्ति स्वयं बुराइयों की खान हो उससे किसी के भले की उम्मीद रखना ही बेकार है।

**गोला किण रा गोठिया, पातर किण री नार।** ३७४६

किसका साथी दोगला, वेश्या किसकी नारी।

—जब तक स्वार्थ होता है, तब तक ही वेश्या व दोगला व्यक्ति प्रेम का दिखावा करते हैं। स्वार्थ पूरा होते ही इनकी आँख बदल जाती है।

इसी आशय का दूसरा दोहा इस प्रकार है—

**गोला किण रा गोठिया, जोगी किण रा मिंत।**
**वेस्या किण री अस्तरी, तीनूं मिंत कुमिंत॥**

**गोला नै वाळा रा सात मत्ता।** ३७४७

दोगले व नाले के सात मत।

—जो व्यक्ति नाले की तरह अपनी गति बदलता रहे।

—जो व्यक्ति बात-बात में अपनी राय बदले।

**गोळान मूंडे गण्नू दिये , दन्या मूंडे हूं दिये ।**–भी.२०६ ३७४८

बिलोवने के मुँह पर गरणा दिया जा सकता है, दुनिया के मुँह पर नहीं ।

गण्नू = गरणा = पानी छानने का कपड़ा,जिससे बिलोवने का मुँह भी ढका जाता है ।

—मंथन करते समय बिलोवने से झरड़-मरड़ की आवाजें उठती हैं,उन्हें रोकने के लिए तो उसका मुँह बाँधा जा सकता है,पर दुनिया का मुँह क्योंकर ढका जाय,कौन ढके ? दुनिया तो राजा की निंदा करते भी नहीं चूकती ।

—बुरे काम करने पर बदनामी तो होगी,उसे रोका नहीं जा सकता ।

**गोली गबरू पराया धोवती फिरै , आपरा धोवती लाजां मरै ।** ३७४९

मूर्ख दासी पराये कपड़े तो धोती है पर अपने धोने में शर्म महसूस करती है ।

—जो व्यक्ति दूसरों का तो कैसा भी हलका काम खुशी-खुशी करे पर अपने घर का काम करते लज्जा का अनुभव करे ।

—घर में थोथी हेकड़ी और बाहर गुलामी करने वाले व्यक्ति के लिए ।

**गोळी गई पून में , भूटका सूं कांम ।** ३७५०

गोली गई मलद्वार में धमाके से काम ।

—जो व्यक्ति असली ध्येय के बहाने हो-हल्ला पसंद करते हों ।

—दूसरों का काम बिगड़े तो बिगड़े,तमाशबीन तो केवल तमाशा देखने में मजा लेते हैं ।

—खामखाह खिलवाड़ पसंद करने वाले व्यक्ति पर कटाक्ष ।

**गोळी दारू रा जोर सूं जावै ।** ३७५१

गोली बारूद के जोर से जाती है ।

—जो व्यक्ति दूसरों की ताकत का मोहताज हो ।

—जिसे पराई ताकत गतिशील बनाये वह भला कितनी दूर चल सकता है ?

**गोळी माथै गोळी नीं ढबै ।** ३७५२

गोली पर गोली नहीं ठहरती ।

—दो कुटिल व्यक्तियों में मेल नहीं हो सकता ।

—जो व्यक्ति एक-दूसरे से बढ़कर हों,वे एक दूसरे की बात नहीं मानते ।

**गोळी रौ घाव भरै पण बोली रौ नीं ।** ३७५३

गोली का घाव भर जाता है, पर बोली का नहीं ।

—कड़वे शब्दों की मार गोली से भी ज्यादा गहरी होती है और जिसका घाव उम्र भर नहीं मिटता ।

—मनुष्य को चाहिए कि वह किसी को अपशब्द न कहे ।

—बोली के घाव को लेकर राजस्थानी का एक सोरठा बहुत ही मार्मिक है, जिसे कृपाराम जी खिड़िया ने अपने स्वामीभक्त सेवक 'राजिया' को संबोधित करके अनेक सोरठे लिखे हैं:

**पाटा पीड़ उपाव, तन लाग्यां तरवारियां ।**

**वहै जीभ रा घाव, रत्ती न औखद राजिया ॥**

(तन पर लगे तलवारों के घाव तो मरहम व उपचार से भर जाते हैं, पर जीभ के तीखे प्रहारों का कोई उपचार नहीं, कोई औषधि नहीं)

**गोलै रौ गरु जूत ।** ३७५४

दोगले का गुरु जूता ।

—निकृष्ट व्यक्ति पिटने पर ही सीधा होता है ।

—दोगले व्यक्ति को जूते के अलावा कैसी भी सीख समझ में नहीं आती ।

**पाठा : गोलै रै सिर ठोलौ ।** दोगले के सिर पर मार ।

**गोलौ अर मूंज पराये बळ आवसै ।** ३७५५

गुलाम और मूँज दूसरों के बल पर फूलते हैं ।

—गुलाम स्वामी के बल पर ऐंठता है और मूँज पानी के बल पर ।

—दूसरों की ताकत पर कूद-फाँद करने वाले अधम व्यक्ति पर कटाक्ष ।

**गोलौ किण रौ गाय किण री ?** ३७५६

गुलाम किसका, गाय किसकी ?

दे.क.सं.३४९२

**गोहरवै इज गोहूं कीधा ।**–व.३२१ ३७५७

गोहर में ही गेहूँ बोये ।

दे.क.सं.३४१७

**गोह रा जाया खुरदरा इज व्है।** ३७५८

गोह के बच्चे खुरदरे ही होते हैं।

—जैसा वंश वैसी संतान।

—जैसी बुरी माँ,वैसी ही बुरी औलाद।

मि.क.सं.१३५३,३५९२

**गोह री मौत आवै जणा, भांबी रा खालड़ा खड़बड़ावै।** ३७५९

गोह की मौत आती है तब भाँबियों के चमड़े बजाती है।

दे.क.सं.३४७९

**गोहूं धूळीयौ, पूतक मूळीयौ।**–व.३८८ ३७६०

गेहूँ सूखे में, जन्म मूल में।

**टिप्पणी** : गेहूँ रबी की फसल है। इसके बोने के दो तरीकें हैं। पहिला—जुते हुए खेत में गेहूँ छाँटने के पश्चात् क्यारियाँ बनाकर सिंचाई की जाती है। समय पाकर गेहूँ के साथ-साथ खर-पतवार भी उगने लगती है,जो गेहूँ की फसल को बढ़ने नहीं देती। इस प्रकार गेहूँ बोने की प्रक्रिया को 'धूळिया' यानी सूखे में बोना कहते हैं। इससे पैदावार अच्छी नहीं पकती। किसान घाटे में रहता है। इसी प्रकार मूल-नक्षत्र में जन्मी संतान भी अहितकारी सिद्ध होती है। गेहूँ बोने की दूसरी प्रक्रिया 'दाबड़िया' कहलाती है। यानी जुते हुए खेत की सिंचाई करने के बाद सही समय पर उसकी फिर जुताई होती है,ताकि खरपतवार उखड़ जाये। तब बोया हुआ गेहूँ अधिक बढ़ता है। पैदावार अच्छी होती है। ऐसी कहावत भी है—गेवूं दाबड़ियौ अर दूध राबड़ियौ। दाबड़िये गेहूँ की नाई ओटा हुआ दूध अधिक स्वादिष्ट होता है।

—अहितकारी प्रयत्न से मनुष्य को हमेशा बचते रहना चाहिए।

पाठा : **गेवूं दाबड़ियौ अर दूध राबड़ियौ।**

**गौरी छोड दे पण धणी नीं छोडै।** ३७६१

ग्वाला छोड़ दे, पर स्वामी नहीं छोड़ता।

—लँगड़ी-लूली या बीमार गाय को ग्वाला छोड़ सकता है पर मालिक नहीं छोड़ सकता।

—स्वामी के दिल में अपनी चीज के प्रति जो दर्द होता है वह पराये के दिल में कहाँ ?

—जो अपना होता है, वह आत्मीयता का मोह नहीं छोड़ सकता।

**गौरी में गुण व्है तौ ढोलौ धमीड़ा क्यूं लेवै ?** ३७६२

गोरी में गुण हों तो पति सीना क्यों पीटे ?

—स्त्री शालीन और समझदार हो तो घर में शांति रहती है। पति प्रसन्न रहता है।

—घर में अमन-चैन गुणवती गृहिणी पर ही निर्भर करता है।

**गौरी में गुण व्है तौ परणियौ क्यूं छोडै ?** ३७६३

पत्नी में गुण हों तो पति क्यों छोड़े ?

—कुछ-न-कुछ बुराई न हो तो कोई किसी का परित्याग नहीं करता।

—बिना अपराध के कोई किसी को दंडित नहीं करता।

—अवगुण का फल तो आखिर मिलता ही है।

पाठा : **गौरी में गुण होसी तौ ढोलौ आपै ई आय मिळसी।**

पत्नी में गुण होंगे तो पति अपने-आप आकर मिलेगा।

**ग्रहण रौ दांन, गंगा रौ सिनांन।** ३७६४

ग्रहण का दान, गंगा का स्नान।

—चंद्र ग्रहण व सूर्य ग्रहण में दिये हुए दान का पुण्य गंगा के स्नान की नाईं उतना ही महत्त्वपूर्ण है।

—उपरोक्त दोनों बातों का पुण्य सर्वोपरि होता है।

**ग्रह बिना घात नीं, भेद बिना चोरी नीं।** ३७६५

घर बिना घात नहीं, भेद बिना चोरी नहीं।

—घर के आदमी का इशारा हुए बिना विश्वासघात नहीं होता और भेद के बिना चोरी नहीं होती।

—घर की फूट से हमेशा बचने की कोशिश करना ही श्रेयस्कर है।

**ग्रहियौ जित्तै नीं आथमै।** ३७६६

ग्रहण रहते अस्त नहीं होता।

—यह एक वैज्ञानिक सत्य है कि सूर्य या चंद्र,ग्रहण से मुक्त होने पर ही अस्त होते हैं उसके पहले नहीं।

—प्रकृति या ईश्वर महापुरुषों को दोहरे कष्ट से उत्पीड़ित नहीं करते।

**ग्यांनी भोगै ग्यांन सूं, मूरख भोगै रोय!** ३७६७

ज्ञानी भोगे ज्ञान से, मूर्ख भोगे रोय!

—देर-सबेर सांसारिक कष्ट सभी को भोगने पड़ते हैं। ज्ञानी उन्हें ज्ञान के सहारे शांतिपूर्वक सहन कर लेते हैं तथा मूर्ख व्यक्ति रो-धोकर उसका प्रदर्शन करते हैं।

—अपनी-अपनी समझ व धारणा के अनुसार दुख की प्रतीति होती है।

**ग्यांनी सूं ग्यांनी मिळै, करै ग्यांन री बात।** ३७६८
**मूरख सूं मूरख मिळै के जूतौ के लात॥**

ज्ञानी से ज्ञानी मिले, करे ज्ञान की बात।
मूरख से मूरख मिले, या जूता या लात॥

—मूर्ख व ज्ञानी अपने व्यवहार से ही तत्काल पहिचाने जा सकते हैं।

**पाठा: ग्यांनी सूं ग्यांनी मिळै, बात, बात अर बात।**
**गधा सूं गधौ मिळै, लात, लात अर लात॥**

**ग्याभण गाय अर ऊभी खेती रौ कीं बेरौ नीं।** ३७६९

ग्याभिन गाय और खड़ी खेती का कुछ पता नही चलता।

—ग्याभिन गाय बछड़ा लाये या बछड़ी या छन भी जाये,पहिले कुछ भी पता नहीं चलता। खड़ी खेती हाथ लगे-न-लगे इसका भी पता नहीं चलता। हाथ लगने पर ही सब्र होता है।

—भविष्य के लाभ या हानि की पहिले भनक नहीं पड़ती।

दे.क.सं.१४१५

**ग्यारस रौ कड़्दौ बारस नै।** ३७७०

एकादशी की कसर बारस को।

—'कड़दौ' के दो अर्थ होते हैं, एक : किसी द्रव-पदार्थ के नीचे तली में जमने वाला कीच। दूसरा : सोने-चाँदी के साथ मिलाया जाने वाला एक विजातीय धातु। हिंदी अनुवाद में कोई उपयुक्त शब्द न मिलने से 'कसर' का प्रयोग किया है, जो उचित है।

—इस संबंध में दो धारणाएँ प्रचलित हैं, एक तो यह कि एकादशी के दान को पाप समझकर न तो कोई दान लेने आता है और न कोई दान देता ही है। इस कारण दूसरे दिन द्वादशी पर उसकी कमी पूरी की जाती है। दूसरी धारणा यह है कि एकादशी के उपवास की कसर दूसरे दिन अधिक खाकर पूरी की जाती है।

—इधर की कसर उधर निकालने पर।

—ऐसी बचत की क्या सार्थकता जिसके लिए बाद में अधिक खर्च करना पड़े।

**ग्वार दळतां बसती न रहै तौ मा कांईं कीज !**–व.१९ ३७७१

गवार दलते समय बस्ती न रहे तो हम क्या करें !

**संदर्भ-कथा :** किसी एक ठाकुर का कुँअर अव्वल-दर्जे का लंपट था। वह गढ़ में बेगार की खातिर आईं औरतों से छेड़छाड़ करता था। मौका मिलने पर सहवास का आनंद भी उठा लेता था। शराब के नशे का यह गुण भी कम नहीं कि कामोत्तेजना के समय छूआछूत की भावना उससे दूर रहती थी। अस्तबल की लीद साफ करने, आँगन का फूस बुहारने, अनाज दलने-पीसने के लिए बारी-बारी से भाँबियों की बहुएँ या लड़कियाँ आती रहती थीं। एक बार ग्वार दलने के लिए एक सुंदर लड़की आई। सुध-बुध बिसरे कुँअर ने पीछे से आकर लड़की का हाथ पकड़ लिया पर दुर्भाग्य से लड़की कुछ अल्हड़ और दबंग थी। हाथ छुड़ाकर ठाकुर के पास शिकायत करने पहुँच गई। तब-तक कुँअर ने नशे से प्रभावित होकर एक अच्छा-सा बहाना खोज लिया। लड़की के ओझल होते ही खुद चाकी चलाने बैठ गया। ठाकुर ने आते ही उसे खूब लतेड़ा कि इस तरह की मनमानी से रैयत गाँव छोड़कर चली जाएगी, समझे ? आखिर कितनी बार समझाने से तुम समझोगे ? कुँअर शर्मिंदा तो अवश्य हुआ। पर नशे की प्रेरणा से तत्काल एक बहाना सूझ गया। चाकी चलाते-चलाते ही सफाई दी कि ग्वार दलते-दलते भी बस्ती न रहे तो मैं क्या कर सकता हूँ ? आप देख ही रहे हैं कि मैं तो उस बेगारिन की सहायता करने आया था। और वह घबराकर आपके पास दौड़ी चली आई। मेरा कुछ कसूर हो तो बताएँ। हाथ पकड़े बिना मैं उसे उठाता भी क्योंकर ?

तब ठाकुर ने रूखे स्वर में कहा, 'यदि तुम बेगारिनों की मदद ही करना चाहते हो तो अब साल भर तक तुम्हीं सारा अनाज दलोगे-पीसोगे। समझे? तभी तुम्हें रैयत का दुख-दरद समझ में आएगा।'

—कैसी भी बहाने-बाजी से किसी भी अन्यायी के दुष्कृत्यों पर आवरण नहीं डाला जा सकता।

—अन्याय की अपनी बोली होती है, वह जाने-अजाने प्रकट हो ही जाती है।

# घ

**घटत-बढ़त री छांवळी ।** ३७७२

घटती-बढ़ती छाया ।

—सूर्य के साथ-साथ कभी छाया इधर तो कभी छाया उधर ।

—समय रूपी छाया कभी एक-सी नहीं रहती ।

—मनुष्य जीवन में कभी सुख तो कभी दुख ।

**घट तोला मिठ बोला ।** ३७७३

कम तोलने वाला मीठा बोलता है ।

—कपटी मनुष्य विनम्र होता है ।

—दूसरों को ठगने वाला बड़ा व्यवहार-कुशल होता है ।

**घड़ती-घड़ती बाड़ में वड़गी ।** ३७७४

गढ़ते-गढ़ते बाड़ में छिप गई ।

—जब कोई व्यक्ति अपने रूप, व्यक्तित्व और गुणों की बड़ाई करता है तो कहता है कि उसे गढ़ते-गढ़ते विधाता बाड़ में छिप गई, फिर कोई दूसरा उसकी होड़ करने वाला जन्मा ही नहीं ।

—अपने मुँह से अपनी बड़ाई करने वाले पर कटाक्ष ।

—महान व्यक्तित्व की बड़ाई के लिए भी यह उक्ति काम में आती है ।

**घड़वा वाळा अे दोरुं नीं आय्यू, तोय हूं दोरुं आवे ?**– भी. २०७ ३७७५

गढ़ने वाले को कष्ट नहीं हुआ तो तुम्हें क्या कष्ट है ?

—किसी विकलांग को देखकर कोई मुँह बनाये या उसका उपहास करे तब यह उक्ति कही जाती है कि जब गढ़ने वाले ईश्वर को तनिक कठिनाई नहीं हुई तो तुम्हें क्या परेशानी है ?

—कोई भी विकलांग प्राणी प्रकृति या ईश्वर की देन है, उसकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

**घड़ा जैड़ी ठीकरी, मां जैड़ी डीकरी।** ३७७६

घड़े जैसी ठीकरी, माँ जैसी डीकरी।

डीकरी = बेटी।

—माँ के सदृश ही भली-बुरी बेटी होती है।

—बच्चों के गुण-अवगुण उनके माँ-बाप पर ही निर्भर करते हैं।

पाठा: **घड़ै सरीसी ठीकरी, मां सरीसी डीकरी**। घड़े के समान ठीकरी, माँ के समान डीकरी। **घड़ै गैल ठीकरी, मां गैल डीकरी**। घड़े की नाईं ठीकरी माँ की नाईं डीकरी।

**घड़ा माथै मटकी नीं चढ़ै।** ३७७७

घड़े पर मटकी नहीं चढ़ती।

—घड़े का मुँह छोटा होता है और मटकी का चौड़ा, इसलिए घड़े पर भरी मटकी धरने से पड़ने का खतरा है। इसी प्रकार यदि औरत पुरुष पर हावी हो जाये तो वह घर टूटे बिना नहीं रह सकता।

—औरत को माथे पर नहीं चढ़ाने की सीख।

**घड़ा सूं घड़ौ नीं भरीजै।** ३७७८

घड़े से घड़ा नहीं भरा जा सकता।

—दो तंग-दिल व्यक्ति एक-दूसरे की मदद नहीं कर सकते।

—उपयुक्त साधन के बगैर कोई काम संपन्न नहीं हो सकता।

**घड़िया ठांव भागै रा भागै।** ३७७९

गढ़े बासन फूटते-ही-फूटते हैं।

—मिट्टी के बासनों की तरह मिट्टी की काया भी नाशवान है।

—इस संसार में हर जन्मे हुए प्राणी की मृत्यु अवश्यंभावी है।

—मृत व्यक्ति के परिजनों को सांत्वना देने के लिए।

**घड़ीक में मासौ, घड़ीक में तोळौ।** ३७८०

पल में मासा, पल में तोला।

—जिस व्यक्ति का चित्त बिल्कुल स्थिर न हो।

—जो व्यक्ति एक पल में अपने को बड़ा समझकर दूसरे ही पल छोटा समझने लगे, उसके लिए।

—जो व्यक्ति निहायत छोटी खुशी पर फूला न समाये और उतने ही छोटे दुख पर एकदम निराश हो जाए।

**घड़ी-घड़ी रौ रंग न्यारौ।** ३७८१

घड़ी-घड़ी का रंग न्यारा।

—किसी भी घड़ी का रंग कभी एक-सा नहीं रहता।

—भगवान, कुदरत की लीला व मनुष्य का स्वभाव एवं भाग्य पल-पल बदलता रहता है।

**घड़ी-घड़ी लाडू कुण ई नीं देवै।** ३७८२

बार-बार लड्डू कोई नहीं देता।

—एक बार माँगने पर लड्डू भी दिया जा सकता है, पर बार-बार माँगने पर तो बासी रोटी भी नहीं मिलती।

—झूठी आस लगाये किसी बड़े आदमी का मुँह जोहने पर।

**घड़ी नो घड़ूल्यो पेदा नहीं करवो।**—भी. २०८ ३७८३

घड़ी में बासन नहीं गढ़ना चाहिए।

—हर काम संपन्न करने के लिए उसका समय निर्धारित है, जल्दबाजी करने से काम बिगड़ता है।

—मनुष्य को चाहिए कि वह प्रत्येक काम धैर्य व शांति के समय वांछित समय में करे।

**घड़ी पलक नी ते खबर नी , ने करे काल नी वात !**– भी.२०९ ३७८४

घड़ी पलक की भी खबर नहीं और करे कल की बात !

आ.दे.क.सं.३७८५

**घड़ी-पलक री खबर कठै , करै काल री बात ।** ३७८५

घड़ी-पल की भी खबर कहाँ और तू करे कल-परसों की बात ।

—अगले पल क्या गुजरने वाला है,किसे भी पता नहीं,फिर कल के प्रति आशा जगाये रखना व्यर्थ है ।

—कोई भी महत्त्वाकांक्षा पल में ध्वस्त हो जाती है,फिर कल तो बहुत दूर है ।

**घड़ी-पलकां रौ मेळौ ।** ३७८६

घड़ी-पल का मेला ।

—दुनिया की हाट-बाजार का यह मेला क्षण-भंगुर है जो आँख मुँदते ही लुप्त हो जाता है ।

—सम्मिलन के सुख से आखिर तो एक दिन बिछुड़ना ही है ।

**घड़ी में घड़ियावळ थोड़ी ई बाजै ।** ३७८७

एक घड़ी में सारा दिन थोड़े ही समाप्त हो सकता है ।

—जो व्यक्ति अपनी जल्दबाजी में समय को ही समेट लेना चाहता हो ।

—समय तो अपनी रफ्तार से ही व्यतीत होता है,उसके लिए उतावली करने में कोई सार नहीं ।

—अत्यधिक उतावले व्यक्ति के लिए ।

**घड़ी री नगटाई , आखै दिन री पतसाही ।** ३७८८

घड़ी की नकटाई, सारे दिन की बादशाही ।

—मान-मर्यादा को ताक में रखकर जो व्यक्ति उलटे-सीधे भ्रष्ट कामों के फलस्वरूप मौज उड़ाये ।

—नैतिक मान्यताओं की झिझक से मुक्त,कुकर्मों के द्‌वारा जो व्यक्ति ऐयाशी का जीवन बिताये ।

—बेशर्म,बेहया व्यक्ति पर कटाक्ष ।

**घड़ी री सोभा, ऊमर रा रोभा।** ३७८९

घड़ी की शोभा, उम्र भर का रोना।

—ब्याह, मृत्युभोज या अन्य पारिवारिक अथवा सामाजिक अनुष्ठानों में नामवरी के लिए बेइंतहा खर्च करने से घड़ी भर तो शोभा होती है, फिर कर्ज चुकाने के लिए उम्र भर रोना पड़ता है।

—झूठी प्रतिष्ठा या झूठी शान के लिए मनुष्य को आवश्यकता से अधिक खर्च नहीं करना चाहिए।

—अपव्यय की निंदा।

**घड़ी रौ ई भरोसौ कोनीं अर नांव अमरचंद।** ३७९०

घड़ी का भी भरोसा नहीं और नाम अमरचंद।

—न मालूम किस क्षण कब मौत आ जाय, कुछ पता नहीं, तब अमरचंद नाम की इससे बड़ी विडंबना और क्या हो सकती है?

—नश्वरता के बीच मनुष्य के द्वारा स्थायीत्व का प्रयास एक उपहास के सिवाय और क्या है—चाहे वह नाम के बहाने हो या स्मारकों के बहाने।

—नाम के विपरीत लक्षण।

पाठा : **घड़ी री ई किण नै ठा?** घड़ी का भी किसे पता है?

मि.क.सं.४४२

**घड़ै कूंभार, बरतै संसार।** ३७९१

घड़े कुम्हार, बरते संसार।

—एक व्यक्ति की मेहनत से जब अगणित मनुष्यों का लाभ हो।

—कलाकृति का सृष्टा तो एक ही होता है, पर उसका आनंद लेने वाले बहुतेरे।

—ब्रह्मा की नानाविध सृष्टि का सभी उपयोग करते हैं।

पाठा : **घड़ै कूंभार, भरै संसार।** घड़े कुम्हार, भरे संसार।

**घड़ै जांणै लाख लागी।** ३७९२

घड़े पर जैसे लाख लगी हो।

लाख = फूटे घड़े पर पानी को रोकनें के लिए चपड़ी की तरह पिघलाकर लाख लगाई जाती है, जिस से एक बूँद भी पानी नहीं रिसता।

—जब कोई चतुर व्यक्ति एक ही बात में किसी वाचाल को चुप कर दे।

—किसी रामबाण औषधि से दस्त की शिकायत एकदम बंद हो जाय तब।

—जब कोई बिगड़ी हुई बात पुख्ता तौर पर सुधर जाए तब।

**घड़ै सरीखौ मोती।** ३७९३

घड़े के सदृश मोती।

—निर्मल पानी व मोती की तरह आबदार व्यक्ति के लिए।

—गंभीर व प्रतिष्ठित व्यक्ति की सराहना के लिए यह उक्ति कही जाती है।

**घड़ै सुनार, पैरै नार।** ३७९४

घड़े सोनार, पहिने नार।

—मेहनत करने वाले को ही उसकी मेहनत का फल मिले यह जरूरी नहीं।

—अपने-अपने भाग्य के अनुसार ही प्रत्येक व्यक्ति को सुविधा मिलती है। केवल परिश्रम से ही कोई उसका अधिकारी नहीं हो जाता।

**घड़ै हौ घिलोड़ी बणगी थेग।** ३७९५

घड़ रहा था घिलोड़ी, बन गया कलश।

घिलोड़ी = रोजमर्रा के काम की खातिर घी रखने का निहायत छोटा बर्तन।

—जब किसी काम की शुरुआत एकदम छोटे से हो पर बाद में धीरे-धीरे वह बहुत बड़े काम का रूप धारण कर ले तब।

—काम शुरू करने के बाद उसपर नियंत्रण रख पाना संभव नहीं।

**घड़ौ फूट्यां गिड़गौ ई हाथ आवै।** ३७९६

घड़ा फूटने पर मुँह की किनार ही हाथ लगती है।

—बड़ी चीज खोने पर उसके बदले नाम-मात्र की वस्तु हाथ लगे तब।

—किसी बड़े व्यक्ति का संपर्क टूटने पर छोटे व्यक्ति से मित्रता करनी पड़े तब।

**घण कतवारी नै नागी बाळी ।** ३७९७

अधिक कातने वाली को नंगी जलाई ।

—भाग्य की विडंबना कि जीवन पर्यंत ढेरों सूत कातने वाली को नंगा जलाया गया ।

—जब किसी व्यक्ति को उसके अथक-परिश्रम का रंच-मात्र भी फल न मिले ।

—जरूरत से ज्यादा कुशलता का प्रदर्शन आखिर कष्ट-प्रद ही होता है ।

**घण खावू नै थोड़ौ कमावू कदै ई नीं बावड़ै ।** ३७९८

ज्यादा खाने वाला व थोड़ा कमाने वाला कभी पनप नहीं सकता ।

—आमदनी से अधिक खर्च करने वाला कभी सुखी नहीं हो सकता ।

—अपव्ययी हमेशा कष्ट उठाता है ।

**घण गोलां ई कोटड़ी सूनी ।** ३७९९

चाकर बहुतेरे फिर भी घर सूना ।

—एक मालिक के अभाव में चाहे जितने नौकर रहें, घर सूना लगता है ।

—घर की चिंता सिर्फ मालिक को होती है, नौकर तो ऊपरी मन से काम का दिखावा भर करते हैं ।

—मालिक ही घर का असली शृंगार होता है, उसीसे घर की शोभा रहती है । घर की बहबूदी के लिए मात्र वही जिम्मेवार है ।

**घण गोलां घर ऊजड़ै ।** ३८००

अधिक नौकरों से घर उजड़ता है ।

—अपने काम के लिए दूसरों पर निर्भर रहना घातक है ।

—अनियंत्रण व स्वालंबन के अभाव में घर का नाश निश्चित है ।

पाठा : **घणा गोला घणौ घर बिगाड़ै** । ज्यादा नौकर घर ज्यादा बिगाड़ते हैं ।

**घण चालै सो थाकै घण बोलै सो पिछताय ।** ३८०१

अधिक चले सो थके, अधिक बोले सो पछताय ।

—किसी भी काम की अति बुरी होती है ।

—निरर्थक बकवास से आदमी का गुबार मिटता है ।

**घण जायां कुळ हांण घण बूठां कण हांण ।** ३८०२

अधिक नफरी कुल का नाश, अधिक वर्षा अन्न का नाश ।

—मनुष्य जैसी बेजोड़ मूरतें भी ज्यादा हों तो हानि, वर्षा जैसी लाभप्रद चीज भी ज्यादा हो तो हानि ।

—परिवार के सदस्यों की संख्या बढ़ने से जमीन व जायदाद बँटने लगती है और खर्च निरंतर बढ़ता रहता है । और अकाल की भाँति अतिवृष्टि भी क्षति पहुँचाती है ।

—निश्चित सीमा के दायरे में ही सब चीजें लाभप्रद होती हैं ।

पाठा : **घण जायां घण ओळबा, घण बरस्यां कण हांण ।**

ज्यादा संतान ज्यादा उलाहना, ज्यादा वर्षा अन्न का नाश ।

**घण जायां कुळ मेहणी, घण बूठां कण हांण ।**

ज्यादा संतान कुल की बदनामी, ज्यादा बारिश अन्न का नाश ।

**घण जीतै हो लछमणा ।** ३८०३

ज्यादा हैं वे जीतेगे लछमन ।

—ज्यादा हाथ सुनिश्चित जीत ।

—संख्या में भारी तो सब-कुछ भारी ।

पाठा : **घण जीतै, सूरमा हारै ।** बहुलता की जीत, शूरमा की हार ।

**घण जीतै सदा ई हड़वंत ।** ज्यादा सदा जीतेंगे हनुवंत ।

**घण जीते बळ हारै ।** बहुलता की जीत, बल की हार ।

**घण तैरू री रांड व्है ।** ३८०४

बड़े तैराक की पत्नी विधवा होती है ।

—पानी के भँवरों में छिपे खतरों से कभी-न-कभी तो कैसा भी तैराक धोखा खा जाता है ।

—जहाँ कुशलता वहाँ हौसला । जहाँ हौसला वहाँ खतरा और जहाँ खतरा वहाँ मौत ।

**घण दूधाळ नै पाडी री मां ।** ३८०५

अधिक दुधार और पाड़ी की माँ ।

—अधिक दूध के साथ भैंस यदि पाड़ी लाये तो दुहरा लाभ ।

—जब सभी बातों का सुयोग अच्छा हो ।

**घण दूधाळ री तौ लात ई आछी।** ३८०६

अधिक दुधार की तो लात भी अच्छी।

—लाभ हो तो किसी की लात भी खाना बुरा नहीं।

—हितैषी की तो डाँट-फटकार भी सही जा सकती है।

—स्वार्थ पूरा हो तो कुछ भी बर्दाश्त किया जा सकता है।

**घण फूलौ सोईजणौ, डाळ-पांन सूं जाय।** ३८०७

बहु फूला सहजन, डार-पात से जाय।

—अहंकार पतन का मूल है।

—घमंड करने वाले का सिर नीचा होता ही है।

**घण बिचाळै हथोड़ौ बावै।** ३८०८

घन के बीच हथौड़े की ठकठक।

—बड़े आदमियों की बात में टाँग अड़ाने वाले के लिए।

—जो व्यक्ति मौका मिलते ही मिलती मारे।

**घण हाथां रसोई नीं सुधरै।** ३८०९

अधिक हाथों से रसोई नहीं सुधरती।

—जिस काम में कुशलता अनिवार्य है—वहाँ केवल हाथों की गिनती से पार नहीं पड़ता।

—प्रवीण आदमी से सुधरने वाली बात में यदि अधिक व्यक्ति पंचायती करें तो वह बिगड़ती ही है।

**घण हेजाळू रा टाबर नै नीं राखणौ।** ३८१०

अति ममतामयी के बच्चे को नहीं रखना।

—अति ममता पाया हुआ बच्चा इतराता है। किसी दूसरे के पास आते ही रोने लगता है। बेहद जिद्दी होता है। बात-बात में रूठता है, ऐसे बच्चे का मन बहलाने की चेष्टा करना व्यर्थ है, उलटे रुलाने का ही उलाहना मिलता है।

**घणां दाड़ा गलका कीदा भण खरां खोटा ना पार आज हैं।**–भी. २१२ ३८११

वहुत दिन तक माल खाया, पर खरे-खोटे का पता आज ही चलेगा।

—किसी दूसरे के बूते पर खाने-पीने और पहिनने की मौज करने वाले को जरूरत के समय ही पहिचाना जाता है कि उसमें माद्दा क्या है ?

—किसी व्यक्ति के जरिये हरदम लाभ उठाने वाले से वापस कुछ अपेक्षा की जाय तब यह उक्ति कही जाती है ।

**घणां री चोट हीरौ इज झेलै ।** ३८१२

घन की चोट हीरा ही झेलता है ।

—शस्त्रों का प्रहार वीर पुरुष ही बर्दाश्त कर सकता है ।

—आदर्श व्यक्ति में कष्ट झेलने की अदम्य क्षमता होती है ।

**घणां रौ मूंडौ धूड़ सूं ई नीं भरीजै ।** ३८१३

अधिक व्यक्तियों का मुँह धूल से भी नहीं भरा जा सकता ।

—एक या दो संतान का पालन-पोषण घी-शक्कर से भी किया जा सकता है,पर अधिक संतान हो तो उसे रूखा-सूखा खिलाना भी असंभव है ।

—अत्यधिक आवादी का पेट भरना आसान काम नहीं है ।

**घणा कागां माळवौ ई मूंघौ ।** ३८१४

अधिक कौवों से मालवा भी महँगा हो जाता है ।

—राजस्थान के पश्चिमी भाग में अकाल पड़ने पर लोग अपने मवेशी लेकर मालवा जाया करते हैं । वहाँ घास व अन्न की बहुतायत रहती है । पर जरूरत से ज्यादा लोग पहुँच जाएँ तो वहाँ भी कमी पड़ सकती है ।

—अधिकता हर काम के लिए बुरी होती है ।

—हर याचक की पूर्ति भला कौन कर सकता है ?

**घणा खाया नै घणा ई उडाया !** ३८१५

खूब खाये और खूब ही उड़ाये !

—कोई व्यक्ति इतना ही कहकर भेद को छिपाये रखे तो सुनने वालों को पता ही न चले कि उसने क्या खाया और क्या उड़ाया । वास्तव में उसने खूब चने खाये और खूब छिलके उड़ाये । पर अधूरी बात से भ्रम बना रहता है ।

**घणा ग्या ने थोड़ा रेग्या है ।**–भी.२१० ३८१६

बहुत चला गया और बहुत कम बचा है ।

—बहुत सारा समय बीत गया और बहुत थोड़ा बाकी रह गया है ।

—सारी उम्र कितना ही दुःख सहा, अब बाकी थोड़े बचे समय की चिंता व्यर्थ है, यह भी देखते-देखते समाप्त हो जाएगा ।

—मनुष्य को चाहिए कि वह बचे हुए समय को सर्वोपरि प्राथमिकता दे और उसे अधिक-से-अधिक उपादेय बनाये ।

**घणा चोरां चोरी मूंघी कोनीं ।** ३८१७

अधिक चोर हों तो चोरी महँगी नहीं ।

—ज्यादा आदमियों के बीच का घाटा सहज ही बर्दाश्त किया जा सकता है ।

—अधिक व्यक्तियों के बीच की आफत को बाँट-बूँटकर झेला जा सकता है ।

**घणाजी घणा भूंडा ।**– भी.२११ ३८१८

ज्यादा हों उतने ही बुरे ।

—अधिक आदमियों की भीड़ काम बिगाड़ती है ।

—प्रवीण व्यक्ति एक ही अच्छा और अकुशल ज्यादा भी बुरे ।

**घणा जीवौ ज्यां घणा जोवौ ।** ३८१९

ज्यादा जीओ त्यों ज्यादा देखो ।

—बढ़ती उम्र के साथ अनुभव की समृद्धता जुड़ती रहती है । और नये अनुभवों का नया ही आनंद होता है ।

—जीने का आनंद व अनुभव कभी निःशेष नहीं होता ।

**घणा ढांढा'र घणा ढूंढा, देवाळा रा कूढ़ा ।** ३८२०

अधिक ढोर व अधिक मकान, दिवाले की खान ।

—जरूरत से अधिक मवेशियों की व्यवस्था न होने के कारण व अधिक मकानों की नियमित मरम्मत नहीं होने की वजह से नुकसान असंदिग्ध है ।

—बहुतायत हर चीज की बुरी होती है ।

**घणा नाड़ा तोड़्या जेरा घरान आलो बांध्यो ।**– भी.२१३ ३८२१

बहुत नाड़ियाँ तोड़ीं तब घर का कुछ प्रबंध हुआ ।

—परिश्रम करने से ही घर की स्थिति सुधरती है ।

—अथक मेहनत के बिना कुछ भी प्राप्त नहीं होता । जमकर पसीना बहाने से ही कमाई होती है ।

**घणा नै घणौ कळेस ।** ३८२२

बहुलता को बहु क्लेश ।

—बहुलता को बरकरार रखने के लिए हथकंडे करने पड़ते हैं, अतएव परेशानियाँ उठाना लाजिमी है ।

—बहुतायत के झंझट भी बड़े होते हैं ।

**घणा बिना धक जावै, थोड़ा बिना नीं धकै ।** ३८२३

अधिक के बिना तो चल जाता है, थोड़े के बिना नहीं चलता ।

—मनुष्य के परिप्रेक्ष्य में अधिक की तो कोई सीमा ही नहीं है । हजार,लाख,करोड़ और अरब, खरब भी अधिक की सीमा का अतिक्रमण नहीं कर सकते । सामान्य अथवा गरीब व्यक्ति के लिए अधिक के बिना तो जीवन भर चल सकता है,लेकिन थोड़े के बिना एक घड़ी भी नहीं चल सकता । कितनी सहज और सरल कहावत है पर अनुभव के समृद्ध ज्ञान से सराबोर । ऊँचे-से-ऊँचे दर्शन का ज्ञान भरा है,इसमें ।

**पाठा : घणा टाळ सर जावै, थोड़ा टाळ नीं सरै ।**

**घणा मांमां रौ भांणैज भूखां मरै ।** ३८२४

अधिक मामों का भानजा भूखों मरता है ।

—अधिक लोगों के भरोसे वाला काम कभी पूरा नहीं होता ।

—जिस व्यक्ति के अधिक चाहने वाले हों तो वह अकसर मुगालते में रहता है ।

—साझे का काम कभी नहीं सुधरता ।

—निश्चित या पुख्ता जिम्मेवारी बगैर गफलत स्वाभाविक है ।

**पाठा : घणा घरां रौ पावणौ भूखां मरै ।** अधिक घरों का अतिथि भूखों मरता है ।

**घणा मिनखां घणौ पंपाळ।** ३८२५

ज्यादा मनुष्यों का ज्यादा प्रपंच।

—जितने ज्यादा मनुष्य होंगे, उतनी ही ज्यादा समस्याएँ होंगी। और ज्यादा समस्याएँ होने पर ज्यादा बखेड़ा होता है।

—हर मनुष्य को खुश रखना असंभव है, इसलिए यह अंतहीन क्लेश कभी समाप्त नहीं हो सकता।

**घणा मीठा में कीड़ा पड़ै।** ३८२६

अधिक मीठे में कीड़े पड़ते हैं।

—अत्यधिक घनिष्ठता कभी-न-कभी टूटती है।

—अधिक सुख से भी अरुचि होने लगती है।

**घणा में घण पड़ै।** ३८२७

अधिक अनाज में घुन लगता है।

—अधिक संचय में ही विनाश के कीटाणु सन्निहित रहते हैं।

—मनुष्य को अपनी संचय-वृत्ति पर नियंत्रण रखना चाहिए।

**घणा मोडा मंडी उजाड़ै।** ३८२८

अधिक साधु मठ बिगाड़ते हैं।

—अधिक कार्यकर्ताओं द्वारा कैसी भी बड़ी संस्था का विनाश निश्चित है।

—अधिक प्रतिनिधि या सदस्य किसी भी आयोजन के लिए घातक हैं।

—हर चीज निश्चित अनुपात में ही ठीक रहती है।

**घणा रंग रे दासी रा जाया! बाप तौ छट्ठी में ईं नीं देख्यौ।** ३८२९

शाबाश रे दासी के पूत! बाप तो छटी में भी नहीं देखा।

—कुलटा की संतान के पिता का कुछ भी पता हो तो वह अपने जन्मदाता का मुँह देखे!

—कोई अवैध संतान अपनी कुटिलताओं के प्रति अहंकार करे तब!

**घणां री ऐब, ऐब नीं गिणीजै।** ३८३०

अधिक व्यक्तियों के ऐब, ऐब नहीं माने जाते।

—एक व्यक्ति कोई बुरा काम करे तो दूसरों की निगाह में वह बुरा समझा जाता है। पर यदि सारा समाज ही किसी बुरे काम में शामिल हो तो वह बुरा नहीं माना जाता।

—एक व्यक्ति हत्या करे तो वह हत्यारा, पर युद्ध में जूझती सेना खून की नदियाँ बहा दे तो वह प्रशस्ति के योग्य मानी जाती है।

**घणा वाळा अे घणा रोये।**– भी. २१४ ३८३१

ज्यादा वाले ज्यादा रोते हैं।

—जिसके पास ज्यादा धन है, वह और अधिक धन पाने की चेष्टा करता है। धन के साथ उसकी आवश्यकताएँ बढ़ती रहती हैं। चिंता व परेशानियाँ बढ़ती रहती है।

—धन की प्यास बुझती नहीं, अधिक प्रज्वलित होती है।

**घणा वाळा अे घणों दुख।**– भी. २१५ ३८३२

ज्यादा वाले को ज्यादा दुख।

—ज्यादा धन की हिफाजत के लिए ज्यादा चौकसी चाहिए, वरना चोरी जाने में कितनी देर लगती है!

—अधिक धन वाले को चोरों की चिंता, डकैतों की चिंता।

**घणा हाथ रळियावणा, घणा मूंडा बळियावणा।** ३८३३

अधिक हाथ पूजनीय, अधिक मुँह निंदनीय।

—निठल्ला व्यक्ति कुछ भी काम न करके केवल खाने पीने व मौज करने के लिए जीता है, वह प्रताड़ना व तिरस्कार के योग्य है।

—कर्मठ व्यक्तियों से ही दुनिया की शोभा है, अकर्मण्य व्यक्ति केवल भार-स्वरूप हैं।

**घणा हेत टूटण नै, मोटी आंख फूटण नै।** ३८३४

अधिक प्रेम टूटने को, बड़ी आँख फूटने को।

—गाढ़ी प्रीत कभी-न-कभी मामूली बात से ही टूट जाती है। बड़ी आँख कभी-न-कभी अवश्य फूटती है।

—हर अच्छी चीज के साथ कुछ-न-कुछ दोष जुड़ा ही रहता है।

**घणी अछवाई खाबड़े पड़ै।** ३८३५

अधिक सफाई गड्ढे में गिरती है।

—अतिरेक स्वच्छता बरतने वाली (गाय) गड्ढे में गिरती है, क्योंकि वह साफ पानी के लिए गहरे उतरती है।

दे.क.सं.११९

**पाठा : घणी चतराई चीकलै पड़ै।** अधिक चतुरता कीच में पड़ती है।

**घणी खांच्यां तूटै।** ३८३६

अधिक तानने से टूटती है।

—रस्सी या रबड़ अधिक खींचने से टूटता है।

—एक सीमा से अधिक किसी भी बात पर अड़े रहना घातक है।

—किसी भी बात के लिए ज्यादा हठ करना उचित नहीं।

**पाठा : घणी तांण्यां तूटै।**

**घणी गई थोड़ी रही सो ई जावणहार।** ३८३७

अधिक गई थोड़ी रही, सो भी जावनहार।

—उम्र जो बीत गई सो तो बीत ही गई और जो शेष है वह भी निःसंदेह बीत रही है।

—बढ़ती उम्र के साथ जीवन के प्रति उदासीनता या निष्क्रियता आने पर इस उक्ति द्वारा आत्म-तुष्टि मिलती है।

—जिस व्यक्ति ने दुखों के बीच उम्र काटी हो वह इस उक्ति का प्रयोग करता है।

**घणी चतराई घणी भूंडी।**–भी.२१६ ३८३८

ज्यादा चतुराई ज्यादा बुरी।

—अति हर बात की बुरी होती है, चाहे वह चतुराई क्यों न हो।

—ज्यादा चतुराई औरों को कष्ट पहुँचाती है। अखरती है।

**घणी चतराई चूल्हे में पड़ै।** ३८३९

अधिक चतुराई चूल्हे में गिरती है।

—जरूरत से ज्यादा चतुराई दिखाने पर रसोई बिगड़ती है।

—अपनी कुशलता के प्रति अत्यधिक सतर्क रहने वाले व्यक्ति के लिए हिदायत।

मि.क.सं.११९, ३८३५

**घणी तीन-पांच आछी कोनीं।** ३८४०

ज्यादा तीन-पाँच अच्छी नहीं।

—अधिक हुज्जत करना उचित नहीं।

—अधिक हेकड़ी दिखाने वाले व्यक्ति के लिए।

**घणी दायां पेट फोड़ै।** ३८४१

अधिक दाइयाँ पेट फोड़ती हैं।

—आवश्यकता से अधिक व्यक्तियों से काम बिगड़ जाने की संभावना रहती है।

—एक ही पेशे के अधिक व्यक्ति अपनी-अपनी कुशलता के दावे में नुकसान कर डालते हैं।

पाठा : **घणी दायां जापौ बिगाड़ै।** ज्यादा दाइयाँ प्रसव बिगाड़ती हैं।

**घणी दायां पेट रौ पोखाळौ करै।**

**घणी दाळिदराई दुख दियेज हैं।**– भी.२१७ ३८४२

अधिक दरिद्रता दुख देती है।

—अकर्मण्यता ही दरिद्रता का मूल कारण है।

—लोक-मानस दरिद्रता को सहन कर सकता है, पर आलस्य को नहीं।

**घणी बूवां बटाउवां खातर थोड़ी व्है।** ३८४३

अधिक बहुएँ राहगीरों की खातिर थोड़े ही होती हैं।

—घर में कोई चीज अधिक हो तो वह किसी को देने के लिए नहीं होती।

—दूसरे की चीज पर अधिकार जतलाने वाले व्यक्ति के लिए।

**घणी मैणत सूं गधौ व्है जावै।** ३८४४

अधिक मेहनत से गधा हो जाता है।

—काम के लिए दिन भर कष्ट उठाने वाला गधा सबकी निगाह में घृणा का पात्र है तो फिर जरूरत से ज्यादा अथक परिश्रम करने वाले मनुष्य का भी क्यों सम्मान हो? वह मनुष्य होते हुए भी गधा है।

—मनुष्य को मेहनत के साथ आराम व मनोरंजन की खातिर अवकाश भी रखना चाहिए।

**घणी समझ धूड़ चाटै।** ३८४५

अधिक समझ धूल चाटती है।

—जरूरत से ज्यादा अक्लमंद व्यक्ति अवश्य धोखा खाता है।

—किसी काम विशेष के संदर्भ में ही बुद्धि या समझ का महत्त्व है। उससे अलग हटी हुई अतिरिक्त समझ सर्वथा घातक ही होती है।

**घणी सराई खीचड़ी दांतां लागी।** ३८४६

अधिक सराही खिचड़ी दाँतों पर चिपकी।

—प्रशंसा करने पर जो व्यक्ति गले पड़ जाय तब!

—ओछा मनुष्य प्रशंसा को झेल नहीं पाता।

**घणी सैणप में किरकिर पड़ै।** ३८४७

अधिक सज्जनता में किरकिर पड़ती है।

—जरूरत से ज्यादा भलमनसाहत हानिप्रद है।

—अत्यधिक आदर्श या नेक व्यक्ति अंत में दुख ही पाता है। या थककर हार मान लेता है।

**घणुं आळे ते मेळू क्यां, थोडुं आळू ते जाडुं क्यां।**–भी.२१८ ३८४८

ज्यादा दे तो धरूँ कहाँ, कम दे तो जाऊँ कहाँ।

—जैसी भी वर्तमान स्थिति है, वह सर्वथा पर्याप्त है, उससे न अधिक चाहिए और न कम।

—अधिक धन की लालसा ही संसार में सभी विपत्तियों की जड़ है।

—कबीर के कथन से इस उक्ति का कितना साम्य है :

**साँई इतना दीजिए, ज्या में कुटुम समाय।**
**मैं भी भूखा ना रहूं, साधु न भूखा जाय॥**

**घणुं बोले ने घणुं खाये ज्यो काम थोडुं करे।**–भी.२१९ ३८४९

ज्यादा बोले और ज्यादा खाये वह काम थोड़े ही करता है।

—बहुत बकवास करने वाला और बहुत खाने वाला आलसी होता है।

—मनुष्य के लिए यही उचित है कि वह कम खाये और कम बोले।

**घणै नांणै ई सेर धांन अर थोड़ै नांणै ई सेर धांन।** ३८५०

अधिक पूँजी भी सेर अनाज और थोड़ी पूँजी भी सेर अनाज।

—अधिक संचय करके भी मनुष्य को आखिर क्या चाहिए—केवल रोटी व कपड़ा।

—मनुष्य की आवश्यकताएँ तो सीमित हैं फिर अतिरिक्त लालसाओं की क्या सार्थकता ?

—कंजूस की संचय-वृत्ति के प्रति कटाक्ष।

**घणै मुंहडां खीर नीं घालीजै।** ३८५१

अधिक मुँह हों तो खीर नहीं खिलाई जा सकती।

—अधिक संतान हो तो उनका ठीक भरण-पोषण नहीं हो सकता, न उचित शिक्षा ही दी जा सकती है।

—ज्यादा मुँह हों तो खीर क्या रोटी भी नहीं खिलाई जा सकती।

**घणो करे, थोडुं करे आपणे-आपणे घेरनू बोज पूरी पाड़े बीजू कोनी पाड़े।**–भी. २२० ३८५२

ज्यादा करे, थोड़ा करे, अपने-अपने घर का बोझ वही उठाता है, दूसरा नहीं।

—हर व्यक्ति अपने घर की जिम्मेवारी स्वयं उठाता है, कोई दूसरा सहयोग नहीं देता।

—अपने घर के अच्छे-बुरे की चिंता, घर के मुखिया को ही रहती है। दूसरों की चिंता से पार नहीं पड़ता और दूसरा चिंता करे भी क्यों ? क्या उसका अपना घर नहीं है।

**घणो गाजे जो थोडुं वरे।**–भी.२२१ ३८५३

ज्यादा गरजे वह थोड़ा बरसता है।

—बढ़-बढ़कर बातें करने वाला काम कम करता है।

—जो अपने मातहतों पर अधिक रुआब गाँठता है, वह भीतर से कमजोर होता है।

मि.क.सं.३३०९

**घणो हमझणो धूळ खाये।**–भी.२२२ ३८५४

ज्यादा समझदार धूल चाटता है।

—अधिक होशियारी से ज्यादा गफलत होती है।

—ज्यादा सावधानी रखने वाला अधिक भूल करता है।

**घणौ ई रातौ ओढ्यौ अर तातौ खायौ !** ३८५५

खूब सुहाग मनाया और गरमा-गरम खाया !

—यह उक्ति दुधारी है, दोनों ओर काम आती है—खुशहाल संतुष्ट औरत के लिए और दुखी औरत के लिए जो अपने पति पर कटाक्ष करती है कि तुम्हारे पीछे आकर बढ़िया कपड़े पहिने और उम्दा भोजन किया ! ब्याज-स्तुति ।

**घणौ कूदै सो घणौ पड़ै ।** ३८५६

अधिक कूदने वाला अधिक गिरता है ।

—बैठा हुआ व्यक्ति तो गिरने से रहा । जो उछल-फाँद करता है, वही गिरता है ।

—हथकंडे करने वाले व्यक्ति का पतन होता ही है ।

—थोथी हेकड़ी वाले की पोल खुलकर ही रहती है ।

**घणौ खाय ज्यूं घणौ मरै ।** ३८५७

ज्यादा खाये सो ज्यादा मरे ।

—ज्यादा खाने वाला और अधिक खाने के लिए मरता है ।

—अच्छी आमदनी वाला और बड़ी आमदनी के लिए तरसता रहता है ।

—जिस व्यक्ति के मन में भौतिक लालसाओं की भूख कभी शांत न हो ।

**घणौ खावूं नीं कुबेळा जावूं ।** ३८५८

न अधिक खाऊँ और न बेवक्त बाहर जाऊँ ।

**संदर्भ-कथा** : एक सेठानी लोटा लेकर घड़ी रात ढले गाँव से बाहर निपटने के लिए गई । शरीर पर सोने के काफी आभूषण थे । एक चोर इसी ताक में था । जबरदस्ती उसका गहना छीनना चाहा । समझदार सेठानी ने तुरंत उपाय सोच लिया । धीरे-से बोली—मैं तो स्वयं कई दिन से यही बाट देख रही थी । यदि इतने गहनों से ही तेरा मन भर जाय तो अपने हाथों खोलकर देती हूँ । पर सेठजी की सारी माया के साथ तू मुझे ले जाने को तैयार है तो दो घड़ी की मोहलत दे । बूढ़े सेठ के साथ मेरी सोने-सी काया नष्ट हो रही है । अंधे को क्या चाहिए—दो आँखें । चोर तो कहते ही मान गया । तब सेठानी ने विस्तार-पूर्वक युक्ति बताई कि उसका नाम 'समझी' है । आधी रात के समय वह सारे गहने व हीरे-मोती लेकर झरोखे में बैठी मिलेगी । चोर के दुबारा 'समझी ए समझी !' का नाम तीन-चार मर्तबा पुकारने पर वह चुपचाप सारी संपत्ति लेकर हवेली से बाहर निकल आएगी । फिर चोर जाने और उसका काम जाने ।

चोर की खुशी का कोई पार न रहा। सपनों के किले बनाता हुआ वह निर्धारित स्थान पर पहुँचते ही सहमते स्वर में आवाज देने लगा—समझी ए समझी !

'समझी' भी अच्छी तरह तैयार होकर बैठी थी। झरोखे से बाहर मुँह निकालकर कहने लगी—समझी रे भाई समझी, न तो ज्यादा खाऊँ और न कुवेला बाहर जाऊँ। फिर तेवर बदल कर कर्कश स्वर में चोर को घुड़की पिलाई—चुपचाप चलता बन, नहीं तो बेभाव की मार पड़ेगी।

सेठानी की बात समझते ही चोर के सपनों का किला एक क्षण में ध्वस्त हो गया। और दूसरे ही पल वह सेठानी को भागता नजर आया।

—समय पर सतर्कता बरतने से कोई भी आदमी कैसी भी आफत से छुटकारा पा सकता है।

—गलतियों से ही समझदार आदमी सबक सीखता है।

—हाथ लगी माया को छोड़कर जो व्यक्ति अदृष्ट की लालसा रखता है, उसे अंत में पछताना पड़ता है।

**घणौ खोटौ है।** ३८५९

बहुलता बुरी है।

—संचय की सार्थकता तभी है जब वह जरूरतों की सीमा न लाँघे।

—संचय की प्रवृत्ति महा घातक है।

**घणौ गाजै सो बरसै थोड़ौ।** ३८६०

अधिक गरजे सो थोड़ा बरसे।

दे.क.सं.३३०९, ३८५३

**घणौ घी थांभा रै चोपड़ण सारू नीं व्है।** ३८६१

अधिक घी थंभों पर चुपड़ने के लिए नहीं होता।

—कोई भी चीज अधिक हो तो दुरुपयोग के लिए थोड़े ही होती है।

—संचित किया हुआ धन दूसरों को लुटाने के लिए नहीं होता।

**पाठा : घणौ घी भींतां रै लगावण सारू नीं व्है।**

ज्यादा घी दीवारों पर लगाने कि लिए नहीं होता।

दे.क.सं.३८४३

**घणौ डायौ खपचा में पड़ै।** ३८६२

अधिक चतुर आफत में फँसता है।

डायौ = समझदार, सरल, चंट, धूर्त, चालाक।

—चालाकी अपनी सीमा में ही संगत है, सीमा पार करने से हर संभव खतरे की गुंजाइश रहती है।

—अत्यधिक चंट व्यक्ति धोखे में आकर रहता है।

मि.क.सं. ११९, ३८३९

**घणौ दूध किसौ बाड़ में ढोळीजै।** ३८६३

अधिक दूध बाड़ में गिराने के लिए नही होता।

दे.क.सं. ३८६१

**घणौ धन किसौ बारै उछाळीजै।** ३८६४

अधिक धन कौन-सा बाहर उछालने के लिए होता है।

दे.क.सं. ३८६१

**घणौ धांन ईली खावै अर पींचै जद पांणी निसरै।** ३८६५

अधिक अनाज इल्ली खाये, और मसलने पर पानी निकले।

—अधिक खाना कोई गौरव की बात नहीं है।

—अधिक खाने वाले पर कटाक्ष।

—अधिक खाना ताकत की पहिचान नहीं है।

मि.क.सं. ११५८

**घणौ पड़्यां असवार हुवै।** ३८६६

अनेक बार पड़ने पर ही सवार होता है।

—अनुभव की ठोकरें खाया हुआ व्यक्ति ही होशियार होता है।

—पराजय ही विजय की मंजिल तक आगे ले जाती है।

—असफलताओं से निराश नहीं होना चाहिए।

**घणौ बट दियां गुड्डी पड़ै।** ३८६७

ज्यादा बटने से गाँठ पड़ती है।

—अधिक ऐंठने से गाँठ पड़ती है।

—आपसी मन-मुटाव से ग्रंथि पड़ती है।

—हेकड़ी और मित्रता दोनों साथ नहीं निभती।

**घणौ भुसै जकौ खावै कोनीं।** ३८६८

अधिक भोंकने वाला काटता नहीं।

—जो कुत्ता ज्यादा भोंकता है वह काटता नहीं।

—ज्यादा बकवास करने वाला व्यक्ति लड़ने से घबराता है।

—चिल्लाने वाला व्यक्ति कम घातक होता है।

**घणौ लडायोड़ौ टाबर इतरै।** ३८६९

अधिक दुलार की संतान बिगड़ती है।

—दुलार की जगह दुलार और डॉट-फटकार की जगह डाँट-फटकार करने से ही बच्चों का सम्यक विकास होता है।

**घणौ लड़ै सो सूरमौ नीं बाजै।** ३८७०

अधिक लड़े वह शूरवीर नही कहलाता।

—हरदम किसी से लड़ते रहना वीरता की बजाय बुराई का ही लक्षण है।

—जो व्यक्ति उचित स्थान व उचित समय पर लड़े वह बहादुर है।

**घणौ लोभ गळौ वढ़ावै।** ३८७१

अधिक लोभ गला कटवाता है।

—केवल लोभ की खातिर लोभ करना प्राण-घातक है।

—अत्यधिक लोभी मनुष्य का अंत बुरा ही होता है।

**पाठा : घणौ लोभ पाप रौ मूळ।** अधिक लोभ पाप का मूल।

**घणौ वित्त घणौ लोभ।** ३८७२

अधिक संपत्ति अधिक लोभ।

—अजीब विडंबना कि जिसके पास अधिक धन होता है वही अधिक लोभी होता है।

—संचय करने की मनोवृत्ति का कभी अंत नहीं होता।

मि.क.सं.३८३२

**घणौ सूधौ विसांदरौ, चुग-चुग फिड़कला खाय।** ३८७३

अधिक सीधी बिस्तुइया, चुन-चुन पतंगे खाय।

आ.दे.क.सं.३८७४

**घणौ स्यांणौ कागलौ दे चांदी में टूंच।** ३८७४

अधिक सीधा कौआ मारे घाव पर चोंच।

—जो कौआ घाव देखते ही उस पर चोंच मारे उसे सीधा क्योंकर कहा जा सकता है?

—कोई दुर्जन व्यक्ति सज्जन बनने का दिखावा करे तब!

—यहाँ 'सीधा' शब्द व्यंग्य के रूप में प्रयुक्त हुआ है।

**घणौ हंसौ विणास री झाळ।** ३८७५

अधिक हँसी विनाश की लपट।

—अधिकांशतया सीधे मन से की हुई मजाक भी रंग ले आती है।

—जहाँ तक बने मनुष्य को हँसी-मजाक की इस घातक प्रवृत्ति से बचना चाहिए।

**घणौ हेत लड़ाई रौ मूळ।** ३८७६

अधिक प्रेम लड़ाई का मूल।

—सामान्य की सीमा लाँघकर जो प्रेम अधिक घनिष्ठ होने लगता है तब उस में मामूली चोट से ही गहरी दरार पड़ जाती है।

—दुश्मनी की तरह गहरी आत्मीयता भी प्रतिरोध से भड़क उठती है।

**घम्मड़-घम्मड़ पीसै, जाती रा पग दीसै।** ३८७७

घम्मड़-घम्मड़ पीसे तो समझो रंगत जाने की।

—जो औरत घर छोड़कर जाना चाहती है, वह हर काम में अत्यधिक जल्दबाजी व बेचैनी प्रकट करती है।

—बाहरी व्यवहार से भीतर के मन का देर-सबेर पता चल जाता है।

**घर अळगौ, घरटी भारी।** ३८७८

घर दूर और चाकी भारी।

—मंजिल अभी दूर है और बोझे का भार बेशुमार।

—आदमी को जीवन का बोझा तो हर सूरत में ढोना ही है।

—आलसी व्यक्ति के लिए परिहास में इस उक्ति का प्रयोग होता है।

**घर आयौ अर मां-जायौ।** ३८७९

घर आया और माँ-जाया।

—घर आया मेहमान माँ-जाये भाई के समान।

दे.क.सं.४४७

**घर आयौ नाग न पूजिये, बांबी पूजण जाय।** ३८८०

घर आया नाग न पूजिए, बॉबी पूजन जाय।

—उचित अवसर का लाभ न उठाकर बाद में व्यर्थ प्रयास करने वाले व्यक्ति के लिए।

—वास्तविकता की कद्र न करके भ्रामक-रूढ़ि का पालन करना कहाँ तक उचित है?

**घर आयौ प्रांमणौ रोवतड़ी मुळकाय।** ३८८१

घर आया पाहुना आँसू पोंछकर मुस्करा।

—घर आया मेहमान भगवान के बराबर होता है, हर संकट में भी उसका हँसकर स्वागत करना शोभनीय है।

—दुख व विपदाओं को भूलकर अतिथि का उचित सत्कार करना चाहिए।

**घर आयौ बैरी ई पांवणौ।** ३८८२

घर आया बैरी भी मेहमान।

—घर आये बैरी का भी निरादर न करके उसका सम्मान करना चाहिए।

—मन में आशा लेकर कोई भी व्यक्ति घर आये तो उसे निराश करना उचित नहीं।

**घर आवती लिछमी नै ठोकर नीं मारणी।** ३८८३

घर आती लक्ष्मी को ठोकर नहीं मारनी चाहिए।

—कैसी भी परिस्थिति में यदि अपना लाभ हो तो उसे सहज स्वीकार कर लेना चाहिए।

—अपना व अपने घर का स्वार्थ ही सब आदर्श या सिद्धांतों से बड़ा है।

**घर कैवै म्हनै उधेड़नै जौ, ब्याव कैवै म्हनै मांडनै जौ।** ३८८४

घर कहे मुझे बिखेर कर देख, विवाह कहे मुझे रचाकर देख।

—इन दोनों कामों को प्रारंभ करने के बाद इनका खर्च हाथ में नहीं रहता। अनुमान से बहुत ज्यादा खर्च हो जाता है।

—किसी भी काम के खर्च का सही अनुमान शुरुआत में नहीं किया जा सकता, अंत में ही ठीक पता चलता है।

**घर खावण नै दौड़ै।** ३८८५

घर खाने को दौड़ता है।

—जब घर बड़ा सूना-सूना लगे। गृह-लक्ष्मी के वियोग में ऐसी मनोदशा होती है।

—किसी वृद्ध आत्मीय या चंचल बच्चे के अभाव में जब घर सूना-सूना लगता है तब!

**घर गमायौ साळां अर भींत गमाई आळां।** ३८८६

घर खोया सालों ने और दीवार खोई आलों ने।

—भाई अपनी बहिन की शह पाकर बहनोई का घर खराब करता है। अच्छा खाना व अच्छा पहिनना। इसी प्रकार आलों से दीवार कमजोर पड़ जाती है।

—जो अपने होते हैं, वही घर लूटते हैं।

**घर गोकळ में।** ३८८७

घर गोकुल में।

—जो व्यक्ति खूब ऐश करता हो।

—रसिक तबीयत वाले व्यक्ति के लिए।

**घर-घर चुड़लाळी।** ३८८८

घर-घर चूड़े वाली।

—हर घर में सुहागिन औरतें बसती हैं, किसी विशिष्ट घर का ही यह ठेका नहीं है।

—हर व्यक्ति अपने-अपने दायरे में खुशहाल है।

—जब कोई व्यक्ति अपने घर की विशेषता बघारे तब इस कहावत का प्रयोग होता है कि भैया यह तो खास बात नहीं, ऐसा तो सभी जगह होता है।

**घर-घर बकरी अर घर-घर ऊंट, छप्पन्नौ पड़्यौ च्यारूं कूंट।** ३८८९

घर-घर बकरी और घर-घर ऊँट, छप्पन्ना पड़ा चारों कूँट।

कूँट = चारों दिशाएँ।

—संवत् १९५६ का अकाल देश व्यापी भयंकर अकाल था। बकरी और ऊँट तो जस-तस गुजारा करके बच गये, पर अन्य पशु व मनुष्यों का तो सफाया ही हो गया। उसकी कटु स्मृति लोक-जीवन में अब भी ताजी है।

—राष्ट्रव्यापी त्रासदी का सामना करना बड़ा दुश्वार होता है।

**घर-घर माटी रा चूल्हा।** ३८९०

घर-घर मिट्टी के चूल्हे।

—किसी का घर चाहे कितना ही बड़ा या छोटा हो, खाना पकाने के चूल्हे या तंदूर तो सर्वत्र मिट्टी के ही होते हैं।

—ऐसी कमजोरी जो प्रत्येक घर या व्यक्ति में मिलती हो।

—पारिवारिक चिंता हर मनुष्य को लगी रहती है।

**पाठा : घर-घर गार रा चूल्हा।** घर-घर गारे के चूल्हे।

**घर-घर री न्यारी ई मरजाद व्है।** ३८९१

घर-घर की अलग ही मर्यादा होती है।

—प्रत्येक परिवार के जीवन का अपना एक विशेष ही रंग-ढंग होता है।

—हर घर की अपनी अलग ही मर्यादा होती है और वह उसी में निर्वाह करना चाहता है।

**घर जठै तारत।** ३८९२

जहाँ घर वहाँ पाखाना भी।

—हर अच्छी चीज के साथ बुरी चीज भी जुड़ी रहती है।

—हर परिवार में अच्छे व्यक्तियों के साथ एक-न-एक व्यक्ति तो बुरा होता ही है।

—कोई भी व्यक्ति अवगुणों से बचकर नहीं रहता। शरीर में मस्तिष्क है तो मल की ओझरी भी है।

—कोई भी परिवार लांछना से ऊपर नहीं होता।

**घर जांणी रा खेल।** ३८९३

घर जाने का खेल।

—जो व्यक्ति ऐसा काम करे, जिससे घर उजड़ जाना निश्चित लगे।

—बर्बादी की राह।

**घर जाय अर झांझर बाजै।** ३८९४

घर जाये और झाँझ बजे।

—जो व्यक्ति घर की बर्बादी के समय नाच-गान में मशगूल हो।

—जो व्यक्ति पारिवारिक संकट को अनदेखा करके मौज करे।

—जिस व्यक्ति को अपने भले-बुरे का रंचमात्र भी ध्यान नहीं हो।

**घर जाय नै धांधल गवीजै।**–व.२३३ ३८९५

घर जाय और धाँधल गाय।

धांधळ = राजस्थानी का एक गीत विशेष।

दे.क.सं.३८९४

**घर जायां रा दांत गिणीजै कै साख गिणीजै।**–व.२३२ ३८९६

घर जन्मे के दाँत गिनें या आयु।

साख = फसल। बैलों की आयु के लिए इस शब्द का राजस्थानी में विशेष अर्थ है। जो बैल जितनी साख यानी फसल की बुवाई करता है, वह काम करने की उतनी उम्र बिता चुका।

—बैल के दाँत गिनने से उसकी उम्र का पता लग जाता है। पर घर में जन्मे बैल की आयु तो किसी से छिपी नहीं होती, अतएव दाँतों का प्रमाण विशेष माने नहीं रखता।

—अपने घर का भेद किसी से भी छिपा नहीं रहता।

**पाठा : घर जाया रा दांत गिणां के दिन।** घर जन्मे के दाँत गिनें या दिन।

**घर जावै मांईं सूं, मांचौ जावै वांईं सूं।** ३८९७

घर जाये सौतेली माँ से, खटिया जाये वाँई से ।

वांई = खाट के ताने-बाने को खींचने वाली वदावन के बीच कपड़ों से लिपटी हुई मोटी रस्सी । उसके टूट जाने पर सारा ताना-वाना ढीला हो जाता है । उसी तरह सौतेली माँ के आने से घर की बर्बादी होकर रहती है ।

—किसी भी घर में अवांछित घटित होना नुकसानदेह है ।

**घर जोग पांवणौ के पांवणा जोग घर।** ३८९८

घर के योग्य मेहमान या मेहमान के योग्य घर ।

—घर की हैसियत के अनुसार मेहमान का आतिथ्य-सत्कार किया जाता है,न कि मेहमान की हैसियत के अनुसार । इसके विपरीत मेहमान की हैसियत के अनुसार विशेष सत्कार करने से कष्ट ही उठाना पड़ता है ।

पाटा : **घर सारू पांवणौ के पांवणा सारू घर** । घर के लिए पाहुन या पाहुन के लिए घर ।

**घर गैल पांवणौ कि पांवणा गैल घर** । घर के अनुसार पाहुन या पाहुन के अनुसार घर ।

**घरटी में गाळौ ऊरयां ईं आटौ हाथै आवै।** ३८९९

चक्की में अनाज डालने से ही आटा हाथ लगता है ।

—खिलाने-पिलाने से ही काम होता है ।

—जितना दिया जाएगा उतना ही हाथ लगेगा ।

—साधनों के अनुसार ही फल प्राप्ति होती है ।

**घरणी बिना किसौ घर?** ३९००

घरवाली के बिना कैसा घर ?

—घर की शोभा गृहणी से ही होती है ।

—औरत के बगैर घर सुव्यवस्थित नहीं रह सकता ।

**पाठा : घर तौ लुगाई सूं सोहै** । घर तो लुगाई से ही सुहाता है ।

**घर तौ लुगायां रा ई कहीजै** । घर तो औरतों के ही माने जाते हैं ।

**घर बिना कैड़ौ घर, बहू बिना कैड़ौ वर !**

**घरणी विहूण घर भूतां रौ डेरौ।** ३९०१

**घरनी बिन घर भूत का डेरा।**

—घर में भले दूसरी कितनी ही सजावट हो, परिवार में अन्य कितने ही बाल-बच्चे और सदस्य हों, पर घरवाली के बगैर घर भूतों के डेरे जैसा लगता है।

—गृह-लक्ष्मी के बिना घर सूना लगता है।

**घर तायौ वन में गियौ अर वन में लागी लाय।** ३९०२

घर का सताया वन में गया और वन में लगी आग।

—अभागे व्यक्ति के लिए इस संसार में कहीं ठौर नहीं।

—जिस व्यक्ति के दुर्भाग्य का कहीं कोई अंत ही न हो।

**घर तौ घोसियां रा ई बळसी, पण सुख ऊंदरा ई को पासी नीं।** ३९०३

घर तो घोसियों के ही जलेंगे, पर सुख चूहे भी नहीं पाएँगे।

घोसी = मुसलमानों की एक जाति विशेष जो दूध बेचने का काम करती है। पुराने जमाने में कच्चे झोंपड़े होते थे। मिट्टी के दीयों से जलती बाती चूहे दाँतों से पकड़कर ले जाते, घास में चिनगारी गिरने से आग लग जाती थी। चूहों की कारस्तानी से झोंपड़ी तो जल जाती थी, पर उस में चूहे भी जल मरते थे। बचे हुओं को परेशानी भी काफी होती थी। इसी संदर्भ में कहावत का अर्थ स्पष्ट होता है कि स्वयं घात करने वाला या नुकसान पहुँचाने वाला भी उस क्षति से बचकर नहीं जा सकता।

—जब अनर्थ करने वाला स्वयं उस अनर्थ की चपेट में आ जाय, तब!

**पाठा : घर तौ घांचियां रा ई बळसी, पण सुख ऊंदरा ई को पावै नीं।**

घर तो घाँचियों के ही जलेंगे, पर सुख चूहे भी नहीं पाएँगे।

घांची = दूध बेचने वाली हिंदू जाति।

**घर तौ नागरबेल सूं छायौ, पाड़ौसी रौ खोसै फूस।** ३९०४

**घर तो नागरबेल से छाया, पड़ोसी का छीने फूस।**

—जो संपन्न व्यक्ति अत्यधिक लालच के मारे दूसरों या पड़ोसियों का माल हड़पना चाहे।

—जो सुखी व्यक्ति अपने सिवाय किसी का सुख देखना न चाहे।

**घर तौ सगळा ई गार सूं नीप्योड़ा व्है।** ३९०५

घर तो सारे ही गार से लीपे हुए होते हैं।

—घर जिस किसी का बने दीवारों की चुनाई, गार, चूने या सीमेंट से ही होती है।

—अपने घर की सही हालत घरवाला ही जानता है।

—व्यर्थ खर्च कराने से हर व्यक्ति को क्षति का कष्ट एक-सा होता है, इसलिए अपने स्वार्थ की तरह दूसरों के स्वार्थ का भी ध्यान रखना चाहिए।

**घर दीपै घरवाळी सूं।** ३९०६

घर में उजियारा घरवाली से।

—औरत ही घर की चाँदनी है।

—स्वर्ण-महल भी औरत के बिना फीका है।

मि.क.सं.३९००, ३९०१

**घर देख हालणौ, मांटी देख माल्हणौ।** ३९०७

घर के हिसाब से चलना, पति के हिसाब से गरूर करना।

—अपने घर की जैसी हैसियत हो, उसीके अनुसार चलना वांछित है और पति की जैसी क्षमता हो उसीके हिसाब से पत्नी को रुतबा दिखाना चाहिए। इसके विपरीत आचरण से हानि होने की संभावना है।

**घर धणियांणी भूखी नै देपारां री ढूकी।** ३९०८

घर की मालकिन भूखी, भरी दुपहरिया खाने बैठी।

—दूसरों को खिलाने की व्यवस्था में घर की मालकिन दोपहर तक खाना नहीं खा सके तब।

—जो व्यक्ति अपनी ही जिम्मेवारी के कारण कष्ट उठाये तब।

**घर धणी लड़ मरै नै पाड़ौसी संताप करै।** ३९०९

घर का स्वामी लड़ मरे और पड़ोसी संताप करे।

—कृत्रिम हमदर्दी दिखाने वाले व्यक्ति के लिए।

—मुँह देखी सहानुभूति का दिखावा करने वालों के लिए।

**घरना गोदा ने घरना जोदा, जणानी खेती ।**– भी.२२३ ३९१०

घर के बैल और घर के जवान हों तभी खेती पकती है ।

—अच्छी खेती के लिए घर के ही मजबूत बैल हों और पुष्ट युवक हों तभी उसका आनंद है ।

—प्रत्येक काम की मन-वांछित सफलता के लिए उचित साधन और कुशल व्यक्ति अनिवार्य हैं ।

**घरनी ते घट्टी चाटे, उपाद्यो कै पोय चपटो ।**– भी.२२४ ३९११

घरनी तो चाकी चाटे और बामन को चाहिए आटा ।

—निर्धन व्यक्ति में दान करने की क्षमता नहीं होती ।

—घर की जैसी परिस्थिति हो, उसी के अनुसार चलना संगत है ।

**घर नैड़ौ अर भांय घणी ।** ३९१२

घर समीप और दूरी बहुत ।

—दुख की वह पराकाष्ठा जब पाँव एक कदम भी आगे बढ़ने को तैयार न हों ।

—मामूली दूरी भी जब अधिक महसूस हो ।

—मजबूरी की चरम सीमा ।

**घरनो दीवो करी ने जाणे, डूंगरे दैव लगाड़े ।**– भी.२२५ ३९१३

घर का दीया तो जलता नहीं और पहाड़ पर आग लगाये ।

—घर की जरूरतें तो पूरी होती नहीं और दूसरों को सहयोग करने की चाह रखे—ऐसे अव्यावहारिक व्यक्ति के लिए ।

—जो निठल्ला बड़े-बड़े काम करने की डींग मारे ।

**घर फूटा नै कारी को लागै नीं ।** ३९१४

घर फूटे का कोई उपचार नहीं ।

—कैसी भी विपत्ति का सामना किया जा सकता है पर घर की फूट का सामना नहीं किया जा सकता ।

—किसी भी परिवार के लिए फूट से अधिक घातक दूसरी कोई बात नहीं ।

**घर फूटै, गिंवार लूटै।** ३९१५

घर की फूट, गॅवारों की लूट।

—घर में फूट हो तो मूर्खों की भी बन आती है और वे उस घर को लूटने में कोई कसर नहीं रखते।

—घर की फूट का दूसरे फायदा उठाते हैं।

**घर फूट्यां घर जाय।** ३९१६

घर फूटने पर घर का सर्वनाश।

—घर की फूट से पूरा घर ध्वस्त होकर रहता है।

—आपसी फूट से घर की दीवारें ढह पड़ती हैं।

**पाठा : घर फूट्यां करम फूटै।** घर फूटने पर भाग्य फूटता है।

**घर बरसौ मेहड़ला नै घर ई व्हौ सुगाळ।** ३९१७

घर पर बरसे मेह और घर में ही हो खुशहाली।

—दूर-दूर तक होने वाली वारिश केवल मेरे घर पर ही हो और मेरे घर के अलावा कहीं हरियाली न फूटे।

—जो निपट स्वार्थी अपने लाभ के अलावा किसी दूसरे का भला सपने में भी न सोचना चाहे।

—जो व्यक्ति सब-कुछ हथिया लेना चाहता हो।

**घर बळती कोनीं दीसै, डूंगर बळती दीसै।** ३९१८

घर जलती नजर न आये, पहाड़ जलती नजर आये।

—जो व्यक्ति अपने घर में जलती आग को अनदेखा करके दूर पहाड़ पर जलती आग के लिए हाहाकार मचाये।

—जो व्यक्ति अपने घर की चिंता के बदले दूसरों की चिंताओं का अधिक खयाल करे।

—अपनी बुराइयों को नजर-अंदाज करके जो व्यक्ति दूसरों की बुराइयों का ध्यान रखे।

**घर बळ्यां टाळ गांव नीं बळै।** ३९१९

घर जलाये बिना गाँव नहीं जल सकता।

—दूसरों का अहित करने में यदि अपना अहित पहिले हो जाय तो भी कोई बात नहीं। दूसरों को दुख देने की खुशी क्या कम है ?

—जो व्यक्ति स्वयं बर्बाद होकर भी दूसरों को बर्बाद करना चाहे।

**घरबार थारा पण ताळा-कूंची म्हारा।** ३९२०

सारा घरबार तेरा पर चाबी-ताला मेरा।

—सफाई व फूस-बुहारने के लिए घर तेरा, माल-संपत्ति पर अधिकार मेरा।

—जो व्यक्ति अधिकार सौंपने का केवल दिखावा भर करे, दे कुछ भी नहीं।

—केवल बातों-ही-बातों में जो व्यक्ति खुश रखने की चेष्टा करे।

**घर बाळ चांनणौ कुण करै ?** ३९२१

घर जलाकर उजाला कौन करे ?

—अपना अहित करके दूसरों की भलाई नहीं की जा सकती।

—अपने स्वार्थ को सुरक्षित रखकर ही परोपकार किया जा सकता है।

**घर बाळिनै तीरथ कुण करै।**–व.३६४ ३९२२

घर जलाकर तीर्थ कौन करे।

दे.क.सं.३९२१

**घर बिना धर कोनीं।** ३९२३

घर बिना कहीं धरती नहीं।

—जिसका अपना घर नहीं, उसे दुनिया में कहीं ठौर नहीं।

—केवल अपने-अपने घरों से ही यह दुनिया आबाद है।

**पाठा : घर टाळ दर कठै ?** घर के बिना प्रवेश कहाँ ?

**घर बीगड़ै जूवै, देह बीगड़ै सूवै।** ३९२४

घर बिगड़े जूए से, देह बिगड़े सोने से।

—अधिक सोना शरीर के लिए घातक और जूआ खेलना घर के लिए घातक।

—अधिक सोने व जूए खेलने की वर्जना।

**घर बैठां गंगा आई।** ३९२५

घर बैठे गंगा आई।

—कोई अचीता लाभ हो तब।

—बिना किसी मेहनत व आकांक्षा के कोई अप्रत्याशित सुख की बात हो तब।

—अकस्मात् कोई बड़ा आदमी घर आये तब उसे संबोधित करके यह कहावत कही जाती है।

**घर बैठां दैण कुण करै ?** ३९२६

घर बैठे आफत कौन सहे ?

—खामखाह कौन परेशानी उठाये ?

—चलते रास्ते कोई पंगा नहीं लेना चाहता।

**घर ब्याव, बहू पींपळां।** ३९२७

घर में विवाह और बहू पीपल पूजने गई।

—जिस व्यक्ति को अपनी जिम्मेवारी का तनिक भी खयाल न हो।

—लापरवाह व्यक्ति पर कटाक्ष।

**पाठा : घरं ब्याव अर बहू छांणा चुगवा जाय।** घर में ब्याह और बहू कंडे बीनने जाय।

**घर भलौ के घोर भली।** ३९२८

घर भला या कब्र भली।

घोर = इस कहावत के संदर्भ में 'घोर' के दो अर्थ हैं—नींद में नाक बजाते चैन से सोना। दूसरा अर्थ है कब्र। दोनों ही अर्थ चल सकते हैं।

—जो निपट स्वार्थी फकत अपने में ही खोया रहे।

—जिस व्यक्ति के लिए अपने अलावा कहीं किसी से कोई सरोकार न हो।

**घर भेदू लंका बाळै।** ३९२९

घर का भेदी लंका जलाये।

—घर का भेदी विभीषण रावण को छोड़कर राम के साथ मिला तभी लंका का सर्वनाश हुआ। वरना रावण जैसा महाबली पराजित कब होता ?

—घर के भेदी से बड़ा दुनिया में दूसरा और कोई शत्रु नहीं।

पाठा : **घर रौ भेदी लंका ढावै।** घर का भेदी लंका ढाये।

**घर मांये ऊंदरा ग्यारस करे।**– भी.२२६ ३९३०

घर में चूहे एकादशी करते हैं।

—अन्य उपवास में तो एक जून भोजन किया जाता है—पर एकादशी के दिन तो घर में अन्न और आग का विरोध रहता है। न गाय-कुत्ते को ही रोटी दी जाती है। यदि संयोग से एकादशी को घर में किसी की मृत्यु हो जाती है तो अन्न का भोग तक नहीं लगता। साधु-ब्राह्मण भी एकादशी को आटा माँगने नहीं जाते। शायद इसीलिए एकादशी को—'अन्न-पापिनी' कहा जाता है।

—जिस घर में चूहे भी एकादशी का व्रत करें तो फिर कहना ही क्या ? घर में कुछ अन्न हो तो खाएँ। अत्यधिक निर्धन परिवार पर कटाक्ष !

**घर मिळै तौ वर नीं, वर मिळै तौ घर नीं।** ३९३१

घर मिले तो वर नहीं, वर मिले तो घर नहीं।

—कन्या के लिए अच्छा घर मिले, अच्छा वर मिले, इसकी चिंता स्वाभाविक है, पर चिंता होने से सब समस्याएँ सुलझ नहीं जातीं।

—सभी बातों का सुयोग जुड़ना दुश्वार होता है।

—मन की आकांक्षा के अनुरूप कहीं कुछ-न-कुछ तो कमी रह जाती है।

**घर में अंधेरौ अर तिलां री रास।** ३९३२

घर में अँधियारा और तिलहन का ढेर।

—अँधेरा भी काला, तिलहन का रंग भी काला, फिर तो कुछ भी दिखने का प्रश्न ही नहीं। दुहरे दुर्भाग्य की मार।

—तिलहन का ढेर होते हुए भी जिस घर में दीपक का उजियारा न हो।

—साधन संपन्न होते हुए भी जो व्यक्ति अभाव का दुख सहे।

**घर में आई जोय, बांकी पाग पाधरी होय।** ३९३३

घर में जब औरत आये, टेढ़ी पगड़ी सीधी हो जाये।

—विवाह होने पर गृहस्थी का ऐसा चक्कर शुरू होता है कि अच्छे-अच्छे तीस-मारखाँ सीधे हो जाते हैं।

—घर में पत्नी का पदार्पण होते ही सारी हेकड़ी समाप्त हो जाती है। बाँकी मूँछें सीधी हो जाती हैं।

**घर में आथण-सवार रौ ई कोनीं।** ३९३४

घर में शाम-सुबह का भी नहीं।

—जिस व्यक्ति के घर में दो जून रोटी का भी जुगाड़ न हो।

—निपट असहाय व्यक्ति के लिए।

**घर में ऊंदरा इग्यारस करै।** ३९३५

घर में चूहे एकादशी करें।

—जिस व्यक्ति के घर में चूहों के खाने तक का भी संपट न हो। फलस्वरूप वे चिल्लाते हैं।

—बेइंतहा गरीब के लिए जिसके घर में अनाज का दाना तक न हो।

दे.क.सं.१३५२

**घर में ऊंदरा थड़ियां करै।** ३९३६

घर मे चूहे डंड पेलें।

—जिस व्यक्ति की आर्थिक हालत बिलकुल गई-गुजरी हो।

—भुखमरे व्यक्ति का उपहास।

मि.क.सं.३९३०,३९३५

**घर में कसालौ, ओढ़ै दुसालौ।** ३९३७

घर में कसाला, ओढ़े दुशाला।

—जो व्यक्ति गरीब होते हुए भी अमीरी का ढोंग करे।

—व्यर्थ दिखावा करने वाले के प्रति कटाक्ष।

**घर में कागला पड़ै।** ३९३८

घर में कौवे पड़ें।

दे.क.सं.२४०२

**घर में कीकर बावै, सो पगथळियां सूळ गडावै।** ३९३९

घर में जो बबूल बोये, वह पाँवों में शूल गड़ाये।

—जो व्यक्ति जान-बूझकर अपने अहित का काम करे।

—हीन या कुटिल व्यक्ति को अपने घर में जो आश्रय देगा, वह कष्ट पाएगा।

**घर में गुळ होसी तौ माखियां उडती आसी।** ३९४०

घर में गुड़ होगा तो मक्खियाँ उड़कर आएँगी।

—घर में खुशहाली होगी तो मेहमान भी अधिक आएँगे।

—संपन्नता हो तो हर कोई कुछ-न-कुछ पाने की आशा रखता है।

—दूसरा छिपा अर्थ यह भी है कि घर में कोई औरत चरित्रहीन हो तो उसके यार आएँगे ही।

**घर में गूदड़ौ ई कोनीं अर बा' रै मांचा माथै कड़ियां खोलै।** ३९४१

घर में गुदड़ी भी नहीं और बारह खाट पर कमर खोले।

—जो व्यक्ति गरीब होते हुए भी अमीरों की-सी डींग मारे।

—खामखाह रुआब गाँठने वाले निर्धन व्यक्ति के प्रति कटाक्ष।

**घर में घट्टी नै घर में चूल्हौ, पर घर पीसण जाय।** ३९४२
**पाड़ौसण सूं बातां लागी, चून गिंडकड़ा खाय॥**

घर में चाकी, घर में चूल्हा, पर घर पीसे जाय।
पड़ोसन से लगी बतियाने, आटा कूकर खाय॥

—खामखाह भटकने वाली फूहड़ औरत का उपहास।

—जो नादान व्यक्ति अपने भले-बुरे में भी न समझे।

**घर में घर नीं खटै।** ३९४३

घर में घर नहीं चल सकता।

—दो भिन्न परिवार एक ही घर में नहीं रह सकते।

—दो विभिन्न परिवार साथ रहें तो झगड़ा स्वाभाविक है ।

**घर में घर, रांझा रौ डर ।** ३९४४

घर में घर, झगड़े का डर ।

दे.क.सं.३९४३

**घर में तेल नीं तांई, रांड मरै गुलगुलां तांई ।** ३९४५

घर में न तेल न खाँड, गुलगुलो के लिए मरे राँड ।

—अपनी हैसियत से परे लालसा रखने वाले व्यक्ति के लिए ।

—घर की जैसी हैसियत हो ,उसीके अनुसार चलना उचित है ।

**पाठा : घर में नीं तेल-तळाई, रांड मरै गुलगुला तांई ।**

**घर में तौ फाका पड़ै, मोडा नूंतण जाय ।** ३९४६

घर में तो फाके पड़ें, चला संतो को न्योता देने ।

—जो व्यक्ति अपने घर की हालत से एकदम बेखबर हो ।

—जो व्यक्ति अपनी आर्थिक हालत को छिपाने के लिए झूठा दिखावा करे ।

**पाठा : घर में तौ भूवाजी रमै अर मोडा नूंतण जाय ।**

**घर में तौ भूंज्योड़ी भांग ई कोनीं ।** ३९४७

घर में भूनी भाँग तक नहीं ।

—देशी औषधि के लिए भूनी हुई भाँग रखी जाती थी । तनिक खाँड मिलाई जाती थी । अब तो इसका प्रचलन उठ ही गया है । निहायत सस्ता नुस्खा ।

—जिसकी आर्थिक हालत बहुत ही खराब हो,उस पर कटाक्ष ।

**घर में दीयौ तौ मसीत में दीयौ ।** ३९४८

घर मे चिराग तो मस्जिद में भी चिराग ।

—पहिले अपना घर सँभालकर फिर दूसरी चिंता करनी चाहिए ।

—पहिले घर का फिक्र फिर खुदा का ।

—अपने घर का भला करने वाला दूसरों का भी भला कर सकता है ।

**घर में नांणौ, वींद परणीजै कांणौ।** ३९४९

घर में नकदी का जोर, काना ब्याहे सीना ठौर।

—रुपये के चमत्कार से सब कुछ संभव है।

—दुनिया में ऐसा कोई काम नहीं जो रुपये से न हो सकता हो।

दे.क.सं.११

**घर में नाहर नै बारै गाडर।** ३९५०

घर में शेर, बाहर भेड़।

—जो व्यक्ति घरवालों पर दहाड़े और बाहर मिमियाये।

—दूसरों के तलवे चाटने वाला व्यक्ति जो घरवालों को ऑखें दिखाये।

**पाठा : घर में बाघ नै बारै बकरी।** घर में बाघ और बाहर बकरी।

**घर में नीं अखत रा बीज, बंदौ खेलै आखातीज।** ३९५१

घर में नहीं अक्षत के बीज, बंदा खेले आखातीज।

आखातीज = अक्षय तृतीया।

—झूठ-मूठ की शेखी बघारना।

—थोथी शान-शौकत की हेकड़ी दिखाने वाले व्यक्ति पर कटाक्ष।

मि.क.सं.३९४५

**घर में नीं चिणां रौ चूर, बेटौ मांगै मोतीचूर।** ३९५२

घर में नहीं चने का चूरा, बेटा माँगे लड्डू पूरा।

—अपनी हैसियत को भूलकर जो व्यक्ति खामखाह बड़प्पन जतलाये।

—सामर्थ्य से परे व्यर्थ की आकांक्षा रखने वाला व्यक्ति।

—झूठी शान बघारना।

**पाठा : घर में नी चिमटी चूंण, बेटौ मांगै चूरमौ।**

घर में नहीं चुटकी भर चून, बेटा माँगे चूरमा।

**घर में नीं फूकौ, घांणी करावण ढूकौ।** ३९५३

घर में न तिलहन की भूसी और कोल्हू कराने की सोची।

दे.क.सं.३९५२

**घर में नीं ब्याव सगाई, छठी पूजण आई।** ३९५४

घर में न ब्याह सगाई और छठी पूजने आई।

—हिंदू समाज में ऐसी मान्यता है कि प्रसव के छठे दिन विधात्री संतान के भाग्य में अंक लिखने आती है। पर जिस घर में ब्याह-सगाई की भनक तक नहीं,उस घर की मालकिन छठी-पूजन की तैयारी कर रही हो तो आश्चर्य की बात ही है।

—जो व्यक्ति काम के आधार बिना ही उसे संपन्न करने के साधन जुटाये।

—जो व्यक्ति हर काम में अत्यधिक जल्दबाजी करे।

**घर में पींडी रौ ई ठिकांणौ कोनीं, पराये घरां मांचा में ईं नीं मावै।** ३९५५

घर में मूँज का ही ठिकाना नहीं और पराये घर खाट भी कम पड़े।

—अपनी औकात समझे बिना जो व्यक्ति बाहर दूसरों के बीच अपनी संपन्नता का दिखावा करे।

—मिथ्या आत्म-प्रदर्शन करने वाले व्यक्ति पर कटाक्ष।

**घर में भूंजी भांग ई कोनीं, सपना खीर रा आवै।** ३९५६

घर में भुनी हुई भाँग भी नहीं, सपने खीर के आएँ।

—अपनी हीनता भूलकर जो व्यक्ति ऐश्वर्य करना चाहे।

—जो व्यक्ति अपने घर की दुर्दशा से एकदम बेखबर हो।

मि.क.सं.३९५१

**पाठा: घर में भूंजी भांग ई कोनीं अर मुलकां री डीगां मारै।**

घर में भुनी हुई भाँग भी नहीं और दुनिया भर की डींग मारे।

**घर में भूवाजी नाचै।** ३९५७

घर में बूआ नाचे।

—भुखमरे व्यक्ति पर कटाक्ष।

दे.क.सं.३९३४, ३९३५, ३९३६

**घर में मतै ई मोत्यां रौ चौक पूर राख्यौ है।** ३९५८

घर में स्वयं मोतियों का चौक सजा रखा है।

—जो व्यक्ति अपने बड़प्पन की शेखी बघारे।

—अपने मुँह मियाँ-मिट्ठू बनने वाले के लिए।

**घर में रांमजी रौ नांव है।** ३९५९

घर में राम का नाम है।

—जिस व्यक्ति के पास सिवाय राम-नाम के कुछ भी अन्य चीज देने को न हो।

—टनटन गोपाल।

**घर में रांम राजी है।** ३९६०

घर में राम राजी है।

—जिस व्यक्ति के घर में पूरी खुशहाली हो।

—सभी प्रकार से संपन्न व्यक्ति के लिए जिसकी कोई चाह बाकी न रही हो।

**घर में लागी लाय अर दिसंतरी भदरा बताय।** ३९६१

घर में लगी आग और जोशी कहे भद्रा लगी।

—भद्रा की दशा ढाई घंटे की होती है, जिस में घर से बाहर तक निकलना अशुभ माना जाता है। फिर घर में लगी आग को कैसे बुझाया जाय? भद्रा टलने की प्रतीक्षा में सब-कुछ जल कर राख हो जाएगा। न घर बचेगा न घरवाले।

—जब कोई व्यक्ति कारणवश तनिक भी प्रतीक्षा न कर सके, फिर भी प्रतीक्षा के लिए मजबूर होना पड़े, तब।

**घर में लागी लाय, हाथ लागै सो सवाय।** ३९६२

घर में भभकी आग, हाथ लगे सो ही भाग।

—भयंकर त्रासदी की वेला जो भी बच जाय वही क्या कम है।

—दंगों की लूट-खसोट में जो भी रह जाय वह भाग्य का।

—महामारी के बीच घर का जो प्राणी बच जाय वह ईश्वर की नियामत है।

**घर में वेद नै मरया कीकर ?** ३९६३

घर में वैद्य फिर मरे क्योंकर ?

—घर में वैद्य के रहते कोई मर जाय तो बड़े अचरज की बात है।

—बेइंतहा कुशल व्यक्ति के रहते कोई काम बिगड़ जाय तब।

—अपने कौशल की डींग मारने वाले व्यक्ति पर कटाक्ष।

**घर में व्है नांणौ तौ वींद परणीजै कांणौ।** ३९६४

घर में हो पैसा, तो वर ब्याहे जैसा-तैसा।

मि.क.सं.११,३९४९

**घर में व्है संवार तौ झख मारौ गिंवार।** ३९६५

घर में हो बचत की बात, झख मारे गँवार की जात।

—जिस बात में अपना लाभ हो, वह काम अवश्य करना चाहिए, दुनिया चाहे कुछ भी कहे।

—बचत व लाभ में ही सारी समझदारी है, बाकी सब बकवास।

**घर में सगळै ई गार रा चूल्हा।** ३९६६

हर घर में गार के चूल्हे।

दे.क.सं.३८९०

**घर मेलौ भाड़ै, जाय बसौ बाड़ै।** ३९६७

घर किराये देकर, बैठो बाड़े में जाकर।

—जो व्यक्ति मामूली किराये के लोभ में घर को किराये पर उठा देता है और स्वयं दुख पाता है, उसके लिए।

—मकान किराये पर न देने की अप्रत्यक्ष सीख।

**घर रां नै धांन मत मिळजौ, बळीता सारू मेलैला।** ३९६८

घरवालों को अनाज न मिले वरना ईंधन के लिए भेजेंगे।

—ऐसा काम-चोर जो अपने निठल्लेपन की खातिर घर की बड़ी-से-बड़ी हानि सहने को तैयार हो।

—अपनी सनक की तुष्टि के लिए जो व्यक्ति दूसरों का घातक नुकसान करने में भी न हिचके।

**घर रां नै मारणौ अर चोरां नै धारणौ।** ३९६९

घरवालों को मारना और चोरों को गले लगाना।

—ऐसा सिरफिरा व्यक्ति जो घरवालों का तो अहित करे और दुष्ट व्यक्तियों की सहायता करे।

—ऐसा नासमझ व्यक्ति जिसका हर काम उलटा हो।

**घर रा ऊंदरा ई राजी व्है तौ कांम करज्यौ।** ३९७०

घर के चूहे भी खुश हों तो काम करना।

—जिस बात से घर का चूहा तक नाखुश हो वह काम नहीं करना चाहिए।

—दो व्यक्तियों के बीच इकरारनामा करते समय यह बात अकसर इस उक्ति के द्‌वारा कही जाती है कि घर के छोटे-बड़े सभी सदस्य सहमत हों तभी इस बात पर कायम रहें अन्यथा नहीं।

**घर रा कूटै जिणनै पांवणा ई कूटै।** ३९७१

घरवाले पीटें उसे पाहुने भी पीटते हैं।

—जिस व्यक्ति की घर में इज्जत न हो तो बाहर भी उसे कोई नहीं पूछता।

—कपूत या अयोग्य का न घर में सम्मान और न बाहर सम्मान।

**घर रा खीर खावै अर देवता राजी व्है।** ३९७२

घरवाले खीर खाएँ और देवता राजी हों।

—देवताओं को मनौती बोलते समय वे खुश हो जाते हैं और घरवालों को प्रसाद मिल जाता है। घर में गाय-भैंस रखने वाले एकादशी या अन्य किसी तिथि पर बिलौना न करके दूध की 'जावनी' चढ़ाते हैं। घरवालों को खीर मिल जाती है और देवता मनौती से प्रसन्न हो जाते हैं।

—जिस काम से घर में लाभ हो और समाज के प्रतिष्ठित व्यक्ति खुश हों, उस में हिचक कैसी, उसे तत्काल करना चाहिए।

**घर रा घर में सलट लिया।** ३९७३

घर-घर ही में सलट लिये।

**संदर्भ-कथा :** एक सियार व सियारनी तालाब पर पानी पीने गये तो वहाँ लौटते हुए शेर की उन पर नजर पड़ी। बचने की कोई राह नजर नहीं आई तो सियारनी ने तुरंत एक उपाय सोचा। आँखों में आँसू भरकर वह सिंह की ओर बढ़ते कहने लगी—आप ही को सवेरे से खोज रही हूँ, सारा जंगल छान मारा। आप हमारे न्यायी राजा हैं। हमारा न्याय कीजिए, वरना तालाब में डूब मरूँगी।

सिंह ने तत्काल पूछा—किस बात का न्याय ?

तब सियारनी बोली—हमारे सात बच्चे हैं। मैंने कितनी मुश्किल से उन्हें पाल-पोस कर बड़ा किया, मेरा जी जानता है। अब यदि अलग होने पर चार बच्चे अपने पास रखूँ तो इस में क्या बुरी बात ! पर यह दुष्ट कहता है कि चार वह रखेगा। जरा पूछिए इससे कि उसने एक भी बच्चे को जन्म दिया ? आपको तकलीफ तो होगी। हमारी माँद तक चलकर सच्चा न्याय कीजिए।

सिंह के मुँह में पानी भर आया। मन-ही-मन हिसाब लगाने लगा—सात और दो—नौ। मजा आ जाएगा। चार बच्चों के बाद सियार को और तीन बच्चों के बाद सियारनी को खाने से दुगुना स्वाद आएगा ! वह हिसाब करता रहा तब तक वे अपने न्यायी राजा से आज्ञा लेकर पानी पी आये। सिंह चुपचाप उनके साथ चलता रहा। सियारनी पति को मार कोसती रही। माँद के पास पहुँचते ही वह आँखें तरेर कर बोली—हरामखोर, यहाँ बाहर क्यों खड़ा है, जा अंदर जा और बच्चों को झटपट बाहर लेकर आ। अब तो न्यायी राजा जो भी न्याय करेंगे, तुझे मानना ही होगा। बोल, मानेगा कि नहीं।

'जरूर मानूँगा।' इतना कहकर वह आँखें चुराता हुआ माँद के भीतर घुस गया। काफी देर तक बाहर नहीं आया तो सियारनी का माथा ठनका कि नालायक कहीं धोखा न कर जाये। पति को दो टूक गालियाँ निकालती हुई वह भी राजा की आज्ञा से माँद के अंदर घुस गई। सिंह काफी देर तक उनकी प्रतीक्षा करता रहा। आखिर उकताकर जोर से बोला—तुम बच्चों को लेकर बाहर क्यों नहीं आते ? मेरी पूजा का समय टल रहा है। जल्दी बाहर आओ तो झटपट तुम्हारा न्याय कर दूँ।

सियारनी माँद के भीतर से ही बोली—आप जैसे न्यायी राजा को बेकार तकलीफ दी—माफ कीजिएगा। यह हरामी चार बच्चे रखे तो रखने दीजिए। मैं तीन से ही खुश हूँ। आखिर यह दुष्ट, है तो इनका पिता ही और मेरा पति भी। हमने घर-घर ही में फैसला कर लिया

कि आपस में लड़ना उचित नहीं। आपके सहयोग व कष्ट के लिए एक बार फिर माफी चाहती हूँ।

सिंह का मुँह उतर गया। साँस रोकता हुआ बोला—एक बार बच्चों सहित तुम बाहर तो आओ। बच्चों को जरा आशीर्वाद तो दे दूँ।

'जरूर आशीर्वाद दीजिए पर बाहर से ही। मेरे बच्चे डरपोक बहुत हैं, आपकी छाया से ही उन्हें डर लगता है, फिर कभी झगड़ा होगा तो जरूर आपके पास हाजर होऊँगी। यह नालायक जरूर झगड़ा करेगा।'

आखिर सिंह को झख मारकर वहाँ से रवाना होना पड़ा। बच्चों का लजीज माँस खाने की मन में ही रह गई।

—संकट की वेला धैर्य-पूर्वक विवेक से काम लेने पर बचाव संभव है।

—बाहर के खतरे से बचने का एक ही मंत्र है—पारस्परिक एकता। चाहे वह पारिवारिक हो चाहे राष्ट्रीय।

—पंचों से फैसला न करवाकर आपस में सलटना ही उत्तम है।

**घर रा घोड़ा, बाट खुदा री।** ३९७४

घर के घोड़े, राह खुदा की।

—जो साधन-संपन्न व्यक्ति पूर्णतया स्वतंत्र हो वह किसका नियंत्रण माने ? अपनी मनमानी चाल से आगे बढ़ने के लिए भला उसे कौन रोक सकता है ?

—उस स्वच्छंद व्यक्ति के लिए जो समृद्ध होने पर तानाशाही-वृत्ति से ग्रसित हो रहा हो।

**घर रा छांणा बाळ, गांव-भांब नीं करीजै।** ३९७५

घर के कंडे जलाकर पटेलगिरी नहीं की जाती।

—घर का नुकसान करके गाँव की बेगार कौन करे ?

—अपनी क्षति उठाकर दूसरों का हित कब तक किया जा सकता है ?

**घर रा छोरा घरटी चाटै ओझैजी नै आटौ।** ३९७६

घर के लड़के चक्की चाटें, ओझा को आटा चाहिए।

—जब घर की हालत खस्ता हो तो दूसरों की अभ्यर्थना नहीं की जा सकती।

—अभाव की स्थिति में जब कोई व्यक्ति वैसी माँग करे तब परिहास में इस कहावत का प्रयोग होता है।

**पाठा : घर रा तौ घट्टी चाटै अर पांवणा नै पोळी भावै।**

घरवाले तो चाकी चाटें और पाहुने को मीठे पराँठे चाहिएँ।

**घर रा टाबर कांणा ई सोवणा।** ३९७७

घर के बच्चे काने ही सुहाने।

—अपने घरवालों में बुराई नजर नहीं आती।

—अपनी चीज बुरी भी हो तो उसके प्रति मोह स्वाभाविक है।

**घर रा डोका सूं आंख फूटी।** ३९७८

घर के सरकंडे से आँख फूटी।

—जब घर का आत्मीय हानि पहुँचाये तो मन-ही-मन सब्र करने के अलावा दूसरा कोई चारा नहीं।

—अपने ही हाथों अपनी क्षति हो तब।

**घर रा देव, घर रा ई पुजारी।** ३९७९

घर के देव और घर के ही पुजारी।

—जिस व्यक्ति को सभी प्रकार की सुविधा हो।

—जब खुशहाली के रास्ते दोनों ओर खुले हों।

—जो व्यक्ति अपने बुजुर्गों की हरदम प्रशंसा करे।

**घर रा देव तौ निरणा जावै अर दूजां नै पूजापौ भावै।** ३९८०

घर के देवता भूखे मरें और दूसरे प्रसाद चरें।

—शिष्टाचार के लिहाज में सामान्यतया घर का प्रमुख घरवालों के प्रति उदासीन पर दूसरों का आदर-सत्कार करने में बड़ा उद्यत रहता है। इस मिथ्या प्रतिष्ठा का निबाह करने वाले व्यक्ति जब घरवालों की कीमत पर दूसरों के आतिथ्य सत्कार में जरूरत से ज्यादा खर्च करें तब।

**घर रा धणी नै लागत लागै नै पांवणौ डीलां छीजै ।** ३९८१

घर के मालिक का खर्च हो और अतिथि का अंतस् अकुलाये ।

—जब कोई अतिथि जरूरी काम की खातिर अपने गॉंव जाना चाहे और घर का मालिक उसे रुकने का आग्रह करे तब !

—जिस बात से दुतरफा नुकसान हो वैसा काम नहीं करना चाहिए ।

—मेजबान तबीयत से सत्कार करे और मेहमान को मन-ही-मन जलन हो । इस कहावत का दूसरा संकेत यह भी है कि अपनी भलाई करने वाले के प्रति जो हीन व्यक्ति दुर्भावना रखे ।

**घर रा पितरां नै गुळ रौ चूरमौ ।** ३९८२

घर के पितरो को गुड़ का मलीदा ।

—घर के आदमियों के प्रति उपेक्षा बरती जाय तब ।

—परिजनों की अपेक्षा पराये व्यक्तियों का अधिक सत्कार करने पर ।

पाठा : **घर रा देव नै तेल रौ तेवड़ ।** घर के देव को तेल का प्रसाद ।

**घर रा पीरां आगै तेल रौ मलीदौ ।** घर के पीरों की खातिर तेल का मलीदा ।

**घर रा पूत कंवारा डोलै, पाड़ौसी नै फेरा भावै ।** ३९८३

घर के पूत कुँआरे डोलें, पड़ोसी को भॉवर की चाह ।

दे.क.सं.३९८०

**घर रा बडेरा नीं मरता तौ अेक गांव बस जातौ ।** ३९८४

घर के पुरखे नहीं मरते तो एक गॉव बस जाता ।

—'ऐसा न हो तो वैसा हो जाय'—इस तरह की बात करने वाले के प्रति व्यंग्य ।

—होनहार को टालने की बात करना व्यर्थ है ।

—असंभव बात की कामना करना नितांत नादानी है ।

**घर रा बळद, किणी गैल पड़ौ ।** ३९८५

घर के बैल, किसी भी राह चलें ।

—घर के बैल किसी भी राह चल पड़ें तो आखिर घर पहुँच ही जाते हैं,इस में कभी भूल नहीं होती ।

—घर का विश्वस्त व्यक्ति देर-सबेर काम आता ही है, चाहे वह कहीं भी रहे—वक्त पर सार-सँभाल कर लेता है।

—घर का आदमी कहीं भी जाय, अंतत. घर लौटता ही है।

**घर रा बेरा में कोई धेंग देणां सूं तौ रह्या !** ३९८६

घर के कुएँ मे कोई धमाक देने से तो रहे !

—घर का कुऑ भी धमाक देने से चोट तो पहुँचाएगा ही।

—आत्मीयता के नाते ही किसी को नुकसान करने का अधिकार नही मिल जाता।

—सोने की कटारी कोई पेट मे खाने के लिए नही होती।

—परिजन यदि कष्ट पहुँचाए तो फिर वह दुश्मन के समान ही है।

**घर रा रह्या नीं घाट रा।** ३९८७

घर के रहे न घाट के।

—धोबी के कुत्ते की न घर पर पूछ न घाट पर।

—दुविधा जनक स्थिति मे जब कोई मनुष्य न घर का रहे और न घाट का।

—जो व्यक्ति दोनो दीन से जाकर कही का न रहे।

**घर रा लूणा चाटै अर पांवणा नै पोळी भावै।** ३९८८

घर वाले झाडन चाटे और मेहमानो को पकवान चाहिएँ।

लूणौ = चाकी मे चिपटे आटे को अच्छी तरह झाड-पोछकर साफ करने वाला कपडा।

दे क स ३९८०

**घर री आधी ई भली।** ३९८९

घर की आधी ही भली।

—परिवार के आत्मीय-जनो से दूर रहकर दिसावर की पूरी रोटी यानी कमाई के बदले घर की आधी कमाई भी बेहतर है।

—दूसरो के यहाँ आश्रित रहकर कमाने की अपेक्षा आजादी की आधी भूख ज्यादा अच्छी है।

—स्वतत्र तबीयत के व्यक्ति का लक्षण।

**घर री खांड किरकिरी लागै, चोरी रौ गुळ मीठौ।** ३९९०

घर की खाँड किरकिरी लगे, चोरी का गुड़ मीठा।

—हर व्यक्ति की नजर में अपने घर की बजाय दूसरों की वस्तुएँ ज्यादा आकर्षक लगती हैं, यह स्वाभाविक है।

—रात-दिन के संपर्क से अपनी चीजों के प्रति उदासीनता हो ही जाती है।

—जो लंपट व्यक्ति अपनी सुंदर पत्नी को छोड़कर परकीया के लिए तरसता हो।

**पाठा : घंर री खांड किरकिरी लागै, हाट्टां रौ गुळ मीठौ।**

घर की खाँड किरकिरी लगे, हाट का गुड़ मीठा। यानी पत्नी की बजाय बाजारू औरत या वेश्या अच्छी लगे।

**घर री खावै, सदा सुख पावै।** ३९९१

घर की खाये, सदा सुख पाये।

—जो व्यक्ति दूसरों का मोहताज न हो—यही सबसे बड़ा सुख है।

—घर की आवश्यकताओ का घेरा अपने घर तक ही सीमित रहे—यानी किसी का भी उस पर ऋण न हो, भला उससे बढ़कर सुखी और कौन हो सकता है ?

—संतोषी सदा सुखी।

**घर री खेती।** ३९९२

घर की खेती।

—सहज प्राप्य वस्तु के लिए।

—अपनी मेहनत के अलावा जो व्यक्ति दूसरों से कुछ भी आशा न रखे।

—जो व्यक्ति अपने हाल में मस्त हो।

—एक छिपा सकेत यह भी कि जो मनुष्य पर-स्त्री गमन न करे।

**घर री गाय नै घर रा ई गोधा।**—व.२२६ ३९९३

घर की गाय और घर के ही साँड।

गोधा = खोदा = बिना बधिया किया हुआ बैल।

—जो आत्मनिर्भर व्यक्ति किसी भी तरह दूसरे का आश्रित न हो।

—कोई घनिष्ठ मित्र या परिजन परोक्ष-अपरोक्ष रूप से लाभ उठा ले तो मन को समझाने के लिए इस उक्ति का प्रयोग होता है।

—पारिवारिक दुराचार के प्रति भी परोक्ष संकेत।

**घर री गाय रौ घी सौ कोसां ईं खाईजै।** ३९९४

घर की गाय का घी सौ कोस तक खाया जा सकता है।

—घर पर किसी को घी-दूध खिलाने पर सौ कोस दूर भी उसको घी-दूध ही मिलता है।

—जो अपने घर पर आदर-सत्कार का आदी है,वह दूसरों के यहाँ वैसा ही आदर-सत्कार पाता है—चाहे कितनी ही दूरी क्यों न हो।

मि.क.सं.८९६

**घर री घरौट इज अैड़ी है।** ३९९५

घर का चलन ही ऐसा है।

—किसी घर की एक संतान के बारे में कोई निंदा करे,तब कोई जानकार सुनने वाला कहता है कि एक ही क्या इस घर के तो सभी सदस्य एक-से-एक बढ़कर हैं।

**घर री छाछ गांव वाळां नै घालै।** ३९९६

घर की छाछ गाँव वालो को डाले।

—अपने बिलौने की छाछ घरवालों के उपयोग से ज्यादा होती है,इस कारण जो भी माँगने आता है,उसे सहज भाव से छाछ डाल देते हैं। गाँवों में पहले यह आम रिवाज था।

—जो व्यक्ति अपने घर की चीज दूसरों के निमित्त बरते।

**घर री छीज, लोक री हांसी।** ३९९७

घर की दाह, लोक का खिलवाड़।

दे.क.सं.३३७५

पाठा: घर री हांण, जगत में हांसी। घर की हानि,जगत में ठिठौली।

**घर री छोड पराया री माखी उडावै।** ३९९८

घर की बजाय दूसरों की मक्खी उड़ाये।

—जो लापरवाह व्यक्ति अपनी चिंता न करके दूसरों की चिंता करे।

—अव्यावहारिक व्यक्ति के लिए।

**घर री जूती नै घर रौ ई माथौ।** ३९९९

घर की जूती और घर का ही सिर।

—अपने ही हाथों अपना अहित करने वाले के प्रति।

—घरवालों के द्वारा नुकसान दिये जाने पर।

**घर री डाकण घर रां नै ई खाय।** ४०००

घर की डायन घरवालो को ही खाये।

—जिस व्यक्ति के द्वारा घरवालों को ही बार-बार क्षति पहुँचे।

—जो कुटिल व्यक्ति परिवार के सगे-संबंधियों को ही ठगे।

**घर री दाळ-रोटी सिरै।** ४००१

घर री दाल-रोटी अच्छी।

—दूसरों के उम्दा पकवानों की अपेक्षा घर की रूखी-सूखी बेहतर है।

—दूर-विदेश की कमाई का लोभ छोड़कर जो व्यक्ति अपने ठिकाने ही संतुष्ट हो।

मि.क.सं.३९८९

**घर री बेटी, किण सूं हेटी।** ४००२

घर की बेटी, किससे हेटी।

हेटी = बुरी, अयोग्य।

—अपनी चीज किसे भी बुरी नहीं लगती।

—रूप या अच्छाई वस्तु में नहीं होती, देखने वालों की दृष्टि में होती है।

**घर री मां नै डाकण कुण कैवै ?** ४००३

अपनी माँ को डायन कौन कहे ?

—अपनी चीज की बुराई कोई नहीं करना चाहता।

—अपने परिजन व मित्रों के दोष नजर नहीं आते।

**घर री मुरगी दाळ बिरौबर।** ४००४

घर की मुर्गी दाल बराबर।

—अपनी चीज की कद्र नहीं होती या उसका मूल्य नहीं आँका जाता।

—अपनों की अच्छाइयाँ नजर नहीं आतीं।

—घर की मुर्गी को जब चाहो काटकर पकाया जा सकता है,उस में अधिक सोचने-विचारने की जरूरत नहीं,वह तो दाल की नाईं सहज प्राप्य है।

—पत्नी के साथ जब मन करे कामेच्छा की तृप्ति हो सकती है,पर दूसरी औरत का सहवास मुश्किल है।

**घर री रोटी खाय बेगार क्यूं काढ़णी ?** ४००५

घर की रोटी खाकर बेगार क्यों करनी ?

दे.क.सं.३९७५

**घर री रोटी बारै खावणी।** ४००६

घर की रोटी बाहर खाना।

—अपने घर पर दूसरों का आदर-सत्कार करने वाला दूसरों के यहाँ वैसा ही आदर सत्कार पाता है।

—जैसा खिलाओगे,वही खाओगे।

मि.क.सं.३९९४

**घर रै आंगणै बोरड़ी नीं लगावणी।** ४००७

घर के आँगन में बेर नही लगाना चाहिए।

—कँटीला पेड़ होने के कारण हर वक्त काँटों की परेशानी रहती है।

—हीन या दुष्ट व्यक्ति को अपने घर में आश्रय नहीं देना चाहिए।

मि.क.सं.३९३९

**घर रै चोटी-बढ़िये री बेगार ई चोखी।** ४००८

घर के दास की बेगार भी अच्छी।

—दूसरों की अच्छी नौकरी से घर के दास की बेगार भी बेहतर है।

—निठल्लेपन की बजाय घर के नौकर की बेगार भी उत्तम है।

**घर रै चोर रा खोज कोनीं चालै।** ४००९

घर के चोर के पदचिह्न नही चलते।

—चोर को पकड़ने में उसके पदचिह्न सहायक होते हैं। पर घर का चोर तो घर में ही रह जाता है फिर उसके पदचिह्नों का बाहर कैसे पता चले!

—घर का व्यक्ति चोरी करे तो पकड़ पाना मुश्किल है।

**घर रै देवां आगै तेल रौ मलीदौ करौ छौ।**–व.३७१ ४०१०

घर के देवताओ की खातिर तेल का मलीदा कर रहे हो।

दे.क.सं.३९८२

**घर रौ ई नंद-बाबौ अर घर री जसोदा।** ४०११

घर का ही नंद-बाबा और घर की ही यशोदा।

—जब घरवालों के द्वारा ही अपने व्यक्ति की पंचायती हो।

—घरवालो से काम करवाना मुश्किल नहीं होता।

**घर रौ खाय गांव रा ढोर उछेरना।** ४०१२

घर का खाकर गॉव के ढोर चराना।

—मुफ्त की बेगार करने वाले व्यक्ति पर कटाक्ष।

—बिना मजदूरी दिये किसी से एक बार ही काम लिया जा सकता है, अधिक नहीं।

—घर की क्षति उठाकर समाज की सेवा आखिर कब तक चलेगी ?

**घर रौ गमाय गैलौ बाजणौ।** ४०१३

घर का खोकर पागल कहलवाना।

—घर का माल उड़ाकर ऊपर से बेवकूफ कहलवाना कहॉ तक संगत है!

—लोग माल खा जाते हैं और पागल करार कर जाते हैं। दुहरा नुकसान।

**घर रौ गमायां आंख्यां उघड़ै।** ४०१४

घर का खोने से ही ऑखे खुलती हैं।

—अपने हाथों घर का नुकसान करने से ही सबक मिलता है।

—घर का खोये बगैर अनुभव का लाभ नहीं मिल सकता।

**घर रौ गांजौ नै घर री चिलम।** ४०१५

घर का गाँजा और घर की ही चिलम।

—मौज करने वाले को इससे बढ़िया और क्या सुयोग चाहिए?

—बाप की मिलकियत फूँकने वाले पर व्यंग्य।

**घर रौ गोपीचंदण ई गमायौ।** ४०१६

घर का गोपीचंदन ही गँवाया।

दे.क.सं.३४२१

**घर रौ घरकूलियौ कर न्हाकियौ।** ४०१७

घर का घरौंदा कर डाला।

—घर का सत्यानाश हो जाय तब।

—जिस व्यक्ति के हाथों देखते-देखते घर की बर्बादी हो।

**घर रौ चांनणौ।** ४०१८

घर का उजियारा।

—होनहार व्यक्ति के लिए।

—जिस वंश में फकत एक ही बच्चा उत्तराधिकारी के नाम पर बचा हो।

**घर रौ छोरौ अर बारलौ वींद।** ४०१९

घर का छोकरा और बाहर का दूल्हा।

दे.क.सं.३४२७

**घर रौ जोगी जोगड़ौ अर आंण गांव रौ सिद्ध।** ४०२०

घर का जोगी जोगना और आन गाँव का सिद्ध।

—घरवालों की दृष्टि में जब अपने व्यक्ति का आदर न हो।

—प्रतिभा की घर में नहीं बाहर ही कद्र होती है।

मि.क.सं.३४२३

**घर रौ धणी नै घर में मत जा।** ४०२१

घर का मालिक और घर में मत जा।

—घर के मालिक की घर में ही पाबंदी होने पर।

—अधिकृत व्यक्ति को उसके अधिकारों से वंचित कर देने पर।

—समाज की अराजकता का चित्रण।

—दादागिरी करने वालों के लिए कुछ भी न्याय-संगत नहीं होता।

**घर रौ धणी हूं नै बारै निकळ थूं।** ४०२२

घर का मालिक मैं और बाहर निकल तू।

—किसी घर में भूत-प्रेत का उत्पात होने पर घर का स्वामी उसे बाहर निकालने का प्रयास करे तब!

—वक्त आने पर बाप के घर में बेटों की दखलंदाजी हो जाती है तब।

—मनमानी करने वाले व्यक्ति के लिए।

—जो व्यक्ति बुजुर्गों का बात-बेबात अनादर करे।

**घर रौ नांणौ खोटौ तौ पारखू के करै?** ४०२३

घर का सिक्का ही खोटा तो पारखी क्या करे?

—बिगड़े हुए लड़के की लोग बदनामी करें तो इस में असंगत कुछ भी नहीं।

—अयोग्य लड़का किसी भी काम में सफल न हो तो किसे दोष दिया जाय?

—जब अपने में ही पानी मरे तो दूसरों के सामने आँख नहीं उठाई जा सकती।

**पाठा : घर रौ गैणौ ई खोटौ, पछै सराफ रौ कांई दोस!**

घर का गहना ही खोटा तो फिर सर्राफ का क्या दोष!

**घर रौ भेदी चोर।** ४०२४

घर का भेदिया चोर।

—घर के भेद बगैर चोरी नहीं हो सकती। इसलिए असली चोर घर का भेदिया ही होता है।

मि.क.सं.३९२९

**घर रौ भेदू लंका ढाहै।** ४०२५

घर का भेदी लंका ढाहे।

—घर का व्यक्ति शामिल हुए बिना घर का सर्वनाश नहीं होता।

—घर-परिवार तो छोटी बात अब तो राष्ट्र के भेदी ही राष्ट्र को निर्मूल नष्ट करने पर तुले हैं।

दे.क.सं.३९२९

**घर रौ रह्यौ नीं गांव रौ।** ४०२६

घर का रहा न गाँव का।

—जिस व्यक्ति का कहीं आदर न हो। जो किसी का प्रिय-पात्र न हो।

—सर्वथा उपेक्षित व्यक्ति के लिए।

**घर रौ संज-सूत ई भलौ।** ४०२७

घर का साधन ही बेहतर।

—आत्म-निर्भर व्यक्ति के लिए।

—हर व्यक्ति को अपने साधनों पर ही निर्भर रहना चाहिए।

**घरवाळां नै दोरी लागै, पारकां रै कांई पीड़?** ४०२८

घरवालों को अखरती है, परायो को कैसी पीड़ा?

—घरवालों को ही अपने व्यक्ति की बदनामी बुरी लगती है, दूसरे तो उसके प्रति निपट उदासीन ही रहते हैं।

—वक्त पर घरवाले ही बुरा-भला कहते हैं, पराये तो मन सुहाती बात भर करते हैं।

—अपनों के भले-बुरे का खयाल केवल घरवालों को ही होता है, परायों को उसकी क्या चिंता।

**घरवासै री रांड अर खोळा रौ छोरौ के न्याल करै?** ४०२९

रखैल औरत और गोद आया लड़का कुछ निहाल नहीं करते।

—स्वार्थ की खातिर आत्मीयता का दिखावा करने वालों पर निर्भर नहीं किया जा सकता, वे कतई विश्वस्त नहीं होते।

—निस्वार्थ प्रेम के द्वारा ही त्याग संभव है।

**घर व्है जठै कजिया ई व्है।** ४०३०

घर होते हैं वहाँ झगड़ा भी होता है ।

—विभिन्न समझ व विभिन्न स्वभाव के कारण परिवार में कलह होना स्वाभाविक है ।

—घर एक होने पर भी निहित स्वार्थों के बीच टकराव को रोका नहीं जा सकता ।

—घर में फसाद होना परिवार का अभिन्न अंग है ।

**घर व्है जठै तारत ई व्है।** ४०३१

घर हो वहाँ शौचालय भी होता है ।

—हर घर में भले व्यक्तियों के बीच कोई-न-कोई बुरा भी होता है,सबके सब अच्छे नहीं होते ।

—हर व्यक्ति में गुण के साथ अवगुण भी होता है ।

दे.क.सं.३८९२

**घर व्है जठै निचारौ ई व्है।** ४०३२

घर होता है वहाँ निचारा भी होता है ।

निचारा = रसोई के बरतन साफ करने का स्थान,जहाँ राख या महीन रेत रखी होती है ।

दे.क.सं.३८९२,४०३१

**घर संपत वोळायनै, दर-दर मांगै भीख।** ४०३३

घर की संपत्ति खोकर, दर-दर माँगे भीख ।

—सोच-समझकर नहीं चलने से बाद में कष्ट उठाना ही पड़ता है ।

—अपव्ययी को अंत में भीख माँगने के लिए मजबूर होना पड़ता है ।

—हर कदम फूँक-फूँककर रखने से ही गृहस्थ की गाड़ी चलती है,वरना वहीं अटकी रह जाती है ।

**घर सारू गनायत के गनायत सारू घर।** ४०३४

घर के लिए संबंधी या संबंधी के लिए घर ।

दे.क.सं.३८९८

**घर-सासू धुर-कुत्ती, ऊभा रौ धोबण-वूजी पगां लागूं।** ४०३५

घर की सास को दुत्कार, धोबन-माई का सत्कार ।

—जो व्यक्ति अपने परिजनों की प्रताड़ना व दूसरे लोगों का जरूरत से ज्यादा आदर करे।

—घरवालों के प्रति तिरस्कार व दूसरों के प्रति सम्मान रखने वाले नासमझ या अव्यावहारिक व्यक्ति के लिए।

**घर सुधार्‌यां गांव सुधरै।** ४०३६

घर सुधरने से गॉव सुधरता है।

—हर व्यक्ति को पहले अपने घर का ध्यान रखना चाहिए। घर का ध्यान रखने से गाँव का ध्यान तो अपने-आप ही रह जाता है, क्योंकि घर गाँव का ही अभिन्न अंग है।

—इस प्रसंग में दो दृष्टिकोण हैं—एक : गाँव सुधरने से घर स्वत: सुधर जाता है। दूसरा : घर सुधरने से गाँव सुधरता है। दूसरा दृष्टिकोण ज्यादा मनोवैज्ञानिक है और स्वाभाविक है, क्योंकि व्यक्ति को गाँव की अपेक्षा घर से ज्यादा लगाव होता है, वह घर के लिए प्रतिबद्ध है। गॉव का खयाल रखने वाले बिरले ही होते हैं।

**घर सुवावतौ खावणौ नै लोक सुवावतौ पैरणौ।** ४०३७

घर सुहाता खाना और लोक सुहाता पहिनना।

दे.क.सं.२८२२

**घर सूं घर कोनीं चालै।** ४०३८

घर से घर नही चल सकता।

—कोई भी व्यक्ति अपने पास से दूसरों के घर की सारी आवश्यकताएँ पूरी नहीं कर सकता, चाहे वह कितना ही आत्मीय क्यों न हो।

—अपना घर तो आखिर अपने ही बल-बूते पर चलता है।

**घर सूं ढाणी उतरी, जितरौ ढाणी सूं घर।** ४०३९

घर से ढाणी उतनी, जितना ढाणी से घर।

ढांणी = एक या एक से अधिक कच्चे मकानों की वह बस्ती जो गॉव से दूर खेत में बसी हुई होती है।

—यह कहावत दो विपरीत अर्थों को संकेतित करती है—पारस्परिक निकटता के साथ-साथ आपसी अनबन को भी प्रकट करती है कि परस्पर मन-मुटाव होने पर दो सगे-संबंधी या मित्रगण एक दूसरे से समान ही दूरी का अनुभव करते हैं।

—जब दो कसूरवार किसी भी सूरत में एक-दूसरे से कम न हों।

**पाठा : घर सूं बाड़ौ, जित्तौ बाड़ै सूं घर।** घर से बाड़ा, जितना बाड़े से घर।

**घर सूं बेरौ, जित्तौ बेरा सूं घर।** घर से कुआँ, जितना कुएँ से घर।

**घर सूं दीधौ नीं दांन, देतां पग आडौ करै।** ४०४०

घर से दिया नहीं दान, कोई दे तो अड़ंगा लगाये।

—जो व्यक्ति न तो खुद किसी का भला करे और न दूसरों को करने दे।

—जो दुष्ट व्यक्ति दूसरों के द्वारा की गई भलाई को कतई बर्दाश्त न कर सके।

**घर सूं बेटी नीसरी, भावै जम ल्यौ अर भावै जंवाई।** ४०४१

घर से बेटी विदा हुई, उसे चाहे यम ले जाये चाहे दामाद।

—विवाह होने के बाद लड़की माँ-बाप से दूर हो जाती है, वह दूरी चाहे दामाद के द्वारा हो चाहे यमराज के द्वारा, घरवालों को उससे कोई सरोकार नहीं।

—जो चीज अपने हाथ से गई—वह चाहे निकट संबंधी के हाथ लगे चाहे किसी चोर के, इस से कुछ भी फर्क नहीं पड़ता।

—अपनी जिम्मेवारी समाप्त होने पर चाहे कुछ भी क्यों न हो, अपनी बला से।

**घर हलावै तौ घर रौ बैरी, गांव हलावै तौ गांव रौ बैरी।** ४०४२

घर का अगुवा घर का बैरी, गाँव का अगुवा गाँव का बैरी।

—न घर चलाने वाला अगुवा सभी घरवालों को खुश रख सकता है और न गाँव चलाने वाला अगुवा सारे गाँव को खुश रख सकता है। तब असंतुष्टि के वातावरण में खीज प्रकट होना स्वाभाविक है।

—जिम्मेवारी का जितना दायरा होता है, उसीके अनुरूप बदनामी का दायरा भी होता है।

**घर हीणौ दीजै पण वर हीणौ मत दीजै माय।** ४०४३

घर भले ही कमजोर हो पर कमजोर वर को मत देना मेरी माँ।

—एक कन्या के लिए घर की दरिद्रता सहन हो सकती है, पर पति की दरिद्रता सहन नहीं हो सकती—वह दरिद्रता चाहे उम्र की हो, पौरुष की हो, शिक्षा की हो, चाहे अन्य गुणों की।

—पति अच्छा मिले तो घर सुधर सकता है और इसके विपरीत घर अच्छा मिले और पति खराब हो तो घर बिगड़ते देर नहीं लगती।

—घर की आर्थिक स्थिति की बजाय पति के वैयक्तिक गुण कहीं ज्यादा माने रखते हैं।

**पाठा : घर हांण जोय लेणौ पण वर हांण नी जोवणौ।**

घर में क्षति भले ही हो, पर वर में क्षति नहीं होनी चाहिए।

**घर माड़ौ खटै पण वर माड़ौ नीं खटै।**

घर कमजोर चल सकता है, पर वर कमजोर नहीं चल सकता।

**घर हांण दीजै पण वर हांण नंह दीजै।**

**घरां-घरां ने गामा-गामा कणको खोड़ती है।**– भी. २२७ ४०४४

घर-घर और गाँव-गाँव में अन्न बीनती है।

—चंचल प्रवृत्ति वाले मनुष्य के लिए जो कहीं एक ठौर जमकर नहीं रहता।

—कुलटा औरत के प्रति कटाक्ष जो ठौर-कुठौर मुँह मारती है।

**घरांणै कुपातर किसा नीं जलमै ?** ४०४५

कुलीन घर में कुपात्र पैदा नहीं होते क्या ?

—किसी कुलीन घर में दुर्जन पैदा हो तब !

—कुलीनता का दावा हमेशा के लिए सही नहीं होता।

—अच्छाई के साथ बुराई अपने-आप पैदा होने लगती है।

**घरै अंधारौ नै चौबारै दीवौ करै।** ४०४६

घर में अंधेरा और दूर चौक में दीपक जलाये।

—जो व्यक्ति अपने घर के प्रति निपट लापरवाह हो और दूसरों का भला करने में मशगूल हो।

—मिथ्या प्रदर्शन करने वाले के लिए।

**पाठा : घरै अंधारौ अर मसीत में दीवौ।**

**घरै आयौ तौ गिंडक ई आदरीजै।** ४०४७

घर आये कुत्ते का भी आदर होता है।

—घर आये कुत्ते को भी रोटी डाली जाती है, फिर मनुष्य का तो कहना ही क्या?

—घर पर चलकर आये हर अकिंचन व्यक्ति का भी यथोचित सम्मान होना चाहिए।

मि.क.सं.३८७९,३८८२

**घरै आयौ, मां जायौ।** ४०४८

घर पर आया सो माँ का जाया।

—जो भी व्यक्ति घर पर आये वह सगे भाई के समान ही सत्कार का पात्र है, चाहे वह विरोधी या दुश्मन ही क्यों न हो।

—आतिथ्य-सत्कार के प्रति सीख।

दे.क.सं.४४७,३८८२

पाठा: **घरै आयौ नै मां जायौ बिरौबर व्है।** घर आया मेहमान सगे भाई के समान।

**घरै आयौ सो ई पांवणौ।** ४०४९

घर आये वही मेहमान।

—घर पर कैसा भी अजाना व्यक्ति आये, वह मेहमान है।

दे.क.सं.३८८२

**घरै इज मद, घरै ई मतवाळ।**–व.२२५ ४०५०

घर ही शराब और घर के ही शराबी।

—जिस घर में सभी व्यक्ति बावले या मदांध हों।

—जिस खानदान के छोटे-बड़े सभी सदस्य बौराये हुए हों।

**घरै कांम, कूडै विसरांम।** ४०५१

घर पर काम, कुएँ पर विश्राम।

—कामचोर व्यक्ति के लिए जो काम के बहाने केवल मुँह छिपाता रहे।

—जो निठल्ला व्यक्ति हाथ के काम को छोड़कर अदृष्ट काम की जिम्मेवारी लेने की उत्सुकता दिखलाये।

**घरै खीर तौ बारै ई खीर।** ४०५२

घर पर खीर तो बाहर भी खीर।

—अपने घर पर दूसरों को बढ़िया भोजन खिलाने पर बाहर भी बढ़िया भोजन खाने को मिल जाता है।

मि.क.सं.३९९४,४००६

**घरै घट्टी नै पर घर दळवा जाय।** ४०५३

घर पर चाकी और पराये घर दलने जाय।

दे.क.सं.३९४२

**घरै घांणी नै तेली लूखौ क्यूं खावै?** ४०५४

घर पर कोल्हू और तेली रूखा क्यों खाये?

—किसी चीज के रहते उसके अभाव की पीड़ा क्यों सही जाय?

—पहुँच की सीमा में कोई भी चीज हो तो उसका उपयोग करना ही पड़ता है।

**घरै घोड़ौ नै पाळौ जाय।** ४०५५

घर पर घोड़ा और पैदल जाये।

—जो नादान व्यक्ति खुद की चीज को भी समय पर काम न ले सके।

—वह अभागा व्यक्ति जो वस्तु के रहते अभाव का कष्ट सहे।

मि.क.सं.४०५४

**घरै छत्ती मोगरी, टाबर कूटायां मरै।** ४०५६

घर पर सलामत डंडा और बच्चे पिटने को तरसें।

—जिस घर में बच्चों पर नियंत्रण रखने वाला न हो।

—जिस घर में व्यवस्था का अभाव हो।

**घरै जावूं तौ घर रा कूटै, बारै कूटै छौरा।** ४०५७
**खेतां में देनगिया कूटै, लारै कूटै बौरा॥**

घर जाऊँ तो घरवाले पीटें, बाहर पीटें लड़के।

खेतों में मजदूर पीटें, बोहरे पीटें तड़के॥

—जिस व्यक्ति का रोम-रोम ऋण से ग्रस्त हो।

—कर्जदार के जी को कहीं भी चैन नहीं मिलता।

**घरै जावूं तौ रांड खावै, बारै जावूं तौ धाड़वी।** ४०५८

घर जाऊँ तो राँड खाये, बाहर जाऊँ तो डाकू।

—जिस व्यक्ति के लिए न घर के भीतर और न बाहर बचने की गुंजाइश हो।

—दुविधा-जनक स्थिति का चित्रण।

**घरै तौ घाट ई चाट-चाटनै खावै, पण पराये घरां, भरिये भांणै चळू** ४०५९
**करै।**

घर पर तो दलिया ही चाटकर खाये पर पराये घर भरे थाल में कुल्ली करे।

—जो व्यक्ति घर की तो जरूरत से ज्यादा चिंता करे, पर दूसरों के घर की नितांत उपेक्षा करे। उनकी बड़ी-से-बड़ी हानि की कोई परवाह तक न करे।

—बाहर झूठा प्रदर्शन करने वाले व्यक्ति पर कटाक्ष।

—जिस व्यक्ति की दृष्टि में अपने-पराये का बेइंतहा भेद हो।

**घरै धीणौ' र लूखौ खाय!** ४०६०

घर पर गायो का घी और रूखा खाये!

—जो व्यक्ति अपनी इच्छा से कष्ट उठाये।

—जो अभागा या कंजूस बहुलता के बीच तंगी भोगे।

मि.क.सं. २४७६, ४०५४

**घरै फाका नै बारै बांका।** ४०६१

घर पर फाके और बाहर बाँके।

—अपनी स्थिति का झूठा दिखावा करने वाले व्यक्ति के लिए।

मि.क.सं. ३९४६, ३९५१, ३९५६

**घरै बावळा नै बारै स्यांणा।** ४०६२

घर पर बावला और बाहर सयाना।

—घर का काम रंचमात्र भी न सँभालने के बावजूद जो व्यक्ति बाहर दूसरों को समझदार लगे।

—जिस व्यक्ति की घर पर कुछ न चले और बाहर पंचायती करे।

**घरै बोलै डोकरा नै बारै बोलै छोकरा।** ४०६३

घर पर बोलें सयाने, बाहर बोलें नादान।

—घर पर बूढ़े-बुजुर्ग जैसी चर्चा करते हैं, बच्चे बाहर उसीको दुहराते हैं।

—घर के वातावरण पर ही बच्चों का व्यवहार निर्भर करता है।

—बच्चों की असली शिक्षा तो परिवार में ही होती है।

**घसमस घांणी, आधौ तेल नै आधौ पांणी।** ४०६४

घसर-पसर घानी, आधा तेल व आधा पानी।

घांणी = घानी = कोल्हू।

—अस्त-व्यस्त काम हो जाने पर।

—जिस व्यक्ति में कार्य करने की कतई कुशलता न हो।

—जिस व्यक्ति के काम में कोई तारतम्य न हो।

# घां - घो

**घांणी आळौ बळद।** ४०६५

कोल्हू का बैल।

—एक ही बँधे दायरे में घूमने वाला व्यक्ति।

—भटकने के साथ जिस व्यक्ति में नया अनुभव नाम मात्र को भी न जुड़े।

—कोल्हू के बैल की तरह दिन-भर चलने के बावजूद जो व्यक्ति कुछ भी दूरी तय नहीं कर सके।

—जो व्यक्ति दिन भर के काम-काज से मुक्त न हो।

**घांणी रा बळद नै घर ई कोस पचास।** ४०६६

कोल्हू के बैल को घर भी कोस पचास।

—घर की जरूरतों को पूरा करने के लिए जो व्यक्ति रात-दिन भटकता रहे।

—घर के लिए खटने का चक्कर भी कोई मामूली चक्कर नहीं होता।

**घांणी रा बळद नै बाळदौ क्यों?**—व. ३५० ४०६७

कोल्हू के बैल को झुंड के संग की क्या जरूरत?

—कोल्हू के बैल की आँखें बंद रहती हैं और वह एक ही जगह दिन-भर घूमता रहता है, फिर उसे दूसरे बैलों के साथ की दरकार ही क्या?

—निसंग व्यक्ति के लिए किसी का भी साथ कुछ माने नहीं रखता।

**घांणी रौ बळद है जठै ई फिरै।** ४०६८

कोल्हू का बैल वहीं चक्कर काटता रहता है।

—इधर-उधर बिना लक्ष्य के व्यर्थ भटकने वाला।

—निरर्थक अनुभवों की पुनरावृत्ति।

**घाघरा रा लपक लीरा अर नव सौ रिपिया !** ४०६९

फटा पुराना जर्जर लहँगा और दाम नौ सौ रुपये !

—मामूली वस्तु के दाम अत्यधिक बताने पर।

—जिस वस्तु की वास्तविक स्थिति और उसके मूल्य में कहीं किसी भी प्रकार का तालमेल न हो।

—मनमानी कीमत बताने पर।

**घाघरिया रौ गनौ।** ४०७०

लहँगे का रिश्ता।

—ससुराल की तरफ के रिश्ते—जैसे साला, साली, साढू इत्यादि।

—लहँगे के माध्यम वाले रिश्ते अधिक प्रिय होते हैं।

**घाट-घाट रौ पांणी पीधोड़ौ।** ४०७१

घाट-घाट का पानी पीया हुआ।

—दुनिया देखे हुए अनुभवी व्यक्ति के लिए।

—जो व्यक्ति किसी से ठगाया न जा सके।

—जो व्यक्ति अनेक औरतों के साथ सहवास कर चुका हो।

**घाटौ तद ई जांणिये जद करै पुरांणी बात।** ४०७२

घाटा तब ही जानिये जब करे पुरानी बात।

—अतीत की संपदा खोकर जो व्यक्ति वर्तमान की दयनीय अवस्था में पुराने ठाट को याद करे तब। वर्तमान की बजाय अतीत की स्मृतियाँ उसे अधिक सुखद लगती हैं।

—वर्तमान को अनदेखा करके जो व्यक्ति बीते जमाने का बखान करे तब समझ लेना चाहिए कि वर्तमान से जूझने की क्षमता चुक गई है।

**घायल री गत घायल जांणै ।** ४०७३

घायल की गति घायल जाने ।

—भुक्तभोगी ही अपने मन की व्यथा जानता है ।

—जिस पर गुजरती है वही उसका एकमात्र साक्षी है ।

**घालै जकौ ई खावणौ , मेलै उठै ई जावणौ ।** ४०७४

डाले वही खाना, भेजें वहीं जाना ।

—घर के बड़े-बूढ़ों का आदेश परिवार के हर व्यक्ति को मानना चाहिए ।

—एक की आज्ञा के बिना घर में अनुशासन नहीं रह सकता ।

**घालै दाढ़ में तौ आवै हाड में ।** ४०७५

डाले डाढ़ में तो आये हाड़ में ।

—अच्छी खुराक खाने से ही शरीर पुष्ट होता है ।

—जैसा पौष्टिक भोजन वैसा स्वास्थ्य ।

—जो दुर्बल व्यक्ति खाने में भी पूरी कंजूसी बरते ।

**घालौ-घालौ में काढ़ौ-काढ़ौ री लागी ।** ४०७६

डालो-डालो में निकालो-निकालो की रट लगी ।

—अकस्मात् किसी काम का एकदम रुख बदल जाने पर ।

—जल्दबाजी में कुछ भी सही निर्णय नहीं होता ।

**घाव तौ बैरी रा ई सरावणा चाहीजै ।** ४०७७

घाव तो बैरी के भी सराहने चाहिएँ ।

—बैरी का अच्छा निशाना खाकर भी उसकी प्रशंसा करनी चाहिए कि वह कैसा बहादुर या अचूक निशाने वाला है ।

—पूर्वग्रह से हटकर अच्छे-बुरे की परख होनी चाहिए ।

**घाव बिचै ओळूंबौ भारी ।** ४०७८

घाव की अपेक्षा टीस गहरी ।

—जिस घाव की कसक घाव से अधिक मर्माहत करे।

—आत्मीय के द्‌वारा पहुँचाये घात की चोट भले ही कम हो, पर उसकी तड़पन असह्य होती है। उसमें घाव के अलावा भी मानसिक पीड़ा रहती है।

**घाव भर जावै पण सैलांण नीं मिटै।** ४०७९

घाव भरने पर भी निशान नहीं मिटता।

—कड़वे बोलों की चुभन नहीं मिटती।

—क्षति की पूर्ति तो हो जाती है पर क्षति पहुँचाने वाले की याद बनी रहती है।

—समय व्यतीत हो जाता है पर अहितकर स्मृति नहीं मिटती।

**घाव माथै लूंण।** ४०८०

घाव पर नमक।

—दुखी व्यक्ति को छेड़कर और दुखी करना।

—मर्माहत स्थान पर फिर चोट पहुँचाना।

**घास खायां गुजारौ व्है तौ कुण नीं खावै?** ४०८१

घास खाने से गुजारा हो तो कौन नहीं खाये?

—मनुष्य की यह मजबूरी है कि वह घास खाकर अपना पेट नहीं भर सकता, वरना पशुओं की बारी ही नहीं आती।

—हर वस्तु से मनुष्य की हर जरूरत पूरी नहीं होती।

—यदि संभव हो तो मनुष्य किसी भी सीमा तक पतित हो सकता है।

**घास-फूस रौ तापणौ।** ४०८२

घास-फूस का ताप।

—अकिंचन वस्तु से बड़ी आवश्यकता पूरी नहीं होती।

—मन की आकांक्षाएँ घास-फूस के ताप की तरह क्षण-स्थायी होती हैं।

—संपत्ति की ऊर्जा, ज्ञान या अध्यात्म की अपेक्षा नगण्य है।

**घास वढ़ावौ भावै गैलै चलावौ, दैनगी खरी।** ४०८३

घास कटाओ चाहे राह चलाओ, मजदूरी खरी।

—जो व्यक्ति चाहे जो काम करले, पर अपनी मजदूरी का एक पैसा भी न छोड़ना चाहे।

—काम करवाने की स्वतंत्रता मालिक की है, पर मजदूरी का अधिकार मजदूर का है।.

**घास वाढ़वा जावै नै कसार रौ भातौ।** ४०८४

घास काटने जाय और कसार का पाथेय।

—हैसियत से अधिक दिखावा करने वाले व्यक्ति के लिए।

—काम की आवश्यकता से अधिक खर्च करना उचित नहीं।

**घिरत कबीरौ खायग्यौ, छाछ पीवै संसार।** ४०८५

घी कबीरा खा गया, छाछ पिये संसार।

—कबीर की तरह ज्ञानी संत ही जीवन के नवनीत का चरम-स्वाद ग्रहण करते हैं, बाकी बची-खुची छाछ के लिए व्यर्थ विवाद करते हैं।

—जीवन का वास्तविक सार—ज्ञान ही है, भौतिक समृद्धि नहीं।

**घिरत घिलोड़ी माय, बेटां नै जीमाय, दो दिन री खाटी छाछ, छोरयां नै पाय।** ४०८६

घी से भरा बासन, माँ बेटों को खिलाये, दो दिन की खट्टी छाछ, बेटियों को पिलाये।

—भविष्य में स्वार्थ की आशा होने पर दूसरों की बात तो दरकिनार माँ की ममता में भी सहज रूप से दुराव या पक्षपात पैदा हो जाता है। क्योंकि लड़के बड़े होने पर परिवार का जिम्मा सँभालते हैं और लड़की बड़ी होने पर दूसरों के घर चली जाती है।

—ममता, स्नेह तथा प्रेम ये सभी रागात्मक संबंध केवल स्वार्थ से संचालित होते हैं।

**घिरत जीमावै सास, दोयतड़ां री आस।** ४०८७

घी खिलाये सास, दुहितों की आस।

—स्वार्थ ही सब आदर-सत्कार, मोह और श्रद्धा का बीज-मंत्र है।

—आत्मीयता के प्रदर्शन की तह में स्वार्थ छिपा रहता है।

**घिरत बिना नीं सारणा, घर बिना नीं बारणा।** ४०८८

घी के बिना भोजन सपाट, घर के बिना नहीं खुलते कपाट।

—घी से उत्तम कोई भोजन नहीं, घर से उत्तम कोई ठौर नहीं।

—घी से शरीर पुष्ट होता है, घर से जी को चैन मिलता है।

**घिरत सुधारै खीचड़ी, नांव बहू रौ होय।** ४०८९

घी से सुधरे खिचड़ी, नाम बहू का होय।

—किसी दूसरे व्यक्ति के कारण किसी की झूठी प्रशंसा होने पर।

—मिथ्या यश-प्राप्ति पर कटाक्ष।

—तथाकथित बड़े आदमियों के पीछे प्रतिबद्ध निष्ठा किसी और की ही होती है।

**पाठा : घी संवारै सारणा, नांव बहू रौ होय।** घी सँवारे पक्वान, हो बहू का नाम।

**घिस-घिसनै गोळ व्है।** ४०९०

घिस-घिसकर ही गोल होता है।

दे.क.सं.३६०३

**घिसियां टाळ चिळक कठै?** ४०९१

घिसे बिना चमक कहाँ?

—अनुभवों की रगड़ से ही मनुष्य का तेज बढ़ता है।

—अनुभवों की निरंतर ठोकरें खाकर ही मनुष्य समृद्ध होता है।

**पाठा : घिसियां टाळ धार कठै?** घिसे बिना धार कहाँ।

**घी अंधारै ई छांनौ को रैवै नीं।** ४०९२

घी अँधेरे में भी छिपा नहीं रहता।

—मनुष्य में गुण हों तो वे कहीं भी छिपे नहीं रहते।

—प्रतिभा अंततः उजागर होकर ही रहती है।

दे.क.सं.३६२९

**घी आंगळियां तौ गुळ डळियां।** ४०९३

घी अँगुलियाँ तो गुड़ डलियाँ।

दे.क.सं.३६२८

**घी कठै गियौ के खीचड़ी में!** ४०९४

घी कहाँ गया कि खिचड़ी में!

—जो चीज जहाँ खर्च होनी है—वहीं होती है।

—जिस चीज की जहाँ उपयोगिता है, वहीं काम आनी चाहिए।

—पारस्परिक मेल वाली चीजें स्वतः मिल जाती हैं।

**घी, खांड नै आटौ, हिलावौ नै चाटौ।** ४०९५

घी, खाँड और आटा, हिलाया और चाटा।

—साधन-संपन्न व्यक्ति अकिंचन मेहनत करने पर भी ठाट से रह सकता है।

—जीवन के सभी साधन मौजूद हों तो जिंदगी आराम से बसर हो सकती है।

**घी खांणौ तौ पाग राखनै खावणौ।** ४०९६

घी खाना तो पगड़ी रखकर खाना।

—ऋण लेकर घी खाने से प्रतिष्ठा पर धब्बा लगता है।

—अपनी इज्जत बचाकर ही किसी मनुष्य को ऐश करना चाहिए।

—चार्वाक दर्शन से लोकबुद्धि का मेल नहीं खाता। चार्वाक ऋषि का उपदेश है कि ऋण लेकर भी ठाट से घी पीओ, जब जीना ही है तो सुख से जीओ।

**घी खातां ईं दूंगा में आंगळी घालै तौ किसी चीकणी व्है!** ४०९७

घी खाते ही गुदा में अँगुली डाले तो चिकनी थोड़े ही होती है!

—कोई भी कार्य वांछित अवधि के पहिले पूरा नहीं होता।

—अत्यधिक उतावली करने वाले व्यक्ति पर कटाक्ष।

**घी खायां चांनणौ व्है।** ४०९८

घी खाने से उजियारा होता है।

—घी खाने से स्वास्थ्य अच्छा रहता है तथा शारीरिक शक्ति बढ़ती है, जिसके फलस्वरूप पारिवारिक सुख-समृद्धि का आलोक बढ़ता है।

—स्वास्थ्य ही असली नियामत है, अतएव घी का माहात्म्य स्वयं सिद्ध है।

**पाठा : घी खायां आंख्यां री जोत बधै।** घी खाने से आँखों की ज्योति बढ़ती है।

**घी खावणौ सक्कर सूं, दुनिया ठगणी मक्कर सूं।** ४०९९

घी खाना शक्कर से, दुनिया ठगनी मक्कर से।

—दुनिया को धोखा देकर मौज करने वालों के लिए, जीने का यही मूल-मंत्र है। चार्वाक-दर्शन का इस कहावत में प्रतिपादन हुआ है।

**घी खीचड़ी रौ मेळ।** ४१००

घी खिचड़ी का मेल।

—समान स्तर के व्यक्तियों में ही मेल होता है।

—सिद्ध-साधक का योग जुड़ने से ही सिद्धि प्राप्त होती है।

**घी गुळ मीठौ के वींदणी?** ४१०१

घी गुड़ मीठा या दुलहन?

—लोक-बुद्धि के इस यक्ष-प्रश्न का उत्तर आसान नहीं है। फिर भी राजस्थानी के एक फागुन-गीत के अनुसार तो घी-गुड़ की अपेक्षा दुलहन का स्वाद कहीं ज्यादा मीठा होता है। तिस पर यदि घर में घी-गुड़ के साधनों की इफरात हो तो दुलहन का स्वाद और अधिक मीठा लगता है, साथ-ही-साथ दुलहन की वजह से घी-गुड़ का मिठास काफी बढ़ जाता है।

**घी घालतां कुण ना देवै?** ४१०२

घी डालते कौन मना करता है?

—किसी के साथ भलाई करो तो कौन इनकार करता है?

—सद्व्यवहार या सत्कार से भला कौन खुश नहीं होता?

**घी घालै जित्तौ ई स्वाद।** ४१०३

घी डाले उतना ही स्वाद।

—साधनों के अनुरूप ही सफलता का स्वाद मिलता है।

—खर्च के मुताबिक ही शेभा मिलती है।

मि.क.सं.३६२५

**घी घालै तौ आडै हाथां घालै, कह्योड़ौ कुण घालै?** ४१०४

घी डालेगा तो जबरन डालेगा, कहने से कौन डालता है?

—कोई किसी का आदर-सत्कार करता है तो प्रेम या श्रद्धा के वशीभूत होकर करता है, कहने से नहीं।

—इस कहावत का दूसरा अर्थ यह भी है कि स्वार्थ या भय के बिना कोई किसी की भलाई करने को तैयार नहीं होता।

पाठा: **घी पुरसैला तौ आडै हाथां पुरसैला, कह्योड़ौ कुण पुरसै?**

घी परोसेगा तो जबरन परोसेगा, कहने से कौन परोसता है?

**घी घालै तौ गोडा हालै।** ४१०५

घी डाले तो घुटने चलें।

—पौष्टिक पदार्थ खाने से ही शरीर चलता है।

—वृद्धावस्था में तो पौष्टिक भोजन के बिना शरीर एकदम जवाब दे जाता है।

मि.क.सं.४०७५

**घी घालै तौ घाल, नींतर खीचड़ी ठाडी व्है।** ४१०६

घी डाले तो डाल, वरना खिचड़ी ठंडी हो रही है।

—वक्त पर किये गये सहयोग की ही सार्थकता है।

—एहसान ही करना हो तो फिर पूरा ही करना चाहिए।

—उचित समय बीतने के बाद सहयोग का वह स्वाद नहीं रहता।

**घी घाल्योड़ौ तौ मूंगां में ईं दीस जावै।** ४१०७

घी डाला हुआ तो मूँगों में भी दिख जाता है।

—अच्छी चीज कहीं भी छिपी नहीं रहती, वह स्वतः प्रकट हो जाती है ।

—मनुष्य में गुण हों तो उजागर हो ही जाते हैं ।

मि.क.सं.४०९४

**घी ढुळग्यौ के म्हनै लूखी भावै ।** ४१०८

घी गिर पड़ा कि मुझे रूखी ही अच्छी लगती है ।

—अपनी झेंप मिटाने के लिए कोई व्यक्ति बात सँवारने की चेष्टा करे तब ।

—अपने हाथों की हुई गलती को सुधारने की चेष्टा करना ।

—थोथे आदर्श के बहाने जब कोई व्यक्ति अपनी मजबूरी छिपाये तब ।

**घी ढुळग्यौ तौ कांईं कुलड़ियौ तौ साबत है ।** ४१०९

घी गिर गया तो क्या, कुल्हड़ तो साबूत है ।

—जिस भूल-चूक का सहज ही निवारण हो सकता है, उसके लिए विवाद की क्या आवश्यकता !

—विवाद के फैसले का उपाय मौजूद हो तब झगड़ना संगत नहीं ।

**घी ढुळै तौ कीं कोनीं, पांणी ढुळै तौ पेट बळै ।** ४११०

घी गिरे तो कुछ नही, पानी गिरे तो पेट जले ।

—रेगिस्तान में घी की बजाय पानी का महत्त्व और उसकी उपयोगिता अधिक है । घी के बगैर तो साल भर खिंच सकता है, पर पानी के बिना एक दिन भी नहीं चल सकता । पानी होगा तो घी भी हो जाएगा ।

—जहाँ जिस वस्तु का अभाव होता है, वहीं उसका उचित मूल्य आँका जाता है ।

**घी ढुळ्यौ तौ ई मूंगां में ।** ४१११

घी गिरा तो भी मूँगों में ।

—अपनी क्षति से जब अपने ही लोग लाभान्वित हों तब इस कहावत का प्रयोग होता है कि चिंता जैसी कोई बात नहीं, क्योंकि क्षति बराबर हो गई ! या कोई आत्मीय ठगकर कुछ ले जाये तब ...!

—आपसी लेन-देन में कुछ कमी रह जाये तो इस उक्ति के द्वारा संतोष प्रकट किया जाता है।

**पाठा : घी ढुळग्यौ तौ ई मूंगा में, रांड कळपै क्यूं ?**

घी गिरा तब भी मूँगों में, बेकार चिंता क्यों कर रही है ?

**घी तेल नै आखर अेक।** ४११२

घी तेल आखिर एक।

—चिकनाई की समानता के कारण घी व तेल दोनों एक जैसे ही हैं।

—दो समान चरित्र व स्वभाव वाले व्यक्तियों के लिए।

**घी तौ घिलोड़ी मुजब, आटै रौ घाटौ नीं।** ४११३

घी तो घिलोड़ी के मुजब पर आटे का घाटा नहीं।

—जो व्यक्ति घर आये मेहमान को अपनी हैसियत मुताबिक रूखी-सूखी रोटी खिलाये बिना न जाने दे।

—जैसी आर्थिक-स्थिति वैसा ही आतिथ्य-सत्कार।

—घर की जैसी हैसियत होगी, घी या मिष्ठान्न तो उसीके अनुसार परोसा जाएगा पर मेहमान के लिए आटे की कोई कमी नहीं।

**घी तौ ढुळ्यौ पण कुलड़ौजी डाचका जबर खाया।** ४११४

घी तो गिरा पर कुल्हड़ को तकलीफ काफी हुई।

**संदर्भ-कथा :** एक बनिया पास के गाँव में घी बेचने के लिए जा रहा था। मार्ग में ठोकर खाने से बनिया गिर पड़ा। कुल्हड़ हाथ से छूट गया। कुल्हड़ का मुँह छोटा था। डब-डब की आवाज करते हुए घी को कुल्हड़ से बाहर निकलते बनिया एकटक देखता रहा। वृद्ध व कमजोर होने के कारण वह देरी से उठा तब तक घी सारा धूल में मिल चुका था। बनिया टसकता-टसकता घर की ओर रवाना हुआ। घरवाली उससे हमेशा झगड़ती रहती थी। इसलिए उसे खुश करने लायक कोई बहाना बनाना आवश्यक था। गिरने की सफाई देने के बाद उसने घरवाली को बताया कि घी तो धीरे-धीरे सारा निकल गया, पर कुल्हड़ को भी तकलीफ कम नहीं हुई। घी निकलने के साथ हर बार डब-डब की आवाज कर रहा था, जैसे उसके गले में घी फँस गया हो।

—बिगड़ी हुई बात को खामखाह सँवारने की निरर्थक चेष्टा करके मन बहलाना।

**घी दूध नजरां ना, धान खोड़्यानू।**–भी.२२८ ४११५

घी-दूध सँभालने पर और अनाज मेहनत पर।

—मवेशी की हरदम देखभाल करने और उन्हें समय पर चारा-बाँटा देने से ही दूध की मात्रा बढ़ती है और खेती अथक परिश्रम करने पर फलती है।

—आदिवासियों के सरल जीवन का कितना सरल विधान है, कहीं जटिलता नहीं। महत्त्वाकांक्षाएँ कितनी व्यावहारिक और सटीक हैं।

**घी नितर्‌यां लारै छंछेड़ू बचै।** ४११६

घी निथरने पर पीछे मैल बचता है।

छंछेड़ू = मक्खन गर्म करने पर जली हुई छाछ का अवशेष।

—किसी मंडली या टोली को कोई श्रेष्ठ व्यक्ति छोड़ दे तब बचे हुए सामान्य व्यक्तियों को लक्ष्य करके यह कहावत प्रयुक्त होती है।

—जिस चीज या व्यक्ति के अभाव से पीछे कुछ भी विशेष बात न रहे तब ...।

**घी नीं तौ कुप्पा ई बजावौ।** ४११७

घी नहीं है तो कुप्पे ही बजाओ।

—हताश व्यक्ति को जस-तस दिलासा देने के लिए कि घी का रोना न रोकर खाली कुप्पे बजा कर मन बहलाओ।

—किसी काम में असफल होने पर ...!

**घी बिना चूरमौ नीं बाजै।** ४११८

घी के बिना चूरमा नहीं कहलाता।

—वांछित खर्च के बिना किसी भी आयोजन की शोभा नहीं होती।

—यथा-योग्य गुण व दक्षता के बिना किसी भी व्यक्ति की ख्याति नहीं हो सकती।

—किसी अपरिहार्य व्यक्ति के अभाव की कमी खले तब ...!

**घी बिना लूखौ कसार, टाबर बिना सूनौ संसार।** ४११९

घी के बिना रूखा कसार, बच्चों के बिना सूना संसार।

कसार = गेहूँ के आटे को मामूली घी में सेकने के बाद धनिया डालकर गुड़ के पानी से कसार के लड्डू बनाये जाते हैं। अमूमन गरीब व्यक्तियों के उपयोग की चीज है।

—एक-दूसरे के माध्यम से संतान व कसार की महिमा व्यक्त करने के लिए इस कहावत का प्रयोग होता है।

—अपरिहार्य वस्तु की उपेक्षा करना उचित नहीं।

**घी में घी सगळा ई घालै, तेल में घी कुण ई नीं घालै।** ४१२०

घी में घी सभी डालते हैं, तेल में घी कोई नहीं डालता।

—संपन्न समर्थ व्यक्ति का सभी साथ देते हैं पर अभाव-ग्रस्त की कोई मदद नहीं करता।

—सुखी मनुष्य का सभी हाथ बटाते हैं, पर दुखी व्यक्ति की ओर कोई आँख उठाकर भी नहीं देखना चाहता।

—सच्ची बात का सभी समर्थन करते हैं, झूठी बात की कोई हिमायती नहीं करता।

**घी रौ घड़ौ ढुळ जावै तौ ई नाक सळ नीं घालै।** ४१२१

घी का घड़ा गिर जाय फिर भी नाक-भौंह न सिकोड़े।

—उदार व्यक्ति छोटे-बड़े नुकसान की परवाह नहीं करता।

—जो व्यक्ति न हानि पर चिंता करे और न लाभ पर खुश हो। फकत काम करते रहने के अलावा उसका कहीं और ध्यान बँटा हुआ न हो।

**घी रौ चूरमौ भैंरूंजी सींठां मारै।** ४१२२

घी के चूरमे को भैरव लानत भेजे।

—लोक-मान्यता के अनुसार भैरव को तेल का चूरमा ही मान्य समझा जाता है।

—जिस वस्तु से किसी को कभी वास्ता ही नहीं पड़ा, वह उसके स्वाद या महत्त्व को क्या समझे?

—अज्ञान-वश किसी अच्छी चीज का तिरस्कार करने पर।

**घी रौ नै खुदा रौ मूंडौ कुण देख्यौ?** ४१२३

घी और खुदा का मुँह किसने देखा?

—खुदा की तरह निर्धन व्यक्ति के लिए अच्छी चीजें सर्वथा अलभ्य होती हैं।

—गरीब व्यक्ति की लाचारी का चित्रण।

**घी रौ लाडू तौ बांकौ ई भलौ।** ४१२४

घी का लड्डू तो टेढ़ा भी अच्छा।

—जो वस्तु अपनी प्रकृति से ही अच्छी हो तो वह दिखने में खराब होने पर भी अच्छी ही रहती है।

—गुणी व्यक्ति यदि बदसूरत भी हो तो उसके गुणों में कुछ कमी नहीं पड़ती।

—तत्त्व की कद्र होती है आकार की नहीं।

**पाठा : घी रा लाडू तौ अंवळा-बांका ई आछा।**

**घी लगायनै पसम जोवै।** ४१२५

घी लगाकर चमक निहारे।

—घी खाने से ही देह की आभा बढ़ती है,लगाने से नहीं।

—जो नामसझ व्यक्ति किसी चीज के गलत उपयोग से मन बहलाना चाहे।

**घीलोड़ी में घी घणौ, टीपरिया रै तीणौ।** ४१२६
**देख भाळ घालै सासू, घर में कोनीं धीणौ॥**

घीलोड़ी में घी बहुतेरा, नीचे टीपरी में छेद।
सोच-समझकर डाले सास, घर में दूध न होने का खेद॥

घीलोड़ी = घी रखने का उपकरण। टीपरी = घी डालने का उपकरण।

—सास की मितव्ययता और उसके कठोर शासन पर कटाक्ष। उसके लोभी स्वभाव की वजह से घर में दूध की इफरात होने पर भी,जैसे दूध का सर्वथा अभाव हो।

**घी वगर चूरमूं ने केवाय।**–भी.२२९ ४१२७

घी के बगैर चूरमा नहीं कहलाता।

चूरमा = बाजरी,गेहूँ,ज्वार या मक्के की ताजी रोटी को मसलकर,उसमें घी,गुड़ या शक्कर की पर्याप्त मात्रा से जो मलीदा बने,उसे चूरमा कहते हैं।

—किसी भी व्यंजन में सभी चीजों का सानुपातिक मेल न हो तो बात बनती नहीं।

—प्रत्येक नाम का अपना औचित्य है, मामूली कमी रहने से नाम की सार्थकता भी कम हो जाती है।

दे.क.सं.४११८

**घुड़सवारां घोड़ा ओपै।** ४१२८

घुड़सवारों से ही घोड़ों की शोभा है।

—प्रवीण व्यक्ति के हाथों में ही संबंधित वस्तु खूबसूरत लगती है।

—एक दूसरे पर निर्भर करने वालों के योग से दोनों की शोभा बढ़ती है।

**घुरी माथै तौ साळियौ ई घुरका करै।** ४१२९

अपनी माँद पर तो सियार भी गुर्राता है।

पाठा : आपरी घुरी में गादड़ौ ई नाहर। अपनी माँद पर सियार भी शेर।

दे.क.सं.८९७,३५५२

**घूंघटा में माखी गिटै।** ४१३०

घूँघट में मक्खी गटके।

—जो औरत सामाजिक लज्जा का दिखावा करके पर्दे में मलिन करतब करे।

—मात्र घूँघट से ही शील सुरक्षित नहीं रह सकता।

**घूंघटा री कांण तौ मूंछ री ई कांण।** ४१३१

घूँघट की मर्यादा तो मूँछ की भी मर्यादा।

—यदि पुरुष पत्नी की मर्यादा का ध्यान रखेगा तो उसकी मर्यादा भी रहेगी। औरत चाहे तो एक पल में पति की मूँछ नीची कर सकती है।

—दूसरों की इज्जत रखने से ही अपनी इज्जत रहती है।

**घूंघटा री कांण, मूंछां री आंण।** ४१३२

घूँघट का मान, मूँछों की शान।

—इन दो इकाइयों की पारस्परिक निर्भरता पर ही मनुष्य समाज का संतुलन निर्भर करता है।

—परिवार के लिए औरत और पुरुष का अन्योन्याश्रित संबंध हैं।

**घूंघटा री लाज।** ४१३३

घूँघट की प्रतिष्ठा।

—अवगुंठन में छिपी लज्जा एक बार दूर हुई सो हुई।

—मर्यादा का पर्दा जब तक न हटे तभी तक अच्छा है।

**घूंघटा रौ मरम गिंवार कांई समझै ?** ४१३४

घूँघट का मर्म गँवार क्या जाने ?

—गँवार प्रेम की लीला का रहस्य क्या समझे ?

—प्रेम के आवरण में छिपी कामासक्ति को गँवार ठीक तरह समझ नहीं पाता।

**घूंघटै सै सती नीं, मुंडायै सै जती नीं।** ४१३५

घूँघट में सब सती नहीं, मुंडन वाले सब जती नहीं।

—बाहरी दिखावे से असलियत को छिपाया नहीं जा सकता।

—ऊपरी आचरण से मनुष्य की सही परख नहीं हो सकती।

**घूंस दियां मौत टळै तौ बांणियौ धरमराज सूं ईं नीं चूकै।** ४१३६

घूस देने से मौत टले तो बनिया धर्मराज से भी न चूके।

—मौत के न्यायालय में रिश्वत चलती तो सभी बनिये या धनवान अमर हो जाते।

—धनवानों का जोर मौत के सामने नहीं चलता।

—मौत को न माया से मोह और न सत्ता का डर।

**घू घू रै भाटै री लागी।** ४१३७

उल्लू के पत्थर की लगी।

—उल्लू यों भी बिना छेड़े चिल्लाता रहता है, फिर पत्थर की लग जाने के बाद तो कहना ही क्या ?

—जब कोई बातूनी व्यक्ति छेड़ने पर रुके ही नहीं तब।

**घूमर वाळी नै बिछिया चाये।** ४१३८

नाचने वाली को घुंघरू चाहिएँ।

—जिस वस्तु की जरूरत होती है उसीकी चाहना की जाती है।

—आकांक्षा के अनुरूप चीज मिलने पर खुशी का पार नहीं रहता।

—कलावंत को वांछित साधन उपलब्ध हों तभी कला निर्मित होती है।

**घेटौ रावजी मारयौ कांई ?** ४१३९

मेंढ़ा रावजी ने मारा है क्या ?

—छोटे कार्य का बड़ा श्रेय देना।

—बड़े व्यक्ति के हाथों छोटा काम भी बड़ा हो जाता है।

—किसी की झूठी खुशामद करना।

**घेर अर बेर रौ कांई बिगड़ै ?** ४१४०

रहँट के घेरे व औरत के शरीर का क्या बिगड़ता है ?

—जब तक रहँट के घेरे से बँधी घड़लियाँ पानी लाती हैं, तब तक उन्हें किसी की भी छूत नहीं लगती। इसी प्रकार यौवन में मदमाती नारी की देह भी किसी व्यक्ति की छूत नहीं मानती। या सहवास के समय कोई भी औरत अछूत नहीं होती।

**घेरनो खूंणो तो चोड़ेह नी, ने गाम में गमेताई करे।**–भी. २३० ४१४१

घर का कोना तो छोड़ता नहीं और गाँव में मुखिया बना घूमता है।

—एक ही छोटे से स्थान में बैठकर जो केवल बातें छौंकता है, वह कोई उपादेय काम नहीं कर सकता।

—घर-घुस्सू होकर भी जो व्यक्ति नेतागिरी करे उस पर कटाक्ष।

**घेर लुगाई नूं है, आदमी नूं नी।**–भी. २३१ ४१४२

घर लुगाई का है, पुरुष का नहीं।

—घर की प्रतिष्ठा, मान-मर्यादा, यश-अपयश, साफ-सफाई व सार-सँभाल सब औरत पर निर्भर करता है। पुरुष तो मात्र शोभा व कमाई का संवाहक है।

—औरत की वजह से ही घर, घर कहलाता है अन्यथा गार-मिट्टी का आश्रय, निर्जीव मकान।

**घेर विवा, वउ पीपला वीणे।**–भी. २३२ ४१४३

घर में विवाह और बहू पीपले बीने।

पीपला = पीपल का फल।

—जिस व्यक्ति को प्राथमिकता का रंच-मात्र भी ध्यान न हो।

—आवश्यक कार्य को टालकर जो व्यक्ति बेकार के काम में व्यस्त हो जाय, उस पर व्यंग्य।

**घेरौ लड़तौ कैवै के दाब मत ना लिये।** ४१४४

घेरा डसता हुआ कहता है कि मुझ पर गिर मत पड़ना।

घेरौ = साँप की एक किस्म विशेष, जो अत्यधिक जहरीला होता है। ऐसी धारणा है कि डसते ही उसी क्षण मनुष्य या प्राणी को मरना पड़ता है। पर उस साँप को भी खतरा कम नहीं, यदि मरते हुई मनुष्य की लाश उस पर गिर पड़े तो वह भी दब सकता है। इसी कारण उसे अपने दबने की चिंता लगी रहती है।

—जो कुटिल व्यक्ति अपने स्वार्थ के आगे पूरा अंधा हो।

—कुटिलता की पराकाष्ठा।

**घेवर कैवै हूं मीठौ, म्हारै लारै लोपरियौ दीठौ।** ४१४५

मै कितना मीठा कहे घेवर, देखा मेरे पीछे खर्चे का तेवर।

—बड़े काम के पीछे बड़ा ही खर्च होता है। मसलन घेवर भी कोरी बातों से नहीं बनता, उसके लिए घी, शक्कर व कंदोई का भारी खर्च कोई बड़े जिगर वाला ही कर सकता है।

—प्रसिद्धि आसानी से नहीं मिलती।

**पाठा : घेवर कैवै हूं मीठौ के म्हारौ लारलौ पग दीठौ।**

**घोखत विद्या, खोदत पांणी।** ४१४६

रटने से विद्या और खोदने से पानी।

दे.क.सं.३१४४

**घोघड़ रे! तू किसै गुण मोटौ के लावौ गिणूं न तोटौ।** ४१४७

रे बिलाव! तू कौन-से गुण मोटा कि ठाट मानूँ न टोटा।

—अपनी हैसियत से बेखबर व्यक्ति चिंता करे तो दुबला हो पर वह तो दिन-ब-दिन मुटियाता रहता है।

—जो व्यक्ति न सुख की परवाह करे न दुख की, भला वह मोटा न होगा तो और कौन होगा?

**घोघू रौ नातरौ।** ४१४८

उल्लू का नाता।

नातरौ = नातौ = हिंदुओं की कुछ जातियों में प्रचलित एक प्रथा, जिसके अनुसार पति की मृत्यु अथवा किसी अन्य कारण से स्त्री का किसी दूसरे पुरुष के साथ पत्नी रूप में संबंध क़िया जा सकता है।

**संदर्भ-कथा** : एक गहर-घुमेर बरगद पर एक उल्लू रहता था। बड़ा शैतान, क्रूर। रात में जब अन्य पक्षियों को अच्छी तरह नहीं दिखता तो वह उन्हें बेइंतहा परेशान करता था। सभी पक्षी उससे बहुत घबराते थे। उसकी चिरौरी करते थे मानो वह उनका राजा हो। एक बार एक हंस का जोड़ा उस बरगद पर रात को रुका। हंसिनी का सफेद और सुहाना रूप देखकर उसके मन में एक चालाकी सूझी। अल्ल सवेरे जब हंस ने उल्लू से विदा लेनी चाही तो उल्लू बोला, 'विदा होना चाहते हो तो खुशी से हो। पर साथ में मेरी पत्नी को बहकाकर मत ले जाना।' हंस ने आश्चर्य से पूछा, 'भला, आपकी पत्नी मैं क्यों ले जाने लगा! मुझे तो अपनी हंसिनी के अलावा कोई दूसरी अच्छी लगती ही नहीं। मुझे तो यह भी पता नहीं कि आपकी पत्नी कौन है? कहाँ है?'

उल्लू ने तनिक रूखे स्वर में कहा, 'पता नहीं है तो अब पता कर लो। तुम्हारे पास जो खड़ी है, वही तो मेरी पत्नी है।' हंस आश्चर्य-चकित होकर बोला, 'यह तो मेरी हंसिनी है। आपसे तो इसका रूप-रंग ही नहीं मिलता।'

'न मिले! यह तो अपना-अपना भाग्य है! तुम्हारी नीयत बिगड़ गई है तो यहीं पंचायती करा लेंगे। फिर भी न माने और मेरी पत्नी को जबरदस्ती साथ ले जाने की हिमाकत की तो मैं तुम्हारी गर्दन मरोड़ दूँगा, समझे।' हंस तो अदेर समझ गया कि यह कुटिल पक्षी आसानी से जाने नहीं देगा। पर साँच को क्या आँच? उसने पंचायती स्वीकार ली। और साँच को जबरदस्त आँच लगी। बरगद पर रहने वाले एक भी पंछी ने हंस की ओर से साक्षी नहीं दी। सभी ने कहा कि यह तो हमारे राजा की ही रानी है। भला उनके अलावा ऐसी पत्नी और किसकी हो सकती है! बेचारे हंस ने बहुत पैरोकारी की, पर उसकी दाल नहीं गली। तब उदास होकर अकेला ही उड़ने लगा तो उल्लू ने उसे रोका। अपनी चालाकी का सारा राज बताया। बरगद के सभी पंछियों की भर्त्सना की, उन्हें लतेड़ा कि किसी एक ने भी सच्ची बात का समर्थन नहीं किया और सब झूठ के पक्ष में बँध गये। यह दुनिया ऐसी ही डरपोक व कायर है। जिसके

फलस्वरूप साच को आँच लग ही जाती है ! इसीलिए तो मैं रात के अँधेरे में इन्हें खूब परेशान करता हूँ। मुझे डरपोक पंछियों से बड़ी नफरत है ! अब, जहाँ खुशी हो जाओ।

—दुनिया शैतान ही का साथ देती है, सच्चाई का नहीं।

—मानव-समाज में हमेशा सत्य को ही पराजित होना पड़ता है।

**घोड़ां घर कितरी भांय ?** ४१४९

घोड़ों से घर कितनी दूर ?

—घोड़ों की तेज गति के परिणामस्वरूप दूरी पार करते कुछ देर नहीं लगती।

—कुशल व्यक्ति के लिए कैसा भी कठिन कार्य संपन्न करना दूभर नहीं।

पाठा : **घोड़ां नै घर कित्ती दूर**। घोड़ों को घर कितनी दूर।

**घोड़ां घर कांईं आंतरै**। घोड़ों से घर कुछ भी दूर नहीं।

**घोड़ां घी , किराड़ां भारी।** ४१५०

घोड़ों को घी, बनियों को भारी।

—सामंती व्यवस्था के दौरान ठाकुरों के गढ़ों में अस्तबल होते थे। विभिन्न नस्लों के कई घोड़े बँधे रहते थे। उन्हें दूध-खाँड व घी पिलाया जाता था। ठाकुर शरीर से बेगार तो अनुसूचित जातियों से लेते थे। पर रुपयों-पैसों व माल की बेगार बनियों के जिम्मे थी। जब भी घोड़ों के लिए जरूरत पड़ती घी-खाँड के लिए कारिंदे को भेज देते थे। घोड़ों के लिए घी-खाँड वहन करने का भार उन्हीं पर था।

—किसी व्यक्ति की स्वार्थ-सिद्धि का बोझ दूसरों को वहन करना पड़े तब।

—सामंती-काल का अतिक्रमण करके ऐसी अनेक उक्तियाँ आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं। आज राजा-ठाकुरों का स्थान राजनेता और उच्च अधिकारियों ने ले लिया है।

**घोड़ां चढ़ै सो पड़ै।** ४१५१

घोड़ों पर चढ़ेगा सो गिरेगा।

—जो काम करता है उससे गलती होकर रहती है।

—निठल्ला व्यक्ति न तो काम करे और न उससे गलती हो।

—खतरा झेलने वाला ही खतरे में पड़ता है।

**घोड़ां राज अर बळ्दां खेती ।** ४१५२

घोड़ों से राज्य और बैलों से खेती ।

—जिस प्रकार घोड़ों की सेना के बिना राज्य व बैलों के बिना खेती संभव नहीं, उसी प्रकार उचित साधनों के बिना कोई भी काम नहीं सुधर सकता ।

—किसी भी कार्य की सफलता के लिए उचित साधन अनिवार्य हैं ।

**घोड़ां रौ दांणौ गधां नै नीं चराईजै ।** ४१५३

घोड़ों का दाना गधों को नहीं चराया जा सकता ।

—अयोग्य व्यक्ति को अच्छी वस्तु नहीं सौंपी जा सकती है ।

—जैसी योग्यता वैसा सत्कार ।

**घोड़ा अर मिनख रा पग पेट में ।** ४१५४

घोड़े और मनुष्य के पाँव पेट में ।

—अच्छा व पर्याप्त खाने से ही घोड़े व मनुष्य के पाँव मजबूत रहते हैं—निरंतर दौड़ने व चलने के लिए सक्षम ।

—पौष्टिक भोजन करने से ही शारीरिक क्षमता कायम रहती है ।

**घोड़ा इण पार के उण पार ।** ४१५५

घोड़े इस पार या उस पार ।

—परिणाम चाहे कुछ भी हो, जो काम करना है, वह तो करना ही पड़ेगा ।

—असमंजस की स्थिति छोड़कर, अंतिम निर्णय पर दृढ़ रहना ।

**घोड़ाऊं नी पूगे ते गदेड़ा रा कान आमळे ।**– भी. २३३ ४१५६

घोड़े पर वश न चले तो गधे के कान उमेठे ।

दे. क. सं. २४७५

**घोड़ा ओळखिया असवार ।** ४१५७

घोड़ों ने पहिचान लिए सवार ।

—जिस प्रकार घोड़ों से अच्छा-बुरा सवार छिपा नहीं रहता, उसी प्रकार कर्मचारी भी अपने अधिकारी की तत्काल परख कर लेते हैं कि वह कैसा है ।

—समझदार व्यक्ति किसी भी आदमी की अविलंब पहिचान कर लेता है।

**घोड़ा गदेड़ा नी मोंड़ा आगेवळां जाओ।**–भी.२३४ ४१५८

घोड़े या गधे के मुँह की तरफ भले ही जाओ।

—घोड़े या गधे के पीछे जाने पर दुलत्ती झाड़ते हैं, पर मुँह की तरफ जाने में कोई खतरा नहीं, क्योंकि इनके सींग नहीं होते।

—उस वस्तु या व्यक्ति के लिए जो एक ओर हानिकारक होते हुए भी दूसरी ओर उससे हानि की कोई आशंका न हो।

**घोड़ा गिणगोरयां ईं नीं दौड़सी तौ वळै कद दौड़सी?** ४१५९

घोड़े गनगौर पर ही नहीं दौड़ेंगे तो फिर कब दौड़ेंगे?

गिणगौर = वरकांक्षिणी कुमारियों और सौभाग्यवती महिलाओं का एक हर्षोल्लासपूर्ण पवित्र सांस्कृतिक त्योहार। राजस्थान में धूमधाम से मनाया जाता है। सामंती शासन के दौरान छोटे-बड़े ठिकानों में घुड़दौड़ होती थी। अच्छे सवार व घोड़े पुरस्कृत किये जाते थे। दर्शकों का हुजूम बड़े उछाह से घुड़दौड़ का नजारा देखता था। अच्छे घुड़सवार इस त्योहार की अविकल प्रतीक्षा करते थे। यदि इस आकांक्षित पर्व पर भी घोड़े न दौड़ें तो उनकी क्या सार्थकता? इसी संदर्भ में इस कहावत का मर्म निहित है।

—समर्थ व्यक्ति समय पर काम न आये तो वह किस काम का?

—यदि आत्मीय भी समय पर सहयोग न दे तो वह कैसा अपनापन?

**घोड़ा जितरा असवार।** ४१६०

जितने घोड़े उतने सवार।

—जो बात एकदम न्याय संगत हो।

—सीधे हिसाब की बात में कैसा विवाद?

**घोड़ा जैड़ा असवार।** ४१६१

जैसा घोड़ा वैसा सवार।

—अच्छे घोड़े का सवार भी अच्छा और रद्दी घोड़े का सवार भी रद्दी।

—वातावरण के अनुरूप ही आचरण ढलता है।

—जैसा अवसर वैसी शिक्षा।

**घोड़ा ज्यांरा चढ़ै, रह्या घोड़ां रा मोर थापलै।** ४१६२

जो चढ़े उनके ही घोड़े, शेष रहे घोड़ों की पीठ थपथपालें।

—जो घोड़े की पीठ पर चढ़ गया घोड़ा उसी का, बाकी घोड़ों का मुँह देखो और उनकी पीठ थपथपाओ।

—जो शक्तिशाली है, वही जीवन की घुड़दौड़ में आगे रहता है, बाकी पिछड़ जाते हैं।

—कर लिया जिसका कब्जा, बाकी सब बातें झूठीं।

**घोड़ा तौ असवारां सूं ई दबै।** ४१६३

घोड़े तो सवारों से ही दबते हैं।

—घोड़ों की तरह चंचल व्यक्ति हर किसी से नहीं दबता।

—नियंत्रण में रखने वाला ही किसी को नियंत्रण में रख सकता है। मुँह जोर व्यक्ति हर किसी का नियंत्रण नहीं मानता।

—बलिष्ठ पति से ही पत्नी वश में रहती है।

**घोड़ा दौड़ै तौ हूंस सूं दौड़ै।** ४१६४

घोड़े अपनी उमंग से दौड़ते हैं।

—किसी से जबरदस्ती काम नहीं करवाया जा सकता।

—किसी के दबाव से नहीं अपनी इच्छा से ही कोई काम संपन्न होता है।

**घोड़ानी लगाम घोड़ा वाळा ने हाथ में।**–भी.२३५ ४१६५

घोड़े की लगाम घोड़े वाले के हाथ में।

—नौकर या दूसरा भी कोई अधीन व्यक्ति अपनी मरजी का मालिक नहीं होता, उसकी मरजी का नियंत्रण मालिक की इच्छा पर निर्भर रहता है। मालिक जो चाहेगा, उसे करना होगा।

—नौकर के हाथ-पाँव उसके नहीं होते, मालिक के होते हैं। जिसकी इच्छा या आदेश पर ही चलते हैं।

—गुलाम मनुष्य की विडंबना ऐसी ही होती है कि वह अपनी इच्छा से अपने शरीर को नहीं चला पाता। उसे जीने का अधिकार तो है पर वह कैसे जीये, यह मालिक की सूझ-बूझ पर निर्भर करता है।

**घोड़ा ने घेर जावू है।**– भी.३६३ ४१६६

घोड़े को अपने घर जाना है।

—घर पहुँचने की खातिर विलंब होने लगे तब।

—दिन-भर के थके-माँदे मजदूर को शाम की वेला अपने घर पहुँचने पर ही राहत मिलती है। समय होते ही वैसी उत्सुकता उसके मन में उमग पड़ती है।

**घोड़ा बेचनै सूता व्है ज्यूं।** ४१६७

घोड़े बेचकर सोये हों।

—सर्वथा निश्चिंत होकर गाढ़ी नींद में सोने वाले व्यक्ति के लिए।

—जो व्यक्ति जगाये न जागे।

**घोड़ा माथै सवार व्है तौ घोड़ै ओपै।** ४१६८

घोड़े पर सवार हो तो घोड़े पर अच्छा लगे।

—काम की योग्यता होने पर ही कोई व्यक्ति बड़े पद पर शोभा देता है।

—योग्यता के अभाव में पद के साथ व्यक्ति की भी शोभा घटती है।

**घोड़ाये नी रोवु है, घोड़ा नी चाले रोवु है।**– भी.२३६ ४१६९

घोड़े के लिए नहीं रोना है, उसकी चाल के लिए रोना है।

—जिस प्रकार अच्छे-बुरे घोड़े की पहिचान उसकी चाल से होती है, उसी प्रकार मनुष्य की पहिचान भी उसके चाल-चलन से होती है।

—किसी भी मनुष्य का आदर उसके गुणों से होता है, शरीर के बाह्य-रूप से नहीं।

**घोड़ा री पूंछ पकडूं, कांई देवौला, के घोड़ौ मतै ई देदैला।** ४१७०

घोड़े की पूँछ पकडूँ, क्या दोगे कि घोड़ा खुद ई दे देगा।

—घोड़े की पूँछ पकड़ते ही दुलत्ती का पुरस्कार हाथोंहाथ मिल जाता है। परिणाम जो भी हो—दाँत टूटें या पसलियाँ। और भी अचीती ठौर आघात हो सकता है।

—गलत काम का अंजाम हमेशा ही बुरा होता है।

—गैर-जानकारी में अनिष्टकर चीज को छेड़ने से खतरा अवश्यंभावी है।

**घोड़ा री लगांम असवार रै हाथ।** ४१७१

घोड़े की लगाम सवार के हाथ में।

—घोड़ा दौड़ता तो बहुत तेजी से है, पर अपनी इच्छा से नहीं, घुड़सवार की इच्छा से।

—राज्य का नियंत्रण राज्य चलाने वाले के हाथ में होता है।

—काम, करने वालों की इच्छा पर नहीं—लेने वाले की इच्छा पर मुनस्सर करता है।

मि.क.सं.४१६५

**घोड़ा री लात घोड़ौ ई खिंवै।** ४१७२

घोड़े की लात घोड़ा ही सहन करता है।

—बड़ों की चोट बड़े ही झेल सकते हैं।

—शक्ति व क्षमता के अनुसार ही जीवन के संघर्षों की मार सहन की जाती है।

**घोड़ा रै पछाड़ी अर गढ़ रै अगाड़ी।** ४१७३

घोड़े के पीछे और गढ़ के आगे।

—घोड़े के पीछे चलने से दुलत्ती का खतरा और गढ़ के सामने होकर जाने से ठाकुर की बेगार का खतरा बना रहता है, सो इनसे बचकर रहने की हिदायत।

—खतरे के काम में पहिले से ही सावधानी बरतनी चाहिए।

मि.क.सं.२६७८,३२०५

**घोड़ा रौ अर मिनख रौ मोल नीं।** ४१७४

घोड़े का और मनुष्य का मोल नहीं होता।

—घोड़े की तीव्र गति न मालूम कब किस अप्रत्याशित संकट से बचा ले, कुछ पता नहीं। मनुष्य की प्रतिभा व उसके गुण उसे किस उन्नत्ति के शिखर पर पहुँचा दें, कुछ पता नहीं। इसी कारण इनका मूल्य नहीं आँका जा सकता।

—अवसर आने पर ही जिन गुणों का पता चले, भला उनका क्या मोल हो सकता है?

**घोड़ा रौ रोवणौ नीं, घोड़ा री चाल रौ रोवणौ है।** ४१७५

घोड़े का रोना नहीं, घोड़े की चाल का रोना है।

—चोरी में घोड़ा चला गया, उसकी परवाह नहीं, पर अनभिज्ञ चोर उसकी चाल बिगाड़ देगा, बस, रोना केवल इसी बात का है ।

—मनुष्य के लिए उसका आचरण बिगड़ने की क्षति ही सबसे बड़ी क्षति है । भौतिक नुकसान चाहे जितना हो, उसकी पूर्ति संभव है ।

मि.क.सं.४१६९

**घोड़ा रौ लिलाड़ सवा हाथ रौ व्है ।** ४१७६

घोड़े का ललाट सवा हाथ का होता है ।

—बड़ा ललाट सौभाग्य का सूचक होता है ।

—घोड़े की नाईं बड़े ललाट वाला व्यक्ति जो अपने भाग्य के सहारे सुखी जीवन व्यतीत करे, उसके लिए ।

**घोड़ा रौ हठ नै रांड हठ बिरौबर ।** ४१७७

घोड़े का हठ व राँड का हठ एक समान ।

—घोड़ा भी एक बार अड़ने पर अपना हठ नहीं छोड़ता, उसी प्रकार औरत भी जो ठान ले उसे पूरा करके ही मानती है ।

—जो औरत अत्यधिक हठी हो उसके लिए ...!

**घोड़ा लोड़ानू मोल नी ।**– भी. २३७ ४१७८

घोड़े और लोहे के शस्त्र का मोल नहीं ।

—घोड़ा और शस्त्र संकट की वेला मनुष्य के अमूल्य प्राण बचाते हैं, फिर इनके मूल्य का आकलन क्योंकर हो सकता है ! मनुष्य के प्राणों का मोल हो तो इनका मोल हो ।

—हर वस्तु का मूल्य उसकी उपयोगिता पर निर्भर करता है । यों तो पानी सर्वत्र सुलभ है, उसका कोई मूल्य नहीं, किंतु जब प्यास के मारे जान को खतरा हो तो अकूत माया और चक्रवर्ती राज्य भी उसके सामने नगण्य हैं ।

**घोड़ा वाळी चट्ट ।** ४१७९

घोड़े वाली जिद ।

—जिद्दी व्यक्ति के लिए।

—एक बार जँचने पर जो व्यक्ति किसी का कहा न माने।

### घोड़ी कठै बांधूं के जीभ रै ? ४१८०

घोड़ी कहाँ बाँधूँ कि जीभ से ?

**संदर्भ-कथा १ :** एक बारहठजी किसी बड़े ठाकुर के यहाँ गये थे। साथ में घोड़ी भी थी। दोनों वक्त उनकी अच्छी आवभगत होती। घोड़ी को समय पर दाना व घास मिल जाता। संयोग से पास ही के गाँव का एक छोटा ठाकुर भी वहाँ आया। अपनी आँखों से दो-तीन दिन बारहठजी का अच्छा आदर-सत्कार देखा तो उसने भी लिहाज में बारहठजी को अपने यहाँ आने का न्योता दिया। हालाँकि पहिले दरियाफ्त करने पर बारहठजी ने किसी बड़े ठिकाने जाने की बात कही थी। इसलिए छोटे ठाकुर ने कुछ जोर देकर आने के लिए कहा। बारहठजी हर बार मना करते रहे। किंतु कुछ दिन बाद वे सीधे उसी ठाकुर के गाँव पहुँचे। ठाकुर से जुहार करने के बाद उन्होंने पूछा—यह घोड़ी कहाँ बाँधूँ ?

यदि उस समय ठाकुर की जीभ वश में रहती तो मेहमान-नवाजी की यह नौबत नहीं आती। पर अब तो जीभ से किये आग्रह का फल तो भोगना ही पड़ेगा। तुरंत जवाब दिया—मेरी जीभ से !

**संदर्भ-कथा २ :** किसी दूसरे गाँव जाते हुए एक बारहठजी (एक जाति-विशेष) को रास्ते में एक ढोली मिल गया। ढोली ने शुभराज करके याचना की। तब बारहठजी ने उसे टालते हुए कहा, 'यों चलते रास्ते कुछ दिया थोड़े ही जाता है। मेरे गाँव आओ। पाँच-सात दिन ठाट से रहो। गाओ-बजाओ। फिर तबीयत से सीख दूँगा।' बारहठजी ने यह कहकर अपना पता ठिकाना बता दिया। सोचा कि उतनी दूर वह आएगा थोड़े ही। पर कुछ दिन बाद वह ढोली तो सचमुच ही अपने पुत्र सहित दो घोड़ियाँ लेकर बारहठजी के गाँव आ धमका। बारहठजी की हालत खस्ता थी। अपने घर की तरफ ढोली को आते देखा तो वे मन-ही-मन काफी पछताये। किंतु अब हो ही क्या सकता था। ढोली ने शुभराज करके पूछा, 'अंदाता, घोड़ी कहाँ बाँधू ?' बारहठजी ने धीमे स्वर में जवाब दिया, 'मेरी जीभ से बाँध, और कहाँ बाँधे ?' यदि उस दिन उनकी जीभ चुप रहती तो आज यह नौबत नहीं आती। दो आदमियों की तीमारदारी के साथ दो घोड़ियों को चराना उनके बूते से बाहर था।

—रुआब-रुतबे की खातिर लोग डींग तो जरूरत से ज्यादा हाँक देते हैं, पर बाद में उसे निभाना ही पड़ता है।

—जो व्यक्ति पहले सोचकर बात नहीं करता, उसे यदा-कदा क्षति तो भुगतनी ही पड़ती है।

—शोभा की चाहना रखने वाले व्यक्ति को यथायोग्य खर्च तो करना ही पड़ता है।

—लिहाज के कारण कोई बात गले आ पड़े तब ...!

—एक दूसरा अर्थ यह है कि मूर्खता भरे बेहूदे प्रश्न का वापस वैसा ही असंगत उत्तर दिया जाता है।

**घोड़ी कांईं राहदार के तबेलौ ई राहदार है।** ४१८१

घोड़ी क्या राहदार, सारा अस्तबल ही राहदार है।

—अकेली घोड़ी की ही चाल लाजवाब नहीं, अस्तबल के सारे घोड़े-घोड़ियों की ऐसी ही उम्दा चाल है।

—जिस परिवार के सारे सदस्य एक-से-एक बढ़कर हों, तब ...।

**घोड़ी तौ ठांण बिकै।** ४१८२

घोड़ी तो ठान पर बिकती है।

ठांण = ठान = मवेशी को नियमित रूप से बाँधने व चारा डालने का स्थान।

—स्वामी की हैसियत व शान के अनुसार ही घोड़ी का मोल होता है। गरीब के घर बँधी घोड़ी की वैसी कीमत और किसी बड़े ठिकाने बँधी घोड़ी की वैसी कीमत।

—गुणों की कद्र अपने उचित स्थान पर ही होती है।

—वस्तु की अपेक्षा प्रतिष्ठा का मूल्य अधिक होता है।

**घोड़ी मत कर हरणाट औ घर आपणौ है।** ४१८३

घोड़ी मत कर हिनहिनाहट यह घर अपना है।

संदर्भ-कथा: एक याचक अपनी घोड़ी पर यजमानी के लिए घर से बाहर निकला तो यजमानों के घर उसकी यथायोग्य आवभगत हुई। घोड़ी के लिए भी दाने-पानी व चारे की कोई कमी नहीं रही। बाहर यजमानी के दौरान अच्छी-खासी मौज हुई। लेकिन वापस घर लौटने पर घोड़ी ने पहिले की तरह दाने के लिए हिनहिनाहट की तो याचक ने उसे मना करते समझाया

कि वह अब व्यर्थ हिनहिनाहट न करे। अपना घर आ गया है। यहाँ हिनहिनाते ही न दाने का जुगाड़ है और न चारे का।

—दूसरों के यहाँ मौज करने वाला व्यक्ति जब अपने घर किफायत करे तब ...!

—अपने पर बीतती है तब सोचने का दृष्टिकोण एकदम बदल जाता है।

—दुहरा मापदंड रखने वाले व्यक्ति के लिए।

**घोड़ी री लांबी होसी तौ आपरी ढकसी।** ४१८४

घोड़ी की लंबी होगी तो अपनी ढकेगी।

—घोड़ी की पूँछ लंबी होगी तो वह अपना अंग ढकेगी,उससे दूसरों का क्या स्वार्थ।

—जिसके पास जो साधन होता है,वह पूर्णरूप से उसीके काम आता है।

—दूसरे के साधनों से अपनी गर्ज पूरी नहीं हो सकती।

पाठा : **घोड़ा री पूंछ लांबी तौ आपरी माख्यां उड़ावसी।**

घोड़े की पूँछ लंबी तो अपनी मक्खियाँ उड़ाएगा।

**घोड़ी रै ठांण में कुत्ती बैठी, नीं खावै नीं खावण दे।** ४१८५

घोड़ी के ठान में कुत्ती बैठी; न खाये न खाने दे।

—ऐसे बद-मिजाज अधिकारी के लिए जो न खुद फायदा उठाये और न किसी दूसरे को उठाने दे।

—जो अनधिकृत दुष्ट खामखाह अड़ंगा लगाकर दूसरों को हैरान करे।

**घोड़ी लादण सूं गी तौ कांई पादण सूं ई गी।** ४१८६

घोड़ी लदने से रही तो क्या पादने से भी गई।

दे.क.सं.१३१२

**घोड़े हींस किराड़े भारी।**–व.२०६ ४१८७

घोड़ों की हिनहिनाहट बनियों को भारी।

—पहिले सामंती-तंत्र में घोड़ों के लिए बनियों को मुफ्त में दाना देना पड़ता था। घोड़ों की हिनहिनाहट का मतलब कि घोड़े भूखे हैं,उन्हें दाना चाहिए। इसलिए दाने के बढ़ते बोझ सें बनिये घबराते थे।

—गाँव में डाकुओं के घोड़े हिनहिनाते ही बनियों का दिल दहल उठता था। तब घोड़ों की हींस लूट की सूचक थी।

—जिसे खतरा होता है, वह थोड़ा खटका होते ही घबरा जाता है।

मि.क.सं.४१५०

पाठा : **घोड़ां हींस किराड़ां भारी।**

**घोड़ै गिरयोड़ौ संभळै पण निजरां गिरयोड़ौ नीं संभळै।** ४१८८

घोड़े से गिरा सँभल सकता है, पर नजरों से गिरा हुआ नहीं सँभल सकता।

—समाज की नजरों में एक बार गिरी हुई प्रतिष्ठा वापस नहीं लौटती।

—जहाँ तक बन पड़े मनुष्य को जाने-अजाने ऐसा कोई काम नहीं करना चाहिए जिससे उसकी आबरू पर बट्टा लगे।

**घोड़ै चढ़ाय गधै चढ़ावै।** ४१८९

घोड़े पर चढ़ाकर गधे पर चढ़ाये।

—जो व्यक्ति एक पल में खुश होकर प्रशंसा करे और दूसरे ही पल नाराज होकर उसकी बुराई करने लगे तब...!

—क्षण में तुष्ट व क्षण में रुष्ट होने वाले पर कटाक्ष।

मि.क.सं.११०२,१५४१

पाठा : **घोड़ै ई वैगा चढ़ावै नै गधै ई वैगा चढ़ावै।**

घोड़े पर ही जल्दी चढ़ाता है और गधे पर भी जल्दी बिठाता है।

**घोड़ै चढ़्यौ आवै।** ४१९०

घोड़े पर चढ़ा आये।

—अत्यधिक जल्दबाज व्यक्ति के लिए।

—जो व्यक्ति हर काम में उतावली मचाये।

**घोड़ै रै असवार अर बूढ़ली माई रौ कांई साथ?** ४१९१

घुड़-सवार और बुढ़िया का क्या साथ?

—दो विषम स्थिति वाले व्यक्तियों में मित्रता नहीं हो सकती।

—अमीर और गरीब का क्या साथ ?

—साधनहीन व्यक्ति साधन-संपन्न बंदे की बराबरी नहीं कर सकता।

**घोड़े रै नाळ जड़तां गधेड़ौ ई खुर धकै करै।** ४१९२

घोड़े की नाल कसते समय गधा भी खुर उठाये।

—जो नगण्य व्यक्ति बड़ों की देखा-देखी उनकी नकल करना चाहे।

—कोई सर्वथा अयोग्य व्यक्ति बड़े सम्मान की आशा करे तब...।

**घोड़ौ कांई नांमी, तबेलौ ई नांमी।** ४१९३

घोड़ा क्या राहदार, अस्तबल ही राहदार।

—किसी परिवार के एक व्यक्ति की प्रशंसा करने पर जब सुनने वाले उसकी पुष्टि करते हुए कहें कि केवल यही प्रशंसा के काबिल नहीं, इसका सारा खानदान भी क्या कम है ! यह है तो इसी परिवार का सदस्य !

—जब किसी व्यक्ति का सारा परिवार ही एक दूसरे से बढ़कर हो।

दे.क.सं.४१८१

**घोड़ौ घास सूं यारी करै तौ खावै कांई ?** ४१९४

घोड़ा घास से यारी करे तो खाये क्या ?

दे.क.सं.३४९५

पाठा : **घोड़ौ घास सूं हेत करै तौ भोटै कांई ?** घोड़ा घास से प्रीत करे तो खाये क्या ?

**घोड़ौ घिसाई सूं ई मूंघौ।** ४१९५

घोड़ा घिसाई से भी महँगा।

—मरने के बाद घोड़े की कानी कौड़ी भी कीमत नहीं रहती। न उसका चमड़ा ही किसी काम आता है और न हड्डी या गोश्त। उसे गड्ढा खोदकर दफनाया जाता है। शोक मनाया जाता है। इस कारण घोड़े की मृत्यु से काफी तबालत उठानी पड़ती है।

—जिस वस्तु का मूल्य लागत से भी काफी कम मिले तब।

**घोड़ौ घोड़ां सोहै।** ४१९६

घोड़ा घोड़ों में ही शोभा देता है।

—विद्वान की विद्वानों के बीच ही कद्र होती है।

—मर्मज्ञों के बीच ही कलाकार शोभा पाता है।

**घोड़ौ घोड़ी पासै जाय नै चरवादार खूंसड़ा खाय।** ४१९७

घोड़ा घोड़ी के पास जाये और चरवादार जूते खाये।

—कामासक्त घोड़ा तो घोड़ी के पास जाता ही है, पर नस्ल बिगड़ जाने की आशंका से मालिक चरवादार को सजा देता है।

—किसी दूसरे की अलमस्ती का खमियाजा किसी और को उठाना पड़े तब।

—मौज करे कोई, सजा पाये कोई।

**घोड़ौ जोड़ौ भाग सूं मिळै।** ४१९८

घोड़ा व जोड़ा भाग्य से मिलता है।

—अच्छा घोड़ा व अच्छे दंपती सौभाग्य से ही मिलते हैं।

—अच्छी चीज का सुयोग दुर्लभ होता है।

**घोड़ौ तौ गांगारड़ै गियां ईं पतीजै।** ४१९९

घोड़ा तो गाँगारड़े जाने पर ही तुष्ट होता है।

गांगारड़ौ = नागौर जिले में मेड़ता रोड के पास एक गाँव विशेष जहाँ बेशुमार लंबा-चौड़ा व सीधा-सपाट मैदान-ही-मैदान था। पहिले वहाँ वीर तेजा का मेला भी लगता था। तेज-से-तेज दौड़ने वाले घोड़े को भी उस मैदान में आकर थकना पड़ता था।

—मैदान में उतरने पर ही किसी कुशल व्यक्ति की योग्यता का पता चलता है।

—कोई हठी व्यक्ति अपने भले की बात न माने और अंत में अपने किये पर पछताना पड़े, तब ...।

**घोड़ौ तौ दौड़-दौड़ मरै पण धणी रै भायका ई कोनीं।** ४२००

घोड़ा तो दौड़-दौड़ मरे पर स्वामी को उसकी परवाह ही नहीं।

—जहाँ गुणी व योग्य व्यक्ति की कोई कद्र न हो।

—जो मालिक अपने लोगों की कतई परवाह न करे।

मि.क.सं. ३५४५

**पाठा : घोड़ौ तौ दौड़ दौड़नै दौड़ै पण असवार री हांम ई नीं पूरीजै ।**
घोड़ा तो दौड़ दौड़कर दौड़े पर सवार की तलब ही पूरी नहीं होती ।
**घोड़ौ तौ दौड़-दौड़नै थाकै पण असवार रै दाय ई नीं आवै ।**
घोड़ा तो दौड़-दौड़कर हार थका पर सवार के पसंद ही नहीं आया ।

**घोड़ौ दौड़सी तौ पग मैला होसी ।** ४२०१
घोड़ा दौड़ेगा तो पाँव मैले होंगे ।
—काम व सफेदपोशी का मेल नहीं हो सकता ।
—जो काम न करना चाहे तो बहानेबाजी की कमी नहीं ।
—जिस निठल्ले व्यक्ति को दूसरों की मेहनत से भी उबकाई आये ।

**घोड़ौ दौड़ै घोड़ी दौड़ै कोई टारड़ौ कैड़ौ दौड़ै ?** ४२०२
घोड़ा दौड़े घोड़ी दौड़े कोई टट्टू कैसा दौड़े ?
—आने वाले कल का कोई भरोसा नहीं जो मौका आज मिला है,उसका अधिक-से-अधिक लाभ उठा लेना ही श्रेयस्कर है ।
—सुअवसर का फायदा उठाना ही आदर्श नीति है ।
**पाठा : घोड़ौ दौड़ै घोड़ी दौड़ै कुण जांणै ?** घोड़ा दौड़े घोड़ी दौड़े कौन जाने ?

**घोड़ौ दौड़ै च्यार घड़ी, ब्याज दौड़ै बत्तीस घड़ी ।** ४२०३
घोड़ा दौड़े चार घड़ी, ब्याज दौड़े बत्तीस घड़ी ।
—चार घड़ी दौड़ने के बाद घोड़ा तो थकने पर विश्राम की साँस लेता है,पर ब्याज कभी एक क्षण भर के लिए भी विश्राम नहीं लेता ।
—जहाँ तक बन पड़े मनुष्य को कर्ज नहीं लेना चाहिए ।

**घोड़ौ नै फोड़ौ पंपोळियां बधै ।** ४२०४
घोड़ा और फोड़ा सहलाने से बढ़ता है ।
—एक ही क्रिया से जब दो विपरीत लक्षण उत्पन्न हों ! सहलाने से घोड़ा पुष्ट होता है—यह लाभ की बात है । और उधर सहलाने से फोड़ा बढ़ता है,यह तकलीफ की बात है ।

—इस कहावत का वजन फोड़े की ओर है जिसका तात्पर्य है—आखिर कमजोरी व पीड़ा को सहलाने से नहीं, दूर करने से ही निस्तार होता है।

**घोड़ौ बटकौ भरै ई कोनीं अर जे भरै तौ छोडै ई कोनीं।** ४२०५

घोड़ा या तो काटता ही नही, यदि काटे तो फिर छोड़ता ही नही।

—ताकतवर आदमी या तो गुस्सा करता ही नहीं और यदि करे तो फिर कचूमर निकालकर ही माने।

—बड़ा आदमी हठ करता ही नहीं, यदि करे तो फिर मानता ही नहीं।

**घोड़ौ बनोळ्यां जोईजै के वळतौ आजै।** ४२०६

घोड़ा निकासी पर चाहिए कि लौटकर आना।

—समय पर सहयोग मिले तभी उसकी सार्थकता है।

—अवसर बीत जाने के बाद दी हुई सहायता अधिक माने नहीं रखती।

—जो व्यक्ति आसन्न आवश्यकता को टालना चाहे तब।

पाठा : **घोड़ौ चाये निकासी नै के बावड़तौ सो आये।**

घोड़ा चाहिए निकासी के लिए कि लौटते हुए आना।

**घोड़ौ, मरद, मकोड़ौ, पकड़्यां पाछै छोडै थोड़ौ।** ४२०७

घोड़ा, मर्द, मकोड़ा, पकड़ने के बाद छोड़े थोड़ा।

—उपरोक्त प्राणियों की पकड़ से हमेशा दूर ही रहना चाहिए।

—जिस बात से आफत आये उससे बचना ही श्रेयस्कर है।

मि.क.सं.४२०५

**घोड़ौ है पण असवार कोनीं।** ४२०८

घोड़ा है पर सवार नहीं।

—साधन होते हुए भी जो व्यक्ति उसका उपयोग करने में अक्षम हो।

—जो अयोग्य व्यक्ति अच्छे पद पर काम न कर सके।

—समय रूपी घोड़े पर हर व्यक्ति सवारी नहीं कर सकता।

**घोरखोदां रै ब्याव में गादड़ा गीत गावै।** ४२०९

घोरखोदों के विवाह में सियार गीत गाते हैं।

घोरखोदौ = सियार के समान ही एक छोटा जानवर जो माँद खोदने में बड़ा माहिर होता है।

—दुष्ट व्यक्ति का दुष्टों से स्वतः मेल हो जाता है।

—कुटिल व्यक्तियों का संगठन स्वयमेव ही बन जाता है।

# चं - चा

**चंग टाळ भलां होळी कद मनाईजै ?** ४२१०

चंग के बगैर भला होली कब मनाई जाती है ?

—चंग की सुहानी ध्वनि और होली के मदमस्त उत्सव का समन्वय पूर्णतया संगत है ।

—जो एक दूसरे के पूरक होते हैं,उन्हीं का मेल हमेशा शोभनीय होता है ।

—एक दूसरे के बिना जो बात अधूरी व बदरंग लगे तब ...!

—पूरक तत्त्व का अभाव सदा खटकता है ।

**चंचल नार बारलौ झांकौ , घर रौ कांम सूझै क्यांकौ ?** ४२११

चंचल नार का चित्त बाहर भागे, गृह-काज की सुधि कब लागे ?

—चंचल स्त्री की निगाह हमेशा बाहर की ओर लगी रहती है,फिर घर के काम-काज की उसे क्यों परवाह होने लगी ।

—सदैव बाहर भटकने के कारण चंचल स्त्री का मन घर के कार्यों में बड़ी मुश्किल से लगता है ।

**चंडाळ चौकड़ी ।** ४२१२

चंडाल चौकड़ी ।

—चार चंडाल व्यक्तियों का कुटिल गिरोह ।

—हर गाँव,हर शहर,हर प्रांत और हर राष्ट्र में इस तरह के गिरोह को चंडाल-चौकड़ी के नाम से ही संबोधित किया जाता है ।

**चंडाळ तौ गांव बसण री बाट जोवै।** ४२१३

चंडाल तो गाँव बसने की बाट जोहते हैं।

—गाँव या समाज में बसे सज्जन व्यक्तियों की बदौलत चंडालों का गुजर-बसर होता है, इस कारण वे हमेशा नया गाँव बसने की ताक में रहते हैं।

—कौवे की निगाह जिस तरह घाव पर रहती है, उसी तरह चंडालों की निगाह सज्जनों को ठगने की रहती है।

**चंडाळां रा किसा न्यारा गांव बसै।** ४२१४

चंडालों के अलग गाँव थोड़े ही बसते हैं।

—शरीर में जिस तरह रक्त, माँस, मज्जा है—उसी तरह मल-मूत्र भी है। यदि यह न हो तो शरीर का अस्तित्व ही संभव नहीं। इसी प्रकार चंडालों के गाँव या शहर अलग बसे हुए नहीं होते।

—कैसा भी आदर्शवादी समाज चंडालों के बिना नहीं चल सकता, चाहे उनका अनुपात कम हो या बेशी।

दे.क.सं.५१,२२४८

**पाठा : ओटाळां रा किसा न्यारा खेड़ा बसै।**

**चंडी माता रूसै तौ कोढ़ अर तूठै तौ खाज।** ४२१५

चंडी माता रूठे तो कोढ़, तुष्ट हो तो खाज।

**टिप्पणी :** राजस्थान में अधिकतर सेडळ माता, हिंदी में शीतला माँ कहकर चेचक की देवी को संबोधित किया जाता है। गुजरात की सीमा पर उसे चंडी माता भी कहा जाता है।

—शीतला माँ रुष्ट हो या तुष्ट दोनों में ही क्षति है। रुष्ट हो तो चेचक और तुष्ट हो तो खुजली।

—जिस व्यक्ति के खुश या नाराज होने पर नुकसान ही होता हो, उसके लिए व्यंग्य में इस उक्ति का प्रयोग होता है।

**पाठा : सेडळ-माता रूठै तौ कोढ़ अर तूठै तौ खाज।**

शीतला-माँ रूठे तो कोढ़, तुष्ट हो तो खुजली।

**चंद वळू तौ चूंबौ तारा।**–व.१६६ ४२१६

चाँद पक्ष में हो तो तारों को चूमो।

—यदि चाँद पक्षधर है तो तारों की क्या परवाह,मजे से उनका चुंबन लो,कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

—यदि किसी सबलतम व्यक्ति का सहारा है तो निर्बल की क्या परवाह करना,जैसा चाहो उसके साथ व्यवहार करो।

—यदि सत्ताधारियों की शह है तो मनमानी करने में क्यों कसर रखी जाय?

**चंवरी बैठी भैंस ई फूठरी लागै।** ४२१७

चँवरी में बैठी भैंस भी सुंदर लगती है।

चंवरी = विवाह-मंडप।

—सजधज व बनाव-सिंगार से कैसे भी बदसूरत व्यक्ति का हुलिया निखरता है।

—अवसर की महत्ता व्यक्ति की अपेक्षा बढ़कर होती है।

**चंवरी मांय सूं छड़ी वाढ़ण वाळा।** ४२१८

चँवरी से छड़ी काटने वाले।

चंवरी = विवाह-मंडप।

—विवाह-मंडप बड़ा पावन व मांगलिक स्थल होता है। उसमें से मामूली छड़ी तक काटना भी अशुभ होता है। पर अपने स्वार्थ में लीन व्यक्ति शुभ-अशुभ की कुछ भी परवाह न करके अपने लिए छड़ी काट लेते हैं।

—अपनी अकिंचन स्वार्थ-सिद्धि के लिए किसी का चाहे जितना अहित करने वाले व्यक्ति के लिए।

**चंवरी सूं उतरती कोयल ई चोखी लागै।** ४२१९

चँवरी से उतरने पर कोयल भी खूबसूरत लगती है।

चंवरी = विवाह मंडप।

—विवाह-मंडप से उतरने पर काली कोयल का हुलिया भी दमकने लगता है।

—वस्तुस्थिति महत्त्वपूर्ण होती है,व्यक्ति नहीं।

—परिवेश व्यक्ति का स्वरूप निखारता है।

दे.क.सं.४२१७

**चऊ लाधी रै लाल, घटै हळ-बळद नै हाल।** ४२२०

चऊ मिली रे लाल, बाकी हल-बैल और हाल।

चऊ = हलबानी के साथ हल का मुँह खेत की जुताई करने के निमित्त जमीन के भीतर धँसता है। हल के मुँह व हलबानी के बीच लकड़ी का एक पतला और छोटा उपक्रम लगा रहता है, उसे चऊ कहते हैं। चऊ का मामूली टुकड़ा अपने-आप में अलग से किसी काम का नहीं। एक नादान व्यक्ति को कहीं से चऊ मिल गई तो वह खुशी के मारे बौरा गया कि बस चऊ मिलने से पूरी खेती कर लूँगा। फकत कुछेक मामूली साधन जुटाने हैं—हल,बैल और हाल। हाल = बैलों के जुए से बँधी लकड़ी की वह बालिश्त भर चौड़ी और लंबी पट्टी जो हल के बीच जुड़ी रहती है।

—बड़े-बड़े साज उपक्रम के अभाव में एक नगण्य चीज मिल जाने पर अति प्रफुल्लित होने वाले नादान व्यक्ति पर व्यंग्य।

—जो व्यक्ति नमक की एक डली पाकर आटा, मसाला, दाल व चूल्हे के अभाव की पूर्ति समझ ले, उसका नितांत भोलापन इस कहावत में चरितार्थ होता है। शेखचिल्ली की मानसिकता वाले व्यक्ति के लिए।

**चकवै राज करणौ सोरौ कोनीं।** ४२२१

चक्रवर्ती राज्य करना आसान नही।

—यों छोटे राज्य का समुचित प्रशासन भी आसान नहीं,फिर चक्रवर्ती राज्य को सँभालना तो बेहद कठिन है।

—बड़ी जिम्मेवारी को सँभालने के लिए उतनी ही बड़ी सतर्कता व क्षमता अनिवार्य है।

—बड़ी जिम्मेवारी लेना तो आसान है पर उसे निभाना दुशवार है।

**चक्की गांव री होवै घर री नीं।** ४२२२

चक्की गाँव की होती है, घर की नही।

—चक्की पर वैयक्तिक अधिकार होने पर भी अनाज पिसाने के निमित्त सार्वजनिक अधिकार होता है,चक्की का मालिक किसे भी मना नहीं कर सकता।

—कुछ वैयक्तिक संपत्ति का उपयोग सार्वजनिक होता है।

**चक्कू काकड़ी माथै पड़ै तौ काकड़ी रौ नास,** ४२२३
**अर काकड़ी चक्कू माथै पड़ै तौ काकड़ी रौ नास।**

चाकू ककड़ी पर गिरे तो ककड़ी का नाश और ककड़ी चाकू पर गिरे तो ककड़ी का नाश।

—कैसी भी परिस्थिति में जब निर्धन का कोई निस्तार न हो।

—गरीब को हर स्थिति से हमेशा खतरा ही बना रहता है।

दे.क.सं. २७७७

**चट मंगनी, पट ब्याव।** ४२२४

चट मँगनी, पट ब्याह।

—जो कार्य अविलंब संपन्न हो उसके लिए।

—खुशी और उल्लास का काम जितना जल्दी संपन्न हो उतना ही अच्छा है।

पाठा : **चट म्हारी मंगनी, पट म्हारौ ब्याव।** चट मेरी मँगनी,पट मेरा ब्याह।

**चट रोटी, पट दाळ।** ४२२५

चट रोटी, पट दाल।

—कुछ कार्य ऐसे होते हैं,जिन में तनिक-सा विलंब अनुचित है। रोटी आ जाय और दाल या सब्जी न आये तो अशोभनीय और फूहड़पन है।

—जो कार्य तत्काल संपन्न हो तब...!

मि.क.सं.४२२४

**चड़स रै साथै उलाळ्यौ ई डूबै।** ४२२६

चड़स के साथ उलालिया भी डूबता है।

चड़स = कुएँ से पानी निकालने के लिये चमड़े या लोहे का उपक्रम।

उलाळ्यौ = उलालिया = पानी में चड़स को डुबाने के लिए जो वजनी पदार्थ बँधा होता है। हिंदी में इस तरह के आंचलिक शब्दों को ग्रहण करने से ही उसके शब्द-भंडार में विपुल वृद्धि होगी।

—चड़स और उलालिया में चोली-दामन का साथ है। सुख हो चाहे दुख हर हालत में दोनों अभिन्न रहते है।

—जो एक-दूसरे से अभिन्न हैं,वे दुख में भी वैसा ही साथ निभाते हैं जैसा सुख में निभाते हैं।

**चढ़जा बेटा सूळी, भली करै भगवांन।** ४२२७

चढ़जा बेटा सूली पर, भली करे भगवान।

—किसी को उकसाकर बुरी राह धकेलना।

—भोले व्यक्तियों को बरगलाकर उन्हें क्षति पहुँचाने वाले व्यक्ति के लिए।

**चढ़णौ जित्तौ ई उतरणौ।** ४२२८

चढ़ना जितना ही उतरना।

—जितनी सीढ़ियाँ या पहाड़ की ऊँचाई पर चढ़ना होता है,उतना ही वापस नीचे उतरना होता है,इसमें कभी अपवाद की गुंजाइश नहीं रहती।

—चढ़ने-उतरने का जोड़ा है।

—उन्नति-अवनति,यश-अपयश इकतरफा नहीं होते,ये परस्पर संबंधित हैं।

पाठा : **चढ़ै सो उतरै।** चढ़ेगा सो उतरेगा।

**चढ़तां ई ढांण घालणौ आछौ कोनीं।** ४२२९

चढ़ते ही तेज दौड़ाना अच्छा नहीं।

ढांण = ऊँट को चलाने की एक गति विशेष जो ऊँट की सामान्य चाल से काफी तेज होती है।

—धीरे-धीरे हर काम की रफ्तार को बढ़ाना ही उचित है। एकदम रफ्तार तेज करना उचित नहीं।

—संचालन के अपने नियम होते हैं,केवल संचालक की इच्छा ही सर्वोपरि नहीं होती। यदि वह ऐसा करता है तो हानि की संभावना रहती है।

**चढ़तां नै बाजरिये रौ खीच।** ४२३०

चढ़ते को बाजरे का खीच।

—जुदा होने वाले पति को प्रियतमा की ओर से अति सामान्य ही भोजन मिलेगा। वियोग की पीड़ा देने वाले का कैसा सत्कार ! समुचित सत्कार तो रुकने पर ही स्वाभाविक है, उसमें सहवास का परम आनंद जो है।

—प्रेम और विरह को समभाव के साथ स्वीकार नहीं किया जा सकता।

—क्रिया के अनुरूप ही प्रतिक्रिया होती है।

**चढ़तां सवारी नै उतरतां चाकरी।** ४२३१

चढ़ते सवारी और उतरते चाकरी।

—यात्रा के समय घोड़ा, ऊँट या बैलगाड़ी सवारी की सुविधा के लिए है पर यात्रा संपूर्ण होने पर उनकी चाकरी करना जरूरी है, वरना वे सवारी के काबिल नहीं रहते।

—किसी भी प्रकार के ऋण से उऋण होना जरूरी है।

—एहसान लिया है तो एहसान करना भी चाहिए। तभी मानव-समाज की संगति बनी रहती

**चढ़ती जवांनी अर भर्‌योड़ी अंटी कित्ता औगण नीं करै।** ४२३२

चढ़ती जवानी और भरी अंटी कितने अवगुण नहीं करती।

—चढ़ती जवानी का नशा और धन की बहुलता का मद क्या-क्या बुराइयाँ उत्पन्न नहीं करता।

—यौवन और कंचन की मार से बिरले ही बच पाते हैं।

—जवानी और धन दोनों विवेक को नष्ट करते हैं। विवेक नष्ट होने पर अच्छे-बुरे की पहिचान मिट जाती है।

**चढ़ती जवांनी अर मांझा ढीला।** ४२३३

चढ़ती जवानी और माँझे ढीले।

—चढ़ती जवानी और मरियल शरीर।

—चढ़ती जवानी के दौर में भी यदि अदम्य उत्साह और ऊर्जा न हो तो वह बुढ़ापे से भी बदतर है।

—काम की शुरुआत और जोश ठंडा हो तब।

**चढ़सी जिकां नै पड़्यां सरसी।** ४२३४

जो चढ़ेगा, वह गिरकर रहेगा।

—जिस तरह जन्म के साथ मृत्यु,उगने के साथ मुरझाना अनिवार्य है,उसी तरह चढ़ने के साथ गिरना, उत्कर्ष के साथ अपकर्ष, सफलता के साथ असफलता और सुख के साथ दुख अवश्यंभावी है।

—जो कुछ काम करता ही नहीं,उससे क्या चूक हो सकती है!

पाठा: **चढ़सी सो पड़सी**। चढ़ेगा सो पड़ेगा। **चढ़ै सो पड़ै**।

**चढ़ियां नै पाळा सदा ई हंसै।** ४२३५

चढ़े हुओं को पैदल चलने वाले हमेशा हँसते हैं।

—उन्नत्ति करने वालों के समतुल्य होना तो वश की बात नहीं,पर उसका उपहास तो किया जा सकता है।

—अपने से बड़ों के प्रति डाह होना स्वाभाविक है।

**चढ़िया नै पाळौ नीं न्हावड़ै।** ४२३६

चढ़े हुए को पैदल नही पहुँच सकता।

—किसी भी सवारी पर चढ़े व्यक्ति की बराबरी पैदल चलने वाला नहीं कर सकता।

—साधन संपन्न का साधनहीन मुकाबला नहीं कर सकता।

—किसी भी काम की सफलता के लिए साधन अनिवार्य हैं।

**चढ़ी ऊपर चढ़ाव, सिर दूखै नीं पांव।** ४२३७

चढ़ाई पर चढ़ाव, सिर दुखे न पाँव।

—आशिक से मिलने की उमंग में विकट राह भी आसान हो जाती है। न कोई थकान और न कोई कष्ट।

—अपनी स्वेच्छा से कष्ट उठाकर भी कोई कैसा भी कठिन काम करने में सफल हो जाता है। इसके विपरीत इच्छा के विरुद्ध आसान काम भी उसके लिए भारी हो जाता है।

—स्वेच्छा से किया हुआ दुष्कर कार्य भी अंततः सफल हो जाता है।

पाठा: **चढ़ी माथै चढ़ाव, माथौ दूखै नीं पांव।**

**चढ़ी हांडी नै ठोकर नीं मारणी।** ४२३८

चढ़ी हँडिया को ठोकर नहीं मारनी चाहिए।

—नियमित आमदनी को नहीं गँवाना चाहिए।

—जिस आधार से जीवन-निर्वाह हो उसकी उपेक्षा उचित नहीं।

—हाथ लगे रुजगार को छोड़ना ठीक नहीं।

**चढ़ी होठां, फिरै कोठां।** ४२३९

चढ़ी होंठों पर, विचरे कोठों पर।

—होंठों से निकली बात हवा में फैल जाती है। इसलिए बहुत सोच-विचारकर मुँह खोलना चाहिए, अन्यथा चुप रहना ही बेहतर है।

—बदनामी या निंदा फैली और फैली, कोई भी उसे नियंत्रित नहीं कर सकता।

**चढ़ै जिणरा घोड़, बांधै जिण रा मोड़।** ४२४०

चढ़े जिसका घोड़ा, बाँधे उसका सेहरा।

—जिसके जो अधिकार में हो, वही उसीका है।

—कब्जा सच्चा, बाकी सब कच्चा।

—जो उपयोग में लेता है, उसीकी चीज है, वरना संचय का कोई अर्थ नहीं।

**चढ़ै दरबार, जाय घर-बार।** ४२४१

चढ़े दरबार, उजड़े घर-बार।

—मुकदमा विनाश की जड़ है।

—मुकदमे-बाजी से बचना ही हितकारी है।

**चढ़ै नै ई हांसै, पाळै नै ई हांसै।** ४२४२

चढ़े को भी हँसना, पैदल को भी हँसना।

—दुनिया का तो काम ही यही है—हर स्थिति पर हँसना या मखौल उड़ाना।

—लोकमत की किंचित् भी परवाह किये बिना स्वयं को जो उचित लगे वही काम करना चाहिए।

**चन्नण धोई माछळी, पण छूटी नीं गंध।** ४२४३

चंदन से धोई मछली, पर छूटी ना गंध।

—मछली में दुर्गंध होती है और चंदन में खुशबू, पर चंदन-युक्त पानी से धोने के बावजूद मछली की दुर्गंध नहीं छूटती।

—जन्मजात गुण या लक्षण का शिक्षा से परिष्कार नहीं हो सकता।

—प्राकृतिक स्वभाव या चरित्र किसी भी सूरत में नहीं बदला जा सकता।

**चन्नण रौ बटकौ भलौ, गाडौ भलौ न काठ।** ४२४४

चंदन का टुकड़ा भला, गाड़ी भली न काठ।

—सपूत एक ही भला और कपूत सौ भी बेकार।

—प्रतिभा की सौरभ पूजनीय होती है और घूरे की दुर्गंध से मितली आती है।

—नेकी का धन मुट्ठी भर भी काफी और काला धन ढेरों भी बेकार।

**चमकण आळी हर चीज सोनौ नीं हुवै।** ४२४५

चमकने वाली हर चीज सोना नहीं होती।

—हर चमकीली वस्तु मूल्यवान नहीं होती।

—नकली और असली का विभेद जरूरी है।

—बाहर की चमक के बदले भीतरी आभा महत्त्वपूर्ण होती है।

**चमचेड़ री बोली चमचेड़ ई सुणै।** ४२४६

चमगादड़ की बोली चमगादड़ ही सुनती है।

—सामान्यतया चमगादड़ उड़ते-उड़ते ही बोलती है, चिपकी हुई चुप रहती है। उड़ते समय वह अकेली ही रहती है! तब अपनी चूँ-चूँ की आवाज कोई दूसरा नहीं सुनता, वह खुद ही सुनती है।

—अभागे का दुख-दरद दूसरा कोई नहीं सुनता, वह स्वयं ही अनुभव करता है।

—जिस व्यक्ति की अस्पष्ट बात दूसरा न समझे तब!

**चमचेड़ां रै पांवणा नै ऊंधा लटकणा पड़ै।** ४२४७

चमगादड़ों के मेहमानों को उलटा लटकना पड़ता है।

—चमगादड़ स्वयं तो छत से औंधी लटकी रहती है, पर मेहमानों के लिए भी उसकी एकमात्र आवभगत यही है कि मेरी तरह आप भी औंधे लटक जाइये।

—भुखमरे के मेहमान को भी भूखा रहना पड़ता है।

—कुटिल व्यक्ति हर किसी को कष्ट ही पहुँचाता है।

**चमड़ी जावै पण दमड़ी नीं जावै।** ४२४८

चमड़ी जाय पर दमड़ी न जाये।

—कंजूस की चमड़ी भले चली जाय, पर उसके हाथ से दमड़ी नहीं छूटती।

—कंजूस की दृष्टि में अपनी देह का कोई मूल्य नहीं, उसके लिए तो दमड़ी ही अमूल्य है।

—मक्खीचूस के लिए धन के निमित्त जीवन है, जीवन के निमित्त धन नहीं।

—कंजूस की प्राथमिकता सदा संचय की ओर ही रहती है।

पाठा : **चमड़ी तूटै पण दमड़ी नीं छूटै।** चमड़ी टूटे पर दमड़ी न छूटे।

**चमत्कार नै नमस्कार।** ४२४९

चमत्कार को नमस्कार।

—सिद्‌ध व्यक्ति के सामने स्वतः सिर झुक जाता है।

—लोह-पुरुष का सभी लोहा मानते हैं।

**चरचराट करै जांणै कोचरी करै ज्यूं।** ४२५०

चरचराहट करता है जैसी कोचरी करती हो।

कोचरी = एक पक्षी विशेष जो हमेशा पेड़ों की खोखल में निवास करती है। और हरदम चिर्र-चिर्र करती रहती है।

—अधिक बकवास करने वाले व्यक्ति के लिए।

—बेकार बक-बक करना हीन लक्षण का द्‌योतक है।

**चरणाम्रत रा गटका नै मिटै चौरासी रा भटका।** ४२५१

चरणामृत के गटके और मिटें चौरासी के भटके।

—देवता के चरणामृत का ऐसा महत्त्व कि उससे चौरासी योनि का बंधन कटता है।

—उपासना और चरणामृत की अतिरंजित व्यंजना!

—पंडितों के पाखंड की ओर परोक्ष व्यंग्य।

**चरतियां अर उछरतियां रै सागै होवणौ।** ४२५२

चरने वाले और उछरने वालों के साथ होना।

—घर पर चरने वाले पशु और जंगल में विचरने वाले पशुओं के भी साथ हो रहना।

—जैसी स्थिति हो सबका साथ निभाने के लिए तैयार रहना।

—जैसा अवसर मिले वैसा व्यवहार करना चाहिए।

**चरपराटौ तौ मिट जासी, पण गिरगिराटौ नीं मिटतौ।** ४२५३

चरमराहट तो मिट जाएगी, पर गिरगिराहट नहीं मिटती।

—छड़ी की मार तो मिट जाएगी, पर मन की आशंका नहीं मिटती।

**संदर्भ-कथा**: एक मन-मौजी ठाकुर था। अव्वल सनकी। कभी-कभार कोई कमीन-कारू उस से माँगता तो प्रसन्न हो जाता और कभी माँगने पर क्रुद्ध हो जाता। ठिकाने के ढोलियों की प्रतिदिन बारी बँधी रहती थी कि वे सवेरे दो घड़ी रात रहते रंग-महल में आकर आलाप-चारी आरंभ कर दें। चाहे ठाकुर नींद में सोता हो या जगा हुआ। एक दिन बारी वाला ढोली आलाप-चारी करने आया तो ठाकुर सो रहा था। ठाकुर के उघड़े-नंगे पाँवों पर उसकी नजर पड़ी। एकदम गुलाबी और चिकने। आलापचारी से ठाकुर की नींद में कोई खलल नहीं पड़ता था। संगीत का विकट शौक था उसे। राजा की नकल करते-करते वह उससे भी आगे निकल गया। घड़ी दिन चढ़े ठाकुर की नींद उचटी तो आदत के अनुसार उसके मुँह से वाह-वाह निकली। ढोली ने खम्मा-घणी करने के बाद कहा कि आज उसे अंदाता के पाँवों के दर्शन हुए। फिर उसके सौभाग्य का क्या कहना! प्रातः काल उठते ही ढोली के मुँह से ऐसी शानदार बात सुनकर सनकी ठाकुर ने उसे ढेरों बख्शिश दी—नये अटंग कपड़े, दो बोरी बाजरा, मन गुड़, पाँच सेर घी, उतनी ही खाँड, नई जूतियाँ और तीन शराब की बोतलें। ढोली मना करता रहा और ठाकुर उस पर रीझता ही गया। कहा कि आज जो माँगेगा, मिलेगा, संकोच न करे। पर ढोली तो ठाकुर की सनक जानता था। हठात् अकारण खीज उठा तो सब वापस छीन लेगा। उसने हाथ जोड़, माथा नवाकर कहा कि दुनिया के किसी ठाकुर ने अपने ढोलियों को इतनी बख्शिश नहीं दी होगी। कुछ कमी रही हो तो माँगे। सात पीढ़ियाँ तर गईं। तब कहीं ठाकुर ने देना बंद किया। ठाकुर ने ठिकाने की गाड़ी से ढोली के घर सारा सामान पहुँचाया।

देखने वालों की अक्ल और आँखें चकरा गईं। और उधर घर के बाहर गाड़ी से सामान उतरते देखा तो ढोलन की आँखे फटी-की-फटी रह गईं। पर सारी बात सुनने पर वह उलटे पति पर नाराज हुई कि जब अंदाता ने बार-बार माँगने के लिए कहा तो उसकी जबान चिपक क्यूँ गई ? उसके लिए सोने का चंद्रहार, कंगन और सीस-फूल क्यूँ नहीं माँगा ? ऐसा शानदार मौका अब न जाने कब आएगा ? पति को भी अपनी भूल पर पछतावा हुआ। पर दूसरे दिन और भी बढ़िया सुअवसर हाथ लग गया। ढोली का परम सौभाग्य कि पाँवों के बदले सूरज को भी सात बार मात करे वैसे दमकते मुँह के दर्शन हुए। सनकी ठाकुर ने फूलकर कहा कि जब उसके पाँवों के दर्शन से वह ऐसा निहाल हुआ तो मुँह न जाने क्या चमत्कार दिखाएगा ? अकेले का मगज काम न करे तो पूरे दिन की मोहलत है। घरवाली के साथ खूब सोच-विचारकर मन आये सो माँग लेना। उनके मुँह की शान तो रखनी ही होगी। ठाकुर ने उसी वक्त ढोली को रवाना कर दिया और हिदायत दी कि वह माँगने में किसी तरह का संकोच न करे।

ढोली खुशी में उड़ता घर आया। सारी बात सुनकर पत्नी दुविधा में फँस गई। माँगने का ऐसा स्वर्ण-अवसर पहली बार ही मिला था। दिन भर दिमाग लड़ाते-लड़ाते आखिर पत्नी ने सुझाया कि आधा गाँव माँगना ही ठीक रहेगा। इतना कहा है तो किस मुँह से मना करेंगे ? बड़े आदमी अपनी बात से कभी नहीं मुकरते। ढोली खुशी में बौराया घड़ी दिन रहते घर से पूरा आश्वस्त होकर रवाना हुआ। पत्नी ने शकुन मनाने के लिए पति के मुँह में गुड़ दिया। ललाट पर कुमकुम का तिलक लगाया। चेहरा एकदम चमकता नजर आया जैसे बारह गाँव का ठाकुर हो।

संयोग की बात कि बीच रास्ते ही ठाकुर घोड़े पर रोब से बैठा नजर आया। देरी होते देखी तो वह स्वयं ढोली के घर की ओर रवाना हुआ था। सारे इलाके में नाम हो जाएगा कि आज भी दुनिया में दानवीर कर्ण की कमी नहीं है। घोड़े की तनी हुई कनौती को देखते ही ढोली के मन में एक बात कौंधी कि पहले ठाकुर से घोड़ा माँगना ठीक रहेगा। फिर घोड़े पर सवार होकर आधा ठिकाना माँगेगा। घोड़े पर चढ़ने से उसकी हिम्मत बढ़ जाएगी। ढोली की शुभराज सुनकर ठाकुर ने ही पहल करके पूछा कि दिन भर सोचने की मोहलत के बाद क्या माँगना तय किया ? फिर ढोली को क्या संकोच ? तुरत घोड़े की लगाम पकड़कर बोला—अंदाता पहले तो मुझे यह घोड़ा बख्शिश दें, फिर अगली चीज माँगूँगा। पर ठाकुर तो पहली माँग सुनते ही आग-बबूला हो गया। चाँदी की छड़ी घुमाते गुस्से में बलबलाया—

मेरी सवारी का घोड़ा और वह तुझे ? एक कमीन ढोली को ? राजाजी कहें तो उन्हें भी नहीं दूँ। नीच, हरामी तेरी यह मजाल ? ढोली ने हठ करते और जोर से लगाम पकड़ी। बेहिचक बोला—नहीं अंदाता, मुँह के दर्शन का चमत्कार तो आज देखकर ही मानूँगा। आपने बढ़-बढ़कर वादा किया तभी तो मेरा हौसला बढ़ा। यह घोड़ा तो देना ही पड़ेगा। ठाकुर ने इस बार मुँह की बजाय हाथ से उत्तर दिया। चोट तो काफी लगी, फिर भी ढोली ने लगाम नहीं छोड़ी। तब ठाकुर सड़ाक-सड़ाक चाँदी की छड़ी से उसकी पीठ धुनता रहा। पर आह की बजाय ढोली के होंठों पर मुस्कान थिरक उठी। उसकी मुस्कान देखते ही गुस्सैल ठाकुर का हाथ रुक गया। तैश में आकर पूछा—तेरी अक्कल तो नहीं मारी गई—रोने की बजाय तू मेरे सामने बेशर्म की नाईं हँस रहा है ? ढोली ने हँसते-हँसते ही जवाब दिया—मेहरबानी करके आप रुकें नहीं अंदाता, मारते रहिए। जीवन में आज पहली बार अक्ल आई कि छड़ी की चमरमराहट तो कल या परसों-तरसों अपने-आप मिट जाएगी। पर मन की यह गिरगिराहट कभी नहीं मिटती कि फकत माँगने से ही सब-कुछ मिल जाता है ! माँगने से पहले छीनने के अधिकार का पाठ सीखना पड़ेगा। इस छड़ी की मार से मुझे आज जो बोध हुआ है, उस पर छोटे-बड़े हजार ठिकाने निछावर हैं।

—सत्ता की मेहरबानी से जनता को तनिक लाभ मिल जाये तो मिल जाय पर अधिकार का दावा जताकर कुछ भी हासिल नहीं किया जा सकता।

—सत्ताधारियों की रीझ-खीज पर कटाक्ष।

**पाठा : चरमराटौ तौ मिट जासी पण गड़बड़ाटौ नीं मिटै।**

चरमराहट तो मिट जाएगी, पर गड़बड़ाहट नहीं मिटती।

**चरसी यार किसकै, दम लगाय खिसकै।** ४२५४

चरसी यार किसके, दम लगाकर खिसके।

—अपना स्वार्थ सिद्‌ध होने पर जो व्यक्ति किनारा कर ले।

—मतलब पूरा होने के पश्चात् जो व्यक्ति मुँह फेर ले या विमुख हो जाय उसकी प्रवृत्ति इस में उजागर होती है।

**चरै फिरै जिकै रौ कांईं मरै !** ४२५५

**चरे फिरे उसका क्या मरे !**

—जो पशु ठौर-ठौर फिर कर चरता है, भला उसका क्या बिगड़ सकता है ?

—जो व्यक्ति गुजर-बसर के लिए अपने जन्म-स्थान का मोह त्यागकर अन्यत्र चला जाय तो उसे निश्चित सफलता मिलती है।

—कर्मठ व्यक्ति की सराहना और आलस्य की प्रताड़ना।

**पाठा : चरै फिरै जिकौ क्यूं भूखां मरै।** चरे फिरे वह क्यूँ भूखों मरे ?

**चलती गाड़ी में सगळा ई वांगण देवै।** ४२५६

चलती गाड़ी में सभी वांगण देते हैं।

वांगण = बैलगाड़ी की धुरी में तिलहन के तेल से भिगोया कपड़ा रखने की प्रक्रिया, जिस से गाड़ी सुगमता-पूर्वक चलती है। तेल सूखने पर फिर कपड़े में तेल दिया जाता है। सूखने पर बैलगाड़ी चूँ-चूँ की आवाज करती है और चलने में व्यवधान उपस्थित होता है।

—समर्थ व्यक्ति को सभी सहयोग करते हैं।

—योग्य व्यक्ति की मदद करना सार्थक है।

—सफल व्यक्ति के साथ सभी जुड़ना चाहते हैं। उसके सहयोग की भावना के पीछे अपने अजाने स्वार्थ की चाह भी छिपी रहती है।

**चलती में नीं चलावै जिकौ बावळौ अर नीं चलती में चलावै जिकौ बावळौ।** ४२५७

चलती में न चलाये वह बावरा और न चलती में चलाये वह बावरा।

—अनुकूल अवसर का लाभ न उठाये वह नासमझ और प्रतिकूल स्थिति को समझे बिना उस में हाथ डाले वह नासमझ।

—जिस व्यक्ति को उचित, अनुचित अवसर की पहिचान न हो, उसके लिए।

—समय पर सही निर्णय न लेने वाले व्यक्ति पर कटाक्ष।

**चलती में नीं चलावै जिणरा गुर-पीर झूठा।** ४२५८

चलती में न चलाये, उसके गुरु-पीर झूठे।

—लाभप्रद स्थिति का समुचित फायदा न उठाये उसके शिक्षक ही बेकार हैं।

—किसी आदर्श-विशेष या सिद्धांत की आन में तात्कालिक अवसर का लाभ न उठाने वाले के लिए।

—आदर्शवाद की बजाय अवसरवाद की प्रशस्ति है, इस कहावत में।

**चलती रौ नांव गाडी।** ४२५९

चलती का नाम गाड़ी।

**टिप्पणी** : इस कहावत का मूल स्रोत कबीर के इस दोहे में प्रतीत होता है :

**चलती को गाड़ी कहे, बने दूध को खोया।**

**रंगी को नारंगी कहै, देख कबीरा रोया।।**

इस मूल उद्गम के अनुसार इस कहावत का अर्थ होगा कि दुनिया का यह कैसा ढब है कि चलने वाली चीज को गाड़ी मतलब कि गड़ी हुई कहते हैं। किंतु प्रचलन में इसका बिलकुल दूसरा ही अर्थ है कि केवल कामयाबी ही स्तुत्य है।

—जो चीज चलती रहे, वही सार्थक है, अटकी वस्तु की कोई उपादेयता नहीं।

—सदियों से चलती हुई परंपरा ही कल्याणप्रद होती है। इसलिए परिवर्तन की बजाय प्रचलन की अनुपालना में कोई खतरा नहीं।

**चला-चली रै मेळै, भला-भली वपरावौ।** ४२६०

चला-चली के मेले में, भला-भली खरीदो।

—चला-चली के मेले में अच्छी-अच्छी चीजें खरीदो।

—दुनिया के मेले में आये हो तो हमेशा सुकर्म करो, दानपुण्य करो, लोगों की सेवा करो, झूठ न बोलो।

—दुनिया के मेले में हर व्यक्ति को अच्छे काम की होड़ करनी चाहिए।

**चला-चली रौ मेळौ।** ४२६१

चला-चली का मेला।

—लोगों के लगातार आने से मेला भरता है और लोग-बागों के जाने से मेला बिखर जाता है। शेष रहते हैं केवल मेले के अवशेष।

—दुनिया में निरंतर आवागमन होता रहता है। इसी कारण इसकी उपमा मेले से दी जाती है। कोई जन्म लेता है, कोई मरता है। पर मेले की तरह दुनिया सूनी नहीं होती, आबाद रहती है।

—दुनिया के मेले का आवागमन बना रहता है। न किसी के जन्म पर खुशी मनानी चाहिए और न किसी के मरने पर शोक प्रकट करना चाहिए।

**पाठा : चला-चली रौ खेलौ।** चला-चली का खेल।

**चलायनै करम में भाटौ लेवै।** ४२६२

चलाकर पत्थर से सिर फोड़ना।

—जो व्यक्ति स्वयं को ही हानि पहुँचाने पर तुला हो, भला उसे कौन बचा सकता है?

—भलाई पहले घर से शुरू होती है, बाद में समाज की बारी आती है, इसलिए हर व्यक्ति को अपना भला ही सोचना चाहिए। वह स्वयं नहीं सोचेगा, तो उसके बदले में कोई अन्य तो सोचने से रहा।

**चवड़ै-धाड़ै।** ४२६३

खुले-आम।

—जो काम निर्भय, निःशंक खुले-आम किया जाय।

—सच्चे आदमी की चुनौती-पूर्ण ललकार।

**चवदै चूल्हां री वांनी उडै।** ४२६४

चौदह चूल्हों की राख उड़ती है।

—निपट गरीब की ठिठौली करते समय इस उक्ति का प्रयोग होता है कि सारी दुनिया में ऐसा हतभागा कोई नहीं है।

—जो व्यक्ति गरीब होते हुए भी बेकार डींग मारे कि वह ऐसा है, वैसा है।

**चांच दई सो चुग्गौ ई देसी।** ४२६५

चोंच देने वाला चुग्गा भी देगा।

—जिस सृष्टि-कर्ता ने मुँह दिया है, वह खाने को भी देगा।

—थलचर,जलचर और नभचर इत्यादि समस्त प्राणियों के पालन-पोषण की संपूर्ण जिम्मेवारी ईश्वर की है।

—जिसने सृष्टि रची है,वही इसका पालन भी करेगा।

—भाग्यशाली और ईश्वर में अडिग आस्था रखने वाले इस उक्ति का सहारा लेते हैं।

—पूरी कहावत इस प्रकार है,प्रचलन में पिछली वाली कड़ी ही काम आती है।

**थूं क्यूं सोच करै मन-मूरख, चांच दई सो चुग्गौ ई देसी।**

तू क्यों सोच करे मन-बावरे,चोंच देने वाला चुग्गा भी देगा।

**पाठा : चांच दीवी जिकौ चुग्गौ ई देसी, नींतर आपरी चांच पाछी लेसी।**

चोंच दी है वह चुग्गा भी देगा,वरना अपनी चोंच वापस लेगा।

**चांच दी वौ चूंन ई देसी।** चोंच दी है वह चून भी देगा।

**चांचाळा री नीं फळै जित्ती दांताळा री फळै।** ४२६६

चोंच वाले की नहीं फलती जितनी दाँतों वाले की फलती है।

—चोंच वाले हल से बीज बोने वाले की फसल वैसी नहीं फलती,जैसी दाँतों वाले उपकरण से निराई करने वाले की फलती है। क्योंकि इससे खरपतवार नष्ट हो जाती है।

—यों तो यह कहावत कृपि के अंतर्गत आती है,पर इसका लाक्षणिक अर्थ उससे हटकर भी है कि जन्म देने वाले की बजाय परवरिश करने वाला हमेशा बढ़कर होता है।

—किसी चीज़ को उत्पन्न करने से भी महत्त्वपूर्ण है,उसकी हिफाजत करना।

**पाठा : चांचाळै सूं दांताळौ भलौ।** चोंच वाले से दाँतों वाला भला।

**चांणचक बीजळी पड़सी, आ कुण जांणतौ।** ४२६७

अचानक बिजली पड़ेगी, यह कौन जानता था।

दे.क.सं.११७

**चांद गैण गिंडकां नै भारी।** ४२६८

चंद्र-ग्रहण कुत्तों को भारी।

—चंद्र-ग्रहण के दौरान याचक गली-गली भीख माँगते फिरते हैं,तब गलियों में सोते कुत्तों को जागकर भौंकना पड़ता है। याचक उन्हें दुत्कारते हैं,पत्थर फेंकते हैं। मौका लगे तो

लकड़ी से पिटाई भी करते हैं। चंद्र ग्रहण के समय भीख तो याचकों को मिलती है, बेचारे कुत्तों को खामखाह कष्ट उठाना पड़ता है।

—दूसरों के कारण व्यर्थ अचीता कष्ट उठाने पर।

—एक की भलाई में किसी दूसरे को बेकार कष्ट पहुँचे तब...!

**चांदणी नित अेक सारीसी नीं व्है।** ४२६९

चाँदनी नित्य एक जैसी नहीं होती।

—चंद्रमा की बढ़ती-घटती कलाओं के अनुसार ही चाँदनी का उजाला होता है। दूज और पूनम की चाँदनी में कितना अंतर है।

—सुख-सुविधाओं का आनंद हमेशा एक-सा नहीं रहता, इस सच्चाई को मनुष्य याद रखे तो अच्छा है।

—आमदनी का स्रोत सदा एक-सा नहीं रहता।

—ऐयाशी करने वालों को नसीहत के रूप में...।

**चांदणी रात चांदौजी आया, मूंछां में मतीरा लाया अर खाकां में खरबूजा लाया।** ४२७०

चाँदनी रात में चंदाजी आये, मूँछों में तरबूज लाये और बगलों में खरबूज लाये।

—दिसावर से कोई व्यक्ति अच्छी कमाई करके लाये तब परिहास में यह उक्ति कही जाती है।

—बच्चों के खिलवाड़ का एक 'छड़ा'।

**चांदणी राति देखै नै उचाळौ घातै।**–व.९४ ४२७१

चाँदनी रात देखकर 'उछाले' की तैयारी।

उचाळौ = उछाळौ = जागीरदार या ठाकुर पर किसी कारणवश नाराज होकर प्रजा का सामूहिक रूप से पलायन करना, पूरे माल-असबाब के साथ। ठाकुरों के अत्याचार से तंग आने पर प्रतिरोध की एक प्रक्रिया—असहयोग। ठाकुर अपना पलड़ा दबता जानकर मनाने की चेष्टा भी करता था। शर्तें मान लेने पर 'उछाला' करने वाले लौट भी आते थे! चाँदनी रात का मौका ढूँढ़ने पर दुहरा लाभ हो जाता था। एक तो चाँदनी रात में राह सुविधा से कटती थी।

और दूसरा यह कि यदि सुमति आने पर ठाकुर के कारिंदे मनाने आएँ तो चाँदनी में सुगमता से नजर आ जाएँ। 'उछाला' अमूमन रात को ही करते थे।

—जो व्यक्ति शादी अथवा अन्य पारिवारिक अनुष्ठान-उत्सवों में रूठना करे तब!

—अवसर की ताक में जो व्यक्ति जायज या नाजायज लाभ उठाने का प्रयास करे तब।

**चांद नै चाटणी चावै।** ४२७२

चाँद को चाटना चाहे।

—जिस व्यक्ति की महत्त्वाकांक्षाएँ बहुत ऊँची हों।

—जो व्यक्ति अपनी क्षमता से परे बहुत बड़ा काम करना चाहे।

**चांद पचासां मूवा जीवावै।** ४२७३

चाँद पचासों को मरने से बचाता है।

—चंद्रमा की दशा अत्यंत शुभ मानी जाती है। आई हुई घोर विपत्ति इसके उत्कृष्ट प्रभाव से टल जाती है। यह पचास दिन तक रहती है। यों तो यह कहावत ज्योतिष-विद्या से संबंधित है, पर इसका लाक्षणिक अर्थ में भी प्रयोग होता है कि—बड़े व्यक्तियों की शुभ दृष्टि हो तो अनेक दुखियारों का भला हो सकता है।

—बड़े व्यक्तियों का प्रभाव भी विशाल होता है।

**चांद बीज नै नींतर तीज नै गहीज्यां रैसी।** ४२७४

चाँद द्विंतीया को नहीं तो तृतीया को गहा ही जाएगा।

—आखिर चंद्रमा ग्रहण से कब तक बचता रहेगा?

—बड़े-बड़े श्रीमंत भी विपत्ति से छुटकारा नहीं पा सकते।

—विपत्ति किसी भी प्रकार का विभेद नहीं रखती।

**चांद रै गैण लागै।** ४२७५

चाँद को भी ग्रहण लगता है।

—चाँद बड़ा श्रेष्ठ नक्षत्र है। चाँदनी बरसाकर अँधेरे में प्रकाश भरता है—वैसे उत्कृष्ट नक्षत्र को भी ग्रहण दबोच लेता है।

—किसी बड़े व्यक्ति पर अचीता कलंक लगे तब...।

—किसी आदर्श विभूति का चारित्रिक पतन हो तब...।

—अत्यधिक सुंदर कन्या का किसी बदसूरत व्यक्ति से ब्याह हो तब...।

**चांद रै जोड़ै तारां री कुण गिनरत करै !** ४२७६

**चाँद के सामने तारों की कौन परवाह करे !**

—किसी अद्‌वितीय रूपसी के सामने सामान्य औरतों की उपेक्षा करनी चाहे तब।

—बहुत बड़े व्यक्ति का सहारा होने पर छोटे व्यक्तियों के प्रति उदासीनता स्वाभाविक है।

**चांद रै डावै वळ।** ४२७७

**चाँद के बाएँ हो जा।**

**टिप्पणी :** लोकोपवाद के अनुसार कार्तिक मास की पूनम को साँझ की वेला कृत्तिका नक्षत्र चंद्रमा के पीछे रहता है। रात ढलने पर चंद्रमा के अस्त होने की वेला कृत्तिका नक्षत्र चंद्रमा के आगे होकर दाहिनी ओर आ जाय तो आने वाला वर्ष सुकाल माना जाता है और यदि बाईं ओर हो जाय तो अगला वर्ष बुरा गिना जाता है।

—अनुपयुक्त व अयोग्य व्यक्ति के लिए।

—जो व्यक्ति किसी-न-किसी रूप में समाज को क्षति पहुँचाये।

**चांद वळू व्है जद तारा झख मारै।** ४२७८

**चाँद पक्ष में हो तो तारे झख मारें।**

—ज्योतिष के हिसाब से चंद्रमा अनुकूल हो तो अन्य नक्षत्रों का प्रभाव कुछ भी महत्त्व नहीं रखता।

—चंद्रमा की दशा हो तो अन्य किसी ग्रह की परवाह नहीं करनी चाहिए।

—बड़े व्यक्ति का वरद-हस्त सिर पर हो तो छोटे-मोटे सहारे की कोई आवश्यकता नहीं। बड़ों की अनुकंपा सर्वोपरि होती है।

**चांद सूं चांदणी होवै, तारा सूं नीं।** ४२७९

**चाँद से चाँदनी होती है, तारों से नहीं।**

—आकाश में अगणित तारे चमकते तो खूब हैं, पर उनकी चमक उन तक ही सीमित रहती है, वे दूसरों को प्रकाश नहीं दे सकते। पर चाँद अकेला होते हुए भी दुनिया के अंधकार को

चाँदनी से लबालब भर देता है। ठीक ऐसी ही दीप्ति मानव-समाज में महान हस्तियों की होती है।

—महान व्यक्तित्व से ही महान काम हो सकता है, सामान्य आदमियों से नहीं, हालाँकि वे संख्या की दृष्टि से अगणित हैं।

—आदर्श-व्यक्ति का जो प्रभा-मंडल होता है, वैसा साधारण व्यक्ति का नहीं।

**चांद-सूरज रै ई कळंक लागै।** ४२८०

चाँद-सूरज को भी कलंक लगता है।

कलंक = इस प्रसंग में ग्रहण से तात्पर्य है।

—किसी बड़े व्यक्ति की बदनामी हो तब...।

—मनुष्य-समाज की बड़ी-से-बड़ी हस्ती भी कलंक से अछूती नहीं रह सकती।

**चांदी रा लागौड़ा जूत घणा दिन चरणाट करै।** ४२८१

चाँदी के जूतों की मार कई दिन तक कसकती है।

—चमड़े के जूतों की मार धीरे-धीरे विस्मृत हो जाती है, पर चाँदी के जूते की मार भुलाये नहीं भूलती।

—जिस धन के संचय में बरस बीत जाते हैं, वह दंड, चोरी या डकैती के द्वारा एक घड़ी में नष्ट हो जाता है। जीवन जैसा अमूल्य रत्न जिस धन की लालसा में गँवाना पड़ता है, उसके खोने की पीड़ा बेइंतहा होती है।

**पाठा : चांदी री चोट भूंडी व्है** । चाँदी की चोट बुरी होती है।

**चांदी री मार अछेरी व्है**। चाँदी की मार असह्य होती है।

**चांदी री चोट पड़ै जद सांड ई धीणै व्है जावै।** ४२८२

चाँदी की चोट लगे तब साँड भी 'हरा' हो जाय।

धीणै = साँड के सहवास से जब गाय के गर्भ ठहरे तो उसे राजस्थानी में 'धीणै' होना कहते हैं और हिंदी में हरी होना। पर चाँदी की चोट ऐसी वजनदार होती है कि उससे साँड भी 'हरा' हो जाय। जो एक असंभव बात है। यहाँ 'धीणै या' 'हरे' का अर्थ है पस्त होना या घुटने टेक देना।

—चाँदी का प्रहार बड़ी-से-बड़ी हस्ती भी झेल नहीं सकती।

—चाँदी का वार कैसे भी धनवान के घुटने टिकवा देता है।

**पाठा : चांदी री चोट पड़ै जद सांड ई गाय व्है जावै।**

चाँदी की चोट लगे तब साँड भी गाय हो जाता है।

**चांदी री तरवार रै सांम्ही सै हथियार थाकै।** ४२८३

चाँदी की तलवार के आगे सब हथियार हार जाते हैं।

—मनुष्य जीवन का पहला और अंतिम ध्येय अधिकांशतया धन-संचय करना ही है—चाहे वह युद्ध करके हो, डाका डालकर हो, चोरी करके हो, धोखा-धड़ी करके हो और चाहे लूट-खसौट करके। सभी हथियार इसे ही अर्जित करने के निमित्त हुए हैं, तब भला चाँदी की तलवार के आगे कौन-सा हथियार टिक सकता है? आदर्श की हवाई बात चाहे जो हो, पर वास्तविक स्थिति तो यही है, जिसे नजर-अंदाज नहीं किया जा सकता।

—धन का प्रलोभन सबको परास्त कर देता है।

—धन का देवता सब देवों से बड़ा है।

**चांदी री थाळी में तेवड़ वत्तौ सस्वादौ नीं लागै।** ४२८४

चाँदी की थाली में भोजन अधिक स्वादिष्ट नहीं लगता।

—खराब या अच्छे भोजन का अपना ही स्वाद होता है—चाहे वह पत्तल में परोसा जाय या चाँदी की थाली में। न पत्तल में परोसने से उसका स्वाद घटता है और न चाँदी की थाली में परोसने पर उसका स्वाद तनिक बढ़ता है।

—बाहरी आडंबर से वास्तविकता छिप नहीं सकती।

—असलियत को ऊपरी टीमटाम से छिपाने की चेष्टा व्यर्थ है।

**चांदी री मेख, ऊभी तमासा देख।** ४२८५

चाँदी की मेख, खड़ी तमाशा देख।

मेख = काठ या धातु की कील।

—ग्रह-दशा के हिसाब से चाँदी के 'पाये' जन्म हो तो उसे कभी कोई अभाव नहीं रहता। उसका भाग्य स्वतः फलता है।

—घर में चाँदी या धन की भरमार हो तो जीवन भर कष्ट उठाने की जरूरत नहीं, मजे से मौज मनाते रहो।

—जिस धन को कमाने के लिए मार कष्ट उठाना पड़ता है, वह यदि उत्तराधिकार या भाग्य से मिल जाय तो ऐश्वर्य करने के लिए किस बात की कमी।

**चांदी वाळौ करकै।** ४२८६

चाँदी वाला चबकता है।

—चाँदी के दो अर्थ हैं—एक मूल्यवान पदार्थ और दूसरा घाव—जो किसी वस्तु की रगड़ से बनता है। जिस पशु की पीठ या गर्दन पर घाव होता है, वह कराहता है।

—पीड़ा की कसक भुक्त-भोगी ही जानता है।

—चमड़े के सख्त जूते की मार उतनी नहीं टीसती, जितनी चाँदी के जूते की मार।

—अर्थ-दंड असहनीय होता है।

—धन की क्षति सबसे बड़ी क्षति होती है।

**चांनड़ौ टाबर घी सूं झरती रोटी नै रोवणी-रोटी कैय बतळावै।** ४२८७

जिद्दी बच्चा घी से झरती रोटी को रोने-वाली रोटी कहता है।

—जिद्दी बच्चे को तो हर बात के लिए अड़ने का कोई-न-कोई बहाना चाहिए। घी से झरती रोटी देकर उसे चुप करने की चेष्टा की जाय तो वह रोटी के लिए इसलिए मना कर देता है कि यह तो रोने-वाली या आँसू टपकाने वाली रोटी है।

—हर बात के लिए कुछ-न-कुछ अनोखा बहाना बनाने वाले के लिए।

**पाठा : चांनड़ौ टाबर घी सूं चवती रोटी रौ रोवणी-रोटी नांव कढ़ावै।**

जिद्दी लड़का घी से टपकती रोटी को रोने-वाली रोटी कहता है।

**चांनणा वाळी धीहड़ी, बड़-बड़ कातै सूत।**–व.१९७ ४२८८

जिद्दी माँ की बेटी बड़बड़ाते सूत कातती है।

—जिद्दी माँ की बेटी अनिच्छा से सूत कातने बैठ जाती है, पर बड़बड़ करते हुए।

—माँ के लच्छन बेटी में उजागर होते हैं।

—सूरत की नाईं स्वभाव भी अनुवांशिक होता है, माँ-बाप का चरित्र संतान में ढलता है।

—जो बेटी हर काम को बेमन से करती हो।

**चांनणा जिसा भाग व्है तौ रातिंदौ क्यूं व्है !** ४२८९

प्रकाश जैसा भाग्य हो तो रतौंधी क्यों होती !

रातिंदौ = रतौंधी = रात को न दिखने वाला एक रोग विशेष।

—जन्म के दुखियारे का आत्म-रुदन कि प्रकाश जैसा भाग्य होता तो रतौंधी का रोग ही क्यों लगता ?

—जब भाग्य प्रतिकूल हो तो खुद ईश्वर भी उसकी सहायता नहीं कर सकता।

**पाठा : चिराक जैड़ा भाग व्है तौ रातिंदौ क्यूं व्है !**

चिराग जैसे भाग्य हों तो रतौंधी क्यों हो !

**दीया जैड़ा भाग व्है तौ रातिंदौ क्यूं व्है !**

दीपक जैसा भाग्य हो तो रतौंधी क्यों हो !

**चांनणौ करनै घर बतायौ।** ४२९०

उजाला करके घर दिखाया।

—अपने हाथों की हुई गलती का किसे दोष दिया जाय ? इसके लिए तो भाग्य को भी नहीं कोसा जा सकता।

—भोले व्यक्ति को अपनी नादानी का नुकसान तो उठाना ही पड़ता है।

—जो व्यक्ति अपनी क्षति के लिए स्वयं जिम्मेवार हो।

**पाठा : दीवौ झुपाय घर बतायौ।** दीया जलाकर घर दिखाया।

**चांम चीरीज्यां लोई नीसरै।** ४२९१

चमड़ी कटने पर लहू ही निकलता है।

—गरीब हो चाहे अमीर, रंक हो चाहे राजा, चमड़ी कटने पर सबके लहू ही निकलता है, इस में कोई अपवाद नहीं।

—चोट या घाव की पीड़ा सबके लिए समान होती है।

—कार्य-कारण का परस्पर अविच्छिन्न संबंध होता है।

—बाहर से विभिन्न दिखने पर भी सभी मनुष्य भीतर से एक होते हैं।

**पाठा : चांम चीरीजै जद रगत नीसरै । चमड़ी कटने पर रक्त निकलता है ।**

**चांमड़ी चीरीज्यां लोई रिसै । चमड़ी कटने पर लहू रिसता है ।**

**चांमड़ा री देवी नै खाहड़ा री पूजा ।** ४२९२

चमड़े की देवी को जूतों की पूजा ।

—जैसा देव वैसी पूजा ।

—जैसे लच्छन वैसा सत्कार ।

दे.क.सं.२९३४,२९३५

**चांम नै चांम को पूगै नीं ।** ४२९३

चाम को चाम नहीं पहुँच सकती ।

—एक-दूसरे की चमड़ी में परस्पर समानता नहीं होती ।

—हर व्यक्ति एक-दूसरे से भिन्न होता है ।

—कोई व्यक्ति किसी दूसरे से होड़ नहीं कर सकता ।

**चांम रौ कांईं वाल्हौ, कांम वाल्हौ ।** ४२९४

चाम से क्या प्रीत, काम से प्रीत ।

—निठल्ला व्यक्ति चाहे निकट संबंधी हो या सुंदर,वह किसी को नहीं सुहाता ।

—काम प्रिय है,रिश्ता नहीं ।

—काम के लिए किसी का लिहाज नहीं रखना चाहिए ।

दे.क.सं.२०५६

**पाठा : चांम रौ कांईं प्यारौ, कांम प्यारौ ।** चाम प्यारी नहीं काम प्यारा होता है ।

**वाल्हौ कांम, न वाल्हौ चांम** । प्यारा काम,न प्यारी चाम ।

**चांम वाल्हौ नीं, दांम वाल्हौ ।** ४२९५

चाम प्यारी नहीं, दाम प्यारा है ।

—जो अकर्मण्य सदस्य घर के लिए कमाई नहीं करता उसके लिए ।

—जो धन-लौलुप व्यक्ति रिश्ते की अपेक्षा धन को अधिक महत्त्व देता हो ।

—घर में आई बहू की बजाय जो व्यक्ति दहेज को ही महत्त्व देता हो ।

पाठा : **चांम प्यारौ नीं, दांम प्यारौ।** चाम प्यारी नहीं ,दाम प्यारा है।

**चांम सूं दांम नीं घड़ीजै।** ४२९६

चाम से दाम पैदा नहीं होते।

—जब परिवार के सभी सदस्य घर के स्वामी को बार-बार रुपयों की खातिर तंग करते हैं तब उसे मजबूर होकर कहना पड़ता है—यदि मेरी चमड़ी से रुपये बनते हों तो उसके लिए मनाही नहीं है, पर ऐसा होता कहाँ है ? रुपये तो रुपयों के तरीके से अर्जित होते हैं। तब खामखाह परेशान करने से क्या फायदा।

—जिस व्यक्ति की दृष्टि में चाम की बजाय दाम का महत्त्व ज्यादा हो।

पाठा : **चमड़ी सूं दमड़ी नीं ठाईजै।** चमड़ी से दमड़ी नहीं बनती।

**चाकर कद घोड़ा बगस्या।** ४२९७

चाकरों ने कब घोड़े बख्शे।

—चाकर छोटा हो चाहे बड़ा, सबकी मनोवृत्ति एक-सी होती है कि वे केवल लेना ही जानते हैं—देना नहीं। इसलिए उनके स्वभाव में उदारता की अपेक्षा याचक-वृत्ति ही प्रमुख होती है। घोड़ा तो क्या वे किसी को गधा भी बख्शिश में नहीं दे सकते।

—नौकरशाही की मनोवृत्ति को भी यह कहावत आंशिक रूप में चरितार्थ करती है।

**चाकर किणनै कमाय घालै।** ४२९८

चाकर किसे कमाई करके दें।

—अपनी देखरेख और पूरी मुस्तैदी न हो तो नौकर ठीक तरह काम नहीं करते।

—जो व्यक्ति नौकरों पर ही निर्भर है, आखिर उसे घाटे में ही रहना पड़ता है।

**चाकर चकवौ, चतर नर, तीनूं सदा उदास।** ४२९९
**खर घोघू, मूरख पसु, सदा सुखी प्रथीराज॥**

चाकर, चकवा, चतुर नर, तीनों सदा उदास।
खर घोघू, मूरख, पशु, सदा सुखी पृथ्वीराज॥

दे.क.सं. २७६९

**चाकर जांणै घोड़ौ म्हारौ, धणी जांणै घोड़ौ नै चाकर दोनूं ही म्हारा।**–व.३२४ ४३००

चाकर जाने कि घोड़ा मेरा, मालिक जाने कि घोड़ा व चाकर दोनों ही मेरे।

—हरदम घोड़े की हाजरी बजाने पर सईस समझता है कि घोड़ा उसका है। और मालिक समझता है कि निस्संदेह घोड़ा और चाकर दोनों उसके हैं। पर वास्तविकता को भला कौन चुनौती दे सकता है? क्योंकि ईश्वर की दृष्टि में चाकर और मालिक दोनों समान हैं। मरने पर घोड़ा न चाकर का है और न स्वामी का, दोनों बिना सवारी के आये और बिना सवारी के ही कूच कर जाएँगे।

—इस दुनिया में जो कुछ भी है, सब ईश्वर का है।

**चाकर नै ठाकर घणा अर ठाकर नै चाकर घणा।** ४३०१

चाकर को ठाकुर बहुतेरे और ठाकुर को चाकर बहुतेरे।

—दुनिया में हर किसी का विकल्प है। कोई किसी के भरोसे नहीं जीता।

—कोई किसी का मोहताज नहीं होता।

—कोई यह समझे कि दुनिया में—मैं ही सब-कुछ हूँ—तो यह उसका भ्रम है।

**चाकर मालिक रा हां के रींगणां रा।** ४३०२

चाकर मालिक के हैं या बैंगन के।

**संदर्भ-कथा :** एक राजा को बैंगन की सब्जी का बड़ा शौक था। जब-तब राजा माली से बढ़िया बैंगन की टोकरी मँगवाता। दरबारियों को भी बारी-बारी से बैंगन बाँटता। राजा को जिस बात का शौक हो, फिर दरबारी उससे क्यों दूर रहें। सभी उसकी तारीफ करते कि बस, तरकारी है तो बैंगन की। सबका सरताज—बैंगन। तभी तो स्वयं कुदरत ने उसकी ताजपोशी की। दरबार में ज्यादातर बैंगन ही की चरचा चलती। अन्य काम-काज नहीं के बराबर थे। संयोग से एक बार राजा के पेट में असह्य दर्द हुआ। जिसकी वजह उसने बैंगन की नियमित सब्जी ही को बताया। फिर तो सारे दरबार में बैंगन की बुराइयों का सिलसिला ही खतम नहीं हुआ। दीवान के साथ और भी प्रमुख दरबारियों ने अँगुलियों से छूकर राजा को बताया कि तभी तो कुदरत ने बैंगन का अभिमान तोड़कर मुकट पर काँटे जड़ दिये। राजा को भी यह बात सच लगी।

पर उसे गुस्सा इस बात का आया कि दरबारियों ने अब तक उससे काँटों वाला भेद छिपाया क्यों ? क्रोध में आँखें लाल करके जोर से कहा, 'और तो कोई दूसरी बात जानते नहीं, फकत मेरी हाँ-में-हाँ मिलाते हो। चाटुकारी कोई अच्छी बात नहीं। पहले तो बैंगन की तारीफ करते अघाते नहीं थे। बढ़-बढ़कर डींग मारते थे कि कुदरत ने खुश होकर उसकी ताजपोशी की, अब कहते हो कि उसने नाराज होकर बैंगन के मुकट पर काँटे-ही-काँटे जड़ दिये ! बेशर्म कहीं के ? बताओ, आखिर इतनी खुशामद की जरूरत क्या है ?'

दरबारियों ने समवेत स्वर में कहा, 'अंदाता, हम तो आपके चाकर हैं, बैंगन के नहीं। तब आपकी प्रशंसा न करके, क्या बैंगन की प्रशंसा करें ?'

राजा भी समझ गया कि दरबारियों का ज़वाब बिलकुल सही है। उसने गर्दन झुकाते-उठाते कहा, 'हाँ, यह बात तो एकदम साफ है कि तुम सभी मेरे चाकर हो। कोई बैंगन का चाकर हो तो बताए।' पूरे राज-दरबार में कोई बैंगन का चाकर था ही नहीं, फिर क्या बताता।

दीवान ने हाथ जोड़कर कहा, 'अंदाता ! बैंगन का चाकर तो कोई कुत्ता भी नहीं हो सकता। वे भी उसके कँटीले ताज पर भौंकते हैं ?'

'जरूर भौंकते होंगे', राजा ने सोने का मुकट परसते हुए राज-माली को आदेश दिया कि बगीचे के सारे पौधे उखाड़कर घूरे पर डाल दे।

जय-जय के निनाद से हवा में भॉवरें पड़ने लगीं। राजा अपनी आज्ञाकारी प्रजा से बेहद खुश था और दरबारी अपने राजा से बेइंतहा खुश थे।

—चाटुकारों का रुख हमेशा स्थिति के साथ बदलता रहता है।

**चाकर सूं गिंडक भलौ, सूवै आपरी नींद।** ४३०३

चाकर से कुत्ता भला जो सोये अपनी नींद।

—मनुष्य का मनुष्य के तहत नौकर होना, कुत्ते की जिंदगी से बदतर है। क्योंकि कुत्ता तो अपनी नींद का स्वयं मालिक है। मनुष्य के अधीन काम करने वाले चाकर को तो यह भी अधिकार नहीं।

—मनुष्य अपने नौकरों के प्रति नितांत असंवेदनशील होता है।

—मनुष्य के जीवन में स्वतंत्रता ही सर्वोपरि लक्ष्य होना चाहिए।

**चाकरी घणी आकरी।** ४३०४

चाकरी बहुत कठिन है ।

—मनुष्य अपने पालतू पशुओं का नौकर की बजाय अधिक ध्यान रखता है,क्योंकि पशु तो भूखा रहने पर या सताने पर अड़ जाता है,पर नौकर तो मनुष्य होने के नाते किसी भी सीमा तक समझौता कर सकता है ।

—मनुष्य को मनुष्य की नौकरी से भगवान बचाये । क्योंकि वह अपनी बिरादरी के प्रति ज्यादा क्रूर होता है ।

—मनुष्य के जीवन में चाकरी से निंदनीय और कुछ भी कार्य नहीं ।

**पाठा : चाकरी सब सूं आकरी ।** चाकरी सबसे कठिन है ।

**चाकरी नरक परवांण।** ४३०५

चाकरी नर्क के समान है ।

—हिंदू शास्त्रों में नर्क की नानाविध यंत्रणाओं का वर्णन रोंगटे खड़े कर देता है । मनुष्य हो कर मनुष्य की चाकरी करना नर्क के समान ही कष्टप्रद है ।

—चाकरी छोटी-बड़ी कैसी भी हो,वह मनुष्य के लिए शोभनीय नहीं ।

**चाकरी ना कीजै चतर घास खोद खाजै।** ४३०६

चाकरी ना कीजे चतुर घास खोद खाइये ।

—मनुष्य यदि रंचमात्र भी चतुर हो तो चाकरी की अपेक्षा घास खोदकर जीवन बसर करना बेहतर समझेगा ।

—जो मनुष्य सर्वथा विवेकहीन हो,फकत वही चाकरी करना चाहेगा ।

**पाठा : चाकरी न कीजै बंदा घास खोद खाजै ।**

**चाकी में पड़्यां साबत कुण बचै ?** ४३०७

चक्की में पड़कर साबूत कौन बचा है ?

—चक्की में पड़ने के बाद हर दाना पिसकर ही बाहर आता है,कोई भी साबूत नहीं बचता ।

—यहाँ चक्की संसार के प्रतीक-रूप में इंगित है । इस संसार में जो भी प्राणी जन्म लेता है, वह प्रतिक्षण मृत्यु की ओर अग्रसर होता है और अंत में मरकर संसार से कूच कर जाता है ।

—भक्त-कवि कबीर के इस दोहे से यह रूपक बिलकुल स्पष्ट हो जाता है :

**चलती चाकी देखकर दिया कबीरा रोय।**
**दो पाटन के बीच में, साबुत बचा न कोय॥**

—अनाज पिसकर जब बाहर निकलता है तो उसका अस्तित्व समाप्त नहीं होता, केवल रूप परिवर्तित होता है—अनाज से आटा।

**चाखै तौ चांदी, रगड़ै तौ गोडा।** ४३०८

चखे तो चाँदी, रगड़े तो घुटने।

—यहाँ चाँदी के दो अर्थ हैं—एक मूल्यवान पदार्थ, दूसरा—चमड़ी पर सतही घाव, जिसे राजस्थानी में चाँदी कहते हैं। खरे-खोटे सोने की परख कसौटी पर रगड़ने के बाद होती है। जब कंगाल व्यक्ति चाँदी-सोने की चर्चा करता है तो व्यंग्य में कहा जाता है कि वह चखे तो घाव वाली चाँदी है और रगड़े तो अपने घुटने हैं—इसके अलावा और कुछ भी नहीं।

—बेहद कंगाली के बावजूद जो व्यक्ति खामखाह अमीरी की डींग मारे तब ...!

**चाचा री धी, जणा पूछणौ ई की?** ४३०९

चाचा की बेटी, फिर तो पूछना ही क्या?

—मुसलमानों में सगी बहिन को छोड़कर बाकी सब रिश्तों की शादी जायज है। चाचा की बेटी हो तो सबसे उत्तम।

—जब किसी व्यक्ति की अचीती साध फले तब!

दे.क.सं.२०८५,२०८६

**चाटणी जीभ सौ मण सोनौ ई चाट जावै।** ४३१०

चटोरी जीभ सो मन सोना भी चाट जाये।

—जीभ पर जब चटोरेपन का स्वाद हावी हो जाये तो घर की पूँजी समाप्त होने में क्या देर लगती है!

—चटोरे व्यक्ति को सतर्क करने के लिए।

**चाटूं तौ खारौ लागै, उखणूं तौ बोझ्यां मरूं।** ४३११

चाटूँ तो कड़वी लगे, उठाऊँ तो बोझ मरूँ।

—पत्थर की चाकी चाटने पर बेस्वाद लगती है, उठाने पर काफी बोझ महसूस होता है।

—कुलच्छनी और आलसी बहू के लिए।

—जो रिश्तेदार कभी किसी के काम न आये, उसके लिए...।

—कोई भी बड़ा व्यक्ति जरूरत पड़ने पर भूल-चूक से भी किसी की मदद न करे, उसके लिए...।

**पाठा : चाटां तौ खारी, ऊपाड़ां तौ भारी।**

**चाटै तौ चांदी अर रगड़ै तौ गोडा।** ४३१२

चाटे तो चाँदी और रगड़े तो घुटने।

चांदी = जले हुई तंबाकू की सफेद राख। लगातार रगड़ से उत्पन्न घाव।

—जिस राज्य में प्रजा के लिए सपने में भी सुविधाओं की आशा न बची हो उसके लिए।

—उस व्यक्ति के प्रति जिससे परोक्ष रूप में रंचमात्र भी लाभ न हो।

दे.क.सं.४३०८

**चाणी ने पीये ते कहें ने चोटे।**–भी.२३८ ४३१३

छानकर पीने से कुछ नही चिपकता।

—स्वच्छ पानी पीने की नसीहत, जो स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद है।

—खूब सोच विचार करके, अच्छी तरह छान-बीन करके कोई भी काम किया जाय तो उस में व्यवधान उपस्थित नहीं होता।

—बिना बिचारे जो करे, सो पाछै पछताय।

**चाती माते चोगू है।**–भी.२३९ ४३१४

छाती पर तुर्रा है।

—विवाह के उत्सव का खर्च दूल्हे को वहन करना पड़ता है। आनंद की बजाय यह उसके लिए कष्टप्रद आयोजन है, जिसे बर्दाश्त करने का माद्दा उसके सीने पर निर्भर करता है। आदिवासियों में ब्याह का खर्च दूल्हे के मजबूत कंधों पर ही रहता है।

—दुख उठाने पर ही बाद में सुख मिलता है।

**चाना-माना जाओ, थारे मारे हूं लेवू है ?**–भी.२४० ४३१५

चुपचाप चलते बनो, तुम से मुझे क्या लेना है ?

—अकारण ही कोई व्यक्ति किसी से झगड़ा करने लगे, तब ...।

—जो व्यक्ति दूसरों के काम में खामखाह टाँग अड़ाये, तब ...।

**चाने करवा हूं घणी चोड़े आवे।**–भी.२४१ ४३१६

छिपाकर करने से अधिक प्रचार होता है।

—मसल मशहूर है कि हवा और दीवारों के भी कान होते हैं। जो बात जितनी छिपाकर की जाएगी, उतनी ही अधिक फैलेगी।

—छिपकर की हुई बात को जानने के लिए लोग बेहद उत्सुक रहते हैं।

**चानो काम चोराये कराव हो ते वो पोड़े घणो करहें।**–भी.२४२ ४३१७

गोपनीय काम छोकरों से कराया जाय तो वह अधिक उजागर होता है।

—बच्चे किसी भी बात को छिपाकर नहीं रख सकते। वे और भी चार बातें मिलाकर सब ओर फैलाते हैं।

—कोई भी गोपनीय काम बच्चों से नहीं करवाना चाहिए।

**चावी ने खाये ते घोघले नी चोटे।**–भी.२४३ ४३१८

चबाकर खाने से गले में नहीं अटकता।

—बिना सोचे-समझे जल्दबाजी में काम करने का परिणाम बुरा होता है।

—हर काम को सलीके से पूरा करने की खातिर अपेक्षित समय देना जरूरी है।

**चाये जेम करीने झाली वाळो करवो है।**–भी.२४४ ४३१९

जैसे तैसे करके भूख शांत करनी है।

—खाने के बीच बार-बार पानी पीकर जस-तस पेट की आग बुझानी है।

—गरीबी का सामना करने के लिए आदिवासियों के पास कैसे-कैसे सरल उपाय हैं, तभी तो अभावों के बीच भी वे उन्मुक्त होकर नाचते हैं, गाते हैं।

**चार ई खुणा इग्यारस नै बिचाळै सिवरात।** ४३२०

चार ही कोने एकादशी और बीच में शिवरात्रि।

—आर्थिक अभाव के कारण जिस व्यक्ति के घर में हर दिन एकादशी का उपवास होता हो और साथ-ही-साथ शिवरात्रि का व्रत भी—मतलब कि हर दिन फाकामस्ती से गुजरता हो उसे इंगित करते हुए यह कहावत कही जाती है।

—जो व्यक्ति अत्यधिक कंगाल हो। गरीबी के प्रति उपहास।

**चार कूंट सूं मथरा न्यारी।** ४३२१

चारों दिशाओं में मथुरा न्यारी।

—तीन लोक से मथुरा न्यारी।

—उस असामान्य व्यक्ति के लिए जो निपट निराला हो।

दे.क.सं.३७२१

**चार कोस री आवा जाही, बेटौ मरग्यौ ढोवा-ढाही।** ४३२२

चार कोस की आवा जाही, बेटा मर गया ढोहा-ढाही।

ढोवा-ढाही = बोझा ढोते-ढोते।

**संदर्भ-कथा** : किसी एक व्यक्ति ने अपने समधी को लिहाज में आकर मुफ्त में भूसे की ढेरी दी। समधी के पास बैलगाड़ी नहीं थी। जिसने भूसा मुफ्त में दिया, वह अपनी गाड़ी क्यों दे? जिसे गर्ज हो उठाकर ले जाए। समधी के एक लड़का और था। ब्याहे बेटे को तो ससुराल इस दयनीय स्थिति में भेजा नहीं जा सकता था। इस कारण भूसा लाने का जिम्मा छोटे बेटे के गले आ पड़ा। गर्मियों की तेज धूप। चार कोस का आना-जाना। तिस पर भूसी की भारी पोटली। बेटा भूसी ढोते-ढोते अधमरा-सा हो गया।

—ऐसी मुफ्त की चीज भी क्या काम की जिसकी खातिर इतना कष्ट उठाना पड़े।

—मुफ्त का माल हमेशा परेशानी पैदा करता है।

**चार कोसां पांणी बदळै, बारां कोसां वांणी।** ४३२३

चार कोस पर पानी बदले, बारह कोस पर वाणी।

—इस धरती पर न एक-सा पानी, न सभी गलों की एक-सी वाणी।

—विभिन्नता सहज है, एकता कृत्रिम है।

—वैविध्य प्रकृति का नियम है, एकरूपता अनैसर्गिक है।

**चार चोर चौरासी बांणिया, कांई करै बापड़ा अेकल तांणिया।** ४३२४

चार चोर चौरासी बनिये, क्या करें बेचारे अकेले लुट गये।

**संदर्भ-कथा :** चौरासी बनिये एक साथ दिसावर में व्यवसाय के लिए जा रहे थे। व्यवसाय के अनुसार प्रत्येक के पास अपनी पूँजी थी। चार चोर कई दिन से उनकी ताक में थे सो चुपचाप उनके पीछे हो लिए। निर्जन एकांत देखकर उन्होंने एक साथ सबको नहीं ललकारा। सिर्फ एक बनिये को लूटा। बाकी सभी देखते रहे। जब दूसरे को नहीं छेड़ा तो क्यों आगे चलकर आफत मोल लें? हर बनिये को केवल अपनी हिफाजत का ही खयाल था। पर चोरों में एकता थी। एक-एक करके उन्होंने सभी बनियों को लूट लिया। यदि एकजुट होकर सामना करते तो चोरों को भागना पड़ता। पर स्वार्थवश वे एक नहीं हो सके। फलस्वरूप सभी लुट गये।

—एकता न होने पर संख्या की बहुलता कुछ भी माने नहीं रखती।

—आदमी हिम्मतवर या साहसी हो तो एक ही पर्याप्त है और कायर अनेक हों तब भी नहीं के बराबर हैं। इसका ज्वलंत उदाहरण है कि तुर्क, मुगल और अंग्रेज संख्या में कम होते हुए भी संख्यातीत भारतीय उनके द्वारा क्रमश: परास्त होते ही गये।

**चार जणां री बग्घी ऊपर जासी।** ४३२५

चार जनों की बग्घी ऊपर जाएगी।

—ताकत की मनमानी सर्वत्र चलती है। जो ताकतवर होगा, उसकी धौंस चलेगी।

—नियम और कायदा शालीन व्यक्तियों के लिए होता है, बदमाशों की हेकड़ी पर भला कौन अंकुश लगा सकता है।

**चार टका म्हारी गांठी, हार बणावूं के कांठी?** ४३२६

चार टके मेरी अंटी, हार बनाऊँ कि कंटी?

—जिस व्यक्ति के पास पूँजी निहायत कम हो पर योजना विशाल बनाये।

—जो व्यक्ति शेखचिल्ली जैसी निराधार कल्पना में खोया रहे उसकी खिल्ली उड़ाने के लिए।

**चार डांग चौधरी, पांच डांग पंच।** ४३२७
**जिण गवाड़ी छव डांग, पंच गिणै नीं ढंच॥**

चार लाठी चौधरी, पाँच लाठी पंच।
जिस घर में छह लाठी, पंच माने न ढंच॥

—जिस घर में चार लाठी सहित जवान हैं, वे गाँव के चौधरी हैं, पाँच लाठी वाले पंच हैं और जिस घर में छह लाठी चलाने वाले हैं, वे न किसी पंच को मानें, न ढंच को।

—ताकत वालों की सर्वत्र मनमानी चलती है।

—जिसके हाथ में लाठी है, भैंस उसीके अधिकार में होगी।

—बदमाशों की खीर सर्वत्र पकती है।

**चार दिन भांबी रा ई पगल्या राता व्है।** ४३२८

चार दिन भाँबी के पाँव भी लाल रहते हैं।

—प्राकृतिक समानता अधिक समय तक नहीं टिक पाती। भाँबी के जन्म-जात बच्चे के पाँव भी सुकोमल और गुलाबी होते हैं, पर सामाजिक विषमता का दैन्य गरीब के रूप को विकृत कर देता है।

—सामाजिक विषमता प्राकृतिक समानता पर हावी हो जाती है।

**पाठा : चार दिन भांवण रै जाया रा पगलिया राता व्है।**

चार दिन भाँबिन के बच्चे के पाँव लाल रहते हैं।

**चार दिनां री चांनणी, फेर अंधेरी रात।** ४३२९

चार दिनों की चाँदनी, फिर अँधेरी रात।

—सुख की चाँदनी हमेशा नहीं रहती, कृष्ण पक्ष का अँधेरा उसे ग्रस लेता है।

—वर्तमान वैभव के बीच, भविष्य की आशंकाओं को भूलना नहीं चाहिए।

—यौवन की चाँदनी तो फकत चार दिन के लिए है, फिर तो वही जर्जरित बुढ़ापे का अँधियारा।

**चार मांय सूं दोय उठावै नै दोय में पांती राखै जैड़ा।** ४३३०

चार में से दो उठायें और दो में हिस्सा रखे जैसे हैं।

—जरूरत से ज्यादा चालाक व्यक्ति के लिए...।

—बेइंतहा धूर्त व चंट व्यक्ति जो हर तरह से हानि पहुँचाये।

**चार लुगायां अेकठ व्है तद किणी रौ घर भागै।** ४३३१

चार औरतें इकट्ठी हों तब किसी का घर टूटता है।

— दुनिया के किसी भी कोने में चार औरतें शामिल होकर चर्चा करें तो समझ लीजिए कि किसी हतभागे का घर ध्वस्त हो रहा है।

—दूसरों की निंदा करने के अलावा औरतों की चर्चा का अन्य मुद्दा हो ही नहीं सकता।

**चार हाथ री साड़ी नै चारूंमेर गोटौ।** ४३३२

चार हाथ की साड़ी और चारों तरफ गोटा-किनार।

—फिजूल खर्च करने वाले व्यक्ति के लिए...।

—आडंबर का प्रदर्शन करने वाले पर कटाक्ष।

**चार हाथ री चरणौई नै रावजी री गळाई सळ करौ।** ४३३३

चार हाथ की चरागाह और रावजी के समान दिखावा करते हो।

—नगण्य बूते वाला जब श्रीमंतों की नकल करने लगे तब ...।

—अपनी स्थिति भूलकर जो व्यक्ति बड़ों से बराबरी करे तब ...।

**चारू कदै न हारू।** ४३३४

चरने वाला पशु कभी नही थकता।

—पशु और मनुष्य के लिए भोजन ही शक्ति का सूचक है।

—जिस व्यक्ति की पाचन-शक्ति संतुलित है, वह सदा पुष्ट रहता है।

—जो व्यक्ति खाने में नखरेबाजी न करके जो कुछ भी सामने आये उसे शौक से खाले तो कभी कमजोर नहीं पड़ता।

**चारू सो वारू।** ४३३५

चरने वाला शक्तिशाली होता है।

—जो पशु या मनुष्य अधिक चरता है वह अधिक बोझ उठा सकता है, अधिक मेहनत कर सकता है।

—अधिक भोजन करना ही जिनके लिए आदर्श हो, उनके लिए यह कहावत प्रामाणिक है। अधिक खाने की प्रशस्ति।

**चारै री छींया कित्तीक हुवै !** ४३३६

घास की छाया कितनी !

—असमर्थ के सहयोग की क्या बिसात !

—जो समर्थ है, उसीका सहारा पर्याप्त होता है। गरीब का क्या बूता ?

**चारौ वाढ़णिया नै गुलगुला कठै ?** ४३३७

घास काटने वाले को गुलगले कहाँ ?

गुलगुला = गुड़ और तेल में पकाया मीठा पकौड़ा।

—मामूली काम का मामूली मेहनताना। जैसा काम वैसे दाम।

—योग्यता के अनुसार मान-सम्मान।

**चाल चालतौ दूजां री, भूलग्यौ खुदौखुद री।** ४३३८

चाल चलता रहा दूसरों की, भूल गया अपनी।

—औरों की चाल सीखने में अपनी चाल गँवा बैठा। दूसरों की नकल करने का यही परिणाम होता है।

—दूसरों के आडंबर से प्रभावित न होकर अपने सांस्कृतिक दायरे में रहना ही श्रेयस्कर है, क्योंकि आडंबर की अवधि अधिक नहीं होती।

**पाठा :. चाल चालतौ पर की, भूलग्यौ घर की।**

चाल चलता रहा पर की, भूल गया घर की।

**चाल चालो बंबोरानी, ना आवे पूंजी ने आळ।**– भी. २४५ ४३३९

चाल चलो 'बंबोरा' की, न आये पूँजी को आँच।

—बंबोरा नामक विशिष्ट गाँव है, जिसके लिए यह बात प्रसिद्ध है कि वहाँ आने वाले अतिथियों को उन्हीं के खर्च से रखा जाता है !

—बंबोरा गाँव वालों की चाल चलनी चाहिए जिस से मेजबान को एक पैसा भी खर्च नहीं करना पड़ता।

—जो व्यक्ति दूसरों के खर्च से अपना काम चलाये, उस पर कटाक्ष।

**चालण री पीड़ तौ पग ई जांणै ।** ४३४०

चलने की पीड़ा तो पाँव ही जानते हैं ।

—जिस प्रकार पाँव सारे शरीर का बोझ ढोकर चलते हैं, उसी प्रकार निम्न वर्ग उच्च समाज का भार ढोकर चलता है । चलते समय थकान तो पाँवों को होती है, पर आँखें यात्रा के समय बदलते दृश्यों का आनंद लेती हैं, कान पक्षियों का कलरव सुनते हैं । उसी तरह समाज का अधिकांश भार तो निम्न-वर्ग उठाता है और आनंद में मगन रहता है उच्च वर्ग । यों भी हमारे शास्त्रों ने शूद्र को पाँव की ही उपमा दी है ।

—जिस पर गुजरती है, उसे ही अपना दुख महसूस होता है ।

**चालण वाळौ थाकै, मारग नीं थाकै ।** ४३४१

चलने वाला थकता है, रास्ता नहीं थकता ।

—आवागमन की राह तो शाश्वत है, पर यात्रियों का जीवन क्षण-भंगुर है ।

—पंथ और पथिक के रूपक द्वारा इस कहावत में यह इंगित किया गया है कि पृथ्वी तो कायम रहेगी, पर प्राणी-जगत् का अवसान अवश्यंभावी है ।

—मनुष्य-देह में श्वास-प्रश्वास तो पथिक का प्रतीक है और पथ का प्रतीक है आत्मा जो अजर-अमर है ।

**चालणी में दूध दूवै अर भाग नै भांडै ।** ४३४२

चलनी में दूहना और भाग्य को कोसना ।

दे.क.सं.३०९४

**चालणी में पांणी ढबै तौ उधार रौ धन हाथ में ढबै ।** ४३४३

चलनी में पानी रुके तो उधार का धन हाथ में रुके ।

—उधार के धन की कभी बरकत नहीं होती ।

—खरी कमाई का पैसा ही टिकता है, उधार का धन जितना आसानी से मिलता है, उतना ही जल्दी समाप्त हो जाता है—चलनी के पानी की नाईं ।

**पाठा : खेरणी में पांणी ढबै तौ उधार रौ धन हाथ में ढबै ।**

चलनी में पानी रुके तो उधार का धन हाथ में रुके ।

**चालणी सूई नै हंसै ।** ४३४४

चलनी सूई पर हँसती है ।

—आकंठ बुराइयों में डूबा मनुष्य जब मामूली-सी गलती करने वाले का मखौल उड़ाये...!

—इस में तनिक भी आश्चर्य नहीं कि मनुष्य को चलनी की तरह अपने सहस्र छिद्र भी नजर नहीं आते, पर दूसरों का एक बारीक छिद्र भी उसे तुरंत दिख जाता है ।

दे.क.सं.३०९५

**चालणौ रस्तै सर, व्हौ भलां ई फेर ई ।** ४३४५

चलना रास्ते पर, चाहे वह लंबा ही क्यों न हो ।

—पगडंडियों का नया रास्ता कतई विश्वस्त नहीं होता । मनुष्य को हमेशा स्पष्ट रास्ते पर ही चलना चाहिए ।

—मनुष्य के लिए परंपरा का मर्यादाजनक रास्ता ही श्रेयस्कर है । इसके विपरीत नये-नये रास्तों का आकर्षण उसे भ्रमित करता है ।

**पाठा : चालणौ गेलै रौ, व्हौ भलां ई घेर ई ।** चलना राह पर, चाहे चक्कर लंबा पड़े ।

**चालणौ वैवार, खावणौ तेंवार ।** ४३४६

चलना व्यवहार, खाना त्योहार ।

—मनुष्य को अपना व्यवहार साफ-सुथरा रखना चाहिए और केवल त्योहार पर ही उम्दा भोजन करना चाहिए ।

—व्यावहारिक और मितव्ययी मनुष्य की प्रतिष्ठा कायम रहती है ।

**पाठा : हालणौ वैवार रौ खावणौ तेंवार रौ ।** चलना व्यवहार पर, खाना त्योहार पर ।

**चालता गोडा अर दीसता नैण ।** ४३४७

चलते घुटने और दिखते नयन ।

—घुटनों में ताकत हो और आँखों में ज्योति हो तो जीवन का निर्वाह सुगमता से हो सकता है ।

—किसी भी कार्य को संपन्न करने के लिए पर्याप्त शक्ति अपेक्षित है ।

**चालता बायरा सूं बाथ भरै ।** ४३४८

चलती हवा को बाहुपाश में भरे ।

—जो व्यक्ति असंभव कार्य के लिए व्यर्थ चेष्टा करे ।

—अपनी क्षमता से परे जब कोई व्यक्ति असफल प्रयास करे ।

—बेइंतहा जीवट वाले व्यक्ति की सराहना के लिए भी यह उक्ति कही जाती है ।

**चालता रै आर नीं दैणी ।** ४३४९

चलते के आर नहीं देनी चाहिए ।

आर = ढाई या तीन हाथ लंबी लकड़ी के आगे नुकीली कील गड़ी रहती है । कील आधे-सूत के लगभग होती है । बैलों की चाल धीमी होने पर या बैल चलते-चलते अचानक रुक जाएँ तो गाड़ीवान उनके पुट्ठों पर कील गड़ाते हैं—इस प्रक्रिया को राजस्थानी में 'आर' देना कहते हैं ।

—जो व्यक्ति सहज भाव से अपना काम सुचारु ढंग से कर रहा हो उसे टोकना उचित नहीं ।

—कर्मठ व्यक्ति को तंग करने से उलटा काम बिगड़ता है ।

**चालती गाड़ी मांये चाण्णी नो हूं भार ?**– भी. २४६ ४३५०

चलती गाड़ी में चलनी का क्या भार ?

आ. दे. क. सं. ४३५१

**चालती गाडी में चालणी रौ कांई भार ?** ४३५१

चलती गाड़ी में चलनी का क्या भार ?

—समर्थ व्यक्ति को मामूली काम की जिम्मेवारी सौंपी जाय तब... !

—धनवान को साधारण खर्च की क्या परवाह !

—बड़ा आदमी किसी छोटे व्यक्ति को सहयोग के लिए आनाकानी करे तब उसकी चिरौरी करते समय इस उक्ति का प्रयोग होता है ।

दे. क. सं. ३४५७

**चालती गाडी में पाचरौ पजावै ।** ४३५२

चलती गाड़ी में पाचरा फँसाये ।

पाचरौ = लकड़ी के पहियों में चंद्रकार पूठियों के घेरे की रोकथाम के लिए लकड़ी की बड़ी-बड़ी कीलें लगी रहती हैं। गाड़ी के निरंतर चलते रहने से वे कभी-कभार बाहर निकल आती हैं तब उन्हें ठोकने से वे अपनी जगह पकड़ लेती हैं। बाहर निकलने वाली उन कीलों को 'पाचरा' कहते हैं।

—जो व्यक्ति चलते काम में व्यवधान उपस्थित करे।

—किसी संपन्न होते काम में कोई व्यक्ति रुकावट डाले तब ...।

—उस चतुर व कुशल व्यक्ति की प्रशंसा जो चलती गाड़ी के ढीले पाचरे को दुरुस्त करले।

**चाल तौ नीं कागला री नै घसक बघारै हंस री।** ४३५३

चाल तो नहीं कौवे की और डींग मारे हंस की।

—अक्षम व्यक्ति बड़ी-बड़ी बातें बनाये तब ...।

—अपनी सामान्य स्थिति को अनदेखा करके जो व्यक्ति बड़ों की देखादेखी करे तब।

**चाल म्हारा कागला, ज्यूं चाल्या थारा आगला।** ४३५४

चल मेरे कौवे वही चाल, जो तेरे पुरखे चले।

—अपनी परंपरा को छोड़कर जब कोई व्यक्ति दूसरों की नकल करे तब ...।

—जो व्यक्ति अपनी वस्तुस्थिति भूलकर आडंबर दिखाये तब...।

—छोटा व्यक्ति बड़ों की देखादेखी करना चाहे तब ...।

—पुरखों की लीक पर चलने के लिए नसीहत।

**चाल रे बळदिया थारौ धणी चलावै ज्यूं।** ४३५५

चल रे बैल तेरा मालिक चलाये ज्यों।

—कोई चाकर अपने मन से निर्णय लेकर कोई गलत काम कर डाले तब ...!

—जब कोई मातहत बड़े अधिकारी की हुक्म-अदूली करे तब ... !

—पराधीन व्यक्ति स्वतंत्रता का अधिकार जताये तब ...!

**पाठा : चाल रे घोड़ा थारौ धणी चलावै ज्यां।** चल रे घोड़े तेरा स्वामी चलाये ज्यों।

**चाल साधां री नै लक्खण बावरियां रा।** ४३५६

चाल संतों की और लच्छन बावरियों के।

बावरी = एक जाति विशेष जो सामंती प्रथा के दौरान जुरायम-पेशा में दर्ज होती थी। जो अमूमन ठाकुरों की शह पर चोरी करते थे और उन्हें हिस्सा देते थे। यों आरंभ में गाँव की चौकीदारी का काम इनके जिम्मे था। इसलिए इन्हें चौकीदार भी कहते हैं। आजकल राजस्थान में बावरी या चौकीदार जमकर मेहनत करने लगे हैं। मसलन मेरे गाँव के चौकीदार सभी संपन्नता की ओर बढ़ रहे हैं। प्रत्येक घर में ट्रैक्टर है। चूने का पत्थर निकालने में अथक परिश्रम करते हैं। पर ठाकुरों के जमाने में ये भी चोरियाँ करते थे।

—जिस व्यक्ति की कथनी और करणी में भेद हो।

—पाखंडी या ढोंगी व्यक्ति के लिए समानार्थी कहावत—मुँह में राम बगल में छुरी।

**चाली नार नूं हूं मारवूं, नार तो हांड ना हांड मारे।**– भी. २४७ ४३५७

शेर के लिए बकरी का क्या शिकार, वह तो साँड के साँड मारता है।

—जो शक्तिशाली है, उसके लिए साधारण बिगाड़ करना कुछ अर्थ नहीं रखता, वह तो विकराल क्षति पहुँचाने वाला है।

—भयंकर दुष्ट मामूली क्षति पहुँचाकर ही चुप रह जाए तो गनीमत है।

**चाली नूं चरनार ने चिता नूं बेहनार।**– भी. २४८ ४३५८

बकरी की चरनोई और चीते की दर।

—भक्ष्य और भक्षक एक ही स्थान पर अधिक समय तक साथ नहीं रह सकते।

—दुष्ट के साथ भले आदमी का निर्वाह नहीं हो सकता।

**चालू रोटी रै ठोकर नीं मारणी।** ४३५९

चलती रोटी को ठोकर नहीं मारनी।

—चलता रोजगार नहीं छोड़ना चाहिए।

—हाथ की रूखी रोटी, कल्पना की चिकनी-चुपड़ी रोटी से सदा बढ़कर है।

**चालै कोई चाकरी, 'ताजू' तुरक ताखड़ौ।** ४३६०

चले कोई चाकरी, 'ताजू' तुर्क तैयार।

ताजू = व्यक्ति वाचक संज्ञा।

—जो व्यक्ति हर किसी के साथ जाने को तैयार हो जाय।

—जिस व्यक्ति का अपना कोई स्वतंत्र व्यक्तित्व न हो और हर किसी की देखादेखी करने को उत्सुक हो।

**चालै जिणरा पगरखा घिसीजै, मारग रौ कांई बिगड़ै ?** ४३६१

चले उसके जूते घिसें, रास्ते का क्या बिगड़े ?

—छिनाल औरत पर कटाक्ष।

—बड़े व्यक्तियों से काम करवाना आसान नहीं, कई दिनों तक जूते घिसने पड़ते हैं

**चालै नीं चलावै, आंगणौ बांकौ।** ४३६२

चले न चलाये, आँगन टेढ़ा।

—जो कारीगर अपनी अयोग्यता के बदले औजारों में दोष बताये।

—समानार्थी कहावत—नाच न जाने आँगन टेढ़ा।

—जो व्यक्ति चलने की असमर्थता को छिपाकर आँगन या राह को खराब बताये।

**चाव करै जिण रा चाकर, नींतर ठाकर।** ४३६३

चाह करे उसके चाकर, नहीं तो ठाकुर।

—चाह करे, मोहप्रीत रखे तो उसके चाकर हो जाते हैं, वरना अपने घर के तो ठाकुर हैं ही। कोई हम से वास्ता न रखे तो हम क्यों किसी से वास्ता रखें।

—दोनों हाथ साथ धुलते हैं—प्रेम के बदले प्रेम, उपेक्षा के बदले उपेक्षा।

**चावळ, चन्नण, त्रण, त्रिया, तुरी, राग अर तार।** ४३६४
**अै दस पतळा ई सिरै, सिंघ, सरप, सिरदार॥**

चावल, चंदन, त्रण, त्रिया, तुरी, राग और तार।
ये दस पतले ही भले, सिंह, साँप, सरदार॥

तुरी = घोड़ी। सिरदार = सरदार = यहाँ पति से तात्पर्य है।

—इस तरह की कहावतें शिक्षा के अंतर्गत शुमार की जा सकती हैं। पद्य की बुनावट से याद करने में आसानी रहती है।

**चावळ-दाळ भेळा अर कोकला न्यारा।** ४३६५

चालव-दाल साथ और कोकले अलग।

कोकला = मूँग, चने और जौ के ऊपरी तुस ।

—यह एक सांकेतिक भाषा है । ब्याह या बिरादरी के बड़े खाने में इसका प्रयोग होता है । जिसका छिपा अर्थ है कि रिश्तेदारों को एक साथ इकट्ठा बिठाया जाय तथा दीगर व्यक्तियों को एक तरफ ताकि रिश्तेदारों को उनके हिसाब से परोसा जाय ।

—अपनों के साथ पक्षपात-पूर्ण रवैया । भाई-भतीजा-वाद जो आजकल राजनीति के क्षेत्र में ज्यादा उपयुक्त व प्रासंगिक है ।

—पानी की अपेक्षा खून गाढ़ा होता है ।

**चावळां रा खोटा दिन आवै जद भीलां रै पांनै पड़ै ।** ४३६६

चावलों के बुरे दिन आएँ तो भीलों के हाथ लगते हैं ।

—राजस्थान में भील जाति निहायत गरीब है । ये चावलों को छाछ में डालकर राँधते हैं । और अमीर-उमराव चावलों से कई लाजवाब पकवान बनाते हैं । यही चावलों के बुरे दिन और अच्छे का सूचक है ।

—कोई विद्वान मूर्खों के बीच फँस जाय या कोई आदर्श व्यक्ति दुष्टों से घिर जाय तब... ।

—कोई श्रीमंत वेश्या के जाल में फँस जाय तब... ।

**पाटा : चावळां में विखौ पड़ै जद छाछ में रांधीजै ।**

चावलों पर आफत आये तब छाछ में राँधे जाते हैं ।

**चावळां रौ खांणौ अर फळसै तांई जांणौ ।** ४३६७

चावलों का खाना और फलसे तक जाना ।

फळसौ = गाँव की बस्ती के बाहर की सीमा ।

—इस तरह की वस्तुगत, जातिगत, प्रांतगत व राज्यगत बड़प्पन की उक्तियाँ सर्वत्र होती हैं । राजस्थान में बाजरा, मकई और जौ का ही अधिकतर खाने में प्रचलन है । यहाँ चावलों का कम ही प्रयोग होता है । इसे हलका तथा मरीजों का धान समझा जाता है । मकई व बाजरे की नाईं इसे यथेष्ट भोजन नहीं माना जाता । पर दक्षिण-भारत या बंगाल-बिहार में चावलों का ही अत्यधिक महत्त्व समझा जाता है । वहाँ बाजरे के उपहास की उक्तियाँ प्रचलित हैं । मसलन—विभाजन के समय सिंधी लोग जो बीकानेर या जोधपुर में बसे वे बड़े दुख

के साथ शिकायत करते थे कि बाकी सब तो ठीक ही है पर यह सीमेंट की रोटी हम से नहीं खाई जाती। मतलब साफ है बाजरे की रोटी और सीमेंट का रंग एक जैसा होता है।

—चावल के भोजन का टिकाऊ आधार नहीं। घर से फलसे तक गये और हजम।

—जिस व्यक्ति का साथ टिकाऊ नहीं होता, उसके लिए भी...।

**चाव सूं कस्योड़ौ कांम वैगौ पार पड़ै।** ४३६८

चाह से किया काम जल्दी संपन्न होता है।

—जिस काम के साथ मन का मेल हो, उसे करने में आनंद आता है, इस कारण वह जल्दी संपूर्ण होता है।

—बेगार या दूसरों की मजदूरी के काम में मन नहीं लगने से उस में देर होना स्वाभाविक है। इस कारण वही समाज-व्यवस्था श्रेष्ठ है, जिस में व्यक्ति को मनवांछित काम मिले।

**चाहै जितरा पालौ , पांख उगतां ई उड़ ज्यासी।** ४३६९

चाहे जितना रोको, पाँखे उगते ही उड़ जाएँगे।

—जिस प्रकार पाँखें आने पर पंछी जन्मदाताओं के साथ एक ही घोंसले में नहीं रह सकते, उसी प्रकार बच्चे बड़े होने पर माँ-बाप के नियंत्रण में नहीं रहते। यौवन स्वच्छंदता का परिचायक है।

—लड़कियाँ ब्याह होने पर माँ-बाप का निवास छोड़कर ससुराल जाती हैं, उन्हें हमेशा के लिए पीहर में नहीं रोका जा सकता।

# चि - चौ

**चिकणास टाळ चूरमौ नीं बाजै।** ४३७०

चिकनाहट के बिना चूरमा नहीं कहलाता।

चूरमौ = यथोचित मात्रा में घी-खाँड डालकर बाजरे का सोगरा, गेहूँ, मकई की रोटी या बाटी चूरकर बनाया हुआ व्यंजन। राजस्थान में इसका काफी प्रचलन है।

—स्वादिष्ट व पौष्टिक पकवान के लिए वांछित खर्च आवश्यक है।

—हर काम के लिए अपेक्षित खर्च व श्रम अनिवार्य है, तभी उसमें सफलता प्राप्त होती है।

—बड़ी नामवरी के लिए वैसे साधन जुटाने पड़ते हैं।

दे.क.सं.४१२७

**चिट्टू कैवै लाडू खावूं, मिट्टू कैवै कठा सूं लावूं? के वोरौ करौ, छेड़ली कैवै देसां कांईं? अंगूठौ कैवै म्हनै बताय दीजौ।** ४३७१

चिट्टू कहे लड्डू खाऊँ, मिट्टू कहे कहाँ से लाऊँ? कि बोहरा कर लेना अंतिम कहे देंगे क्या? अँगूठा कहे मुझे बता देना।

चिट्टू = सबसे छोटी अँगुली। मिट्टू = अनामिका।

—जब तक मिले, उधार करके भी लड्डू खाओ, घी पीओ, मौज मनाओ और सुख से जीयो। ऋण चुकाते समय ऊँगूठा दिखाकर ठाट से मना कर दो। जीने का यही सब से सरल व सर्वोच्च उपाय है।

—चार्वाक-मुनि के वचनामृत की तरह यह लोकोक्ति भी उसके समकक्ष है.

ऋणं कृत्वं, घृतं पीवेत, यावत् जीवेत सुखम् जीवेत ।

**चिड़पियां लारै ढोल आछौ लागै ।** ४३७२

**चिड़पियों से ढोल अच्छा लगता है ।**

चिड़पियाँ = ढोल की एक बाजू थाप और दूसरी बाजू डंके की चोट लगती है । जमीन पर उकडूँ बैठकर एक व्यक्ति बाँस की खपच्चियों से निरंतर ताल देता रहता है—उन खपच्चियों को चिड़पियाँ कहते हैं ।

—बड़ों के साथ छोटों के मेल से एक सुहाना समन्वय होता है, जो सामाजिक संतुलन के लिए अनिवार्य है ।

—प्रकृति और समाज में हर छोटी-बड़ी वस्तु का अपना महत्त्व है ।

**चिड़पिड़ा सुहाग बिचै रंडापौ आछौ ।** ४३७३

**अधकचरे सुहाग से वैधव्य अच्छा ।**

चिड़पिड़ौ = झिरमिर-झिरमिर या बूँदाबूँदी को चिड़पिड़ा मेह कहते हैं । न वह बरसात में शुमार और न सूखे में । तिस पर भीगना और कीचड़ । इसी प्रकार दांपत्य-जीवन में निर्धन या अस्वस्थ पति की तुलना में वैधव्य अच्छा है । जिस घर में हरदम झिक-झिक बनी रहे उसके लिए भी कि ऐसा तथाकथित सुहाग किस काम का ?

—या तो मन-वांछित कामयाबी, अन्यथा अधकचरे काम की बजाय काम का न होना बेहतर है ।

—असाध्य बीमारी की बजाय मृत्यु ठीक है ।

—रिश्तेदारों के बीच या तो पूरी आत्मीयता वरना लोक-दिखावे की अपेक्षा दुश्मनी ठीक है ताकि धोखा न हो ।

**पाठा : चिड़पिड़ा सवाग सूं रंडापो चोखौ ।** तथाकथित सुहाग से वैधव्य बेहतर है ।

**चिड़, सिंघां, परेवड़ां, तिस लागै परभात ।** ४३७४
**घोड़ा, मदवां, घायलां अेतां ढळती रात ।।**

पाखी, सिंह, कबूतर प्यास लगे सुप्रभात ।
तुरंग, शराबी, घायल-जन इन्हें ढलती रात ।।

—शिक्षा के रूप में इस तरह की स्मृति-सुलभ कहावतें काफी उपादेय रहती हैं। सदियों का अनुभव इस उक्ति में उजागर है कि किन प्राणियों को सवेरे प्यास लगती है और किन्हें आधी रात ढलने पर।

**चिड़ियां रा ढूल में भाटौ वगावणौ।** ४३७५

चिड़ियों के झुंड में पत्थर फेंकना।

—चुपचाप दाने चुगते झुंड को पत्थर फेंककर उड़ाना उचित नहीं।

—अकस्मात् किसी जन-समूह की शांति भंग करना।

—चलते रास्ते बनी-बनाई स्थिति को बिगाड़ना।

**चिड़ियां सूं किसा खेत छांना।** ४३७६

चिड़ियों से खेत छिपे नहीं रहते।

—चिड़ियों के उनमान चतुर या विद्वान से कोई बात छिपी नहीं रहती, चाहे वह कितनी ही रहस्यमयी क्यों न हो।

—होशियार या अनुभवी मनुष्य हर बात का सुराग लगा लेता है।

**चिड़ी-कमेड़ी करौ तौ ई नैड़ा री।** ४३७७

चिड़िया-फाख्ता करो तो सर-सब्ज इलाके की।

नैड़ौ = नदी के किनारे बसे गाँव दुफसली होने के कारण हरे-भरे रहते हैं।

—पक्षियों की नाईं मनुष्य भी नदी के आस-पास बसना चाहता है।

—हर प्राणी अच्छी तरह गुजर-बसर करने के लिए मन-वांछित परिवेश की चाह रखता है।

**चिड़ी चूंच भर ले गई, नदी न घटियौ नीर।** ४३७८

चिड़ी चोंच भर ले गई, नदी न घटियो नीर।

—धन और संचय की सार्थकता इसी में है कि वह दूसरों के काम आये। नदी की प्यास तो उसके पानी से बुझती नहीं है, पर वह अगणित प्यासे कंठों की प्यास बुझाती है, फसलों की सिंचाई करती है! यदि नदी के बहते पानी से चिड़िया चोंच भर ले जाय तो नदी को पता तक नहीं चलता कि उसके पानी से कोई अपनी प्यास बुझा गया।

—धनाढ्य के धन का उपयोग नदी के पानी की तरह ही होना चाहिए।

पूरा दोहा : **चिड़ी चूंच भर ले गई, नदी न घटियौ नीर।**

**दांन दिये धन ना घटै, कह गये दास कबीर ॥**

**चिड़ी री टूंच में सौ मण कद मावै !** ४३७९

चिड़िया की चोंच में सौ मन कब समाये !

—-असमर्थ को बहुत-बड़ी जिम्मेवारी सौंपने पर...।

—सामान्य व्यक्ति से बहुत बड़ी आशा की जाय तब...।

—हर व्यक्ति को उसका बूता देखकर ही काम बताना संगत है।

**चिड़ी री टूंच में सौ मण काठ !** ४३८०

चिड़िया की चोंच में सौ मन काठ !

—जो बात नितांत अनहोनी हो।

—गरीब की औकात निहायत अकिंचन होती है, वह उससे परे का बोझ झेल ही नहीं सकता।

**ाड़ी रौ तौ बैसणौ अर डाळ रौ तूटणौ।** ४३८१

ड़िया का बैठना और डाली का टूटना।

—चिड़िया के बैठने से भला डाली कब टूटती है ? पर दुर्योग से इधर चिड़िया का बैठना हो और उधर डाली का टूटना हो।

—संयोग से किसी का अचीता अहित हो जाय तब...!

—झूठी बदनामी का सेहरा खामखाह मत्थे बँध जाय तब... !

**चिणां रै भरोसै कांकरा चाब जावौला ?** ४३८२

चनों के बहाने कंकर चबा जाओगे ?

—कड़कड़ की आवाज चना चबाने से भी होती है और उसी आकार व रंग का छोटा कंकर चबाने से भी, इसलिए शुरुआत में धोखा संभव है।

—जिस-तिस का उतना विश्वास भी नहीं करना चाहिए, जिस से धोखा हो।

—अजाने व्यक्ति से चूक होने की आशंका रहती है, इसलिए उसे हिदायत देना अनिवार्य है।

**चिणा ई चाबणा अर पूंगी ई बजावणी।** ४३८३

चने भी चबाने और पूँगी भी बजानी।

—चने चबाना यों भी मामूली कठिन है, फिर इस कार्य के साथ पूँगी बजाना तो और भी जोखिम का काम है। नासिका या वायु नली में चना फँस जाए तो मृत्यु तक की संभावना है।

—दो मुश्किल काम कोई व्यक्ति साथ करना चाहे तब उसे समझाने के लिए।

**चिणा है जठै दांत कोनीं, दांत है जठै चिणा कोनीं।** ४३८४

चने हैं वहाँ दाँत नही, दाँत हैं वहाँ चने नही।

—जिस घर में पर्याप्त धन-संपत्ति हो और उसे भोगने वाला उत्तराधिकारी न हो और इसके विपरीत जिस घर में संतान की भरमार हो और रोटी का जुगाड़ न हो तब...।

—जिस समाज में बेहद विषम स्थितियों का अभिशाप हो।

पाटा : **चिणा है तौ चाबण वाळा कोनी अर चाबण वाळा है तौ चिणा कोनीं।**

चने हैं तो चबाने वाले नहीं और चबाने वाले हैं तो चने नहीं।

**चिणा है जठै जाड़ कोनी, जाड़ है जठै चिणा कोनीं।**

चने हैं वहाँ जबड़ा नहीं, जबड़ा है वहाँ चने नहीं।

**चिणौ अर चुगलखोर मूंडै लाग्या आछा कोनीं।** ४३८५

चना और चुगलखोर मुँह लगे अच्छे नहीं।

—चना मुँह लग जाय तो फिर रुका नहीं जाता। इसी प्रकार चुगलखोर भी मुँह लग जाय तो वह बार-बार किसी की चुगली करने से नहीं चूकता, इसलिए इन्हें मुँह न लगाना ही बेहतर है।

—जहाँ तक संभव हो छोटी बुराई से भी बचना चाहिए क्योंकि एक बार गले पड़ जाय तो वह छूटती नहीं।

**चिणौ उछळनै भाड़ नीं फोड़ै।** ४३८६

चना उछलकर भाड़ नही फोड़ सकता।

—अकेले व्यक्ति की उछल-कूद से कुछ नहीं होता, पारस्परिक सहयोग से ही बात बनती है।

—गरीब आदमी का गुस्सा अपने तक ही सीमित रहता है, वह तनिक भी कारगर नहीं होता।

—गरीब या निरीह व्यक्ति के सामर्थ्य पर कटाक्ष।

दे.क.सं.१५२८

**चिणौ कूदनै कित्तौक कूदै, केलड़ी सूं बारै !** ४३८७

चना कूदकर कितना कूद सकता है, केलड़ी से बाहर !

केलड़ी = मिट्टी का तवा।

—गरीब की क्षमता अत्यंत सीमित होती है। वह भीषण क्रोध भी करे तो घर वाली और बच्चों को पीट ले।

—आग की आँच में उतना ताप नहीं, जितना धन की आँच में।

—हर व्यक्ति को अपने सामर्थ्य की सही पहिचान होनी चाहिए।

मि.क.सं. ४३८६

**चिणौ घूंघटा में ई मूंघौ।** ४३८८

चना घूँघट में भी महँगा।

—बहू ससुराल वालों से छिपाकर घूँघट में भी चने खाये तो चबाने की आवाज सुनकर तुरंत भनक पड़ जाती है कि वह चने खा रही है। तब उसे खरी-खोटी सुननी पड़ती है। इसलिए चोरी-छिपे घूँघट में चना खाना तक महँगा होता है। काश ! चना चबाते समय आवाज नहीं होती !

—कभी-कभार चोरी भी स्वयं बोलकर अपना भेद बता देती है।

**चिणौ तौ कूदै सौ कूदै, पण केलड़ी थूं क्यूं कूदै ?** ४३८९

चना तो कूदे सो कूदेगा ही, पर तू क्यों कूद रही है केलड़ी ?

केलड़ी = मिट्टी का तवा।

—मालिक के साथ नौकर भी टेढ़ा बोले तब...।

—बड़े अधिकारी की शह पर चपरासी भी रोब दिखाये तब...।

—नेता या मंत्री का कोई दूरस्थ संबंधी हेकड़ी जताये तब...।

**चिणौ पांणी में ई सूखौ।** ४३९०

चना पानी में भी सूखा।

सूखौ = सख्त।

—यों पानी में भीगकर हर चीज मुलायम हो जाती है, पर एकाध चना पानी में सख्त रह जाता है।

—संवेदनशून्य व्यक्ति के लिए जो किसी की करुणा देखकर न पसीजे।

—जिस व्यक्ति पर उपदेश या ज्ञान का कुछ असर न हो।

**चित ई म्हारी, पुट ई म्हारी।** ४३९१

चित भी मेरी, पुट भी मेरी।

—जो चतुर व्यक्ति हर स्थिति में अपनी स्वार्थ-सिद्धि से न चूके।

—जो धूर्त व्यक्ति दुतरफा लाभ का अधिकारी बनना चाहे।

**चित चंगा तौ कठौती में गंगा।** ४३९२

चित चंगा तो कठौती में गंगा।

—गंगा नहाना, पूजा-पाठ करना अथवा कई धार्मिक अनुष्ठान करना भी यदि किसी का मन पवित्र करने के लिए पर्याप्त नहीं है तो ये सब औपचारिकताएँ व्यर्थ हैं। इसके विपरीत यदि मन या चित्त शुद्ध है तो घर बैठकर नहाना भी गंगा जैसा ही पवित्र है।

—चित्त की पवित्रता धार्मिक आडंबर से श्रेष्ठ है।

**चित पड़्यौ तौ कांई, टांग तौ ऊंची है।** ४३९३

चित पड़ा तो क्या, टाँग तो ऊँची है।

—कुश्ती में चित पड़ने के बाद फकत टाँग ऊँची डालकर जो पहलवान अपनी हार कबूल न करना चाहे।

—जो अड़ियल व्यक्ति किसी भी सूरत में न अपनी गलती मंजूर करे न हार।

**चित में नीं कोई पुट में।** ४३९४

चित में न कोई पुट में।

—जो व्यक्ति किसी का भी पक्षधर न होकर सर्वथा तटस्थ हो।

—जो व्यक्ति दूसरों के काम में किसी भी प्रकार की दखलंदाजी न करे।

—जिस व्यक्ति के हाथों न किसी का भला हो न बुरा।

**चितरांम रौ घोड़ौ दौड़ै कोनीं।** ४३९५

चित्र का घोड़ा दौड़ता नहीं है।

—अत्यधिक सजा-सँवरा व्यक्ति जो किसी के काम न आये।

—जिस बड़े आदमी से कोई आशा न रखी जाय।

—ऊँची टीमटाम वाले श्रीमंत अकसर आलसी होते हैं,उनसे कोई कामधाम नहीं होता।

**चितारनै नांवौ मांडै, ऊंट चढ़्यां ऊंघै।** ४३९६
**पारको छोरौ रमाड़ै, तौ ढूंगा किम ना सूंघै॥**

याद करके हिसाब लिखे, ऊँट चढ़ा ऊँघे।
पराया बच्चा खिलाये, तो शौच क्यों न सूँघे॥

—जो व्यक्ति समय पर हिसाब नहीं लिखे और बाद में याद करके लिखे तो हिसाब में चूक हो ही जाती है। जो नासमझ व्यक्ति ऊँट पर चढ़ा सोये तो नीचे गिरकर हड्डियाँ तुड़वाने से बच नहीं सकता और जो व्यक्ति दूसरों के बच्चे खिलाता है, वक्त जरूरत शौच जाने पर उनके मलद्वार भी साफ करने पड़ते हैं और बदबू भी सहन करनी पड़ती है। उपरोक्त तीनों काम करने वाले को आखिर पछताना पड़ता है।

**चित्त चंगोड़ी, मन माळवै, हियौ हाड़ौती जाय।** ४३९७

चित्त चंचल, मन मालवे, हिया हाड़ौती जाय।

हाड़ौती = हाडौती = राजस्थान का वह भाग जहाँ कोटा एवं बूँदी के जिले स्थित हैं और जहाँ पर हाडा चौहानों का राज्य था।

—जिस व्यक्ति का मन कभी एकाग्रचित्त न रहे।

—मन की एकाग्रता का अभाव सफलता में बाधक होता है।

**चित्त सूं चोरी अछांनी कोनीं।** ४३९८

चित्त से चोरी छिपी नहीं रहती।

—और कोई जाने या न जाने पर चोर का मन तो जानता है कि उसने चोरी की है।

—दूसरों से भले ही छिपाले पर कैसा भी होशियार अपराधी स्वयं से अपना अपराध छिपा नहीं सकता और भीतर-ही-भीतर जाने-अजाने वह अपने को दंडित करता रहता है।

**चिपक मूळ रौ रोग लाग्यौ तौ खिसक मूळ री फाकी लेवणी चाहीजै।** ४३९९

चिपक मूल का रोग लगा तो खिसक मूल की फाकी लेनी चाहिए।

—कोई गलत काम गले पड़ गया हो तो दूसरे गलत काम से उसका निवारण हो सकता है। मसलन पैर में शूल गड़ गई हो तो उसे शूल से बाहर निकाली जा सकती है।

—चिपकू मित्रों से पीछा छुड़ाने के लिए खिसकू मित्रों का सहयोग जरूरी है।

**चिमटी-चिमटी ई लंक लागै।** ४४००

चुटकी-चुटकी से भी गजब हो जाता है।

—अत्यधिक मितव्ययता के लिए नसीहत कि चुटकी-चुटकी फिजूल-खर्च भी बर्बादी का कारण बन जाता है।

—किंचित्-किंचित् करते ही तो बहुत की सीमा आ धमकती है।

—क्षण-क्षण करते ही तो पूरा दिन बीत जाता है।

**चिमटी चूंन चौबारां रसोई।** ४४०१

चुटकी चून चौराहे रसोई।

—जो व्यक्ति अकिंचन बात का भारी प्रदर्शन करे।

—जो साधनहीन व्यक्ति झूठी शान बघारे।

**चिमटी चूंन, मटका दस पांणी।** ४४०२

चुटकी चून, घड़े दस पानी।

—जिस व्यक्ति की हालत एकदम पतली हो और दिखावा बेहद करे।

—निपट अव्यावहारिक व्यक्ति के लिए जिसे किसी काम के अनुपात का कुछ भी ध्यान न हो।

—पागलपन की सीमा तक नादानी।

**चियां रौ पांणी मगरत्यां नीं चढ़ै।** ४४०३

चियों का पानी बंडेरी की ओर नहीं चढ़ता।

चियां = कच्चे मकानों के छाजन का वह भाग जो आजू-बाजू की दीवारों के बाहर होता है। इसलिए बरसात में केल्हू वाले मकान का पानी ढाल के विरुद्‌ध बंडेरी की ओर नहीं चढ़ता।

—कोई भी कार्य अपनी स्वाभाविक गति के अनुसार ही होता है, विपरीत नहीं।

**चिराक जोग भाग व्है तौ रातिंदौ नोज व्हैतौ ?** ४४०४

चिराग जैसा भाग्य हो तो रतौंधी क्यों होती ?

दे.क.सं.४२८९

**चिराक वडौ अर पागड़ी छूमंतर।** ४४०५

चिराग गुल और पगड़ी नदारद।

—कोई भी होशियार चोर चोरी का अवसर नहीं चूकता।

—धूर्त व्यक्ति अदेर अपनी स्वार्थ-सिद्धि कर लेता है।

—दुर्भाग्य संदेश देकर नहीं आता।

**चिलम देखै जठै, चार आदमी आय'र बैठै।** ४४०६

चिलम दिखे जहाँ, चार आदमी आकर बैठते ही हैं।

—नशेबाज आसानी से अपनी मंडली बना लेते हैं।

—किसी छोटे-बड़े आयोजन के लिए कोई खर्च करे तो आदमी अपने-आप एकत्रित हो जाते हैं।

**चिलमिया चढ़्योड़ा ई राखैं।** ४४०७

चिलमिये चढ़े ही रहते हैं।

चिलमिया = चिलम पर तंबाकू जलाने के लिए रखा जाने वाला अंगारा।

—चिलम पर अंगार चढ़ा ही रहता है, हरदम तंबाकू के नशे में चूर रहने वाले के लिए।

—किसी भी कार्य के लिए चल पड़ने को जो व्यक्ति उद्यत हो, उसके लिए।

—बेहद क्रोधी व्यक्ति के लिए जो अकारण ही क्रोध से भरा रहता है।

**चींचड़ा नै कांईं बेरौ के दूध रौ स्वाद कैड़ौ ?** ४४०८

चीचड़े को क्या पता कि दूध का स्वाद कैसा होता है ?

चींचड़ौ = किलनी नामक कीड़ा जो पशुओं के शरीर पर त्वचा से चिपटकर उनका लहू चूसता है। गाय के स्तनों से चिपटकर वह दूध की बजाय लहू का स्वाद ही चखता है।

—दुष्ट व्यक्ति सत्कर्म का आनंद क्या जाने ?

—व्यसनी को अपने नशे का शौक ही सर्वोत्तम लगता है।

**चींचड़ी अर खाज।** ४४०९

**किलनी को और खुजली।**

—आदमी को किलनी या खटमल काटे तो जोर से खुजली चलती है।

—'मेंढकी को जुकाम' से मिलती-जुलती यह कहावत है 'खटमल को और खुजली'।

—कोई दुष्ट व्यक्ति दूसरों के द्‌वारा सताये जाने का व्यर्थ रोना रोये तब!

—गरीब का कोई बहाना पार नहीं पड़ता।

**चीकणा दातार सूं सूम भलौ, झटकै उत्तर देय।** ४४१०

चिकने दातार से सूम भला जो झटपट उत्तर दे।

चीकणौ दातार = चिकनी-चुपड़ी बातें करने वाला वह दातार जो बहुत समय तक लटकाये रखे और देने के नाम पर केवल झाँसापट्टी। ऐसे दातार की तुलना में कंजूस अच्छा कि वह झट मना कर देता है। इससे समय की बर्बादी नहीं होती और न जूते ही घिसते हैं।

—उस बड़े व्यक्ति के प्रति कटाक्ष जो सहयोग करने के लिए झूठे आश्वासन दे और काम रंच-मात्र भी न करे।

**चीकणी चोटी रा सै लगवाड़।** ४४११

चिकनी चोटी के सब पिछलग्गू।

—चिकने केशों वाली औरत के लिए हर पुरुष लालायित रहता है।

—आकर्षक वस्तु की उपेक्षा करना सहज नहीं है।

**पाठा : चीकणी चोटी रै कुण लागू नी है?**

चिकनी चोटी का कौन पीछा नहीं करना चाहता?

**चीकणै घड़ै छांट नीं लागै।** ४४१२

चिकने घड़े पर बूँद नहीं ठहरती।

—उस मोटी चमड़ी वाले ढीठ व्यक्ति के लिए जो न अपयश की परवाह करे और न बदनामी की।

—उस निर्मम व्यक्ति के लिए जिसके दिल पर आँसुओं का कोई असर न हो।

—लाख समझाने पर भी जो अड़ियल व्यक्ति किसी की सीख न माने।

पाठा : चीकणै घड़ै छांट नीं लागै, जे लागै तौ चा'ठौ। चा'ठौ = धब्बा।

**चीकणौ पाप।** ४४१३

चिकना पाप।

—घी-तेल में मिलावट करे, कम तोले—उसे राजस्थान में चिकना पाप समझा जाता है। जब किसी से इसके बारे में आशंका प्रकट की जाती है तो पुरानी धारणाओं के दुकानदार या घरवाले तुरंत कहते हैं—राम-राम, यह चिकना पाप कौन मत्थे ओढ़े? पर आज-कल व्यवसाय में चिकना, गीला, सूखा व भुरभुरा सब तरह के पाप धड़ल्ले से चलते हैं, कोई परवाह नहीं करता। चिकने पाप की खबरें तो आये दिन अखबारों में छपती हैं और छपती रहेंगी।

**चीठी ऊंदरा लेयग्या।** ४४१४

चिट्ठी चूहे ले गये।

—किसी काम को न करने का बहाना खोजना।

—जो व्यक्ति किसी काम को टालना चाहे तब।

—शोक-समाचार के लिए जो पत्र लिखा जाता है, उसे भी 'चीठी' कहते हैं। कोई वृद्ध बीमार लंबे अर्से तक जीये तो परिहास के आशय से कहते हैं कि उसकी 'चीठी' चूहे ले गये।

**चीथड़ां रौ रतन।** ४४१५

चिंदियों का रत्न।

—गुदड़ी का लाल।

—निहायत गरीबी के बीच कोई महान विभूति पैदा हो जाय तब...!

**चीभड़्या व्है तौ परा चाखां, पण छोरी रौ कांई बेरौ पड़ै!** ४४१६

ककड़ी हो तो चख भी लें, पर छोकरी का क्या पता चले!

—खाने योग्य किसी वस्तु की परख करना चाहें तो सूँघकर या चखकर पता लगा सकते हैं कि वह कैसी बनी है—अच्छी या बुरी। उसमें किस बात की कमी है, पर लड़की के लक्षणों की कैसे परख हो कि वह कैसी है—केवल देखने मात्र से तो पता नहीं चल सकता।

—किसी भी व्यक्ति-विशेष की परख उसे बरतकर या उसके साथ रहने से की जा सकती है—फिर भी कुछ मायावी दुर्बोध होते हैं,जिनकी पहिचान सहज नहीं।

**चीभड़ियां रा चोर नै मूकी री मार।** ४४१७

ककड़ी के चोर को घूँसे की मार।

—ककड़ी या खरबूजे जैसी छोटी चीज चुराने वाले को झापड़ या घूँसे की मार ही पर्याप्त सजा है।

—जैसा अपराध वैसा दंड।

**पाठा : चीभड़िया रा चोर नै सूळी रौ डंड।** ककड़ी के चोर को सूली की सजा ?

दे.क.सं.२०७२,२०७३

**चील रै आळै, मांस रौ कांई कांम ?** ४४१८

चील के घोंसले में, माँस का क्या काम ?

—चील तो स्वयं मांसाहारी है,फिर उसके घोंसले में मांस मिलने की आशा रखना ही निरर्थक है।

—किसी निर्मम व्यक्ति से दया की आशा की जाय तब...।

—अपव्ययी के घर धन नहीं जुड़ता।

**पाठा : चील रै आळै मांस कठै ?** चील के घोंसले में मांस कहाँ ?

**चील रौ मांस तौ चुटक्यां में जासी।** चील का मांस तो चुटकियों में जाएगा।

**चील रै आळै मांस भाळै।** चील के घोंसले में मांस खोजता है।

**चीला कदै न लीला।** ४४१९

चहिले कभी न हरे।

—बैलगाड़ी के चहिलों पर हरियाली नहीं उगती।

—बैलगाड़ी किराये पर चलाने वाला कभी खुशहाल नहीं होता।

—जो परंपरा अपनी उर्वरता खो दे वह त्याज्य है। उस में बदलाव होना चाहिए। मृत रूढ़ियाँ कभी प्रस्फुटित नहीं होतीं।

**चुगलखोर चुगली करै, जड़ांमूळ सूं जाय।** ४४२०

चुगलखोर चुगली करे, सर्वनाश होकर रहता है।

—चुगलखोर का निशाना अचूक होता है, वह जिस किसी की चुगली करेगा उसका विनाश निश्चित है।

—चुगलखोर अपने हुनर में पूरा पारंगत होता है। उसकी चुगली अग्नि-बाण से भी ज्यादा घातक होती है।

**चुगल टाळ सगळा चूकै।** ४४२१

चुगलखोर के सिवा सभी चूकते हैं।

—अन्य व्यक्ति अपने कार्य में गफलत कर सकते हैं, पर चुगलखोर से कभी गफलत नहीं होती।

**चुग्गा माथै चोट।** ४४२२

चुग्गे पर चोट।

—पेट पर लात—जब कोई व्यक्ति किसी की जीविका को क्षति पहुँचाये तब...।

—किसी की कमाई पर चोट करना सबसे जघन्य अपराध है।

**चुतर चार ठौड़ चूकै।** ४४२३

चतुर चार ठौर चूकता है।

—अपनी डेढ़-समझ के घमंड में चतुर से भी चूक संभव है।

—चतुर की चतुराई सर्वत्र पार नहीं पड़ती।

**चुतर नै इसारौ उबरतौ पड़्यौ।** ४४२४

चतुर को इशारा ही काफी है।

—चतुर को समझाने की जरूरत नहीं। वह होंठ हिलते ही बात समझ लेता है।

—जो सानी में न समझे वह चतुर ही क्या?

**पाठा: चतर नै इसारौ घणौ।** चतुर को इशारा ही बहुत।

**चतर नै सांनी मोकळी।** चतुर को सानी ही बहुत।

**चुतर नै चौगणी अर मूरख नै सौ गुणी दीसै ।** ४४२५

चतुर को चौगुनी और मूरख को सौ गुनी दिखती है ।

—चतुर को अपनी समझदारी के कारण आम-आदमी की अपेक्षा चौगुना दिखता है । पर मूर्ख व्यक्ति को अपनी डेढ़ समझ के मुगालते में सौ गुना दिखता है—तभी तो वह मूर्ख है ।

—मूर्ख कभी नहीं मानता कि वह मूर्ख है । उसे तो समझदारी की बदहजमी रहती है ।

**चुतर नै समझावणौ अर मूरख नै मारणौ सोरौ ।** ४४२६

चतुर को समझाना और मूर्ख को पीटना आसान है ।

—चतुर संकेत में समझ लेता है और मूर्ख बार-बार समझाने पर भी नहीं समझता । उसे समझाने की बजाय मारना कतई मुश्किल नहीं है ।

—मूर्ख मार खाने से ही समझता है ।

**चुतर री चाकरी खोटी ।** ४४२७

चतुर की चाकरी खोटी ।

—चतुर हर किसी काम में गलती निकाल सकता है ।

—चतुर का नौकर चैन से नहीं बैठ सकता । उसके सामने किसी की नहीं चलती ।

**चुतर री चार घड़ी अर मूरख रौ जमारौ ।** ४४२८

चतुर की चार घड़ी और मूर्ख की जिंदगी ।

—चतुर व्यक्ति चार घड़ी में जीवन का जो आनंद ले सकता है उसे मूर्ख सारी जिंदगी में नहीं पा सकता ।

—चतुर मनुष्य थोड़े समय में जीवन का लक्ष्य समझ लेता है, मूर्ख आदमी समूचे जीवन में अपने लक्ष्य को स्थापित नहीं कर सकता ।

पाठा : **चुतर रौ अेक पौर अर मूरख री सगळी रात ।**

चतुर का एक प्रहर और मूर्ख की सारी रात ।

**चुतर रौ हीड़ौ दोरौ ।** ४४२९

चतुर की सेवा मुश्किल ।

—चतुर बीमार तीमारदारी करने वाले के हर काम में कुछ-न-कुछ नुक्स निकाल ही देता है। तीमारदारी करने वाले का जल्द ही मन उचट जाता है!

—चतुर का साथ निभाना बड़ा कठिन है।

**चुतर रौ हींड़ौ नीं करणौ।** ४४३०

चतुर की तीमारदारी नहीं करनी।

—क्योंकि तीमारदारी के दौरान छोटी-से-छोटी गलती भी चतुर की तेज नजर से नहीं बच सकती।

—चतुर को बहलाना आसान नहीं, इसलिए काम की मार अधिक पड़ती है।

**चुतर होय सो चेतै।** ४४३१

चतुर ही सतर्क रहता है।

—चतुर व्यक्ति समय पर चेतने के कारण हर क्षति से बच जाता है।

—समय पर सतर्क होना ही चतुर की विशिष्टता है, अन्यथा सामान्य व्यक्ति और उस में अंतर ही क्या?

**चुतराई किणी रै बाप री कोनीं।** ४४३२

चतुराई किसी के बाप की नही है।

—चतुराई किसी की बपौती नहीं है जो सीधे उत्तराधिकार में मिल जाय—उसे उम्र व अनुभव के द्वारा अर्जित करना पड़ता है।

—चतुराई पर किसी का जातिगत ठेका नहीं है।

**चुतराई चूल्है पड़ी।** ४४३३

चतुराई चूल्हे पड़ी।

—समय पर चतुराई कुछ भी काम न आये तब...!

—कभी-कभार चतुराई भयंकर संकट में डाल देती है।

—ज्यादा चतुराई से जब काफी नुकसान हो जाये तब...!

**पाठ्य : चुतराई चीकलै पड़ी।** चतुराई फिसल गई या चतुराई कीचड़ में धँस गई।

**चुतराई तौ आपरी नै आपरै बाप री।** ४४३४

चतुराई तो अपनी और अपने बाप की।

—चतुराई एक ऐसा वैयक्तिक गुण है जिसे न कोई चुरा सकता है और न कोई लूट सकता है।

—चतुराई की अदला-बदली असंभव है।

**चुतराई री कठै ई पोसाळ नीं व्है।** ४४३५

चतुराई की कहीं भी पाठशाला नहीं होती।

—कुछ बातें जन्मजात स्वभाव का हिस्सा होती हैं। किसी भी प्रकार के प्रशिक्षण से उसको उत्पन्न नहीं किया जा सकता।

—चतुराई किसी के सिखाने या कहीं पढ़ने से नहीं आती, वह तो जन्म से ही भीतर जुड़ी रहती है।

**चुप मीठी।** ४४३६

चुप मीठी

—चुप्पी का सदा मीठा फल मिलता है। अधिक बातूनी फँस जाता है पर चुप रहने वाला नहीं फँसता।

—मौन सर्वथा मंगलदाई है।

**चूंट्यां रौ चूरमौ अर थपेड़ां री दाळ।** ४४३७

चिउँटियों का चूरमा और झापट की दाल।

—दुष्ट व्यक्ति को पीटना ही उसका उचित सत्कार है।

—जिस व्यक्ति की संगति से हानि के अलावा किसी लाभ की आशा न हो।

**चूंन जींरौ पुन्न।** ४४३८

चून जिसका पुण्य।

—जिस घर से दान निकलता है केवल उसे ही पुण्य होता है।

—भिक्षा में दिये हुए चुटकी चून का पुण्य भी कम नहीं होता।

—किसी को रोटी खिलाने से बड़ा कोई उपकार नहीं।

**पाठा : अन्न ज्यांरौ पुन्न** । अन्न जिसका पुण्य !

## चूंन रौ लोभी बातां सूं कद धीजै ? ४४३९

चून का लोभी बातों से कब मानने वाला ?

—घर-घर आटा माँगने के लिए डाकोत, जोगी इत्यादी फेरी लगाते हैं। सिवाय आटे के उन्हें दूसरी बातों से कोई सरोकार नहीं। सिद्धांत या आदर्श के उपदेश झाड़ने से उन्हें नहीं भरमाया जा सकता।

—लोभी का लोभ पूरा होने पर ही उसे संतोष होता है !

## चूका नै चौरासी। ४४४०

चूके और अंत। या चूके और बर्बाद।

—कितने ही व्यक्तियों से पूछताछ करने पर भी इस कहावत में 'चौरासी' का संदर्भ समझ में नहीं आया। आखिर मगज लड़ाते-लड़ाते अनुमान लगाया कि भारतीय मान्यता के अनुसार प्राणियों की चौरासी लाख योनियाँ होती हैं। मोक्ष प्राप्ति न होने पर जन्म-जन्मांतर के आवागमन से बचा नहीं जा सकता।

—एक मामूली-सी चूक मनुष्य को न जाने विनाश के किस कगार पर पहुँचा दे। चूक तो एक बार ही होती है पर उसके दुष्परिणामों का कहीं कोई अंत नहीं।

—चूक से बचने के लिए आदमी को हर कदम पर सतर्कता बरतनी चाहिए।

**पाठा : चूकां पछै चौरासी**। चूकने के बाद चौरासी !

## चूकी चोट अैरण माथै। ४४४१

चूकी चोट आहरन पर।

अैरण = आहरन = निहाई = लोहे का वह चौकोर उपकरण जिस पर लोहार या सोनार गर्म धातु रखकर पीटते हैं। कभी-कभार गर्म धातु पर की गई हथौड़े की चोट चूक भी जाती है तो वह आहरन पर ही पड़ती है। तमाम चूकी हुई चोटें आहरन ही झेलता है।

—घरवालों के सारे दोष पुरखों पर ही थोपे जाते हैं।

—ऐसा धीर व्यक्ति जो सब कुछ सहन कर ले।

**चूकै तरां पींडारै सूं चूक ।**–व. ६७ ४४४२

चूके तो पिडारे से चूक ।

पींडारौ = वर्षा के दिनों में जलाने हेतु पाथे हुए उपलों का सुरक्षित ढेर ।

—पिंडारा बनाने वाली अपनी चूक को अनदेखा करके जब पिंडारे में ही चूक बताये ।

—जो व्यक्ति अपनी भूल नहीं मानकर दूसरों में भूल बताने की चेष्टा करे ।

**चूकै मत चह्वांण !** ४४४३

चूके मत चौहान !

**संदर्भ** : किंवदंती है कि मोहम्मद गोरी को सात बार हराने पर भी अजमेर के राजा पृथ्वीराज चौहान ने माफी माँगने पर उसे हर बार माफ कर दिया । पर आखिर गोरी का दॉव लगा तो उसने पृथ्वीराज को एक बार भी माफ नहीं किया । उसकी ऑखें निकलवाकर कैद में डाल दिया । उस वक्त उसकी उम्र केवल छब्बीस वर्ष के करीब थी । कवि चंद्रवरदाई के द्वारा यह सुनने पर कि पृथ्वीराज शब्द वेदी वाण चलाने में अचूक है । मोहम्मद गोरी ने इसका प्रत्यक्ष प्रमाण चाहा । राज-दरबार जुड़ा । बादशाह ऊँचे आसन पर बैठा, जिसकी ऊँचाई का पता चंद्रवरदाई ने करवा लिया था । बादशाह से कुछ दूरी पर सात तवे औंधे लटकाये गये । उनकी टनटन आवाज सुनकर पृथ्वीराज ने उन्हें वेध डाला । बादशाह बहुत प्रसन्न हुआ । उसने तीन बार जोर से वाह-वाह-वाह किया । दरबार में खुशी का हुड़दंग मचा । तभी चंद्रवरदाई ने यह दोहा पृथ्वीराज को सुनाया—चार बांस, चौबीस गज, अंगुल अस्ट प्रमांण, ता ऊपर सुलतान है, चूकै मत चह्वांण । इतना कहना हुआ कि पृथ्वीराज ने तानकर तीर मारा और बादशाह धराशाही ।

—मौका हाथ आने पर चूके वह गॅवार ! मौका गया सो गया, फिर हाथ नहीं आने का ।

**चूड़ा में ठगावै अर मेहंदी में कस करै तौ कांईं सांधौ लागै ।** ४४४४

चूड़े में ठगाये और मेहँदी में किफायत कराये तो कुछ भी फर्क नहीं पड़ता ।

चूड़ौ = स्त्रियां द्वारा भुजाओं में पहनने के लिए चूड़ियों का वह समूह जिस में छोटी चूड़ी कुहनी के पास और सबसे बड़ी चूड़ी बाहु-मूल में रहती है । किसी जाति में नव-वधू और किसी में प्राय सब विवाहित स्त्रियॉ चूड़ा पहनती हैं । चूड़े प्रायः हाथी दॉत के ही अधिक प्रयोग में लिए जाते थे । इनकी चूड़ियॉ कुहनी से बाहुमूल तक गावदुम रहती हैं ।

—हाथी दाँत का चूड़ा बहुत महँगा होता है और मेहँदी बहुत सस्ती। यदि कोई व्यक्ति चूड़े में ठगा जाय और मेहँदी किफायत से लेना चाहे तो कुछ भी कसर पूरी नहीं हो सकती।

—बड़ी चीज का घाटा मामूली चीज से पूरा नहीं हो सकता।

**चूड़ाळी ज्यूं नांखै त्यूं छाजै।**–व.५५ ४४४५

चूड़े वाली ज्यो गिराये त्यों पोसाये।

—चूड़े वाली अर्थात् विवाहिता चाहे जितने अधूरे गिराये या पुत्र जने, भले वे दूसरे के ही हों, उसकी बदनामी नहीं होती।

—सामाजिक नियमों की ओट में कोई कुछ भी करे उस पर कोई अँगुली नही उठा सकता।

**पाठा : चूड़ाळी ज्यूं न्हाकै त्यूं सोहै।** चूड़े वाली ज्यों गिराये त्यों सोहे।

**चूड़ाळी सूं खांडणौ।**–व.१०९ ४४४६

चूड़े वाली से मूसल कुटवाना।

खांडणौ = अनाज आदि को मूसल से कुटवाना।

—चूड़े वाली औरत से अनाज कुटवाने पर चूड़े की खन-खन की आवाज के द्वारा पड़ोसियों को पता चल जाता है कि इस वक्त घर में क्या हो रहा है।

—गोपनीय बात के लिए बहुत सावधानी आवश्यक है।

**चूड़ियां तौ लुगायां नै ई सोहै।** ४४४७

चूड़ियाँ तो औरतो को ही शोभा देती हैं।

—पुरुष और औरत की शारीरिक बनावट के अनुरूप ही उनके लिबास, आभूषण, साज-शृंगार व प्रसाधन का औचित्य है। कुछ बातें तो वास्तव में इकतरफा है। मसलन, पगड़ी पुरुष ही बाँधेगा, औरत नही। उसी प्रकार साड़ी औरत ही पहिनेगी, पुरुष नहीं।

—औरतों की सुकोमल, रोम-रहित कलाई पर ही चूड़ियाँ सुंदर लगती हैं।

**चूड़ी भेळी चूड़ी खटै।** ४४४८

चूड़ी के साथ चूड़ी चलती है।

—चूड़ी सुहाग का प्रतीक है। पति के अलावा भी कोई छिपाकर चूड़ी पहिना दे तो बात दबी रहती है।

—सुहागिन औरत गुपचुप प्रेम करे तो बात ढकी रहती है, बदनामी नहीं होती। पर कुँआरी कन्या अथवा विधवा ऐसी जोखिम नहीं ले सकती। चाहे घुट-घुटकर मर जाएँ। हिंदू-समाज का यह विचित्र अभिशाप है।

**पाठा : चूड़ी में चूड़ी चालै।** चूड़ी में चूड़ी चलती है।

**चूड़ै हाळी नै घर-घर सुहाग।** ४४४९

चूड़े वाली को घर-घर सुहाग।

—चूड़े वाली अर्थात् विवाहिता किसी भी बहाने जहाँ चाहे गुपचुप मौज मना सकती है।

—परिणीता की तुलना में अविवाहित या विधवा के लिए कदम-कदम पर बंधन हैं।

—सामाजिक बंधन के अतिरिक्त एकनिष्ठ दांपत्य की अपनी कोई मर्यादा नहीं।

**चूतिया चांदारूण में बसै।** ४४५०

बौड़म व्यक्ति चाँदारूण में बसते हैं।

दे.क.सं. ११३४,१५७३

पाठा : **अँड़ा चूतिया 'वेलाव' में जोजौ।** ऐसे गँवार 'वेलाव' में देखना।

**अँड़ा चूतिया चौमू में हेरजौ।** ऐसे मूर्ख चौमू में खोजना!

**चूतिया री दोस्ती जी रौ जंजाळ।** ४४५१

नादान की दोस्ती जी का जंजाल।

—ऐसा नादान दोस्त जो बात-बात में संकट उत्पन्न कर दे।

—मैत्री-संबंध बहुत सोच-विचार कर करने चाहिएँ, अन्यथा परेशानियों का ताँता हमेशा बना रहेगा।

**चूतिया रै किसा चार कांन व्है?** ४४५२

बौड़म के चार कान थोड़े ही होते हैं?

—मूर्ख या अहमक की शारीरिक बनावट कोई अलग नहीं होती, वह तो अपनी नासमझी के आधार पर ही पहिचाना जाता है।

मि.क.सं. ३२१७,३७०३

**चूनड़ ओढ़ै गांठ री, नांव पीवर रौ होय।** ४४५३

चुँदरी ओढ़े गाँठ की, नाम पीहर का होत।

—जिस बहू के पीहर की आर्थिक स्थिति कमजोर हो और ससुराल काफी संपन्न। वह अपनी जमापूँजी से नया वेश या गहने खरीदकर पहनती है, नाकि पीहर की प्रतिष्ठा बनी रहे।

—जो व्यक्ति अपनी जेब से पूँजी खर्च करके अपने परिजनों का नाम रौशन करना चाहे।

**चूरण-भूरण भूखां मरै नै भड़वा लाडू खाय।** ४४५४

बच्चे-तच्छे भूखों मरे अर भड़वे लड्डू खाएँ।

—घर के बाल-बच्चे फाकामस्ती करें और उसी घर के बूते पर लफंगे मौज उड़ाएँ तब...।

—जो व्यक्ति परिवार की उपेक्षा करके दूसरों को माल-मलीदा खिलाये तब...।

**चूरमै रौ सौक, देवता रै धोक।** ४४५५

चूरमे का शौक, देवता के धोक।

चूरमा = बाजरा, गेहूँ या मकई की रोटी को बारीक चूरकर घी-खाँड के मिश्रण से बनाया हुआ पकवान विशेष।

—देवता या देवी को प्रसाद के निमित्त गुड़, नारियल या कुछ-न-कुछ मिष्ठान चढ़ाया जाता है। जिसे चूरमा खाने का अत्यधिक शौक हो और वह किसी देवता को प्रसाद में चूरमा चढ़ाये तो उसका दुहरा लाभ है—चूरमे का शौक भी पूरा हो जाय और देवता का प्रसाद भी चढ़ जाय। क्योंकि देवता तो केवल वासना के भूखे होते हैं। उन्हें चढ़ाया गया प्रसाद केवल भक्त के परिजन ही खाते हैं।

—जिस काम में एक ही चीज से दुहरा लाभ हो।

**चूरमौ यार नै, बासी भरतार नै।** ४४५६

चूरमा यार को, बासी भरतार को।

—उस छिनाल के लिए जो अपने प्रेमी को तो उम्दा पकवान खिलाती है और अपने पति को रूखी-बासी रोटी।

—कुलटा का चारित्रिक लक्षण।

—उस अव्यावहारिक व्यक्ति के प्रति कटाक्ष जिसे अपने-परायों का ही ज्ञान न हो।

**चूळ में चूंन अर लरड़ी माथै ऊंन कुण ई नीं छोडै ।** ४४५७

चूल मे चून और भेड़ पर ऊन कोई नही छोड़ता ।

चूळ = पुरानी चक्की का एक उपकरण विशेष, जिस में भी किंचित् आटा रहता है ।

—कोई भी आदमी अपने छोटे-से-छोटे स्वार्थ को नहीं छोड़ पाता ।

—बस, मौका भर मिलना चाहिए गरीब का शोषण करने से कोई नहीं चूकता ।

**चूलौ काढ़्यां खाट समावै , पीसणवाळी बाहिर आवै ।**–व.१६४ ४४५८

चूल्हा हटाने पर खाट समाये, पीसनहारी बाहर आये ।

—जिस हतभागे का घर या निवास इतना छोटा हो कि रोटी पकाने का चूल्हा बाहर निकालने पर ही सोने की जस-तस व्यवस्था हो ।

—गरीबी के अभिशाप का चित्रण ।

**चूल्हा-चूल्हा सै अेक सरीसा ।** ४४५९

चूल्हे-चूल्हे सब एक समान ।

—जिन व्यक्तियों के स्वभाव में समानता हो । जो दो व्यक्ति एक ही लच्छन के हों ।

—सभी औरतो के सहवास का आनंद एक-सा होता है ।

**चूल्हा में तौ ऊंदरा लुटै ।** ४४६०

चूल्हे मे तो चूहे लोटते हैं ।

—जिस घर में चूहे तक खाने के लिए तरसते हों ।

—जिस व्यक्ति की आर्थिक-स्थिति अत्यंत दयनीय हो ।

—गरीब होते हुए भी जो व्यक्ति वड़प्पन की डींग मारे तब कटाक्ष के रूप में यह कहावत प्रयुक्त होती है ।

**चूल्हा में थूकै अर सुख री आस राखै ।** ४४६१

चूल्हे में थूके और सुख की आस सँजोये ।

—चूल्हे जैसे परम उपादेय उपकरण का जो व्यक्ति तिरस्कार करे वह भला कैसे सुखी रह सकता है !

—जो व्यक्ति जीविका के प्रति उपेक्षा का भाव रखे वह हमेशा अभाव में रहता है ।

—कमाई के प्रति उदासीन व्यक्ति के लिए।

**चूल्हा री लकड़ी चूल्हा में इज बळै।** ४४६२

चूल्हे की लकड़ी चूल्हे में ही जलती है।

—चूल्हे में जलने वाली लकड़ी की अन्य कोई उपादेयता नहीं होती।

—जिस व्यक्ति की जैसी उपयोगिता होती है, वह उसी रूप में बरता जाता है।

—हर व्यक्ति अपने परिवार की खातिर ही, खटता-जलता है।

—एक लाक्षणिक व्यंजना यह भी है कि इस पृथ्वी के समस्त प्राणी पृथ्वी पर ही जीते-मरते हैं।

**चूल्हा रौ चांद नै हांडी रौ हमीर।** ४४६३

चूल्हे का चाँद और हँडिया का हमीर।

हमीर = योद्धा, बहादुर।

—ऐसा व्यक्ति जो प्रायः स्त्रियों के पास घर में चूल्हे के निकट बैठा खाने की खातिर तरसता हो।

—निपट अकर्मण्य और पेटू के लिए जिसकी अन्य कोई उपयोगिता न हो।

**चूल्है चूंन, हाथ में नांणौ, दिन ऊगै जांणै दीयाळी रौ टांणौ।** ४४६४

चूल्हे पर चून, हाथ मे पैसा, हर दिन उगे दीवाली जैसा।

—घर में खाने की पर्याप्त व्यवस्था और हाथ में रुपया हो तो प्रतिदिन त्योहार जैसा ही है।

—आर्थिक संपन्नता ही सुख का एक मात्र आधार है।

**चूल्हौ कैवै म्हे सरब सोनै रौ, वेवणी कैवै के म्हैं गूंडां में बैठी।** ४४६५

चूल्हा कहे मैं सर्व सोने का, वेवणी कहे कि मैं सटकर ही बैठी हूँ।

वेवणी = परंपरागत मिट्टी के चूल्हे के सामने ही राख एकत्रित करने के निमित्त चार-पाँच अंगुल ऊँची हदबंदी जो चूल्हे जितनी चौड़ी और डेढ़ या दो हाथ लंबी होती है। जब वह राख से भर जाय तो उसे खाली कर दिया जाता है।

—माटी का चूल्हा कुछ भी डींग क्यों न मारे वेवणी से उसकी असलियत तनिक भी छिपी हुई नहीं है कि वह किस धातु से बना है—चाँदी, सोने या मिट्टी से।

—जो व्यक्ति अपने परिजनों के सामने ही थोथी डींग हॉके तब...।

**चूसै नै लाधी हळदी री गांठ, पंसारी सूं इदकी आंट।** ४४६६

चूहे को मिली हलदी की गॉठ, पंसारी से बढ़कर ऑट।

—जो व्यक्ति नगण्य पूँजी के बल पर बड़ी-बड़ी योजनाएँ बनाये।

—झूठा दिखावा करने वाले पर कटाक्ष।

पाठा : **ऊंदरा नै लाधौ सूंठ रौ गांठियौ, पंसारी री खोड़ खुड़ावै।**

चूहे को मिला सोंठ का टुकड़ा, बन बैठा पंसारी तगड़ा।

**चेड़ी रै ठोकर दीन्ही।** ४४६७

चेड़ी को ठोकर मारी।

चेड़ी = चुड़ैल, डायन।

—चलते रास्ते चुड़ैल को खिजाने का परिणाम बुरा होता है।

—जो व्यक्ति जाने-अनजाने किसी दुष्ट को छेड़ ले।

**चेतान सदा सुखी।**– भी. २४९ ४४६८

शैतान सदा सुखी।

—सत्यवादी और सिद्धांतों पर चलने वाला मनुष्य हमेशा तकलीफ पाता है, दुष्ट, धूर्त, चोर व डाकू सदा सुखी रहते है।

—आधुनिक जमाने के माहौल पर कटाक्ष।

**चेलचकी वाळी वात है, थावू करवू तो कई ने।**– भी. २५० ४४६९

शेखचिल्ली वाली बात है, स्थायी काम तो कुछ भी नही।

—जो व्यक्ति हवाई-महल बनाये और ठोस कार्य कुछ भी नहीं करता हो।

—निकम्मे व्यक्ति बढ़-बढ़कर बातें बनाये और करने-धरने को कुछ नहीं।

**चेली कांई जांणसी के बाबौजी रौ सांढ़ौ कस्यौ।** ४४७०

चेली क्या जानेगी कि संत-बाबा का साथ किया।

—बाने के भुलावे में किसी ढोंगी साधु का कोई भक्त बन जाय तब...।

—कोई व्यक्ति भूल से किसी बदमाश आदमी की संगत में फँस जाय तब...।

**चेलौ नीं कोई चांटी, बाबौ अेकलौ ई मांटी।** ४४७१

चेला न कोई भक्त, बाबा अकेला ही सख्त।

—जिस व्यक्ति के आगे-पीछे कोई न हो और वह अकेला ही सर्वत्र ताल ठोंकता फिरे।

—जिस नेता के पीछे कोई कार्य-कर्ता न हो और वह अकेला ही सारे दंद-फंद करे।

**चैत चिड़पिड़ौ नै सांवण निरमळौ।** ४४७२

चैत्र झिरमिर और सावन निर्मल।

—यों तो यह कहावत वर्षा से संबंधित है, पर इसकी लाक्षणिक व्यंजना भी है। चैत्र मास की असामयिक झिरमिर वर्षा से कोई फायदा नहीं। और सावन की बरसात तो खेती के लिए बहुत ही उपयोगी है, पर वह सूखा निकल जाय तो अकाल की विभीषिका से बचना संभव नहीं।

—किसी आदमी के जीवन में दुहरा दुर्योग घटित हो तब...!

**चोखळा में कढ़ी खाटी व्हैगी।** ४४७३

इलाके मे कढ़ी खट्टी हो गई।

—किसी मोतबर की इज्जत खराब होने पर।

—इलाके में चारों ओर किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति की बदनामी फैलने पर।

**चोखा दीहड़ा कैय'र नीं आवै।** ४४७४

अच्छे दिन कहकर नही आते।

—अच्छे दिन आने होते हैं तो स्वतः आ टपकते हैं। वे सूचना देकर न तो आते हैं और न आगाह करके जाते हैं।

—यदि भाग्य में सुख लिखा है तो वह बिन बुलाये मेहमान की तरह आ धमकता है।

**चोखौ करग्यौ, नांव धरग्यौ।** ४४७५

अच्छा कर गया, नाम धर गया।

—अच्छा काम करने वाले की कीर्ति पीछे रह जाती है।

—काम नेक तो यश अनेक। आलीशान काम तो अविस्मरणीय नाम।

**चोची खेती घरना धणिये खाय ।**–भी.२५१ ४४७६

छोटी खेती घर के स्वामी को खाती है ।

—खेती के अलावा भी इस कहावत का अर्थ है कि छोटे पैमाने पर किये गये काम में विशेष लाभ नहीं होता । वह उलटे मालिक को क्षति पहुँचाता है ।

—छोटे काम का परिश्रम व्यर्थ जाता है ।

मि.क.सं.१६१६

**चोटी करै चमचम, विद्या आवै घमघम ।** ४४७७

चोटी करे चमचम, विद्या आये घमघम ।

—जो बच्चा दूध पीने में आनाकानी करे तब इस मंत्र से दूध पिलाने की चेष्टा की जाती है । इस उक्ति का बार-बार उच्चारण करने पर बच्चा चोटी पकड़कर उसकी प्रतिक्रिया जानने को उत्सुक हो जाता है और धीरे-धीरे कटोरे का सारा दूध पी जाता है । वह मन में आशा जगाये रहता है कि बढ़ती हुई चोटी की चमचम के साथ विद्या भी घमघम आ रही है ।

—हर व्यक्ति को उसकी उम्र व योग्यता के अनुसार ही समझाना पड़ता है ।

**चोटी चाकरी मांये सुख नी मळवानो ।**–भी.२५४ ४४७८

छोटी चाकरी में सुख नहीं मिलने का ।

—बड़े व्यक्ति के पास अच्छी नौकरी या ऊँचे पद की सरकारी नौकरी ही करनी चाहिए ।

**चोटी जठै रोटी नीं, रोटी जठै चोटी नीं ।** ४४७९

चोटी जहाँ रोटी नही, रोटी जहाँ चोटी नही ।

—जहाँ बच्चे वहाँ रोटी नहीं, जहाँ रोटी वहाँ बच्चे नहीं ।

—विधाता की नासमझी पर कटाक्ष ।

मि.क.सं.४३८४

**चोटी रौ परसेवौ अेडी लग आवै जणा कांम व्है ।** ४४८०

चोटी का पसीना एड़ी तक आये तब काम होता है ।

—कोई भी काम अथक मेहनत व निष्ठा के बिना संपन्न नहीं होता ।

—यदि बातों से ही कोई काम पूरा हो जाय तो पंगु भी किसी से पीछे न रहे ।

**चोटी वाढ़्यां चेलौ कोनीं व्है ।** ४४८१

चोटी काटने से ही कोई चेला नही बन जाता ।

—शिष्य में गुण हों तभी वह शिष्य कहलाएगा, फकत सिर मुँडवाना ही पर्याप्त नहीं है ।

—मात्र औपचारिकता निभाने से रिश्तों की घनिष्ठता स्थिर नहीं रहती, परस्पर त्याग की भावना अनिवार्य है ।

**चोटे वींचू थाइने, उतरे हांप थाइने जणां हूं करें ।**– भी. २५३ ४४८२

चिपके बिच्छू बनकर, उतरे साँप बनकर, उसका क्या किया जाय ?

—मामूली दुख की बात भी जब भयंकर कष्टप्रद हो जाय, तब...।

—शुरुआत तो मामूली परेशानी से हो और अंत में वह भारी परेशानी का कारण बन जाय, तब...!

**चोड़ो जी चचूंदरी मारी ने पूमाइग्या ।**– भी. २५५ ४४८३

चोड़ो जी छछूंदरी मारकर ही बौरा गये ।

—जो व्यक्ति छोटे-से कार्य की सफलता का सर्वत्र ढोल पीटता रहे ।

—कोई छोटे काम का बड़ा भारी यश लेने का इच्छुक हो, तब...!

**चोदू रौ बेली रांम ई कोनीं ।** ४४८४

चोदू का मित्र राम भी नहीं है ।

—जो स्वयं निर्बल है उसका पक्षधर राम भी नहीं होता । यह मात्र कहने भर की बात है कि 'निर्बल के बल राम ।'

—जो खुद अपनी सहायता करने में अक्षम है, भला उसका मददगार और कौन होना चाहेगा ?

पाठा : **चोदू रा सीरी माताजी ई कोनीं ।** चोदू की भागीदार माताजी भी नहीं हैं ।

माताजी = अंबा, दुर्गा, करणी-माता ।

**चोदू रौ हेमायती हारै ।** ४४८५

चोदू का हिमायती हारता है ।

—कमजोर का मददगार भी आखिर पस्त हो जाता है ।

—ताक़त तो अपनी ही काम आती है, दूसरों की नहीं ।

**पाठा : चोदू रौ साथ सेवट रुळावै।** चोदू का साथ आखिर बर्बाद करता है।

**हीणै रौ हेमायती हारै।** हीन व्यक्ति का पक्षधर हारता है।

**चोपड़िये घड़ै छांट को लागै नीं।** ४४८६

चुपड़े घड़े पर बूँद नहीं ठहरती।

दे.क.सं.४४१२

**चोपड़ी अर बे बे।** ४४८७

चुपड़ी और दो दो।

—जो व्यक्ति एक ही बार में दुहरा फायदा उठाना चाहे।

—जहाँ भी दुहरा लाभ मिलने की संभावना हो।

—जो मनुष्य अपनी स्वार्थ-सिद्धि के अलावा किसी दूसरे के बारे में सोचे ही नहीं।

**चोपदारां सूं कुण परोसौ लै।** ४४८८

चोबदारों से कौन परोसा ले।

—चोबदार तो स्वयं दूसरों से परोसा लेता है,तब वह क्योंकर दूसरों को कुछ दे सकता है।

—कोई भी अधिकारी आम आदमी से रिश्वत लेता है,तब भला उससे कौन रिश्वत ले सकता है।

—जिसका जो अधिकार है,उससे वंचित करना कठिन है।

**चोपूं आये हक दिये, वणां दक नी देवो, अणबोलनी जात है।**–भी.२५६ ४४८९

जो पशु हमें सुख दें उन्हें दुख नहीं देना चाहिए, न बोलने वाली जाति है।

—भैंस,गाय,घोड़ा,बैल,गधा,भेड़,बकरी इत्यादि मूक पशु कष्ट देने पर भी प्रकट नहीं कर सकते। फिर ये तो सभी आराम देने वाले हैं,मनुष्य की प्रगति में सहायक रहे हैं।

—मनुष्य का कर्तव्य है कि सुख देने वालों को वापस सुख ही दे,दुख नहीं पहुँचाए।

**चोपो चार खाये जो दाद्यो नी रे ते मनख धान खाये ते वो कदा हाद्यो रे।**– भी. २५७ ४४९०

घास खाने वाला पशु भी जब नियंत्रण में नही रहता, तब धान खाने वाला मनुष्य क्योंकर नियंत्रण में रह सकता है।

—घास खाने वाले पशुओं की स्वच्छंदता तो लाखों बरस पहिले थी, अब भी वैसी ही है, पंर धान खाने वाले मनुष्य की स्वच्छंदता और घिनौनी हरकतों से आज शैतान भी शर्मिंदा है। उसके पतन का कोई अंत नहीं है।

**चोर अर गांठ कसनै बांधणी।** ४४९१

चोर और गाँठ को कसकर बाँधना चाहिए।

—चोर को यदि ढीला बाँधा जाय तो वह भाग जाएगा और यदि गाँठ ढीली बॉधी जाय तो वह खुल जाएगी।

—कसकर बाँधने से ही चोर व गाँठ को नियंत्रण में रखा जा सकता है।

**चोर अर गिंडक मिळग्या, पोहरौ कुण देवै?** ४४९२

चोर और कुत्ता मिल गये, फिर पहरा कौन दे?

—घर की चौकसी रखने वाला कुत्ता और घर में चोरी करने वाला चोर, दोनों ही आपस में मिल जाएँ तो उस घर की सुरक्षा का तो प्रश्न ही नहीं।

—जब जान-माल की रक्षा करने वाली पुलिस, समाज-कंटक व चोरों से मिल जाय तो जनता कहाँ फरियाद करे?

—जब नेता और अधिकारी आपस में साँठ-गाँठ कर लें तो राज्य के खजाने की रक्षा कैसे हो?

पाठा: **चोरां गिंडक मेळ, कुण करै रखवाळी।**

चोर व कुत्ते का मेल, कौन करे रखवाली।

**चोर नै कुत्ती अेक।** चोर और कुतिया एक।

**चोर अर चांद रै बैर।** ४४९३

चोर और चाँद के बैर।

—छिपकर करने वाले अपकर्म के लिए अँधेरा सहायक होता है और उजारा बैरी। इसलिए चोर का जन्मजात बैरी चाँद है, जिसके सौंदर्य की उपमा देते कवि आज भी थकते नहीं।

—प्रत्येक संबंध सापेक्ष होता है, निरपेक्ष नहीं।

**पाठा : चोर अर चांदणी रै बैर।** चोर और चाँदनी के बैर है।

**चोर अर ढोर रौ कांई पतियारौ ?** ४४९४

चोर और ढोर का क्या भरोसा ?

—चोर घर में कब आ जाय और ढोर घर से कब कहाँ चला जाय, कुछ पता नहीं।

—ढोर कब हानि पहुँचा दे और चोर कब घर में सेंध लगा ले पता नहीं चलता—इसलिए दोनों से ही सावधान रहना चाहिए।

**चोर अर सांप दब्यां घात करै !** ४४९५

चोर और साँप दबने पर घात करते हैं !

—जब बचाव की कोई राह नजर न आये तब चोर पूरी ताकत के साथ सामना करता है और साँप भी।

—मरता क्या न करता।

**चोर आछौ, मूरख माड़ौ।** ४४९६

चोर अच्छा, मूर्ख बुरा।

—चोरी के लिए साहस और बुद्धि जरूरी है, पर मूर्ख के लिए दोनों ही अनावश्यक हैं। चोर में चोरी के अलावा कुछ गुण भी होते हैं, पर मूर्ख में सिवाय मूर्खता के अन्य कुछ नहीं होता।

—चोर की तुलना में मूर्ख का जीवन हेय है।

**चोर आळी चिड़ी।** ४४९७

चोर वाली चिड़िया।

**संदर्भ कथा** : किसी एक राजा के महल में एक बार चोरी हुई। कई दिन तक चोर का पता नहीं लगा। आखिर रानी को एक उपाय सूझा। राज्य के सब चोरों को दरबार में इकट्ठा किया। राज्य के सभी कारिंदों को समझा दिया कि वे पूरी सतर्कता बरतें। काफी पूछताछ की

गई। खूब धमकाया पर किसी ने हामी नहीं भरी। तब अचानक रानी जोर से बोली—लग गया, पता लग गया, चोर के सिर पर चिड़िया बैठी है। पकड़ लो उसे। इतना सुनते ही एक चोर ने झट चुपके से चिड़िया को उड़ाने की मंशा से हाथ ऊपर किया। कर्मचारी पहले से ही सतर्क थे। एक साथ कई निगाहें उसी चोर पर पड़ीं। सूली की धमकी सुनते ही उसने सच्च बात उगल दी।

—चोर का अपना मन तो हरदम जागता रहता है कि उसने चोरी की। मामूली भनक से ही वह सतर्क हो जाता है, फलस्वरूप स्वत: जाल में फँस जाता है।

**चोर उचक्का चौधरी, पातर भई परधांन।** ४४९८

चोर उचक्के चौधरी और वेश्या बनी प्रधान।

—जिस समाज में चोर उचक्के नेता हों और वेश्या प्रधान हो, उसे तो ईश्वर भी चाहे तो नहीं बचा सकता।

—जहाँ स्वयं अपराधी न्यायाधीश हों, वहाँ न्याय की बात करना भी गुनाह है।

**चोर काकड़ी सूं अर चीतौ छाळी सूं।** ४४९९

चोर ककड़ी से और चीता बकरी से।

—शुरुआत में ककड़ी या खरबूजे की छोटी-छोटी चोरियाँ करके ही नामजद चोर बनता है और बाघ भेड़-बकरी मारकर शिकार करना सीखता है। फिर न तो चोर के लिए कोई बंधन है और बाघ के लिए कोई अहिंसा।

—हर बुरे काम की शुरुआत छोटे रूप में ही होती है।

**चोर किणरी चाकरी करै?** ४५००

चोर क्यो किसी की चाकरी करे?

—चोरी की बजाय चाकरी में काफी मेहनत करनी पड़ती है, जिम्मेवारी निभानी पड़ती है, मालिक की गुड़कियाँ सुननी पड़ती हैं और इस सबके बावजूद बँधी-बँधाई रकम मिलती है। पर इसके विपरीत चोरी की आमदनी का क्या अंदाज? साल भर की चाकरी जितना धन तो एक ही रात में कमाया जा सकता है।

—चोरी की अपेक्षा चाकरी में हरदम बंधन और गुलामी है और चोरी स्वतंत्र पेशा है, इसलिए चोर को चाकरी रास नहीं आती।

**चोर खेमकूसळ होय तौ साचा भूखां मरै।** ४५०१

चोर यदि सकुशल रहें तो सच्चे भूखों मरें।

—चोर चाहे जितनी चोरियाँ करें, बड़ा माल मारें, वे कभी सुख-शांति से नहीं जी सकते। और यदि ऐसा हो जाय तो फिर साहूकार, नेक व सच्चे व्यक्ति तबाह हो जाएँ।

—चोर हमेशा बेचैन अशांत व दुखी रहते हैं।

**चोर गांठड़ी तूठौ, बेगार सूं लारौ छूटौ।** ४५०२

चोर गठरी ले भागा, बेगार से पीछा छूटा।

तूठौ = मेहरबान हुआ। चोर ने गठरी ले जाने की मेहर की। व्यंग्य में।

—मन को समझाने के लिए यह खयाल बुरा नहीं कि चोर माल ले गया तो हिफाजत की जिम्मेवारी से मुक्त हुए या चोर बर्तन-बासन ले भागा तो माँजने से छुट्टी मिली।

—चोर माया ले उड़ा तो रखवाली की चिंता से छुटकारा मिला।

—जिस क्षति से दुख की बजाय संतोष हो।

**चोर चीतै अंधार पख।** ४५०३

चोर कृष्ण-पक्ष की चाह रखते है।

—किसी भी बुरे काम या चोरी का अँधियारे से बड़ा मेल है और उजियारा बाधक है। इसलिए चोर, दुष्ट और दुराचारी को अँधेरे की चाह रहती है।

—चोर को उजाले से चिढ़ होती है।

**पाठा : चोर नैं वाल्हौ अंधारौ।** चोर को प्रिय अँधियारा।

मि. क. सं. ४४९३

**चोर चूकै पण चुगलखोर नीं चूकै।** ४५०४

चोर चूक सकता है, पर चुगलखोर नही चूकता।

—चोर अपने कार्य में गफलत कर सकता है, पर चुगलखोर से कभी गफलत नहीं होती।

—चोर की अपेक्षा चुगलखोर अधिक घातक व निंदनीय है।

**चोर चोर कठै ई जावौ चांद माथै रौ माथै।** ४५०५

चोर-चोर कही जाओ, चाँद तो ऊपर-का-ऊपर।

—चोर कहीं भी जाएँ, चाँद की नजर तो उन पर हरदम लगी रहती है।

—ईश्वर की निगाह से कोई भी अपराधी बच नहीं सकता।

—हर अपराधी पर आत्मा की आँख लगी रहती है।

पाठा : **चोर जठै जावै, चांद निगै आवै।** चोर जहाँ जाये, चाँद नजर आये।

**चोर रा मन में चांद बसै।** चोर के मन चाँद बसता है।

**चोर नै चांद कद सुहावै!** चोर को चाँद नहीं सुहाता।

**चोर चोर नै पूगै।** ४५०६

चोर को चोर ही पहुँच सकता है।

—चोर की होड़ चोर ही कर सकता है।

—चोर ही चोर को पहिचान सकता है।

**चोर चोर नै भारी कोनीं, साहूकार नै है।** ४५०७

चोर चोर को भारी नहीं, साहूकार को है।

—चोर का खतरा तो साहूकार को ही है, भला चोर से चोर को क्या जोखिम हो सकती है!

—चोर को चोरी की आशंका नहीं रहती।

**चोर चोर मासियाई भाई।** ४५०८

चोर चोर मौसेरे भाई।

—यदि चोर आपस में भाईचारे का रिश्ता न रखें तो एक दूसरे को तत्काल पकड़वा दें। इसलिए परस्पर मैत्री रखना अनिवार्य है।

—एक-से अपराधियों के बीच अकसर मेल रहता है।

**चोर चोरां साहूकार।** ४५०९

चोर चोर परस्पर साहूकार।

—चोर भी संपूर्ण रूप से चोर नहीं होते। वे परस्पर एक दूसरे के बीच पूरी साहूकारी निभाते हैं।

—चोर आपस में धोखाधड़ी नहीं करते।

**चोर चोरी करै पण घरै आय साच बोलै।** ४५१०

चोर चोरी तो करता है, पर घर आकर सच बोलता है।

—चोर के लिए एक जगह है सच बोलने के लिए और वह है उसका अपना घर। यदि वह चोरी के माल व स्थान का सही पता न बताये तो खतरा घटने की बजाय बढ़ सकता है।

—कोई भी अपराधी संपूर्ण रूप से अपराधी नहीं होता, कहीं-न-कहीं सत्य का अंश उसके भीतर छिपा रहता है।

**चोर चोरी सूं गियौ तौ कांईं हेराफेरी सूं ई गियौ?** ४५११

चोर चोरी से गया तो क्या हेराफेरी से भी गया?

**संदर्भ-कथा** : एक चोर को चोरी करने में तो मजा आता था, पर पकड़े जाने पर कसकर जो पिटाई होती थी, उससे वह बहुत घबराता था। यातना और पिटाई के डर से उसकी रूह काँपती थी। आखिर घबराहट के मारे उसने चोरी करना छोड़ दिया और भगवा बाना धारण करके साधु बन गया। कुछ समय तक तो उसे भिक्षा माँगने में हिचक महसूस होती, पर बाद में अभ्यस्त हो गया! किंतु रात का अँधियारा घिरते ही एक बात हमेशा उसके मन को कचोटती कि साधु का ऊपरी बाना धारण करने के बावजूद भीतर से उसका स्वभाव नहीं बदला। हाथ से चोरी करना तो छूट गया, पर मन से चोरी नहीं छूटी। रात में कई बार उसकी नींद उचट जाती और वह अपनी मंडली के साधुओं की चीजें उठाकर इधर-उधर धर देता, जिससे उन्हें खोजने में थोड़ी परेशानी होती। उन्हें जानकर अचरज होता कि चीज तो एक भी गायब नहीं, पर ठौर अवश्य बदली हुई मिलती। एक दिन एक साधु ने नींद का बहाना करके अपनी आँखों से सब-कुछ देख लिया। रंगे हाथों पकड़ा गया तो चोर-साधु ने सच्ची बात बताकर अंत में कहा—बरसों की आदत मिटते-मिटते मिटेगी, तब तक हेराफेरी से ही जी बहला लूँ। पिटने से तंग आकर चोरी तो छोड़ दी पर हेराफेरी नहीं छूटती। आदत से लाचार हूँ। और वह जीवन भर हेराफेरी की आदत से लाचार रहा। मरने पर ही उसकी आदत छूटी।

—कोई कुछ भी बन जाय, जन्मजात स्वभाव नहीं छूटता।

—आदत जब प्रकृति बन जाती है, तब वह आसानी से नहीं छूटती।

**चोर चोवटिया नो घेर चोड़े देखाय।**—भी. २५९ ४५१२

चोर व सरे आम डींग हाँकने वाले का घर साफ दिख रहा है।

—चोर और डींग मारने वाले कभी सुखी नहीं रह सकते। घर की जर्जरित हालत इस बात का सबूत है कि वे कितने आराम में हैं।

—दूसरों का माल हड़पने वाला और कोरी बकवास करने वाला अपनी आवश्यकताएँ भी पूरी नहीं कर सकता।

**चोर छिनाळ री अंवळी रीत।** ४५१३

चोर छिनाल की औंधी रीति।

—सामाजिक व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने के लिए नियम-कायदों व सामाजिक मान्यताओं की स्थापना अनिवार्य है, पर चोर और छिनाल परंपरागत मर्यादा का पालन नहीं करते। वे सामाजिक मान्यताओं के विरुद्ध चलकर ही अपना जीवन-निर्वाह करते हैं।

—जो व्यक्ति सामाजिक नियमों के विरुद्ध चलते हैं, उन पर कटाक्ष।

**चोर जार दोनूं पकड़ीजै, पण झूठा नै कुण झांपै?** ४५१४

चोर व जार दोनो पकड़े जाते है, पर झूठे को कौन पकड़े?

—चोर व लंपट को मशरीर कहीं भी पकड़ना संभव है, पर झूठे की जबान पकड़ने का कोई उपाय नहीं, उसे कोई भी रोक नहीं सकता।

—चोरी की सीमा है, दुराचार की सीमा है, पर झूठ की कोई सीमा नहीं।

—झूठ न किसी का अंकुश मानता है और न व्यवधान।

**चोर डर मावै नहीं।**—व. ३५९ ४५१५

चोर के दिल में डर समाता नही।

—और कोई जाने-न-जाने, पर चोर तो अच्छी तरह जानता है कि उसने चोरी की, इसलिए वह नींद में भी निर्भय नहीं रह सकता। उसे प्रतिक्षण पकड़े जाने का भय रहता है।

—चोर का अपराध-बोध उसे हरदम कचोटता है।

**चोर ढोर दोनूं हाजर।** ४५१६

चोर ढोर दोनों हाजिर।

—चोर के साथ जब चोरी का पूरा माल बरामद हो जाय तब...!

—जब कोई व्यक्ति अपनी जिम्मेवारी का शतप्रतिशत पालन कर दिखाये तब ...!

**चोर ढोरना हूं भरोसा करवा।**– भी. २६० ४५१७

चोर व ढोर का क्या भरोसा।

—चोर चोरी करके कहाँ छिप जाय और पशु चरते-चरते कहाँ गुम हो जाय, पता नहीं चलता।

—चोर कब चोरी कर जाय और पशु कब नुकसान कर जाय, इसका पहिले आभास नहीं होता—इसलिए चोर और ढोर दोनों अविश्वसनीय हैं।

मि.क.सं. ४४९४

**चोर तौ अैड़ा चात्रंग के आंख्यां रौ काजळ तकात चोर ले।** ४५१८

चोर तो ऐसे प्रवीण होते हैं कि आँखों का काजल तक चुरा लें।

—चोर के अदम्य साहस व अतुलनीय चातुर्य की सराहना।

पाठा : **चोर तौ अैड़ा पाटक के आंख्यां सूं सपना तकात चोर ले।**

चोर तो ऐसे प्रवीण होते हैं कि आँखों से सपने तक चुरा लें।

**चोर तौ पकड़ीज्यां मांनीजै।** ४५१९

चोर तो पकड़े जाने पर ही माना जाता है।

—जब तक पकड़ा न जाये चोर व साहूकार में कोई अंतर नहीं। पकड़ने के पश्चात् ही वह चोर कहलाता है।

—अपराधी वही जो अपराध करते पकड़ा जाय।

**चोर तौ सूतां मिनखां रा गाभा उतारलै।** ४५२०

चोर तो सोते हुए मनुष्यों के कपड़े उतार लेता है।

—चोर की लाजवाब चतुराई, बुद्धि-कौशल व निर्भयता का बखान।

मि.क.सं. ४५१८

**चोर धरम री बात कद सुणै?** ४५२१

चोर धर्म की बात कब सुनता है?

—चोरी का काम अधर्म का है, तभी चोरी करना संभव है। धर्म की बात मानने वाला चोरी क्यों करना चाहेगा? धर्म और चोरी में अंतर्विरोध है।

—चोरी के काम में बाधा पहुँचाने वाले धर्म से चोर का क्या सरोकार ?

**चोर ना तो हो दाड़ा, धणी नो अेक दाड़ो ।**– भी.२६१ ४५२२

चोर के तो सौ दिन, मालिक का एक दिन ।

—न पकड़े जाने की मयाद चाहे जितनी लंबी हो, अंततः एक दिन चोर अवश्य पकड़ा जाता है । वही पकड़े जाने वाला दिन, मालिक का होता है । और जब पकड़ा जाता है तो पिछली सारी चोरियाँ खुल जाती हैं ।

**चोर ना हतरे चेकळां ।**– भी.२६२ ४५२३

चोर के सतरह रास्ते ।

—बच निकलने के लिए चोर सतरह मार्ग जानता है ।

—चोर के लिए तो हर अपरिचित रास्ता भी परिचित है, जिधर मन करे उधर ही भाग सकता है, पर मालिक के लिए तो वही रास्ता लाभप्रद है, जिधर से चोर भागा, पर उसका पता लगना आसान नहीं ।

**चोर नै अपड़णौ गांठ सूं, छिनाळ नै झांपणी खाट सूं ।** ४५२४

चोर को पकड़ना गाँठ से, छिनाल को पकड़ना खाट से ।

—हाथोंहाथ पकड़े जाने पर ही अपराध प्रमाणित होता है । इसलिए चोर को गठरी सहित और छिनाल को बिस्तर पर ही पकड़ना चाहिए ।

—प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं रहती ।

**चोर नै कहै धस, कुत्ता नै कहै भुस अर साह नै कहै जाग ।** ४५२५

चोर को कहे धस, कुत्ते को कहे भौंक और शाह को कहे जाग ।

—जो महाधूर्त किसी का भी विश्वसनीय न हो ।

—जो कुटिल व्यक्ति शुभचिंतक बनकर धोखा करे ।

—जो दुष्ट व्यक्ति किसी को भी उकसाकर उसे आफत में फँसाये और चलता बने ।

पाठा : **चोर नै कहै चोरी करजै, धणी नै कहै जागतौ रहजै ।**

चोर को कहे चोरी करना, स्वामी को कहे जागते रहना ।

**चोर नै कहै लाग, धणी नै कहै जाग ।**

चोर को कहे लग ,स्वामी को कहे जग ।

**चोर नै कहै चोरी कर, सिपाई नै कहै मांय धर ।**

चोर को कहे चोरी कर ,सिपाही को कहे भीतर धर ।

**चोर नै चोर ई सूझै ।** ४५२६

चोर को चोर ही दिखता है ।

—बुरा व्यक्ति सबको बुरा ही समझता है ।

—अपनी आत्मा का प्रतिबिंब ही सब में दिखाई पड़ता है ।

—जाकी रही भावना जैसी,प्रभु देखी मूरत तिन तैसी ।

**चोर नै चोर झांपै ।** ४५२७

चोर को चोर ही पकड़ सकता है ।

—अपराधी ही अपराधी के लक्षण पहिचानकर उसे पकड़ सकता है ।

—जब पुलिस वाले चोर को पकड़ते हैं तो कटाक्ष रूप में यह कहावत प्रयुक्त होती है कि पकड़ा जाने वाला भी चोर और पकड़ने वाले भी चोर ।

**चोर नै चोर री बास आवै ।** ४५२८

चोर को चोर की गंध आती है ।

—जिस तरह गंध से हर चीज की पहिचान होती है,उसी तरह चोर को चोर तत्काल पहिचान लेता है,जैसे उसको गंध मिली हो ।

—अपने लक्षणों के आधार पर ही चोर को चोर का पता चल जाता है ।

पाठा : **चोर नै चोर री बो आवै** । बो = गंध,बास ।

**चोर नै चोरी करतां नीं, कूटतां देखणौ ।** ४५२९

चोर को चोरी करते नहीं, पिटते देखना चाहिए ।

—चोर को चोरी करते देखने पर कहीं वैसी प्रेरणा न मिल जाये कि मामूली साहस से कितनी कमाई हो सकती है ! पर पिटाई की दुर्दशा देखने से चोरी के प्रति हमेशा के लिए विकट घृणा उत्पन्न होना लाजिमी है । इसलिए इस कहावत में यह नसीहत अंतर्निहित है ।

—बुरे काम को देखने की बजाय उसके दुष्परिणाम को ध्यान से देखना चाहिए ।

**चोर नै जूती रा जंजाळ आवै।** ४५३०

चोर को जूते के जंजाल आते हैं।

—जूतों-ही-जूतों की पिटाई के कारण चोर को हरदम जूतों का ही ध्यान रहता है और नींद में सपने भी जूतों के आते हैं।

—अपराधी की आत्मा उसे अंदर-ही-अंदर कचोटती है कि न जाने कब दंड मिल जाए।

**चोर नै नाट रौ बळ।**–व.३५८ ४५३१

चोर को भागने का संबल।

—सामान्य व्यक्ति की तुलना में चोर के भागने की रफ्तार बहुत तेज होती है। तिस पर पकड़े जाने के बाद पिटाई के डर से उसकी ताकत चौगुनी बढ़ जाती है, मानो उसके पाँवों में पाँखें लगी हों।

—चोर का जीवन वक्त पर दौड़ने के लिए ही बना है।

**चोर नै नीं, चोर री मां नै इज मारणी।** ४५३२

चोर को नहीं, चोर की माँ को ही मारना चाहिए।

—बुरे आदमी की बजाय उसकी बुराई के मूल कारण को ही नष्ट करना चाहिए।

—आदमी जन्म से बुरा नहीं होता, सामाजिक वातावरण के बीच ही बुरा बनता है। इसलिए उस कारण को ही मिटाना चाहिए।

**पाठा : चोर री मां नै इज मारणी।**

**चोर पतिसाही माल खावै।**–व.८७ ४५३३

चोर बादशाही माल खाता है।

—जिस प्रकार बादशाह या राजा बिना परिश्रम के ऐश करते हैं, उसी प्रकार चोर की कमाई भी समुचित मेहनत पर निर्भर नहीं करती। मजूर के जीवन भर की कमाई वह एक रात में कर सकता है। फिर माल-मलीदा क्यों न उड़ाये।

—चोर बादशाह के माल को भी उड़ा सकता है।

**चोर पेई लेग्यौ तौ कांईं, कूंची म्हारी कड़ियां रै बाधी।** ४५३४

चोंर पेटी ले गया तो क्या, चाबी मेरी कमर से बँधी है।

—पेटी या मजूस को मालिक की तरह चोर चाबी से नहीं खोलता, वह तो घर ले जाकर उसे तोड़ता है, पर भोली मालकिन अपनी कमर से बँधी चाबी देखकर खुशी मना रही है कि चोर पेटी खोल ही नहीं सकता।

—जो व्यक्ति नादान बच्चे से भी बढ़कर भोली बात करे।

**चोर मिळज्यौ पण छिछोर मत मिळज्यौ।** ४५३५

चोर भले ही मिल जाय पर छिछोर न मिले।

छिछोर = मामूली उठाईगीर जो राह चलता किसी के घर में घुसकर छछोवा कर डालता है।

—राजस्थानी में एक कहावत है कि घाव तो दुश्मन का भी सराहना चाहिए कि किसी बहादुर से सामना हुआ। छिपकर पीठ में छुरा भोंकने वाले पर तो वापस प्रहार करने में शर्म आती है कि कायर पर हाथ उठाया। इसलिए नुकसान भी हो तो नामजद चोर के हाथों।

—छिछोर के हाथ से एक उपला भी जाना अच्छा नहीं लगता, जबकि चोर के हाथ से बड़ी हानि भी बर्दाशत की जा सकती है।

**पाठा : चोरां रौ मिळणौ आछौ, छिछोरां रौ मिळणौ माड़ौ।**

चोरों का मिलना अच्छा पर छिछोरां का मिलना बुरा।

**चोरां रौ सांढ़ौ कर लेणौ, पण छिछोरों रौ नी।**

चोरों का साथ कर लेना, पर छिछोरों का नहीं।

**चोर मिळ्यौ चोखौ, छोड्यौ नीं होकौ।** ४५३६

चोर मिला चोखा, छोड़ा नही हुक्का।

—कैसा अजीब चोर मिला कि अन्य चीजों के साथ हुक्का तक ले गया।

—काम भले ही बुरा हो पर उस में प्रवीणता उच्च कोटि की होनी चाहिए।

**चोर में बत्तीस कळा होवै।** ४५३७

चोर बत्तीस कला में माहिर होता है।

—चोरी की एक कला जानने से चोर का काम नहीं चलता, वह बत्तीस कलाओं में निपुण होता है।

—नेक आदमी की अपेक्षा बुरे आदमी में ज्यादा योग्यता होती है तभी वह अपने काम में सफल होता है अन्यथा पहली बाजी में ही पस्त हो जाय।

**चोर रा चार अर छिनाळ रा छव ।** ४५३८

चोर के चार और छिनाल के छह ।

—चोर के चार दिन और छिनाल के छह दिन । चोरी चार दिन छिपी रह सकती है और छिनाल का चरित्र छह दिन ।

—आखिर पाप फूटकर रहता है । बुराई सात पाताल में भी छिपकर नहीं रहती ।

**चोर राजा नै ई नीं बगसै ।** ४५३९

चोर राजा को भी नहीं छोड़ता ।

—राजा सारे राज्य का भाग्य विधाता है, पर चोर उसके भाग्य का भी अंश चुरा लेता है ।

—राजा समस्त प्रजा को दंड देने का अधिकारी है, पर चोर अपने हुनर से उसे भी दंडित करता है ।

**चोर रा पग काचा व्है ।** ४५४०

चोर के पाँव कच्चे होते हैं ।

दे.क.सं.२५२२

**चोर रा पग चोर ई ओळखै ।** ४५४१

चोर के पाँव चोर ही पहिचानता है ।

—चोर ही चोर की चाल समझता है ।

—नेक आदमी सबको अपने समान नेक ही मानकर चलता है, इसलिए बुरे व्यक्ति की पहिचान बुरा व्यक्ति ही कर सकता है ।

**चोर रा मन में गादड़ौ बसै ।** ४५४२

चोर के मन में गीदड़ बसता है ।

—गीदड़ चालाक होते हुए भी कुत्तों के डर से हरदम घबराता हुआ रहता है । ठीक गीदड़ या सियार के उनमान ही चोर के मन की हालत रहती है कि वह पकड़ा न जाए ।

—चोर और सियार के मन में हर वक्त घबराहट रहती है ।

**चोर रा मन में चांनणौ व्है ।** ४५४३

चोर के मन में उजाला रहता है ।

—और कोई जाने-न-जाने, चोर तो जानता ही है कि उसने चोरी की है। भीतर के इस अपराध-बोध को वह अपने से छिपा नहीं सकता। उसे हरदम अपना अपराध खुलने का भय बना रहता है।

—चोर के अपने मन से चोरी छिपी नहीं रहती। यह असलियत उसके मन में जुगनू की तरह कौंधती रहती है।

**चोर रा मन में सांयत कठै ?** ४५४४

चोर के मन मे शांति कहाँ ?

—चोरी करने के बाद चोर हरदम आशंकित रहता है कि वह पकड़ा न जाए। इसलिए उसके मन में पल भर के लिए भी चैन नहीं रहता।

—अपराधी के लिए प्रतिक्षण भय या संताप भी कम कष्टप्रद नहीं होता।

**चोर रा सौ दाड़ा तौ धणी रौ अेक दाड़ौ।** ४५४५

चोर के सौ दिन तो स्वामी का एक दिन।

—चोर सौ वार भी वच जाय तो उसका भाग्य, पर आखिर एक दिन तो वह पकड़ा जाता ही है, तब पिछली सौ चोरियाँ भी खुल जाती हैं और वही दिन स्वामी का समझा जाना चाहिए।

—चोर को सौ दिन चोरी का मौका मिलता है तो मालिक के न्याय की खातिर एक दिन तो उसे मिलना चाहिए।

दे.क.सं.४५२२

**चोर री किसी चांमड़ी बासै।** ४५४६

चोर की चमड़ी थोड़े ही गंधाती है।

—चोर भी एक सामान्य मनुष्य की तरह मनुष्य होता है। उसके शरीर से किसी प्रकार की गंध नहीं आती। फिर कैसे पता चले कि कौन साहूकार है और कौन चोर ?

—चोर की कोई असामान्य बनावट नहीं होती।

—बुरे आदमी की पहिचान तो संपर्क से ही होती है।

**चोर री गत चोर पिछांणै।** ४५४७

चोर की गति चोर ही पहिचानता है।

—चोर के दाँव-पेच चोर ही जानता है ।

—चोरी की प्रत्येक गति-विधि चोर ही समझता है ।

—बुरे आदमी की पहिचान तो संपर्क से ही होती है ।

दे.क.सं.४५२७,४५२८

**चोर री गवाड़ी छिछोर ।** ४५४८

चोर के घर छिछोर ।

छिछोर = छुटपुट उठाईगीर । मामूली चोर ।

—चोर के घर भी छिछोर पहुँच जाता है ।

—चोर के घर भी चोरी हो जाती है ।

—किसी बड़े मक्कार को छोटा मक्कार नुकसान पहुँचाये तब...।

**चोर री चोरी चौथ सूं पचै ।** ४५४९

चोर की चोरी चौथ से पचती है ।

—अकेला चोर चोरी को हजम नहीं कर सकता, संबंधित बड़े व्यक्तियों को हिस्सा देना पड़ता है ।

—दुष्ट लोगों का गिरोह न हो तो बुराई पनप नहीं सकती ।

**चोर री जड़ चोर ई दाबै ।** ४५५०

चोर की जड़ चोर ही दबाता है ।

—चोरी के सभी भेद चोर जानता है, इसलिए चोर की नब्ज चोर से छिपी नहीं रहती ।

—चोर ही चोर को आसानी से पकड़वा सकता है ।

दे.क.सं.४५२७,४५२८,४५४७

**चोर री डाढ़ी में तिणकौ ।** ४५५१

चोर की दाढ़ी में तिनका ।

**संदर्भ-कथा** : जब काजी न्याय करते थे तब की बात है । किसी एक चोरी का कोई सुराग नहीं लगा तो काजी ने शहर के सभी चोरों को इकट्ठा किया । चोरों के बीच खड़े होकर उसने कहा—मैंने तो अब तक जानकर ही देर की, वरना मेरे लिए चोर का पता करना कोई मुश्किल

नहीं। चोर की दाढ़ी में तिनका छिपा है, अभी शिनाख्त करता हूँ। जो चोर था उसने अदेर तिनका हटाने के लिए दाढ़ी की ओर हाथ बढ़ाया और उधर काजी ने उसे पकड़ने के लिए इशारा किया।

—चोर अपनी चालाकी से ही आखिर पकड़ा जाता है।

—किसी मामूली हरकत से अजाने ही चोर का पता चल जाता है।

—चोर के मन में हरदम यही संशय बना रहता है कि वह चोर है।

मि.क.सं.४४९७

**चोर री तौ चांमड़ी ई पाड़ीजै।** ४५५२

चोर की तो चमड़ी ही उधेड़ी जाती है।

—चोर की कोई पीठ नहीं ठोकी जाती, कसकर पिटाई होती है।

—बुरे काम की तो सजा ही मिलती है, पुरस्कार नहीं।

**चोर री निजर पोटळी माथै।** ४५५३

चोर की नजर गठरी पर।

—चोर के चित्त की एकाग्रता हरदम चोरी में ही बसी रहती है।

—बुरे व्यक्ति की आँखों में बुराई झलकती है।

**चोर री पोट में धूळ ई धूळ।** ४५५४

चोर की गठरी में धूल ही धूल।

—चोरी के माल की बरकत नहीं होती।

—चोर सदा कंगाल ही रहता है।

**चोर री बाजरी टकै धड़ी।** ४५५५

चोर का बाजरा टके सेर।

धड़ी = पाँच सेर का तौल। हिंदी अनुवाद में 'धड़ी' की बजाय सेर करने से लय कायम रहती है। और अर्थ में कोई फर्क नहीं पड़ता।

—चोरी के माल का भाव नहीं होता, बहुत सस्ता हाथ लगता है।

—चोरी का माल खुले बाजार की बजाय गुपचुप ही बिकता है इसलिए ग्राहक जो भी दाम दे चोर आनाकानी नहीं कर सकता।

**चोरी री भैंस चिमकणा पाडा जिणै।** ४५५६

चोरी की भैंस बिदकने वाले पाड़े जनती है।

—हरदम पकड़े जाने की आशंका से चोर का कलेजा धुकधुक करता रहता है। परिणाम स्वरूप इस तरह डर वाले चोर की भैंस भी डरने वाले पाड़े को जन्म देती है। मर्म स्पष्ट है कि व्यक्ति की आंतरिक भावना आस-पास के परिवेश को प्रभावित करती है।

**चोर री मां कोई सिंघणी थोड़ी ई व्है!** ४५५७

चोर की माँ शेरनी थोड़े ही होती है!

—चोरी का काम सिंह जैसे साहस का व्यक्ति ही कर सकता है। पर चोर को जन्म देने वाली माँ शेरनी न होकर सामान्य औरत ही होती है।

—सामान्य परिवेश के बीच भी अद्‌भुत साहस का व्यक्ति जन्म ले सकता है।

**चोर री मां नै चंडाळ परणै।** ४५५८

चोर की माँ को चांडाल ब्याहे।

—जिस माँ की गोद में पलकर जो अबोध शिशु चोर हुआ,उसके पालन-पोषण या शिक्षा में भी कोई त्रुटि रही होगी। अतएव पुत्र के चरित्र-निर्माण की खातिर माँ की ही सर्वोच्च जिम्मेवारी है! इसलिए चोर से अधिक उसकी माँ कसूरवार है।

—बचपन से छोटी-छोटी चोरियों की शह माँ के द्‌वारा मिलने पर ही वह आगे बड़ी चोरियों में हाथ डालता है,इसलिए पहले सजा माँ को ही मिलनी चाहिए।

—दूसरा अर्थ यह भी है कि चोर के साथ रिश्ता या संबंध चांडाल के अलावा और कौन रख सकता है। जो जैसा है उसकी मंडली वैसी ही होती है। अर्थात् चोर से तादात्म्य चांडाल का ही हो सकता है।

**पाठा : चोर री मां भांड परणै।** चोर की माँ भाँड को ब्याहे।

**चोर री मां मटका में मूंडौ घालनै रोवै।** ४५५९

चोर की माँ घड़े में मुँह डालकर रोती है।

—कोई व्यक्ति दुनिया के लिए चोर हो सकता है, पर माँ के लिए तो वह निखालिस बेटे के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं। पकड़े जाने पर वह बेटे की खातिर किसी के सामने रो भी नहीं सकती क्योंकि बेटे के साथ-साथ वह एक चोर की भी माँ है। उसके अहित की आशंका से वह घड़े में मुँह डालकर चुपके-चुपके रोती है। बाहर के आँसुओं को भी वह भीतर निगलती है। उसे रोने का भी अधिकार नहीं।

—साधारणतया लोग-बाग बुरे व्यक्तियों से अपने संबंध अप्रकट ही रखना चाहते हैं।

—अपराधी का संबंधी होना भी तो शर्म की बात है।

पाठा : **चोर री मां रौ कोठी में मूंडौ।** चोर की माँ का कुठले में मुँह।

**चोर री मां छांनै-छांनै रोवै।** चोर की माँ चुपके-चुपके रोती है।

**चोर री मां चवड़ै नी रोवै।** चोर की माँ सरे-आम नहीं रो सकती।

**चोर री साख कुण भरै के चोर री मां।** ४५६०

चोर की साक्षी कौन दे कि चोर की मां।

—चोर जैसा कोई अन्य अपराधी ही चोर का जामिन हो सकता है।

—दुष्ट ही कुटिल व्यक्ति की हिमायती करता है।

पाठा : **चोर री जांमनी कुण भरै ?** चोर की साक्षी कौन दे ?

**चोरां री साख चोर इज भरै।** चोरों के जामिन चोर ही होते हैं।

**चोर री साख दिवलौ भरै।** ४५६१

चोर की साक्षी दीपक भरे।

—चोर अँधेरे में ही चोरी करता है। चोरी वाले घर में यदि दीया जलता हो तो चोर उसे बुझा देता है। तब दीपक इतनी साक्षी तो दे ही सकता है कि उसे किसने बुझाया ? क्यों बुझाया ?

—जो देखेगा वही तो साक्षी देगा।

**चोर रै घरै चोरी करणी चोरी नीं बाजै।** ४५६२

चोर के घर चोरी करना चोरी नहीं कहलाता।

—चोर की अपनी संपत्ति तो कुछ होती ही नहीं, उसके घर तो चोरी का माल ही होता है, तब उसे कोई चुराले तो वह चोरी नहीं कहलाती।

**चोर रै चार आंख्यां अर धणी रै दोय।** ४५६३

चोर के चार आँखें और मालिक के दो।

—घर के मालिक को अपने माल-असबाब का पूरा पता नहीं होता। पर चोर निपट अपरिचित होते हुए भी दूसरों के माल का पूरा पता रखता है, इसलिए उसकी दृष्टि तेज समझी जाती है।

—चार आँखें होने पर ही तो चोर छिपे धन को देख लेता है।

**चोर रै चार आंख्यां नीं व्है।** ४५६४

चोर के चार आँखें नही होती।

—आँखें तो दूसरों की तरह चोर के भी दो होती हैं, पर उसमें अतिरिक्त साहस व बुद्धिचातुर्य चौगुना होता है, तभी चोरी जैसे जटिल काम को वह आसानी से पूरा कर लेता है।

—शारीरिक क्षमता की बजाय आंतरिक सामर्थ्य ज्यादा महत्त्व रखता है।

**चोर रै छाती व्है पण पग नीं।** ४५६५

चोर के सीना होता है पर पाँव नही।

—चोर के सीने में साहस की कमी नही, पर उसके पाँव बहुत कच्चे होते हैं, डरकर भागने के अलावा और कुछ नहीं जानते।

—चोरी जैसे जीवट के काम में चोर को तनिक भी भय महसूम नहीं होता पर मामूली भनक सुनते ही वह भाग छूटता है।

**चोर रै तरवार लागज्यौ, पण कांटौ मत भागज्यौ।** ४५६६

चोर के तलवार लग जाये, पर काँटा न चुभे।

—चोर के लिए अन्य शारीरिक अंगों की अपेक्षा पाँव सबसे अधिक उपयोगी हैं। वक्त रहते दौड़कर यदि पाँव उसकी रक्षा न करें तो सारी देह को सजा मिलती है। इसलिए तलवार के घाव को तो वह वर्दाश्त कर सकता है, पर पाँव में गड़े काँटे की चुभन उसे नहीं पोसाती।

—कभी-कभार छोटी बुराई बड़ी बुराई की तुलना में अधिक घातक होती है।

**चोर रै पंगा कितौक गाढ़?** ४५६७

चोर के पाँवो मे कितनी दृढ़ता?

—चोर की देह में पॉव सब से कमजोर होते हैं। जिस तरह कबूतर मामूली आहट सुनकर उड़ जाता है, उसी प्रकार चोर के कान में भनक पड़ी नहीं वह नौ दो ग्यारह हो जाता है।

—रुककर सामना करने की बजाय चोर के पाँवों में दौड़ने की शक्ति काफी होती है।

मि.क.सं. २५१७,२५२६,४५६५

**चोर रै पाखती पछेवड़ौ ई कोनीं।** ४५६८

चोर के पास चादर भी नहीं।

— एक चोर पूरा अनुभवी नहीं था। वह चोरी करने घर में घुस तो गया पर माल बाँधने के लिए चादर नहीं थी। मन-वांछित चोरी नहीं कर सका।

—काम के अनुरूप पर्याप्त साधन भी अनिवार्य है, चाहे वह काम चोरी का हो चाहे अन्य अपराध का।

—दूसरों का माल उड़ाने वाले के पास अंततः कुछ भी नहीं बचता।

पाठा : **चोर रै पाखती बुगची ई कोनी।** चोर के पास झोली भी नहीं।

**चोर रै बंस रौ खोज नीं जावै।** ४५६९

चोर निर्वश नही होता।

—समाज में आर्थिक विषमता रहेगी तो साहूकार भी रहेंगे और चोर भी रहेंगे और चोरों का वंश सदैव कायम रहेगा, चाहे कोई निसंतान होकर ही मरे।

—धरती न फूल चुराती है और न कॉटे, इसी प्रकार मनुष्य समाज में हमेशा अच्छे-बुरे व्यक्तियों का अस्तित्व रहेगा। कोई भी आदर्शतम समाज दुष्ट मनुष्यों से मुक्त नहीं हो सकता।

पाठा : **चोरां रा खोज थोड़ा ई जावै।** चोरों का नामोनिशान नहीं मिट सकता।

**चोर रै मन में चांनणौ, बस्यौ रहै दिन रात।** ४५७०

चोर के मन मे प्रकाश, बसा रहे दिन रात।

—चोर के मन में यह सच्चाई हर दम चमकती रहती है कि उसने चोरी की। सारी दुनिया से छिपाले पर वह अपने मन से तो चोरी का भेद छिपा नहीं सकता।

—चोर का मन उसे प्रतिक्षण कोंचता रहता है कि उसने चोरी की।

पाठा : **चोरां रा मन में चांनणौ बसै।** चोर के मन में प्रकाश बसता है।

**चोर रै सपनै बुगचौ।** ४५७१

चोर के सपने में झोली।

बुगचौ = गहने, कपड़े-लत्ते व अन्य प्रसाधन की सामग्री रखने का परंपरागत थैला।

—चोर को सपने भी आते हैं तो माल से भरे थैलों के।

—मन की बात ही सपने में प्रकट होती है, फलस्वरूप चोर को चोरी के ही सपने आते हैं।

**चोर रै हाथ मसाल!** ४५७२

चोर के हाथ मशाल!

—जब स्वयं चोर ही हाथ में मशाल लेकर चोर की तलाश करना चाहे। दुष्ट व्यक्ति इसी तरह के साहस का मिथ्या प्रदर्शन करके अपनी कमजोरी छिपाने का दिखावा करते हैं।

**चोर रौ काळजौ राई बिरौबर।** ४५७३

चोर का कलेजा राई के समान।

—पकड़े जाने की आशंका से चोर का कलेजा पल-पल सहमता है।

—चोर का आधा कलेजा तो पर्वत व शेर के समान और आधा राई व कबूतर के समान।

**चोर रौ न्याव सो म्हारौ न्याव।** ४५७४

चोर का न्याय सो मेरा न्याय।

—किसी निर्दोष व्यक्ति पर खामखाह किसी अपराध या चोरी का इल्जाम लगे तो वह बढ़-बढ़ कर दावा करता है कि यदि वह गुनाहगार साबित हो जाय तो चोर के साथ जो न्याय हो वह उसके साथ भी हो।

**पाठा : चोर री सजा सो म्हारी सजा।** चोर की सजा सो मेरी सजा।

**चोर रौ भाई गठकटौ।** ४५७५

चोर का भाई गिरहकट।

—एक स्वभाव के व्यक्ति साथ रहते हैं। इसलिए चोर का भाई व संगाती या तो चोर होगा या जेब कतरा।

—जब दो बुरे व्यक्ति एक ही लच्छन के हों...।

—पुलिस व नेता की चर्चा छिड़ने पर आजकल आम आदमी भी इस उक्ति का प्रयोग करता है।

**चोर रौ मन बसै काकड़ी रै खेत।** ४५७६

चोर का मन बसे ककड़ी के खेत में।

—चोर का मन खेत की ककड़ियों को चुराने में ही अटका रहता है।

—बुरे व्यक्ति की प्रवृत्ति सदा बुरे काम की ओर ही झुकी रहती है।

**चोर रौ माल सगळा खाय, चोर अेकलौ मार्‌यौ जाय।** ४५७७

चोर का माल सभी खाएँ, चोर अकेला मारा जाए।

—चोरी के धन की साझेदारी तो समस्त घरवालों की होती है, पर इस काम का सारा खतरा, दुष्परिणाम व सजा चोर अकेला उठाता है।

—जो लोग-बाग दुष्ट व्यक्तियों के साथ मौज मनाने में कुछ भी कसर न रखें, पर उनकी विपत्ति के समय दूर रहें तब...।

**चोर लारै पागी।** ४५७८

चोर के पीछे खोजी।

पागी = पदचिह्नों के द्‌वारा उसी व्यक्ति का पता लगाने वाला खोजी।

—जब चोर अपना काम संपन्न कर लेता है, तत्पश्चात् उसे पकड़ने व माल बरामद करने की प्रक्रिया शुरू होती है। इसलिए चोर का पीछा खोजी को करना पड़ता है।

—हर अच्छे-बुरे काम से जुड़ी हुई एक विशिष्ट प्रक्रिया होती है।

**चोर लूटै अजांण, बांण्यौ लूटै जांण।** ४५७९

चोर लूटे अपरिचत को, बनिया लूटे परिचित को।

—चोर की अपेक्षा बनिया बड़ा लुटेरा है। चोर तो अजाने को लूटता है और बनिया जान-पहिचान वाले को।

—लोक दृष्टि में चोरी और व्यवसाय दोनों ही दुष्कर्म हैं।

—हर पेशे की अपनी-अपनी माँग और अपना-अपना औचित्य है?

**चोर संत गिणै नीं साध।** ४५८०

चोर संत माने न साधु ।

—चोर का धर्म है चोरी करना, संत-साधुओं के लिए भी कोई अपवाद नहीं होता।

—चोर सबको एक दृष्टि से देखता है ईश्वर की नाईं। उसकी दृष्टि में भी समभाव है।

**चोर सगळा नै ई चोर समझै।** ४५८१

चोर सबको ही चोर समझता है ।

दे.क.सं.४५२६

**चोर साहुकारे दंडे।**– भी.७३ ४५८२

चोर साहूकार को दंड देता है ।

—उस समाज की दुर्दशा का कोई अंत नहीं, जहाँ चोर साहूकार को दंड दे, उसे सजा सुनाये।

—जो दुष्ट श्रीमंतों को उत्पीड़ित करे तब।

**चोरां ऊपरला चोर।** ४५८३

चोरों से बढ़कर चोर ।

—जो प्रतिष्ठित व्यक्ति चोर से भी ज्यादा अधम हो।

—जो व्यक्ति चोरों का भी उस्ताद हो। आजकल हर सामान्य आदमी के मुँह से राजकीय अधिकारी व नेताओं के लिए यह उक्ति काम में ली जाती है।

**चोरां चोरां आसंगी मेह अंधारी रात।** ४५८४

चोरों को सुहाती है मेह अँधेरी रात ।

—हर धंधे का अपना अनुकूल समय होता है। चोरों के लिए अँधेरी रात बड़ी मुफीद है। तिस पर मेह बरसने लगे तो कहना ही क्या? अँधेरी रात के कारण न तो कोई चोर को देख सकता है और न बरसते मेह में उसके पद-चिह्न ही अंकित होते हैं।

**चोरां जावती चंडाळां जाजौ।** ४५८५

चोरों के पास जाय कि चांडालों के पास ।

—जो बदमाश औरत अपने पति को छोड़कर दूसरों के साथ मौज मनाये तो उसे चोर ले जायँ या चांडाल, उसकी बला से।

—कोई पशु खो जाये तब भी ...।

—कोई मित्र या परिजन विरोधियों के साथ मिल जाय तब भी ...।

**चोरांणा सो मारांणा।** ४५८६

चोरी करेगा सो मरेगा।

—जिसने अपराध किया, वही सजा पायेगा।

—जैसा कर्म करेगा वैसा फल मिलेगा।

—बुरे काम का नतीजा भी बुरा।

**चोरां नै आडै ऊमरां लो के साहूकार किसा ऊभै ऊमरां आसी?** ४५८७

चोरों को आड़े ऊमरों की तरफ लो कि साहूकार क्या सीधे ऊमरों की ओर से आएँगे?

आडै ऊमरां = हल से जुते हुए खेत की आड़ी लकीरें।

ऊभै उमरां = हल से जुते हुए खेत की खड़ी या सीधी लकीरें। सीधे ऊमरों की अपेक्षा आड़े ऊमरों पर चलने में जोर पड़ता है।

—चोर का पीछा करने वाले हिदायत देते हैं कि चोरों को आड़े ऊमरों से घेरो, पर साथ-ही-साथ साहूकारों के लिए भी तो आड़े ऊमरों के अलावा चलने का कोई दूसरा जरिया नहीं है।

—चोरों का पीछा करने वालों को भी समान तकलीफ उठानी पड़ती है।

—दुष्ट व्यक्ति की दुष्टता का थोड़ा-बहुत दुष्परिणाम दूसरों को भी भोगना पड़ता है।

**चोरां बिचाळै मोर!** ४५८८

चोरों के साथ मोर!

मोर = एक जाति विशेष जो सामंती-राज्य के दौरान लूट-खसोट करती थी।

**प्रसंग**: एक बार कुछ चोरों ने मिलकर काफी बड़ा हाथ मारा। वे खुशी-खुशी अपने घर लौट रहे थे। बीच राह में उन्हें मोर जाति के डकैत मिल गये। उन्होंने चोरों का सारा धन लूट लिया। चोर रो-धोकर खाली हाथ अपने-अपने घर पहुँचे।

—संसार में एक-से-एक बढ़कर उस्ताद मौजूद हैं। चोर का उस्ताद डाकू। डाकू का उस्ताद ठाकुर और ठाकुर का उस्ताद राजा।

—सेर को सवा सेर मिल जाय तो सेर को पस्त होना पड़ता है ।

**पाठा : चोर माथै मोर** । चोर पर मोर ।

**चोरां भेळा चोर ।** ४५८९

चोरों के साथ चोर ।

—समान पॉखों वाले पंछी साथ उड़ते हैं,उसी तरह एक वृत्ति वाले व्यक्ति भी साथ रहते हैं ।

—जो चोरों के साथ रहे वह भी चोर ।

—दुष्टों के साथ रहने वाले को भी लोग-बाग दुष्ट ही समझते हैं ।

**चोरां रा रुखाळा चोर ।** ४५९०

चोरों के रखवाले चोर ।

—जब चोरों के पहरेदार भी चोर हों तो जान-माल की हिफाजत का तो भगवान ही मालिक है ।

—जिस प्रशासन में अराजकता का पूरा दौर हो तब कटाक्ष रूप में इस उक्ति का प्रयोग होता है—अधिकतर पुलिस व नेताओं के लिए ।

**चोरां री जांन में आप-आपरी सोझी ।** ४५९१

चोरों की बारात में अपनी-अपनी होशियारी ।

—कोई आपस में एक दूसरे की चोरी न कर ले,इसलिए चोरों की बारात में हर व्यक्ति को पूरा सतर्क रहना पड़ता है । गफलत हुई और माल गायब ।

—धूर्तों के गिरोह में हर व्यक्ति को अतिरिक्त सावधानी बरतनी पड़ती है कि कोई एक दूसरे को ठग न ले ।

**पाठा : चोरां री जांन में जणौ-जणौ सावचेत** । चोरों की बारात में हर व्यक्ति सावधान ।

**चोरां रै कोई सींग थोड़ा ई व्है !** ४५९२

चोरों के सींग थोड़े ही होते हैं !

—चोर भी सामान्य मनुष्य की तरह ही होता है,उसकी शारीरिक बनावट में कोई खास विशेषता नहीं होती । यदि ऐसा हो तो चोर या मूर्ख को पहिचानने में तनिक भी देर न लगे ।

—कोई खास शारीरिक विशेषता की बजाय चोर की पहिचान तो उसका आचरण ही है ।

मि.क.सं. ३२१७, ३२७९, ३७०३, ४४५२, ४५४६

**चोरां रै चौबारा नीं व्है।** ४५९३

चोरों के चौबारा नही होता।

चौबारौ = चारों ओर से खुले दरवाजों वाला स्थान या कमरा जो पहली मंजिल या छत पर बना होता है।

—पकड़े जाने के भय से चोर तो बंद मकान में ही रहता है, चौबारे में नहीं और न वह ऐसा अच्छा मकान बना सकता है।

—हर दुष्ट व्यक्ति अपनी हिफाजत के बारे में पूरा सावधान रहता है।

**चोरां रै नांणौ हुवै तौ कठै जाय साहूकार?** ४५९४

चोरों के संपत्ति हो तो साहूकार कहाँ जाय?

—लाख चोरी करले, चोरों के घर माया नहीं जुड़ती। यदि जुड़ने लगे तो साहूकारों की खातिर कोई ठिकाना ही न रहे।

—धन चुराये जाने पर भी साहूकार तो साहूकार ही रहता है और मुफ्त में माल चुराने के बावजूद चोर, चोर ही रहता हैं।

—दुष्ट या चोर कभी पनप नहीं सकता।

**चोरां रै ब्याव में गठकटा न्यूंतार।** ४५९५

चोरों के ब्याह में गिरहकट मेहमान।

न्यूंतार = जिन्हें निमंत्रित किया हो।

—दुष्ट व्यक्तियों के दुष्ट ही मेहमान।

—जिसकी जैसी प्रवृत्ति होती है, वह वैसा ही साथी खोज लेता है।

**चोरां रै सतरै गळियारा व्है।** ४५९६

चोरों के सतरह गलियारे होते है।

—अपने बचाव की खातिर भागने के निमित्त चोरों के लिए अनेक गलियाँ, गलियारे एवं रास्ते होते हैं।

—बदमाश लोगों के पास अपने बचाव की खातिर अनेक उपाय होते हैं।

—हर समाज-कंटक अपने बचाव की राह खोज लेता है।

दे.क.सं.४५२३

**चोरां रै हाथ रुखाळी।** ४५९७

चोरों के हवाले रखवाली।

—चोर ही माल के संरक्षक हों तो माल के नाम पर एक धेला भी नहीं बच सकता।

—समाज की चरम दुर्दशा इस कहावत से चरितार्थ होती है कि राज्य का खजाना सँभालने की जिम्मेवारी चोरों पर हो। जनतंत्र की यही विडंबना है कि हर देश के राजनेता ऐसे ही संरक्षक हैं!

मि.क.सं.४५९०

**चोरां रौ माल चंडाळ खावै।** ४५९८

चोरों का माल चांडाल खाते हैं।

**संदर्भ-कथा** : एक बार चार चोरों ने राजमहल में चोरी का बहुत बड़ा हाथ मारा। सूने जंगल में बँटवारा करते समय मुखिया के मन में जँची कि आज डटकर मिठाई खाई जाय। दो चोरों को उसने मिठाई खरीदने के लिए शहर में भेजा। उनके ओझल होते ही मुखिया ने साथी चोर को अपने मन का भेद बताया तो उसने अदेर हामी भर ली। मिठाई वाले चोरों को दोनों ने गला घोंटकर मार डाला। साथियों की लाशों के पास बैठकर उन्होंने चार-चार लड्डू खाये तो उनकी आँखें पथरा गईं। वहीं लुढ़ककर ढेर हो गये। मिठाई वाले साथियों को बढ़िया तरकीब सूझी तो उन्होंने सारी मिठाई में भयंकर जहर मिला दिया। चोरी की बेशुमार माया के पास चारों लाशें सड़ती रहीं कि संयोग से एक दिन कुछ चांडाल उधर से गुजरे। लाशों के पास बँटवारे के लिए खुली माया को फिर से अच्छी तरह बाँध-बूधँकर वे अपने घर ले गये। और चोरों की लाशें अलग-अलग सड़ती रहीं।

—हराम की कमाई हराम में जाती है।

—बुरे काम का नतीजा बुरा ही होता है।

**चोरां वचे मोर पड़े।**–भी.२५२ ४५९९

चोरों के बीच मोर पड़े।

दे.क.सं.४५८८

**चोरां सूं किसा चूळिया छांना ?** ४६००

चोरों से क्या चूलिये छिपे हैं ?

चूळियौ = देशी या सादे कपाट के नीचे व ऊपर लगाया जाने वाला वह नुकीला भाग जिस पर आधारित रहकर कपाट बंद होते हैं और खुलते हैं। यह कब्जे-रहित किंवाड़ों में ही लगाया जाता है।

—चोरी करने के लिए चोर कपाट या चूलिया उतारकर भीतर घुसता है। तब चोर से अधिक चूलिये के बारे में और किसे समुचित जानकारी हो सकती है।

—नेक आदमियों की अपेक्षा दुष्टों को अपने हुनर की ज्यादा जानकारी होती है।

**चोरी अर मुंह-जोरी !** ४६०१

चोरी और मुँह-जोरी !

—चोर जब अपनी सफाई में ज्यादा प्रतिवाद करे तब...।

—कोई अपराधी हेकड़ी दिखाये तब...।

**पाठा : चोरी नै सीना जोरी** । चोरी और सीना-जोरी ।

**चोर अर सीना-जोर** । चोर और सीना-जोर ।

**चोरी करणी सोरी, माल पचावणौ दोरौ !** ४६०२

चोरी करनी आसान, माल पचाना भारी काम !

—बुरे कामों में हाथ डालना तो आसान है, पर उनके अंजाम से बचना बहुत मुश्किल है।

—किसी भी काम की शुरुआत करके उसे अंत तक निभाना बहुत कठिन है।

—किसी काम की वास्तविक सफलता तो उसके अंत में है।

**चोरी करै बिरमचारी, मार्‍यौ जावै घरबारी।** ४६०३

चोरी करे ब्रह्मचारी, मारा जाये घरबारी।

—ब्रह्मचारी के कुकर्म का नतीजा घर-गृहस्थी को भोगना पड़ता है।

—श्रीमंतों के अपराध का दुष्परिणाम छोटे आदमियों को सहना पड़ता है।

—गलती करे अधिकारी, सजा पाये कर्मचारी।

**चोरी कीन्हीं खात री अर बेरौ उठै ई पांतरग्या !** ४६०४

चोरी करी खाद की और कुआँ वही भूल आये !

—कोई चोर अँगूठी उड़ाकर, गले का हार वहीं छोड़ आये तब...!

—छोटे लाभ के बदले भारी क्षति उठाये तब !

—छोटी चीज उड़ाये और अत्यधिक मूल्यवान चीज वहीं रह जाय तब...!

—जो कुटिल व्यक्ति अपने अपकर्म में पूर्णतया दक्ष न हो तब...!

**चोरी-जारी री मैणी लागै, दैनगी री नीं।** ४६०५

चोरी-जारी की बदनामी है, मजदूरी की नही ।

—मजदूरी में चाहे कितने ही पैसे कम मिलें, चाहे जितनी मेहनत करनी पड़े, उस में शर्म की कोई बात नहीं, पर चोरी व जारी के लिए हर व्यक्ति को शर्म करनी चाहिए । इसकी बदनामी से डरना चाहिए । सामान्य मजूर खस्ती हालत में रहते हुए भी गुमान के साथ इस उक्ति का प्रयोग करता है ।

**चोरी जैड़ौ कांई रुजगार, जे नीं पड़ती व्है मार।** ४६०६
**जूवा जैड़ौ कांई बौपार, जे नीं व्हैती व्है हार ॥**

चोरी जैसा क्या रोजगार, यदि न पड़ती हो मार ।
जुए जैसा क्या व्यापार, यदि न होती हो हार ॥

—पर ऐसा कभी होता नहीं । न चोर कभी मार से बच सकता है और न जुआरी हार से । इसलिये ये दोनों ही काम घीटया कमाई के माध्यम हैं, नेक व्यक्ति के लिए सर्वथा अशोभनीय हैं ।

**चोरी भेदू टाळ नीं व्है ।** ४६०७

चोरी भेद के बिना नही होती ।

—चोरी करने से पहले चोर किसी के द्वारा घर का सारा भेद लेता है, फिर चोरी करता है । अच्छी तरह भेद लिये बिना चोरी नहीं होती ।

—घर का भेदी लंका ढाये ।

**चोरी री कमाई, मोरी में गमाई।** ४६०८

चोरी की कमाई, मोरी में गँवाई।

—चोरी के माल की कभी बरकत नहीं होती।

—चोर कितना खतरा झेलकर चोरी करता है, पर उसकी कमाई आसानी से नष्ट हो जाती है।

—चोरी का धन जैसे आता है, वापस उसी राह चला जाता है।

दे.क.सं.४५८८

पाठा: **चोरी रौ माल मोरी में जावै।** चोरी का माल मोरी में जाता है।

**चोरी रौ धन मोरी में।** चोरी का धन मोरी में।

**चोरी में मोरी व्हैगी।** चोरी में मोरी हो गई।

**चोरी री दाळ जूतियां में बंटै।** ४६०९

चोरी की दाल जूतियों में बँटती है।

—चोरी छिपकर करने का धंधा है। इसके माल का बँटवारा भी छिपकर होता है। उपयुक्त साधन के बिना चोरी की दाल को जूतियाँ भर-भर कर बाँटने के लिए बाध्य होना पड़ता है। कई बार अनुचित बँटवारे में जूतियाँ भी चल जाती हैं।

—घटिया काम की सारी प्रक्रिया भी घटिया होती है।

**चोरी रौ गुळ मीठौ।** ४६१०

चोरी का गुड़ मीठा होता है।

—खरीदे हुए गुड़ की बजाय चोरी का गुड़ अधिक मीठा लगता है। क्योंकि चोरी के गुड़ में जीवट का मिठास घुला रहता है।

—पराई औरत के सहवास में अधिक आनंद मिलता है।

दे.क.सं.३९९०

**चोरी रौ धन बांट नै, अधरम रौ धन दांन में।** ४६११

चोरी का धन बाँट करके, अधर्म का धन दान करके।

—चोरी के धन को बाँटकर और अधर्म के धन को दान करके समाप्त कर देना चाहिए। यही इनकी वास्तविक उपयोगिता है।

—अनुचित कमाई को उचित रूप से खर्च करने पर कुछ तो पुण्य अर्जित होता ही है।

**चोरी सूं आछी भीख।** ४६१२

चोरी से बेहतर भीख।

—चोरी का धंधा भीख से भी निकृष्ट है। भीख में दुत्कार भले ही मिले पिटाई नहीं होती, सजा नहीं मिलती।

—भीख देने वाला खुश होकर भीख देता है, पर जिस घर में चोरी होती है, घरवालों को भयंकर दुख होता है।

**चोरी सूं खेती करौ, कांईं आंगणै बावौला?** ४६१३

चोरी से खेती चाहो, क्या आँगन में बोवोगे?

—चोरी से खेती करने के लिए सारे उपक्रम तैयार कर लिये, पर बीज कहाँ बोवोगे? घर के आँगन में? पर फसल तो चोरी-छिपे उगती नहीं।

—खेती तो दर किनार कोई भी बड़ा काम चोरी-छिपे नहीं होता।

**चोरे चेनाळ नी उल्टी रीती।**–भी. २५८ ४६१४

चोर व छिनाल की उलटी रीति।

दे.क.सं. ४५१३

**चोरे बेठूं चोरु, गेल बेठूं कूतरु नी वतळावणों।**–भी. ७४ ४६१५

चौराहे पर बैठे छोकरे और राह में बैठे कुत्ते को नहीं छेड़ना चाहिए।

—आवारा छोकरे को छेड़ने से संभवतया अपमानित भी होना पड़े। बदशऊर लड़के का क्या भरोसा! इसी तरह राह में बैठे कुत्ते को छेड़ना भी नुकसानदेह हो सकता है।

—चलते रास्ते किसी को भी छेड़ना उचित नहीं है। अपने काम-से-काम रखना चाहिए।

**चौकी किणरी रे रावतां, आडै मारग आवतां।** ४६१६

हे रावतों! ऊजड़ मार्ग पर यह चौकी किसकी है।

रावत = राजपूतों की एक जाति विशेष जो रास-बाबरा, ब्यावर, आसिंद, देवगढ़ इत्यादि इलाकों तक फैली हुई है। अंग्रेजी राज्य के पूर्व ये राहगीरों को लूट लेते थे। अंग्रेजों ने इनकी लूटमार

को रोकने के लिए जगह-जगह पुलिस चौकियाँ लगा दी थीं। कुछ नियंत्रण अवश्य हुआ, साथ-ही-साथ रावतों की वारदातें भी चलती रहीं। इसी प्रसंग में यह उक्ति है कि दुष्टों के उत्पात को रोकने के लिए ही सुरक्षा-हेतु पुलिस की चौकियाँ अनिवार्य हो जाती हैं।

—आतताइयों पर नियंत्रण रखने के लिए सरकारी व्यवस्था अनिवार्य है।

**चौथै फेरै बाई, होवै पराई।** ४६१७

चौथी भाँवर बाई, हुई रे पराई।

फेरौ = विवाह के समय अग्नि के चारों ओर वर-वधू द्वारा लगाई गई परिक्रमा या भाँवर।

—चौथी भाँवर के पश्चात् माँ-बाप की लाड़ली बेटी पति की हो जाती है। पीहर की बजाय ससुराल में स्थाई रूप से निवास करती है। बेटी का क्या, वह तो पराया धन है, भाँवर पूरे होते ही वह ससुराल वालों के अधिकार में चली जाती है।

—जिस घूसखोर व अन्यायी अधिकारी की सेवा-निवृत्ति करीब हो उसके लिए भी...।

—जो घनिष्ठ मेहमान कुछ दिन रहकर शीघ्र जाने वाला हो, उसके लिए भी।

**चौथौ सुख सुथांनै वासौ।** ४६१८

चौथा सुख श्रेष्ठ स्थान का निवास।

—जब रहने के लिए मन पसंद स्थान व घर हो तब ...!

—मनुष्य जीवन में स्थान की अहमियत कम नहीं है। तभी तो मनुष्य से सरोकार रखने वाले सुखों में स्थान का चौथा क्रम है। भिन्न मान्यता के फलस्वरूप सुखों का यह क्रम भी बदल जाता है।

—मनुष्य जीवन के ये सातों सुख क.सं.८४६७ में वर्णित हैं।

**चौधरण, घर करै के खुरा खांच्चोड़ी बैठी हूं।** ४६१९

चौधराइन, घर करेगी कि कब से तैयार बैठी हूँ।

घर करणौ = घर बसाना, ब्याह करना।

खुरा खांचणौ = देशी जूते पहिनते समय पीछे चमड़े की नोक को ऊपर खींचकर जूते को सही बिठाना। कहीं जाने या चलने की तैयारी के लिए उतावली करना।

—किसी का मन-पसंद प्रस्ताव अविलंब मानने पर ...।

—मन लायक बात हो तो उसकी सहमति में देर नहीं लगती।

**चौधरण, भातौ मोड़ौ घणौ लाई के हाल तौ पूछण नै आई !** ४६२०

चौधराइन, खाना देर से लाई कि फिलहाल तो पूछने आई !

भातौ = खेत में काम करने वाले व्यक्ति की खातिर भेजा जाने वाला भोजन। घर से बाहर जाते समय साथ में लिया जाने वाला भोजन यानी पाथेय।

—जब कोई गैर-जिम्मेवार या ढीला व्यक्ति काम न करने का बहाना बनाये तब...।

—आलसी मनुष्य काम न करने का कुछ-न-कुछ औचित्य खोज ही लेता है। इसलिए गैर-जिम्मेदार आलसी मनुष्य को जिम्मेवारी का काम सौंपना उचित नहीं है।

**चौधरण, मांचौ दै के म्हैं तौ खुद ई कणवारिया भेळी सूती।** ४६२१

चौधराइन, चारपाई देना कि मैं तो खुद कणवारिये के साथ सोई।

कणवारियौ = जागीरदार की ओर से नियुक्त वह व्यक्ति जो उसके अधीनस्थ भूमि में बोई जाने वाली खेती व उपज की देखरेख करता है तथा जागीरदार के यहाँ छोटे-मोटे कार्य करता है। गाँव के किसान व बाशिंदों पर उसका पूरा दबदबा रहता है। अब सामंती-तंत्र के साथ उसकी सारी प्रथाएँ भी समाप्त हो गईं।

—घर में चारपाई न होने के कारण मालकिन को ठाकुर के कारिंदों के साथ मजबूरी में रात बितानी पड़ती है !

—अभावग्रस्त व्यक्ति से किसी बात की प्रत्याशा रखी जाय तब .... !

—मजबूरी जो समझौता न कराये थोड़ा है।

**पाठा : मासी मांचौ दै के म्हैं खुद कांमदार भेळी रात काढ़ूं।**

मौसी चारपाई देना कि मैं तो खुद कामदार के साथ रात बिताती हूँ।

**चौधरी, कित्ता बरसां रौ व्हियौ के व्हियां ई जावूं।** ४६२२

चौधरी, कितने वर्ष का हो गया कि होता ही जा रहा हूँ।

—किसी एक बूढ़े चौधरी से नाराज व्यक्ति ने जानना चाहा कि उसकी उम्र कितनी हो गई ? तब उसने जवाब दिया कि उम्र का क्या, अभी तो होती ही जा रही है, न जाने कब विराम

लगे। मतलब कि तुम चिंता न करो अभी तो खूब जीऊँगा और तुम्हें चैन से न बैठने दूँगा।

—उम्र शेष है तो स्वयं मौत भी किसी का कुछ नहीं बिगाड़ सकती।

**चौधरी, तिल घणा व्हिया के हाल रोजां बसू!** ४६२३

चौधरी, तिल की फसल जोरदार है कि अभी तो नीलगायों पर निर्भर है!

—खेती में लाभ की अपेक्षा खतरे बहुत हैं, किस वक्त न जाने कब ओले, झोला, अकाल, टिड्डी धावा बोल दें, पता नहीं। तिस पर ढोर व नीलगायों का नुकसान अलग से।

—फसल बोना, अथक परिश्रम करना किसान के हाथ की बात है, पर उपज काटकर घर लाने में बाधाएँ अनेक हैं।

—वर्तमान का खुशहाल नजारा भविष्य की कौन-सी घड़ी निगल जाये, इसकी कभी पूर्व सूचना नहीं मिलती।

**चौधरी, थारौ पेट तौ कोजौ घणौ के धेळियौ खीच इण में इज मावै।** ४६२४

चौधरी, तेरा पेट तो बड़ा वेडौल है कि हँडिया भर खीच इसी में पचता है।

—जिसके पास जो भी मामूली चीज है, उसीसे उसका काम सरता है। पराये की अच्छी चीज भी उसके क्या काम की!

—अपनी चीज खराब भी है तो वह अपनी है, उसीके उपयोग में ही उसके काम की सफलता निर्भर करती है।

—अपनी मेहनत से पेट भरने वालों को अमीरी चोंचले नहीं पोसाते!

**चौधरी, दुनिया रौ आधेठौ कठै के म्हारी डांग हेटै।** ४६२५

चौधरी, दुनिया का बीच कहाँ है कि मेरी लाठी के नीचे।

—दुनिया का बीच भला कोई खड़े-खड़े क्योंकर बता सकता है? पर लोक बुद्धि के लिए इसका उत्तर कितना सहज व सटीक है कि उसकी लाठी जहाँ टिकी है, वही दुनिया का बीच है। कोई प्रतिवाद करना चाहे तो पैमाइश करके देखले!

—गँवार का सहज समाधान विद्वानों को भी चक्कर में डाल देता है।

**चौधरी, पोकरजी हालै के खुदाई कुण?** ४६२६

चौधरी, पुष्कर चलते हो कि उसे खुदाया किसने?

—अपने कार्य में पूर्णतया प्रवीण व्यक्ति से किसी प्रकार की शंका करना उतना ही व्यर्थ है, जितना मछली से यह पूछना कि उसे तैरना आता है क्या ?

—जो व्यक्ति बेपते की डींग मारे उसके लिए ...!

**चौधरी, पोत्यौ कुण बांध्यौ के हाथां ईं आंका-बांका आंटा दिया !** ४६२७

चौधरी, साफा किसने बाँधा कि हाथों से ही टेढ़ा-बाँका लपेट लिया !

—किसी भी काम के लिए दूसरों पर निर्भर रहने की बजाय, जस-तस अच्छा-बुरा खुद ही निपटा देना ठीक है।

—अपने हाथ से किये हुए काम का कोई मुकाबला नहीं, उसका अपना ही संतोष और अपना ही आनंद है।

**चौधरी बाबा, चूं-चूं के दही चाटणियौ थूं रौ थूं।** ४६२८

चौधरी बाबा, चूँ-चूँ कि दही चाटने वाला तू ही तू।

—चूहे ने चौधरी बाबा के पास आकर चूँ-चूँ करके अभिवादन किया तो दही चाटने का उसे ही कसूरवार मान लिया।

—जो भी व्यक्ति पहले मिल जाय वही उस गलती का सही कसूरवार।

—जो व्यक्ति न्याय की बजाय अनुमान को ही प्रामाणिक माने।

**चौधरी, बैठौ है के नीं सुहावै तौ गुड़ाय दै।** ४६२९

चौधरी, बैठे हो कि न सुहाये तो लुढ़का दो।

—जो तथ्य एकदम प्रत्यक्ष है, उसके बारे में कोई शंका करे तब...।

—बेशऊर व्यक्ति को छेड़ने की बजाय उससे बचकर निकलना ही बेहतर है।

**चौधरी, भण्योड़ौ कित्तौ के हाथां करम फोडूं जित्तौक।** ४६३०

चौधरी, पढ़ा हुआ कितना है कि हाथ से सर फोडूँ जितना।

—अधूरा या अपर्याप्त कौशल अनिष्टकर होता है।

—नौसिखिया या अनभिज्ञ व्यक्ति स्वयं अपना ही अहित करता है।

—आधुनिक शिक्षा के प्रति कटाक्ष कि उसे ग्रहण करने वाला अपने हाथ से अपना सर फोड़ने की काबलियत सीख लेता है।

**चौधरी, माळा आंचै घणी फेरै के परार रा फेरवोड़ां नै पूगणौ है।** ४६३१

चौधरी, माला तेजी से फेर रहे हो कि पुराने फेरने वालों को पकड़ना है।

परार = दो वर्ष पूर्व का साल!

—किसी काम में पिछड़ा हुआ व्यक्ति अत्यधिक जल्दबाजी करे तब...।

—कोई व्यक्ति उतावलेपन का औचित्य समझाये तब...।

—जल्दबाजी से कोई भी काम सुधरने की बजाय बिगड़ता ही है।

**चौधरी, रांम-रांम के काकौ जांणै।** ४६३२

चौधरी, राम-राम कि चाचा जाने।

—जुहार या अभिवादन का जवाब देने से कहीं आतिथ्य गले न पड़ जाय,इस कारण उसे भी टालने की चेष्टा करना कि चाचा जाने,मुझे पता नहीं।

—उन निपट स्वार्थी लोगों पर कटाक्ष जो स्वार्थ न होने पर अभिवादन तक स्वीकार न करें।

—जो व्यक्ति स्वयं पर अकिंचन जिम्मेवारी भी न ले।

**चौधरी, बूढ़ी नै क्यूं कूटै के नवी कठा सूं लावूं?** ४६३३

चौधरी, बुढ़िया को क्यों पीट रहा है कि नई कहाँ से लाऊँ?

—जिसके पास जो भी वस्तु उपलब्ध है,उसका ही तो वह उपयोग कर सकता है,दूसरी वस्तु का नहीं।

—आदत से लाचार व्यक्ति के पास जब कोई अन्य विकल्प न हो तब ...।

**चौपगां में मांचौ नीं अर हंडवाई में करवौ नीं।** ४६३४

चौपायों में खाट नहीं और बासन में करवा नहीं।

करवौ = लोटे की शक्ल-सा मिट्टी का बासन,जो पानी पीने के काम आता है।

—जिस व्यक्ति के पास चौपाये के नाम पर खाट तक नहीं और बासन के नाम पर करवा तक नहीं—उसके अभावों का कोई पार है भला!

—बेइंतहा गरीबी का जीवंत चित्रण।

**चौपग्गौ चौथै दिन घिरै।** ४६३५

चौपाया चौथे दिन पुष्ट होने लगता है।

—ढोर या जानवर को अच्छा चारा-बाँटा मिल जाय जल्द मोटा होने लगता है।

—मूर्ख या नासमझ व्यक्ति जिन्हें किसी काम की चिंता न हो उनके लिए...।

—जो व्यक्ति खाना, सोना और मोटा होने के अलावा और कोई बात न जाने।

**चौबैजी गिया छब्बैजी होवण नै अर दूबैजी होयर आया।** ४६३६

चौबजी गये छब्बेजी होने और दूबेजी होकर आये।

—जो अयोग्य व्यक्ति खामखाह की महत्त्वाकांक्षाएँ रखे, उसे आखिर निराशा ही हाथ लगती है।

—सफलता की बजाय जिस व्यक्ति को पूर्ण विफलता ही हाथ लगे तब ...।

**चौमासै रौ गोबर नीपणनै नीं कोई थापण नै।** ४६३७

चौमासे का गोबर न लीपने का न थेपने का।

—जिस निकम्मे व्यक्ति की किंचित् भी उपादेयता न हो।

—जो बड़ा अधिकारी या श्रीमंत भूल-चूक से भी किसी के काम न आये।

**चौमासै रौ मेह किणनै आछौ नीं लागै?** ४६३८

चौमासे का मेह किसे नहीं सुहाता?

—वर्षा की जिस मेहर से सूखी धरती लहलहा उठे, भला वह किसे अच्छी नहीं लगती?

—नेक व उदार व्यक्ति हर किसी का प्रिय होता है, उसे देखकर सबकी बाँछें खिलती हैं।

**चौमासौ तीनां नै बुरौ, छाळी, ऊंट, रबाब।** ४६३९

चौमासा तीनों को बुरा, बकरी, ऊँट, रबाब।

रबाब = सारंगी की तरह का एक वाद्य।

—वर्षा ऋतु में बकरी के बाल भीग जाते हैं, कीचड़ की वजह से खुरों में कीड़े पड़ जाते हैं, इसलिए वर्षा ऋतु उसके लिए अस्वास्थ्यकर है। गीली जमीन और कीचड़ में ऊँट के लिए हरदम फिसलने का डर! फिसलते ही किसी पाँव की हड्डी टूटने का खतरा! रबाब पर मँढ़ा हुआ चमड़ा और बजाने वाली ताँत गीले हो जायँ तो रबाब का बजाना दूभर।

**चौमासौ बारूंमास नीं रैवै।** ४६४०

चौमासा बारह मास नहीं रहता।

—सुख शांति के दिन हमेशा नहीं रहते, इसलिए यथाशक्ति हर किसी की भलाई करनी चाहिए।

—किसी भी व्यक्ति को अपनी स्थिति से गाफिल नहीं रहना चाहिए कि आज जो उपलब्ध है, वह कल नहीं रहेगा।

**चौळ में रौळ व्है जावै।** ४६४१

क्रीड़ा में फसाद हो जाता है।

—कभी-कभार मामूली मजाक बड़ा भारी तूल पकड़ लेती है।

—मखौल बवंडर का निमित्त बन जाती है।

**चौवटा रौ अरट कोई कैवै ऊंडौ तौ कोई कैवै सेवौ।** ४६४२

चौराहे का रहँट कोई कहे बहुत गहरा तो कोई कहे कम गहरा।

—लोगों की सूरत नहीं मिलती तो उनके मत भी नहीं मिलते। जितने सिर उतने ही मत। इसलिए उनकी परवाह किये बिना जो अपने मन में जँचे वही काम करना चाहिए।

—हर किसी की राय न मानकर अपने विवेक से निर्णय करना ही उचित है।

**चौवटा रौ घर वासदी में जावै।** ४६४३

चौराहे का घर आग देने में ही व्यस्त रहता है।

—भला आग और पानी की क्या बिसात कि माँगने पर मनाही की जाय, पर उन्हें देने में बहुमूल्य समय तो नष्ट होता ही है, इसलिए जिस व्यक्ति का घर चौराहे पर है उसे चिलम के लिए आग, प्यास के लिए पानी मुहैया करना ही पड़ता है।

—जो व्यक्ति अकिंचन कामों में हरदम उलझा रहे, उसके लिए ...।

**चौवटै चावळ तौ बिखेर दीन्हा पण फळसै मुलक अर खलक जीमैला।** ४६४४

इलाके में चावल तो बाँट दिये, पर चौक में अनगिनत आदमी खाएँगे।

—पहिले की तरह गाँवों में आज भी रंगे हुए चावल घर-घर बाँटना निमंत्रण ही का परंपरागत रूप है।

—बड़े आयोजन को अच्छी तरह सँभालना आसान नहीं है, माल और कार्यकर्ताओं की पूरी इफरात अपेक्षित है।

# छ - छो

**छक्कै-पंजै सावचेत नीं रैवै सो पिछतावै ।** ४६४५

छक्के-पंजे सावधान न रहे, वह पछताये ।

—काम चाहे छोटा हो या बड़ा, उसके लिए हर कदम पर सतर्कता अपेक्षित है, अन्यथा वह संपन्न नहीं हो सकता ।

—काम के प्रति उपेक्षा घातक है ।

**छछूंदरा रै माथै चमेली रौ तेल ।** ४६४६

छछूँदर के सिर में चमेली का तेल ।

—दयनीय स्थिति होने पर भी जो व्यक्ति दिखावे में पैसा अधिक खर्च करे, उसके लिए ।

—कोई अदना व्यक्ति बड़ी-बड़ी लालसाएँ रखे तब !

**छछेरी छछेरी नै ईवै कोनीं ।** ४६४७

छाछेरी छाछेरी को सहन नहीं कर सकती ।

छछेरी = किसी के घर जाकर छाछ लेने वाली ।

—स्वार्थ टकराने पर ईर्ष्या होना स्वाभाविक है ।

—समान धंधा करने वालों में डाह उत्पन्न हो तब ।

**छटांक भर्‌यौ चूंन अर चौबारै रसोई ।** ४६४८

छटाँक भर चून और मैदान में रसोई ।

दे.क.सं.४४०१

**छठ सूं चवदस करणी।** ४६४९

छठी से चतुर्दशी करना।

—किसी व्यक्ति ने छठी तिथि का कोई वादा किया हो और वह वादा न निबाह कर आगे-से-आगे चतुर्दशी बताता जाए, तब...।

—जो व्यक्ति अपने वचन पर दृढ़ न रहे, उस पर कटाक्ष।

**छठी में धर्योड़ी तौ नीं ही ?** ४६५०

छठी में धरी हुई तो नहीं थी ?

—छठी पूजा का अनुष्ठान काफी महत्त्वपूर्ण होता है। उस में बहुत-सी वस्तुएँ रखी जाती हैं, और आशा की जाती है कि भविष्य में वह इन्हें प्राप्त करेगा। बच्चे की सुरक्षा के लिए बिच्छू का डंक, साँप की केंचुल, बाघनख इत्यादि भी रखे जाते हैं, ताकि बच्चे को इन जंतुओं से हानि न हो।

—जब कोई बच्चा बड़ा होकर हँसे-ही-हँसे या बहुत गप्पी हो तो उसके लिए मजाक में यह उक्ति कही जाती है कि हँसी या गप्प छठी में तो नहीं रखी हुई थी।

**छठी रा आंक नीं टळै।** ४६५१

छठी के अंक नही टल सकते।

—विधात्री जन्म के छठे दिन जो भाग्य में लिख देती है, वह किसी भी सूरत में टल नहीं सकता।

—भाग्य के अंक अटल हैं।

**छठी रा लेख, ज्यां में मीन न मेख।** ४६५२

छठी के लेख, जिस में मीन न मेख।

—मनुष्य के जीवन में जो कुछ भी घटित होता है, वह सब छठी की रात विधात्री आकर लिख जाती है। उसमें रंचमात्र भी अपवाद नहीं होता।

—छठी की रात लिखा हुआ लेख ही जीवन भर चरितार्थ होता है।

**छठी रौ दूध चितारणौ।** ४६५३

छठी का दूध याद आना।

—बच्चे के जन्म की छहवीं रात का विशिष्ट आयोजन, जब विधात्री उसका भाग्य लिखती है। लड़ाई-झगड़े या तकरार में लोग अमूमन एक-दूसरे को उसी दिन का स्मरण कराते हैं कि माँ के दूध में कैसी ताकत है !

—अकसर चुनौती के रूप में इस उक्ति का प्रयोग होता है।

**छठौ सुख राज में पायौ।** ४६५४

छठा सुख राज में पाया।

—सरकारी नौकरी हो या सत्ताधारियों से संपर्क हो तो यह छठा सुख है।

**छतर-छींयां।** ४६५५

छत्र-छाया।

—किसी बुजुर्ग या बड़े व्यक्ति की विशेष कृपा हो, तब...।

—बड़े व्यक्ति का सहारा।

**छतै दरजी नाई पाळौ क्यूं ?** ४६५६

दर्जी के रहते नाई पैदल क्यों ?

—हिंदुओं की किसी भी बारात में नाई की तो जब-तब उपयोगिता रहती है, इसलिए उपस्थिति अनिवार्य है। काम वाला व्यक्ति सुविधा उठाने की अपेक्षा रखता है। दरजी का बारात में खास उपयोग नहीं होता।

—जब कोई चालाक मनुष्य को भोले-भाले व्यक्ति की मामूली सुविधा भी सहन नहीं हो और वह येनकेन-प्रकारेण उसकी सुविधा छीनना चाहे तब...।

—यह मनुष्य का नैसर्गिक स्वभाव है कि उसे दूसरों की सुविधाएँ अखरती हैं और वह स्वयं उन्हीं सुविधाओं के लिए लालायित रहता है।

**छतै मांटी रंडापौ काढ़णौ खोटौ।** ४६५७

पति के रहते वैधव्य बिताना बुरा।

—पति नामर्द हो, अकर्मण्य हो, शराबी हो, झगड़ालू हो या उससे अनबन हो गई हो तो वह स्थिति औरत के लिए वैधव्य जैसी ही कठिन है।

—बहुत ज्यादा संपदा होने पर भी पति की कंजूसी के कारण गरीबी जैसा जीवन बिताना पड़े तब...।

**छती गाडी पाळौ कुण चालै ?** ४६५८

गाड़ी के मौजूद रहते पैदल कौन चलेगा ?

—साधन-सुविधा उपलब्ध हो तो उसका उपयोग अवश्य करना चाहिए।

—सुख-सुविधा किसे पसंद नहीं। कोई बिरला ही उसके उपयोग से इनकार करना चाहेगा।

**छतै घोड़ै पाळौ जाय।** ४६५९

घोड़े के रहते पैदल जाय।

दे.क.सं.४०५५

**छतै धांन अेकासणौ ?** ४६६०

अनाज रहते उपवास क्यों ?

—साधन-सुविधाएँ रहते हुए भी कोई उनका उपयोग न करे, तब ...!

—उस मूर्ख व्यक्ति का उपहास जो समय पर उपलब्ध सुविधा का उपयोग न कर सके। मसलन विवाहित पत्नी के रहते एक रात भी बेकार क्यों गँवाई जाय।

**छतै बळ हेटै कीकर आवै ?** ४६६१

ताकत रहते चित क्योंकर आये ?

—लड़ाई-झगड़े में ताकत रहते कौन पीछे हटना चाहता है या हार मानना चाहता है।

—ताकत है तो उचित अवसर पर उसकी आजमाइश होनी चाहिए।

**छतै हाथां-पगां उठायलै तौ सावळ।** ४६६२

हाथ-पाँव रहते उठा ले तो अच्छा है।

—जिस व्यक्ति की तीमारदारी करने वाला कोई न हो तो वह कामना करता है कि अशक्त होने से पहिले उठ जाय तो बेहतर है।

—जीवन के अंतिम समय में किसी से सेवा-बंदगी न कराये तो अच्छा है।

**छदांम री घोड़ी अर नव टका नेग।** ४६६३

छदाम की घोड़ी और नौ टके नेग।

—सस्ती चीज को गढ़ने या बनाने में बहुत अधिक खर्च करना पड़े,तब...।

—कोई बदसूरत या वृद्ध वेश्या अधिक रुपयों की माँग करे,तब...।

**छदांम री डोकरी अर टकौ सिर मुंडाई रौ।** ४६६४

छदाम की बुढ़या और टका सिर मुँड़ाई का।

—कोई ढलती उम्र या बदसूरत महिला प्रसाधन या शृंगार पर ज्यादा खर्च करे,तब...!

—जहाँ मामूली खर्च से काम चल जाय वहाँ बहुत खर्च उठाना पड़े,तब...!

**छदांम री भाजी नै टका री बघार।** ४६६५

छदाम की सब्जी और टके का छौंक।

—सस्ते मनोरंजन के लिए बहुत अधिक खर्च करना पड़े तब।

—मामूली शौक की खातिर ज्यादा व्यय करना पड़े तब।

**छदांम रौ छाजळौ अर टकौ गंठाई रौ।** ४६६६

छदाम का सूप और टका गॅटाई का।

—कम कीमत की वस्तु पर मरम्मत के लिए ज्यादा खर्च करना पड़े,तब ...।

—मसलन फटे कमीज को ठीक करने के लिए दरजी ज्यादा पैसे माँगे तब यह उक्ति कही जा सकती है।

**पाठा : छदांम रौ छाजळौ, छै टका गंठाई रा।**

**छपनै अर छिनवै में बचग्या वै अबै नीं मरै।** ४६६७

छप्पन और छियानबे में जो बच गये, अब नही मरेंगे।

—वि.संवत् १९५६ व १९९६ के भीषण अकाल में भी जो भाग्यशाली बच गये,अब उन्हें मौत की कोई आशंका नहीं है।

—महामारी या भीषण दुर्घटना में भी जो व्यक्ति सही-सलामत बच जाय,शायद मौत उनसे नफरत करती हो,फिर तो उनके मरने की कोई संभावना नहीं।

**छप्पन तेवड़ छोड'र कुत्तौ तौ हाडकै सूं ई बाथेड़ौ करै ।** ४६६८

छप्पन पकवान छोड़कर कुत्ता तो हड्डी से ही जूझता है ।

—नीच प्रकृति का मनुष्य हमेशा सत्कार्यों की बजाय, बुरे कामों की ओर ही प्रवृत्त होता है ।

—सुंदर पत्नी की बजाय जो व्यक्ति इधर-उधर गंदी बस्ती में भटकता फिरे ।

**छप्पर रा छप्पर उडावै ।** ४६६९

छप्पर के छप्पर उड़ाये ।

—महान सामाजिक क्रांति के दौरान जब मार उथल-पुथल मच रही हो ।

—परिवर्तन की आँधी के सामने न छप्पर टिकता है और न महल ।

**छमछम नै ठकठक खावै ।** ४६७०

रुनझुन को ठकठक खाये ।

—मकान की नींव लगते ही बने-बनाये गहने बिकने लगते हैं तो उसके संपूर्ण होने तक सब समाप्त हो जाते हैं ।

—मकान का निर्माण सारी जमा-पूँजी चाट जाता है ।

—जब किसी बड़े आयोजन में घर का सर्वस्व खर्च होकर सुख-शांति चली जाए, तब...!

**छव टकां में छदांम रौ कांई ?** ४६७१

छह टकों में छदाम का क्या ?

—किसी बड़ी वस्तु के सामने छोटी चीज की अहमियत न रहे, तब...!

—जहाँ छह टके खर्च हों, वहाँ एक छदाम और सही ! बड़े उत्सव में जहाँ बहुत पैसा खर्च होना है, वहाँ मामूली खर्च बचाने की कंजूसी नहीं करनी चाहिए ।

**छव दांत अर मूंडौ पोलौ ।** ४६७२

छह दाँत और मुँह पोला ।

—किसी अपराध के जाहिर होने पर मुँह खुला-का-खुला रह जाय, उसके लिए ।

—गलती सामने आते ही जिस व्यक्ति का मुँह फक हो जाए, तब...!

**छव महीनै रै मारग सूं बारै महीनां रौ मारग चोखौ ।** ४६७३

छह महीने के मार्ग से बारह महीनों का मार्ग अच्छा ।

—पगडंडियों की बजाय, मुख्य रास्ते पर चलना अधिक सुविधा-जनक और निर्विघ्न है।

—निर्धारित पाठ्य-पुस्तक की बजाय कुंजियों से काम चलाना उचित नहीं।

—ज्ञान के रास्ते तो लंबे ही होते हैं, छोटे रास्ते केवल भटकाने में सहायक हो सकते हैं।

**छांट-छांट घड़ौ भरीजै।** ४६७४

बूँद-बूँद से घड़ा भरता है।

—थोड़ा-थोड़ा संचय करने से ही संपदा बढ़ती है।

—किंचित् का महत्त्व समझने वाला ही समग्र को हासिल कर सकता है।

**पाठा : छांट-छांट सूं समद भरीजै।**

**छांट पड़ै उठै अर बंदौ नाचै अठै।** ४६७५

बूँद पड़े वहाँ और बंदा नाचे यहाँ।

—अत्यधिक चालाक व्यक्ति के लिए।

—बेइंतहा सतर्क व होशियार आदमी की प्रशंसा के निमित्त यह उक्ति कही जाती है।

**छांट री बिगाड़ी कोठां सूं नीं सुधरै।** ४६७६

बूँद की बिगड़ी हुई कुंड से नहीं सुधरती।

—बूँद भर गलती हो जाय तो वह पोखर के पानी से भी दुरुस्त नहीं हो सकती।

—मामूली कलंक बीसियों हौज पानी से नहीं धुल सकता।

**छांट रौ चूकौ, मूंणा खळकावै।** ४६७७

बूँद भर की चूक, हौज-के-हौज खाली करवाये।

—एक चिनगारी कितना भीषण अग्निकांड कर सकती है, उसी प्रकार एक बूँद भर की चूक के लिए बीसियों हौज का पानी भी खर्च किया जाय तब भी वह नहीं सुधर सकती।

—अवैध सहवास की एक बूँद, औरत की जिंदगी बर्बाद कर देती है। उस बूँद के कलंक को बादलों के पानी से भी नहीं धोया जा सकता।

**छांण नै पीयां कीं जोखम नीं।** ४६७८

छानकर पीने से कोई जोखिम नहीं।

दे.क.सं.४३१३

**छांणां री भखारी में हीरा नीं लाधै।** ४६७९

कंडों के तहखाने में हीरे नहीं मिलते।

—हीन व्यक्तियों के परिवार में सुपात्र का जन्म नहीं हो सकता।

—कुटिल व्यक्तियों के गिरोह में नेक आदमी नहीं मिल सकता।

**छांणा चुगतौ कर देवणौ।** ४६८०

कंडे बीनते हुए कर देना।

—किसी धनाढ्य को एकदम बर्बाद करने की भावना।

—ईर्ष्या का ऐसा ही वीभत्स रूप होता है—एक-दूसरे के सर्वनाश पर उतर आना।

**छांणा चुगवा जाय नै जळेबी रौ भातौ।** ४६८१

कंडे बीनने जाय और जलेबी का पाथेय।

दे.क.सं.४०८४

**पाठा : छांणा नै जावै अर मिठाई रौ भातौ।**

**छांणा रा देव नै कपासिया री आंख्यां।** ४६८२

कंडे के देव को बिनौले की आँखें।

—जैसा देव वैसी ही पूजा।

—छोटे देव की छोटी ही आराधना।

—दुष्ट व्यक्ति का उसके योग्य ही सत्कार होना चाहिए।

**छांन चवै नै तिमणियौ भावै?** ४६८३

झोंपड़ी चुए और हार को ललचाये?

—अपनी क्षमता के परे अमूल्य चीज की लालसा रखने वाले व्यक्ति के लिए।

—अयोग्य व्यक्ति बहुत बड़ी आकांक्षा रखे, तब...।

**छांन बळ्यां पाछै छाप री पूछी।** ४६८४

झोंपड़ी जलने पर छाप की पूछताछ।

—झोंपड़ी की दीवार पर एक मामूली-सी छाप चिपकी थी ! पूरी झोंपड़ी जलने पर केवल छाप की ही चिंता रही । ऐसे अवसरों पर यह युक्ति कितनी संगत है ।

—ऐसा व्यक्ति जिसे अपनी हानि और अपने लाभ को पहिचानने की दूर-दूर तक सूझ-बूझ न हो । नासमझी की पराकाष्ठा ।

**छांन रौ पांणी परबत नीं चढ़ै ।** ४६८५

झोंपड़ी का पानी पर्वत पर नहीं चढ़ता ।

—निहायत छोटा आदमी बड़े आदमी की आकांक्षाएँ पूरी नहीं कर सकता ।

—अयोग्य व्यक्ति ऊँचाई के शिखर पर नहीं चढ़ सकता ।

**छांनै बुलाई , ऊंट चढ़ आई ।** ४६८६

चुपके से बुलाई और ऊँट पर आई ।

—गोपनीय काम का भंडा फूटने पर उसकी सफलता संदिग्ध है ।

—जो व्यक्ति गोपनीय काम का सरे आम प्रचार करे ।

—जिस व्यक्ति में सामान्य ज्ञान का भी नितांत अभाव हो ।

**छांनै राख्यां घणी चवड़ै आवै ।** ४६८७

छिपाकर रखने से अधिक उजागर होती है ।

—मानव स्वभाव की यह विडंबना है कि वह छिपाकर रखने वाली बात का अजाने ही प्रचार कर बैठता है ।

—जो बात स्पष्ट करनी है तो उसे छिपाकर नहीं रखना चाहिए ।

**छाछ अर लाछ मांगण में काय री मेहणी ।** ४६८८

छाछ और बेटी माँगने में कैसी शर्म ।

—अधिकांश गाँवों में आज भी जिनके घर दूध-दही की इफरात है, छाछ के लिए आने वालों को आत्मीयता से छाछ देते हैं । माँगने वाला भी सहज भाव से छाछ के लिए चला जाता है । उसी प्रकार अपने बेटे की खातिर किसी की लड़की माँगने में क्या हिचक ! यह तो छाछ माँगने जैसा ही सहज काम है ! इच्छा न होने पर मना ही तो करेगा ।

• **पाठा : छाछ अर धीव मांगण में कैड़ी लाज ।**

धीव = बेटी ।

**छाछ ई घालणी अर पगां ई लागणौ !** ४६८९

छाछ भी डालना और पाँव भी लगना !

—कोई वूढ़ी-बडेरी किसी के घर छाछ माँगने जाय तो युवती महिलाएँ पहले उसके पाँव छूती हैं फिर आदर-भाव से छाछ डालती हैं ।

—अपने घर की वस्तु देकर उसी आदमी के सामने झुकना, यह दुहरी बेगार उचित नहीं ।

—भला करके भी कुछ बोझ वहन करना पड़े तब ।

**छाछ घालतां छाती फाटै, दूध घालणौ दोरौ ।** ४६९०
**रोटी देवतां रोज आवै, उत्तर देवणौ सोरौ ॥**

छाछ डालते छाती फटे, दूध डालना विरल ।

रोटी देते रोना आये, पर उत्तर देना सरल ॥

—कंजूस व्यक्ति पर कटाक्ष, जो देने के नाम पर किसी को गाली भी न दे, आँगन की धूल तो बड़ी बात । हर बात के लिए मना करना उसके लिए सबसे ज्यादा सरल है । दो होंठ ही तो हिलाने पड़ते हैं ।

—मक्खीचूस का सर्वोपरि आदर्श, हर बात के लिए मना करना ।

**छाछ छितरी, बेटी इतरी ।** ४६९१

छाछ छितरी, बेटी इतरी ।

इतरना = लाड़-प्यार से बिगड़ना ।

—छाछ में अधिक पानी डालने से वह पतली हो जाय तो फिर उसे ठीक करना मुश्किल है, उसी प्रकार लाड़-प्यार से बिगड़ी हुई बेटी का सुधरना उतना ही मुश्किल है ।

—संतान को जरूरत से ज्यादा दुलार करना उचित नहीं ।

**छाछ नै आई अर घर री धणियांणी बणगी ।** ४६९२

छाछ लेने आई और घर की मालकिन बन गई ।

—इस उक्ति के लिए भारत में अंग्रेजी राज्य का ज्वलंत उदाहरण है । वे छाछ माँगने आये थे और सारे देश पर आधिपत्य जमा लिया । ढाई-सौ बरसों तक वे इसका शोषण करते रहे ।

—याचक बनकर कोई व्यक्ति किसी घर में आये और चालाकी से उस घर का मालिक बन जाए,उसके लिए।

**पाठा : छाछ मांगण नै आई अर चाडै री धणियांणी बणगी।**

चाडौ = दही-छाछ रखने का बड़ा बासन—मिट्टी का।

**छाछ नै आई बिलोवणा री धणियांणी बणगी।**

**छाछ नै जावै जठै ई पाडा मरै।** ४६९३

छाछ को जाये वहीं पाड़े मर जाएँ।

—अभागे का दुर्भाग्य उससे भी आगे चलता है,वह जहाँ भी जाये,उसके लिए संकट तैयार। उसके पाँव पड़ते ही सामने वाले का नुकसान।

—अभागे व्यक्ति की विडंबना,इस उक्ति में उजागर हुई है।

**पाठा : छाछ नै जावं जठै ई पाडा केरड़ा मरया लाधै।**

**छाछ पीय घी बेचण में लाभ।** ४६९४

छाछ पीकर घी बेचने में लाभ।

—अकिंचन वस्तु काम में लेकर महत्त्वपूर्ण चीज का संचय करना।

—कंजूस व्यक्ति के लिए मुफीद नुस्खा।

**छाछ पीवतां कित्तीक जेज लागै !** ४६९५

छाछ पीने में कितनी देर लगती है !

—कुछ काम छाछ पीने की तरह सरल होते हैं,उनके लिए यह उक्ति उपयुक्त है।

—आसान काम की खातिर अधिक समय लगाना अनुचित है।

**छाछ बिना खाटौ थोड़ौ ई बणै।** ४६९६

छाछ के बिना कढ़ी नहीं बनती।

—सामान्य वस्तु का भी अपनी जगह महत्त्व है।

—माकूल जगह पर काम में ली जाय तो साधारण चीज का भी महत्त्व बढ़ जाता है।

**छाछ मांगण जावै अर ढूंगां लारै तोलड़ियौ ।** ४६९७

छाछ माँगने जाये और पीठ के पीछे हँडिया ।

—छाछ जैसी साधारण चीज माँगने के लिए संकोच करना व्यर्थ है ।

—जिस किसी के पास कोई व्यक्ति काम से जाये तो इधर-उधर की बातें बनाने की बजाय उससे स्पष्ट कहना ही बेहतर है ।

—संकोच व लिहाज अपनी जगह पर ही संगत दिखते हैं !

**छाछ-मावड़ी थनै कुण राळग्यौ के आ छाछ तौ राळबा जोगी ही ।** ४६९८

छाछ मैया तुझे कौन डाल गया कि यह छाछ तो डालने काबिल ही थी ।

**संदर्भ-कथा** : एक अफीमची पीनक में पास के गाँव से अपने गाँव आ रहा था । अधिक अफीम के कारण वह अपनी सुध-बुध बिसरा हुआ था—पहुँचे हुए अघोरी संत की नाईं । अपनी झोंक में चल रहा था कि मार्ग के एक छोटे गड्ढ़े में सफेद-सफेद तरल पदार्थ पर उसकी नजर पड़ी । पास जाकर गौर से देखा तो तुरत समझ गया कि कोई फूहड़ औरत गाढ़ी-गाढ़ी छाछ औंधाकर चल दी । छाछ-मैय्या का ऐसा अनादर ! वह गड्ढ़े के पास बैठ गया । मन-ही-मन बोला—'छाछ-मावड़ी थनै कुण राळग्यौ ।' फूहड़ औरत को कोसते हुए चुल्लू भर छाछ गटकली । पर स्वाद एकदम कसैला और बदबूदार । अपने अनुमान में थोड़ी चूक नजर आई । इधर-उधर देखा । बाईं ओर थोड़ी दूरी पर एक गधा मस्ती से घास चर रहा था । पीनक में होते हुए भी छाछ का भेद समझ गया । अदेर तीन-चार बार थूकते हुए बोला, 'आ छाछ तौ राळबा जोगी ही ।'

—जो व्यक्ति पहली नजर में सयाना दिखे और बरतने पर खराब साबित हो, तब उस कटु अनुभव के संदर्भ में यह उक्ति प्रयुक्त होती है ।

—शुरुआत में पता नहीं भी लगे पर बाद में कुलच्छन या बुराई का पता चल ही जाता है ।

**छाछ में माखण नीं डूबै ।** ४६९९

छाछ में मक्खन नहीं डूबता ।

—छाछ से उत्पन्न मक्खन को छाछ थोड़े ही डुबोएगी—उसका परम आत्मीय जो है ।

—लोग अपने परिजनों की पूरी रक्षा करते हैं ।

**छाछ में माखण पाय, रांड फूहड़ पण थाय।** ४७००

छाछ में मक्खन पाये, राँड फूहड़ कहलाये।

—अपना नुकसान करके भी जो व्यक्ति व्यर्थ बदनाम हो।

—जिसे फायदा पहुँचाएँ और वही बदनाम करे तब।

**छाछ मोळी भलां ई व्हौ, दूध री होड कद करै !** ४७०१

छाछ स्वादिष्ट भले ही हो, दूध की होड़ कब कर सकती है !

—बेर मीठे भी हों तो वे अंगूर या आम की होड़ नहीं कर सकते।

—गरीब व्यक्ति सयाना और समझदार भले ही हो, वह बड़े व्यक्तियों की बराबरी नहीं कर सकता।

—छोटी जात का व्यक्ति थोड़ा पढ़ भी जाय तो वह ब्राह्मण-पंडितों का मुकाबला नहीं कर सकता। अनुसूचित जातियों के प्रति सवर्णों की ऐसी अनेक विषाक्त धारणाएँ हैं।

**छाछ रौ लोभ नै घी री मोकळ।** ४७०२

छाछ का लोभ और घी की इफरात।

—घर में अत्यधिक घी होते हुए भी छाछ की अधिक चिंता करना, किसी को न देना ! धनाढ्य व्यक्ति जो पूरा कंजूस हो।

—घी की परवाह न करके छाछ के प्रति अधिक सावधानी बरते। जो व्यक्ति बहुमूल्य चीज की कद्र न करके तुच्छ वस्तुओं के प्रति मोह रखे।

**छाछ व्ही नीं कोई झुळकियौ।** ४७०३

न छाछ हुई न कोई मट्ठा।

झुळकियौ = थोड़ा दही बिलौने से न मक्खन निकलता है, न छाछ बनती है, न दही की वैसी स्थिति बचती है।

—अधूरा काम रह जाय तब।

—जब कोई बात अधर-झूल में रह जाये। न पूरी बने और न उसे छोड़ा जाय।

**छाछी नीं बाछी, नींद आवै आछी।** ४७०४

न छाछ न बच्छी, नींद आये अच्छी।

दे.क.सं.३५०१

**छाज घाल चालणी घालणौ।** ४७०५

सूप में डाल कर, छलनी में डालना।

—अनाज साफ करने के लिए पहिले उसे सूप में झटकते हैं। बड़े कंकर या बड़ा फूस उससे निकल जाता है। तत्पश्चात् छलनी में डालकर उसे फिर साफ किया जाता है।

—आदमी को खूब परेशान या दिक किया जाय तब।

—आदमी को अच्छी तरह परखकर उसकी पड़ताल करनी चाहिए।

**छाज नीं बोलै छाबड़ी, थूं क्यूं बोलै चालणी, थारै इठोत्तर सौ बेझ।** ४७०६

सूप न बोले टोकरी, तू क्यों बोले छलनी, तुझ में अठत्तर सौ छेद।

—अनाज फटकते समय सूप की आवाज होती है, फिर टोकरी में डालते हुए भी आवाज होती है, छलनी में साफ करने की आवाज होती है। सूप और टोकरी की आवाज तो वाजिब है, पर छलनी तू क्यों बकबक कर रही है, तुझ में तो अनगिनत छेद हैं।

—कसूरवार व्यक्ति निर्दोष पर लांछन लगाये या उसकी प्रताड़ना करे तब।

—कसूरवार व्यक्ति दूसरों की पंचायत में टाँग अड़ाये तब।

**पाठा : छाज बोलै सो बोलै, पण चाळणी ई बोलै जिण में सित्तर सौ छेकला।**

**छाजळौ तौ बोलै पण चालणी कांई बोलै।**

**छाजै ज्यांनै ई छाजै, गधेड़ा माथै नौबत कद बाजै।** ४७०७

सोहे जिन्हें ही सोहे, गधे पर नौबत कब सोहे।

—नौबत-नगाड़े घोड़े व ऊँट पर ही शोभा देते हैं गधे पर नहीं।

—योग्यता के अनुरूप ही हर व्यक्ति का महत्त्व है ! और महत्त्व के अनुसार ही उसके साथ वैसा ही व्यवहार किया जाता है।

—गुणहीन और गुणी का एक जैसा आदर नहीं होता।

**छाजै ज्यांनै ई छाजै, बाकी रां रै डांगां बाजै !** ४७०८

सोहे जिन्हें ही सोहे, बाकी पर लाठी सोहे !

दे.क.सं. १८८५, २०५९, २४४५

**छाजै रे छाजै नौबत बाजै, दोय च्यार घड़ी वत्ती लागै।** ४७०९

छज्जे-दर-छज्जे नौबत बजे, दो-चार घड़ी अधिक लगे।

—किसी उत्सव-आयोजन को मनाना हो तो पूरे ठाट से मनाओ, समय या खर्च अधिक लग जाये तो कोई बात नहीं।

—जीवन के आनंदभाव की खातिर न समय का महत्त्व है और न वित्त का।

**छाटी गेरयां पछै जगात कैड़ी?** ४७१०

छाटी गिराने के बाद कैसी जगात?

छाटी = बकरी के बालों से बना हुआ थैला।

—जब नाके पर छाटी ही गिरा दी तो फिर कैसा महसूल?

—एक ही अपराध या गलती की दुहरी सजा नहीं मिल सकती।

—जब कसूर पकड़ाई में न आये तो फिर कैसा दंड?

**छाटी री छेवटी रौ कीं नीं बिगड़ै, घिसीजै तौ पिलांण ई।** ४७११

छाटी की छटिया का कुछ नहीं बिगड़ता, बिगड़ेगा तो पलान ही।

पिलांण = पलांण = ऊँट का चारजामा, जीन।

—गरीब आदमी के हाथों नुकसान भी हो जाये तो बड़े आदमी को ही बर्दाश्त करना पड़ता है।

—बिचौलियों का कुछ नहीं बिगड़ता, मालिक का ही बिगड़ता है।

—यदि किसी काम का उलाहना देना है तो घर के मुखिया को ही देना उचित है, नौकर-चाकरों को नहीं।

**छाटी साटै बोरौ, जिणरौ निहोरौ न थोरौ।**–व.४५ ४७१२

छाटी के बदले बोरा, जिसका कैसा क्या निहोरा!

—बड़ी चीज के बदले छोटी चीज ग्रहण करने वाले पर कैसा एहसान।

—अदला-बदली के सौदे में जब कोई व्यक्ति लाभ में रहे फिर भी शिकायत करे तब।

**छाडी रांड न भागौ ओळंगाणौ, तीजै घरै समार करै।**–व.९१ ४७१३

छोड़ी राँड न मिटी आवाजाही, तीसरे घर पर अधिकार किया।

ओळंगाणौ = ससुराल या मायके से बेटी को बुलवाना या वहाँ से ले जाना।

—पत्नी को छोड़ दिया,फिर भी आवाजाही का झंझट नहीं मिटा। वह तीसरे घर पर अधिकार जमाये बैठी है,जिसकी वजह से रोज उलाहने सुनने पड़ते हैं,आना-जाना कायम है।

—किसी आफत को तिलांजली देने पर भी वह पीछा न छोड़े तब।

**छातीकूटौ तौ सगळां नै ई करणौ पड़ै।** ४७१४

रोना-धोना तो सबको ही करना पड़ता है।

—चाहे गरीब हो चाहे अमीर कुछ-न-कुछ दुख-वेदना तो हर परिवार में बनी रहती है। यहाँ तक कि राज-महल भी दुख की छाया से बच नहीं सकता।

—जब तक जीना है,तब तक सीना है।

**छाती माथायलौ बोर।** ४७१५

छाती पर का बेर।

—ऐसे आलसी व्यक्ति पर कटाक्ष कि छाती पर पड़ा बेर भी मुँह में उठाकर नहीं रख सकता।

—निहायत अकर्मण्य व्यक्ति के लिए।

**छाती माथै कीं नीं चालै।** ४७१६

छाती पर कुछ नहीं चलेगा।

—चाहे धन कम हो या ज्यादा मरने पर किसी भी उपाय से एक पैसा भी साथ नहीं लिया जा सकता।

—अधिक संचय करने वाले मनुष्य को याद दिलाना कि किसलिए इतनी माया इकट्ठी कर रहे हो,मरने पर एक कौड़ी भी साथ नहीं ले जा सकोगे।

**छाती माथै क्यूं मूंग दळै?** ४७१७

छाती पर क्यों मूँग दल रहे हो?

—खामखाह कोई किसी को परेशान करे तब!

—परिवार में अनचाहे सदस्य के लिए कि वह क्यों सीने पर बोझ बना हुआ है।

**छाती माथै पींपळी ऊभी, कांई हवाल व्हैला?** ४७१८

छाती पर पीपली खड़ी, क्या हाल होगा?

—इस उक्ति के दो पहलू हैं : बाल विधवा के लिए पीपल के पत्तों की नाईं जीवन डगमगा रहा है, कैसे व्यतीत होगा।

—किसी गरीब घर में विवाह योग्य कुँवारी बेटी हो तो उसकी चिंता भी कम नहीं रहती। दोनों स्थितियों में घर की सुख-शांति छिन जाती है।

**छाती माथै बोर पड़्यौ के मूंडा में देदै तौ खाल्यूं।** ४७१९

छाती पर बेर पड़ा है कि मुँह में दे दे तो खा लूँ।

दे.क.सं.४७१५

**छाती माथै रूंगता नीं व्है उणरौ कीं पतियारौ कोनीं।** ४७२०

सीने पर बाल न हों उसका कोई विश्वास नहीं।

—शारीरिक लक्षण की उक्ति है—गाँव में यह सामान्य मान्यता है कि जिस व्यक्ति के सीने पर बाल न हों, वह कुटिल व विश्वासघाती होता है।

**छाती साटै बाटी।** ४७२१

छाती के बदले बाटी।

बाटी = रोटी।

—हिम्मत से कार्य करने पर ही जीविका प्राप्त होती है।

—व्यवसाय व अन्य काम में जो खतरा झेलकर काम करते हैं आखिर उन्हें ही मन-वांछित लाभ होता है।

—साहसी के लिए जीवन-निर्वाह तो दूर, कोई भी काम कठिन नहीं।

**छाळी अपड़्यौ नाहर नै जे छोडै तौ खाय।** ४७२२

बकरी ने पकड़ा नाहर, गर छोड़े तो खाय।

—भूल से या किसी चमत्कार से बकरी ने यदि शेर को पकड़ लिया तो वह न तो खा सकती है और न छोड़ सकती है। छोड़ दे तो नाहर उसे खा जाएगा।

—ऐसा अचीता संकट जिसका कोई निवारण न हो।

—कोई गरीब औरत किसी दुष्ट से प्रेम कर ले तो उसकी यही दशा होती है। वह न तो दुष्ट को छोड़ सकती है और न उसके साथ रह सकती है।

**छाळी खटीक सूं पतीजै ।** ४७२३

बकरी खटीक से ही आश्वस्त होती है ।

—कसाई और खटीक बकरों का माँस बेचकर निर्वाह करते हैं । खटीक चमड़े की रंगाई भी करते हैं । भय के बिना प्रीत नहीं होती । इसीलिए बकरी खटीक की बास मिलते ही चुप हो जाती है । उसकी दासता स्वीकार कर लेती है ।

—औरत भी खटीक प्रवृत्ति वाले मनुष्य के पास ठहरती है, सीधे पति को उलटे आँख दिखाती

**छाळी दूध तौ देवै पण मींगणियां भेळनै ।** ४७२४

बकरी दूध तो देती है पर मेंगनियाँ मिलाकर ।

—बकरी दूहने पर अमूमन दूध में मेंगनियाँ डाल देती है । पीछे की तरफ दूहने में सुविधा भी है और दिक्कत भी ।

—इच्छा के विरुद्ध किसी से काम लेने पर ऐसा ही नतीजा होता है ।

**छाळी नाहर सूं कद धीजै !** ४७२५

बकरी नाहर पर कैसे भरोसा कर सकती है !

—नाहर भक्षक है और बकरी भक्ष्य, तब भला कोई भी भक्ष्य अपने भक्षक का क्योंकर विश्वास कर सकता है कि वह जब चाहे उसे नहीं मारेगा ।

—सीधा-सरल व्यक्ति दुष्ट की संगति से कभी आश्वस्त नहीं हो सकता ।

**छाळी बाळी अर भैंस बूढ़ाळी ।** ४७२६

बकरी कम उम्र और भैंस प्रौढ़ा ।

—बकरी कम उम्र में दूध अच्छा देती है और भैंस प्रौढ़ होने पर ।

—उम्र या समय का प्रभाव हर व्यक्ति या हर वस्तु के लिए भिन्न होता है । मसलन फल ताजा और शहद पुरानी अच्छी होती है । योद्धा युवक और पंडित पुराना ।

**छाळी रा कांन धणी सारू ।**—व.१८२ ४७२७

बकरी के कान मालिक के लिए ।

—गुलाम का जीवन स्वतंत्र नहीं होता। उसके हर कार्य-कलाप का नियंत्रण मालिक की इच्छा पर निर्भर करता है।

—पराधीन व्यक्ति की अपनी कोई स्वतंत्रता नहीं होती।

**पाठा : छाळी रा कांन अेवाळां आधीन। छाळी रा कांन धणी रै बख में।**

**छाळी री छींक भर्‌यै बजार कुण सांभळै ?** ४७२८

बकरी की छींक भरे बाजार में कौन सुनता है ?

—गरीब की फरियाद कहीं नहीं सुनी जाती ?

—गरीब का दुख-दरद किसे भी सुनाई नहीं देता।

—गरीब का प्रतिरोध कुछ माने नहीं रखता।

**पाठा : छाळी री छींक कुण सुणै ?**

**छाळी री पूंछ नीं उडावण जोग अर नीं ढाकण जोग।** ४७२९

बकरी की पूँछ न उड़ाने योग्य और न ढकने योग्य।

—बकरी की पूँछ न मक्खियाँ उड़ाने के काम की और न लज्जा ढकने के काम की।

—पर्याप्त साधन न हो तो सब तरह से कठिनाई रहती है। एक भी पहलू पूरा नहीं पड़ता।

**छाळी रै गूता रौ कांई काढ़णौ !** ४७३०

बकरी के गूते का क्या दूहना !

गूतौ = ब्याने के बाद बकरी, गाय अथवा भैंस का पहली बार निकाला हुआ दूध जो गरम करने पर जम जाता है। गाय, भैंस का गूता निकालना काफी कठिन है, पर बकरी का गूता तो एक बच्चा भी निकाल लेता है। एक टाँग पकड़ी और बकरी कब्जे में।

—गरीब से वसूल करने में कुछ जोर नहीं पड़ता। शक्तिशाली या दुष्ट से कुछ भी वसूल करना मुश्किल है।

**छाळी रै मूंडै तौ काचरौ ई खटै।** ४७३१

बकरी के मुँह में तो 'काचरा' ही पर्याप्त है।

काचरौ = बिल्कुल छोटी ककड़ी जो स्वाद में कुछ खट्टी होती है।

—गरीब व्यक्ति को थोड़े में ही संतोष कर लेना चाहिए, बड़ी महत्त्वाकांक्षाएँ पालना संगत नहीं।

—निर्धन व्यक्ति को सस्ती वस्तुएँ ही उपलब्ध हो सकती हैं।

**पाठा : छाळी रै मूंडै चिबड़ियौ ई घणौ। छाळी रै मूंडै तूहड़ौ ई खटै।**

**छाळी रै मूंडै मतीरौ कुण राखै ?** ४७३२

बकरी के मुँह में तरबूज कौन रहने देता है ?

—कोई अयोग्य व्यक्ति बड़ा पद पाना चाहे तब...!

—कोई गरीब व्यक्ति महँगी वस्तुओं की चाहना करे, तब...!

**पाठा : छाळी रै मूंडै मतीरौ नी खटै। छाळी रा मूंडा में मतीरौ नीं मावै।**

**छाळी रोवै जीव नै, खटीक झींकै खाल नै।** ४७३३

बकरी रोये प्राण को, खटीक झींखे खाल को।

दे.क.सं.१९१८

**छाळी रौ कांई धायौ ?** ४७३४

बकरी का क्या अघाना ?

—बकरी का थोड़े में ही पेट भर जाता है—पर उसका मुँह हरदम चलता रहता है। उसका पेट कब भरता है, कब खाली रहता है, पता नहीं चलता। बालक या बकरी की खाने में एक जैसी प्रवृत्ति होती है।

—जो व्यक्ति बकरी के उनमान छोटी-छोटी कमाई में मुँह मारता है, वह कभी बड़ी संपत्ति नहीं जुटा सकता।

—गरीब व्यक्ति थोड़े में ही संतुष्ट हो जाता है।

**छाळी रौ चरनार नै चीता रौ बेहनार।** ४७३५

बकरी के चरने की ठौर वही बाघ के बैठने की ठौर।

—भक्ष्य और भक्षक का एक ही स्थान पर रहना बहुत कठिन है। मसलन चोरों की बस्ती में साहूकार या दुष्ट के पड़ोस में निरीह व्यक्ति का निवास या किसी पतिव्रता का भडुवों की गली में घर।

मि.क.सं. ४३५८

**छाळी रौ दूध डाढ़ में।** ४७३६

बकरी का दूध दाढ़ में।

—हरदम चराते रहने पर ही बकरी ठीक मात्रा में दूध देती है। बकरी की दाढ़ बंद तो दूध भी बंद।

—जितना खिलाओगे,उतना पाओगे।

—रिश्वत के संदर्भ में भी यह युक्ति काम आ सकती है,जहाँ पैसा देने पर ही काम होता हो।

**छाळी रौ दूध नीं देखणौ, लड़ाक देखणी।** ४७३७

बकरी का दूध नहीं, उसका लड़ना देखना।

—कोई गरीब आदमी झगड़ालू हो तब व्यंग्य में कहा जाता है कि इसकी आर्थिक स्थिति पर विचार मत करो,इसकी हेकड़ी देखने काबिल है।

—किसी कलाकार की जमा पूँजी का खयाल करने की बजाय उसकी कला पर ही ध्यान देना चाहिए।

**छिछोर बिचै चोर मिळणौ वत्तौ।** ४७३८

छिछोर की अपेक्षा चोर मिलना बेहतर।

दे.क.सं.४५३५

**छिण में छाज उडावै, पल में करै निहाल।** ४७३९

क्षण में सूप उड़ाये, पल में करे निहाल।

—जो सब कर्ताओं से ऊपर कर्ता है वह क्षण में किसी को बर्बाद कर देता है और पल भर में किसी को धनवान बना देता है।

—संसार में जो कुछ भी घटित होता है,वह सब ईश्वर की इच्छा का ही परिणाम है।

**छिन्नुवा थूं छापै छप्यौ, धन री व्हैगी धूड़।** ४७४०

छिनुवा तू छापे में छपा, धन की हो गई धूल।

—संवत् १९५६ के बाद संवत् १९९६ भी इतिहास के पन्नों में अंकित है कि मनुष्य और मवेशियों पर क्या-क्या कहर नहीं ढहे! घास और अनाज कहीं था ही नहीं। धन से न

पशुओं का पेट भरता था, न मनुष्य का। धन तो धूल से ही बदतर हो गया था। धन का राजस्थानी में अर्थ मवेशी से भी है, जो सब मिट्टी हो गया था।

—संवत् १९९६ के भीषण अकाल की विभीषिका इस उक्ति में वर्णित है।

—दुख की समूहगत स्मृति विस्मृत नहीं होती।

**छींक अमूंझै जणा सूरज सांम्ही देखणौ पड़ै।** ४७४१

छींक घुटे तब सूरज की ओर देखना पड़ता है।

—मामूली तकलीफ होने पर बड़े आदमी की ओर झाँकना पड़ता है।

—कष्ट मामूली हो या बड़ा, श्रीमंतों के सहयोग बिना उसका निस्तार संभव नहीं।

आ. दे. क. सं. ४७४५

**छींकतां ईं किसौ नाक वढ़ै।** ४७४२

छीकते ही क्या नाक कटता है।

—लोक मान्यता के अनुसार छींकने को अशुभ माना जाता है। पर यह किसी के वश की बात तो है नहीं। एक प्राकृतिक क्रिया है।

—प्रकृति-प्रदत्त सामान्य भूल का हाथोंहाथ बड़ा दंड थोडे ही दिया जाता है।

**छींकतां ईं डंडै।** ४७४३

छीकते ही दंडित।

—प्रकृति-प्रदत्त किसी मामूली गलती पर ही किसी गरीब को तत्काल दंड मिल जाय, तब।

मि. क. सं. ४७४२

**पाठा :** छीकतां ईं डंडीजै। छींकते ही दंडित किया जाय।

**छींक रै सागै सेडौ आयां सरै।** ४७४४

छींक के साथ सेड़ा आता ही है।

—एक सामान्य चूक के साथ-साथ मामूली गलती हो ही जाती है।

—एक ऐसा जुड़ा हुआ दोष, जिसके लिए किसी को भी दोषी नहीं ठहराया जा सकता, भद्दा भले ही लगे।

**छींकां आवै जणा सूरज सांम्ही भाळै ।** ४७४५

छींक आये तब सूरज की ओर देखना पड़ता है ।

—छींक आते-आते रुक जाये तो उसे राजस्थानी में 'छींक अमूंझणी' कहते हैं । उस वक्त सूरज की ओर देखते ही छींक आ जाती है । हर व्यक्ति छींक रुकने पर स्वतः सूरज की ओर देखने लगता है ।

—एक मामूली दोष के लिए भी जरूरत पड़ने पर बड़े व्यक्ति का मोहताज होना पड़े, तब... ।

**छींकौ तूट्यौ अर मिनकी रौ बख लाग्यौ ।** ४७४६

छींका टूटा और बिल्ली का दाँव लगा ।

—किसी आकस्मिक दुर्घटना से समाज-कंटकों को अचीता लाभ पहुँचे, तब... ।

—भाग्य-वश हठात् किसी का बड़ा फायदा हो जाय, तब... ।

**छींट अर छिनाळ अळगा सूं ई रूपाळी लागै ।** ४७४७

छींट और छिनाल दूर से ही सुंदर लगती है ।

—बाहरी चमक-दमक में असलियत का पता नहीं चलता कि भीतर क्या-क्या कलंक छिपा है ।

—सामान्यतया बाहरी दिखावा करने वाले भीतर से कुरूप होते हैं ।

**छींपी छिनाळ अर घांची रा बळद रावळै रोकै ।** ४७४८

छीपन छिनाल और घाँची के बैल ठाकुर रोके ।

—कसूर किसी का और दंड मिले किसी को, तब... ।

—दोषी की बजाय निर्दोष को सजा मिले, तब... ।

**छींयां तौ छीतरी री ई आछी ।** ४७४९

छाया तो छितरी हुई भी अच्छी ।

—छाया तो छाया ही है—चाहे वह घने वृक्ष की हो, चाहे छितरे हुई मामूली पेड़ की हो

—छत्र-छाया हर रूप में लाभ-दायक और प्रशंसनीय है चाहे किसी की भी हो ।

**छींयां तौ मौका री भली, व्हौ भलां ई कैर ई।** ४७५०

छाया तो मौके की भली, हो भले करील ही।

—मौके पर छोटा लाभ या सुख भी मिल जाय तो उसकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

—वक्त पर जो चीज उपलब्ध हो, उसीका महत्त्व है।

**छींयां में ई आवणौ अर छींयां में ई जावणौ।** ४७५१

छाया में ही आना और छाया में ही जाना।

—सवेरे आना और साँझ को लौटना। सूर्य उगने से पहिले काम पर जाना और सूर्य अस्त होने पर काम से मुक्त होना। चाहे खेती हो या व्यापार निष्ठापूर्वक करना चाहिए। और अधिक-से-अधिक समय अपने काम के लिए व्यतीत करना चाहिए, तभी सफलता मिलती है।

**छीजै काया, बधै रोग, देखादेखी साजै जोग।** ४७५२

छीजे काया, बढ़े रोग, देखादेखी साजे योग।

—बिना वैदय को बताये, किसी रोगी को देखकर कोई वैसी ही औषधि लेना शुरू कर दे तो शरीर क्षीण होगा, रोग बढ़ेगा।

—बिना सोचे-विचारे किसी की नकल करने से लाभ की बजाय हानि ही होती है। पर आज समस्त दुनिया इसी नकल के रोग से ग्रसित है। अमरीका और यूरोप की नकल करने में परस्पर सब देशों के बीच होड़ लगी है।

**छीदा नाचौ बिल तकौ, कुळ री राखौ कांण।** ४७५३
**मासी ढोलक भूलगी, व्हैगी तीन पगां रै पांण॥**

छितरे नाचो, बिल तको, रखो कुल का मान।
मौसी ढोलक भूल गई, साधी तीन पैरों की तान॥

**संदर्भ-कथा** : एक बिल्ली। वह चालाक तो थी ही। पर उसका दिमाग और भी ज्यादा तेज था। एक बार संयोग से एक चौधरी के घर दही की हँड़िया चाटने के बाद, उसके गले में ही फँस गई। बिल्ली ने तीन-चार बार जोर से पटकी तब हँड़िया तो फूट गई पर सामने का घेरा गले में फँसा रह गया। तीव्र बुद्धि की बिल्ली ने उस परेशानी को भी भुना लिया! एक सूने मंदिर से उसने ढोलक उठाली। दही की चिकनाहट और फीकेपन को दूर करने के लिए वह

शिकार की तलाश में निकली। राह में उसे एक मोर,एक कबूतर और चूहा मिला। सभी को उसने यह कहकर झाँसा दिया कि गले में केदार का कंगन पहिना है। शंकर भगवान ने स्वयं अपने हाथों से ढोलक बख्शी है। तब वैराग उठना स्वाभाविक था सो वह गंगा नहाने जा रही है। तुम्हारी इच्छा हो तो चलो। मोर और कबूतर ने झट मौसी पर विश्वास कर लिया पर चूहे के दिल में कुछ संशय था,फिर भी वह उसके साथ हो लिया।

रास्ते में एक खाली झोंपड़ी मिली। मौसी के साथ तीनों ने वहीं रातवासा किया। बिल्ली के मुँह में रह-रह कर लारें टपक रही थीं। इन मूर्खों को एक साथ मारकर बारी-बारी से खाये तो मजा आ जाएगा। आधी रात तक मौसी की ढोलक के साथ तीनों संगत करते रहे। नाचते रहे,गाते रहे। पर मौसी की तरह चूहा भी छक्के-पंजे सावधान था। नाच के दौरान उसने गहरा बिल खोद लिया ! जब भक्ति-भाव में मौसी आँखें बंद करती तब चूहा मौके का उचित लाभ उठाकर बिल खोद लेता। उधर बिल्ली की भूख असह्य होने लगी तो उसने आँखें खोलीं। शिकार की ताक में उसने एक टाँग ऊँची करली। पहिले हरामी चूहे को ही गंगाजी पहुँचाना है। चूहे से बिल्ली की रंगत छिपी नहीं रही। ढोलक स्वतः बंद हो गई थी। तीन पाँवों पर मौसी अविचल खड़ी थी। दोनों साथियों को गफलत में देखा तो चूहे ने उन्हें सावधान करते कहा,'छीदा नाचौ,बिल तकौ,कुळ री राखौ कांण। मासी ढोलक भूलगी,व्हैगी तीन पगां रै पांण।

चूहे का इतना कहना था कि बिल्ली ढोलक छोड़कर उस पर झपटी। चूहा अदेर बिल में घुस गया ! बिल्ली कबूतर पर झपटना चाहती थी,पर वहाँ न तो कबूतर नजर आया न मोर। दरवाजे पर एक जंगी कुत्ता खड़ा था। बिल्ली-मौसी उपाय का मौका सोचे,तब तक उसकी गर्दन कुत्ते के जबड़े में थी। म्याँऊ-म्याँऊ के रिरियाते स्वर में वही उसका आखिरी भजन था।
—मौके पर अपनी सूझ-बूझ ही आखिर काम आती है।

**छुट्टौ चरै नै बंध्यौ भूखां मरै।** ४७५४

छुट्टा चरे और बँधा भूखों मरे।

—जो व्यक्ति खुली मजूरी करता है,वह ज्यादा कमाता है और जो व्यक्ति बँधी तनख्वाह लेता है,वह मुसीबतें उठाता है।

—जो पशु खुला और स्वतंत्र है,वह चरता है,पेट भरता है और जो खूँटे से बँधा है वह भूखों मरता है।

—सामाजिक मर्यादा का उल्लंघन करने वाले स्वच्छंद चर रहे हैं, धन कमा रहे हैं, मौज मना रहे हैं और इसके विपरीत मर्यादा की पालना करने वाले अपने इच्छा से नियंत्रित हैं, वे भूख से पीड़ित हैं।

—जो अनुशासन से बँधे हैं, वे दुख पा रहे हैं और जो नियम-कायदों की परवाह नहीं करते वे ऐश कर रहे हैं।

**छुरी अर कूंडौ तौ कसाई रै हाथ है।** ४७५५

छुरी और कूँडा तो कसाई के हाथ में है।

—बकरे को अपने प्राण बचाने का अधिकार नहीं है, कसाई के हाथ में है उसका जीना-मरना! वह जब चाहे गले पर छुरी फेर सकता है और कूँडे में खून इकट्ठा कर सकता है। काल और यमदूत कसाई के प्रतीक हैं, वे जब चाहें किसी के भी प्राण छीन सकते हैं।

**छुरी अर खरबूजा वाळौ जोग।** ४७५६

छुरी और खरबूजे वाला संयोग।

दे.क.सं. २०७१, २७७७

**छुरी हेटला सांस लेवणा है।** ४७५७

छुरी के नीचे श्वास लेने हैं।

—काल की अदृष्ट छुरी कब गला चाक कर दे, कुछ पता नहीं, जब तक उसकी मेहर है—साँस ले रहे हैं।

—किसी आततायी दुष्ट व्यक्ति की गिरफ्त में फँसे दुखियारे की अंतर्वेदना।

**छूं तौ कांम नै माठी छूं, खावा-पीवा में तौ किणी सोक नै ऊपर नीं आवाद्यूं।** ४७५८

हूँ तो काम में सुस्त हूँ, खाने-पीने में तो किसी सौत को ऊपर नहीं आने दूँ।

—जो व्यक्ति काम की दृष्टि से तो एकदम निकम्मा हो, पर खाने-पीने और ऐश करने में सबसे आगे, उस पर कटाक्ष।

—आलसी चटोरे के व्यक्तित्व का चित्रण।

**छूटा चरै बंधियां रै पसाव।** ४७५९

छुट्टे चरें बँधे हुओं के प्रताप से।

—जंगल में जो घोड़े मजे से जहाँ-तहाँ घास चर रहे हैं, वे अस्तबल में बँधे घोड़ों की ताकत पर ही, वरना उन्हें कोई भी खदेड़ ले जाता।

—देश की सीमा पर जो सैनिक सिर पर कफन बाँधे अपने कर्तव्य और अनुशासन से बँधे हैं, उन्हीं के बल-बूते पर देश की समस्त प्रजा स्वतंत्रता से घूम रही है, जीवन का आनंद ले रही है।

**छूट्योड़ौ तीर पाछौ नीं आवै।** ४७६०

छूटा हुआ तीर वापस नहीं लौटता।

—छूटे हुए तीर की नाई मुँह से निकले हुए वचन भी वापस गले में आकर नहीं दुबकते।

—मनुष्य को बहुत सोच-विचार कर कंठ से बोल निकालने चाहिएँ।

**छेकौ कांम राकस रौ।** ४७६१

जल्दबाजी राक्षस का काम।

—हर काम के लिए अपेक्षित समय अनिवार्य है। एक गिलास पानी पीने का अपना समय है, भरपेट खाना खाने का अपना समय है। यदि पानी पीने में अपेक्षित समय की बजाय ज्यादा उतावली की जाय तो वह घातक है। इसी तरह खाने की जल्दबाजी से प्राण जाने की भी नौबत आ सकती है—इसलिए जल्दबाजी को राक्षस का स्वभाव माना है।

—मनुष्य को चाहिए कि वह राक्षस की बजाय मनुष्य ही बना रहे तो श्रेयस्कर है।

**छेरा में भाटौ वगायां आपरै ई छांटा लागै।** ४७६२

पतले गोबर में पत्थर फेंकने से अपने पर ही छींटे लगते हैं।

—किसी दुष्ट व्यक्ति को छेड़ना स्वयं के लिए घातक है।

—दुष्ट व्यक्ति को छेड़ने की बजाय, उससे दूर ही रहना उचित है।

**छैल छिपायां ना छिपै, मैला गाभां मांय।** ४७६३

छैल छिपाये न छिपें, मैले कपड़ों के भीतर।

—छैल या रूपवान युवक के चेहरे व पुष्ट देह की अपनी आभा होती है,वह फटे-मैले कपड़ों से ढकी नहीं जा सकती ।

—छैल-छबीले युवकों की पहिचान तो दूर से ही हो जाती है,उन्हें बेश-कीमती कपड़ों और आभूषणों की दरकार नहीं ।

पाठा : **छैल रहै ना छांना मैला गाभां मांय ।**

**छैल-भंवर खाक में छांणौ , जूतियां गठावण जैपर जांणौ ।** ४७६४

छैल-छबीला बगल में छाना, जूतियाँ गठाने जयपुर जाना ।

छांणौ = छाना = कंडा ।

—बनावटी छैल-छबीले भले ही चमक-दमक वाले कपड़े पहिनें,उनकी गरीबी का सही अंदाज हो जाता है ।

—ढोंगी छैलों पर कटाक्ष ।

**छोकरा नांनांणै ढबै नहीं ।**–व.८६ ४७६५

छोकरे ननिहाल में रुकते नही ।

—यों तो अमूमन बच्चे ननिहाल में खुश रहते हैं,किंतु ननिहाल की हालत खस्ता होने पर अपने घर में ऐश करने वाले बच्चों का वहाँ एक घड़ी भी मन नहीं लगता ।

—मन-मौजी बच्चों का ऐसा ही स्वभाव होता है ।

**छोकरी ज्यांरै राड़ ।** ४७६६

छोकरी जिनके झंझट ।

—बेटी की परेशानी है,बेटे की नहीं ।

—आज भी हिंदू समाज परंपरागत रूढ़ियों के कारण इस मान्यता से ग्रस्त है ।

**छोकरीयां घर वसै तौ बाबौ वूढ़ी यूं ही आंणै ।**–व.३३९ ४७६७

छोकरियों से घर बसे तो बाबा बूढ़ी यों ही लाये ।

—बच्चों के द्वारा न तो महत्त्वपूर्ण काम संपन्न हो सकते हैं और न घर-बार सँभल सकता है, वे अपनी वय के अनुसार ही काम कर सकते हैं ।

—आखिर लंबी उम्र के परिणाम-स्वरूप अनुभव और अभ्यास की समृद्धता ही तो हर काम की सफलता का आधार है।

**पाठा : छोरा-छोरियां सूं घर बसै बाबौ बूढ़ी क्यूं लावै ?**

**छोकरौ व्है जठै बहू ई आवै।** ४७६८

छोकरा हो तो बहू भी आयेगी।

—पुत्र-जन्म के साथ ही यह आशा बँध जाती है कि लड़का हो तो बड़ा होने पर एक दिन बहू भी आएगी। आशा को बस अंकुरित होने का आधार मिले तो वह पल भर में गहर-घुमेर बरगद बन सकती है।

—लड़के का जन्म परिवार वालों को कितना आश्वस्त करता है।

**छोटा गांव में खवास ई ठाकर बाजै।** ४७६९

छोटे गाँव में नाई भी ठाकुर कहलाता है।

दे.क.सं.५०,२३९९

**छोटा गांव में ढोलण ई वूज़ी।** ४७७०

छोटे गाँव में ढोलन भी माँजी।

दे.क.सं.५०,२३९९

**छोटा सूं ई मोटौ हुवै।** ४७७१

छोटे से ही बड़ा होता है।

—यकायक कोई भी छोटे से बड़ा नहीं होता,उम्र के साथ धीरे-धीरे बढ़ता है।

—शारीरिक अभिवृद्धि के अतिरिक्त व्यक्तित्व की ऊँचाई भी एकदम नहीं बढ़ती,समय पाकर अपनी गति से बढ़ती है।

**छोटी चाकरी मांय सुख नीं मिळणौ।** ४७७२

छोटी चाकरी में सुख नहीं।

—छोटी नौकरी में बँधी-बँधाई तनख्वाह है और परिवार की जरूरतें ज्यादा हैं,इस कारण सिवाय तंगी के सुख कभी नहीं मिल सकता।

पाठा : छोटी चाकरी मांये सुख नी मळवानौ ।

**छोटी ताकड़ी मोटा तोळा मैल दिया।** ४७७३

छोटी तकड़ी पर मोटे बटखरे रख दिये ।

—किसी बात के गहन मर्म को छिपाकर कहने के लिए बनियों के पास भाषा का एक लक्षणात्मक प्रयोग होता है । उसीके द्वारा संबंधित परिजनों को समाचार लिखते हैं । मसलन कोई गँवार उनके परिवार में किसी के साथ दुराचार कर जाये तो वे आपस में जरूरत पड़ने पर कहेंगे—गवां री घरटी में गवार दळ दियौ । अर्थात् गेहूँ की चाकी में ग्वार दल दिया । उसी तरह छोटी लड़की के साथ बलात्कार कर जाये तो कहेंगे 'छोटी ताकड़ी मोटा तोळा मैल दिया ।' यानी छोटे तराजू में बड़े बटखरे रख दिये ।

—छोटी बच्ची के साथ कोई प्रौढ़ दुराचार कर जाये, तब... ।

**छोटी-मोटी कांमणियां सै विस री बेल।** ४७७४

छोटी-बड़ी कामनियाँ सब विष की बेल ।

—औरतों के प्रति एक परंपरागत धारणा । जो सामंती पाखंड की द्योतक है । जबकि ज्वलंत सच्चाई तो यह है कि औरत के बिना गृहस्थ की गाड़ी चल नहीं सकती ।

**छोटी व्हौ के मोटी, मिरच तौ चरकी ई हुवै।** ४७७५

छोटी हो या बड़ी, मिर्च तो चरकी ही होती है ।

—यहाँ मिर्च परोक्ष रूप से औरत की द्योतक है, वह छोटी हो या बड़ी पुरुष के लिए जलन ही उत्पन्न करती है ।

—औरतें अमूमन कलहगारी होती हैं । पुरुष-प्रधान समाज में नारी के प्रति ऐसा ही विकृत दृष्टिकोण होता है ।

**छोटी व्हौ के मोटी, रोटी तौ गोळ ई व्है।** ४७७६

छोटी हो या मोटी, रोटी तो गोल ही होती है ।

—जस-तस पेट भरने से मतलब है, रोटी पतली हो चाहे मोटी ।

—व्यंजन के बाहरी स्वरूप या रूप-रंग की परवाह किये बिना ही उसे खा लेना चाहिए, वह एक जरूरत है, कला नहीं ।

**छोटी-सीक जांन गज भर री जबांन।** ४७७७

छोटी-सी जान और गज भर की जबान।

—कोई छोटा बच्चा बढ़-बढ़ कर बातें करे, तब।

—यह एक पहेली भी है, जिसका अर्थ है—सूई-डोरा। सूई जान की प्रतीक है और डोरा, जबान का।

**छोटी-सीक लिलाड़ी अर उण में ई भंवरौ।** ४७७८

छोटा-सा ललाट और उस में भी भँवरा।

भंवरौ = ललाट के बीच कहीं भी बालों का गोल-गोल चक्र।

—छोटा ललाट दुर्भाग्य का लक्षण है, यदि उस में भँवरा हो तो और भी बुरा।

—अभागे व्यक्ति को बार-बार आफतों का सामना करना पड़े, तब।

**छोटै कवै घणौ खाईजै।** ४७७९

छोटे कौर अधिक भोजन।

—छोटे-छोटे कौर लेने से भोजन अधिक मात्रा में किया जा सकता है।

—थोड़े-थोड़े मुनाफे से अधिक कमाई होती है।

**छोटै कु वढ़ै कू।** ४७८०

छोटे 'कु' बड़े 'कू'।

—यों तो यह उक्ति 'क' के लिए छोटे-बड़े उ-ऊ की सीधी-सादी बात है—पर यह उस वक्त कही जाती है, जब एक परिवार के छोटे-बड़े सभी सदस्य एक ही स्वभाव, समान लक्षण वाले हों, जिन में विशेष अंतर परिलक्षित नहीं होता।

**छोटै मुंहडै बड़ी बात।** ४७८१

छोटे मुँह बड़ी बात।

—जब कोई व्यक्ति अपनी औकात भूलकर बड़े व्यक्तियों के सामने बढ़-बढ़कर बातें बनाये, तब।

—छोटे मुँह बड़ी बात करना अशोभनीय है।

**पाठा : छोटै मूंडै मोटी बात।**

**छोटै हाथां अर खोटै बाटां, साचौ माप-तोल नीं निकळै।** ४७८२

छोटे हाथों से और खोटे बटखरों से सही माप-तौल नहीं हो सकता।

—यों तो ऊपर से अर्थ एकदम सीधा है कि छोटे बच्चे के अकुशल हाथों से व गलत बटखरों से किसी भी वस्तु का सही माप-तोल नहीं हो सकता,पर इसका गहरा मर्म यह है कि अधूरे विद्वान और गलत धारणाओं से सत्य की सही पहिचान नहीं हो सकती।

**छोटौ जित्तौ ई खोटौ।** ४७८३

छोटा उतना ही खोटा।

—उम्र के हिसाब से छोटा बच्चा बदमाशी करता है,तब भी यह उक्ति कही जाती है। दूसरी तरफ पद के हिसाब से छोटा होने पर भी।

**छोटौ तौ ई नाहर रौ जायौ।** ४७८४

छोटा है फिर भी नाहर का बच्चा है।

—किसी शूरवीर का बच्चा वैसा ही बहादुर हो,तब...।

—समर्थ व्यक्ति की संतान भी समर्थ होती है।

**छोटौ बछेरौ गधा रौ ई चोखौ।** ४७८५

छोटा बछेरा तो गधे का भी सुंदर होता है।

—क्या जानवर,क्या मनुष्य छोटे बच्चे प्राय: सुंदर होते हैं,उनके प्रति सबका मोह उमड़ता है।

—छोटा बछेरा गधे का सुंदर हो तो क्या,बड़ा होने पर सारे लच्छन व हुलिया गधे जैसा ही तो होगा।

—व्यक्ति की सही पहिचान तो बड़ा होने पर ही होती है।

**छोडा छोलै जिकौ ई भदर तौ हुवै।** ४७८६

छोडे छीलने वाला भी भदर तो होता ही है।

छोडा = वृक्ष के ऊपर की सख्त व मोटी छाल। भदर = परिजन की मृत्यु पर मुंडन करवाना।

—'छोडा छोलना' एक मुहावरा है,जिसका अर्थ है बहुत परेशान करना।

—कुपुत्र हमेशा बड़ों को कष्ट देता है, पर अपने से बड़े संबंधियों की मृत्यु पर मुंडन तो करवाता ही है।

—बुरे व्यक्ति में कुछ तो नैतिक भावना होती ही है।

**छोडा तौ रूंखां रा इज उतरै।** ४७८७

छोडे तो पेड़ों के ही उतरते हैं।

—जो व्यक्ति पेड़ की तरह सहनशील होगा, उसी में कष्ट सहने का माद्दा होगा।

—बड़े व्यक्ति कष्ट उठाकर भी दूसरों की सहायता करते हैं।

**छोडौ ईस बैठौ बीस।** ४७८८

छोड़ो ईस और बैठो बीस।

ईस = खाट की लंबी वाली भुजा को ईस कहते हैं और छोटी वाली को 'ऊपळा।'

—ईस पर एक भी मोटा आदमी जोर से बैठे तो टूट सकती है, पर ईस से हटकर भीतर की ओर बीस आदमी भी बैठें तो वह नहीं टूटती।

—कोई भी काम सोच-समझकर सलीके से किया जाय तो वह बिगड़ता नहीं।

**छोरा काच कठै के पाडौ पीयग्यौ।** ४७८९

छोकरे काच कहाँ है कि पाड़ा पी गया।

**संदर्भ-कथा** : एक ठाकुर की आर्थिक स्थिति खराब थी। फिर भी टीमटाम से रहने का शौक था। कर्ज लेकर भी अपनी झूठी शान-शौकत बनाये रखना चाहता था। अच्छा कलपदार साफा बाँधने से बड़ा संतोष होता था! गाँव में काच मिलता नहीं था। दूर शहर जाने का मौका न मिला तो वे अंधे काच के बदले दूसरा नया काच नहीं ला सके। अंधे काच में तो छाया जैसा ही धुँधला-धुँधला दिखता था। मजबूरी जो न सुझाए थोड़ा है। एक साफ तगारी में पानी भरकर वे काच की जस-तस पूर्ति कर लेते थे! एक दिन उधार वसूल करने वाले दो-चार बोहरे हाजिर हो रहे हैं, यह खबर विश्वस्त नाई ने सवेरे ही दे दी थी! नंगे सिर रुआब नहीं रहता। जोर से पुकारने पर नौकर हाथ जोड़े उपस्थित हुआ तो उसे हुक्म दिया कि काच कहाँ है, वह झटपट काच लेकर आये। तब लड़के ने भोलेपन से जो सही बात थी, बता दी। झुककर संकोच के साथ जवाब दिया, 'हुजूर, काच तो पाडा पी गया।'

—तथाकथित बड़े आदमियों के व्यर्थ दिखावे पर कटाक्ष।

**छोरा ! थारी मां घर कर्‌यौ के खोटौ कांम व्हियौ। पाछी ले आवूं के उण सूं ई खोटौ।** ४७९०

छोकरे ! तेरी माँ ने दूसरा घर किया कि बुरा काम हुआ। वापस ले आऊँ कि यह उससे भी बुरा।

—कोई व्यक्ति किसी बिगड़े हुए काम को सुधारने की कोशिश में पहले से भी बड़ी चूक कर जाये, तब...!

—परंपरागत मर्यादा की दृष्टि से किसी असामाजिक काम को संशोधित करने की चेष्टा करना व्यर्थ है।

**छोरा ! थारौ पेट तौ बांकौ के ढाई सेर राबड़ी तौ इण में उळझाल्यूं।** ४७९१

छोकरे ! तेरा पेट तो बड़ा टेढ़ा-मेढ़ा है कि ढाई सेर दलिया तो इसी में डाल लेता हूँ।

दे.क.सं.४६२४

**छोरा ! पेट क्यूं छूटग्यौ के माटी खावूं।** ४७९२

छोकरे ! पेट क्यों छूट गया कि मिट्‌टी खाता हूँ।

—भूल चाहे जानकर की जाय या अजाने, उसका बुरा परिणाम तो भुगतना ही पड़ता है।

—अनभिज्ञता में भी किये हुए गलत काम का प्रभाव तो पड़ता ही है।

**छोरा ! बारै मत जाजै, बीजळी मार न्हाकैला के जाटां रा टाबर तौ बारै ई रमै है के अै तौ बीजळी रा ई मार्‌योड़ा है।** ४७९३

छोकरे ! बाहर मत जाना, बिजली मार डालेगी कि जाटों के बच्चे तो बाहर ही खेल रहे हैं कि ये तो बिजली के ही मारे हुए हैं।

—जो कोई बीमारी या दुर्घटना से बचने की खातिर अधिक सतर्कता बरतते हैं, वे ही ज्यादा उसकी गिरफ्त में आते हैं और जो बेधड़क घूमते-फिरते हैं, उनका कुछ भी नहीं बिगड़ता।

**छोरा री वेळा कांसी रौ थाळ बाज्यौ पण छोरी री वेळा छाजळौ ई नीं लाधौ।** ४७९४

छोकरे की वेला काँसी का थाल बजा पर छोकरी की वेला सूप भी नहीं मिला।

—हिंदुओं में एक प्रथा है कि पुत्र के जन्म पर काँसी की थाली बजाई जाती है, कभी-कभार तो परिजन अतिरेक खुशी में थाली फोड़ भी देते हैं। पर कन्या के जन्म पर सूप बजाते हैं।

—जिस बात से स्वार्थ सधता हो तो सभी खुशी के साथ अंगीकार करते हैं और जिससे स्वार्थ सधने की बजाय हानि हो तो सभी उसका तिरस्कार करते हैं।

**छोरी अर उखरड़ी बधतां कांई वार लागै।** ४७९५

छोकरी और घूरा बढ़ते देर नहीं लगती।

—छोटी बच्ची देखते-देखते कब बड़ी होकर ब्याह के योग्य हो जाती है पता नहीं चलता। और घूरा भी प्रतिदिन मामूली कचरा-गोबर डालते रहने से कब बड़े ढेर में तब्दील हो जाता है, इसका भी सुराग नहीं लगता।

—अवांछित चीजों की नाईं लड़कियाँ भी तेजी से बड़ी होती है, क्योंकि उनकी भी घर में कोई विशेष चाहना नहीं करता।

**छोरी अै! गांव में चौधर किणरी के वीरा पैलकाळै तौ खेत निपज्यौ सो म्हारै ही। अबकाळै बाजरी म्हारा काका रै वत्ती व्ही सो चौधर उणरै बंधगी।** ४७९६

ऐ छोकरी! चौधराहट किसकी है कि भैया पिछले वर्ष तो खेत में अधिक पैदावार हुई सो चौधराहट हमारी ही थी। इस वर्ष मेरे चाचा के बाजरी सबसे ज्यादा हुई सो चौधराहट उनके यहाँ चली गई।

—पहिले तो गाँव की चौधराहट प्राप्त करने के लिए अनाज अधिक पैदा करने की एक स्वस्थ प्रतियोगिता थी, पर अब तो जिसके हाथ में लाठी और संपदा है, उसका ही सत्ता पर अधिकार है। सत्ता मिलती नहीं हथियाई जाती है।

—किसी भी तरीके से हो जायज या नाजायज सत्ताधारी बदलते रहते हैं।

**छोरी अैड़ी भोळी कठै जकौ दूजां भेळी सूय जावै!** ४७९७

छोकरी ऐसी भोली कहाँ जो दूसरों के साथ सो जाये!

—अपने स्वार्थ या भले-बुरे को समझने योग्य बुद्धि हर व्यक्ति में होती है।

—जान-बूझकर अपना नुकसान कोई नहीं उठाना चाहता।

—आज-कल के कर्मचारी या नेता इतने भोले नहीं कि बिना रिश्वत के ही काम कर दें।

**छोरी ! कह ठाकर के बापजी म्हारै अेकली रै कह्यां कांई व्है, आखौ गांव कहसी तद ठाकर बाजौला।** ४७९८

छोकरी ! कहो मुझे ठाकुर कि हुजूर मुझ अकेली के कहे क्या हो, जब सारा गाँव कहेगा तब ठाकुर कहलाएँगे।

—एक व्यक्ति के अच्छे कहने से कोई आदमी अच्छा नहीं हो जाता, सभी लोग कहें तभी वह अच्छा कहलाने के योग्य है, वरना नहीं।

—किसी की डाँट-फटकार से राय नहीं बनती, राय तो अपने मन में स्वतः उपजती है।

**छोरी ! बाईसा कीकर पड़ग्या के कीं तौ धड़ा रौ ढाळ हौ अर कीं दौड़ण रौ ई मन हौ।** ४७९९

छोकरी ! बाईसा कैसे गिर पड़े कि कुछ तो टीले की ढलान थी और कुछ दौड़ने की इच्छा भी थी।

—किसी के बिगड़ने या पतित होने की जिम्मेवारी दूसरे पर नहीं थोपी जा सकती। व्यक्ति की मंशा और वैसा मौका हो तो वह स्वयं ही भ्रष्ट हो जाता है।

—किसी व्यक्ति के पतन का आधार, कुछ तो उसके भीतर ही मौजूद रहता है और कुछ बाहर की परिस्थितियों पर निर्भर करता है।

**छोरी वाळां रा हाथ हेटै इज व्है।** ४८००

बेटी वालों के हाथ सदा नीचे ही रहते हैं।

—लेने वाले का हाथ हमेशा ऊपर होता है और देने वाले का नीचे। बेटी वाले मौका आने पर उसके ससुराल वालों को कुछ-न-कुछ देते ही रहते हैं।

—लड़की वालों को हमेशा दबकर रहना पड़ता है।

**छोरू कुछोरू व्है पण माईत-कुमाईत नीं है।** ४८०१

पूत कपूत हो सकता है पर माईत-कुमाईत नहीं हो सकते।

माईत = माँ-बाप के लिए एक ही शब्द है, इसलिए मातृभाषाओं से ऐसे शब्द लेकर हिंदी को चाहिए कि वह अपना भंडार समृद्ध करे।

—छोटा व्यक्ति भूल करे तब भी बड़े आदमियों को उसे माफ कर देना चाहिए—इसी प्रसंग में इस उक्ति का प्रयोग होता है।

**छोरौ कठै के खांधा माथै।** ४८०२

छोकरा कहाँ कि कंधे पर।

—जिस व्यक्ति के कंधे पर ही बच्चा हो और वह दूसरों से दरियाफ्त करे कि बच्चा कहाँ है, तब वह हाथ का इशारा करके बताता है कि उसी के कंधे पर तो बैठा है।

—ऐसी अतिरेक सावधानी भी क्या काम की जो असावधानी से भी बदतर हो। बड़े व्यक्तियों से अकसर इस तरह की सावधानी-पूर्ण बातें होती रहती हैं।

—सर्व-व्यापी ईश्वर के लिए भी यह उक्ति घटित हो सकती है कि उसका अस्तित्व घट में होते हुए भी उसे बाहर खोजने का प्रयास किया जाता है।

**छोरौ खांधै अर जोवै कांकड़ में।** ४८०३

छोकरा कंधे पर और तलाश जंगल में।

कहावत संख्या ३२७३ के समान होते हुए भी इसकी भंगिमा कुछ और है। उदाहरण देकर बताना जरूरी है कि चोर या अपराधी पुलिस की निगाह में होते हुए भी अन्यत्र जोर-शोर से उसकी तलाश जारी रहती है।

—हिरण की नाभि में कस्तूरी बसी होती है, फिर भी वह उसकी सुगंध के पीछे भटकता-भटकता सारा जंगल छान मारता है। मनुष्य के लिए ईश्वर की भी यह स्थिति है। अंतरघट में होते हुए भी उसे मठ मंदिरों में तलाश करना पड़ता है।

**छोरौ बोरै आंगणौ तद आवै प्रांमणौ।** ४८०४

छोकरा बुहारे आँगन तब आये पाहुन।

—ऐसी मान्यता है कि नासमझ बच्चा अपनी मरजी से घर में झाड़ू लगाये तो मेहमान आते हैं।

—संभवतया बच्चे की अंतर्प्रज्ञा में भविष्य की भनक पड़ती हो।

# जं - ज

**जंगळ में मंगळ।** ४८०५

जंगल में मंगल।

—अच्छी संगति और मन-वांछित साधन हों तो जंगल में भी मंगल हो सकता है।

—मन की खुशी ही सबसे बड़ी खुशी है। कोई राज-महल में भी दुखी हो सकता है—बुद्ध की तरह। और जंगल में तपस्या करके मनुष्य के अंतिम लक्ष्य निर्वाण को भी प्राप्त हो सकता है।

**जंवाई अर झगड़ा किणी रा ई सगा नीं।** ४८०६

जमाई और झगड़ा किसी के भी अपने नहीं होते।

—न मालूम क्यों लोक-मान्यता की दृष्टि में जमाई और जम (यम) को बराबर माना है। संभवतया इसलिए कि माँ की गोद में बड़ी हुई बेटी को वह दूर खींच ले जाता है। इसलिए वह किसी का सगा नहीं होता। बेटी के ससुराल वालों की तरफ से कुछ-न-कुछ लेने की माँग हमेशा बनी रहती है।

—झगड़े में प्राण, समय, धन और शक्ति सबका क्षय होता है। वह हर व्यक्ति का दुश्मन है।

पाठा : **जंवाई अर झगड़ा किणी रै कांम रा नीं।**

**जंवाई घर सारू व्है, घर जंवाई सारू नीं।** ४८०७

जमाई घर के लिए होता है, घर जमाई के लिए नहीं होता।

—घर की हैसियत के अनुसार ही जमाई का आदर-सत्कार होना चाहिए न कि जमाई के ठाट-बाट की खातिर काफी खर्च किया जाय।

—हर काम अपनी सीमा के भीतर ही उपयोगी होता है।

**जंवाई रै घर में घोड़ौ, सासू हरणाटा करै।** ४८०८

जमाई के घर में घोड़ा और सास हिनहिनाहट करे।

—दूसरों के बल-बूते पर इतराने वाले व्यक्ति पर कटाक्ष।

—दूसरों की सफलता पर कोई खामखाह बौराने लगे, तब...।

—परिजनों की समृद्धि से हर व्यक्ति को खुशी होती है।

**पाठा : जंवाई घोड़ी चढ़ै, सासू हरणाटा करै।**

**जकौ ऊंट सींगड़ां री हर करै, वौ आपरा कांन ई गमावै।** ४८०९

जो ऊँट सींगों की लालसा करे, वह अपने कान भी गँवा बैठता है।

—जो व्यक्ति अपनी औकात भूलकर बड़ी वस्तु की कामना करे तो अपने पास की चीजों को भी गँवा देता है।

—अनुपयुक्त चीज को पाने की ललक में उपयुक्त चीज से भी हाथ धोना पड़ता है।

—जिस चीज की अपने संदर्भ में आवश्यकता न हो, उसे पाने की चेष्टा व्यर्थ है।

**जकौ थुड़सी वौ आरांम रौ आणंद पासी।** ४८१०

जो परिश्रम करेगा वह आराम का आनंद उठायेगा।

—मेहनत की वेला आराम करने वाला आखिर कष्ट पाता है।

—अथक मेहनत के बाद ही आराम करने की इच्छा होती है, तब उसका आनंद ही अपूर्व होता है।

**जग आखौ जीवै जित्तै, मरियां पछै मसांण।** ४८११

जिंदा रहते सारा संसार, मरने पर हाथ लगे मसान।

—मनुष्य की यह स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि वह जिंदा रहते सारा संसार हड़पना चाहता है, इसके विपरीत एक-मात्र विडंबना यही है कि उसकी सारी लालसाएँ श्मशान में बुझ जाती हैं।

—जीवित पुरुष के सामने सारा संसार बिछा है, किंतु मरने पर केवल मरघट हाथ लगता है।

**जग जीतणौ सोरौ पण मन जीतणौ दोरौ।** ४८१२

जग जीतना आसान पर मन जीतना मुश्किल।

—चाहे जीतकर, चाहे निर्वाण की नई राह बताकर संसार को जीतना आसान है, पर अपने मन को जीतना दुश्वार है, उसके सामने सिकंदर को भी पराजित होना पड़ता है।

—इस उक्ति को यों उलटकर भी प्रेषित किया जा सकता है कि अपने मन को न जीतने वाले ही दुनिया को जीतने की आकांक्षा रखते हैं।

**जग जीत्यौ रे कांणा, पगां हालै जद जांणां।** ४८१३

जग जीता रे काने, पाँवों चले तब जानें।

**संदर्भ-कथा** : किसी काने ने छल से किसी के यहाँ शादी का जुगाड़ बिठा लिया। बारात में काफी यार-दोस्तों को ले गया। जब दुलहन मंडप में आई तो पालकी में बैठकर। पूछने पर बताया कि रात-भर पेट में ऐसा दर्द हुआ कि वह मछली की तरह तड़पती रही। शादी का मुहूर्त टालना ठीक नहीं, इसलिए सखियाँ पालकी पर बिठाकर ही सारी रस्में पूरी करेंगी ! सो विवाह समाप्त होने के बाद दूसरे दिन जब दुलहन को पालकी में बिठाकर ही बैलगाड़ी में बिठाया तो दोस्तों ने उन्मादित होकर कहा—जग जीत्यौ रे कांणा। तब दुलहन की सखियों से भी रहा नहीं गया। वापस उतने ही जोर से बोलीं—पगां हालै जद जांणां। दुलहन दोनों पाँवों से पंगु थी। काने को एक आँख से तो दिखता था। पर दुलहन के दोनों पाँव बेकार थे।

—जब दो धोखेबाज परस्पर एक-दूसरे से ही धोखा करें तब कोई किसी को उलाहना देने योग्य नहीं रहता।

**जगत रौ चोर रोकड़ रौ रुखाळौ।** ४८१४

दुनिया भर का चोर नकदी का रखवाला।

—उस समाज की क्या दुर्दशा हो सकती है जब विकट चोर को खजांची का काम सौंपा जाय।

—आज-कल देश की राजनीति में ऐसा ही दौर चल रहा है। भगवान जाने इसका अंत क्या होगा ?

**जगती मोटी के भगती ।**– भी.२६३ ४८१५

**जगती बड़ी कि भगती ।**

गृहस्थ जो जगत् के भीतर है—वह बड़ा है या वह भक्त जो जगत् से बाहर है—वह बड़ा है। बहुत बड़ा प्रश्न है, जिसका उत्तर इस कथा में सन्निहित है।

**संदर्भ-कथा** : सिंहासन पर बैठते ही एक राजा को सनक सवार हुई कि वह हर किसी दरबारी से यह प्रश्न पूछने लगा कि जगती बड़ी कि भगती। दरबारियों ने एक ही जवाब दिया कि जब हुजूर ने सवाल किया है तो इसका जवाब देने की हिमाकत कैसे कर सकते हैं! हमारी ऐसी औकात कहाँ ? इसका उत्तर तो कोई पहुँचा हुआ संत या बेजोड़ पंडित ही दे सकता है। राजा दरबारियों के उत्तर से संतुष्ट हो गया। फिर उसने मुनादी करवा दी कि जो राजा के प्रश्न का सही उत्तर देगा, उसे आधा राज्य मिलेगा। उत्तर न देने पर शेष सारी उम्र कैद में बितानी पड़ेगी।

आधे राज्य का लोभ बहुत बड़ा था। सो बड़े-बड़े संत महात्माओं और धुरंधर पंडितों का मन विचलित हो गया! गर्व-गुमान में आते पर राजा को संतुष्ट नहीं कर सके! कई महात्माओं और पंडितों को हार माननी पड़ी! राज्य का बंदी-गृह छोटा पड़ने लगा। एक दिन एक साधु उल्का की नाईं दरबार में प्रकट हुआ। उसका तेज ऐसा कि राजा की नजर तक न टिके। विधाता ने वैसी पहली और अंतिम सूरत गढ़ी थी! अग्नि के समान दहकता भगवा वेश। भँवरों-सी काली जटा। चेहरे से सूरज की नाईं किरणें फूट रही थीं। राजा एकटक स्तब्ध-सा उसके चरणों की ओर देखता रहा। सहसा महात्मा के होंठ खुले, जैसे हवा स्वयं बोल रही हो, 'यदि अपने प्रश्न का सही उत्तर पाना चाहते हो तो छह महीने तक साधु का वेश धारण करके मेरे साथ रहना होगा।' साधु के वचनों का राजा पर जादू-सा प्रभाव पड़ा। इस पहुँचे हुए महात्मा की संगत सिंहासन से बड़ी है। और छह महीने तो यों चुटकियों में बीत जाएँगे। सो सबसे बड़े राजकुँअर को राज्य सौंपकर वह साधु के साथ चलने को तैयार हो गया। तब रानी अड़ गई कि जहाँ राजा जाएगा, वह साथ रहेगी! जहाँ राजा की छाया पड़ेगी, वही उसका राज्य होगा। साधु की स्वीकृति मिलते ही राजा-रानी दोनों उसके साथ हो गये।

चलते-चलते पाँच महीने व्यतीत हो गये! साधु सब तरह के उपदेश देता, ज्ञान की बातें करता—आत्मा और परमात्मा की! पर राजा का प्रश्न सुनकर मौन हो जाता। मुस्कराकर कहता—अभी तो एक महीने की अवधि है, उतावले मत होओ, तुम्हें अपने आप उत्तर मिल

जाएगा। जंगल में कंद-मूल खाते-खाते वे आगे बढ़ते रहे। राजा-रानी दोनों ही खुश थे। दरबार के बाहर एक नये ही अनुभव से आल्हादित !

सवेरे की वेला वे एक नये राज्य में पहुँचे ! विभिन्न श्रीमंतों व राजकुँवरों से दरबार खचाखच भरा था ! राज्य कन्या के स्वयंवर में सैकड़ों अमीर-उमराव आये थे। राजकुँवरी हीरों का हार लेकर सखियों के साथ आगे बढ़ी ! किसी भी सूरत ने उसे आकर्षित नहीं किया ! आखिर एक सुंदर सलौने संन्यासी पर उसकी नजर अटकी। कुछ क्षण विचार करके राजकुँअरी ने हार उसके गले में डाल दिया। संन्यासी का मुँह क्रोध से दीप्त हो उठा। उसने अदेर हीरों का हार तोड़कर फेंक दिया। और अपनी राह लगा। राजकुँअरी भी उसके पीछे चल दी। राजा के आदेश से सिपाही संन्यासी को पकड़ने लगे तो राजकुँअरी ने उन्हें मना कर दिया। राजा-रानी के चरणों में दंडवत् करके बोली—मैंने जिसे वरण कर लिया सो कर लिया। स्वयंवर की मर्यादा मुझे भी रखनी है और आपको भी। फिर राजा-रानी ने भीगी आँखों से अपनी इकलौती बेटी को विदा दी।

सनकी राजा को पहुँचे हुए संत ने इशारा किया तो वे भी साथ हो लिये। आगे दोनों पति-पत्नी और पीछे राजा-रानी और संत ! पति ने राजकुँअरी को धैर्य-पूर्वक बहुत समझाया पर राजकुँअरी नहीं मानी ! उसका तो बस एक ही उत्तर था कि जिस तरह रात चंद्रमा के साथ रहती है और धूप सूर्य के साथ ही जन्म लेती है और सूर्य के अस्त होते ही अंतर्धान हो जाती है, उसी प्रकार वह वरण किये पति के साथ रहेगी, साथ मरेगी।

कड़ाके की सर्दी में वे पाँचों विचित्र प्राणी एक ऐसे जंगल से गुजरे कि उन्हें कंद-मूल भी खाने को नहीं मिला। बाहर ठिठुरन और भीतर भूख की ज्वाल। चलते-चलते अँधेरा होते ही एक घने वृक्ष के नीचे पाँचों ने आश्रय लिया। उस वृक्ष पर चकवा-चकवी के साथ तीन बच्चे भी रहते थे ! वैसे ही पुष्ट और वैसी ही पाँखों वाले ! अपने आश्रितों को सर्दी में काँपते देखा तो चकवा कहने लगा—धिक्कार है अपने गृहस्थ जीवन को जो इस तरह चुपचाप इन्हें थरथराते देख रहे हैं। मैं अब ज्यादा बर्दाश्त नहीं कर सकता, पास ही एक महात्मा धूनी ताप रहे हैं, मैं चोंच में जलती लकड़ी लेकर आ रहा हूँ। चकवी देखती रही और चकवा फुर्र से उड़ गया। कुछ ही देर में उसने अपनी चोंच से जलती लकड़ी आश्रितों के पास डाल दी। स्वयंवर वाली राजकुँअरी ने लकड़ियाँ बीनकर आग लगाई। तापने से सबको राहत तो मिली पर भूख और ज्यादा सुलग उठी। सबकी इच्छा हुई कि जलते अंगारों को ही निगल जाएँ। तभी अचीता

कांड हुआ। एक के बाद एक पक्षी धड़ाम से अग्नि में गिरते रहे। बिना कुछ उपकार जताए पाँचों पक्षी अग्नि में सिक गये! पत्नी बनी राजकुँअरी ने सबसे पहिले राजा के साथ वाले संन्यासी को सिका हुआ पक्षी हाजिर किया, फिर राजा-रानी को। अपने पति को खिलाकर अंत में स्वयं ने पाँचवा पक्षी खाया!

फिर सपने से भी विचित्र एक घटना हुई। बिना बादलों के बिजली कड़की। अमृत की फुहार पक्षियों की बिखरी पाँखों पर पड़ी। चकवा-चकवी का पूरा परिवार चहकता हुआ जिंदा हो गया! महात्मा ने राजा की ओर देखा और पूछा—अब तो आपके प्रश्न का उत्तर अपने-आप समझ गये होंगे। राजा कुछ बोले उसके पहिले ही पति बना संन्यासी बीच ही बोला, 'आश्चर्य की बात कि इस अपूर्व घटना से मेरी शंका का समाधान भी हो गया, जो बरसों से शास्त्रों को टटोलने से भी नहीं हुआ! मैंने ऐसी ही पत्नी के लिए व्रत लिया था सो आज पूरा हुआ! मेरा संन्यासी जीवन सार्थक हुआ। अब मेरा गृहस्थ जीवन भी सार्थक होगा। मुझे सपने में भी आशा नहीं थी कि मेरी तपस्या का यह फल मिलेगा।'

राजा ने अपने प्रश्न का ऐसा सही उत्तर पाकर महात्मा से आधा राज्य सँभालने की विनम्र प्रार्थना की। तब महात्मा ने मुस्कराते कहा, 'आधा राज्य पाने की लालसा बहुत बड़ी है। पर मैं लालसाओं की वह उम्र पार कर चुका हूँ! मेरे लिए तो वही आधा राज्य होगा जब तुम बंदी बनाये सभी परास्त व्यक्तियों को छोड़ दोगे। जाओ अपना राज्य अच्छी तरह सँभालो। दूसरों से प्रश्न पूछने की बजाय अपने भीतर उत्तर की तलाश करो।' फिर उसने नव-दंपत्ति को आशीर्वाद दिया। और चकवों को गले लगाते हुए कहा, 'ऐसा गृहस्थाश्रम छोड़कर मैं किसी भी तीर्थ या धाम पर नहीं जाऊँगा। जब तक जिंदा रहूँगा, इसी पेड़ के नीचे मेरा आश्रम रहेगा!'

—अपनी-अपनी ठौर सभी बड़े हैं—जगती की ठौर जगती और भगती की ठौर भगती।

**जग-बत्तीसी चढ़ै सो डूबै।** ४८१६

जग-बत्तीसी चढ़े वह डूबे।

—जिस व्यक्ति की बदनामी लोगों के दाँतों पर चढ़ जाती है, वह मरे हुए के समान है।

—मनुष्य को चाहिए ऐसे किसी छोटे-बड़े काम से बचे, जिससे बदनामी की संभावना हो।

**जग रूसै तौ रूसै, रांम रूस्योड़ौ भूंडौ।** ४८१७

जग रूठे तो रूठे, राम रूठा हुआ बुरा।

—बस, एक सृष्टि-कर्ता के अलावा सारा संसार रूठ जाय तो कोई परवाह नहीं।

—इस उक्ति का दूसरा पहलू और भी विचित्र है कि सृष्टि-कर्ता के न रूठने पर तो कोई अन्य व्यक्ति सपने में भी नहीं रूठेगा! उसके रूठने पर ही दुनिया रूठती है।

**जग सूं जीत्यौ पण पेट सूं पड़्यौ।** ४८१८

जग जीत लिया पर पेट से परास्त हुआ।

—सिकंदर की नाईं कोई व्यक्ति चाहे तो उससे भी बड़ा साम्राज्य स्थापित कर सकता है पर अंतत: अपने अंश से जन्मी संतान के आगे किसी का वश नहीं चलता, उसे हार माननी ही पड़ती है।

—संतान किसी भी शूरवीर से जो समझौता न कराये थोड़ा है।

**जगैरै आयोड़ी घोड़ी व्है ज्यूं कांई करै?** ४८१९

ऋतु आई घोड़ी की नाईं क्या कर रहे हो?

—घोड़े की कामना से उत्तेजित घोड़ी को 'जगैरै' आना कहते हैं।

—जो व्यक्ति ऋतु आई घोड़ी की नाईं बहुत ढीठ होकर जल्दबाजी करे उसके लिए।

**जच्चा जिणै जित्ता धरती झेलै कोनीं।** ४८२०

जच्चा से जन्में सब जीवों को धरती नहीं झेल सकती।

—यहाँ जच्चा से तात्पर्य मनुष्य, समस्त प्राणी व समूची वनस्पति से है। यदि वनस्पति से उत्पन्न हर बीज धरती में उगने लगे, हर प्राणी का हर छौना जीवित रहे तो धरती पर एक अंगुल भी जगह खाली न बचे। इतनी लंबी-चौड़ी धरती निवास के काबिल नहीं रहे।

**जच्चा जिसा ई बच्चा।** ४८२१

जैसी जच्चा, वैसा ही बच्चा।

दे.क.सं. ३७७६

**जच्चा में जोर नीं व्है तौ दायण बापड़ी कांईं करै !** ४८२२

जच्चा में जोर न हो तो दाई बेचारी क्या करे !

—दोनों ओर के सहयोग से ही कोई काम सफल होता है।

—जो स्वयं अपनी मदद करता है तो दूसरे भी उसका साथ देते हैं।

**पाठा : जच्चा रै पीड़ व्हियां टाळ, दायण रौ कीं सांधौ लागै नीं।**

**जिणण वाळी में ई जोर नीं व्है तौ दायण कांईं करै।**

**जट खोस्यां किसा ऊंट मरै।** ४८२३

जट खोसने से ऊँट थोड़े ही मरते हैं।

जट = ऊँट या बकरी के बाल।

—जिसके पास किसी भी वस्तु या संपत्ति का बाहुल्य हो,उससे कुछ छीन भी लिया जाय तो कुछ फर्क नहीं पड़ता।

—गँवार या जंगली आदमी को मामूली कष्ट या दंड भी दे दिया जाय तो उसका कुछ नहीं बिगड़ता।

**जटा बधायां हर मिळै तौ बड़ला सुरग सिधावै क्यूं नीं ?** ४८२४

जटा बढ़ाने से हरि मिले तो बरगद स्वर्ग सिधाये क्यों नहीं ?

—आम प्रचलन की इस उक्ति और कबीर के कथन का कितना मेल है :

**मूंड मुंडायां हरि मिळै, सब कोई लेय मुंडाय।**
**बार-बार के मूंडनै, भेड़ न बैकुंठ जाय ॥**
**पाहन पूजै हरि मिळै तौ मैं पूजूं पहार।**
**याते तो चाकी भली, पीस खाय संसार ॥**

—परंपरागत रूढ़ियों के विरुद्‌ध लोक-स्वर और औगड़ बाबा कबीर की वाणी में कैसा विलक्षण साम्य है।

—परंपरागत रूढ़ियों का अतिशय विवेक के साथ ग्रहण या परित्याग करना चाहिए।

**जटा री मरजाद महादेव बाबौ राखै।** ४८२५

जटा की मर्यादा महादेव बाबा रखे।

—जटाधारी साधुओं से जाने-अजाने कोई दुष्कर्म न हो जाए,उसकी जिम्मेवारी शंकर भगवान सँभालेंगे।

**जटियां री छोरी, जड़ाव बाई नांव।** ४८२६

जटियों की छोकरी और जड़ाव बाई नाम।

—नाम के विपरीत वजूद।

—किसी मनुष्य के व्यक्तित्व और आचरण में समानता न हो,तब!

**जटियां रै कोस्यां ढोर नीं मरै।** ४८२७

जटियों के कोसने से ढोर नहीं मरते।

—भाँबी और जटिये मरे पशु की खाल से ही कमाई करते हैं। जितने अधिक पशु मरें,उन्हें इतना ही अधिक लाभ है! उनकी बद्दुवा से पशु मरने लगें तो एक भी पशु जीवित न रहे।

—दुष्ट व्यक्ति की कामना-मात्र से किसी का बुरा नहीं होता।

**जटिया रै घर चंदण री मोगरी!** ४८२८

जटिये के घर चंदन की मोगरी!

मोगरी = गीले कपड़े या गीली चमड़ी को कूटने के लिए जो डंडा काम आता है। कहाँ गीले चमड़े की बदबू और कहाँ चंदन की खुशबू।

—किसी हीन व्यक्ति के जाल में कोई सज्जन व्यक्ति फँस जाए,तब।

—किसी अधम आदमी से सुंदर व शालीन औरत का गठबंधन हो,तब।

**जटे मरे जटे बळे।**–भी.२६४ ४८२९

जहाँ मरते हैं, वहीं जलते हैं।

—गाँव के मुर्दे को गाँव ही में जलाते हैं,दूसरे गाँव में नहीं।

—कोई भी दुष्ट व्यक्ति जहाँ बदमाशी करेगा,वहीं पिटेगा या सजा पाएगा,अन्यत्र नहीं।

**पाठा : जठै मरै उठै ई बाळै।**

**जठा लग सांस, तठा लग आस।** ४८३०

जहाँ तक श्वास, तब तक आस।

—आदमी अंतिम श्वास तक कुछ न-कुछ आशा लगाये रहता है। मृत्यु के साथ ही आशा मरती है, पहिले नहीं।

—जब तक श्वास की प्रक्रिया मौजूद है आदमी को जीने की आशा रहती है।

**पाठा : जद लग सांसा तद लग आसा।**

**जठी नै बायरौ बाजै, उठीनै ऊफण लेवणौ।** ४८३१

जिधर रहे हवा का रुख, ऊधर ही रखो अनाज का मुख।

—अनाज के भीतर मिले भूसे को दूर करने के लिए, हवा का सहारा लिया जाता है। वजनी दाने तो सीधे नीचे गिरते हैं और हलका भूसा हवा के जोर से दूर उड़ जाता है। यह कृषि की एक विशिष्ट प्रक्रिया है।

—अवसर का लाभ उठाने वाले व्यक्ति के लिए। अवसरवादी।

**जठै अकलां रा तोटा, धमाधम बाजै सोटा।** ४८३२

जहाँ अक्कल का टोटा, धमाधम बजे सोटा।

—अशिक्षित या गँवार व्यक्ति बात-बात में झगड़े की खातिर आमादा हो जाते हैं।

—गँवारों का मुख्य काम है लड़ना।

**जठै कांम वठै रांम।** ४८३३

जहाँ काम, वहीं राम।

—इस छोटी-सी उक्ति में श्रम का कितना माहात्म्य अंकित हो गया है।

—ईश्वर या खुदा न मठ-मंदिरों में है, न गिरजाघरों में और न मस्जिदों में। उसका निवास वहीं है जहाँ मनुष्य की देह से पसीना टपकता है।

—मनुष्य के जीवन में श्रम का सर्वोपरि ऐतिहासिक महत्त्व है, जिसके फलस्वरूप विकास के दौर में वह पशु से मनुष्य बना है। जब चार पाँवों की बजाय दो पैरों पर वह तनकर खड़ा हुआ है। मनुष्य की प्रगति के पथ पर बढ़ाया हुआ वह पहिला चरण था।

**जठै खळ-गुळ अेकण भाव, उठै रैवण रौ नीं लावौ नीं साव।** ४८३४

जहाँ खली-गुड़ एक समान, वहाँ रहना सरासर हराम।

दे. क.सं. २७९४

**जठै खावै उठै ई ठीकर भांगै।** ४८३५

जहाँ खाये वहीं के बासन तोड़े।

दे.क.सं.२९७३

**जठै गांव व्है, वठै गळियां ईं व्है।** ४८३६

जहाँ गाँव, वहाँ गलियाँ।

—जहाँ गाँव है वहाँ विभिन्न प्रकार की छोटी-बड़ी, अच्छी-बुरी गलियाँ भी है। जिन में हर किस्म के लोग रहते हैं।

—मनुष्य की बस्ती जो दुष्कर्म का स्थल है, वहाँ बचाव की गलियाँ भी हैं।

मि.क.सं.३३९१

**जठै चालै लट्ठ, वठै केई चित-पट्ट।** ४८३७

जहाँ चलें लट्ठ, वहीं बहुतेरे चित-पट्ट।

—भला लाठी के सामने कौन टिक सकता है। यहाँ लाठी प्रतीक है शक्ति व सत्ता की।

—जिसके हाथ में शक्ति है, उसके लिए सभी रास्ते खुले हैं।

**जठै चुग्गौ, वठै ई चोट।** ४८३८

जहाँ चुग्गा, वहीं चोट।

दे.क.सं.४४२२

**जठै जाय भूखौ, उठै पड़ै सूखौ।** ४८३९

जहाँ जाये भूखा, वहाँ पड़े सूखा।

—भूखा व्यक्ति अपनी उदर-पूर्ति के लिए जहाँ-जहाँ जाता है वहीं अकाल पड़ जाता है! दुर्भाग्य कहीं भी पीछा नहीं छोड़ता, वह छाया की नाईं उसके साथ लगा रहता है।

—जब कोई व्यक्ति किसी के यहाँ कुछ माँगने जाय और खाली हाथ लौटे, तब...।

—जरूरतमंद आदमी कहीं भी आसानी से अपनी जरूरत मुताबिक चीजें न पाये, तब...।

**जठै जाय 'लूखौ', तठै सरवर सूखौ।** ४८४०

जहाँ जाय 'रूखा' वहीं सरवर सूखा।

—यहाँ 'रूखे' का अर्थ है शुष्क भाग्य वाला। जो नाम के साथ जुड़ गया है।

—आसन्न विपदाएँ अभागे से आगे दौड़ती हैं।

—अभागा कहीं भी जाए उसके साथ दुख लगा ही रहता है।

**जठै जुड़ै रुजगार, उठै ई घर-बार।** ४८४१

जहाँ जुड़े रुजगार, वहाँ बसे घर-बार।

—जहाँ कमाई का अवसर और साधन उपलब्ध हो वहीं घर, वहीं बार और वहीं परिवार—चाहे अपनी जन्मभूमि हो, चाहे दिसावर।

—जन्मभूमि के प्रति ममता व्यर्थ है जहाँ सुख-सुविधाएँ सहज उलब्ध हों, वही जन्मभूमि है—वर्तमान पीढ़ी की नहीं तो अगली तीन-चार पीढ़ियों की।

**जठै जोवै भरी परात, उठै ई गावै सगळी रात।** ४८४२

जहॉ देखे भरी परात, वहीं गाये सारी रात।

—जहाँ कहीं भी खाने-पीने का योग बने, वहीं स्वार्थी तत्काल चिपक जाता है। उसे किसी से सच्ची मित्रता नहीं होती, मतलब और स्वार्थ ही उसके गहरे दोस्त होते हैं।

—मुफ्त के माल पर जिस चटोरे की नजर होती है, वह वहीं घुल-मिल जाता है।

**पाठा : जठै देखै तवा-परात, वठै नाचै आखी रात।**

**जठै जोवौ कागला तौ सगळै काळा इज व्है।** ४८४३

जहाँ देखो कौवे तो सर्वत्र काले ही होते हैं।

दे.क.सं.२१०८

**जठै टाबर उठै भूख, जठै माया उठै निपूत।** ४८४४

जहाँ बच्चे वहाँ भूख, जहाँ माया वहाँ सूनी कूख।

दे.क.सं.४३८४

**जठै तिणकौ नीं जावै, उठै हळ ठरकावै।** ४८४५

जहाँ तिनका न जाये, वहाँ हल ठसाये।

—जो व्यक्ति अपने स्वार्थ की खातिर जघन्य और क्रूरतम काम करने को उद्यत हो जाये, जहाँ तिनका जाने की ठौर नहीं वहाँ पूरा हल धँसाने की चेष्टा करे।

—जहाँ अकिंचन उपचार से बात बन जाए वहाँ असाधारण उपाय करने की कुचेष्टा करना।

**जठै दांत वठै मक्की कोनीं अर जठै मक्की वठै दांत कोनीं।** ४८४६

जहाँ दाँत वहाँ मक्का नहीं जहाँ मक्का वहाँ दाँत नहीं।

दे.क.सं.४३८४

**जठै नीं पूगै रवि, उठै पूगै कवि।** ४८४७

जहाँ न पहुँचे रवि, वहाँ पहुँचे कवि।

—चंद्रमा की चाँदनी और सूर्य की किरणें जहाँ कठिनाई से पहुँचती हैं, वहाँ कवि क्षण भर में पहुँच जाता है।

—कवि की कल्पना के लिए ब्रह्मांड का कोई क्षेत्र दुर्गम नहीं।

—कवि-कर्म की प्रशंसा के लिए यह उक्ति है।

**जठै पड़ै मूसळ, वठै खेमकूसळ।** ४८४८

जहाँ पड़े मूसल, वहीं क्षेम कुशल।

मूसळ = ओखली में अनाज कूटने का उपकरण। यहाँ सामर्थ्य के रूप में प्रयुक्त हुआ है।

—जहाँ कोई शक्तिशाली या समर्थ व्यक्ति पहुँचता है वहीं उसे पूरी सफलता मिलती है। सर्वत्र अमन-चैन कायम हो जाता है।

—आतंकवादी का डंका सब जगह बजता है।

**जठै पांणी बतावै, उठै कादौ ई नीं लाधै।** ४८४९

जहाँ पानी बताये, वहाँ कीचड़ भी न मिले।

—गप्पी व्यक्ति के लिए, जिसकी बात का कोई ठिकाना नहीं। जहाँ दिन बताये वहाँ अमावस की रात ही मिलती है।

—सरासर झूठे व्यक्ति के लिए जो निमंत्रण देकर भी भूखा रखे।

**जठै 'भागां' भागी जाय, वठै भाग अगावू जाय।** ४८५०

जहाँ 'भागाँ' दौड़ी जाए, वहीं दुर्भाग्य आड़े आए।

'भागां' अभागी लड़की के लिए संबोधन।

—अभागे व्यक्ति की यही विडंबना है कि विपदाएँ और परेशानियाँ उसकी हरावल में चलती हैं।

—अभागे की राह में कदम-कदम पर गड्ढ़े और काँटे मिलते हैं।

**जठै मिळै दो, उठै ई रह्या सो।** ४८५१

जहाँ मिले दो, वहीं रहें सो।

—जहाँ दो रोटियाँ खाने को मिल जाएँ, आलसी आदमी वहीं सो जाता है।

—जिस व्यक्ति को केवल मुफ्त के भोजन की ही चिंता लगी रहती है, उसके लिए...।

—किसी भी प्रकार की कामना व लालसाओं से रहित निठल्ले व्यक्ति पर कटाक्ष।

**जठै मेह बरसैला, वठै घास ऊगैला।** ४८५२

जहाँ मेह बरसेगा, वहाँ घास उगेगा।

—कार्य-कारण का परस्पर अटूट संबंध होता है। जहाँ आग होगी, वहाँ धूआँ भी होगा। जहाँ मेह बरसेगा, वहाँ घास उगेगी।

—अच्छाई का परिणाम हमेशा अच्छा ही होता है।

—जहाँ ईश्वर की अनुकंपा होती है, वहाँ सब ठाट विद्यमान रहते हैं।

**जठै सेर, वठै सवा सेर, जठै सौ वठै सवा सौ।** ४८५३

जहाँ सेर, वहाँ सवा सेर, जहाँ सौ वहाँ सवा सौ।

—किसी भी उत्सव या आयोजन में खर्च का सही अनुमान नहीं रहता। जो भी खर्च हो जाय, उसके लिए सहर्ष तैयार रहना चाहिए।

—विवाह जैसे मांगलिक अनुष्ठानों में जो भी खर्च हो जाय वह संगत है।

**जड़ काटै अर पांणी पावै।** ४८५४

जड़ काटे और पानी पिलाये।

—किसी पेड़-पौधे की जड़ काटकर उसे पानी पिलाने का निष्फल प्रयास, महामूर्ख व्यक्ति के अलावा कोई नहीं कर सकता।

—जिस बावरे मनुष्य की कार्य-प्रणाली में किसी भी प्रकार का ताल-मेल न हो।

**जड़ खेजड़ी री, धक्कै कांईं वाढ़ जोवै !** ४८५५

जड़ खेजड़ी की है, आगे काटकर क्या देख रहे हो !

खेजड़ी = शमी वृक्ष।

—राजस्थान में खेजड़ी बहुतायत से मिलती है। पानी के अभाव में इसकी जड़ें चारों ओर बहुत गहरी जाती हैं। जो अनभिज्ञ व्यक्ति आगे-से-आगे जड़ें काटकर पड़ताल करना चाहता है कि जड़ें कहाँ तक गई हैं,उसे निष्फलता ही हाथ लगेगी।

—सुदृढ़ काम को निर्मूल करना बहुत कठिन कार्य है।

**जड़ सूं ई संजीवण व्है।** ४८५६

जड़ से ही जीवन होता है।

—निर्जीव से ही जीवन उत्पन्न होता है और जीवन से ही विराट का सृजन होता है। प्रारंभ में बरगद का बीज अंकुरित होने से पहिले साफ दिखलाई भी नहीं पड़ता,पर समय पाकर वह इतना घना और विशाल हो जाता है कि नजर में भी नहीं समाता ! भ्रूण से ही शिशु का जन्म होता है और शिशु ही बढ़ते-बढ़ते भीम हो जाता है।

**जड़ी बूंटियां री जाच वेदजी नै।** ४८५७

जड़ी-बूटी की परख वैद्य को।

—जो व्यक्ति जिस काम में माहिर होता है,उस काम की सही पहिचान उसे ही होती है।

—प्रवीण व्यक्ति को ही अपने काम की नस-नस का अता-पता रहता है।

**जड़ौ कोनीं हालै, मड़ौ हाल जा।** ४८५८

मुर्दे में हरकत हो सकती है पर जड़मति में नहीं।

—मूर्ख व्यक्ति पत्थर और मुर्दे से भी गया-गुजरा होता है।

—महा-मूर्ख व्यक्ति के चरित्र पर कटाक्ष।

**जणा-जणा री लाकड़ी, अेकण रौ भारौ।** ४८५९

जने-जने की लकड़ी और एक व्यक्ति का गट्ठर।

—यदि एक-एक लकड़ी का सहारा किसी जरूरतमंद को दिया जाय तो उसके पास लकड़ियों का भरपूर गट्ठर हो सकता है।

—यदि समाज के कई सदस्य किसी असहाय की सहायता करने को उत्सुक हो जाएँ तो उसका बेड़ा पार हो सकता है।

—मानवीय समाज में पारस्परिक सहयोग से ही सारा काम चलता है।

**जणा-जणा रौ मन राखतां, वैस्या रैगी बांझ।** ४८६०

जन-जन का मन सँभालते, वेश्या रह गई बाँझ।

—वेश्या-जीवन की अजीब विडंबना है कि धन अर्जित करने के लिए वह हर ग्राहक से प्रेम का दिखावा करती है और यही अभिनय करते-करते वह निःसंतान ही रह जाती है। प्रेम की ऐसी निष्फलता अन्यत्र दुलर्भ है।

—जो व्यक्ति अनेक को खुश रखना चाहता हो, उससे एक भी खुश नहीं रहता, उसके सारे प्रयास व्यर्थ जाते हैं।

**जणाने घेर मांळ, जणाने घेर काळ नीं।**– भी.२६५ ४८६१

जिनके घर रहँट होता है उनके घर अकाल नहीं पड़ता।

—रहँट के कुएँ से फसल की समय-समय पर सिंचाई हो जाती है, इसलिए अकाल का कोई प्रभाव नहीं होता। जिसके खेत पर अपना रहँट हो, वह अकाल की परवाह नहीं करता।

—उचित साधन हों तो कोई काम रुका नहीं रहता।

**जणै-जणै रा माथा फोड़ै अर नांव प्रेमाराम।** ४८६२

जन-जन के सिर फोड़े और नाम प्रेमाराम।

—नाम के विपरीत गुण।

**जतनां दई जमीजै।** ४८६३

यत्न से दही जमता है।

—यत्न-पूर्वक किये हुए काम में सफलता मिलती ही है।

—मनुष्य को चाहिए कि हर काम यत्न-पूर्वक करे।

**जतरु काम थावानू वतरु करवानू।**– भी. २६६ ४८६४

जितना काम हो सके, उतना ही करना चाहिए।

—इस उक्ति में रंचमात्र भी जटिलता नहीं है, फिर भी कितनी मार्मिक, पारदर्शी और व्यापक है। ऐसी सरल और गहरी उक्तियाँ आदिवासी जीवन में ही संभव हैं।

—राजा हो, धनाढ्य हो, उच्चतम अधिकारी हो चाहे गरीब हो अपने हाथ से जितना संभव हो सके उतना काम अवश्य करना चाहिए।

—काम करने का अपना महत्त्व, अपनी गरिमा और अपना ही आनंद है, उससे गौरव घटता नहीं, बढ़ता ही है।

—जो काम स्वयं कर सके उसे दूसरों से करवाना उचित नहीं।

**जती है तौ जतन क्यूं ?** ४८६५

यती है तो यत्न क्यों ?

—यदि वास्तव में कोई यती है तो वर्जित काम से बचने की, दूर भागने की या अतिरिक्त सतर्कता बरतने की क्या जरूरत है ? दैनंदिन व्यवहार में उसे नितांत सहज होना चाहिए। सहज होना ही सबसे ज्यादा मुश्किल है।

—सच्चे साधु को कृत्रिम आचरण, कृच्छ-साधन या हठ-योग करने की कोई आवश्यकता नहीं।

**जथा नांव तथा गुण।** ४८६६

यथा नाम तथा गुण।

—जैसा नाम वैसा ही गुण।

—नाम के समान व्यक्तित्व होने में ही नाम की सार्थकता है।

**जथा राजा तथा परजा।** ४८६७

यथा राजा तथा प्रजा।

—सामंती काल में जब एक व्यक्ति का ही समस्त राज्य पर आधिपत्य रहता था, तब यह उक्ति काफी-कुछ प्रासंगिक थी। राजा अपने गुण-अवगुणों के अनुसार प्रजा के स्वभाव को सख्ती से ढाल सकता था। अब जब कि प्रजा नुमाइंदों के रूप में सत्ताधारियों को चुनने लगी है तो यह उक्ति उलट गई है—जथा परजा तथा राजा। प्रजा का जैसा चरित्र होगा, वैसे ही उसके प्रतिनिधि होंगे।

—जैसा स्वामी वैसा सेवक।

**जद आपरौ मन ई बस में नीं तौ दूजां री कुण साख भरै।** ४८६८

जब अपना मन ही वश में नहीं तब दूसरों की कौन जिम्मेवारी ले सकता है।

—जब अपने मन पर ही अपना नियंत्रण न चले तो दूसरों को सुधारने या उनका हृदय परिवर्तन करने का प्रयास निरर्थक है।

—पहिले अपने मन पर अंकुश रखो फिर दूसरों के सुधार की बात सोचो।

**जद आवै संतोख धन, सै धन धूड़ समांन।** ४८६९

जब आये संतोष धन, सब धन धूल समान।

—लालसाओं और संचय का तो कोई अंत ही नहीं है। मनुष्य यदि हजार बरस भी जीये वह संचय व राज्य लिप्सा से विमुख नहीं हो सकता, तब जरूरतों की पूर्ति के बाद संतोष धारण करना ही सर्वोत्तम दर्शन है। जो नितांत व्यावहारिक है, पर मनुष्य ने अपने ही जाल में फँस कर इसे असंभव बना दिया है।

**चाह गई चिंता मिटी, मनवा बेपरवाह।**
**जाकौ कुछ ना चाहिए, वौ ही शाहंशाह॥**

**जद ऊखळ में दीन्हौ माथौ तौ मूसळ रौ कांईं सांधौ!** ४८७०

जब ओखली में दिया सर तो मूसल से क्या डर!

—आधुनिक तकनीकी विकास के फलस्वरूप, चाकी, ओखली-मूसल, चरखा इत्यादि उपकरण शहरों के लिए अप्रासंगिक होते जा रहे हैं। इसलिए महानगरों के पाठकों की खातिर कुछ व्याख्या करनी आवश्यक है। ओखली पक्के पत्थर में खुदी हुई घर के आँगन में गाढ़ दी जाती है। लकड़ी के मूसल से भीगे अनाज को कूटकर, तत्पश्चात् पानी में उबाल कर उसका व्यंजन बनाया जाता है।

—जब किसी व्यक्ति ने जान-बूझकर ओखली में अपना सिर दे दिया तो उसे मूसल की चोटों की परवाह नहीं करनी चाहिए।

—जो व्यक्ति अपनी इच्छा से आफत मोल ले तो उसे परिणाम का सामना करने के लिए भी तैयार रहना चाहिए।

—मनुष्य जीवन मिला है तो संघर्ष का सामना करना चाहिए।

पाठा : ऊखळ में माथौ दियां उपरांत धमकां रौ कांई डर ।

**जद कद दिल्ली तंवरां ।** ४८७१

जब-तब दिल्ली पर तँवर ।

—अर्जुन के पौत्र राजा परीक्षित से दिल्ली पर तँवर या तोमर जाति के क्षत्रियों का राज्य रहता आया है । कभी-कभार कोई दूसरी जाति के क्षत्रिय दिल्ली पर राज्य स्थापित कर लेते तो कुछ वर्ष बाद फिर तँवर दिल्ली पर कब्जा कर लेते थे ।

—अब इस उक्ति का प्रयोग आशा के प्रसंग में किया जाता है कि वह बलवती होती है,उसका कभी अंत नहीं होता ! हताश व्यक्ति समय अनुकूल होने पर फिर से प्रतिष्ठित हो सकता है ।

**जद खांधै राळी झोळी तद कांई बांमण कांई कोळी ?** ४८७२

जब कंधे पर डाली झोली, तब क्या बामन क्या कोली ?

—जब झोली लेकर भीख माँगने जैसा घिनौना काम शुरू कर दिया तो फिर छूआछूत की क्या दरकार ! बामन,कोली,हरिजन,भाँबी,बलाई सभी उसके दाता हैं ।

—यदि सामाजिक मर्यादा का उल्लंघन करके लीक छोड़ ही दी है तो फिर कैसी संकोच !

**जद मिनकी बैठी ढोळै तद ऊंदर मिसरी घोळै ।** ४८७३

जब बिल्ली हुई नाकाम तब चूहों को आराम ।

—जब घर का मुखिया या राज्य का जिम्मेवार व्यक्ति अकर्मण्य या ढीला हो जाता है तो अराजकता फैल जाती है । छोटे व कुटिल व्यक्तियों की मौज बन आती है ।

—जब कोई बड़ा डकैत,चोर या हत्यारा कमजोर हो जाय या मर जाय तो उससे प्रभावित होने वाला समुदाय खुशियाँ मनाता है ।

—अत्याचारी के विनाश से संबंधित व्यक्ति उल्लसित होते हैं ।

**जनावर हमजावणो हाऊ, मनख हमजावणो खोटू ।**–भी.२६७ ४८७४

जानवर को समझाना आसान, मनुष्य को समझाना कठिन ।

—प्रतिरोध करते हुए भी जानवर में बुद्धि का अहंकार नहीं होता,उसे जस-तस नियंत्रित किया जा सकता है,शांत किया जा सकता है,समझाया जा सकता है पर मनुष्य चाहे मूर्ख हो,चाहे

विद्वान उसे अपनी बुद्धि का घमंड होता है, इसलिए वह किसी की बात नहीं सुनता, उलटे समझाने वालों को मूर्ख समझता है।

—यदि समझाने से ही मनुष्य समझ जाय तो ये धार्मिक ग्रंथ,दर्शन,मंदिर और महात्मा इत्यादि व्यर्थ नहीं होते।

**जबर नै पूगै सबर।** ४८७५

जबर को पहुँचे सबर।

—अपने से शक्तिशाली या आतताई के सामने धैर्य-पूर्वक सहन करना ही लाभदायक है। कभी-न-कभी तो समय के हाथों वह पस्त होगा ही।

—सहन करने की क्षमता के कारण ही अक्षम का बचाव हो सकता है,अन्यथा वह दुष्ट व्यक्ति का सामना नहीं कर सकता।

**जबर रौ ठेकौ माथै ऊपर।** ४८७६

जबर का ठेका सिर पर।

—बल वालों का जुल्म निर्बल को सिर नवाकर स्वीकार करना पड़ता है।

—सामंती व्यवस्था के दौरान अनुसूचित जाति वाले पुरुष बालों के बीच एक चौड़ी पट्टी हमेशा मुँडवाकर रखते थे—राज्य का मार्ग उनके सिर पर ही निकलता था। पूछने पर हर व्यक्ति खुशी से जवाब देता कि 'राज रौ मारग माथा माथै।' सामंती प्रथा भले ही समाप्त हो गई हो,पर आज भी जबरदस्त के पाँव गरीब के सिर पर ही रहते हैं।

**पाठा : जबरां रा पग माथा माथै।**

**जबरा आगै जात सै पूछत संकां मरै।** ४८७७

जबरदस्त की जाति पूछते सभी संकोच करते है।

—शक्तिशाली की कोई जाति नहीं होती,वह तो केवल आतंक का प्रतीक होता है,किसकी हिम्मत जो उसकी जाति का ब्योरा जानना चाहे।

—आतताई किसी का सगा नहीं होता—न देश का,न बिरादरी का और न परिवार का।

**जबरा में 'म्हैं' मणाबंद।** ४८७८

**जबर में 'मैं' बेशुमार।**

—बलवान में अहंकार कूट-कूटकर भरा होता है।

—शक्तिशाली अपने शौर्य के सामने सूरज के तेज को भी नहीं मानता।

**जबरा री जोरू सगळां री काकी।** ४८७९

जबरे की जोरू सबकी चाची।

—इसकी उलट कहावत है—गरीब की जोरू गाँव की भाभी। पर बलवान की जोरू को सभी डरकर चाची कहते हैं।

—शक्तिशाली का भय कम नहीं होता, जोरू की बात तो दूर उसके कुत्ते का भी सब सम्मान करते हैं।

**जबरौ करै जबराई, निबळौ देवै न्याव दुहाई।** ४८८०

जब्बर करे जबराई, निर्बल देता न्याय दुहाई।

—शक्तिशाली न्याय को चुनौती देकर समाज में बेधड़क अत्याचार करता है और निर्बल न्याय की दुहाई देता है।

—बलवान का काम है अन्याय करना और गरीब का कर्तव्य है न्याय की शरण जाना। यदि आज के हाकिम-हुक्काम न्याय नहीं करते तो वह ईश्वर से न्याय की आशा लगाये रहता है। अत्याचार का प्रतिरोध करने की न उस में क्षमता है और न हिम्मत ही।

**जबरौ कूटै अर रोवण नीं देवै।** ४८८१

जबर मारे और रोने भी न दे।

—गरीब का एकमात्र संबल है आँसू। पर बलवान उसका एकमात्र संबल भी छीन लेता है—अन्याय, अत्याचार करता रहेगा, पर अशक्त को रोने भी नहीं देगा। न वह किसी से शिकायत कर सकता है और न न्याय का दरवाजा खटखटा सकता है। ऐसा करे तो उस पर और मार पड़ती है। यह मनुष्य-समाज की विचित्र विडंबना है।

**जबरौ जंवाई सबरौ।** ४८८२

जब्बर जमाई सबका।

—दामाद की हैसियत से शक्तिशाली किसी के घर में सहज प्रवेश पा जाता है, कोई उसका विरोध नहीं कर सकता। सामना वही कर सकता है जो मरने-मारने पर आमादा हो। जीने का मोह रखने वाले अत्याचार का प्रतिरोध नहीं कर सकते।

—शक्तिशाली का आतंक सब पर छाया रहता है। वह सबका 'हजूर' है।

**पाठा : जम री किणी सूं प्रीत नीं व्है।**

**जबांन में इमरत अर विस दोनूं व्है।** ४८८३

जबान में अमृत और विष दोनों हैं।

—मनुष्य की रसना में सभी तरह के रस हैं—अमृत भी, विष भी, शहद भी, अफीम भी, दूध और शराब भी। मनुष्य चाहे तो अपनी जिह्वा के अमृत से मुर्दे को भी जिला सकता है और उसके जहर बुझे तीरों से महात्मा को भी घायल कर सकता है।

—मनुष्य की जबान में सब पशुओं की बोली छिपी है—कोयल की, कौवे की, साँप-नेवले और गधे की। कबूतर, तोते व चील की। सियार, साँड या शेर की। जब उसका जी चाहे मनुष्य की वाणी भूलकर वह पक्षी-जानवरों की बोली अपने मुँह से निकाल सकता है।

**जबांन हारी जिकै जलम हार्‌यौ।** ४८८४

जबान हारी उसने जीवन हारा।

—जो मनुष्य अपनी जबान का पक्का न रहे, वह जिंदा रहते भी मरे के समान है। उसने अपनी जबान खोकर सारा जीवन ही दाँव पर लगा दिया।

—जो व्यक्ति अपने वचन की अनुपालना न करे, उसकी निंदा के लिए यह उक्ति पर्याप्त है।

**जबांन है के साटी री पांन है।** ४८८५

जबान है कि साटी का पान है।

साटी = एक प्रकार का पेड़, जिसका तना सफेद, पत्ते गोल एवं छोटे होते हैं, जो मामूली हवा से हिलते रहते हैं, उलट-पुलट होते रहते हैं।

—जिस व्यक्ति की जबान बात-बात पर बदलती रहे, तभी उस पर कोई ऐतबार नहीं करता।

—मनुष्य वही खरा जो अपनी जबान पर कायम रहे।

**जम अर जमाई किणी रा ई नीं व्है।** ४८८६

जम और जमाई किसी के नहीं होते।

दे.क.सं.४८०६

**जम कैड़ौ के जंवाई जैड़ौ।** ४८८७

जम कैसा कि जमाई जैसा।

दे.क.सं.४८०६

**पाठा : जमाई अर जम बिरौबर व्है।**

**जम नै जमाई आता ई बेड़ा नै जाता ई बेड़ा।** ४८८८

जम और जमाई आते हुए ही खराब और जाते हुए भी खराब।

दे.क.सं.४८०६

**जम नै माळवौ किसौ आंतरै।** ४८८९

जम से मालवा कौन-सा दूर।

—यमराज के लिए दूरी और स्थान कुछ भी मायना नहीं रखते। उसके लिए न हिमालय अलंघ्य है, न समुद्र, न नदियाँ और न जंगल। वह पल भर में कहीं भी पहुँच सकता है।

—मृत्यु की तरह दुख के लिए भी कुछ अलंघ्य नहीं।

**जमराज रौ दया सूं कांई लीजै-दीजै।** ४८९०

यमराज का दया से क्या सरोकार।

—मृत्यु के देवता यमराज न रंक पर दया करता है और न राजा पर।

—यमराज आँखें होते हुए भी अंधा है और कान होते हुए भी बहरा है। उसे न किसी के आँसू दिखते हैं और न किसी की चीत्कार सुनाई पड़ती है।

**जम रौ बुलावौ आजौ, पण राज रौ बुलावौ मत आजौ।** ४८९१

यम का बुलावा आये, पर राज का बुलावा न आये।

—राज्य की स्थापना कितनी क्रूर व हिंसक है—इस उक्ति से सहज ही पता चल जाता है। राज्य से प्रजा कितनी आतंकित है कि वह यम के परवाने को राज के परवाने से बेहतर

समझती है ! जीवन के प्रति मनुष्य के मोह का पार नहीं पर राज्य का परवाना उसे भयभीत कर देता है कि उसकी बजाय वह मौत को बखुशी कबूल करने के लिए तैयार है ।

**जम सूं जब्बर बांणियौ ।** ४८९२

जम से जब्बर बनिया ।

—यम झटके से मारता है और बनिया हलाल करता है । गाँव की रैयत को राजा के बाद बोहरा आतंकित करता है । उसकी बही से मुक्त होने के लिए किसान को नरक की यातना भी स्वीकार है ।

**जमाई रा भाई आघा जावौ, वाघ थांरौ वेसास करै छै ।**–व.३१६ ४८९३

जमाई के भाई दूर जाओ, बाघ तुम्हारा विश्वास करता है ।

—अपने आदमियों को खतरे से बचाना और दूसरों को खतरे की ओर धकेलने का प्रयास करना ।

—यह मनुष्य की स्वाभाविक प्रकृति है कि वह स्वयं तो खतरे से बचना चाहता है और दूसरों की परवाह तक नहीं करता ।

**जमाई री ठौड़ जमाई ओपै ।** ४८९४

जमाई की ठौर जमाई सोहे ।

—मनुष्य समाज में प्रत्येक रिश्ते की अपनी-अपनी मर्यादा है—पुत्र की, पिता की, जमाई की, भाई या जमाई के पिता की । बेटी के साथ जमाई को जो स्वतंत्रता प्राप्त हुई, वह न उसके पिता को मिल सकती है न भाई को ! जमाई का महत्त्व और किसी को नहीं मिल सकता ।

**जमात री करामात ।** ४८९५

जमात की करामात ।

—अकेले का कहीं महत्त्व नहीं, कोई भी मनुष्य जमात के बीच ही आश्वस्त महसूस करता है !

—जो कुछ भी करिश्मा है वह पार्टी का है, व्यक्ति का नहीं ।

**ज़माना में जमी जेळू खोटी ।**–भी.२६८ ४८९६

दुर्दिन में जमीन और कुलटा दोनों बुरी ।

—बुरे दिन आते हैं तब जमीन और कुलटा स्त्री की रक्षा करना मुश्किल हो जाता है,इसलिए दोनों ही खोटे हैं ! मजबूरी में कहीं खेत न बिक जाएँ, छिनाल कहीं घर छोड़कर न चली जाए,ये सब दुश्चिंताएँ बनी रहती हैं ।

**जमाना हाई जूट नी बोले तो काम नी चाले ।**–भी.२६९ ४८९७

जमाने के अनुसार झूठ न बोलें तो काम नहीं चलता ।

—जिस तरह सच्चाई जीवन का अंश है,उसी प्रकार झूठ भी जीवन का हिस्सा है । केवल सत्य की पूँछ पकड़ने से काम नहीं चलता,जरूरत पड़ने पर झूठ भी बोलना पड़ता है ।

—भलाई-बुराई के दोनों पहियों पर मनुष्य की जीवनगाड़ी चलती है ।

**जमारो ते रेवू ने , होच कीदे हूं वे ।**–भी.२७० ४८९८

जीवन तो रहने के लिए है, फिर सोच करने से क्या हो ।

—मनुष्य का जीवन ही दुख पाने के लिए बना है,पर इस दुख में भी एक प्रकार का सुख है, फिर दुख मिटाने की चिंता ही क्यों करनी । जब तक जीवन है,उसी में जीना है ।

—मनुष्य के लिए दुख शाश्वत है,सुख अस्थिर है,यह मानकर चलने से क्लेश नहीं होता ।

**जमियोड़ा खुरंट उखेल्यां सिसकारी तौ निकळै इज ।** ४८९९

जमे हुए खुरंड उखाड़ने से आह तो निकलती ही है ।

—भरे हुए पुराने घाव को उकेरने से पीड़ा तो होती ही है,इसलिए पुराने घाव को नहीं छेड़ना चाहिए ।

—भूले-बिसरे दुखों की याद दिलाना उचित नहीं ।

—स्मृति में दबी हुई पीड़ा को जगाने से हूक तो उठती ही है ।

**जमीं काटै तौ भांय नैड़ी पड़े ।** ४९००

राह पर चलने से ही दूरी कम होती है ।

—बैठे-बैठे या खड़े-खड़े फासला स्वतः नहीं कटता,चलने पर ही मंजिल के करीब पहुँचा जा सकता है ।

—आखिर क्रिया से ही कार्य संपन्न होता है ।

**जमीं जोरू नै जर, अै तीनूं कजिया रा घर !** ४९०१

जमीन, जोरू और जर, ये तीनों झगड़े के घर !

—दुनिया में आज दिन तक जितने उत्पात, लूट-खसौट,हमले और युद्ध हुए हैं तो जमीन व सुंदर औरतों की खातिर या धन की खातिर। सारी कलह के मूल यही तीनों हैं।

**पाठा : जर, जमीन नै जोरू, अै तीनूं कजिया रा छोरू।**

**जमींदार रै बावन हाथ हुवै।** ४९०२

जमींदार के बावन हाथ होते हैं।

—जमींदार की पहुँच चारों तरफ है। उसके हाथ राज्य तक लंबे होते हैं।

—जमींदार अपने कारिंदों के पचासों हाथों से काम करवा सकता है।

—रावण के तो बीस ही हाथ थे,इसलिए बावन हाथ वाला जमींदार उससे भी ज्यादा अन्यायी होता है।

**जमीं नीं जागा, जोधांणै रा राजा।** ४९०३

न जमीन और न ठाँव, जोधपुर का राव।

—जो व्यक्ति गरीब होते हुए भी मन में महाराजा बना हुआ हो।

—झूठी तड़क-भड़क का दिखावा करने वाले के लिए।

**जमीं पड़्यौ आकास चाटै।** ४९०४

जमीन पर पड़ा आकाश चाटे।

—जमीन पर रहते हुए भी जिस व्यक्ति की महत्त्वाकांक्षाएँ आकाश को छू रही हों।

—अत्यधिक साहसी व बुद्धिमान व्यक्ति के लिए।

—जो व्यक्ति झोंपड़ी में रहते हुए हवा में किले बनाये।

**जमीं पाड़ोस्यां में गी।** ४९०५

जमीन पड़ोसियों में चली गई।

—पड़ोसी ऐसे लठैत हों कि चारों ओर अपने खेतों की सीमा बढ़ाते हुए किसी का खेत दबा लें,तब...!

—या पड़ोस में ऐसे चोर हों कि किसी की फसल चोरकर अपने में मिला लें,तब...!

**जमीं माथै सोवणियौ नै कूड़ बोलणियौ सांकड़ैलौ क्यूं भुगतै ?** ४९०६

धरती पर सोने वाला और झूट बोलने वाला तंगी क्यों भुगते ?

—खाट या पलंग पर सोने वाले की तो निर्धारित सीमा होती है, उसके अलावा वह कहीं करवट ले नहीं सकता, पर धरती पर सोने वाले की तो कोई सीमा ही नहीं, वह चाहे जितनी दूर लुढ़कता जाए, उसे कमी किस बात की है। इसी तरह सत्य की भी अपनी सीमा होती है, किंतु झूठ की तो किसी भी ओर से सीमा नहीं होती—वह चाहे जितना व्यापक हो सकता है। फिर झूठ बोलने वाला क्यों कमी रखे !

**जमी नो बीज जमी नी खागी।**–भी.२७१ ४९०७

जमीन पर पड़ा बीज जमीन नहीं खाती।

—ऐसी ही मसल मशहूर है—धरती बीज नहीं चुराती। वह एक के वापस अनेक करके लौटाती है। इसी प्रकार जमीन पर पड़े बीज, सबके सब न भी उगें, पर कुछ तो उगते ही हैं। बचे हुओं को जमीन निगलती नहीं, सुरक्षित रखती है।

—जमीन पर पड़े बीजों की नाईं जन्म लेने वाले सभी मनुष्य खराब नहीं होते, कुछ तो अच्छे होते हैं। और उन्हीं के आसरे दुनिया जीवित है।

**जर, जमी अर जोरू जोर री, जोर घट्यां और री।** ४९०८

जर, जमीन व जोरू जोर की, जोर घटे और की।

—जो ताकतवर होता है वही अपने धन, अपनी जमीन और अपनी पत्नी को काबू में रख सकता है, चोर व दुष्टों से बचा सकता है। इसके विपरीत ताकत घटने पर दूसरे शक्तिशाली लोग इन्हें हथिया लेते हैं। यदि इन्हें बचाना हो तो संचय के साथ शक्ति अर्जित करो, यही इस उक्ति का संदेश है।

**जरूरत माथै काचरी पाछी सिरकै।** ४९०९

जरूरत पर काचरी पीछे खिसकती है।

—ओछे व्यक्ति काम की वेला मुँह छिपाते हैं या दूर खिसक जाते हैं।

—ओछे आदमी से सहयोग की आशा रखना व्यर्थ है।

**जलम अकारथ ई गियौ , गौरी गळै न लग्ग ।** ४९१०

जन्म अकारथ ही गँवाया, गोरी को गले नही लगाया ।

—मनुष्य जीवन की चरम सार्थकता न माया एकत्रित करने में है,न राज्य हथियाने में,न चारों धाम तीर्थ करने में और न तपस्या करने में है। वह तो सिर्फ एक ही तथ्य में निहित है—यौवन से छलछलाती सुंदर नारी का सहवास। यदि उसे बाँहों में भर लिया तो संसार के सारे सुख उसके भीतर गुटरगूँ कर रहे हैं। नारी ही मनुष्य-जीवन की चरम सिद्धि है, यही ब्रह्म है।

**जलम-घड़ी अर मरण-घड़ी टाळी नांहि टळै ।** ४९११

जनम घड़ी और मरण घड़ी, टारी नांहि टरंत ।

—संसार में जो भी प्रतिक्षण घटित हो रहा है—नई कोंपल का उगना,पीले पत्ते का झड़ना, नये शिशु का जन्म,वृद्ध की मृत्यु ,यह सब पहिले से निश्चित है ,इन्हें टाला नही जा सकता।

**जलम-जलम रौ मंगतौ अर नांव दातारांम ।** ४९१२

जनम-जनम का याचक और नाम दाताराम ।

—जो मक्खीचूस मायापति किसी को कौड़ी दान में न दे और उसका नाम दाताराम।

—दर-दर भीख माँगने वाले भिखारी का नाम दाताराम।

—गुण के विपरीत नाम।

**जलमणा ने मरवाना मोरत नी है ।**– भी. २७२ ४९१३

जन्म और मरण का मुहूर्त नही होता ।

—जन्म और मृत्यु के लिए कोई पूर्व-निश्चित तिथि नहीं होती,ये किसी भी क्षण प्रकट हो सकते हैं।

—कोई भी नैसर्गिक कर्म पचाग और ज्योतिषियों का मोहताज नहीं होता।

**पाठा : जलम मरण रौ मौरत नी व्है ।**

**जलमतां पग भील रा ई राता व्है ।** ४९१४

जन्म के समय भील के पाँव भी गुलाबी होते है ।

—मान्यता है कि बच्चा ईश्वर का रूप होता है—भले वह किसी भी जाति का क्यों न हो। इसलिए सद्यजात बच्चों में विभिन्नता नहीं होती। उनके पाँव भी लाल होते हैं। रूप और चरित्र की विभिन्नता तो बाद में उजागर होती है! छोटा-बच्चा सबको सुहाना लगता है।

**पाठा: जलमता भांबी रा ई पगलिया राता व्है।**

**जलमतै टाबर नै रोवणौ कुण सिखावै?** ४९१५

सद्य-जात संतान को रोना कौन सिखाता है?

—प्रकृति अपूर्व जादूगरनी है, उसके करिश्मों का कोई पार नहीं! बच्चा जन्म के साथ ही 'बाळ-साद' देता है! रोते ही बच्चे की समस्त चेतना जागृत हो जाती है। मानो कोख के भीतर नौ महीने तक उसे रोने का ही पाठ पढ़ाया हो।

**जलमतौ ई मर जातौ तौ हाथ भस्या खांपण सूं ई सर जातौ।** ४९१६

जन्म के साथ ही मर जाता तो हाथ भर कफन से ही काम चल जाता।

—बेइंतहा कपूत के लिए माँ-बाप की दर्द-भरी कामना, जो बहुत मुश्किल से कंठ के बाहर निकलती है! वाणी की विकटतम त्रासदी।

**पाठा: जलमतौ ई मर जावतौ तौ वेंत कापड़ौ इज चावतौ।**

**जलमतौ ई मरग्यौ व्हैतौ तौ वेंत कापड़ौ लागतौ।**

**जलमतौ ई हुंस्यार कोई नीं व्है।** ४९१७

जन्म से कोई बच्चा होशियार नहीं होता।

—चाहे ज्ञानी हो चाहे मूर्ख—सबके बच्चे जन्म लेते समय एक-से होते हैं। पारिवारिक व सामाजिक वातावरण में धीरे-धीरे देख-सुनकर वे होशियार होते रहते हैं!

**जलम दुखी सो जरा दुखी।** ४९१८

जन्म दुखियारा सो जरा दुखियारा।

—जन्म की छठी रात ही जिसके भाग्य में दुख का ब्योरा अंकित हो गया, वह मरण की आखिरी घड़ी तक दुखी ही रहेगा।

—दुख-सुख सब भाग्य पर निर्भर करता है।

**जलम दैवै माईत, करम लिखै किरतार।** ४९१९

जन्म दें माँ-बाप, भाग्य लिखे कर्तार।

—बच्चे को जन्म देना ही माँ-बाप के हाथ है—उसे सुखी या दुखी रखना उनके वश की बात नहीं—ईश्वर ने उसके भाग्य में जो लेख लिख दिया है, उसीके अनुसार उसका जीवन व्यतीत होता है।

**जलम-मरण सांईं रै हाथ।** ४९२०

जन्म-मरण साँईं के हाथ।

—बहुत सारी बातें जो ईश्वर ने अभी तक मनुष्य के सुपुर्द नहीं की हैं, उनमें जन्म-मरण का अधिकार भी शामिल है, उसे ईश्वर अपने ही हाथ में रखना चाहता है।

**जलम मौत रौ दूत।** ४९२१

जन्म मौत का दूत।

—मौत का दूत बनकर ही बच्चा जन्म लेता है कि अंतत: उसकी मृत्यु सुनिश्चित है।

—'बाळ-साद' के रूप में बच्चे का रोना ही इस बात का सूचक है कि जीवन के अंत में वह सबको इसी तरह रुलाएगा।

**जलम-रात अर फेरा-रात टाळी कद टळै?** ४९२२

जन्म-रात और सुहाग-रांत टारी नाँहि टरंत?

दे.क.सं.४९११

**जलम रा साथी है, करम रा साथी कोनीं।** ४९२३

जनम के साथी हैं, करम के साथी नहीं।

—जन्म देने के साथ ही माँ-बाप के सारे अधिकार छिन जाते हैं, शेष रह जाती है कर्तव्य की सारी जिम्मेवारी, सो निभाते रहें, पर भाग्य-रेखा को कम-ज्यादा करना उनके वश की बात नहीं है। वे फकत जन्म-दाता हैं—भाग्य-विधाता नहीं।

**जलम रौ आंधौ, नांव नैण सुख।** ४९२४

जन्म का अंधा, नाम नयन सुख।

दे.क.सं.४३८

**जलम रौ दुखियारौ , नांव सदासुखरांम।** ४९२५

जन्म से दुखियारा, नाम सदासुखराम ।

—नाम के विपरीत लक्षण।

**जलम सूं तौ रांड्यौ अर नांव लिछमीकांत।** ४९२६

जन्म से तो रँडुआ और नाम लक्ष्मीकांत ।

—नाम के विपरीत लक्षण।

**जलमिया जद मिनक्यां कठै बैठी ही ?** ४९२७

जन्मे तब बिल्लियाँ कहाँ बैठी थीं ?

—जो बच्चा बड़ा होकर बहुत ही भ्रष्ट, लंपट, महा-मूर्ख और हरामी हो, तब उसे लक्ष्य करके लोग कहते हैं कि जन्मते ही इसे बिल्लियाँ क्यों न खा गई, कहाँ छिपी बैठी थीं ! यदि तब खा जातीं तो घरवालों को उसकी घिनौनी हरकतें देखने का मौका ही नहीं मिलता।

—निहायत कपूत के लिए...।

**जलमै जित्ता जीवता नीं रैवै।** ४९२८

जन्म लेने वाले सभी जीवित नहीं रहते ।

—जन्म देना माँ-बाप के हाथ है पर बच्चों को जिंदा रखना उनके वश की बात नहीं, यह प्रकृति का खेल है।

—यदि उद्भिज और प्राणी-जगत् में जन्म लेने वाले सभी जीवित रह जाएँ तो यह दुनिया जीने योग्य ही न रहे। पाँव धरने की ठौर न मिले ! प्रकृति की दुहरी जिम्मेवारी है—इधर जन्म देना, उधर मृत्यु का सराजाम करना।

**पाठा : जलमै सो मरै।**

**जलम्यां पूठै नीं जोई टाट वौ सपना में सूवै खाट।** ४९२९

जन्म के बाद न देखी टाट, वह सपने में सोये खाट ।

—परिस्थितियाँ प्रतिकूल होते हुए भी जो व्यक्ति बड़ी-बड़ी महत्त्वाकांक्षाएँ रखे।

—अव्यावहारिक व्यक्ति के प्रति कटाक्ष जो साधनों की उपेक्षा करके बड़ी-बड़ी योजनाएँ बनाये।

**जळ जठै जगदीस !** ४९३०

जहाँ जल वहाँ जगदीश !

—जल की माया अपरंपार है, तभी लोक-जीवन उसे ईश्वर के समकक्ष मानता है। सृष्टि के संचालन का मुख्य आधार जल ही है—जल से ही वनस्पति, फल-फूल और प्राण। जल से निर्झर, नदियाँ और सागर। जल से ही दूध और मक्खन। जल से ही घास और अन्न! जल से ही जीवन की उत्पत्ति है।

**जळ जठै माछ।** ४९३१

जल वहाँ मछली।

—जल में ही मछलियों का जन्म, रमण और मरण। मछली जल के बिना जिंदा ही नहीं रह सकती।

—मछली का जीवन ही जल है।

**जळजळै सुहाग सूं रंडापौ आछौ।** ४९३२

आँसू भरे सुहाग से वैधव्य अच्छा।

दे.क.सं.४३७३

**जळ डूब्यौ तिर नीसरैं, तिरिया डूब्यौ तीसळै।** ४९३३

जल में डूबा तैरकर पार, तिरिया में डूबा मझधार।

—जल में डूबा मनुष्य तो जस-तस तैरकर पार हो जाएगा पर त्रिया के मोह में डूबा व्यक्ति मझधार में मरता है, वह बचकर नहीं निकल सकता।

—त्रिया-चरित्र पर कटाक्ष। पुरुष-प्रधान समाज में नारी ऐसी ही मान्यताओं से आविष्ट रहती है।

पाठा : जळ रौ डूब्यौ तिरनै निकळै, तिरिया डूब्यौ बह जाय।

**जळती माई पोपच्चा पोवै।** ४९३४

क्रुद्ध माई कच्चे-पक्के पोये।

—घर में जब बहुएँ वृद्ध सास के खाने-पीने की परवाह नहीं करतीं, तब वह भूख से परेशान होकर कच्ची-पक्की, टेढ़ी-बाँकी रोटियाँ सेंककर जस-तस अपनी भूख शांत करती है!

भूख तो शांत हो जाती है,पर उसका क्रोध शांत नहीं होता। रोटी सेंकते समय उसके हाथ जलते हैं,कच्ची-पक्की रोटियाँ खाने से उसका जी मितलाता है,पेट दुखता है।

**जळ में कांई मळ !** ४९३५

जल में कैसा मल !

—लोक-जीवन में जल को इतना पवित्र माना जाता है कि उसमें मल इत्यादि की सारी गंदगी नष्ट हो जाती है।

—जल की उपादेयता असंदिग्ध है।

**जळ में गाडी नाव माथै, थळ में नाव गाडी माथै।** ४९३६

जल में गाड़ी नाव पर, थल में नाव गाड़ी पर।

—समय की बलिहारी कि कभी गाड़ी पर नाव तो कभी नाव पर गाड़ी ! सबके दिन एक से नहीं रहते। कभी सास,बहू पर हुक्म चलाती है,तो कभी वह बहू के अधीन हो जाती है। कभी कोई रंक राजा बन जाता है और कभी कोई राजा बंदी बना लिया जाता है।

**जळ में मूतै जिकौ जांणै।** ४९३७

जल में मूते वही जाने।

—तालाब,कुंड और नदी में पेशाब करने वाले के अलावा कोई उस भेद को नहीं जान पाता।

—जो गुप-चुप और गोपनीय दुष्कृत्य होते हैं,उन्हें फकत करने वाला ही जानता है।

**जळ रौ जामौ पैरनै, हर रौ मिंदर हेर।** ४९३८

जल का जामा पहिन कर, हरि का मंदिर हेर।

—स्नान से देह को पवित्र करके,मंदिर में हरि की उपासना करो,जिससे मन भी पवित्र हो जाएगा।

**जळवा पूजी अर ऊंधी सूझी।** ४९३९

जलवा पूजी और औंधी सूझी।

—प्रसव वेला के समय औरत तोबा करती है कि भविष्य में अब कभी पति की सेज पर नहीं सोएगी। उस वक्त वाकई उसे 'दरद' की वेदना होती है। तोबा के लिए पर्याप्त कारण है। पर कुछ दिन उपरांत बच्चे को स्तन-पान कराते समय उस सुखद अनुभूति से प्रसव की

आधी पीड़ा विस्मृत हो जाती है । फिर जलवा-पूजन के अनुष्ठान पर नया वेश और शृंगार के आभूषण धारण करते ही दिल में पिया-मिलन की नई हूक मचलती है । फिर वही सेज और वही प्रियतम और अगले प्रसव पर वही तोबा !

—इसी तरह कोई अपराधी दंड मिलने पर मन-ही-मन यह दृढ़ निश्चय करता है कि वह भविष्य में कभी अपराध नहीं करेगा, पर समय बीतने पर वह सब कुछ भूल जाता है और फिर वही अपराध करता है ।

—समय अपराध-बोध को धीरे-धीरे विलीन कर देता है ।

**जलौ गायौ अर गीतां रौ छेह आयौ ।** ४९४०

जला गाया और गीतों का अंत आया ।

जलौ = जलाल गहांणी नामक व्यक्ति जो उदारता के लिए बहुत प्रसिद्ध था, जिसके नाम पर गाया जाने वाला राजस्थानी का एक गीत । जो कन्या की विदाई पर विवाहोत्सव के अंत में गाया जाता है । गीत = लोक-गीत ।

—किसी आयोजन के संपन्न होने पर यह उक्ति कही जाती है ।

**जव-जवार री रोटी खायनै ई निरांत करणी ।** ४९४१

जौ-ज्वार की रोटी खाकर संतोष करना चाहिए ।

—लालसाओं की उपेक्षा और संतोष की खातिर शिक्षा ।

—लालसाओं का कोई अंत नहीं है, इसलिए मन को नियंत्रित रखना चाहिए ।

**जवांनी में गधेड़ा रै ई जोबन चढ़ै ।** ४९४२

जवानी में गधे पर भी यौवन झलकता है ।

—यौवन का अपना सौंदर्य और अपना उत्ताप होता है मनुष्य और पशुओं को समान रूप से प्रभावित करता है !

—लाख यत्न करने पर भी यौवन छिपाया नहीं जा सकता, वह स्वत: प्रकट होकर रहता है । जानवरों पर भी यौवन का निखार साफ नजर आता है ।

**पाठा : जवांनी रांड गधी नै ई आवै ।**

**जवाड़ा रौ भार धोरी ई झेलै ।** ४९४३

जुए का भार बैल ही झेलते हैं ।

—समर्थ व्यक्ति ही अपने कंधों पर समूचे परिवार का भार ढोता है—गाड़ी के बैलों की तरह ।

—इसी तरह समाज और देश का भार भी महान-पुरुषों के कंधों पर ही होता है ।

**जवानी ना देखे रात ना देखे दाड़ो ।**– भी. २७३ ४९४४

जवानी न रात देखती है और न दिन ।

—यौवन अंधा होता है, उसे न दिन का उजाला नजर आता है और न रात का अँधियारा ।

—यौवन सर्वथा विवेक-शून्य होता है ।

**जवार सुळै पण गवार नीं सुळै ।** ४९४५

ज्वार में घुन लगता है पर ग्वार में नहीं ।

—उज्जड़ व्यक्ति जितना कष्ट सह लेता है, उतना अमीर नहीं ।

—गँवार की अपेक्षा अमीर व्यक्ति बीमारी की चपेट में जल्दी आता है ।

**जवू ले'र गवूं कुण देवै ?** ४९४६

जौ लेकर गेहूँ कौन दे ?

—गेहूँ की बजाय जौ सस्ता बिकता है । हर व्यक्ति अपना नफा-नुकसान पहिले सोचता है, फिर आगे कदम बढ़ाता है ।

**जवै री गळाई चोर-जात ।** ४९४७

जवा की नाईं चोर की जात ।

जवौ = एक प्रकार का कीड़ा जो प्राय : खाद-मिश्रित मिट्टी में पाया जाता है । पशुओं या मनुष्यों के चिपककर उनका खून चूसता है ।

—जवा खून चूसकर जब भर जाता है, तभी उसका पता चलता है । उसी प्रकार माल चोरी होने के पश्चात् ही जानकारी होती है कि चोर हाथ साफ कर गया ।

—दुष्ट व कुटिल व्यक्तियों की प्रवृत्ति एक-सी होती है ।

**जस कांम घाटा रौ।** ४९४८

यश काम घाटे का।

—यश अर्जित करने के लिए बहुत कुछ खोना पड़ता है—समय, शक्ति और धन।

—यश यों ही बैठे-ठाले प्राप्त नहीं होता, उसके लिए बहुत खटना पड़ता है, संघर्ष करना पड़ता है।

**जस तौ रांम री मां नै ई नीं मिळ्यौ।** ४९४९

यश तो राम की माँ को भी नहीं मिला।

—संबंधित व्यक्ति का यश-गान करने वालों की अपेक्षा निंदा करने वाले अधिक होते हैं।

—दुनिया में ऐसा कोई महान व्यक्ति नहीं जिसकी आलोचना करने वाले न हों। यशोदा की बात तो दूर स्वयं मर्यादा पुरुषोत्तम राम और भगवान कृष्ण की कटु आलोचना करने वाले भी कम नहीं।

**जस री भूख तौ सगळां नै ई व्है।** ४९५०

यश की भूख तो सबको होती है।

—पशुओं में तो पेट और काम की भूख ही ज्यादा होती है, पर मनुष्यों में पेट और काम के अलावा—यश-कीर्ति, धर्म, दान-पुण्य और भक्ति की भूख भी कम नहीं होती।

—मनुष्य केवल रोटी के लिए ही जिंदा नहीं रहता, उसे यश-कीर्ति की खातर कभी-कभार अनशन भी करना पड़ता है।

—यश की चाहना साधु-महात्माओं को भी होती है।

**जस रै बदळै जूतियां।** ४९५१

यश के बदले जूतियाँ।

—कभी-कभार यश की लालसा रखने वाले व्यक्ति को जूतियों की मार भी सहनी पड़ती है। आजादी के परवानों का यश तो बाद में फैला, पहिले उन्हें लाठियों का प्रहार भी झेलना पड़ा और बार-बार जेल की यात्रा करनी पड़ी! अधिकांश व्यक्तियों को पहिले जूतियाँ खानी पड़ीं बाद में उनका यश हवा की नाईं फैला। कुछ महानतम विभूतियों को फाँसी पर झूलना पड़ा, सूली पर चढ़ना पड़ा, विष-पान भी करना पड़ा।

**जहं-जहं पांव पड़्या संतां रा तहं-तहं बंटाढार।** ४९५२

जहाँ-जहाँ पाँव पड़े संतन के, वहाँ-वहाँ बंटाढार ।

—संत के दो अर्थ हैं—एक तो दुष्ट और दूसरा स्वयं संत या साधु महात्मा। साधु-महात्मा जन-साधारण की प्रचलित व्यवस्था के विरोधी हैं,गृहस्थ धर्म को अवज्ञा की दृष्टि से देखते हैं। नवयुवकों को भड़का कर धर्म की ओर प्रवृत्त करते हैं,जिससे संबंधित परिवार का संतुलन बिगड़ता है,इसलिए संतों के पाँव जहाँ-जहाँ पड़ते हैं,वहाँ भारी क्षति पहुँचती है। वे परिवार की महिलाओं को भी धर्म के नाम पर बहकाते हैं,उन्हें भ्रष्ट करते हैं।

—दुष्ट व्यक्तियों की आवाजाही से परिवार की हानि तो असंदिग्ध है,पर संतों ने गृहस्थियों के घर अनगिनत उजाड़े हैं।

**जहां आपणा भाव तहां आपणा भाग।** ४९५३

जैसी अपनी भावना होगी वैसा ही अपना भाग्य होगा।

—विचार और भावना का मनुष्य के परिप्रेक्ष्य में सर्वाधिक महत्त्व है। उसका भाग्य इनसे जुड़ा रहता है। मनुष्य के सारे दुष्कर्मों की जड़ भावना और विचार ही हैं। और मनुष्य की क्रिया के अनुसार ही उसका भाग्य फलता है।

**जहूं करे जहूं मळे।**– भी.३६५ ४९५४

जैसा करे वैसा ही मिले।

—संसार में कर्म के अनुसार फल प्राप्त होता है।

—मनुष्य को चाहिए कि वह सत्कर्म करे ताकि वैसे ही मीठे फल मिलें।

**जहो वा जहो वरताव।**– भी.३६६ ४९५५

जैसा पड़ोस वैसा ही व्यवहार।

—मनुष्य का व्यवहार भी एक-दूसरे पर निर्भर करता है। सद्व्यवहार के बदले सद्व्यवहार और दुर्व्यवहार के बदले दुर्व्यवहार! यदि पड़ोसी सज्जन है तो उसे सज्जनता का ही व्यवहार मिलेगा। यदि पड़ोसी कुटिल है तो उसे कुटिलता का ही व्यवहार मिलेगा।

—यदि मनुष्य को दूसरों से सद्‌व्यवहार की अपेक्षा है तो उसे भी हर व्यक्ति के साथ सद्‌व्यवहार करना चाहिए।

—दूसरों को प्रतिष्ठा देने से ही खुद को प्रतिष्ठा मिलती है।

॥ इति राजस्थानी-हिंदी कहावत-कोश दूसरा थाम संपूर्ण ॥